श्री गुरुचरितामृत

(कोंकणी)

2028
Div-DEV
ACH

002028

L:B 02-R10 (Rev.J)

WORLD KONKANI CENTRE LIBRARY

विश्व कोंकणी ग्रंथालय

2214
A.M.No.

2028
Dievo->Dev
ACH

000028

श्रीमद् भुवनेन्द्रतीर्थ स्वामें

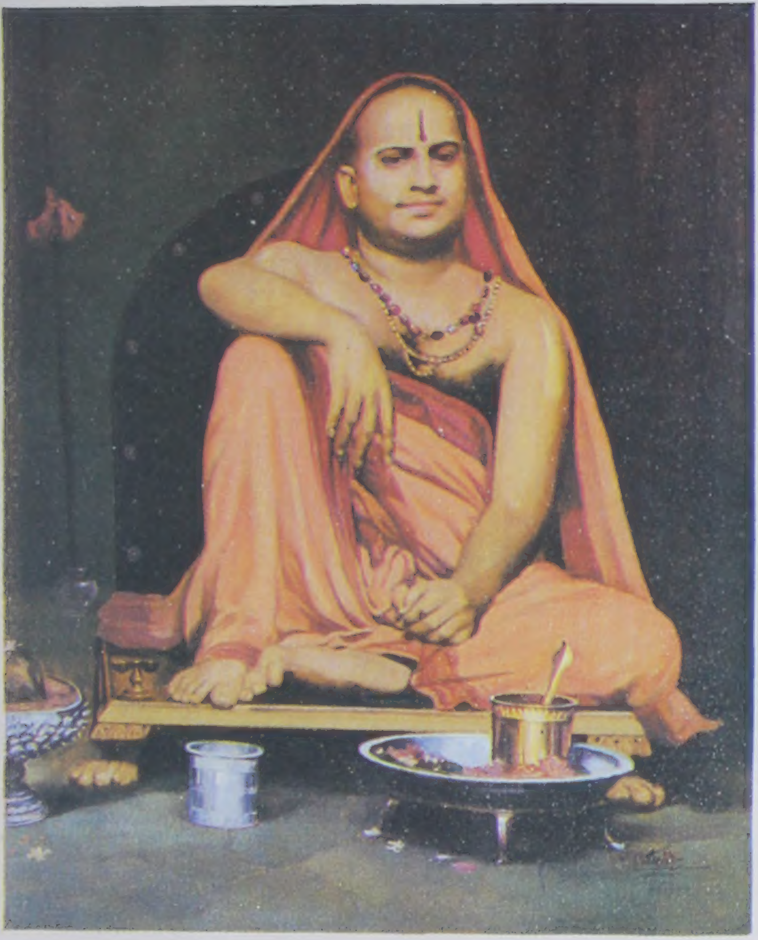

श्रीमद् वरदेन्द्रतीर्थ स्वामें

श्रीमद् सुकृतीन्द्रतीर्थ स्वामें

श्री श्री काशीमठाधीश परमाचार्य श्रीमद् सुधीन्द्रतीर्थ स्वामें

H. H. SHRIMAD SUDHINDRA THIRTHA SWAMI

SHREE KASHI MATH SAMSTHAN

VARANASI

Camp Sri Kashi Math, Walkeswar, Bombay-6

Ref: Date 21-11-1997

श्रीरस्तु

अस्मत् परमप्रिय शिष्य श्री सन्त अच्युत दासाले-
श्रीगुरुचरितामृत नावाचे ग्रन्थाक दिव्यचो आशीर्वादु
आणी शुभ सन्देशु ॥

हरिभक्ति मुक्तीक कारण ॥ गुरुभक्ति
हरिभक्तीक कारण ॥ मानवजीवनाचे परम प्रधान
प्राप्य श्रीशानुग्रहु, प्रसन्न सद्गुरु अनुग्रहान प्राप्त
जाता ॥ सद्गुरूंचेरि आशिल्ली

सद्गुरूक प्रसन्न करूंक, सद्गुरूचेरि निर्मल प्रीति
निर्मल प्रीतीच कारण ॥
जावचाक 'श्रीगुरुचरितामृत ग्रन्थ' वाचन साधन ॥

ते निमित्तिं अनेकानेक जन श्रीगुरुचरितामृत
ग्रन्थाचे पठन, श्रवण, मनन आणी कीर्तन करीति
ताजे खातिरि श्री व्यास रघुपति अनुग्रहु करोंही
शुभ कामना ॥ ग्रन्थकर्ता श्री हरिगुरु अनुग्रहाक
अत्यन्त पात्र जावो हो आशीर्वादु ॥ सकलांकयि
सर्वय मंगल मेळो अशी श्रीशाचरणांचेरि
प्रार्थना।

शुभाशंसिनः

[signature]

सन्त भद्रगिरी अच्युतदासु

ॐ

श्री गुरुचरितामृत

(कोंकणी ओवि बद्ध ग्रंथु)

रचयितु :

सन्त भद्रगिरी अच्युतदासु

प्रकाशन :

श्री सुधीन्द्र पब्लिषिंग हौस

92-94, 8वो क्रास रोड, मल्लेश्वरम्, बेंगळूर - 560 003

दूरवाणि : 368297, 361247

WORLD KONKANI LIBRARY

Accn No: 002028

प्रथम मुद्रण 1996
१000 प्रत्यों

हक्क रक्कुनास्स

छापिलो खर्चु 500 रुपै

मुद्रक :

श्री सुधीन्द्र मुद्रणालय

92–94, 8वो क्रास रोड, मल्लेश्वरम्, बेंगळूर – 560 003
दूरवाणि : 3368339, 361247

ग्रंथ समर्पण

कोंकणी भाषेचो हो " श्री गुरुचरितामृत " ओवि बद्ध ग्रंथु रचनेचो उद्देशु, केवल हरिगुरुल्या प्रीत्यर्थ जाव्नु आस्स. साधकांक, गुरुभक्तांक, पारायणप्रियांक, विशेष जाव्नु गौडसारस्वत ब्राम्हण वृन्दाचे मातृवर्गांक आणि सहोदरांक तांथूई कोंकणी मातृभाषिकांक आणि अभिमान्यांक हाज्जो जास्त प्रयोजन जात्लो. अत्यंत प्राचीन मोवाळ, मोगाळ कोंकणी भाषेंतु अस्सलो ओवि बद्ध ग्रंथु ह्या पुढे जाल्ला की ना हें हांव नेण. मातृ नर्यों आइच्या भोगवादी लोकांक हाज्जि अवश्यकता कित्ले पुरेशि आस्स हे ते वै हांवें चिंतन कर्नि. मुखार कोणा पुणि हाज्जो प्रयोजन अस्ताल्वे हो विचारुई कर्नि. हाज्जो निर्णयु कालूचि कर्ता. हांतु काव्याचो गुणदोष, लक्षण, सौन्दर्य, व्याकरण आदि वेंचपि विमर्शक लोकांक आहारु मेळ्ता म्होणूई सांग्चा जाइना.

हे केवल हरिगुरु भक्तांक मेळ्चो एकु गोडु गासु. ही एकि सरऽळ सुन्दर उत्रांन देवालागि हृदयान उल्लोंची परिभाषा. हांगा शब्दापेक्षा भावनेक प्राधान्य. हाज्जेन विकार पाव्चे मन विकास जात्तालें. दमन कोर्चा पुढेचि ते शमन जात्ता, शान्तजात्ता. " मुकुन्द भक्तै गुरु भक्ति जायै " ह्या मध्वविजयाच्या श्लोका प्रमाणे गुरु अनुग्रानऽचि हरिभक्ति प्राप्त जात्ता. तस्सलो हरि गुरु अनुग्रहूचि ह्या ग्रंथ निर्माणाचो उद्देशु. गुरु अनुग्रहानऽचि हो ग्रंथु निर्माण जाल्ला. हाज्जे श्रवण मनन पठण कर्तालेंई गुरुभक्तऽचि.

श्री श्री काशीमठाधीश परमाचार्य श्री श्रीमत्सुधीन्द्रतीर्थ स्वामें एकहात्तर वर्षाच्या शुभोदयारि वैष्णवाले परम चरम धाम श्री क्षेत्र वदरींतु चातुर्मास्य व्रत स्वीकार कर्तीति. ह्या संदर्भारि कोंकणी भाषेचो गुरुचरितामृत ग्रंथु भारतांतु सर्वांक अध्ययनांक अनुकूल जाव्का म्होणु देवनागरी लिपींत प्रकट कोर्का म्हळ्ळेलि आम्गेलि इच्छा. श्री हरिगुरुभक्तु - धर्मपरायण - होडु उद्यमि - उदारदानि पि. दयानन्द पै हान्नि तांगेले बाप्पूसु श्री पि. नरसिंह पै हांगेले स्मरणे खातिरि प्रकट कोर्नु पूर्ण केल्या.

नागरी लिपिचो हो ग्रंथु धातृ सवंत्सर भाद्रपद शुद्ध अनंतचतुर्दशि दिवसाक श्री विशाल बदरीक्षेत्रांतु श्री बदरीनारायणाक समर्पण केल्ला. वेदव्यास देवाल्या प्रीत्यर्थ श्री काशीमठाधीश श्रीमत्सुधीन्द्रतीर्थ स्वाम्यानि हाज्जो उग्तावण कोर्नु सर्व शिष्य वर्गांक विशेष जाव्नु श्री पि. दयानन्द पै दंपतींक आशीर्वादु केल्ला.

श्री पि. दयानन्द पै दंपतीक श्रीहरि गुरुलो आशीर्वादु सदा मेळ्नु तांगेले उत्तरोत्तर अभ्युदय जाव्वो म्होणु देवालाग्गि प्रार्थन कर्ता.

हरिगुरु चरणदासु

सन्त भद्रगिरी अच्युत दासु

श्री संस्थान काशीमठाधीश परमाचार्य
श्रीमत्सुधीन्द्रतीर्थ श्रीपाद विरचितम्

श्री गुरुपरंपरास्तवनम्

जयती जयती योगी वासवीनंदनोयं
शृणुत शृणुत संतः सज्जनोद्धारकोयं॥
नमत नमत भक्त्या सन्नतानन्नयंत
वृणुत वृणुत कामं भक्तकल्पद्रुमोयं ॥१॥

अपूर्वकल्पद्रुम एष देवः व्यासः सतां सद्गतिदो मुनीन्द्रः॥
मातेव पुत्राय हितं हि नित्यं दत्ते स्वभक्ताय विनैव याञ्चौ ॥२॥

नौमि वेधसममोघदर्शनं शारदां हरिपदाब्ज भक्तिदां॥
मारुतिं प्रणतसन्मतिप्रदं भारतिं च सुमतिप्रदां शुभां ॥३॥

लक्ष्मीश पादांबुजभृंगरूपं ज्ञानेन दिव्येन सुखेन पूर्णं॥
श्रीमध्वसूर्य निजभक्तमोहतामिस्रनाशं प्रणमामि भक्त्या ॥४॥

श्री गुरुचरितामृत

ज्ञानादिगुणसंपन्नान् प्रपन्नापन्निवारकान्॥
यादवेन्द्र गुरून्वंदे व्यासमध्वार्चने रतान् ॥५॥

यादवेन्द्रपदांभोदिजातचंद्रान्मुदा भजे॥
भक्ततापत्रयहरान् केशवेंद्रान् तपोधनान् ॥६॥

श्रीमदुपेन्द्र पदांबुजयुग्मं श्रीशसमर्चनदोषविहीनं॥
सन्नत शिष्य जनोन्नतिदक्षं नौमि सदावर सद्गुणपूर्ण ॥७॥

श्री केशवेन्द्र सच्छिष्यान् रूपौदार्यगुणांबुधीन्॥
यादवेंद्रान् भजे भक्त्या भक्तोद्धरण तत्परान् ॥८॥

श्री बादरायण समर्चनलब्धशुद्ध
कल्याणसद्गुणनिधीन् करुणापयोधीन्॥
वंदे नृसिंहपदपंकजदर्शनेन
संप्राप्तशाश्वतसुखान् गुरुराघवेन्द्रान् ॥९॥

श्री गुरुचरितामृत

देवेन्द्रतीर्था निजशिष्यवर्गान्
श्रीशांघ्री भक्तान्निजधर्मयुक्तान्॥
सन्मार्गगाश्चक्रुरिति प्रसिद्धिं
प्रापुर्गुरूस्तान् प्रणमामि भक्त्या ॥१०॥

श्री माधवेन्द्रान्नतपारिजातान्
सद्भिः समाराधितयोगिवर्यान्॥
दांतान् प्रशांतान् सततं नमामि
श्री व्यासरामार्चन शुद्ध सत्वान् ॥११॥

भक्त्युपास्ति सरद्युक्तान् तत्वज्ञान महार्णवान्
ज्ञानीन्द्रान् सततं वंदे भक्तिज्ञानाप्तये हरेः ॥१२॥

व्यासरामपदपंकज षट्पदान् शांति निर्जित समस्तकिल्बिषान्
यादवेन्द्रयतिपुंगवान्मुदा सन्नमामि परिविष्णुभक्तिदान् ॥१३॥

उपेन्द्रतीर्थान् समुदारचित्तान् निशांत शिष्योन्नतिदत्तचित्तान्
उपेन्द्र नित्यार्चनपूतचित्तान् प्रणामि पाराशरसक्तचित्तान् ॥१४॥

श्री गुरुचरितामृत

राजेन्द्रतीर्थान् यतिवंशचंद्रान्
मुनीन्द्र पाराशरराम दासान्
जितेन्द्रियान् सत्यदयादमेतान्
वंदे गुरून् मानितसंयमीन्द्रान् ॥१५॥

गुरौ भक्त्या हरौ भक्तिं प्राप्य निर्मुक्तबंधनान्॥
हरौ लीनान् विष्णुतीर्थान् वंदे सन्नतकंधरः ॥१६॥

सूरीन्द्रतीर्थान् यतिधर्मनिष्ठान्
सूरीडितान् सूरिजनेष्टदातॄन्
प्रपन्न पालान् सततं प्रपद्ये
श्री व्यासरामार्चनबद्ध दीक्षान् ॥१७॥

सुरगुरुसमबुद्धीन् व्यासरामार्चनेन
विगतसकलदोषान् सच्चरित्रान् शुभांगान्॥
विबुधवरदशौंडान् सज्जनाराधितांघ्रीन्
यतिवर विबुधीन्द्रान् संततं सन्नमामि ॥१८॥

श्री गुरुचरितामृत

शीलेन बुद्ध्या वचसाथ भक्त्या
दमेन शात्या च युतान् वरेण्यान्
श्री व्यास रामांघ्रि सरोज भृंगान्
नमामी भक्त्या सुमतीन्द्र तीर्थान् ॥१९॥

श्रीशार्चकान् श्री वसुधेन्द्र तीर्थान्
सुमंगलान् सद्गुरुपाद भक्तान्
भक्तेष्टदान् सच्चरितान् यतीन्द्रान्
नमामि पाराशरभक्तवर्यान् ॥२०॥

श्री रघुचन्द्र पराशर पुत्र-
पूजन तत्पर सद्गुरुवर्यान्॥
भक्तजनेष्टद मंगल मूर्तीन्
श्री भुवनेन्द्र यतीन् प्रणमामि ॥२१॥

श्री गुरुचरितामृत

विधीश मुख्यैः वरदेशदेवैः
संपूजिते व्यासरघूत्तमांघ्रि॥
समर्चिषुर्येतिमुदा च भक्त्या
वंदे गुरूंस्तान् वरदेन्द्र तीर्थान् ॥२२॥

यत्प्रेक्षणं प्रेक्षकपापनाशनं
यद्वंदनं वंदक पुण्यपोषणं
यत्सेवनं सेवकभक्तिवर्धनं
वंदे सुशीलान् सुकृतीन्द्र सद्गुरून् ॥२३॥

गुरुप्रसादाल्लभतेत्र मानवः
हरिप्रसादं तपसापि दुर्लभं॥
गुरुप्रसादेप्सु सुधीन्द्र संयमी
काशीमठीयो तनुते गुरुस्तवं ॥२४॥

गुरुस्तवमिमं भक्त्या श्रद्धया च पठन्नरः
गुरौ तथा हरौ भक्तिं लभेत च शुभां मतिं ॥२५॥

श्री गुरुचरितामृत

श्री गुरुचरितामृत

अनुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ट संख्या
सिद्धसाधक संवाद नामकु — पैलो अध्यायु	1
व्यासावतारु नामकु — दुसरो अध्यायु	99
सारस्वतचरित्र नामकु — तिसरो अध्यायु	219
परशुरामचरित्र नामकु — चौथो अध्यायु	360
मध्वचरित नामकु — पांच्वो अध्यायु	492
श्री काशीमठपरंपरा नामकु — संचो अध्यायु	698
श्री सुधीन्द्रचरित नामकु — सात्वो अध्यायु	1044

श्री गुरुचरितामृत

अथ संकल्पः

ॐ आचम्य प्राणानायम्य श्रीविष्णुप्रेरणया श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायकस्य, अनंत कल्याणगुणपरिपूर्णस्य, भगवतः परम पुरुषस्य, परमात्मनः, गौतम शापजनित ज्ञानाभावापादित भीतिग्रस्त विधीश शक्रादि सकल सुरनिकर प्रार्थनया ज्ञानप्रदानाय कृतावतारस्य, पठनावगमनमननादि विषये मंदमतिषु कलियुगजनेषु, दयया रचिताष्टादश पुराणस्य, चतुर्धाकृतवेदविभजनस्य, अज्ञान मिथ्याज्ञान विपरीत ज्ञानादि दोष दूरीकरणार्थ निगूढ वेदार्थ निर्णायक ब्रह्मसूत्र कारिणः, ब्रह्मरुद्रेंद्रादि सकलसुरैः प्रह्लादवैरोचनादि दैत्यगणेन, नारदादि सुरर्षिभिः भृगुवसिष्ठादि ब्रह्मर्षिभिः महाराजाधिराज युधिष्ठिरादि भूपतिभिश्च, सततराधित चरणकमलयुगलस्य, वासिष्ठस्य, पाराशरस्य, वासवीनंदनस्य कृष्णद्वैपायनस्य, महापुरुषस्य, महाविष्णो, पुण्यक्षेत्रे हरिद्वारे श्री व्यासमंदिरे व्यासविग्रहे, संपूर्ण सान्निध्यार्थ यथाशक्ति, यथामति.......... करिष्ये॥

इति संकल्पः

अथ प्रार्थना

जय जय भगवन् बादरायणा, कृपया, विलोकय, सर्वथा शरणागतानां, प्रणमतां, प्रार्थयमानानां अपराधराशिं क्षमस्व, भक्त्याकृतं, श्रद्धया समर्पितं, केवलं दयया स्वीकुरुष्व, श्री व्यासमंदिरे परिपूर्णतया सन्निहितोभव, समाश्रितान् समुद्धर, परमात्मनि भक्तिं, धर्मेश्रद्धांच प्रयच्छ, सदा सर्वत्र सर्वथाच मंगलं कुरु इति सहस्रतः प्रणमन् पुनः पुनः प्रार्थये॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु॥

इति प्रार्थना

श्री गुरुचरितामृत

ॐ

।। श्रीहरिगुरुभ्योनमः ।।

नारायणं सुरगुरुं जगदेकनाथं भक्तप्रियं सकल लोक नमस्कृतं च।
त्रैगुण्यवर्जितमजं विभुमाद्यमीशं वंदे भवघ्नं अमरासुरसिद्ध वंद्यम्।।

श्री गुरुचरितामृत

सिद्धसाधक संवाद नामक

पैलो अध्यायु

श्री गुरुचरितामृत

॥श्री गणेशायनमः॥ ॥श्री गुरुभ्योनमः॥

मंगलाचरण

ॐ विश्वंभर गणपति। तूंचि प्रणव स्वरूपि।
तूं सर्वोत्तमु जगत्पति। आदि मूर्ति ॥१॥

हे सृष्टयादि अष्टकर्ता[१]। अष्टनामा[२] समर्था।
अष्टाक्षरी महामंत्रा। नित्य मुक्ता ॥२॥

हे पद्मनाभा पुरातना। पद्महस्ता नारायणा।
पद्मालया प्रियतमा। सनातना ॥३॥

१ सृष्टि, स्थिति, संहार, नियमन, ज्ञान, अज्ञान, बन्ध, मोक्ष ह्या अष्ट कार्यांक देवु कारण २ विश्व, तैजस, प्राज्ञ, तुर्य, आत्मा, ज्ञानात्म, अंतरात्मा, परमात्मा हे देवाले आठ स्वरूप

जय जय लक्ष्मीरमणा। जलधिशयना मधुसूदना।
मत्स्य कूर्म हरिवदना। परशुरामा ॥४॥

त्रिगुण रहिता त्रिधामा [३]। त्रितापहरा त्रिविक्रमा।
संकर्षणा दुरतिक्रमा। मुरमथना ॥५॥

गुरू तूं जगत्रयांक। गुरुचरित्र वर्णनेंक।
शक्ति भक्ति दी मतीक। मदन ताता ॥६॥

आतां वंदीन लक्ष्मींक। वागंभृणी [४] जननीक।
नारायण उपरांत सर्वांक। आधारूगें तूं ॥७॥

श्री क्षीराब्धि तनया। क्षमकरी आमुचे अविनया।
रमा क्षमा सकलैश्वर्या। पुण्य नामा ॥८॥

३ श्वेतद्वीप, अनंतासन, वैकुंठ हे तीनि देवाले, धाम. ४ लक्ष्मीदेविलें एकरूप.

तूं मायें वेदाभिमानी। विष्णुवक्ष निवासिनी।
तूं चि समना नामानी। ख्यातगे माता ॥९॥

श्री भू दुर्गा रूप। प्रकटलें आपो आप।
अचिंत्यगे तवस्वरूप। अवर्णनीय ॥१०॥

नारायण लीलानुकरण। तागेलेंचि अनुसरण।
नाना अवतार रूपान। लीला तूं कर्ता ॥११॥

जननी मोक्षदायिनी। हरि आज्ञानुसारिणी।
लोकमाता निरंजनी। पावगे आतां ॥१२॥

नारायण चरण रति। तत्त्व शास्त्रांतु गति।
सदा तव चरणस्मृति। दीगें राक ॥१३॥

तूंचि गें देवाक छत्र। प्रळयांतु वटपत्र।
तूं व्यजन पर्यंक पात्र। पवित्र गे तूं ॥१४॥

रमाप्रणयी नारायणु। तो तरी निस्संगु निर्वाणु।
तुज्जांतु रममाण म्होणु। रमा नाम तुका ॥१५॥

तूं वरिले निस्संगाक। संसारू तुझो सत्संगाक।
दैत्यालें मोह वृध्दीक। लीला ही दोग्धांचि ॥१६॥

जया माया कृती शांता। चारि रूप हे तुझे माता।
रूप चारी हरी धरिता। तुग्गेल्या खातिर ॥१७॥

अनिरुध्द प्रद्युम्न रूप दोनी। संकर्षणु कालाभिमानी।
चौथो वासुदेव म्हणूनि। तो मुक्ति दाता ॥१८॥

अचिंत्य गें तुझी लीला। मन वाचातीत सकळा।
दाख्बैं मायें तुझी कला। बाळकांक ॥१९॥

शांता दुर्गा कामाक्षी। महालसा सर्वसाक्षी।
कात्यायनी महालक्ष्मी। रूप हें तुग्गेले ॥२०॥

सारस्वताली कुलदेवी। परशुरामान हाडिल्ली।
कुळाव्यांक राख्विल्लीं। कीर्ती गें तुज्जी ॥२१॥

तूंचि गे शब्द मयीं। कवितांचि नागें सवयीं।
गुरुचरित्र कृती समयीं। स्फूर्ति दीगे ॥२२॥

हे वेदज्ञा चतुरानना। तुझींच ही सृष्टिरचना।
तूं पुत्रु गा नारायणा। ब्रम्ह नामा ॥२३॥

नाभिकमल संजाता। चतुर्मुखा वेद पंडिता।
हरीक परम आप्ता। लोक गुरु ॥२४॥

नेणता जन्म कारण। सगळें जलमय देख्खून।
भयग्रस्तु तूं तत्क्षण। ध्यान मग्नु ॥२५॥

आयिकली देव वाणी। तपस्या आणि ध्यान दोन्ही।
करीत जा अश्शी ध्वनि। अयिकिलें तूवें ॥२६॥

तू साधलें तपस्यान। भास जाल्लें वेद पूर्ण।
चतुर्मुखान वेदगान। गायिले गा तूवें ॥२७॥

हे बहिर्ब्रम्हांड काया। सरस्वती तुग्गेली जाया।
हंसवाहना करिरे दया। पितामहू तूं ॥२८॥

बोधु दिल्लों सनकादिकांक। भागवत तत्त्व विवेक।
तूंचि गुरु सक्कडांक। हरि पुत्रा राक ॥२९॥

गुरु चरित्र वर्णनेक। दी तूं शक्ति बुद्धींक।
धैर्य दी दुर्बलाक। दृढ़ भाव ॥३०॥

मुख्यप्राणु गुरु महानु। तो वै तुज्जे समानु।
मारुतु तो बलवानु। जीवोत्तमु ॥३१॥

हे गुरु मुख्यप्राणा। भारतीपति पवमाना।
दीरे कवित्वाक प्रेरणा। साधकांक ॥३२॥

नवनिधी[5] आणी अष्टसिद्धी[6]। सप्तकोटी मंत्र निधी।
आप्तकामा दी दृढ़बुद्धि। राम भक्ता ॥३३॥

---

[5] महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील, खर्व हो कुबेरालि नवनिधि [6] अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व

तूं नवव्याकरण पंडितु। सूर्य देवालो शिष्यु।
जितेंद्रियु बुद्धोंतु। वज्र देहु ॥३४॥

तुग्गेल्या स्मरण मात्रान। बुद्धी बलाचि स्फुरण।
यश धैर्य वाक् त्राण। प्राप्त सत्य ॥३५॥

जीवोत्तमा गुरुवर्या। दाख्खै तुज्जी दिव्य चर्या।
भाव शुद्धि दी यतिवर्या। राक नित्य ॥३६॥

हे अंजनी नंदना। दैत्य कुल निर्दालना।
वैरी मृग पंचानना[१]। सूत्रनामा पाव ॥३७॥

हनुम भीम मध्वमुनी। अवतार घेवुनु तीनीं।
शुद्ध ज्ञान युक्त भक्तीनी। राकलातुवें आमका ॥३८॥

१ सिंह

रुद्राक राकलो विषांतून। राक्षस ते गेल्ले पोळ्नु।
भावी ब्रम्हपदाकेवुनु। रात्त भक्तांक तूं ॥३९॥

भारती पति मुख्यप्राणा। सारथि सर्वजीवगणां।
मुक्तिदाता हरि नंदना। पावगा पाव ॥४०॥

मुख्यगा तूं पवमाना। सूत्रनामका हरिनंदना।
काया वाचा कर्मणा। निष्कामुगा तूं॥

जाण तूं व्याकरण। काव्य शास्त्र यति गण।
करै तूं गुरु वर्णन। कृति रचनेन ॥४१॥

नमन करीन भारतीक। भक्तिदायकी जननीक।
मुक्त सेवित चरणांक। साष्टांग युक्त ॥४२॥

देवी तूं मरुतराणी। भक्ति दी गें हरिचरणी।
मुक्तियोग्य विचार सरणी। वैराग्य युक्त ॥४३॥

तूं गें भक्तिचें कुळार। ज्ञान वैराग्य भंडार।
दी गें भक्ति उत्तरोत्तर। ज्ञान युक्त ॥४४॥

भारती तूं वायु सती। आदर्श तुजी सेवा भक्ति।
पारकरीं संसार शरधी। कृपा युक्त ॥४५॥

मरुत पत्नी भारती। दी गें कवितेक शक्ति।
न कळें शास्त्र युक्ति। सुचवी ज्ञान ॥४६॥

हाथ जोडून मागता। सरस्वती ऐक हे स्वगता।
दाखवीगें सत्पथा। शास्त्र सिद्ध ॥४७॥

वदवी शुद्ध वाणी। शास्त्राकाशाचि द्युमणी [८]।
दी गें ज्ञान ब्रम्हाणी। ब्रम्ह ज्ञानी ॥४८॥

सकल शास्त्रांचि युक्ति। तूंचि सर्व जाणती।
जाणैगे आम्ही कुमती। विकल रुपी ॥४९॥

वचनांतु दी गें शुद्धी। आनंद ज्ञान समृद्धी।
सज्जन संगांतु बुद्धी। वृद्धिंगत ॥५०॥

शारदे वीणाधरे। ज्ञान विज्ञान चतुरे।
ज्ञान आमुचे न पुरे। काव्य ग्रथना ॥५१॥

तुग्गेलें कृपा किरण। ज्ञानोदयाक कारण।
दी गें काव्य स्फुरण। गांतीन काव्य ॥५२॥

८ सूर्य

येवुनु राब जिब्बेरि। कृपा करीगे मेज्जेरि।
वाचा ही साचाकरी। ज्ञान युक्त ॥५३॥

सून तूं नारायणाली। बाईल चतुर्मुखाली।
आम्ही तुग्गेलेंचि सांभाळी। वेळो वेळीं ॥५४॥

मिग्गेलें हे लिखाण। तुग्गेलेंचि गे तुज आण।
तुक्काचि हे अर्पण। स्वीकारी आतां ॥५५॥

हे रुद्रा ब्रम्हतनया। त्र्यंबका शिव मनोमया[९]।
क्षम करी गा अपनया। अज्ञान मूळ ॥५६॥

अभिमानी तूं मनाक। दीरे तत्वज्ञान विवेक।
बिंबरूपी[१०] संकर्षणांक। दाखैं आमका ॥५७॥

९ मनाक अभिमानि रुद्रु. १० देवु मूलबिंबु. सर्व देव-जीव ताग्गेले प्रतिबिंब.

नांव तुक्का विषकंठु। हरि दर्शना उत्कंठु।
ध्यानांतु तुक्का वैकुंठ[११]ु। विराज मानु ॥५८॥

त्रिपुरहरा गंगाधरा। नील कंठा चर्मांबरा।
धूर्जटी भव दुःखहरा। शंकरा पाव ॥५९॥

दिगंबरा नागाभरणा। कैलासवासा शिवराणा।
वदवी वदनी रामलें गुणां। चंद्र मौळी ॥६०॥

कामेश्वरा गिरीशा। कामहरा आशुतोषा।
रामेश्वरा पार्वतीशा। पवन तनया ॥६१॥

मृडेशा मृत्युंजया। निवारिरे मृत्यु भया।
कळैगा तत्वार्थ निर्भया। निटिल नेत्रा ॥६२॥

११ श्रीमन्नारायणाले एक नाव

उमापति भक्त वत्सला। रक्षिले उपमन्यु[१२] बाळा।
कृपेन ताक्का धन्य केल्लां। क्षीर दीवुनु ॥६३॥

रावणान माग्ले आत्मलिंग। केल्ले ताणे धर्मभंग।
करनाशी वचन भंग। दिल्लें इच्छितार्थ ॥६४॥

बिल्व सहित जल बिंदु। दिल्यारी भक्तीन भक्तबंधु।
पाव्तलोगा तूं कृपा सिंधु। भक्ताभिमानी ॥६५॥

वैष्णवाग्रणी शंभु। वैष्णवांक आधार स्तंभु।
जटेंतु विष्णु पादांबु। धारण केल्ले ॥६६॥

काशीनाथ विश्वेशा। व्योमकेशा उमेशा।
सौराष्ट्रवासी सोमेशा। भूतनाथा ॥६७॥

१२ एकु बालभक्तु

श्री गुरुचरितामृत

शक्तिदीगा मनांक। गुरु चरित्र बोरोंचाक।
वैराग्य विष्णु भक्तीक। दी चित्त स्थैर्य ॥६८॥

नमन गा हे खगपती। गरुडा वैनतेया सुमति।
विहगेंद्रा विष्णुप्रति। भक्ति दीगा ॥६९॥

तूं हाड्लो अमृत कलशु। सौपर्णीपती तूं खगेशु।
मातृ भक्तु तूं सर्वेशु। बस्ता तुज्जेरी॥७०॥

सोडैले मातृबंधन। करैले दाईजांक सुधापान।
दिल्ले मातेक समाधान। करैलें बंध मुक्त ॥७१॥

राखलें वालखिल्यांक[१३]। रक्षिले रामानुजाक।
समर्थ तूं हरि सेवेक। विहगोत्तमा पाव ॥७२॥

१३ एक ऋषिवर्गु

हरण केल्लें हरिमुकुट। बलिनें केल्लें हे कपट।
हाडिलें तें दीव्य किरीट। विक्रमी गा तूं ॥७३॥

कश्यप मुनि संजाता। पन्नगाशना विख्याता।
तूं प्रपन्नालो त्राता। हरि भकुता ॥७४॥

अंग तुज्जे स्वर्ण वर्ण। नांव तुग्गेलें सुपर्ण।
सदा सेविता हरि चरण। भाग्यवंता ॥७५॥

पक्षकरितीं सामगान। अपार तुझें वेदज्ञान।
विष्णुले नांव गरुडवाहन। धन्य गा तूं ॥७६॥

बैसता हरि खांद्यावरी। लक्ष्य तुग्गेले अंगुष्ठारी।
पोळोनु भोगता सुखभारी। पक्षिराजा ॥७७॥

खांद्यारि बसता नारायणु। दोन्हीं चरण धोरूनु।
नखदोन्हीं दर्पण कोरनु। नियाळता बरें ॥७८॥

धन्य तूं विष्णुदासा। खांद्यारी बसता तो श्रीशा।
भाग्य तरी मिळता लवलेशा। धन्य गा आम्ही ॥७९॥

पवन तनयु तूं शेषु। तीन्ही देहांतु व्याप्तु।
तूं गा योगनिद्रासक्तु। नागेंद्र नामा ॥८०॥

तूं गा कारुण्य मूर्ति। वारुणी पति तुज्जी ख्याति।
वर्णिताती सुजन यती। सुब्रम्हण्या ॥८१॥

शेषशयना बिर्दावळी। द्यावान प्रीतीन घेत्तिली।
सेवेन धन्य तूं विष्णुली। भाग्यवंतु ॥८२॥

हरिस्तुतीक हजार तोंड। मस्तकारी सगळें ब्रम्हांड।
नाम स्मरणेन दिव्यानंद। भोगिता तूं ॥८३॥

कीर्ती वर्णिता हरीली। कीर्ति ही तुज्जी पसरली।
ख्याति ती हरिनें दिल्लीं। तूं पूज्यु जाल्लों ॥८४॥

सांगतालो विष्णुगुण म्होणु। गेल्ली जीब तुज्जी शीर्नु।
सगळीं ही भुयीं व्होवनु। निश्चिंतु मना ॥८५॥

नारायणाली शय्या बरी। तरी अपूर्ण तूं अहंकारी।
वायुद्यावाल्यां झगडी। करीत बसला ॥८६॥

दोग्गांचि परिक्षा घेत्तली। हरिनें स्पर्धा निर्मिली।
देह राज्वानि बांधिली। गिरी अनंदाद्रि ॥८७॥

राज्वा सहीत तें गिरी। उखब्ळच्यारी वायुने तरी।
तोचिगा सर्वोपरी। श्रेष्ठ समजूं ॥८८॥

उठलें झंझावात। शेषु जाल्लो भयभीत।
खवळलें सर्व आखात। उडैलि गिरी ॥८९॥

गिरी सहित अंतरी। वायु शेषा बरोबरी।
शेषु भीवुनु बोब मारी। राकरें हरी ॥९०॥

पोळोनु शेषाली गति। मनांतु हास्लो श्रीपती।
देखरे वायु शक्ति। जगद्गुरु तो ॥९१॥

तूं वायूक गुरु मान्का। अहंकारु अभिमानु सोडका।
आनंदाद्रीक नांव पोडका। उरग गिरी ॥९२॥

तुज्जांतु कर्ता वासु। नाम घेत्ता श्रीनिवासु।
अश्शी म्हणालों जगदीशु। शेषशयनु ॥९३॥

राकगा शेष देवा। विषम विष बाधेंतु जीवा।
मागता हे महानुभावा। भूधरा शेषा ॥९४॥

अनंत नामान श्रीहरी। तुज्जांतु वसतीकरी।
म्हणोनु लोक आदरी। भजती भावें ॥९५॥

निर्विषु तूं भुजंगा। हरि व्यापिलो सर्वांगा।
अनंतु तूं सर्व नागा। गीतोक्ति गा ही ॥९६॥

अनंत म्हणताती कालाक। स्वभाव सहित जीवींक।
फाल्ता माया प्रतिबंधक। इच्छा तीं हरीली ॥९७॥

दीगा हरिचरणीं रति। सद्विचारांतु दी मती।
शेषा अनंता तूंचि गति। पावगा भक्तां ॥९८॥

पार्वती दी गें मति। दाक्षायिणी महासती।
श्रुति स्मृतींतु दी गें गति। प्रेरणा आम्का ॥९९॥

शर्वाणी सर्व मंगला। शैलजा षोडशकला।
निरंजनी तूं चित्कळा। नमस्कार तुका ॥१००॥

तूं पतिव्रता शिरोमणी। देह त्यजिलें यज्ञाग्नि।
पति निंदा पितृ वदनीं। ऐकतां क्षणा ॥१०१॥

त्यजिले देह योगाग्नि। योगिनी तूं दाक्षायिणी।
गिरिराज तनया शिवराणी। शमवी दुःख ॥१०२॥

तू गिरिराजा किशोरी। ईशानी परम सुंदरी।
गणेश जननी गौरी। मंगळांगी ॥१०३॥

तपस्विनी तूं गौरवर्णा। नांव तुग्गेलें अपर्णा।
शिवाली तूं पंचप्राणा। अग्निवर्णा ॥१०४॥

सुगंधी देह मृत्तिका। ताज्जेन निर्मिलें बालका।
नाव दवरिलें गणनायका। विघ्नराजा ॥१०५॥

आडविले ताणे मृडाक। सोडना भित्तरी कोणाक।
रुद्धु कोप्लो क्षणिक। काप्लें गा शिर ॥१०६॥

जोडिलें हस्ति वदन। पावली तूं समाधान।
दिवैलें प्रथम पूजन। गज मुखाक ॥१०७॥

तूं गें तुळजाभवानी। तूं लक्ष्मी आवेशिनी।
संपद्यश प्रदायिनी। अन्नपूर्णा राक ॥१०८॥

विघ्नेश्वरा गजानना। विनायका विघ्न हरणा।
कार्यारंभी वंदितो चरणा। सिद्धि देगा ॥१०९॥

गगनाभिमानी गणेशा। मारिलें सिंधूरादि राक्षसा।
विद्या बुद्धि दीगा विशेषा। अघनाशा ॥११०॥

अरंभाक तुग्गेलें स्मरण। करीत तरी सिद्धिकारण।
विस्मरण पावल्यारी सकल कर्म। बुडले हे सत्य ॥१११॥

रावणाक घडली विस्मृति। तो पावलो यम नगरी।
धर्मजान केल्ली भकुति। पाळिली पृथ्वी ॥११२॥

एकदंता मोदक प्रिया। मंगलमूर्ते सदया।
व्यासोक्ति लेखकु अव्दया। कविवर्यु तूं ॥११३॥

न कळे शास्त्र गंभीर। नेण हांव वेदांत सार।
कळेना गा कवि चमत्कार। तूंचिगा सर्व ॥११४॥

कळेना तर्क व्याकरण। ना सरस कविता रचन।
ना वाद विविध व्याख्यान। न कळें बापा ॥११५॥

तुझी माता पितृ भक्ति। एकी प्रदक्षिणा आणि स्तुती।
अखंड पुण्याचि कीर्ति। संपादी क्षणी ॥११६॥

मोरया दी इष्टार्थ। गुरु गानाचे सामर्थ्य।
शब्दालंकार सकलार्थ। प्राकटच शक्ति। ॥११७॥

समुद्र मथनाक मेळलें। देवासुर सर्व जमलें।
सर्वांक आमंत्रण दिल्ले। विसर्ले गजवक्त्रा ॥११८॥

विघ्न घडले त्या क्षणा। तूंचि घडविलें गजानना।
देवासुरांक कळेना। स्मरले हरीक ॥११९॥

रूप घेतले गजमुखालें। पूजा हरीन स्वीकारलें।
उपरांत तुक्का कळ्ळें। महिमा हरीलि ॥१२०॥

भाद्रपद चौति दिवसु। घे तूं पूजादि विशेषु।
इतर दिवसा अर्चा अशेषु। विश्वंभराक ॥१२१॥

हरिआज्ञा स्वीकारून। भान्तातें गजाननु।
हरि भक्तांक विघ्नदीवुनु। अपराध करना ॥१२२॥

विनायका तू श्वेतवर्णा। कृत युगांतु शिखिवाहना।
त्रेति सिंहस्थु जाण। मूषिकध्वजु ॥१२३॥

गजवदना एकदंता। शिवतनया प्रशांता।
दीरे भक्ती भाग्यवंता। भजकांक ॥१२४॥

सकल कलाभिमानी। नृत्य संगीत प्रेमि।
दीरें रति हरिभजनी। पावगा आत्तां ॥१२५॥

ऋद्धि सिद्धि दोघिं जन। धन्य गा तुज्जे सेवेन।
विद्या बुद्धीक कारण। विनायका तूं ॥१२६॥

मोरया मंगल मूर्ति। सुचवि गा शास्त्र संगति।
सकल सत्कर्मांतु गति। दीव्नु राक ॥१२७॥

विघ्नेशा विनायका। ज्ञान आणि बुद्धी दिवका।
अंबरेशा[14] गणनायका। ज्ञान दाता ॥१२८॥

तूं सकल कलेचो आगरू। ज्ञान भंडारु महोदरु।
संगीत साहित्याचो मेरु। नाटच्याचार्य तूं ॥१२९॥

हेरंबा शुभारंभा। जननी तुग्गेलि जगदंबा।
विश्वंभरालो प्रतिबिंबा। दीगा सन्मती ॥१३०॥

गुरु गुण गानाचि शक्ति। दीरे शब्दार्थ संपत्ती।
म्होणुचि कोर्नु ही स्तुति। आरंभिता ग्रंथु ॥१३१॥

लक्ष्मी भारती सरस्वती। वारुणी सौपर्णि महासती।
दीयागें तुम्ही सन्मती। मति दुर्बलाक ॥१३२॥

१४ आकाशाभिमानि.

चतुराननु मुख्य प्राणु। गरुड शेष रुद्रादि मेळनु।
दासाक भक्तिज्ञान दीव्नु। करैय्या कृति काव्य ॥१३३॥

स्मरुयां नारायणांक। आदिगुरु ब्रम्ह वायूंक।
तेंचि गा गुरु जगाक। जगद्गुरु खरेंचि ॥१३४॥

जगद्गुरु मुख्य प्राणु। द्वापरेंतु भीमु म्होणु।
कलियुगांतु मध्वजावुनु। अवतार तीनी ॥१३५॥

अवतार हे तीन्ही। केल्ले हरि आज्ञेनि।
साधकांक मार्ग दाख्खोनु। केल्लो उद्धारु ॥१३६॥

गुरुलें गुणगान कऽरीं। गुरु दित्ता मुक्तिचारी।
गुरुंक प्रसन्न कऽरीं। धरी चरण ॥१३७॥

रुष्टलो[१५] तरी हरी। राक्ता तो गुरु कैवारी।
गुरु रुष्ट जाल्यारी। नारे हरि कृपा ॥१३८॥

चिंताम्मणी कल्पतरु। त्या पेक्षा अधिक सद्गुरु।
स्वर्ग भोगादि परिकरू। व्यर्थ जाण ॥१३९॥

चिंताम्मणी चिंतितार्थ। कामधेनु काम्मितार्थ।
कल्पतरु कल्पित स्वार्थ। करीत पूर्ण ॥१४०॥

कामना कल्पना चिंता। नाश कर्ता गुरु सर्वथा।
आनंद स्वरूपाचें महत्ता। कळैता गुरु ॥१४१॥

गुरु कर्ता मार्ग दर्शन। करैता तत्त्व चिंतन।
विस्सैरता देह भान। दित्ता ध्यान दीक्षा ॥१४२॥

१५ कोप्लो.

आपादमौळि पर्यंत। गुरुलें स्मरण करीत।
निवारण गा विघ्न जात। सत्य समझ ॥१४३॥

गुरु शरणांक नारे भीती। गुरु भक्तांक हरि प्रीति।
स्मरण मात्रान ग्रहगति। अनुकूल जात्तलें ॥१४४॥

गुरुराजु निष्कामु। तो इच्छिता शुद्ध प्रेमु।
शिष्यांक अस्सुका हो नेमु। गुरु भक्ति ॥१४५॥

वेगवेगळें शिष्य गुरुंक। वेगवेगळें गुरु ना शिष्यांक।
एकलो गुरु साधकांक। बुडतातो बहु गुरु ॥१४६॥

गुरु दित्ता तत्त्वज्ञान। निवारिता अन्यथा ज्ञान।
योग्यता पोळोनु साधन। सांगता सरळ ॥१४७॥

बळकट कोर्का साधन। खूंट घट्टि असल्यारी दळण।
नातल्यारी व्यर्थ भ्रमण। गतानुगतिक ॥१४८॥

गुरु निंदा कदा न करी। ऐकल्यारी नरकूचि भारी।
दुःख भोगता जन्मांतरी। शास्त्र वचन ॥१४९॥

गुरु शिवाई ना परमार्थु। गुरु वचन चि शास्त्रार्थु।
गुरु कृपेन परार्थु। करतळी तुक्का ॥१५०॥

वसिष्ठु रामालो गुरु। सांदीपु तो ज्ञानमेरु।
तोचि गुरु म्होणु निर्धारु। केल्लो कृष्णान ॥१५१॥

गुरु चरणाचि मृत्तिका। कोण धरीत मस्तका।
तोचि गा परमार्थ सखा। अधिकारी खरें ॥१५२॥

गुरु चरण पादुका। भवार्णवांक[१६] नौका।
तारिलें अनेकानेका। साधकाक ताणे ॥१५३॥

गुरु वचन तो वेदु। ताज्जेन शास्त्र बोधु।
सोडिरे बुद्धि भेदु। गुरु शरण जारे ॥१५४॥

घेरे गुरु दर्शन। व्यर्थ श्रमु शब्द ज्ञान।
सगळे शास्त्रांचे वळण। सद्गुरु कडे ॥१५५॥

गुरु वैराग्य निधि। गुरुंतास्स हरि सन्निधि।
शरणु जा पदोपदी। धन्य गा तूं ॥१५६॥

दवरी पदांचेरी मस्तक। मुक्त्यांगना[१७] तुजि हस्तक।
फिरैता कित्त्या पुस्तक। व्यर्थ जाण बा ॥१५७॥

१६ संसार समुद्र. १७ मुक्ति म्होण्चि स्त्री.

गुरुपदांचे रज[१८]। ते भवरोग भेषज[१९]।
गुरु निरंतर भज। सकलार्थ सिद्धि ॥१५८॥

गुरुक नमस्कारु कोरनु। सेवा सहित दवरीप्रश्नु।
गुरु अज्ञान काण्णु। दित्ता निज बोध तुक्का ॥१५९॥

गुरुचेरी विश्वासु धरी। गुरु मार्गु अनुसरी।
गुरु तुज्जा बरोबरी। सदैव आसता ॥१६०॥

गुरु अस्तातित तीनी तरेचें। क्रौंच[२०] कूर्म मत्स्य रूपांचें।
तांगेल्या कृपेनेंचि। बंध आणि मुक्ति तुज्जी ॥१६१॥

पिल्लां बर्शि मासोळी। नाना विधाचि जलकेळी।
जाल्लें चि खरे प्रवाही। वेग वेगळी ॥१६२॥

१८ धूळि. १९ वोक्कद. २० एक जातिचि पक्षि.

पिल्लं पावली बहूदूर। आवैई आठैं दिवस भर।
परिणाम पिल्लांचेर। पुष्ट जात्ली पिलां ॥१६३॥

अंड घालुनु रेवेरी। निपता कूर्म जलांतरी।
दृष्टि क्षेप नित्य करी। प्रगटताती पिलं ॥१६४॥

गुरुचे ध्यान तरंग। स्पर्शिता शिष्यांतरंग।
पुष्टि तुष्टिने सर्वांग। स्फुरण गा दिव्य ॥१६५॥

गुरु करी कटाक्षवीक्षण। अज्ञानावरण छेदन।
तज्जेन स्वरूप ज्ञान। प्राप्त गा नित्य ॥१६६॥

गुरून दिल्यारी शास्त्रज्ञान। तुटता गा भव बंधन।
जन्म मरणांचें भ्रमण। चुकता हे सत्य ॥१६७॥

गुरुकृपेन सर्व सिद्धि। गुरु कृपेन ज्ञान वृद्धि।
धन धान्य समृद्धि। नित्य वाढी ॥१६८॥

गुरु कृपेन परिहारु। जात्ता अज्ञान अंधकारु।
उदयिता ज्ञान भास्करू। नितळतारे भ्रम ॥१६९॥

धरिले गुरून मौन। तेंचि शास्त्र व्याख्यान।
संशय तें निवारण। जात्ता शिष्य जना ॥१७०॥

गुरु सकल तीर्थ स्थान। घेतल्यारी तांचे दर्शन।
सकल पाप निवारण। जात्लो पुण्य प्राप्ती ॥१७१॥

गुरु महिमा वर्णून। श्रमलें गा साधु सज्जन।
गुरूपदेश चिंतनेन। जालेगा मौन ॥१७२॥

मूढ़ जाल्लें ज्ञान प्रचुर। जाल्लें मूक वाक् चतुर।
मूर्ख जाल्लें संत प्रवर। गुरु कृपेन आईक ॥१७३॥

मनान वाचान एकु। गुरुक ना मोह शोकु।
तो ज्ञानाचो प्रतीकु। तेजः पुंजु ॥१७४॥

गुरु प्रेमाचो पुतळो। शिष्यु तरी मंदु भोळो।
दितलो ज्ञानाचो डोळो। म्हणैता ताक्का ज्ञानी ॥१७५॥

आवई तरि मोगाळीं उरता। भुग्र्याक भरपूर मेळता।
जो गुरूक आवई म्हणता। तोचि शिष्यु धन्यु ॥१७६॥

हरि हर ब्रम्ह स्वरूपु। गुरु नाम रूपातीतु।
हो अर्थवाद्याचो [21] आरोपु। खरें नई पळे ॥१७७॥

[21] स्तुतिपर

खरो गुरू नारायणु। सर्वज्ञु सर्व कारणु।
त्या उपरांत मुख्यप्राणु। आधीन हरीक ॥१७८॥

सगळें हरींचे प्रतिबिंब। अस्वतंत्र अवलंब।
हरी सगळच्याक बिंब। ब्रम्हादिकांक ॥१७९॥

कोणा हांव गुरु म्हणता। त्या गुरूक नमन करता।
नमस्कार पूर्वक लोळता। त्या चरणांचेरि॥

मिग्गेले स्वरूपोद्धारक। हरिकथेक प्रेरक।
सुधींद्रनामक गुरूक। कर्ता जयकारू ॥१८०॥

जय जय श्रीगुरुवरा। कृपा करी यति प्रवरा।
तूं तारकु भवसागरा। श्री सुधींद्रा पाव ॥१८१॥

यतींद्रा परमहंसा। वसती ती व्यास मानसा।
सदा ब्रम्हजिज्ञासा। करता तूं गहन ॥१८२॥

गुरु तुग्गेलों आचारू। तोंचि शास्त्राचो विचारू।
तूं सत्वाचो साकारु। ज्ञान मेरू ॥१८३॥

जय जय व्यास कुवरा। संन्यासी रत्नाकरा।
दी गा मति उदारा। लिखाण हे तुज्जे ॥१८४॥

मूलनारायण अंकित। दिल्यारीई मन शंकित।
दुर्विषयान कळंकित। कर्म क्षेत्रा ॥१८५॥

ओवळच्यांचि ही वोवळां। शिंपीन चरणतळा।
खरे पाव ज्ञान दुर्बळा। मंद बुध्दिीक ॥१८६॥

तुज्जो म्होणु सांभाळी। चरित्र बरोचा वेळी।
कळैई वेळोवेळी। महिमा ती तुज्जी ॥१८७॥

सद्गुरु माक्का सुधींद्र। परमगुरु सुकृतींद्र।
आणि राघवेंद्रयतींद्र। हे त्र्यंबक[२२] गा मेग्गेलें ॥१८८॥

गुरु म्होण्चें एक तत्त्व। सर्व शास्त्रांचे सत्त्व।
हरिकृपा शिवाई गुरुत्व। मेळचे ना समज ॥१८९॥

देव गुरुचेरी भक्ती। सारिखी असो ही युक्ती।
उपनिषदांचि ही उक्ती। स्वीकारू कोर्या ॥१९०॥

सांगतालो गुरुरायु। हे बरपाक उपायु।
धर्ता गुरुलो पायु। कळैताती मक्का ॥१९१॥

२२ तीनिदोळे

गुरु आणी गुरु सदृश। ताच्लागि मागता यश।
दिवका तुम्हीं आयुष्य। ज्ञान भक्ती ॥१९२॥

श्री हरि सर्व प्रेरकु। गुरु म्हण्यारी हरी प्रतीकु।
प्रधान म्होणु श्रीपराकु। सांगता श्री सुधींद्राक ॥१९३॥

गुरु चरित्र नावान। कर्ता गुरुचें स्तवन।
हीच गुरु दक्षिणा म्हणून। स्वीकार करी श्री गुरु
॥१९४॥

आतां वंदीन विप्रांक। भूमंडलाचें वैष्णवांक।
मध्वानुयायी सज्जनांक। शरणु म्हणेन ॥१९५॥

तांका म्हणताती भूदेव। साधु सात्विक पुण्य जीव।
तांगेले चरण सदैव। मुक्ती मार्गूंचि सत्य ॥१९६॥

तुमचें दर्शन तीर्थस्नान। पावुलचि पुण्य स्थान।
तुमचें आकृती वचन। सोपान मुक्तिचें ॥१९७॥

ना तुमका आपपर। नांति इंद्रिय व्यापार।
उरला केवल शरीराकार। जीवन्मुक्त तुम्मी ॥१९८॥

अहो संत मंडळी। करा सहाय ह्या वेळी।
गुरु गुण गानाचि ओवळीं। रचन कर्ता ॥१९९॥

पावन सह्याद्रिमूल। सोमेश्वराख्य शिवस्थळ।
सारस्वत ब्राम्हण कुल। वास कर्ता थांगा ॥२००॥

प्राचीन दोन देवळं। असति जवळ जवळ।
वेंकटेश सोमेश प्रबळ। एकी कडे ॥२०१॥

भजताती सकळीक। भक्तीन इष्ट प्राप्तीक।
सर्वै हरि प्रतीक। समजून भावें ॥२०२॥

कौंडिण्य तें गोत्र। आश्वलायन गृह्य सूत्र।
षट्कर्मीनिरत[२३] सत्पात्र। शाकल शाखेचे ॥२०३॥

नांव ते अनंतशर्मा। चलैता वैष्णव धर्म।
ना गा परस्पर वैशम्य। वेद धर्मा ॥२०४॥

कृषि वाणिज्य वृत्ति। तरी अध्यात्म प्रवृत्ति।
वेद शास्त्रांतु निष्पत्ती। अपारु गा ताक्का ॥२०५॥

स्वभावु दान धर्माचो। व्यवहारु अर्थ कामाचो।
व्यापारु चल्लों नष्टाचो। बुडलें सर्व ॥२०६॥

२३ ब्राम्हणाले सहा कर्तव्य.

ग्रामदेवु सोमेश्वरु। इष्टु तो वेंकटेश्वरु।
नष्टलो व्यारुव्यापारु। दारिद्र्य नित्य ॥२०७॥

संतान असती तीनि। चेल्लीं आणि चेल्ले दोनि।
नागेशु आणि नागवेणी। तिसरो तो वेंकटु ॥२०८॥

भुग्र्यासहित देवळांतु। घाली वेळु सेवेंतु।
नागेशु वेंकण्णु त्यांतु। निष्णात जाल्ले बरें ॥२०९॥

भुग्र्यांक बरें कोर्नु। तांचि सेवा स्वीकारून्नु।
उद्धरी हे कुल म्होणु। मागणि अनंताली ॥२१०॥

नागप्पाक्कायिलें तारुण्य। कोण जाण हरि कारुण्य।
तोंडारी तेज नाविन्य। दिसले त्या बाळा ॥२११॥

नागप्पाक आंगारी। कालभैरवाली स्वारी।
आईला आवेशु भारी। पोळोनु भिल्लें ॥२१२॥

आवेश युक्त देव वाणी। नागप्पालि ऐकूनि।
प्रार्थिले महाजनानी। आश्चर्य भावें ॥२१३॥

देव प्रसादु जाल्लो। ताणेंचि पात्रि निवडिलो।
दर्शनाचो वैभवु वाढ़लों। पसरली कीर्ती ॥२१४॥

धाख्लेक ना शिकवण। मुग्धतेचे बाळपण।
व्यर्थकरी काल हरण। उदरंभरण ॥२१५॥

हे वेंकटरमणा। करिरें गो रक्षण।
तांचे सेवा पोषण। केल्या कृष्णान ॥२१६॥

बरे म्हणालो बालकु। बाप्पोइलो आज्ञा धारकु।
आपण गो पालकु। म्हणता धन्य ॥२१७॥

श्रद्धायुक्त ही सेवा। करीन स्वीकरिरे देवा।
महानुभावा माधवा। करी दया मेज्जेरी ॥२१८॥

गोसेवेन उद्दालकु। जाल्लों ज्ञानी प्रमुखु।
म्होणु धर्ला विवेकु। वेंकटून ॥२१९॥

प्रपंचु परमार्थु। सामके वाढ़ले निस्वार्थु।
मैळैलों सकल पुरुषार्थु। यत्नान बरें ॥२२०॥

स्वीकारिलें गृहस्थाश्रम। साधिले अर्थ काम।
तरी प्रारब्धाचोनेम। चुकोच्या जाईना ॥२२१॥

घडलो पत्नी वियोगु। ना गा संतान योगु।
दुसरो लग्न भोगु। ऋणानु बंध ॥२२२॥

नांव तें रुक्मिमणी। नीती धर्मांचि खाणी।
पतिव्रता शिरोमणी। मुग्ध नारी ॥२२३॥

रुक्मिमणीक प्राय सान। जन्मल्यों चेल्यों दोन।
सरले आयुष्य पुण्य। सरलें दोन्ही ॥२२४॥

असहनीय तें दुःख। जाणतो बरे कोण।
रुक्मिमणीलें हृदय शोक। शिशु वियोगाचे ॥२२५॥

अद्भुत रे सृष्टिलीला। त्रिगुणात्मिका[२४] ती स्थूला।
विसरैता दुःख जाला। बांधी परत ॥२२६॥

२४ सत्त्व-रज-तम ही त्रिगुण.

मागिरी प्रसवली रुक्मिणी। ते वै दोन कन्या मणी।
कमला शांता म्होणु। दवरिलें नांव ॥२२७॥

पुरुष संतानाक आणी। केल्लीं देवाकडे मागणी।
देव मायानुसारिणी। घडले अशिश ॥२२८॥

सरलें भूईंचें ऋण। दैवी महिमा कोण जाण।
सर्व सोण्णु दंपत्यान। केल्ले प्रयाण दक्षिणांक ॥२२९॥

सुवर्ण नदी तीर। वेदाचल तिज्जे कुळार।
त्यातीरीं मध्वमुनिवर। जन्मले पूर्वि ॥२३०॥

त्या नईच्या तटाकारी। गांवु तो भद्रगिरी।
वीर विठलु श्रीहरी। प्रगटु गा थईं ॥२३१॥

गांवचे नांव भद्रगिरी। विख्यात क्षेत्र भारी।
हेंचि दक्षिण पंढरी। म्हणताती जन ॥२३२॥

अईका क्षेत्राचे परिसर। पवित्र आणी सुंदर।
नाना जातिचे तरुवर। शोभाय मान ॥२३३॥

नाना मृग संकीर्ण। मृदु मधुर पक्षि गान।
भू देवी वैभव पूर्ण। प्रगट हांगा ॥२३४॥

पाजक नामक क्षेत्र। आस्स क्रोश तीनी मात्र।
वैष्णवांक तें पवित्र। मध्वाली भूमि ॥२३५॥

श्री कृष्णु अनंतासनु। रौप्यपीठांतु विराजमानु।
चंद्रमौळी नागाभरणु। सेवा कर्ता हरीली ॥२३६॥

अब्जारण्य अति पावन। पंच दुर्गाले स्थान।
समुद्रराजाली घोषण। ती वै हरी हरी ॥२३७॥

तत्त्ववादांचे[२५] स्वामि। अष्टमठियाली भूमि।
ते मध्वाले अनुगामि। वैष्णव तपो निष्ठ ॥२३८॥

पवित्र गा मध्व सरोवर। भागीरथि जाल्या साकार।
स्नान दर्शनान पाप दूर। जात्ता हे निश्चय ॥२३९॥

वेंकटेशाले द्यावाळ। गौडीय सारस्वतालें स्थळ।
पूजा पुरस्कार त्रिकाळ। चलता तंत्रसारोक्त ॥२४०॥

श्री शंकरनारायणु। क्रोढ पुराचो महानु।
भूत क्षेत्रांचो यजमानु। तौलवांचो ॥२४१॥

२५ मध्वमताचे.

भूमि ही परशुरामाली। तत्त्व ज्ञानी पूर्णप्रज्ञाली [२६]।
कल्याणपुर नेयिंपळ्ळी। तांचि लीला भूमि ॥२४२॥

दुर्गेली विमानगिरी। विठलाली भद्रगिरी।
कृष्णाली कोळलगिरी। ही सर्वै पुण्य क्षेत्र ॥२४३॥

नाना कलेंचे भंडार। यक्षालों गांव अजपुर।
तौलवालें बार्कूर। गुरु भूमिगा मध्वाली ॥२४४॥

श्री मठ भंडारकेरी। अच्युतप्रज्ञाल्या [२७] प्रभावारी।
लोक ख्यात जाल्या भारी। नगरी विद्वांसाली ॥२४५॥

बारकूर कल्याण नगरी। मध्ये शोभता भद्रगिरी।
मध्वार्चित विठलु हरी। मेरवता हांगा ॥२४६॥

२६ मध्वाचार्य २७ मध्वाचार्याले गुरु.

भद्रगिरींतु तिळ्साना। आयकता ताळ मृदंग कान्ना।
बाळ भुर्गि नांचोनि तेन्ना। रिंगण घालताति सहज
॥२४७॥

अस्सली संस्कारित[२८] भूमि। गावांतु कोणि ना रिकामि।
श्रद्धावंत सश्रमि। भावुक गा जन ॥२४८॥

कामेश्वरू ग्रामदेवु। विठलु सगळ्यांक जीवु।
यति एकलो महानुभावु। पुजिता विठलाक ॥२४९॥

कालांतरांतु यतीन। आचार्य घराण्यांतून।
आचार संपन्नांक निवडून। दिल्ली पूजा विठलाली
॥२५०॥

२८ परिशुद्ध

मोगाचें नांव रंगाचारी। शिकला वेद चारी।
तत्त्वज्ञानी सुविचारी। भक्तुगा विठलाचो ॥२५१॥

रंगाली पत्नी यमुना। रुक्मिणीक म्हालगडी निस्सीमा।
तांचो वासु कल्याणग्रामा। पेल्तान गा सुवर्णेच्या ॥२५२॥

विठलाल्या पूजेक। नेमिला रंगाचारीक।
पत्नीसहित भद्रगिरीक। आईलो पुजेक नित्य ॥२५३॥

घटना ही जाणता कोणु। रुक्मिणी वेंकटरमणु।
भुग्र्यांक दोनि घेवुनु। पावली देवळाक तेन्ना ॥२५४॥

अपरिचित्त दंपती। गांवि बंधु कोणी नांति।
म्होणु विठलूचि गती। राकरे बापा ॥२५५॥

भुग्र्यांसहित तरुणि। आईल्या पळैंता यमुनि।
वोळ्कली भैणिक क्षणी। आलिंगिले अश्रुपूर्ण ॥२५६॥

उचंबळली उत्कंठता। वाचा निपली अश्रुपाता।
रंगाचारी हे पळैता। पुसता गलिताश्रु ॥२५७॥

परस्पर कुशल वार्ता। सगळी रात्री खैं पुरता?
बाईलालें उत्र काहिसर्ता? उद्देलो सूर्यू ॥२५८॥

त्या उपरांत यमुना। सांगता भैणिक सुमना।
प्रारब्धु खैं चुक्कना। पाव्ता देवु ॥२५९॥

राबगो भद्रगिरींतु। विठलालें सन्निधानांतु।
आम्हि केल्लेल्या पूजेंतु। भागी गो तूं ॥२६०॥

उत्रं आईकूनु भैणिलें। बाम्मणांक समजाईलें।
दोग्गानि निर्धारिलें। रावलें भद्रगिरींतु ॥२६१॥

अरंभिली वैश्य[२९] वृत्ति। विठलारी दवोर्नु भक्ति।
वेंकण्णु तो चतुर मति। वाढैली वृत्ति ॥२६२॥

देवाले दयेन वृद्धि। जाल्ले धन धान्य समृद्धि।
जाईनी संतान सिद्धि। जाईतति केद्ना ॥२६३॥

चिंता ही दंपतीक। व्रतकोर्या संततीक।
कोर्या दान धर्मादिक। यात्रा सहित ॥२६४॥

शांभवी नदीं तटाचो। भक्तांक बेग्गि पाव्चो।
इष्टार्थ शीघ्र दीव्चो। नरसिंहु मुलिके चो ॥२६५॥

२९ व्याप्परु

सांगून घे अंगवण। प्राप्त जात्ले संतान।
सांगताती अश्शी बहुजन। रुक्मिणीक ॥२६६॥

श्रद्धेन केल्लें अंगवण। नरसिंहाक साष्टांग नमन।
कर्ता वेंकटरमण। रुक्मिणी सहित ॥२६७॥

द्यावाल्या कृपेन। जाल्ले पुत्र संतान।
केल्लें नामकरण। नरसिंहु म्होणु ॥२६८॥

पोळोनु पुत्र वदन। धन्य म्हणताती जन।
कुंडली रचली गहन। आयुष्य थोडे ॥२६९॥

सकल कला निपुण। जात्तलो कीर्तीमानु।
पुण जिविताांतु अपूर्णु। क्षिणायु गा हो ॥२७०॥

सकल ग्रहांतर्गतु। लक्ष्मीनरसिंह शांतु।
राखतालो आयुष्यांतु। करीत वृद्धि ॥२७१॥

अश्शीं म्हणिण ज्योतिष्यालि। आईकून तृप्ति मेळ्ळी।
उपरांत सर्व विसरली। माता पितृ ॥२७२॥

नरसिंहाली बाललीला। प्रगटली अभिजात कला।
सगळ्यांक मोगाचो जाल्ला। प्रथम पुत्रु ॥२७३॥

स्वभावांतु दयाळु। मनांतु बहु मोवाळु।
संगीत साहित्यांतु प्रबलु। सर्व मान्यु ॥२७४॥

हरिकथा यक्षगान। करतलामलक जाण।
म्हणती मुग्ध ग्रामीण जन। गंधर्वु गा हो ॥२७५॥

मेळ्ळे सर्वत्र धन मान। सरले आयुष्य संपूर्ण
पीडित जाल्लो क्षयान। नरसिंहु क्षीणु ॥२७६॥

वर्ष केवळ सोळा। मावळल्या तोंडाकळा।
निराशा पसरली सकळा। शून्य भाव ॥२७७॥

रुक्मिणीली आशा ज्योति। क्षीण जाल्लि दिनंप्रति।
चोईताती निर्विकार चित्तिं। माता पितृ ॥२७८॥

तुंटले आयुष्य तंतु। बाप्पैन उच्च स्वरांतु।
नरसिंहा राकगा तूं। म्हळ्ळे गद्गदित जाव्नु ॥२७९॥

रुक्मिणी जाल्लीं अंतर्मुखि। ती तरी नित्य दुःखि।
वाचा रहित सम्मुखि। स्तंभी भूत जाल्या ॥२८०॥

नाक्करे द्यावा संसारू। दुःस्सह रे दुःखभारू।
कोण करीत पारु। भव समुद्दु ॥२८१॥

काहीं दिवस गेल्लें। पक्ष मास सरलें।
आशा बीज अंकुरले। संतानाचे ॥२८२॥

यमुना सांगता रुक्मिणी। करी भक्तीन मागणि।
विठलाक मुळिकानी[30]। कोर्या नैवेद्यु ॥२८३॥

नैवेद्यु शुक्रुंडो चो। विठलाक प्रीति चो।
संप्रदाय हांगाचो। कोर्या आम्ही ॥२८४॥

तरी जाल्लीं पुत्र संतती। वाढ्ढैतलीं तागेली कीर्ति।
हीचि अंगवणाचि रीति। आमुचि म्हणूया ॥२८५॥

३० शुक्रोंडो.

बुधवारु तो विष्णु वारु। केल्लो नैवेद्यु वारंवारु।
भक्तीन मागणी अपारु। कर्तीति पुत्र प्रेमें ॥२८६॥

विठला तूं सृष्टिकर्ता। सर्वज्ञा सर्व समर्था।
संतान दींगा समर्था। तुग्गेलेंचि म्होणु ॥२८७॥

गर्भांतु राक्कलें परीक्षिताक। दिल्ले अचल पद ध्रुवाक।
रक्षिले प्रल्हाद बाळाक। अग्निमुखांतु ॥२८८॥

तूं राख्खिले गजेंद्राक। पावलो अजामिळाक।
अमृत प्राशिलें[३१] देवांक। पावगा आमका ॥२८९॥

गोपिका जाल्लीं धन्य। गोंप जाल्लें सर्वमान्य।
शापग्रस्त अनेक अन्य। उद्धार जाल्लें ॥२९०॥

३१ पियैले

दीगा पुत्र संतान। करीन तुक्काचि अर्पण।
अस्सोंति आयुष्यपूर्ण। वर्णिता कीर्ति ॥२९१॥

रुक्मिणी करी एकादशि। ब्राम्हणानि जेव्नाशि।
आपण जेव्ना द्वादशि। निष्ठा तिज्जे श्रेष्ठ ॥२९२॥

अतिथि अभ्यागतांक। अन्नदान देव विप्रांक।
गोग्रास वायसबळीक। आद्यता तिग्गेलि ॥२९३॥

रुक्मिणी वेंकटरमण। कर्तांति समान चिंतन।
भू हिरण्य गो धन। वाढ्ढैता देवु ॥२९४॥

कामेश्वरु ग्रमदेवु। तो तरी रुक्मिणीलो जीवु।
भक्ति तिज्जो स्वभावु। मुग्ध भाव ॥२९५॥

अन्न वर्ज्य सोमवारु। घाल्ता रुद्राक नमस्कारु।
मनाक दी भक्ति निर्धारु। मागता गंगाधराक ॥२९६॥

अशिशकर्ता प्रार्थना। सांजवाळ घेत्तादर्शन।
संपता तिज्जे उपोषण। भोजन अल्प ॥२९७॥

शिव केशव उपासना। चल्ला पठण पारायण।
दिसलें गा गर्भ लक्षण। रुक्मिणींक ॥२९८॥

भरले गा नवमास। दिसले काहीं विशेष।
रुक्मिणीक ना आयास। प्रसव काळांरी ॥२९९॥

पवित्रु माघ मासु। शिवरात्रिचे दिवसु।
जन्मलो बाळु विशेषु। पुण्य पुंजु ॥३००॥

गावांतु जागरण। उपोषण आणी भजन।
हर्षलें रुक्मिणीलें मन। पवलो देवु ॥३०१॥

शिवरात्री की नवरात्री। चल्लें चेर्डु हे खात्री।
वांचोनि ओरो पूर्ति। तितलें पुरो ॥३०२॥

गांव्चालों हो उद्गारु। मत्सर्यालो तिरस्कारु।
दोनी समानु स्वीकारु। दंपतीक ॥३०३॥

अनंतपद्मनाभालों भक्तु। पेर्डूरु अण्णप्प नायकु।
यक्षगानाचो गायकु। बप्पै रुक्मिणीलों ॥३०४॥

नात्वालें घेत्लें दर्शन। केल्लें प्रेमान नामकरण।
अच्युतु हे अभिधान। आज्जान दिल्लें ॥३०५॥

तीर्थ प्रसादु नरसिंहालों। गंध प्रसादु कामेश्वरालो।
आशीर्वादु पद्मनाभालों। भाग्य शिशुलें ॥३०६॥

रुक्मिणी तरी निर्मम। पुढलें चिंतून न मम।
पठण कर्ता विठल नाम। रक्षा ती बालकांक ॥३०७॥

कुंडली बरेईलीं त्वरितान। कड्डी श्रीनिवास शेणैन।
श्रेष्ठु हो गुरुबलान। सर्वार्थ सिद्धि ॥३०८॥

भोक्ता सर्व सुख भोगु। घड्तलो सती वियोगु।
कुटीचक[32] यति योगु। आस्का बरे ॥३०९॥

आरोग्य बहु मंद। रूप लावण्य चंद।
ना आधुनिक्क विद्या गंध। तरी पंडिताग्रणी ॥३१०॥

३२ सन्यासाचो एकु प्रकार

गुरु बलान सकल सिद्धि। कीर्ति आरोग्य समृद्धि।
सगळांतु अध्यात्म बुद्धि। बालकाक ॥३११॥

रुक्मिणीक पूर्व शोक। नरसिंहालें उड्गासाक।
जन्मलेल्यां बालकाक। दी आयुष्य देवा ॥३१२॥

जन्मा आईलीं चांगि घडी। बाप्पैक संपत्तीचि वाढी।
गावांतु कीर्तिचि जोडी। दैव कृपे ॥३१३॥

विठलु तो उदारी। अशिश कीर्ति चराचरी।
रुक्मिणी गर्भिणी दुसरी। तेजोन्वित ॥३१४॥

भक्ति वाढ्ली देवाचेरी। पूर्ण कर्ता इच्छात्वरी।
अशिश रुक्मिणी अंतरी। चिंतितली ॥३१५॥

गर्भवति रुक्मिणी। आईकितली अंतर्वाणी।
येत्लो भक्त शिरोमणी। गर्भा आपुल्या ॥३१६॥

एकादशी आइली शयनी[३३]। सगळी भजनेंतु उन्मनी।
प्रसवली तेन्ना रुक्मिणी। पुण्य गर्भा ॥३१७॥

दुसरे हे पुण्य संतान। दिल्ले देवा विठलान।
चेतन हेगा महान। नेणती माता ॥३१८॥

नांव दवरिले केशवु। सगळ्चाक भर्ला उत्साहु।
नामकरणाचो वैभवु। वर्णविना ॥३१९॥

यवन म्लेंछादि[३४] सगळे। नाना जातिचे वेगळे।
ग्रामीण मुग्ध भोगाळे। भरत्ते घरे ॥३२०॥

बरैलि जन्म कुडली। आश्चर्य पावली मडळी।
हो अखंड भू मंडळी। संचार योगी ॥३२१॥

विद्येतु वाचस्पति। कीर्तिवतु रमापति।
बुद्धींतु तरी बृहस्पति। धनी कुबेरु ॥३२२॥

मठ मंदिर निर्माण। कीर्तन भजनेतु निपुण।
वाचेन वशीकरण। करीत जग सर्व ॥३२३॥

सहोदर समवेत। साधिता सगळच्याले हित।
अंतरीपरमार्थ। निस्प्रहु नित्य ॥३२४॥

संपादिता लोक ख्याति। साहित्य गीत सरस्वती।
नांता जिब्बेरि वाक्पति। आईका जना ॥३२५॥

जोईसाली म्हण्णि। आईकेलें वेंकट रुक्मिणी।
विठलु आणी कामेश्वरानि। राक्कुका हाक्का ॥३२६॥

शांतेरी कामाक्षी। कुलदेवाली साक्षी।
बालकांक मुकारि माक्षीं। रक्षण कोरो ॥३२७॥

राकले कोडिंण्य गोत्र। विठलाले कृपापात्र।
आम्ही निमित्तमात्र। राकले देवान ॥३२८॥

अशिश समजूति रुक्मिणीली। लीला तरी केशवाली।
पोळोनु माता हर्षिली। सुखी गा सर्व ॥३२९॥

वेंकटरमणाले घर। घर नैं हे रावळार।
रुक्मिणीलें सगळे कुळार। भरलें पळें ॥३३०॥

वेंकटालो महा मित्रु। बाबण्णमामु ख्यातु।
अर्थधारी ताळमद्यल्यांतु। कीर्तिवंतु ॥३३१॥

रुक्मिणीले भावंडसगळें। यक्षगानादि शिक्केल्लें।
संगीत शास्त्र साधिल्यें। कलाभिमानी ॥३३२॥

केशवाच्युतालें मातुल। ते भी कलाविद कुशल।
अभिजात कलावंत सकळ। निरभिमानी ॥३३३॥

त्या वेळी शेषगिरी किणी। पावलो भागवत शिरोमणी।
यक्षगानाचो मेरुमणी। गुणवंतु ॥३३४॥

केल्लें वेंकटून स्वागत। सगळे बाल्य स्नेहित।
उल्लैले कुशल वृत्तांत। पूर्व स्मरणे ॥३३५॥

भद्रगिरी ब्रम्हावर। हाराडी नीलावर।
हे सगळे यक्ष घर। कलाविदालें ॥३३६॥

भद्रगिरीचे आसपास। यक्षगानते विशेष।
कृषिक श्रमिकांक आवेश। यक्षगानाचो ॥३३७॥

पावसाडी तरी आइली। जमता यक्ष मंडळी।
उमेदि वेंकटरमणाली। अर्थ धारी तो ॥३३८॥

वर्षाकाल चारीमास। पुराण श्रवणाचो हव्यास।
हेंचिगा गुरुकुल वास। ग्रामीण जना ॥३३९॥

ताळ मृदंग निनाद। नाना कला प्रभेद।
जनांक मिळता शास्त्र बोध। लोक शिक्षा ॥३४०॥

भद्रगिरीचि ग्राम चावडी। वेंकटरमणाली आंगडी।
पर्यटन ना पावसाडी। स्तब्द सर्व ॥३४१॥

सांजवाळा हरिकथा। विद्वानु सामगु सांगता।
आईकून सर्व तन्मयता। पावताति खरे ॥३४२॥

रात्ति ताळमदलें। ग्रामीण कलेंतु आद्लें।
बालकानि ते साधले। वेंकटरमणाल्या ॥३४३॥

घरचि धर्म शाला। अन्नदान दोनी वेळा।
विश्रांतीक सकळा। व्यवस्था गा बरी ॥३४४॥

अच्युत केशवाले वाचन। बाबण्ण मामाले प्रवचन।
कन्नड तोरवे रामायण। श्रवण योग्य ॥३४५॥

केशवाच्युताचेरीं। हाज्जो परिणामु भारी।
उच्च पातळी वरी। संस्कारू सूक्ष्मु ॥३४६॥

उठत बसता पुराण। तेचि गा खाण जेवण।
शाळेचें पाठ प्रवचन। हेळा मात्र ॥३४७॥

यक्षगान प्रसंग। साधु संताले अभंग।
प्रवेशु गा यक्षरंग। साधले तान्नी ॥३४८॥

बालकाली योग्यता। कळले गा मातापिता।
पावलो विठलु तत्त्वता। धन्य जाल्ले ॥३४९॥

विठलाली कृपा अपार। दिल्ले संतान भरपूर।
तिसरे चौथे कुवर। जन्मले तेन्ना ॥३५०॥

सर्वोत्तम आणी विठल। दोग्गई सुंदर सरळ।
उत्तम सस्कार प्रबळ। तांचाथूंई ॥३५१॥

प्रथमाचि कन्यादोनि। दिल्लीं परत कृपा करूनि।
कित्ते सांगू अद्भुत करणी। श्री विठलाचि ॥३५२॥

त्या उपरांत कन्याद्वय। रूप गुण समन्वय।
संगीत योग अद्वीतीय। दोन्हीतूहीं ॥३५३॥

प्रेमा जाल्ली अल्पायु। पुण कीर्ति तिजे दीर्घायु।
दुर्बल जावुनु ते स्नायु। मरण पावली ॥३५४॥

विमलाक गति चित्रकलेंतु। प्रगति गा योग शास्त्रांतु।
मन विठल चरणांतु। स्वभाव सिद्ध ॥३५५॥

रुक्मिणी वेंकटरमणालें। संतान समृद्ध जाल्लें।
अर्थ काम कोसळलें। अकारणी गा ॥३५६॥

व्यापारु व्यवहारू चलना। कोणालोंई सहाय मेळ्ना।
संसारु सांभाळु जाईना। व्यर्थ श्रम ॥३५७॥

कोणाक आपुलें करुण। तांचे सगळे अपहरण।
कोर्नु कर्ता रक्षण। मिगेलेंचि ते ॥३५८॥

अशिश वचन भगवंतालें। तें ताणेंचि सत्य केल्लें।
भद्रगिरी घरणें नित्य भोग्ले। दारिद्र्च कष्ट ॥३५९॥

दिल्लेलें ऋण बुडलें। आप्तानि हात सोडलें।
मित्र तें शत्रु जाल्लें। अकारण ॥३६०॥

गाई गोरु निवर्तलें। ऋण पद्दरीं गांठले।
मत्सरी लोक हासलें। अन्न शत्रु ॥३६१॥

आटले गा अपार धन। कोसळलें स्थान मान।
मात्लें निंदक श्वान। भोंकु लागले ॥३६२॥

चेर्डुवाली शिकवण। चेल्लिंयालें लग्न कारण।
चोल्का नित्य अन्नपान। चोलचें कश्शी हे? ॥३६३॥

आश्रित लोक अनेक। निव्वोकामु तान भूक।
मार्गु ना संपादनेक। शून्य दिस्ता ॥३६४॥

हे पांडुरंगा करुणाकरा। भक्त वत्सला उदारा।
पावगा रुक्मिणी वरा। राक आम्का ॥३६५॥

तूं राक्षिलें सुधामाक। दिल्ले संपद्भरित सुख।
पावलो पांडवादीकांक। आपत्काळी ॥३६६॥

राक्लें द्रौपदीलें मान। धन्य जाल्ले गोपी जन।
पोशिशले गा गो धन। गोपालकांक ॥३६७॥

उक्लोळुनु गोवर्धनु। वांचैलों गौळिया प्राणु।
म्हणताती तूं आर्त त्राणु। पाव्ना कित्त्या? ॥३६८॥

निवैगा तान भूक। दी सुख चेर्डु बाळांक।
भक्ताली ही मागणी आईक। माय बाप ॥३६९॥

घराण्याचि मर्यादि। राक्च्याक शक्ती दी।
चेर्डुवांक विद्या बुद्धि। दीगा देवा ॥३७०॥

रुक्मिणीली ही मागणी। आईकलो सारंगपाणी।
बालकांक दिल्ली दिव्य वाणी। ज्ञान युक्त ॥३७१॥

अच्युतान शिकवण। केल्लें कृष्णार्पण।
रात्रं दिन यक्षगान। ध्यास धरले ॥३७२॥

अर्थधारी[३५] वेशधारी। गावो गावि संचारी।
तरी दारिद्र्य ते भारी। बहुत कष्ट ॥३७३॥

मिळैलि लोक कीर्ति। पुण चलना गा उदरगति।
हीचि नैवे लोक रीति? सांग्चे कितें ॥३७४॥

कृष्ण नांव केशवालें। किट्टा म्होंणु आप्पैतलें।
भुर्ग्यामंडळी सगळें। दोस्त ताज्जे ॥३७५॥

३५ यक्षगान कलेचे प्रकार.

श्री गुरुचरितामृत

किट्टाक ना जाति पाती। सगळे ताज्जे संगाति।
भोंवताति दिवसुराति। भजनानंदी ॥३७६॥

मुरली ताग्गेले वादन। गौळे गौंडालें नर्तन।
मध्ये किट्टालें कीर्तन। सहज सांग्ता ॥३७७॥

शाळेंचि उपाध्याईनी। नांव तिज्जे नागवेणी।
आइकिली किट्टाली वाणी। आश्चर्यांनि ॥३७८॥

घाल्लों नाटकां वेसु। भद्राचल रामदासु।
गळले डोळच्यांतु अश्रु। प्रेक्षकांक ॥३७९॥

ही न्हईरें नटना। सहज घडलीं घटना।
प्रेक्षाकांचि भावना। आवरेना ॥३८०॥

आनंदली उपाध्याइनी। धन्य गा ती नागवेणी।
बरोनु हरिकथेचि काणी। करैलि कथा ॥३८१॥

केल्लीं हरिकथा केशवान। सान दिसले सभाभवन।
भरले गा श्रोत्र गण। कान नीट ॥३८२॥

घडो घडी करताडन। गजरी नाम गर्जन।
गोविंदालें गुणगान। गगनभेदि ॥३८३॥

रुक्मिणीले अंगवण। शुक्रुंडचाचि पूजन।
स्वीकार्लें विठलान। कृपापूर्ण ॥३८४॥

आणिकई सर्नि राती। पसरली किट्टाली कीर्ति।
कर्तीति सर्वै स्तुति। हरिदासाली ॥३८५॥

2214

आईकलो संजीवरायु। प्रसिद्ध हरिदासुवर्यु।
कीर्तनेंतु सगळे आयु। घात्लां ताणें ॥३८६॥

गांवु ताज्जो कल्याणपूर। सुवर्णनदीचो तीर।
भद्रगिरीक सेजार। दिव्य गांवु ॥३८७॥

संजीवाले आमंत्रण। आईलें आईकता क्षण।
उत्साह तें द्विगुण। बालकाक ॥३८८॥

जमलें आबाल वृद्ध। साथिदार जाल्लें सिद्ध।
नेसईलें धोतर शुद्ध। हरिदासाक ॥३८९॥

पोरु हो नेण नेसणे। कीर्तन करीत कस्नें?
संजीव दासालें हसणे। अर्थ पूर्ण ॥३९०॥

माळा तिळच्यान शोभत। बालकु आईलो हासत।
संजीवरायाक वंदीत। चढलो वेदी ॥३९१॥

सीताकल्याण कथा। आईकलो तो तत्त्ववेत्ता।
ऐकून उद्गारू काढ्ता। गंधर्वु हो गा ॥३९२॥

दुसरे दिवसु कीर्तन। दामाजीपंत आख्यान।
कीर्ति संजीवा त्या कथन। आइलि पूर्वि ॥३९३॥

पीठिका प्रकरण। कथा उपकथा निरूपण।
सोडिना मूळ आख्यान। विवरिता बाळु ॥३९४॥

धन्य म्हणे श्रोतृगण। समर्पिलें वस्त्र भूषण।
संजीवाले भाषण। अत्यपूर्व ॥३९५॥

बाल हरिदास उपाधि[३६]। दीवुनु गणपति सन्निधि।
आशीर्वाद पूर्वक निधि। समर्पिलें प्रेमें ॥३९६॥

मूंजी जाल्ली अच्युताक। शुभ मुहुर्तारी केशवाक।
दीव्का गायत्री मंत्राक। अधिकारु आत्ता ॥३९७॥

रुक्मिणी वेंकटान मेळुनु। यमुनेक नमस्कारु घालुनु।
अक्का तूं पुत्ताक सांगूनु। मुहूर्त काढी ॥३९८॥

केशवाक म्हावें पूतु। वासुदेवु पुरोहितु।
ठरैलो ताणे मुहूर्तु। व्दिजत्वाक ॥३९९॥

मुंजिचें पुढील दिवसु। पावनी घराक हरिदासु।
जाल्लि मुंजी हासु वेसु। चिंतित सगळे ॥४००॥

३६ बिरुदु

लागला नादु हरिकथेचो। संस्कारु हो कोणा कोर्चो?
व्होरेताक खैं सोद्दुचो। कोणांक मुंजि? ॥४०१॥

सोद्दित गेल्ले बंधु। केशवु भोवता स्वच्छंदु।
गांवु तो उप्पुंदु। खबर कळ्ळी ॥४०२॥

नारायण कामतिं थंई। हरिदासाले वास्तव्य खैंई।
आईकून आईलो आप्पैई। दासरायाक ॥४०३॥

हास्सत आईलो हरिदासु। तोंडारि सगळच्याक हासु।
नाक्कारे हाग्गेलो सहवासु। हाडा धोर्नु ॥४०४॥

अस्सलेकु ब्रम्होपदेशु। निमित्त मात्र वटुवेशु।
संदेहु ना लववलेशु। सुजीविगा हो ॥४०५॥

अशिश प्रपंच परमार्थु। दोन्नि साधिता निस्वार्थु।
विद्या पदवी सकलार्थु। प्राप्त जाल्लें ॥४०६॥

भावंडालें तें पोषण। माता पितालें पालन।
घर दार संभाळन। कठिण जाल्ले॥

धनार्जन विद्यार्जन। सारिखे कोरचे कठिण।
ह्या समयांतु विठलान। दाख्खैलो मार्गु ॥४०७॥

आईलि पवित्र शिवरात्री। कामेश्वराक बहु प्रीति।
सर्वैं जागरण कर्तीति। शिव भजनी ॥४०८॥

अहोरात्र संकीर्तन। मध्ये हरिकथा भजन।
श्रवणेच्छु[३७] महाजन। उत्साह सर्व ॥४०९॥

[३७] आईकतले.

प्रति वर्ष कथा श्रवण। करैता शंकरनारायण।
सामगा आड नावान। प्रसिद्ध त्या काळीं ॥४१०॥

त्या वर्ष सकाळरीं। येनी दासाली सवारी।
श्रोत्र गण भरला भारी। काहीं कळेना ॥४११॥

मित्रानि सांगलें अच्युता। तूं करीरें हरिकथा।
तुज्जांतु आस्स ती योगयता। जाण आम्ही ॥४१२॥

वाचकानी क्षमा कोर्का। आत्म स्तुति न्हई ही आईका।
अनुभव सांगता तुमका। सज्जन गा तुम्ही ॥४१३॥

ना मक्का गुरूपदेशु। शिक्कनी विद्याहि लेशु।
भोगला नाना क्लेशु। वर्णू कशिश ॥४१४॥

संगीत साहित्य ज्ञान। नेण मी शुद्ध व्याकरण।
माता पिताल्या दयेन। साध्य गा सर्व ॥४१५॥

नेण द्वैताद्वैत दर्शन। तर्क वेदांत गहन।
कवी आणी काव्यावलोकन। किंचित्तरी ना ॥४१६॥

शिक्षण तरी प्राथमिक। दारिद्र्य भयानक।
तरी ग्रामीण मुग्धांक। विश्वास बहुत ॥४१७॥

अहो श्रोतृ सज्जना। तुम्ही आईका हे कथन।
विवरिला हे दासान। यथार्थ माना ॥४१८॥

मेज्जो जन्म दिवसु। शिवरात्री उपवासु।
कशिशकरु वाढ दिवसु। उपवासु तुमका ॥४१९॥

हांव तरी उपवासी। आतिथ्य कोणा करु कश्शि?
भाव सगळें एकादशी। जन्मले बरें ॥४२०॥

आम्ही जन्मारब्ध उपवासी। आमका प्रियगा एकादशि।
आहारु आमका अहर्निशी। पांडुरंगु ॥४२१॥

विषयांतर जाल्लें बहूत। तुमचि सहना अपरिमित।
उलवणी विधि लिखित। नित्य आमका ॥४२२॥

उत्रं आईकता मित्रालें। काही सामर्थ्य संचरलें।
अगाधचिंतनेंतु बुडलें। मन मेज्जे ॥४२३॥

ना किंचित् कथा ज्ञान। केल्लें ना विषय संकलन।
सुच्चना कथा लक्षण। घाबरलो क्षणी ॥४२४॥

नेसलो धौतांबर[34]। उपरी शालु सुंदर।
कटिबद्ध जाल्लो सत्वर। कथा काहीं नेण ॥४२५॥

कथा करा गिरोजाकल्याण। म्हणताती जनपद त्या क्षण।
पुर्वापर न कळता जाण। सिद्ध जाल्लों ॥४२६॥

नमन केल्लें मातापितृांक। स्मरिलें मनांतु गुरु मूर्तिक।
वंदीत कामेश्वराक। उपक्रमीं कथा ॥४२७॥

आतां सांग्च्या शक्य नां। पुढ़ै चल्लेली घटना।
देव जाण कशिश कळेना। कथा सांग्ली कोणे?
॥४२८॥

३४ धोतवस्त्र

मक्का काहीं उड्गासु ना। मित्र सांगताती काळु वेळु ना।
बस्सिलें लोक उठलेना। जागरण जाल्लें खरें ॥४२९॥

मित्र आमचे नाना भाषिक। आईलेति ते आईकूक।
मापळें[39] क्रिश्चन सर्वांक। आवडली कथा ॥४३०॥

तुळु कोंकणी इस्लामि। सर्वै दासालें प्रेमी।
कथा नेण तें ग्रामी। दोस्त गा बालपणाचे ॥४३१॥

ताचि उलवणी। उतरल्या ह्या लेखन।
हास्य लास्यांतु अग्रणी। तुम्ही हो श्रोतृजना ॥४३२॥

येत्[40] पोर्लु पण्पेर् ये। कते कल्पादिनेरये।
ऊरुगे कीर्ति कोंडोयेरयें। मेग्गेपरेयाल्डु ॥४३३॥

३९ मुस्लीं. ४० हे [illegible] गावां कीर्ति हाळि्ळ [illegible] (तुळु भाषा)

रुक्मिणीलो पूतु नैगि। कहाले सांगता वुगि।
तिजे दोनि भुर्गि। हरिकथेचे माराया ॥४३४॥

ते जाल्लेंत कुंपार[४१]। मोगान करतात कुंसार[४२]।
जाल्ले ना तांका काजार[४३]। पात्यानातूं[४४] ॥४३५॥

रुक्मिणीडे[४५] मोणु अल्लें। नोकु नोकु ओक्कल्लें।
कथा परियन्नु नल्लें। केडिल्ले बावा ॥४३६॥

सर्व जातिचेरी प्रीति। हीचि हरिकथेचि रीती।
सर्वांक जावका नीती। भक्ती देवाली ॥४३७॥

४१ गुरु उपदेशु. ४२ प्रार्थना. ४३ व्हर्डिक. ४४ विश्वासु कर्ना (क्रिश्चन कोंकणि). ४५ हो रुक्मिणीलो पूतु नैवे? पळे वैमुरो! सुंदरकथा सांगता. अह्निना वैवे. (मापिळ्ळे मलेयाळि).

कैतान लुवीस फकीरसाबु। त्यांपा चिंपा दिवर बाबु।
कोग्ग आणी पटेल परबु। जाल्लें आईकून धन्य ॥४३८॥

लोक हे प्राकृत। त्या त्या वृत्तींतु निष्णात।
सांजेर सर्व जमतात। आइकणार कथा ॥४३९॥

आम्ही आईलें शहराक। हांग्चि प्रीति व्यवहाराक।
पैसे जोडताले भोगाक। दुष्काळु गा प्रेमा ॥४४०॥

ग्रामीण लोक सुसंस्कृत। शिकलें नाते बहूत।
परस्पर प्रीतीन चलतात। ती चि गा संस्कृति ॥४४१॥

पटवण आणि पसवण। ताज्जेखातिर विद्यार्जन।
हीं आत्ताचिं शिकवण। नागरीकाली ॥४४२॥

असो आईका गोष्ठ पुढलीं। जीवन कथा ती होडली।
दासालि कीर्ति ती वाढली। गावो गावीं ॥४४३॥

वृत्ति प्रवृत्ति एकि जाल्ली। प्रारब्ध दुःख ती सरली।
कीर्ति धन मान वाढली। अच्युतदासालि ॥४४४॥

पुण मनाक लागली खंती। सद्गुरु उपदेशु नांति।
गुरु शिवाई साधनेंतु प्रगति। जावचि कशिश? ॥४४५॥

धर्मगुरु सुधींद्रस्वामि। चातुर्मास्य व्रत नेमी।
कोटेश्वर पुण्य ग्रामी। राबलेति आइका ॥४४६॥

धावलों गुरु सन्निधी। गुरु तें मग्न पूजा विधि।
साष्टांग केल्लें आधी। भक्तियुक्त ॥४४७॥

पूजा उपरांत गुरून। आप्पौवुनु दासाक मोगान।
कुशल प्रश्नादि करून। धन्य केल्लें ॥४४८॥

गुरु चरणारी मस्तक। दवरिलें पाद काणुक।
नेण काहीं शास्त्रादिक। मूढ हांव ॥४४९॥

शिकलो ना वेद चारी। ज्ञान ना शास्त्राचे भारी।
श्रद्धा दवरिली गुरुचेरी। रक्षा गुरूली ॥४५०॥

गंभीर जाल्लें गुरुराय। सजल नयन ते उभय।
दासाकदिल्लें अभय। वचन हे आइका ॥४५१॥

भीवु नक्कारे अच्युता। वेद व्यासाक सर्व कळता।
व्यास रघुपति पावता। घे प्रसादु ॥४५२॥

गुरूली अभय वाणी। तींचि मेज्जी मस्तक मणी।
कितेई सांगो हीं कोणी। नगण्य गा आमका ॥४५३॥

गावों गावी भ्रमण[४६]। दिवस भरी अध्ययन।
रात्री हरिकथा कीर्तन। ही आमुचि दिनचर्या ॥४५४॥

संवत्सर दोनी सरलें। गुरुराज न भेटलें।
उडुपींतु तांचे ठरलें। चातुर्मास्य ॥४५५॥

उडुपी महाजनान। चारिही मैनें कीर्तन।
महाभारत ते करौन। कौतुक केल्लें ॥४५६॥

गुरु करताले श्रवण। काहीं वेळां मार्गदर्शन।
दित्ताले गा सप्रमाण। शिक्षण खरें ॥४५७॥

४६ भोवचे

प्रबोधिनी एकादशी। भजन गोष्ठि गा अहर्निशि।
पवित्र उत्थान द्वादशी। कथा मंगल ॥४५८॥

गुरु विराजिलें गादीचेरी [४७]। दासान विनंति केल्ली बरी।
अंकित [४८] दीवुनु उद्धार करी। गुरु देवा आत्ता
॥४५९॥

बरेम्हळ्ळे गुरुरायान। मुद्राधारण स्वहस्तान।
अंकितदिल्लें मूलनारायण। शिक्षा दीक्षा सहित ॥४६०॥

दासान धोरुनु गुरु चरण। घाल्लें भक्तीन लोटांगण।
प्रसन्नतेन पादुका प्रदान। दिल्लें शिष्याक तेन्ना ॥४६१॥

४७ पीठ ४८ दासदीक्षा

पादुका ती माथ्यारी घेवुनु। देह गेह विसोरुनु।
नांचलोगा धन्य म्होणु। गळले आनंदाश्रु ॥४६२॥

स्वरूपोद्धारक सुधींद्र। तांचे शिष्य राघवेंद्र।
श्रोतृ तुम्ही साधक वृंद। असो सर्वांली कृपा ॥४६३॥

गुरु चरित्रा हें निमित्त। आत्म कथन जाल्लें बहूत।
तुम्हीं तरी साधु संत। क्षमा समुद्र ॥४६४॥

गंगा पवित्र व्होळ्ता। चिकलाचें तांतूचि मेळता।
ते सुद्दा गंगाचि जात्ता। स्नान योग्य ॥४६५॥

गुरु गंगेंतु मेळ्नु। आम्ही ही पवित्र जावुनु।
सर्वैंतांतु बुडिमारुनु। सोरैय्यां पाप ॥४६६॥

गांतल्या ओव्यांचि ही माळा। परस्पर गळच्याक घाल्ला।
ना तरी लाय्या निडळा। शुद्ध मनान ॥४६७॥

बुद्धोंताक निरर्थक। मूढांक अप्रयोजक।
सर्व श्रद्धावंताक। हो घासु मांडो ॥४६८॥

वापरल्या भास कोंकणी। आवैती पुरातनी।
सारस्वत विप्रालि जननी। देव वाणी ॥४६९॥

तिज्जे शब्द मोवाळ। उलवणी मोगाळ।
भाव आणी ध्वनींतु रसाळ। पक्व भाषा ॥४७०॥

संस्कृत ही तिग्गेली जननी। मराठी घाकुली भैणी।
मागधी आनीं शूरसेनी। दाईजी तिक्का ॥४७१॥

भाषा हि परशुरामाली। ब्राम्हणी गिर्वाण[४९] बोली।
काल गर्भांतु निपली। बीज रूपी ॥४७२॥

परस्पर भाव संवहन। भाषेचे हे प्रयोजन।
विसलरें की मूर्खजन। मूळ ध्येयु ॥४७३॥

बर्पाक्त घाली तू पाया। कृपा करीगा गुरुराया।
आश्रितांक चरण छाया। पसरी बेगी ॥४७४॥

देवा व्यासरघुपति। दीगा चरणांतु रती।
करोनु घे ही महाकृति। कीर्ति तुज्जी ॥४७५॥

हे व्यासा बादरायणा। वासिष्ठ नारायणा।
करी गा करावलंबन। द्वैपायना हरे ॥४७६॥

४९ देवभाषा.

भद्रगिरी सहोदर

सन्त अच्युतदासु सन्त केशवदासु

काशीमठाचें यतीश्वर। ह्या कृतीचें बरोबर।
सदा सदैव निरंतर। आस्सोंत नित्य ॥४७७॥

आरंभता गुरुचरित्र। पावन परम पवित्र।
वाच्चूनु गुरुकृपापात्र। जाय्या सर्व ॥४७८॥

मूलनारायणाली कृती। प्रेरकु सुधींद्रयती।
दिव्वो सर्वांक सन्मति। ज्ञान भक्ती ॥४७९॥

श्री गुरुचरितामृताचो सिद्धसाधक संवाद नामक
पैलो अध्यायु समाप्तु।
॥श्री कृष्णार्पणमस्तु॥

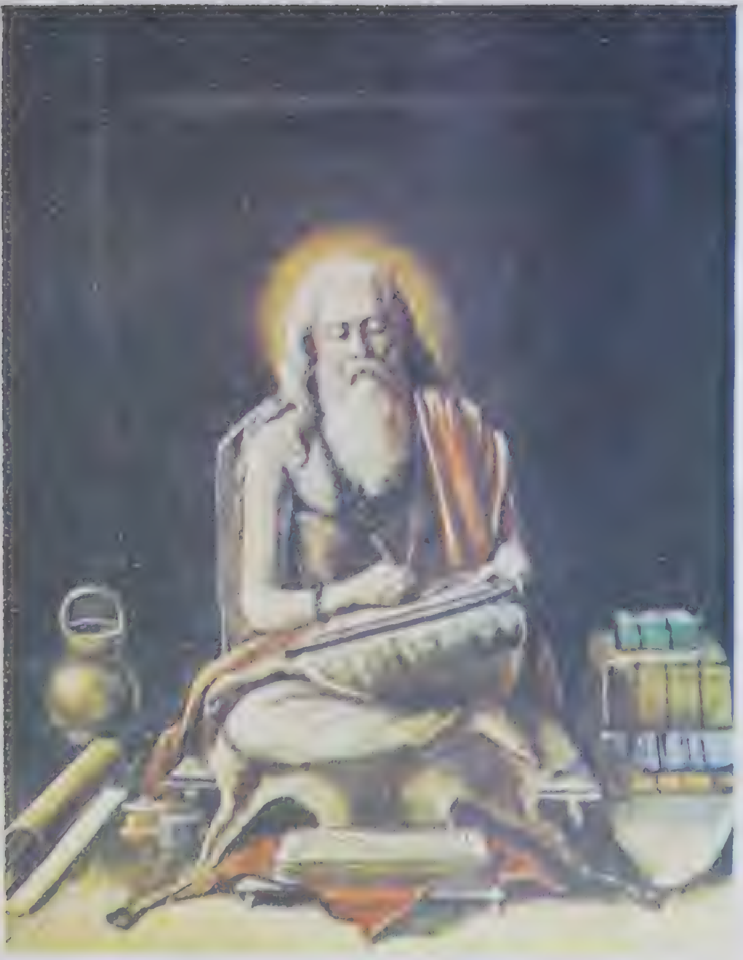

श्री भगवान् वेदव्यास देवु

ॐ

श्री गुरुचरितामृत

व्यासावतारु नामक

दुसरो अध्यायु

श्री गुरुचरितामृत

।।श्री गणेशायनमः।। ।।श्री गुरुभ्योनमः।।

मंगलाचरण

हे श्रीपति नारायणा। अनंता सकलैश्वर्य पूर्णा।
लक्ष्मीशा वेंकटरमणा। पाव ह्या पामराक ।।१।।

तूं शेषाचलवासु। नांव तुग्गेलें श्रीनिवासु।
सर्वांतु तुज्जो अधिवासु। लक्षूनु गा मागतां ।।२।।

अणु रेणु तृण काष्टांतु। परिपूर्ण तूं भगवंतु।
तूं स्वगतभेदरहितु[१]। पूर्ण पुरुषु ।।३।।

हे पुरुषोत्तमा निर्दोषा। करी कल्याण अशेषा।
करै कृति ही विशेषा। घे कीर्ति चरणांकडे ।।४।।

१ इच्छा, क्रिया, रूप हाक्का परस्पर भेदु ना.

श्री गुरुचरितामृत

तत्त्वाभिमान द्यावांक। माझ्झा सहायु कोर्चाक।
आज्ञा तू दी सर्वांक। करै गा काव्य कार्य ॥५॥

हे अनिरुद्धा प्रद्युम्ना। वासुदेवा संकर्षणा।
विद्या बुद्धि दी तू घना। सिद्धि प्रसिद्धि सहित ॥६॥

अवतार घेवुनु सर्व। मोड्ता दैत्याले गर्व।
वर्णितातित पुराण पर्व। लीला तुज्जी भगवंता ॥७॥

निर्मिले कथा विचित्र। अठरा पुराण शास्त्र।
तत्त्वरूपान सर्वत्र। भरला तूंचि बापा ॥८॥

ब्रम्हसूत्र आणि भारत। तदर्थरूपी भागवत।
आख्यान रचिलें बहुत। उपकारी गा साधकांक ॥९॥

हे व्यास रघुपति। कर्ता तुजी संस्तुति।
कृति रचनेक दी मति। तू ज्ञानिलो रायु ॥१०॥

अध्यायु हो दुसरो। सिद्ध साधकाल्यो खबरो।
आइकल्यारि मुनिस्[२] बरो। जात्लो आईका बरे ॥११॥

शांतेरी आणि कामाक्षी। रुद्धुरामनाथु मनस्साक्षी।
रक्षणा करोंति मुखारी माक्षि। कुळाव्यांक नित्य ॥१२॥

ग्राम देवु कामेश्वरु। इष्ट देवु वेंकटेश्वरु।
विठलु तरी सर्वेश्वरु। भीति ना गा कलिकालाचि ॥१३॥

आता वंदू मठत्रया[३]। पीठाधिपति गुरुवर्या।
ज्ञान भक्ति वैराग्य दीय्या। सांगाकी हो आमुचो ॥१४॥

२ मनुष्‌ ३ काशी, गोकर्ण, कैवल्य

सद्गुरु तुम्ही कृपावंत। ज्ञान वैराग्य भक्तिवंत।
निर्विकारी आणि प्रशांत। निस्संगि ज्ञान मूर्ति ॥१५॥

आरंभा सुधीन्द्रांक। स्वरूपोद्धार गुरुंक।
विद्याधिराजा यतींक। कर्ता नमन भक्तीन ॥१६॥

सच्चिदानंदसरस्वती। संयमि शांत मूर्ति।
शंकरु भवानिपति। कर्ता वासु तांच्यांतु ॥१७॥

हे सारस्वताले तीनि डोळें। नेण ते आज्ञानि भोळें।
सामके चिंतल्यारी अंतर्बळें। उद्दैता ज्ञान चक्षु ॥१८॥

अहो गुरुवर्यानुं। ह्या पामराक लक्ष्यूनुं।
कृति रचनेक कृपाकोर्नुं। दाक्काया मार्गु सरळ ॥१९॥

साधु संत यति। तुम्ही आस्का सांगाति।
ना तरी जय्ना कृति। कृपाकरा तुम्हीं ॥२०॥

मूलनारायणाली कीर्ति। आद्यंत तागेलि स्तुति।
श्रवण पठनान प्राप्ति। इष्टार्थ सकल ॥२१॥

आता आईका कथामृत। वेदव्यासाले चरित।
आइकिल्या मात्रान पुनीत। जात्ले पुण्य जीवि ॥२२॥

पावन गंगातीर। क्षेत्र नांव हरिद्वार।
सप्तर्षिधाम[४] सुंदर। नांव तें साधुबेला ॥२३॥

सप्तधारा[५] नावांन। व्हळता गंगा ती पावन।
वास कर्तीति ऋषि गड़ण। निश्चिंत मना ॥२४॥

४ मरीचि, अंगीरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ हे साप्तर्षि. ५ ल्हादिनी, पावनि, नळिनि सुचक्षु, सीता, सिंधु, भागीरथि हे गंगेले सातभाग.

गगन चुंबी तरुवर। नाना वनचर वानर।
हिंस्रपशु असल्यारी घोर। निर्वैर ते परस्पर ॥२५॥

नाना द्रुम संतती। औषधीय वनस्पति।
फल पुष्प भरित क्षिति। शोभायमान ॥२६॥

वृक्ष नेणति ऋतु भेद। पथिकांक दित्तायिं मोद।
ते घेत्ताति फलस्वाद। वंदिती तरु निकाय ॥२७॥

सुंदर तुलसी वन। सर्वत्र हरिद्वर्ण।
भास्ता नंदनोद्यान। सार्खे पुष्पराशी ॥२८॥

पक्ष्योकरताति ऋतुगान। ऐकता मन उन्मन।
खरेगा हे ऋषि वन। शांतिधाम ॥२९॥

सप्तधारा भागीरथी। तटांतु एकु सिद्धयति।
बसला समाधि स्थिति। भाइलें कायिं कळेना ॥३०॥

अखंड स्मृति धारणेन। प्राणायाम साधनेन।
एक कोर्नु प्राणापान। जागैली कुंडलिनी[६] ॥३१॥

ध्याना नंतर बहिर्मुख। भोग्गुनु दिव्यानंद सुख।
प्रसन्न जाल्लां मुख। देदिप्यमान ॥३२॥

तेद्दाणा एक पथिकु। वैराग्यपरु तो साधकु।
मेळ्नी ताक्का मार्गदर्शकु। सोद्दित आइला ॥३३॥

पोळोनु सिद्ध यतीक। वंदिले चरण द्वयांक।
उद्धार करी ह्या पापीक। साधु वर्या ॥३४॥

६ सर्वांनु आत्मनृचि मुप्त शक्ति

पळ्ळा भवसागरांतु। नाना तापत्रयांतु।
आशा पाशाच्या बंधनांतु। भोग्लां बहुत ॥३५॥

दारिद्र्यान नित्य कष्ट। व्यापारु केल्यारि नष्ट।
घडताति ताना अनिष्ट। भ्रष्टलो दुःख भारी ॥३६॥

पत्नी मरण पावलीं। भुर्गि पैलेंचि सर्ली।
बंधु सर्वै विसर्लि। वरला एकलोचि पापी ॥३७॥

बंधु लोक निपताती। दाइजे पोळोनु हास्ताति।
मावु माई सोव्ताती। सर्वत्र अपमानु भोगता ॥३८॥

ना माक्का स्थानमान। सर्व कर्तीति अवहेळन।
निंदिताती विनाकारण। जीणेंपेक्षा मरणऽचि बरे ॥३९॥

प्रारब्ध आणिकई सर्नि। मोर्चाक मरण येनी।
वांचु कित्याक आनी। सिद्ध मुनी सांग गा तू ॥४०॥

साधलें ना अर्थकाम। धर्लें ना धर्मनेम।
खैंचे आणी मोक्षधाम। जाल्लो पुरुषार्थ हीन ॥४१॥

ऋषि ऋण देव ऋण। पावईनी पितृ ऋण।
व्यर्थ जाल्लो पाप कारण। भू भार प्राणि ॥४२॥

मन हे चंचल। साधनेंतु ना आत्मबल।
इंद्रियं तरी प्रबल। गुप्सईताती जीवा ॥४३॥

कारणसांग सिद्ध मुनी। ह्या पाप्याक कटाक्षूनी।
चुकल्या मेज्जि विचार सरणी। दुर्भागि मतिमंदु ॥४४॥

साधकाली दीन वाणि। दुःखिखलि दुर्भर काणी।
लक्ष्य पूर्वक ऐकलो मुनी। जाल्लें चित्त द्रवीभूत ॥४५॥

चोईल्यारी शुद्ध चित्तु। ज्ञानेच्छु आणि विरक्तु।
हो बरो संस्कारितु। म्होणु उळदिलो[७] मुनीन ॥४६॥

तू भिवुनक्कारे बाळा। करूण ना ह्या कळि काळा।
ताग्गेलोचि प्रभावु वाढला। म्होणुचि हो कलियुगु ॥४७॥

दुष्टांक हो सुकाळु। कलि प्रभावु प्रबलु।
सज्जनांक ना हो कालु। सहज तें क्षीण जात्लें ॥४८॥

औषध विद्या आणी अन्न। विक्कूनई कोर्का दान।
कलियुगांतु जोडचाक धन। उपाय हे तीनि ॥४९॥

७ आप्पैलो

देवालय मठ मंदिर। प्रतिष्ठित मूर्त्यो सुंदर।
कर्तालें ना नमस्कार। श्रृंगारू डांभिक पणाचो ॥५०॥

अनाचार अत्याचार। मिथ्याचार भ्रष्टाचार।
व्यवहार चालता भरपूर। सुकाळु अधर्माक ॥५१॥

शरीरांतु शिर प्रधान। तशिंश समजांतु ब्राम्हण।
तेचि भ्रष्टले पूर्ण। अनीतिवंत ॥५२॥

चालि बोलींतु अंतर। विषय चर्चा निरंतर।
पूजा पाठांतु तिरस्कार। हाल[८] ही ब्राम्हणालीं ॥५३॥

शिश्नोदर परायण। तोंडांत सदा नारायण।
कर्तांति अपहरण। संपत्ती मुग्ध जनाली ॥५४॥

८ परिस्थिति

श्री गुरु चरितामृत

म्हणताती घेत्ले दान। मनांतु असमाधान।
कर्ताती हगरण। निंदा करी यजमानाली ॥५५॥

कर्ताती आशिर्वादु। मनांतु भर्ला क्रोधु।
असंतुष्टीन अतिवादु। कोरुनु शिंप्ताती अक्षता ॥५६॥

ना मंत्र पुरश्चरण। मंत्र जाप अनुष्ठान।
म्हणताती आपण ब्राम्हण। केवल भोजनप्रिय ॥५७॥

वंदन कोर्का ब्राम्हणांक। निंदा कोरनई सर्वांक।
कलि प्रभावु भयानक। घुप्साइता ज्ञानी जनां ॥५८॥

जंगम जोगी उदासी। साधु महंत संन्यासी।
सर्वांहि जाल्लेति दोषि। कलि रिग्ला सर्वांतु ॥५९॥

सतीक शील प्रधान। तांतुई जाल्ला पतन।
हनन शील हरण। कळेना कोणा ॥६०॥

पतित तरी नारी वर्गु। अन्य पुरुषा संसर्गु।
वाढता ताज्जेन घनरोगु। बिगडता समाज स्वास्थ्य ॥६१॥

शिशु हत्या भ्रूणहत्या। चल्तांति गा प्रतिनित्य।
दुर्जनाले हे दुष्कृत्य। घड्ता कलि प्रभावाने ॥६२॥

सतीक सांगताति नियमु। पतीक ना काहीं संयमु।
पर सतिचेरी कर्ता प्रेमु। संभ्रम सर्व तिक्काचि ॥६३॥

गृहिणी भाईरी उद्योगि। घरांताइलि कि रोगी।
रांदपांतु रहयोगी। नळ महाराजु घोवु[१] ॥६४॥

१ पति

बालक जाल्लेति अनाथ। मातृ प्रेम वंचित।
अन्य संस्कार बहुत। वाढता तांचांतु सत्य ॥६५॥

वाढ्लीं ति शिशुविहार। सुंदर पक्ष्यालें पंजर।
कोमल कळचांचेरि क्रूर। प्रहारु कर्तीति नित्य ॥६६॥

भुग्र्यालें भविष्य भयानक। शाला घर दोनी नरक।
द्वेष वाढ़ता भयानक। तांच्या मनांतु देख ॥६७॥

शिक्षण तरी नीरस। गुरु शिष्यांक द्वेष।
वेश भूषांचो समावेश। भक्षण गा शिक्षण ॥६८॥

करताति अभक्ष्य भक्षण। असभ्य शील सुरापान।
त्या कारण चोरपण। कर्तीति श्रीमंत पुत्र ॥६९॥

बिगडल्या राजसत्ता। ना कोणाकई नीतिमत्ता।
राष्ट्र धर्मातीत म्हणता। अर्थात् निधर्मि गा आम्ही ॥७०॥

म्हणताती राम राज्य। कर्तीति नित्य व्याज्य।
सत्य धर्म सर्वथा त्याज्य। भर्लेति वंचक सर्व क्षेत्रीं ॥७१॥

असुर हे सर्वकालांतु। त्रेता आणि द्वापरेंतु।
आशिशले म्होणु भागवतांतु। आस्स वाक्य व्यासालें ॥७२॥

रावण आणि कुंभकर्ण। कंस कौरव कठिण।
घ्यावाले अवतार कारण। हेचि गा दुष्ट चौघे ॥७३॥

दुष्टांक कोर्नु मर्दन। केल्लें धर्म संस्थापन।
साधूंक परित्राण। कोर्नु राक्ल्या सत्य ॥७४॥

उत्रं आइकूनु सिद्ध मुनिले। मन भिल्ले साधकाले।
संशयान ताणे विचार्ले। सांग हे सिद्ध श्रेष्ठा ॥७५॥

फुळ्ळी कथा ती सोडी। आत्ताचि गोष्ठ काढ़ी।
नित्य चल्या तोडमोडी। पळैना कित्त्या सिद्ध पुरुषा ॥७६॥

आतां रावण कुभकर्ण। भर्लेति सर्वत्र जाण।
अवतारू ना कितें कारण। समजनि सामके[१०] ॥७७॥

आईकूनु पाटोपट। साधकालो प्रश्नु नीट।
नांकारि दवर्ले बोट। म्हणता शाब्बास शिष्या ॥७८॥

तुग्गेलो प्रश्नु महत्त्वाचो। तात्विक आणि बार्काईचो[११]।
तू बुद्दोंतु गा तर्काचो। पंडिताग्र्णि ॥७९॥

१० ममऽचें ११ सूक्ष्म.

आदलें रावण कुंभकर्ण। पापाचे पर्वत ते जाण।
तांका कोर्चाक चूर्ण। देवुचि रे समर्थु ॥८०॥

कंस दुर्योधनादि। तमोगुणाचे महानिधि।
तांचेन सर्व पाप वृद्धि। प्रबल धूर्त ॥८१॥

कर्ता आईक विवरण। तुजो संदेह निवारण।
जात्लोरे संपूरण। मन दी आईक गहन ॥८२॥

तरी तमोगुण केंद्रिकृत। ताज्जिशक्ति अद्भुत।
देवा शिवाई कोण करीत। सांगरे नाशु ताज्जो ॥८३॥

आत्तंच्या राक्षसांक। नारे शक्ती अधिक।
तमांध ते क्षणिक। दुर्बल विषई जन ॥८४॥

हे असुर वैकारिक। दुर्विषयु प्रचारक।
हांच्या निवारणेक। समर्थ गा सद्विचारी ॥८५॥

देवु येना कलियुगांतु। अशिश म्हळ्ळां शास्त्रांतु।
तरी देवु आमचांतु। आस्स आम्हीचि देवु ॥८६॥

अशिशं म्हणता असुरमत। सज्जनांक ना हें सम्मत।
वाद विवादु बहुत। करी श्वास व्यर्थ ॥८७॥

आस्स हीन स्वभावु। म्हणता हावूंचि देवु।
दैवी गुणाचो अभावु। प्रत्यक्ष दिसता ॥८८॥

आम्ही अंश द्यावाले। मुक्तींतु ताज्यांतु मेळतलें।
व्यत्यास ना तस्सलें। विशिष्ट आम्ही एकची ॥८९॥

अंशि अंशाक ना भेदु। सांगताति चारी वेदु।
नेण कर्तीति वादु। भेदुना जीवा देवा ॥९०॥

अशास्त्रीय अतिवादु। हांका जाईना सत्य बोधु।
कर्तीति होचि अपराधु। तमांध हे नरकी ॥९१॥

हे साधन शिखामणी। असुराली उलवणी।
अति मृदु मधुर वाणि। फसैताति बरें ॥९२॥

आम्हीच देवु म्हणताती। मोह मदांतु बुडताति।
बाळ भुग्र्यांक रडताती। म्हणताति ब्रम्हास्मि[१२] ॥९३॥

पांडित्यानि पिंडपोषण[१३]। कर्तीति व्यर्थ संभाषण।
चित्तांतु विषय चिंतन। कामाचारी सर्वै ॥९४॥

१२ हावऽचि ब्रम्ह. १३ शरीर

हेंचि असुर आत्मांचे। हे विपरीत वृत्तीचे।
सज्जन संगान तांचे। कोर्येत गा परिवर्तन ॥९५॥

आता साधकांक समाधान। जाल्ले सिद्धाल्या वचनान।
धोरनु दोन्ही चरण। केल्ले नमन साष्टांग ॥९६॥

हांव एकु मंदाधिकारी। मूर्खु आणि अविचारी।
ह्या संशय चित्ताचेरी। दयाकरी सिद्धवर्या ॥९७॥

समजलो असुर लक्षण। ब्राम्हणांतु हे अज्ञान।
आईले कशिश खैंचाण। सांग बा सांग सिद्धा ॥९८॥

वैदिक हे वेदज्ञानी। म्हणताती आपण अग्रणि।
आम्ही द्यावाल्या तोंडांतूनि। प्रकट जाल्लेति पैलें ॥९९॥

वेद शिकताति शिखैताति। यज्ञ करताति करैताति।
दान घेत्ताति दित्ताति। म्होणु आम्ही षट्कर्मि ॥१००॥

शस्त्र शास्त्रांतु आम्ही निपुण। चौसष्ठ कलेंतूई आपण।
दित्ता जनांक शिकवण। धर्म आणि तत्त्वमार्ग ॥१०१॥

कर्तालें देवताराधन। आणि जपतपानुष्ठान।
त्रिकालावरि संध्यावंदन। कर्ताति गायत्रीयुक्त ॥१०२॥

आम्ही शापानुग्रह शक्त। खरे यज्ञेश्वराले भक्त।
तत्त्वज्ञानि गा जीवन्मुक्त। म्होणु आम्ही वेद मूर्ति ॥१०३॥

गो ब्राम्हण रक्षा। त्या खात्तीर अवतार दीक्षा।
द्यावाक ब्राम्हणापेक्षा। मित्र ना अधिक कोणि ॥१०४॥

आम्ही ब्राम्हण वेद पुरुषालें। प्रथम पुत्रु चतुर्मुखालें।
प्रत्यक्ष द्यावाक देखिखले। म्हणताति आमका दृष्टार ॥१०५॥

जाणताति आम्ही सारासार। कर्ताति नित्य वेदोच्चार।
हृदयांतु ब्रम्ह विचार। होचि गा धर्मु आमुचो ॥१०६॥

अशिश म्हणपि ब्राम्हण। जाल्ले कित्या ज्ञान हीन।
हाक्काकारण कोण। जाणै माक्का सिद्धमुनि ॥१०७॥

तू कर्ता मेज्जो उद्धारु। आस्स माक्का हो निर्धारू।
तूंचि बंधु तूंचि गुरु। विश्वासुभर्ला खरे ॥१०८॥

तू तरी ज्ञानसागरु। दिल्ला द्यावान हो अवसरु।
तुज्जे शिवाई अस्सलो विवरु। सांग्ताले ना गा खरे ॥१०९॥

बहु जन्माच्या पुण्यान। मेळ्ळा हे तुगेले दर्शन।
हाज्जें महा प्रयोजन। कर्ता प्रयत्न घेव्याक ॥११०॥

साधकालो परिप्रश्नु। आइकता लक्ष्य दीवुनु।
मुनिजाल्लो ध्यान मग्नु। कोणबा हो पुण्यजीवि ॥१११॥

श्रवणांक उत्तमाधिकारी। संयमि आणि सदाचारी।
प्रामाणिकु सुविचारि। उदारि उत्साह पूर्णु ॥११२॥

श्रवण मनन ध्यान। परमार्थातु हे प्रधान।
हे तीनि पवित्र गुण। एकत्रित तरी दुर्लभ ॥११३॥

असलिं गुण सत्वयुत। हाज्यांतु जाल्लि पुंजीकृत[१४]।
पुण्य हे पुराकृत। ना तरी सतसंगु खंचो ॥११४॥

१४ एकऽस्कडे

हे साधका हांव साधु। बहु विनोदि हो सिद्धु।
हांव कोपाक प्रसिद्धु। राबई वितंड[१५] तुज्जे ॥११५॥

कर्ता साधु नटना। नेण साधकु ही घटना।
म्हणता तुजे पट्ना। उत्रं रे मूर्ख पणाचे ॥११६॥

तू नुस्तीं कर्टी कांतपी। तुस्सो कुंडो कांडपी।
उत्रं होड होड उलपी। तू रे शिरोमणि जल्पकांचो[१६] ॥११७॥

तुक्का कित्या उपदेशु। उगीच आमका त्रासु।
म्हशीं पाठीरी पावुसु। व्यर्थ म्हणताति पळें ॥११८॥

चिंचाम आणि मीठ। नईतु धुल्यारि नीट।
आमसाणि मिठसाणि थेट। उरतलि पळें तशिशंचि ॥११९॥

१५ कुतर्क. १६ वाचाळि

उदकातुलें पात्राक। कळ्तवें उद्दाक पिवच्याक।
नेश्या कळ्तलवे पिश्शाक। व्यर्थ रे जीणे तुज्जें ॥१२०॥

सिद्धु कित्याक बा चिडलो। कळ्नाशि साधकु भिल्लो।
हो तरी अशिर्शचि कोपलो। बुड़लें गा सर्वै मेज्जे ॥१२१॥

लागले भयं आंताक। बुद्धि कोसळ्ळी साधकाक।
सिद्ध मुनील्या कोपाक। जाल्लोरे देवा बलिपशू ॥१२२॥

गळ्ळें डोळच्यांतु उद्दाक। चरणारि दवरलें मस्तक।
मुर्खाल्या ह्या चुक्कीक। दी शीक्षा भोग्ता खरें ॥१२३॥

केल्लें हांवे चेर्डुपण। सलगेचे संभाषण।
मिज्जे हे मूर्ख पण। करी क्षमा माय बापा ॥१२४॥

हाल चोवुनु साधकालि। चित्तवृत्ति ती बिगडली।
सिद्धाक अश्रु गळलीं। उत्कंठी गद्गदीत ॥१२५॥

उल्लैलो तो मोगान। आलिंगन दिल्ले प्रेमान।
उन्नति सर्वांगीण। जात्लि तुजी साधका ॥१२६॥

बिष्टाईनी तुका कोपान। बरें आटईलें मनान।
केल्लि कुशाल उत्रांन। मानेस्तु[१७] तू मुमुक्षु ॥१२७॥

ब्राम्हण कित्या ज्ञानहीन। जाल्लेंतरी कित्या क्षीण।
हे रोचक पुण्य कथन। सांगता मागीर तुक्का ॥१२८॥

योरे मेज्जा बरोबर। आनि करनारे अनादर।
सोडी चिंता आणि आतुर। तू खरो साधकु सत्य ॥१२९॥

१७ गौरवान्वितु

शोधिलें अंतःकरण। आता जाल्ले समाधान।
साधनेक योग्य स्थान। दाक्कैता यो तुजकुणि ॥१३०॥

अशिश जाल्लो तो प्रसन्नु। साधकाचेरी महानु।
आइलो ताक्का घेवुनु। अपूर्व मंदिरा कडे ॥१३१॥

साधकाक घेवुनु बरोबर। अईले सिद्ध मुनीश्वर।
वन मार्गातु मध्यंतर। नियाळ्ता साधकु चारी दिशा ॥१३२॥

दिसलें विमान गोपुर। नांव ते व्यास मंदिर।
शिल्प कलेचें कुळार। शांत रूप ॥१३३॥

पैलादि वेदाचार्य। मधे शोभता व्यासार्य।
स्तंभी सात ऋषिवर्य। शुकमुनि व्यास पायीं ॥१३४॥

एकीकडे गंगा देवूळ। शोभता उजव्यान पिंपळ।
सभागृह ते विशाल। विश्वनाथाख्य ॥१३५॥

सुंदर पुष्पोद्यान। मधें बसला त्रिलोचन।
भोजन गृह ते अन्नपूर्ण। निववी तान भूक ॥१३६॥

गो शाला वैद्य शाला। पाठ शाला यज्ञशाला।
वेद घोषांचे सोहळा। ऐकता धन्य ॥१३७॥

वेदगाताती सुस्वरी। भजन पूजनाची वैखरी।
श्रवण करिता क्षण भरी। प्राप्ति चारी मुक्ती ॥१३८॥

रोगींक औषधालय। योगींक ज्ञानालय।
भोगींक सुखालय। निर्मिला यत्ने ॥१३९॥

सरस्वतीलें ते सुंदर। प्राकारांत शोभे मंदिर।
वेदज्ञानें मंत्र सस्वर। श्रवणानंद दित्ता ॥१४०॥

पवित्र ती पाकशाला। पाचक मेळ्नु सगळा।
पक्वान्न ते वेळोवेळा। सिद्ध कर्तीति सर्व ॥१४१॥

चलता नित्य होम हवन। जेवणांक हविष्यान्न।
समाराधन संतर्पण। भूरिगा नित्य ॥१४२॥

साधक तत्त्व चिंतन। श्रद्धा युक्त श्रवण।
परस्पर करीं परिप्रश्न। परमार्थ प्रेमी ॥१४३॥

मंदिरांतु दिव्य मौन। साधकालें जपानुष्ठान।
ना व्यर्थ संभाषण। श्रवणु गा प्रणवु[१८] ॥१४४॥

१८ ओंकारु.

आबाल वृद्ध नारी। सुजीवि ते व्रतधारी।
व्यासोपासनेक अधिकारी। तेंचि समज ॥१४५॥

काहीं करिती सडा[१९] सम्मार्जन। काहीं लोक पुष्पग्रथन।
काहीं स्वयंपाक[२०] सदन। करी व्यास सेवा ॥१४६॥

नारे होडु दुर्बळो। बुद्धोंतु आणि भोळो।
नारे सावुळो[२१] ओवळो। मुख्य गा चित्त शुद्धि ॥१४७॥

व्यासाक ना भोगवैविध्य। षड्रस किंवा पक्वान्न खाद्य।
नारीकेळ क्षीर नैवेद्य। ताज्जेन तृप्तुगा तो ॥१४८॥

सेवा ही भजन पूजन। पाठ पारायण पठण।
सेवा यथाशक्ति दान। होचि गा व्योसोत्सवु ॥१४९॥

१९ पुसूनु पवित्र कोर्चें. २० रांधाप कोर्चो जागो. २१ आनवाळे - म्हेळें.

आप पर ही भावना। सोडि गा विषय वासना।
धरी परमात्म चिंतन। व्यासोपासना गा ही ॥१५०॥

चलताती सत्संग। साधनेंचि मुख्य अंग।
गीता भागवत उत्तुंग। पठण नित्य ॥१५१॥

गृहस्थ ब्राम्हण भेदु ना। वाद विवाद कोरुऽना।
कोणा काहीं बंधन ना। धोर्का मौन मुद्रा ॥१५२॥

एकडे वेदाध्ययन। आनेकडे पुराण पठण।
पूजा पाठ प्रवचन। वेगवेगळे स्थानी ॥१५३॥

ना व्यर्थ संभाषण। हास्य कुचोद्य निंदन।
सर्व हव्यास वर्जन। आज्ञा ही साधकांक ॥१५४॥

मधुर मंगल वाणी। उल्लौका परस्पर कानी।
दुखौंच नज्ज कोणापुणी। वर्ज्यगा कोपताप ॥१५५॥

आनंदाचि गुह्य निधि। निपल्या त्या व्यास सन्निधि।
लुटताती समृद्धी। सिद्ध ते पारमार्थी ॥१५६॥

भागीरथिलें पूजन। साधकालें अनुष्ठान।
गंगेक दीपदान। आपो ज्योती ॥१५७॥

काहीं लोक जपध्यान। काहीं मंत्र पठण।
काहीं जन उच्चस्वरान। गर्जीत नाम ॥१५८॥

बहु जन्माचे पुण्य। संग्रही तोचि धन्य।
भक्तितरी कर्ता अनन्य। मेळता वासु ह्या स्थळी ॥१५९॥

ज्ञान वैराग्य संपन्न। नाना कष्टि आपन्न[22]।
आश्रय तांका व्यास चरण। ते मुक्ति योग्य ॥१६०॥

व्यासुचि नारायणु। तोचि बादरायणु।
सर्वज्ञु जगकारणु। बाप्पै ब्रम्हादिकांक ॥१६१॥

कोरुनु वेदांचे मथन। केल्लें ब्रम्हसूत्र रचन।
उपनिषदाचें बोधन। प्रकटिलें ग्रंथरूप ॥१६२॥

वेदार्थ निर्णयांक। अनधिकारि द्विज बंधूक।
स्त्री शूद्रादि सुजीवीक। जाणोंका वेदार्थु म्होणु ॥१६३॥

निर्मिलें महाभारत। लक्ष श्लोक विख्यात।
वेदूचि म्हणतात। जाणत्ले ताक्का ॥१६४॥

२२ कष्टानु अशिशले

साहित्य मूल ते वेद। संगीत मूल ते नाद।
हे सर्व तत्त्वबोध। दिलें लोकाक व्यासाने ॥१६५॥

सर्व जग हे व्यासोच्छिष्ठ। म्हणताति सर्व कवि श्रेष्ठ।
नाटक काव्य कवि वरिष्ठ। करताति नमस्कार ताक्का ॥१६६॥

सर्व मताचे यति। चातुर्मासाक बसताति।
वेदव्यासाक पूजताति। देवु म्होणु भक्तीन ॥१६७॥

तरी ना व्यासा मंदिर। पडल्या विस्मृति घोर।
ताज्जेन गा अंधकार। पसरला ह्या पुण्यभूमि ॥१६८॥

सर्वज्ञु रे वेदव्यासु। अप्राकृतु रे निर्दोषु।
सर्व सत्ताधीशु। पूतु सत्यवतीलो ॥१६९॥

गौतमाल्या शापान। ज्ञान जाल्लें संकीर्ण।
ब्रम्हादिकाल्यां प्रार्थनेन। अवतरलो गा देवु ॥१७०॥

व्यासु वासिष्ठकृष्णु। तोचि परमात्मा विष्णु।
भक्तापराध सहिष्णु। प्राप्तु ज्ञान भक्तीक ॥१७१॥

तो पराशरालो पूतू। सत्यवती गर्भ संभूतू।
आईलो द्वापर युगांतु। अवतार घेवुनु ॥१७२॥

पैल वैशंपायु जैमिनि। सुमंतु ताच्यांतु अग्रणी।
चारी वेद शिकले ज्ञानी। श्रेष्ठ गा शिष्य ताग्गेले ॥१७३॥

वेद राशीचो विव्यासु। रचिल्ले सूत्र विशेषु।
नांव ते वेदव्यासु। दवरिलें ब्रम्हादिकानि ॥१७४॥

विपुलार्था वेदगहन। तदर्थ बोधक पुराण।
अठराहि केल्ले रचन। कथन ते रम्य व्यासालें ॥१७५॥

साधकान केल्लो प्रश्नु। व्यासु तो महाविष्णु।
तो महाकवि उश्नु। दाता ज्ञान भक्तिचो ॥१७६॥

वेद आणि ब्रम्ह सूत्र। अध्ययन कर्तीति सत्पात्र।
कित्याक हे पुराण शास्त्र। पुनरुक्ति ही व्यर्थ ॥१७७॥

करी क्षमा सिद्ध मुनि। आईक शिष्यालि वाणि।
भुग्यीलि तोत्रि बोलणि। सहन करी माता ॥१७८॥

सिद्ध म्हणे साधका। अक्रोधिरे तू बालका।
अधिकरी तू अभ्यासका। सांगता तुका ॥१७९॥

सक्कडांक तेचि वेद। साधकांतु आस्ताति भेद।
काहीं घेत्ताति पुराण स्वाद। काहीं वेदाभ्यासी ॥१८०॥

वेदांचे उपबृंहण[२३]। तेंचि इतिहास पुराण।
सगळे एक्कचि जाण। साधना मार्गु वेगळो ॥१८१॥

हे तार तम्य समजूनु। केल्लां विभाग व्यासान।
साधन केल्यारि भक्तीन। नारे सिद्धीक विळंब ॥१८२॥

व्यास आणि बादरायणु। द्वैपायनु नारायणु।
हांतु भेदु लेक्ता कोणु। तो पापी पाखंडि[२४] सत्य ॥१८३॥

साधकु आश्चर्य चकितु। भिल्लो सहज मनांतु।
पळ्ळो आतां संदेहांतु। प्रश्नो कोरुं की नाक्का? ॥१८४॥

२३ विस्तार. २४ नास्तिकु

श्री गुरुचरितामृत

समजलो सिद्धमुनि। विचारिरे धैर्यांनि।
सांगता खरें तुज कुणि। घाल्ता रे आण व्यासालि ॥१८५॥

भिलों साधकु मनांतु। कांटे उठलें आंगांतु।
लोळ्ळो सिद्ध चरणांतु। केल्लो प्रश्नु हो मुख्यु ॥१८६॥

व्यासु तो एकलो ऋषि। तो देवु जावचो कश्शी?
अश्शिं प्रश्न कर्तांति पिश्शिं। जवाब दिव्चा न कळो ॥१८७॥

मजो संचारू विपुल। व्यासाक खय्यिंना देवूळ।
तसले तरी एकस्थळ। सांगा माक्का निवडून ॥१८८॥

सिद्ध म्हणालो त्या क्षण। साधका आईका विवरण।
काहीं तामस पुराण। सांगताति तश्शिं खरें ॥१८९॥

दैत्य कर्तीति द्रोह। तांका विषयाचो दाह।
नीव्ना ते वाढता मोह। नारकी ते नित्य बापा ॥१९०॥

दैत्यांक तरीना शुद्धि। तामसीक नारे बुद्धि।
तांच्यांतु ते वृद्धि। करता पुराण तामस ॥१९१॥

सुजीवींक सत्त्व शुद्धि। साधनेंतु तत्त्व सिद्धि।
तांचे सत्त्व नित्य वृद्धि। जाव्चा कारण व्यासकृपा ॥१९२॥

साधका विश्वासु धरी। वेदव्यासूचि श्रीहरी।
शरणांक उपकरी। कैवारी तो भक्त जनालो ॥१९३॥

सांग्ता तुक्का पूर्ण। व्यासावताराक कारण।
तुंट्ता भवाचे बंधन। जाणेर हे सत्य ॥१९४॥

अहो श्रोतृ जनानु। सांग्ता मेज्जो अवगुणु।
विषयांतर निर्मूनु। मूल कथा सांगचि ॥१९५॥

सज्जनानो क्षमाकरा। सांगणे ही अवधारा।
जिज्ञासेचि वाटधरा। घेय्या दर्शन ज्ञानाचें ॥१९६॥

दृष्टांत शिवाई सिद्धांत। मनन जाईना निश्चित।
म्होणुचि ही उचित। कल्पाना केल्ली ॥१९७॥

उद्दाक मागले गुरून। तांब्यांतु हाडलें शिष्यान।
तान नीवना तांब्यान। पुण उद्दाक हाडता कशिश? ॥१९८॥

आईदान जाई उदकाक। दृष्टांत जाई तत्त्वाक।
समजूक जाई श्रोत्रांक। म्होणु वाढली ही कथा ॥१९९॥

हांव तरी कीर्तनकारु। काणियोचो भंडारु।
तो शिवाई ना आधारु। उपदेशाक सर्वथा ॥२००॥

आस्स कोरुनु सन्निवेशु। कोरका कथेंतु प्रवेशु।
शून्यांतु सृष्टि विशेषु। करीत तोचि श्रेष्ठु ॥२०१॥

पूरेऽ तुज्जि हरिकथा। कपला कण कण वृथा।
ताळो पोप्पानु वरडता। कतारि कर्कर ॥२०२॥

अशिश म्हणपि तो गुरु। ताक्का करता नमस्कारु।
ताज्जे निमित्त सुधारु। जाल्ला हे सत्य ॥२०३॥

असो श्रोतृगणानू। धरा तुम्ही अभिमानु।
दोष मेज्जे विस्सोर्नु। आईका व्यास कथा ॥२०४॥

आइका हे व्यास चरित्र। पावन परम पवित्र।
केल्यारी श्रवण मात्र। जात्ली कृपा व्यासालि ॥२०५॥

काणि ही द्वापरेचि। पवित्र गोदा तटाचि।
आईका गोष्ठ महत्त्वाचि। प्रीति ही जिज्ञासूंक[२५] ॥२०६॥

गौतम ऋषिली कथा। भक्ति श्रद्धेन आईकता।
सुख संतोष हे लाभता। संदेहु ना सत्य ॥२०७॥

मंगल कुशावर्त तीर्थ। ब्रम्हगिरी नांवते सार्थ।
गौतम ऋषि निस्वार्थ। तप कर्ता कठिण ॥२०८॥

धर्म पत्नी अहल्या। रामान तिक्का उद्धरल्या।
पतिव्रता पावन जाल्या। पंचकांतु[२६] एकली ॥२०९॥

२५ चितकु. २६ अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मंदोदरी.

शतानंदु तिगेलो पूतू। महा तपस्वी विख्यातु।
जनकालो पुरोहितु। मैथिलु ज्ञानयोगी ॥२१०॥

कर्ता ब्रम्हगिरी दर्शन। तीर्थ स्नान प्रदक्षिणा।
ना गा ताक्का पुनर्जन्म। क्षेत्र ब्रम्हदेवाले ॥२११॥

त्या स्थळी गौतमान। निर्मिला दिव्य तपोवन।
मृग पक्षि सदा मौन। शिक्षण गौतमालि ॥२१२॥

पक्षिंचे ॠतु गान। सामवेदाचि शिकवण।
वेदज्ञा पक्षिगण। पावलि संस्कार प्रबल ॥२१३॥

पक्षिंचे मधुर गान। वटूले वेदगान।
सर्वत्र समाधान। अतृप्ति ना कोणां ॥२१४॥

जंबू जंबीर पणस। नारीळ नारिंग विशेष।
कदळी आम्रादि अशेष। लभ्य गा नित्य हांगा ॥२१५॥

पक्षि आणि वानरादिक। खाउनुई उरता अधिक।
गळता फलरस पृथ्वीक। रसमयती रसा ॥२१६॥

पूग पुन्नाग कपित्थ। ताल हिंताल अश्वत्थ।
वट निंबादि समस्त। शोभती वृक्षद्रुम ॥२१७॥

वापि कूपांतू सगळे। जलचर वेगवेगळे।
कोकिळा आणि कावळे। ते वै आश्रमवासि ॥२१८॥

सर्वातु देवाक्क पळें। निर्मल जाव्वो दोळे।
तेद्ना सर्वई आपलें। हेंचि गा परमार्थु ॥२१९॥

सर्वत्र सस्यश्यामल। नाना जातीचे मृग संकुल।
निर्भीत भोवतातित सकल। पडल्या मैत्री तांका ॥२२०॥

तरु लतानि आच्छादित। दिवसूई काळ्की रात।
नारे कोणि भयभीत। आबाधित गा सर्व ॥२२१॥

बंगार पिकचि भूई। अमृतऽचि होळचि न्हई।
नाना खनिज रत्न थांई। अलभ्य ते लभ्य ॥२२२॥

पाळ मूळ बहूत। नाना औषधोपयुक्त।
केल्ला संग्रह अमित। गौतम दंपतीन ॥२२३॥

गौतमु होड्डु कुलपति। हजारो वटु येत्ताति।
विद्येन सफल जात्ताति। शिखैताती इतरांक ॥२२४॥

अस्ल्या परिसरांतु। बसला मुनि आश्रमांतु।
अहल्या मग्न सेवेंतु। करी परिक्रमु पतीक ॥२२५॥

नमस्कारु केल्या उपरांत। उल्लैलि मधुर स्वरांतु।
पतिराया कालगर्भांतु। किते आस्स कोण जाण? ॥२२६॥

ब्रम्हावर्तांतु दुष्काळु। आईकता जात्ता तळमळु।
ना अन्न वेळोवेळु। ब्राम्हण उपवास बावडे ॥२२७॥

ब्रम्हावर्ताचे ब्राम्हण। बारा हजार संख्येन।
येत्ताति ब्रम्ह गिरीस्थान। दिय्या आमंत्रण बेगि ॥२२८॥

दीव्या तांका अन्नोदक। तृप्त जात्लें देवादिक।
आश्रमतरी सार्थक। आश्रय अनाथांक ॥२२९॥

मोवाळ उत्रं आइकूनु। सतीक लागिग बसोवुनु।
तिजे तोंडऽचि नियाळूनु। गौतमु म्हणता आईक ॥२३०॥

अगो तू उत्तम गृहिणी। कुलपतिल्ली घरकारिणी।
आतिथ्यांतु अग्रणि। कोर्या सेवा विप्रालिं ॥२३१॥

दुर्दैवगो विप्रालें। विचित्र कार्य हे देवालें।
ब्राम्हण पुडै कष्टले। प्रारब्ध हे क्षाम ॥२३२॥

ज्या घरांतु ब्राम्हण जेवता। त्या घराण्यांक देवु पावता।
तांचे सर्व पाप सर्ता। जात्ले उद्धार पित्रांचे ॥२३३॥

देवाक प्रिय ते ब्राम्हण। तांका दिल्यारि मृष्टान्न।
नारायणु आणि देवगण। तृप्त जात्ले प्रसन्न ॥२३४॥

दानांतु अन्नदान। क्षणिक जाल्यारी समाधान।
करीत कोण हे निष्ठेन। करता कृपा नारायणु ॥२३५॥

निवोवुका ब्राम्हणालि भूक। तेंचि पळे यज्ञ एक।
आणि सांगू कित्ले अधिक। कोर्का सेवा ब्राम्हणालि ॥२३६॥

गौतम अहल्या संवाद। आइकुनु ते अर्थवाद।
जाल्लोना साधकाक बोध। केल्लो हो प्रश्नु सरळ ॥२३७॥

सिद्ध तूं महानुभावु। आमचो संदेह स्वभावु।
आमचांतु बुद्धिचो अभावु। भरपूर म्होणु विचारता ॥२३८॥

दयाभाव सर्वांचेरि। सांग्ताति हें शास्त्रां बरिं।
आम्ही तरी शास्त्राधारी। पुण फरक पडता कित्यां? ॥२३९॥

भुक्की दुःखी सर्वै एक। ब्राम्हण शूद्र कित्या फरक।
भुक्किलो अधिकारी अन्नाक। कोर्का सेवा सगळचालि ॥२४०॥

द्यावालो आवासु सर्वांतु। हे विचार शास्त्रांतु।
ही भावना कृतींतु। हाड्का सगळे एक ॥२४१॥

सिद्ध सांगता हे समज। तुक्का संदेह हो सहज।
शास्त्र तरी निर्व्याज। धोरका मार्ग ज्ञान्यालो ॥२४२॥

गाई घोडो दोन्ही एक। खावचो आहारू एक।
पुण प्रयोजन प्रत्येक। बरें हे दृष्टांत समज ॥२४३॥

दुद्दाखातिर गाई पोसता। घोडचा पाट्टीरि चोण्णु बसता।
दोन्ही एक्कऽचि कशिश म्हणता। इक्षु आणि दंडु एक्कऽवे?
॥२४४॥

बस्तातिं गाईच्या पाय्या कडे। धार काढतातिं गाव्ळे गावुडे।
सवारि खात्तिर घोडे। तश्शि समज मुक्त आणि अमुक्त ॥२४५॥

दी ब्राम्हणांक अन्न। घे तांचालाग्गि ज्ञान।
इतराले देह त्राण। मेळता तरि घे ॥२४६॥

भुख्खिक अन्नदान। विप्रांक संतर्पण।
तरि समाराधनेन। करि सर्वा तृप्ति ॥२४७॥

समजरे हें फरक। तारतम्याचें विवेक।
म्हणताती तुक्का साधक। साध्कारे ज्ञान ॥२४८॥

आत्ता जाल्ले समाधान। भक्तीन केल्ले वंदन।
सिद्ध मुनि तुज्जा कृपेन। कळ्ळे यथा योग्य ॥२४९॥

संदेहाक समाधान। सांग्ले त्या सिद्धान।
आता शुद्ध मनान। आइक बाळा ॥२५०॥

अशिश मुनिदंपत्ति। चिंतितीं ब्राम्हणा प्रति।
सेवा क्रम योजितातिं। पुण्यात्म गा ते ॥२५१॥

आईक कथा पुढ़चि। भयंकर दुष्काळाचि।
काणि ही दुर्दैवाचि। कष्ट ब्राम्हणालें ॥२५२॥

ब्रम्हावर्त ते सगळे। दुष्कालान भाजलें।
आचारवंत भ्रष्टलें। गेल्ले देशांतरी ॥२५३॥

निष्ठावंत निवर्तले। काहीं कष्टान वांचले।
गेल्ले मेल्ले सरले। सर्वत्र हेचि शब्द ॥२५४॥

ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध। साधु सज्जन वृंद।
अन्नोदक करीत शोध। भटकले भुभुक्षु ॥२५५॥

ताप्लें भूमि आकाश। ना कोणा अवकाश।
लुटा लुटि चे दोष। पसरले सर्वत्र ॥२५६॥

बाळ भुर्गि गुर्भिण्यो। आवै बापै बोभैण्यो।
पळैता कोण वळवळण्यो। वरडणे बोब ॥२५७॥

जाल्ले संस्कार शून्य। बुडली प्रीति अन्योन्य।
द्वेषाचे उत्र जघन्य[२७]। वाड्ली गा व्यवस्थित ॥२५८॥

वापि[२८] कूप तटाक। आट्लींति एकलाक।
मृग पक्षि पशूंक। तण उद्दाक खंचे? ॥२५९॥

२७ निंदा २८ नव्हे-बावडी

तडपडत मेल्लि प्राणी। भरली सर्वत्र घाणि।
दुर्बलाक मारताति त्राणि। जीव जीवाक शत्रू ॥२६०॥

सुकल्यो वृक्ष वाल्यो। अपूर्व पक्ष्यो मेल्यो।
हिंस्र पशु क्रूर जाल्लो। खाल्ले तान्नि मन्श्याक ॥२६१॥

पडलो उज्जा पावुसु। प्रकृति सर्वाक आवुसु।
कोपता ती एकु दिवसु। दुष्ट विकृतीचेरीं ॥२६२॥

हो आस्तिकु हो नास्तिकु। हो भक्तु हो भुक्तु।
हो शक्तु हो अशक्तु। प्रकृति समान सर्वां ॥२६३॥

श्रीमंतु आणि दुर्बळो। हो सानु हो होड्ळो।
हो मोकळो हो नकळो। हे भेदु ना तिक्का ॥२६४॥

हो बुद्दोंतु हो मंदु। हो कुरूपि हो चंदु।
प्रकृतीक ना संबंधु। साखिं ती सगळां ॥२६५॥

म्हणा सुकाळ म्हणा सूक[२९]। म्हणा समृद्ध आणि पीक।
प्रकृतीक दोन्नि एक। कर्ता लीला तिज्जि ॥२६६॥

सृष्टि आणि संहार। पूरक हे परस्पर।
प्रकृतीऽचे हे विकार। समजूति ही ज्ञान्यालि ॥२६७॥

हे सर्व तत्त्वज्ञान। जात्तरि कोर्या जेवण।
अशिश म्हणता श्रोतृजन। सांगूय मूळ काणि ॥२६८॥

क्षमा करावो तुम्ही। हे आईकताले कम्मि।
जावका तुम्मि संयमि। जात्लें चऽड उणें ॥२६९॥

२९ क्षाम

कथेचि सांकाळि। मोणि हांवे तत्काळि।
तुम्का श्रवण काळि। घोड्का रूचि तत्त्वांचि ॥२७०॥

आईका रोग लक्षण। तें त्रिदोषाचे निर्माण।
आरोग्य वोर्चांक बाण [30]। कार्य हे प्रकृतिचें ॥२७१॥

जड प्रकृति रे अपरा। चेतना तीचि परा।
पर आणि अपर द्वारा। सृष्टि कर्ता लो हरि ॥२७२॥

परा हे नांव लक्ष्मीक। अपरा हे दुर्गेक।
ती त्रिगुणान जीवींक। कर्ता बंध नित्य ॥२७३॥

जडाचें समतोलन। कर्ता दुष्काळ जाण।
समृद्धि चें कारण। घडता नियम देवालें ॥२७४॥

30 शरीर.

श्री गुरुचरितामृत

कोर्या कथा विस्तार। ब्राम्हण बारा हजार।
आइले दक्षिण पथार। थाई[३१] मेळ्ळिना तांका ॥२७५॥

आईकूनु ही खब्बर। अहल्या सविस्तार।
पतिल्या सानिध्यार। विवरिलि वार्ता ॥२७६॥

आइकल्या हे कथन। ताज्जेचि विवरण।
पति पत्नी संभाषण। विषदीकरण आईक आत्ता ॥२७७॥

कोर्का सेवा ब्राम्हणालि। ताच्यांतु आश्च्या देवालि।
आप्पोइता त्या मंडळी। गौतमु तेन्ना ॥२७८॥

श्री भू दुर्गेन। दीवका धन धान्य रक्षण।
तिज्ज्या उपासनेन। प्राप्त इष्टार्थ सर्व ॥२७९॥

३१ जागो.

आईक अहल्या सति। आईकिल्या तू सप्तशति।
तांतु शाकंभरी स्तुति। वर्णिल्या गो अशिश ॥२८०॥

दुष्काळांतु देवीन। आपल्या सुंदर देहान।
शाक सर्व उत्पादून। राकता मळ्ळां भक्तांक ॥२८१॥

शाकंभरीलि पूजा। कर्ता ती राकता द्विजा।
तुष्टति सकल सहजा। मागणी कोर्या देवी ॥२८२॥

वंदूनु दुर्गेक। उपक्रमति पुजादिक।
दी माये धान्यादिका। कर्ता सेवा विप्रांलि ॥२८३॥

प्रसन्ने वरदे देवि। कष्टलेगे सुजीवि।
शताक्षि तू वासवी। राक्किलि क्षाम काळी ॥२८४॥

श्रद्धे स्वधे पुष्टि। कऽरिगे कृपावृष्टि।
भुक्ति मुक्ति समष्टि। दीगे परमायुधे ॥२८५॥

शक्ति भूते सनातनि। त्र्यंबके नारायणी।
जागन्माता कात्यायनि। पावगे अन्नपूर्णा ॥२८६॥

अंबे दैत्य मथिनि। विश्वेश्वरि ईशानि।
वैष्णवी वीणापाणि। जननि राक भक्तां ॥२८७॥

पुण्यात्माल्या घरांतु। लक्ष्मी तू वैभवांतु।
पापिष्ठा मध्येंतु। आस्ता अलक्ष्मि म्होणु ॥२८८॥

सुसंस्कृतालि दृढ बुद्धि। सद्वंशजालि लज्जादि।
सज्जनालि श्रद्धा विधि। तूंचिं गे नमन तुक्का ॥२८९॥

गौतमालि ही प्रार्थना। आइकूनु ती कामना।
देवि प्रसन्न वदना। पावलि ताक्का त्या क्षणि ॥२९०॥

शिंपले शेत्तांतु भात। पीक पिकले अद्भुत।
शाकंभरिने बहुत। केल्लि दया ताज्जेरि ॥२९१॥

दुसऱ्या दिव्सा पांत्यारि। आईलि विप्रालि स्वारी।
बाळभुर्गि बरोबरी। बारा हजार संख्या ॥२९२॥

पुरइलें सर्वांक अन्न। द्विज म्हणताति धन्य धन्य।
आमचे ऋण अनन्य। गौतमा तुक्का ॥२९३॥

अशिश काडताति उद्गार। वांचली आम्ही विप्रवर।
कशिश पावोवु ऋणभार। गौतम मुनिले ॥२९४॥

त्याजिले आपद्धर्म। अनुष्ठिले वेदधर्म।
स्मृत्युक्त सत्कर्म। श्रौत्र स्मार्त ॥२९५॥

शाकंभरील्या दयेन। चाल्ले नित्य अन्नदान।
सरले बारा वर्ष पूर्ण। तोषिले विप्रसर्व ॥२९६॥

उठले होम धूम। त्रिकाल संध्यानेम।
गायत्री जप नियम। निष्ठा नित्यकर्मि ॥२९७॥

चारिही पुरुषार्थ। साधिताति मुख्यार्थ।
ना कोणाकई स्वार्थ। निःस्वार्थ सर्व ॥२९८॥

ब्रम्हचारिक कठिण। भाषा आणि व्याकरण।
पाढ पूजानुकरण। अवश्य कार्य ॥२९९॥

वानप्रस्थ आणि गृहस्थ। संन्यासी यति तटस्थ।
ब्रम्हचारी नेमस्थ। निष्ठावंत स्वकर्मि ॥३००॥

वाढ्ले वेद वाङ्मय। तरुण जाल्लें तन्मय।
नाना तत्त्व प्रमेय। शिकताति शास्त्र निष्ठ ॥३०१॥

षट्कर्म निरत सगळे। षट्शास्त्र[३२] निपुण वेगळे।
षट्दर्शीनि प्रज्वळें। वादी तर्क शास्त्रि ॥३०२॥

चलता पाठ प्रवचन। जमताति श्रोतृगण।
विविध विषई प्रश्न। संदेह निवारणेक ॥३०३॥

आबालवृद्ध नारी। तत्त्वज्ञानाक अधिकारि।
ना कोणी अनाचारी। नियम बद्ध ॥३०४॥

३२ न्याय, वैशेषिक, सांख्य, पातञ्जली, पूर्वमिमांसा, वेदांत

नांव ते ब्रम्हगिरि। ब्रम्ह ज्ञानाचि झरी।
तिज्जेन गोदावरी। विरजाचि म्हणुये ॥३०५॥

कुशावर्त तीर्थ। नांव ते जाल्ले सार्थ।
ब्राम्हण भरले सर्वत्र। ते म्हणा तीर्थरूप ॥३०६॥

आईकरे साधका। प्रकृति प्रसन्नमुखा।
आनंदी सम्मुखा। जाल्लि ब्राम्हणांक ॥३०७॥

मेघानि अंतराळ। व्यापिले गा तत्काळ।
खड खडाट कराळ। भयानक ॥३०८॥

वीजाचे विस्फुलिंग। प्रजज्वाल सर्वांग।
उचंबळि तरंग। समुद्र तुमुल ॥३०९॥

जलरूपी शाकंभरी। मळबातून[३३] उतरी।
विकरलि तीणे कबरि[३४]। निप्लो रवि काळकांतु ॥३१०॥

निवैलि तान पृथ्वीचि। वांचली सर्वै सृष्टिचि।
तांचो एकु पुनर्जन्मूचि। म्होणुयेत सत्य ॥३११॥

पाळ मूळ अंकुरली। वृक्ष वाल्यो वाढलि।
फल पुष्प फुल्लेलिं। आइलो जीवु ॥३१२॥

मृग पक्ष्यादि परतलि। ती सर्वत्र सुखावलि।
नद न्हय्यो भरलिं। सुभीक्ष सर्व ॥३१३॥

आठैताति ब्राम्हण। पवित्र मूल स्थान।
ब्रम्हवर्तारि मन। संचरले क्षणि ॥३१४॥

३३ आकाशु. ३४ केश.

सरिता सरस्वती। माते हे दृषद्वति।
तुमचि अखंड स्मृति। बाधिगे रात्रंदिन ॥३१५॥

तुज्जांतु स्नानपान। तटाकी अनुष्ठान।
हे भाग्य बहु जन्मान। लाभता पुण्य पुरुषा ॥३१६॥

एक पाव्टी ती मंडळि। नइच तीरारी जमली।
गौतमालि कीर्ति पसरलि। सर्वत्र देख ॥३१७॥

आम्हि जाल्लि पुण्य क्षीण। जोडले तें गौतमान।
मेळताति जेवण खाण। धन्य आम्ही ॥३१८॥

आता सर्वत्र सुकाळ। आठय्या आमचे मूळ।
परान्न हे त्रिकाल। घेव्नई आइका ॥३१९॥

बरें म्हणता बहुतेक। विनंतिले गौतमांक।
आज्ञा दी सर्वांक। वोच्चाक ब्रम्हभूमि ॥३२०॥

नकारले गौतमान। हेचिं गा ब्रम्हस्थान।
ब्रम्हगिरीने तुमचो प्राण। वांचइल्या खरे ॥३२१॥

घडल्यातरि चूकि आमुचि। पाद प्रक्षालिता तुमचिं।
जाल्वे काहीं अनादराचि। सांगवो बापा ॥३२२॥

विनंति आइकता मुनीलि। ती निराशेन परतलि।
नाना युक्ति योजिलि। सुचेना काहिं ॥३२३॥

त्या मध्ये तामसि एकलो। दुर्बुद्धिचो पाकळो ³⁵।
वेदार्थ काहिं नकळो। मूर्ख तो शिखामणि ॥३२४॥

३५ नयचकु.

सर्वैं जडमूढ मेळ्ळे। ज्ञानीहि सापडले।
वंचकानि काहीं काड्ले। उपाय धूर्त ॥३२५॥

गाई केल्लि मृत्तिकेन। दिल्ले तिक्का प्राणदान।
सोड्लि शेत्तांतु हाण्ण। गौतमाल्या ॥३२६॥

स्नान कोरुनु गोदेंतु। बसले गौतम ध्यानांतु।
उपरांत दिसली शेत्तांतु। गाय एकि ॥३२७॥

गौतमान गाईक पोळोनु। ताळि वाजेइलि लागिग येवूनु।
त्या वार्याक गाइ घूवुनु। पळ्ळी गत प्राण ॥३२८॥

जाल्ले खेद गौतमांक। कारण जाल्ले गो हत्येक।
कश्शि घडले हे कौतुक। कारण तरी कोण? ॥३२९॥

चोईत हे दृश्य तामसि। जाल्लि मनांक खुशि।
मुनील्या कीर्तिक मसि। लाईलि धन्य हांव ॥३३०॥

मुनीन केल्ली गो वधा। आईका मंडळी सावधा।
घडिल्या महापराधा। सांगाति प्रायश्चित्त ॥३३१॥

हंतकाले अन्न। घेनांति ब्राम्हण।
व्यर्थ जातले अनुष्ठान। आश्रम हे अपवित्र ॥३३२॥

गाई आणि ब्राम्हण। शास्त्र म्हणता समान।
त्या अर्थि गौतमान। केल्ले ब्रम्ह हत्या ॥३३३॥

वार्ता ही पसरली। आचारवंत बिगडलीं।
दुष्ट मनांतु हर्षलिं। तामसी धूर्त ॥३३४॥

गौतमा गो हंतका। धिक्कारुगा तुक्का।
घेनांति अन्नोदका। बहिष्कृतालें ॥३३५॥

निर्गमन आमचे निश्चित। हे सर्वालें अभिमत।
मुक्त गा उत्तरपथ। जाल्ले आत्ता ॥३३६॥

आईकता विप्रवचन। मनी चिंतिलें सावधान।
एकांत बैसून ध्यान। केल्ले गौतमान ॥३३७॥

समजलो अभिचार। विप्रालें दुर्व्यवहार।
अहल्याल्या बरोबर। आइलो तो द्विजा कडे ॥३३८॥

गंभीर वचनान। सांग्ले गौतम ऋषीन।
तुम्ही हो ब्राम्हण। सर्वशक्त ॥३३९॥

हे कुटिल कारस्तान। कळ्ळा माक्का ध्यानान।
तुमचे कार्यविधान। कृतघ्नालें हे ॥३४०॥

गो द्विज हंतकाक। प्रायश्चित्त आस्स शुद्धीक।
कृतघ्नाक मात्र एक। प्रायश्चित्तचि ना ॥३४१॥

बदलंलि मुनीलि ध्वनि। कठोर जाल्लि ती वाणि।
उसळलिरे क्रोधाग्नि। कुपितु जाल्लो ॥३४२॥

तुम्ही विप्र शिरस्थानीय। कृति तुमचि शोचनीय।
हे तरी अमानवीय। अकृत्य अल्प बुद्धि ॥३४३॥

गो हत्येचो अपवादु। घाल्ला हो निर्विवादु।
हांवे तरी अपराधु। करनि केद्दणाहि ॥३४४॥

असूया असुर बुद्धि। जाल्लिना विवेक वृद्धि।
ना तुमका अंतः शुद्धि। श्रमु आणि व्यर्थ ॥३४५॥

गौतमु संतापूनु। दित्ता शापु कोप्पुनु।
दुःशब्द तोंडातूनु। आइले शापरुपी ॥३४६॥

सज्जनालो कोपु। तांगेलो संतापु।
तोचिगा महा शापु। नेणति दुष्ट ॥३४७॥

देवाल्या इच्छे प्रमाणे। जात्ता हे चड उणे।
दिल्लो शापु गौतमाने। ब्रम्ह वृंदा ॥३४८॥

नष्ट जात्ले विवेक। ज्ञानाज्ञानाचे फरऽक।
सगळे संकीर्ण मूर्ख। जात्ले तुम्ही मतिमंद ॥३४९॥

भोग्ताले दारिद्र्य दुःख। ज्ञानहीन भयानक।
परमार्थि पराङ्मुख। जंबूक वृत्ति ॥३५०॥

हरि भजनी नाहीं प्रेम। भोजन कार्यि निस्सीम।
संग्रही अर्थ काम। जाय्या ह्या क्षणी ॥३५१॥

कोण जाणरे साधका। ज्ञान्यालि मनोभुमिका।
देवालि इच्छा अस्सूका। प्रेरणा ताग्गेलीचि ॥३५२॥

गौतमाल्या शापान। जाल्ले वैदिक पतन।
ना कोणां ब्रम्हज्ञान। भरले अन्यथा ज्ञानी ॥३५३॥

साधकाक आइली स्फूर्ति। कर्ता सिद्धाल्या विनंत्ति।
गौतमु सार्खो नियति। जाल्लो निष्ठूर कित्या? ॥३५४॥

मुनील्या एक कोपान। नष्ट जाल्ले धर्मज्ञान।
ताक्कां कोणालि प्रेरणा। सांग गा सिद्धा ॥३५५॥

हीच रे देव चर्या। आमका कळ्नारे माराय।
जावका द्यावालीचि दया। तेद्दणा कळात ॥३५६॥

देवाल्या अवतार कारण। भूमिका जात्ता निर्माण।
निमित्त गौतमादि ब्राम्हण। संकल्पु द्यावालो ॥३५७॥

ताक्का ना अनिरिक्षित। कारणु हो निमित्त।
ताज्जेनऽचि हे नियंत्रित। जग जीवन ॥३५८॥

जग हे कालाधीन। काल कर्माक कारण।
श्रीहरिचि मुख्यत्वेन। प्रतिपाद्यु श्रेष्ठु ॥३५९॥

सर्व कर्ता अकर्ता। माता पिता आणि भर्ता।
पितामहु भ्राता। सर्वीहि तोचि ॥३६०॥

सकल शास्त्रांचे सार। सर्व ज्ञान्याले निर्धार।
नारायणूचि आधार। म्ह्मणताति बा ॥३६१॥

सृष्टि स्थिति संहारू। ज्ञाना ज्ञान विकार।
नियमन अधिकार। मोक्ष सहित ॥३६२॥

हे आठही करणि। तग्गेल्या इच्छानुसारिणि।
अप्राकृतु तो जननि। सर्व जगाचो ॥३६३॥

सिद्धालें हे सिद्धांत। साधकु तो आईकत।
ताज्जे मन निवांत। शांत बसले ॥३६४॥

श्री गुरुचरितामृत

मुनींलि मधुर वाणि। सांगता मुखारिंचि काणि।
ब्राम्हण जाल्ले अज्ञानि। द्वापरातु ॥३६५॥

कोणालेई कोण आइकना। वादविवाद सरना।
मुग्धांक वाट मेळना। गोंदाळ्ळे सर्व ॥३६६॥

एक्लो सांगता देवूचि ना। आणि एक्लो तुक्का दिस्साना।
देवु हावूंचि म्हणा। पावता तुम्का ॥३६७॥

देवूई ना दैत्यूई ना। स्वर्गुई ना नरकूई ना।
लाशें परत येश्ना। भोगांचि योगु ॥३६८॥

सृष्टि जाल्लि आपोआप। ना हाक्का आवैड बाप।
ना वर ना शाप। भोगुचि देवु ॥३६९॥

देह हेंचि देवु। भोजनऽचि भक्ति भावु।
मरणऽचि मुक्ति ठावु। अशिश म्हणपि अधिक ॥३७०॥

लिंग योनि पूजक। अत्याचारि अनेक।
अमृत म्हणताति सुर्याक। उच्छृंखली ते ॥३७१॥

प्रति एकलेंतु दुर्भावु[३६]। पूर्ते ज्ञानाचो अभावु।
बरे जावचो संभवु। कोणाकुईना ॥३७२॥

कर्म कर्तीति काम्य। भोगताति सुखग्राम्य।
ना खंचातूई साम्य। त्रिकरणा ॥३७३॥

तोंडानि सांगताति वेद। झगडयानि कर्तीतिक भेद।
सामान्य तरी अबोध। जड मूढ ॥३७४॥

३६ विरोधु.

एक्लेक देवु प्रकृति। आणि एक्लेक गणपति।
एक्लेक महासति। मोक्षदाई ॥३७५॥

हांव शाक्तु हांव मुक्तु। हांव भक्तु हांव भुक्तु।
सक्तु तरी हांवइ विरक्तु। दुर्विषया ॥३७६॥

आम्ही सौर आम्ही शैव। आम्ही हो एकमेका दैव।
आम्हीचि सेवक दिव्य। तत्त्व ज्ञानि ॥३७७॥

भेताळ भैरव नंदी। भजताति विषयानंदी।
नेण ते मायाबंधि। मूर्ख लोक ॥३७८॥

आम्ही अवधूत आरूढ। लागता समाधि प्रगाढ।
आम्ही सगळचांत होड। परिव्राजक[३७] ॥३७९॥

३७ सन्यासि

आम्ही उदासि नाम प्रेमि। म्हणतात्ति कठिण नेमि।
वंचक विकृत कामी। महापराधि ॥३८०॥

काहीं साधक सुजीवि। सत्त्वाधिक भाव जोंवि।
तळमळतात्ति अनुभवि। मार्ग नांत्ति ॥३८१॥

कर्तांति नित्य प्रार्थना। दीरे ज्ञान सज्जना।
करुं कशिशरे सहना। राक देवा ॥३८२॥

जन जाल्लि दुराचारी। अन्याई अनाचारी।
आइकनांति सांगल्यारी। कर्तांति निंदा ॥३८३॥

तत्त्वाभिमानि द्यावांक। ब्रम्ह रुद्रादिकांक।
सप्तर्षि संत मंडळीक। केल्लि विनंति ॥३८४॥

द्यावा लागिग मार्गाणि। करा तुम्हीं ज्ञानि।
काहीं तरी देववाणि। जाल्यारि कळैया ॥३८५॥

धर्म ज्ञान अभावान। घडला हे पिश्शापण।
अज्ञान हिंसा निवारण। कोर्का द्यावानऽचि ॥३८६॥

सुजीविलि ही प्रार्थना। आईकून तत्त्वाभिमानीन।
विनंति केल्ली भक्तीन। ब्रम्हादिकांक ॥३८७॥

कमलजानें स्तवन। केल्लें भक्तीन नमन।
पावगा हे नारायण। ह्या भक्त जना ॥३८८॥

ज्ञानाभावान सकट। गेल्ले अनुष्ठान फुकट[38]।
अट्टहास भर्ले विकट। राकरे रंका[39] ॥३८९॥

[38] व्यर्थ [39] [illegible]

श्री गुरु चरितामृत

ऋषिशापान वेद। जाल्लें देवा दुर्बोध।
ब्राम्हण भ्रष्टलें अबोध। उदर भरण ॥३९०॥

दी तांका शिकवण। करै देवा वेद पठण।
सूत्रादिकांचे रचनेन। ब्राम्हणांक ॥३९१॥

ब्रम्हालि ही विनंति। आईकलो तो रमापति।
अवतारु घेत्ता सत्यवती। देविल्या गर्भा ॥३९२॥

वसिष्ठाक प्रपौत्रु। शक्ति मुनीक नात्तु।
पराशरालो पूतू। बापै शुकाक ॥३९३॥

कथा अइकून साधकु। प्रश्न कर्ता एकु।
सर्वांक जाल्लों भादकु। शापु गौतमालो ॥३९४॥

गो हत्याचो अपवादु। आइला हो निर्विवादु।
अहल्या तरी साधु। चिंतित सत्य ॥३९५॥

तू ज्ञानाचो आगरु। तत्त्वज्ञानाचो भंडारु।
वैराग्याचो महामेरु। कल्पतरु गा ॥३९६॥

बालकाली भूक। नेणति बहुतेक।
कळता ते आवैक। सांभाळता तश्शिं ॥३९७॥

लागल्या माक्का तान। निवैगा उपदेशान।
खावै बरें खाण। जेवण तें ज्ञानाचे ॥३९८॥

जाल्लो सिद्ध हसन्मुख। प्रश्नु केल्ला सार्थकु।
श्रोत्रांक हो दूधपाकु। केसरियुक्त ॥३९९॥

दूधपाकु तरी गोडु। काजु द्राक्षि बदाम खडु।
खाता ना मेळता तरी धोडु। लेवचां खावचां ॥४००॥

ताशिशरे कथा मधें। मेळता खौचाक येद्दें।
म्हणू मांड्ता मुद्दें [40]। नव नवीन ॥४०१॥

बरें आईकरे बाळा। गांतिता कथाचि माळा।
घाल्यां चरण युगळा। व्यास मुनील्या ॥४०२॥

एकदा कैलास गिरी। बसला रुद्रु जटाधारी।
बसल्या जांघेरि गौरी। गंगा ती शिरस्थानी ॥४०३॥

गौरीक चिंता भारी। गंगेक बसैल्या मात्थारि।
शिवाक प्रीति तिज्जेरी। हांव तरी दुसरी ॥४०४॥

४० समस्या

गंगा दुरहंकारी। वक्र बुद्धि बेचारी[४१]।
देवैंता तिक्का कशिशतरी। करीन युक्ती ॥४०५॥

यजमानु तरी भोळो। आस्स खैं तीन डोळो।
रातदिवसु ध्यानांतु पळ्ळो। मग्नु नग्नु ॥४०६॥

आप्पोनु गणपतीक। मोगान सांग्ले पुत्ताक।
कशिशकऽररे मौशिक। देवैं खालि ॥४०७॥

आवैलि मना खंति। समजलो गणपति।
सोडि गे आम्मा भीति। व्यर्थ चिंता ॥४०८॥

समजाइलें आवसूक। प्रेरणा दिल्ली मुनीक।
देवालि करणि अचूक। घडता न कळता ॥४०९॥

४१ अविचारी

अहल्येन गौतमांक। सांगले प्रायश्चित्त कोरुंक।
भिवका लोकापवादाक। खरें म्हणता गौतमु ॥४१०॥

चिंतित मुनील्या मुकारी। आईलो विघ्ननिवारि।
सुंदर वटु धारी। तेजोन्वित ॥४११॥

प्रभावी वर्चस्वी। वटु परम तेजस्वी।
विष्णु वामना चेतस्सी। दिसता दिव्यु ॥४१२॥

मंदहासु मुखकमल। नेसला वसन निर्मळ।
अंगार अक्षतेचे निडल। लावण्य युक्त ॥४१३॥

उठानु गौतमान। दिल्ले दिव्य आसन।
कुशल संभाषणेन। केल्ले स्वागत ताक्का ॥४१४॥

गोत्र सूत्र सांगून। गौतमांक वंदूनु।
पद्मासन घालूनु। बसलो ब्रम्हचारी ॥४१५॥

मोवाळ मधुर उत्रांन। संबोधिले त्या वटून।
मुने कित्या कळंकित मन। चिंतित जाल्ला? ॥४१६॥

घडलेलि दुर्घटना। विस्सरे महामना।
करोनु गंगावतरण। वांचै गाईक ॥४१७॥

रुद्र द्यावाल्या मात्त्यारि। बसल्या पळें गंगावारी।
उतर्का[42] तिज्जे सवारी। जावका अवरोहण ॥४१८॥

शिव जटा विगलित। गंगातरी स्पर्शित।
प्राणदान हे त्वरित। मेळता गो मातेक ॥४१९॥

४२ देंवका

निरोप घेवुनु ब्रम्हचारी। अदृश्य जाल्लो क्षणांतरी।
गौतमान शिव चरणारी। केल्ले दृढ चित्त ॥४२०॥

जय जय हे शंकरा। सदाशिवा चर्मांबरा।
नीलकंठा दिगंबरा। पावगा बापा ॥४२१॥

शंभु तू वैष्णवोत्तमु। आज्जो तुक्का पुरुषोत्तमु।
वैराग्य भक्ती हो नेमु। शिकवो जगाक ॥४२२॥

हे मनोभिमानी रुद्रा। करी पाप आमुचे क्षुद्रा।
तुग्गेल्या स्मरणेन छिद्रा। जातले हे खरें ॥४२३॥

राकरे नागाभरणा। त्र्यक्षा कैलास राणा।
जय जय पार्वती रमणा। भूतनाथा ॥४२४॥

वृषभ ध्वजा रुंडमाळा। शोभता विरक्ता तुजे गळा।
शूलपाणि महाकाळा। शिवराणा पाव ॥४२५॥

तू मार्ले अंधकासुरा। जाळ्ळे सगळे त्रिपुरा।
राक्ले सकल सुरवरा। नमन घे आमुचे ॥४२६॥

जटेंतुल्या गंगेक सोण्णु। मृत गाईक वांचोनु।
लोकापवादांतूनु। सोडैगा शिवराणा ॥४२७॥

दुर्मति त्या ब्राम्हणांन। केल्ले निंद्य कर्म हे जाण।
शंभो तूं करी रक्षण। दंपती आम्हा ॥४२८॥

त्रेतेंतु राम चरण। स्पर्शान पाशाणांतून।
जाल्लें अहल्योद्धरण। तूं तरी राम भक्तु ॥४२९॥

आम्ही दोघ्घई रामालें। म्होणु तुक्का शरण आईले।
गंगेक व्हळयीं गाय्येलें। कलेवराचेरी शीघ्र ॥४३०॥

आईकरे साधका। प्रसन्नु जाल्लो त्र्यंबका।
दिल्ले दर्शीनि तांका। आशुतोषान ॥४३१॥

उतरली सुरसरिता। जान्हवी गंगा माता।
उठली गाई सचेता। हर्षलें मुनि दंपती ॥४३२॥

गाईक दिल्लें प्राणदान। गोदा म्हळ्ळेल्या नावांन।
गंगेक आप्पैले ऋषीन। तीचि गा गोदावरी ॥४३३॥

गणपतिलो उपायु। गौरीक जाल्लो सहायु।
गौतमाक मेळ्ळो न्यायु। अपकीर्ति गेल्लि ॥४३४॥

तागेलेचि शापान। भर्लें जगांतु अज्ञान।
ते व्यासावतार कारण। जात्ले आईक ॥४३५॥

ब्रम्हर्षि वसिष्ठु। ब्रम्हज्ञानांतु श्रेष्ठु।
शक्ति मुनितो वरिष्ठु। पूतु तागेलो ॥४३६॥

शक्तिलो पूतु पराशरु। तपस्वी वैराग्यपरु।
ज्ञानार्जनिंतु तत्परु। ब्रम्ह निष्ठु ॥४३७॥

जितेंद्रियु संचारी। आइला यमुना तीरीं।
थंई एकि कन्येचेरी। पळ्ळी दृष्टि मुनीली ॥४३८॥

नांव तिग्गेलें वासवी। दाशकन्या ती सुजीवी।
नौका चलैता देवी। विनामूल्य ॥४३९॥

मनांतु उठली वासना। द्यावाली ही प्रचोदना।
काहीं अघटित घटना। घडैता देवु ॥४४०॥

पळ्ळो श्रवणातु अंतरु। जाल्लो साधक चिंतातुरु।
ब्रम्हर्षिकामातुरु। जाल्लो कशी? ॥४४१॥

पळैता सिद्धालें तोंड। मुनि सर्व उदंड।
असह्य तांचे कामकांड। कर्णपाप ॥४४२॥

आइकरे बाळा साधका। काहीं पुणि उल्लोनका।
ऋषीली निंदा कोरु नका। ऋजु मागरि ते ॥४४३॥

सांगता कथा विषद। संशयाक ना आस्पद।
घडता काहीं विनोद। देवलीला ॥४४४॥

एकवेळ पराशरान। केल्ली देवाकडे प्रार्थन।
ये तूं पुत्ररूपान। उद्धरी आमका ॥४४५॥

द्यावान दिल्ले वचन। जात्ता वसिष्ठ कुलाभरण।
उत्तम समय साधून। प्रकट जात्ता ॥४४६॥

अग्निष्वात्त पितृदेवता। अच्छोदा तागेलि दुहिता [४३]।
मानस कन्या ती ख्याता। अती सुंदरी ॥४४७॥

तीणें केल्लीं प्रार्थना। भजूरें पुत्रभावान।
तुगेल्या सेवा मात्रान। जाल्लें जीव जीवन्मुक्त ॥४४८॥

योरे कमल लोचना। करिवरदा शुभानना।
खग गमना नारायणा। भक्त बंधु पाव ॥४४९॥

४३ पूर्व

कौसल्यानंद वर्धना। गोविंदा गोपी रमणा।
वामना बलि बंधना। भक्ताभरणा पाव ॥४५०॥

तूरे वैकुंठ राणा। प्रल्हाद वरदा स्वरमणा।
राकरे रमारमणा। कर्ता सेवा तुजि ॥४५१॥

तू अनाथालो नाथु। भक्ताभीष्ट प्रदातु।
कपिलु धन्वंत्रि दत्तु। अवधूता पाव ॥४५२॥

अवतारु मेज्जांतु देवा। घेरे महानुभावा।
कर्ता अहर्निशीं सेवा। पुत्रभावें नित्य ॥४५३॥

अशिश प्रार्थना पितृ कन्या। नारायणोपासिका धन्या।
भक्ति तरी तिजि अनन्या। पावलो देवु तिका ॥४५४॥

देवान दिल्लें अभय वचन। सोडैलें चिंतेतून।
येत्लो पुत्र रूपान। सोडि चिंता भय ॥४५५॥

सिद्धमुनि सांगता शिष्यांक। विसरलो एक कथानक।
नारदाल्या शापाक। पडली बलि अच्छोदा ॥४५६॥

एकदा मुनि नारदु। करीत लोकांक बोधु।
आईलो देवोन्मादु। अच्छोदा कडे ॥४५७॥

नमस्कारु कोर्नु मुनीक। लागली कुशल भाषणांक।
आत्मस्तुति निंदा अतिरेक। जाल्ली तिजि विपरीत ॥४५८॥

अच्छोदा पुरो ही वैखरी। घे शापु शुद्राघरीं।
वासु घडतालो जन्मांतरी। चुक्कोच्या तरी जाईना ॥४५९॥

शापु नई हो वरु। वसु तो उपरिचरु।
करीऽत समुद्र विहारु। पडलि दृष्टि अप्सरा ॥४६०॥

जाल्लें रेतस्खलन। गिळ्ळे तें एक मत्स्यान।
ते धरले दाशराजान। चिरले उदर ताज्जे ॥४६१॥

प्रकटली शिशु दोनि। चेल्लो आणि कन्यामणि।
मत्स्यगंधा विराट नांवानी। आप्पैले तांका ॥४६२॥

तीचि गा सत्यवती। रूपलावण्यांतु रति।
कोण जाण दैव गति। पराशरु भुलल्लो ॥४६३॥

पवित्र यमुना तटीं। घडलि दोग्गालि भेटि।
जाल्लि मानसी निकटीं [४४]। दैव लीला विचित्र ॥४६४॥

४४ लागि.

श्री गुरुचरितामृत

पराशरु जाल्लो चिंतितु। आपण हिमालयाचो संतु।
पडलो ह्या विकारांतु। संयम सुटलें ॥४६५॥

मत्स्यगंधा किरातिणि। संस्कार हीन कामिनी।
वासिष्ठ कुल स्वामिणि। जात्लि कशिश कळेना ॥४६६॥

आइला संदेहु मुनीक। जाईना इंद्रिय आवरूंक[४५]।
याज्ञवल्क्यादि ऋषि अनेक। पावले थई अचानक[४६] ॥४६७॥

सांगले तान्नि पराशरा। कित्या संदेह मुनिवरा।
योग्य सती अनुचरा। स्वीकारी सत्प्रजार्थ ॥४६८॥

अजादिकालि मागणि। पावली द्यावाले चरणी।
अवतारु येत्ता धरणी। कारण ज्ञान कार्य ॥४६९॥

४५ स्वाधीन कोर्चक ४६ आकस्मिक

तुमका निमित्त कोरनु। अवतरता नारायणु।
विचारु हो कोळ्नु। पावली गा ह्या स्थळी ॥४७०॥

आइकूनु ऋषि वचन। दाश कन्या लज्जेन।
भरल्या मत्स गंधान। अपवित्र म्हणे सती ॥४७१॥

तपस्वी पराशरान। मंत्र जलान सेचन।
केल्ले पवित्री करण। देह मत्स्यगंधिलें ॥४७२॥

सुगंध पसरलें योजन। योजन गंधी ती लज्जेन।
स्पर्शिलें पराशर चरण। यमुना द्वीपी ॥४७३॥

भरली ऋषि महर्षि। ज्ञानी साधक उदासि।
कठोर संयमि तापसी। आइले न कळविता ॥४७४॥

द्यावालें हें कोण जाण। स्वतः अग्निष्वात्तान।
केल्लें पराशराक दान। होमादि युक्त ॥४७५॥

कन्या दान पाणिग्रहण। होम आणि अष्मारोहण।
घेव्नु अरुंधती दर्शन। सप्तपदी सहित ॥४७६॥

ऋष्यो सर्व निवर्तलें। दंपती ध्यानस्थ जाल्ले।
द्यावा आमचे जान्म सगळे। घे सेवेक म्हणताति ॥४७७॥

उपरांत पराशरान। केल्लें तिक्का आलिंगन।
सत्यवती ती लज्जेन। केल्ली विनंती त्या वेळी ॥४७८॥

हुज्वाडु तो चारी दिशा। न्हईच्या थडी ह्या प्रकाशा।
लज्जित रे हांव तापसा। करी काहीं उपायु ॥४७९॥

मंत्र सिद्ध पराशरान। द्वीप आच्छादिले दवान।
ह्या अद्भुत दृष्याचे दर्शन। आश्चर्य दिसले तिक्का ॥४८०॥

भिल्ली काळोखु पोळोवुनु। कांपली भविष्य चिंतूनु।
पराशरालें पाय धोरनु। स्फुंदत रडली तेन्ना ॥४८१॥

सोडि चिंता सत्यवती। अवतारु करता श्रीपति।
जन्मांतराचि पुण्य कृति। येत्ता पुत्र रुपान ॥४८२॥

यज्ञ हे वामाख्यनांव। विषयादिकांक ना गो ठांव।
कर्ता आण भाषा हांव। अभंग गे तुजे कन्यत्व ॥४८३॥

अशिश सांगत द्वीपांतु। रमलें दांपत्य सुखांतु।
बहु पुण्यान तो भगवंतु। अवतरलो द्वीपा मधें ॥४८४॥

ब्रम्ह रुद्रादि देव। आइले वसिष्ठ वामदेव।
याज्ञवल्क्यादि सुजीव। पावले प्रकट समईं ॥४८५॥

अत्रि शौनकादि तपस्वी। जन्हु जमदग्न्यादि तेजस्वी।
पावले नारदादि देवर्षि। जमले अवतार काळी ॥४८६॥

इन्द्रादि सर्वै देवता। सकल परिवार सहिता।
पठण करीत स्तुति संहिता। पावले यमुना थडी ॥४८७॥

सर्वै मेळुनु प्रर्थिताती। राकरे तू रमापति।
जगत्कारणा जगत्पति। दीगा ज्ञान अभय ॥४८८॥

सकल वेदार्थ सार। आगम आणी शास्त्रविचार।
सुजीवींक साधना विवर। विवरी वैराग्य भक्ती ॥४८९॥

अनंता पतित पावना। रक्षण करी सद्‌ब्राम्हणा।
भक्ति भाव इतरे जना। दित्लो तूं दीनबंधु ॥४९०॥

ज्ञान दारिद्र्‌यान लोक। भोगतातित दुःख भयानक।
तू राक तुग्गेलें जनांक। प्रकट जा पुण्य पुरुषा ॥४९१॥

तुज कुणि सत्यवतीन। घेतल्याति गा जन्मतीन।
पराशरालि आशा पूर्ण। करीऽहरि ह्यावेळिं ॥४९२॥

वेद अनंत म्हणताति। अर्थ कोणा कळताति?
अपार्थ अनर्थ करताति। भरल्याति तेचि अगणित ॥४९३॥

मत्स्य रूपान वेदोद्धार। कूर्मु तूं घरले मंदर।
वराहरूपान केल्ले उद्धार। मारनु त्या हिरण्याक ॥४९४॥

प्रल्हादास्तव नरहरि। वामनु तू बली खात्तिरी।
मारले क्षात्र कुल भारी। भार्गवा परशुरामा ॥४९५॥

श्री रामा रघुनंदना। रावणादि दैत्य मथना।
स्वामी तूं मुख्यप्राणां। सीतापते राक आमका ॥४९६॥

श्री कृष्णा कंसांतका। गोविंदा गोपालका।
भूरमणा नरकांतका। यदुपते यो बेगि ॥४९७॥

योरे दैत्य मोहका। बुद्धनामा अहिंसका।
कल्कि रूपा हे तारका। रक्षकु भावुकांलो ॥४९८॥

दुष्टांक मारले शस्त्रान। शिष्टांक दीगा शास्त्रज्ञान।
ब्राम्हणालि बुद्धि संकीर्ण। जाल्या पळे ह्या द्वापरेंतु ॥४९९॥

यो गा बेगि त्रियुगा[४७]। तुजो आवतारु युगयुगा।
हे म्हण्णे तुग्गेलिमुगा। येना कित्त्यादेवा? ॥५००॥

ऋषि मुनीलि विनंति। अइकूनु रमापति।
योजिली अवतार कृति। भुवन भाग्या ॥५०१॥

निमित्त ताक्का मातापिता। प्रकट जाल्लो जगत्राता।
चोदा लोकांचो दाता। धाता आणि पितामहु ॥५०२॥

तेजःपुंज वदन। नेसला दिव्य कौपीन।
केल्ले वटु रूप धारण। कमंडलु दंड सहित ॥५०३॥

सुंदर ते जटा कलाप। मोहक मुग्ध यतिरूप।
कोण करीत गा माप। महिमा ताज्जि अनंत ॥५०४॥

४७ कृत-त्रेता-द्वापरेतु मात्र अवतारु कर्तालो.

कोटि सूर्यांलि प्रभा। वर्णू कितली ती शोभा।
नीलमेघद्युति सन्निभा। गाभा चैतन्याचो ॥५०५॥

ब्रम्ह रूद्रादिकानिं। देवता ऋषि मुनीनिं।
स्तुति गाईली सुस्वरानिं। वेद पुरुषा जय हो ॥५०६॥

पळैता पराशरान। परमात्माक पुत्र भावान।
केल्ले नमन भक्ति श्रद्धेन। सत्यवती सहित ॥५०७॥

जय जय वासवीनंदना। पाराशरा बादरायणा।
जय जय वासिष्ठकृष्णा। द्वैपायना धन्य हो ॥५०८॥

उद्दैलो ज्ञानभास्करु। नाश जाल्लो अज्ञान तिमिरु।
अनंतगुणाचो आगरु। सागरु ज्ञानामृताचो ॥५०९॥

अशिशं आनंदोद्गार। काढतातित सगळे ऋषिवर।
गौतम शापाक परिहार। प्राप्तगा अप्रयत्ने ॥५१०॥

ऋषिनिं केल्ले नामकरण। श्रीकृष्णद्वैपायन।
तशिश उळदिले विप्रान। घात्तले लोटांगण बरें ॥५११॥

केल्लें साष्टांग मातेक। त्या उपरात पराशराक।
देवु आरंभिता उल्पाक। गोड मोवाळ उत्रं ॥५१२॥

आज्ञा दिय्या वोच्चाक। श्री क्षेत्र त्या बदरीक।
स्थळ ते योग्य तपाक। सुगमु गा ज्ञानकार्य ॥५१३॥

सुरनदी अलकनंदा। सरस्वती ती पद्मगंधा।
संगमांतु स्वच्छंदा। करीऽन चिंतन शास्त्राचें ॥५१४॥

पुत्तालि मधुर वाणि। आइकता अश्रुनयनीं।
रडलि उत्कंठित मनीं। पळैऽत पराशराक ॥५१५॥

आवैले दुःख पोळोनु। प्रेमान हात धोरनु।
सांगता तिक्का द्वैपायनु। धरी तूं धैर्य जननी ॥५१६॥

तू आठैता त्या क्षण। पाव्तां गे घे वचन।
दाशराजाल्या आश्रयान। राव तूं राकता तुक्का ॥५१७॥

वंदूनु मातापितांक। पाव्लो त्या क्षण बदरीक।
नरनारायणाश्रमाक। पेलतडि अलकनंदाच्या ॥५१८॥

बोराचि झाड बहुत। म्होणु बदरी नांवान ख्यात।
सरस्वती तीर शोभित। निवास ते द्वैपायनाले ॥५१९॥

अनंतानंत वेद राशि। सांगू जनांक कळैशि।
चिंतिता मनांतु अशिशं। वासिष्ठकृष्णु ॥५२०॥

अपौरुषेय म्हणतातित वेद। कोणा कई जाइनिगा बोध।
व्यर्थ करी वाद विवाद। पाखंड आणि अतिवादि ॥५२१॥

वेदा सांगला यज्ञयाग। मुख्य फल स्वर्ग भोग।
तेचि आपण्याले महायोग। अशिश म्हणपीच अधिक ॥५२२॥

अनंत वेदाचें विभजन। केल्लें द्वैपायन देवान।
म्होणुच्चि वेदव्यास नांवान। जाल्लो प्रसिद्धु देवु ॥५२३॥

असंदिग्ध अल्पाक्षर। सूत्रांचे नियमासर।
रचिले ताणें ब्रम्हसूत्र। मार्गु तो वेदशिखरा ॥५२४॥

तदर्थ बोधक पुराण। अठरा संख्येचे महान।
नाना तत्त्वज्ञान गहन। निरुपिलां सुलभशैलि ॥५२५॥

शतसहस्र संहितेचे भारत। निर्णयात्मक सद्ग्रंथ।
विविध दृष्टांत सहित। सांग्ला पळे सूत्र बद्ध ॥५२६॥

चारि वेदाचे सार। वेदातीत सुविचार।
आइलेति खरे भरपूर। भारतांतु बहुरंगी ॥५२७॥

भारताक पांचवो वेदु। म्हणताती ज्ञानी साधु।
निस्संशय निर्विवादु। व्यासोक्तिचि वेदु ॥५२८॥

भारतांतु समावेश। कृष्णालो गीतोपदेश।
सहस्रनाम ते विशेष। जन्मला व्यासगर्भि ॥५२९॥

आख्यान उपाख्यान। दृष्टांत आणि तत्त्वज्ञान।
ज्ञान विज्ञान प्रमाण। विरला भारताब्धि ॥५३०॥

श्रीमन्नारायणु। तोचि श्रीव्यासु भगवानु।
तो एकु ऋषि सामान्यु। अशिश म्हणपीचि तामसु ॥५३१॥

आईकरे साधक वर्या। मूर्ख न कळे व्यास चर्या।
भोगताति नित्य निरया। तामसी तमांधकूपी ॥५३२॥

वेदोपनिषत्सगळे। सकल लोकांक शिक्कैलें।
युग धर्मान व्यर्थजाल्लें। निरर्ध गा व्यास प्रज्ञा ॥५३३॥

धर्मान चलारे म्होणु। दोन्ही हात उक्कोळुनु।
सांगिलें आईकना कोणु। जाल्लो चिंतितु व्यासदेवु ॥५३४॥

सदा रुचि पापकृति। फल पुण्याचे इच्छिताति।
पुण्य कहीं करनाति। म्हणताति पाप काडि ॥५३५॥

धर्मींनि जोडारे धन। लोक हिताचे कारण।
करा ताज्जे वितरण। पावै ऋण जगाचें ॥५३६॥

मोक्षूऽचि गम्य स्थान। साधा हे अर्थकामान।
मेज्जे हे भारत वचन। अइकना कोणि ॥५३७॥

व्यासालो असंतोषु। सांगताऽचि सिद्धु उदासु।
साधकूई जाल्लो विवशु। धरले दोग्गानि मौन ॥५३८॥

आइका हो श्रोतृजना। देऽवूचि थकलो म्हणा।
तरी जगहें सुधारना। सांग्चे हे कोण कोणां? ॥५३९॥

लोक आईकना व्यास वचन। आनि दासाले आइकत कोण।
व्यास दास दोगई क्षीण। जऽग आसा तश्शींचि ॥५४०॥

अस्सो आइक ही काणि। कळनागा देवकरणी।
मोड्चि कित्या कथा सरणि। सांगता हे अईका बरे ॥५४१॥

एकदा नारदालि स्वारि। आइलि श्रीक्षेत्र बदरी।
व्यासाश्रमा मुखारी। वाजली वीणा मंदगति ॥५४२॥

साधकान मौन मोडलें। विषयांत अंतर पडलें।
आइलो घेवुनु होड्लें। बिगडाईता हो सगळां ॥५४३॥

नारदु एक्लो फिरकि[48]। झगडाइता एकामेकि।
सिद्ध मुनि तू सांगकी। आइलो कित्याक हो कितवु[49]
॥५४४॥

४८ सदा भोव्ताली. ४९ वंचकु.

साधकालें हीं दुर्वचन। आइकून भाटलें श्रवण।
सिद्ध मुनीन कोपान। धिक्कारु सांगलो ताक्का ॥५४५॥

साधका तू अधिक प्रसंगि। ब्रम्ह पुत्रु तो सत्संगि।
बडबडता तू कित्या वुगि। उडाळ[५०] आइकरे उष्टचा[५१]
॥५४६॥

ब्रम्हपुत्रु तो नारदु। परतत्त्व विशारदु।
हरिगुणाचो अनुवादु। कर्ता तो अहर्निशि ॥५४७॥

त्रिकालज्ञानी निर्मत्सरी। संचारी तो लोकांतरी।
कलियुगांतु ताज्जिस्वारी। भूलोका काइलि ॥५४८॥

५० उद्धटु ५१ पतितु

श्री गुरुचरितामृत

व्यापलेति वेद निंदक। पापाचारी वेददूषक।
गो ब्राम्हणालें हिंसक। वर्तणूक[५२] पशुप्राय ॥५४९॥

शिश्नोदर[५३] परायण। ना देखल्यारी हरि स्मरण।
नारींक तरी पतिदूषण। जाल्ला पळे नित्यकर्म ॥५५०॥

आसेतु हिमाचल। भ्रष्टले गा तीर्थ सकळ।
उदरंभरणऽचि केवल। विप्रजातीतु भर्ला ॥५५१॥

धनिक जाल्लेति लोभि। ज्ञानि सगळे मतलबि[५४]।
न कळे मुक्तिचि खूबि[५५]। व्यर्थ ते नष्ट भ्रष्ट ॥५५२॥

मान पाव्ताति व्यभिचारी। अपमानिति पतिव्रता नारी।
काम शास्त्राचा उपरी। चर्चिती काव्य शास्त्री ॥५५३॥

५२ चालिबोलि. ५३ कामोपभोगि. ५४ वंचक. ५५ रहस्य.

उपदेशक संन्यासी व्यर्थ। साधितातति आपुले स्वार्थ।
तांचे जीणे हे निरर्थ। आणि परमार्थु खंचो? ॥५५४॥

कलि कालाचि महिमा। पोळोवुनु देवर्षिनामा।
पावलो त्या व्यास आश्रमा। सरस्वती तीरा ॥५५५॥

घालून लोटांगण। जय म्हणे बादरायणा।
करी देवा लोक रक्षण। ज्ञान दी ज्ञानहीना ॥५५६॥

अशिश विनंति कोर्नु। शिर साष्टांग नमन घाल्नु।
पळैल्यारि व्यासु चिंतामग्नु। देक्कोनु धसकलो मुनि ॥५५७॥

विचारले त्या नारदान। बावलां कित्या देव वदन।
रूप स्वरूप आनंदान। परिपूर्ण गा तूं ॥५५८॥

वचन आइकूनु नारदालें। हांवे पुराण इतिहास रचिलें।
तरी निरुपयुक्त जाल्लें। निरुपयोग ॥५५९॥

लोकांतु ना सुधारण। जाल्लें व्यर्थ हे पुराणं।
जाणता तू हें कारण। सांग गा माक्का ॥५६०॥

आइकूनु सर्वज्ञाले वचन। तू रचिलें अठरा पुराण।
पुण भक्तितांतु ना पूर्ण। केवल तें कर्मकांड ॥५६१॥

मुग्ध आणि सुजीवि मंद। न कळे पवित्र छंद।
त्या जनांक भक्ति मकरंद। पिवैनि गा तूवें ॥५६२॥

स्त्री शूद्र द्विज बंधूक। वेदार्थ मनन कोर्चाक।
नाहिगा सामर्थ्य अधिक। रक्षण तांचे मुख्य ॥५६३॥

तूं तस्सलें भक्ति प्रधान। विवरिगा कृष्ण कथन।
तें सुलभ समाधि भाषेन। कळै देवा भक्तांक ॥५६४॥

नारदालि ही उलवण। मान्य केल्लि मुनिवरान।
सर्ववेदार्थ मथून। रचिलें गा भागवत ॥५६५॥

ब्रम्हसूत्राचो समन्वयु। भारतार्थ विनिर्णयु।
गायत्रीचो अर्थमयु। तो गा ग्रंथु भागवत ॥५६६॥

अपूर्व हो पुण्यग्रंथु। धरला हरीक गर्भांतु।
मुख्य गा भक्तिपंथु। सुलभु हो सुकृतींक ॥५६७॥

व्यासालो मानसपुत्रु। शुकमुनि तो त्रिनेत्रु[५६]।
भागवताचो महावक्तु। श्रेष्ठ तो वैष्णवांतु ॥५६८॥

५६ शुकु रुद्रावतारि

पुराण शिक्कैले सूताक। भागवत दिल्ले पुत्ताक।
वेद पैलादिकांक। सगळे व्यासानुग्रहीत ॥५६९॥

अस्सलो देवु वेदव्यासु। उत्तर बदरींतु वासु।
तोचि सर्वाधिवासु। वासिष्ठु रमापति ॥५७०॥

उत्तर बदरींतु व्यासु। प्रत्यक्ष करता वासु।
अगम्य दुर्गम तो देशु। साध्यतें देवादिकांक ॥५७१॥

सामान्य जनालि बदरी। तिज्जे नांव विशालनगरी।
अलक नंदाच्या तीरि। वास्तव्य नर नारायणालें ॥५७२॥

उत्तर बदरी क्षेत्र। तपस्व्यांक अतिपवित्र।
असाध्य पळें मनुष्यमात्र। पाव्चिना स्वप्नां सुदां ॥५७३॥

म्होणुचि हरिद्वारांतु। पवित्र गंगातीरांतु।
सप्तर्षिल्या परिसरांतु। बांध्ले मंदिर व्यासाक ॥५७४॥

साधका तू संचारी। वेदव्यासालि कीर्तिभारी।
स्तुति स्तोत्र तरी कान्नारि। पड्‌ला पळे सत्य ॥५७५॥

ज्योतिर्लिंग द्वादश। शक्तिस्थळ हे विशेष।
शोधिं चतुर्धाम अषेश। ना गा मंदिर व्यासालें ॥५७६॥

ना कोणाकई व्यास स्मृति। तो देवु म्हणता श्रुति।
माध्वांक परम गति। व्यासूचिरे समज ॥५७७॥

माध्वांतु सारस्वत। गण्य आणि गौरवान्वित।
तांच्या परंपरेतु। ख्यातु गा काशीमठु ॥५७८॥

श्री काशि मठाचें यतिवर। साक्षात् व्यास कुवर।
सारस्वतालें गुरुवर। तपस्वी वीतराग ॥५७९॥

श्री मत्सुधींद्रतीर्थ। शापानुग्रह समर्थ।
महायोगी निस्वार्थ। मुक्त ते अपरोक्षि ॥५८०॥

आराध्यु व्यास रघुपति। गुरु सुकृतींद्रयति।
महा विरक्त संचरति। म्होणु ते परिव्राजक ॥५८१॥

तान्नि हे व्यास मंदिर। निर्मिले बृहदाकार।
साधकांक हे कुळार। पुण्य स्थळ विरक्तालें ॥५८२॥

साधका तू पुण्यवंतु। स्थळ अस्सलें ना जगांतु।
जोड्ला रे पूर्व जन्मांतु। सुकृति तूं सुजीवि ॥५८३॥

म्हणताति ब्राम्हण वरिष्ठ। तांतूई सारस्वत श्रेष्ठ।
माध्वम्हळचारि नेमिष्ठ। गरिष्ठ ते व्यासभक्त ॥५८४॥

अशिश सांगऽत सिद्धमुनि। ध्यानस्थु जाल्ले उन्मनी।
साधकालो शिखामणि। घाल्ता लोटांगण तेन्ना ॥५८५॥

व्यापिला सर्वत्र मौन। घडले व्यास दर्शन।
साधकाले शांत वदन। नियाळ्नु पळैता मुनि ॥५८६॥

हात जोडले साधकान। पूर्ते जाइना समाधान।
कर्ता आणिकई प्रश्न। संदेहि सर्वग्राही ॥५८७॥

व्यासावतारु आइकूनु। कान पवित्र जाल्ले म्होणु।
करता आणि नाना प्रश्नु। ध्येय गा लोकसंग्रहु ॥५८८॥

श्री व्यासावतार कथन। करीह्यत तरि श्रवण पठण।
सकल इष्टार्थ पूर्ण। जात्ता तत्काळ सत्य ॥५८९॥

धन धान्य समृद्धि। बालकांक विद्या बुद्धि।
वृद्धांक आरोग्य वृद्धि। सिद्धि सर्व संसार्यांक ॥५९०॥

अध्यायु हो दोन्निचो। सगळ्यानि हातु जोड्चो।
आरती आणि शांति मंत्राचो। कोर्या घोषु जै गुरु ॥५९१॥

श्री गुरु चरितामृताचो व्यासावतारु नामक
दुसरो अध्यायु समाप्त।
॥श्री कृष्णार्पणमस्तु॥

ॐ

श्री गुरुचरितामृत

सारस्वतचरित्र नामक

तिसरो अध्यायु

श्री गुरुचरितामृत

।।श्री गणेशायनमः।। ।।श्री गुरुभ्योनमः।।

मंगलाचरण

ओं नमो वेदपुरुषा। वेद वेद्या निर्दोषा।
सर्वज्ञा सर्वाधिवासा। श्रीशा राक सर्वांक ।।१।।

हे वाङ्‌मनातीता। व्यापका विघ्ननाथा।
सृष्टि स्थिति संहार करता। भर्ता भक्तांक पाव ।।२।।

निरवद्या निगमवेद्या। देवा बाधका बाद्या।
सर्वोत्तमा अनवद्या। भयकृद्‌भयनाशना ।।३।।

देवा तूं सर्वेषु। विश्वंभरु गणेशु।
गगनाकारु विघ्नेशु। विनायकू तूंचि ।।४।।

लक्ष्मी ती वक्षांतु। चतुराननु नाभींतु।
निय्याळ्नु मग्न ध्यानांतु। परिपूर्ण नेऽण गा तुक्का ॥५॥

भारति सरस्वती सती। लक्ष्मीऽचि तांच्यांतु आस्स ती।
दित्तां भक्तांक सन्मति। तीचि कुलदेवि आम्का ॥६॥

आम्ही शांतेरि कामाक्षीलिं। कुळाविगा रामनाथालिं।
हीं तरी भक्त नारायणालि। म्होणुचि गा आम्ही वैष्णव ॥७॥

वैष्णवालो कुलाचारु। अहिंसकु सदाचारु।
हरि नामाचो उच्चारु। कोर्का नेमस्तपणे ॥८॥

माता पितांक आदि। कर्ता नमस्कार विधि।
ते देवाचे प्रतिनिधि। म्होणुचि प्रथम वंद्य ॥९॥

उपरांत धर्माचार्यांक। सारस्वतांल्या कुलगुरूंक।
तीन्हि[1] मठ परंपरेक। कर्ता प्रणामु भक्तीन ॥१०॥

श्रीद्वैष्णव सिद्धांति। आराधक व्यासरघुपति।
श्री काशीमठाचे अधिपति। श्रीमत्सुधींद्र ख्यात ॥११॥

वेद सच्छास्त्र पुराण। व्यासदेवालें तत्त्वज्ञान।
माध्व शास्त्रतें संपूर्ण। अवग तांका ॥१२॥

सकल सद्गुणाचे आगरु। नेम निष्ठेचे यतिवरु।
संत महंता चो कुळारु। सुरतरु अर्थ कामाचे ॥१३॥

ते मेज्जे स्वरूपोद्धारक। ह्या कृतीक मार्गदर्शक।
हरिकथेक तेंचि प्रेरक। बोधक दासदीक्षा ॥१४॥

१ काशी, कैवल्य, गोकर्णपर्तगाळी

प्रथम तांका प्रणाम। शिकइले माक्का ओनाम [२]।
गुरु राजाले गुणग्राम। वर्णिता आईका ॥१५॥

शिष्य तांचे राघवेंद्र। संयमि ज्ञानकेन्द्र।
पावलेति व्यास मुनींद्र। तांका ते मोगाळ ॥१६॥

श्री सुधींद्रालि धीः शक्ति। तपःस्वाध्याय विरक्ति।
संघटनेचे महायुक्ति। एकत्र गा हांच्यांतु ॥१७॥

गुरु आणि शिष्यालि दया। अस्सो ह्या दासद्दूया।
कृति रचनेक बुद्धि दिय्या। करया लिखाण पूर्ण ॥१८॥

श्री गुरु गौडपादाचार्य [३]। सारस्वताले गुरुवर्य।
गोविंद भगवत्पादार्य। शिष्य तांचे ज्ञानी ॥१९॥

२ प्रथमाक्षर ३ श्री कैवल्य मठाचे आद्ले स्वामी

गोविंद करसंजात। शंकराचार्य प्रख्यात।
तांका अद्वैतमत। दिल्लें गौडपादानि ॥२०॥

कारिका गौडपादालिं। व्याख्या शंकराचार्यालि।
अद्वैताचि मूळ चालि। अंकुरलि सारस्वतातु ॥२१॥

मठाम्नायाचे मूळ। व्यास आणि शुक बाळ।
गौडपाद तें अनुकूल। शिष्य शुकमहर्षींक ॥२२॥

श्री सच्चिदानंद सरस्वति। विद्यमान विरक्त अति।
शिवानंद बाल यति। सुवृति शिष्य तांचे ॥२३॥

यतिद्वयांक वंदन। कर्ता भक्ति भावान।
मागतां तांचे मार्गदर्शन। आशीर्वादयुक्त ॥२४॥

भवानि शंकरा रुद्रा। मांगोशा चिन्मुद्रा।
मनाचे विषय क्षुद्रा। नाशीं भक्तिदी हरीलि ॥२५॥

संकर्षणु श्रीहरि। सर्वदा तव अंतरि।
विराजिला खरो खरीं। करै कृपा कृतिकार्यां ॥२६॥

गोकर्ण पर्वत कालीय। जिवोत्तम मठाचे धुर्यं।
विद्याधिराज यतिवर्य। विरक्त गा तपोनिधि ॥२७॥

शास्त्राकाशाचो द्युमणि। वैष्णवा मध्ये विद्वन्मणि।
सघटक आणि तत्त्वज्ञानी। निपुणु गा वेद वेदांगि ॥२८॥

द्वारकानाथालि शास्त्रयुक्ति। कमला नाथालि गुरुभक्ति।
इंदिराकातालि तपो शक्ति। एकत्र जाल्या सन्निधिं ॥२९॥

बदरींतु केल्ला चातुर्मासु। ऋषि वनांतु गुहा वासु।
त्रिवेणि तीरारि कल्पवासु। साधलेले तपो निधि ॥३०॥

रामु आणि वीर विठलु। घेत्ता पूजा त्रिकाळु।
पूजा स्वाध्यायांतु वेळु। घाल्चे तपस्वी निज ॥३१॥

तुम्ही वेदांत धुर्य। दिय्या तुमचि साहचर्य।
कृतीक दिय्या स्थैर्य। घ्या कीर्ति चरणाकडे ॥३२॥

कर्ता वंदन वैष्णवांक। अशेष वैदिक वृंदाक।
उदार गृहस्थ बंधूक। साष्टांग गा सज्जनां ॥३३॥

अध्यायु हो तिसरो। सारस्वतालो विवरों।
आईका हे पुण्य खबरो। आमुचे पूर्वजालें ॥३४॥

कर्ता तरि पठण श्रवण। अध्ययन आणि प्रवचन।
धोर्नु पवित्र आचरण। सप्ताह विधि पूर्वक ॥३५॥

सकल इष्टार्थ सिद्धि। ज्ञान भक्ति वैराग्य वृद्धि।
सज्जन संग सद्बुद्धि। जात्ले प्राप्त गुरुकृपें ॥३६॥

विवाहादि मंगल कार्य। आयुरारोग्य ऐश्वर्य।
मेळ्ता गुरुलें साहचर्य। धरा नेमु नित्य ॥३७॥

जय म्हणूह्ययां गुरूंक। भयभक्ति सुरतरुंक।
म्हणा सद्गुरु सुधींद्रांक। जय हो जय हो ॥३८॥

उपजलो संदेहु साधकाक। निमगिलें सिद्ध मुनीक।
सारस्वतांले अध्यात्मिक। अपूरक परस्पर ॥३९॥

हे सर्व सारस्वत। स्मार्त अद्वैति म्हणत।
स्वीकारलें वैष्णव मत। कित्या केद्ना कशिश? ॥४०॥

मध्व मुनींद्र कोण? त्या अवताराक कारण।
तांगेले तत्त्वानुसरण। सारस्वताक कशिश? ॥४१॥

हे सर्व शाक्त शैव। जाल्ले कशिश वैष्णव?।
कोणाले हे विप्लव। घडले हे केन्ना? ॥४२॥

आनिकई एकि विनंति। दक्षिणांतु सारस्वत नांति।
ते उत्तराचे म्हणतातित। पाव्ले कशिश थांगा? ॥४३॥

सरस्वती हिम गिरीचि। ब्राम्हण हे त्यावेळाचि।
तांका दक्षिणांक येवुचि। स्थिति घड्लि कित्या? ॥४४॥

हे सगळे चरित्र। आईकूनु जात्ता पवित्र।
मंद मति हाव विचित्र। बुद्धि मेंज्जि संकीर्ण ॥४५॥

सांगरे सिद्धमुनि। सारस्वतालि मूळ काणि।
ज्या कुळीं जन्मलो ज्ञानी। परशुरामु ॥४६॥

क्षात्र कुल निर्दालना। मारिले कार्तवीर्याजुना।
कर्रूनि पृथ्वि प्रदक्षिणा। एकवीस पाव्‌टि ॥४७॥

अखिल भू मंडळ जाण। केल्ले विप्रांक दान।
दान भूमीं न राव्ता क्षण। त्यजिलें गा सर्व ॥४८॥

पाव्लो कंथैक मुनि। तपस्वी जामदग्नि।
सागरे सिद्ध ज्ञानी। सांगो पाग ॥४९॥

परशुराम चरित्र। आइकणार पुण्य पात्र।
जाल्ले कुलपवित्र। म्हणतातित ज्ञानिं ॥५०॥

साधकाल्या मुग्ध उत्रान। हासलो सिद्ध मनान।
सांगता तुका मूळ कथन। सारस्वतांले ॥५१॥

जाल्लो तुज्जेरि प्रसन्नु। हो तरि सुंदर प्रश्नु।
आरती कोर्का वोवाळ्नु। खरोगा तू साधु ॥५२॥

ऋषींतु भृगु श्रेष्ठु। म्हणता गीताचार्यु वरिष्ठु।
भृगु पुत्रु तपोनिष्ठु। नांव ताज्जे च्यवनु ॥५३॥

च्यवनात्मजुरे दधीचि। त्यागी योगी चक्रवर्ति।
वडवाप्राथिथेई ताज्जि। पत्नी पुण्यनारी ॥५४॥

तिज्या गर्भांतु जन्मले। पुत्र दोग विराजिले।
सारस्वत पिप्पलाद ठरले। नांव तांका ॥५५॥

सकल वेद शास्त्र संपन्न। जाल्ले ते ज्ञानधन।
सारस्वतु तरी वेदपूर्ण। करी तोंड पाठ ॥५६॥

आतां संदेहु साधकाक। निम्गिलें सिद्ध मुनीक।
क्षमकरी ह्या मुर्खाक। आईला संदेहु भारी ॥५७॥

सारस्वताली जन्म कथा। काहीं लोक अशिशवर्णिता।
तो अप्सरा संजाता। म्हणताति सत्य कशिश? ॥५८॥

संदेहु माक्का सिद्धमुनी। क्षम करी हांव अज्ञानि।
लोक नेणति ही काणी। म्होणु कर्ता प्रश्नु हो ॥५९॥

मेज्जो हो अधिक प्रसंगु। म्होणु न करीं आशाभंगु।
लोका करिता सत्संगु। प्रश्नमार्गु खरेचि हो ॥६०॥

बुध्वंतुरे तू साधका। मूळ कथेचो शोधका।
कथा परस्पर एकमेका। नारे मेळामेळि ॥६१॥

कथा ही भारतातुली। अध्यायु बावन्नातुलो।
शल्य पर्वातु आईलि। चरित्र हे सांग्ता आय्क ॥६२॥

देव वैद्य अश्विनी कुमार। हविर्भागाक ना अधिकार।
दधिचि तो उदार। दिवैता ताका यज्ञभाग ॥६३॥

आईकूनु कोप्लो सुरेशु। दधिचिचेरि करता द्वेषु।
नाश करता पुण्य विशेषु। मुनीक सोणा सत्य ॥६४॥

अशिश चिंतीत मनातु। बसला अपरावतीत।
नाना युक्ती योजनेतु। निद्राभागलि इंद्राक ॥६५॥

एकदा ऋषि दधिचि। सरस्वति नदीच्या वांचि।
ध्यान धरून दृढचि। जाल्लो बाह्यशून्य ॥६६॥

लागली भीति इंद्राक। हो तरि स्वर्ग पदवीक।
यत्न करता अनेक। हो मेज्जो पूर्ववैरि ॥६७॥

अशिश चिंतिले इंद्रान। मुनीलें तप भाङ्गैन।
अलंबुषाक धाडून। पसैता म्होणु मुनीक ॥६८॥

अलंबुषा ती अप्सरी। दिसलि डोळच्या मुखारि।
मुनि मनि काम सचारो। जाल्ले पतन इंद्रिय ॥६९॥

वीर्य राकलें सरस्वतीन। तिज्या दिव्य गर्भातून।
बाळु प्रकटलो द्विज रुपान। नांव गा सारस्वतु ॥७०॥

आईल्या काणी पुराणांतर। अमुख्यरे जन्म विचार।
कोर्या आम्ही तत्त्वविचार। तोचि गा ध्येयु आमचो ॥७१॥

वेदज्ञु तो सारस्वतु। दधिचिलो तो ख्यातु।
वेद आईकता तोंडांतु। मुनि सारस्वताल्या ॥७२॥

न मंद्र तारक खर। मध्यम गाई सस्वर।
स्मरण शक्ति ताक्का भरपूर। अद्भुत अवर्णनीय ॥७३॥

शिकवी शिष्यांक नीट। विशिष्ट सारस्वत पाठ।
दुष्ट दुर्धट शठ। तेवै कर्तीति स्तुति ताज्जि ॥७४॥

एकदा पडलो दुष्काळु। दारिद्र्य कराळु व्याळु।
मृत्यु मुखी घालता खळु। कोसळले कष्ट भारी ॥७५॥

पृथ्वि सगळी यज्ञकुंड। गर्भिगळले गर्भ पिंड।
पूर्णाहुति गा कालदंड। न उरलें कोणि ॥७६॥

बुडले आचार विचार। विसरलें मंत्रोच्चार।
उरलें ब्राम्हण आकार। केवल आचार शून्य॥७७॥

आकाशांतु अग्निवर्ष। पुण्यांतु घडले संघर्ष।
देखता सगळे असंतोष। सर्वै प्राणिजात ॥७८॥

त्राहि त्राहि म्हणताति लोक। न मिळ्ता अन्नोदक।
सहवेना तान भूक। जाल्ले भुभुक्षु सगळे ॥७९॥

उरेना मरेना लोक। सरेना पुरेना भूक।
जिरेना खिरेना शोक। पसरलें कंकाळ सर्व ॥८०॥

आईला काळु दुर्धरु। सारस्वतु तो चिंतातुरू।
सरस्वती तीरा उदारू। कर्ता स्तुति मार्तेलि ॥८१॥

सरस्वती लोक जननी। अमृतमई जगपावनि।
राक गे दयासदनि। पावगे जीव कोटी ॥८२॥

हे जगदंबा सरस्वती। वेद कर्तीति तुज्जि स्तुति।
राकगे वेद संतति। कृपा कोर्नु शीघ्र ॥८३॥

वेदज्ञ सर्व निवर्तले। मत्रज्ञ मुक्त जाल्लें।
ब्राम्हण ना गे उरलें। क्षांणलो वेदब्रम्हु ॥८४॥

सरस्वती तो प्रसन्न। जाल्लि मुनिल्या स्तुतीन।
दर्शन दीवनु कृपेन। उल्लैलि मोगान असे ॥८५॥

वत्सा दधीची सुता। सारस्वता सोडि चिंता।
वेद राकरे पुत्ता। समर्थुरि तूंचि आत्तं ॥८६॥

काल पुरुषालि महिमा। न जाणति ब्रम्ह रमा।
दुष्काळ सुकाळ ही भ्रमा। इच्छा ही हरीची ॥८७॥

दुष्काळु आईला म्होणु। ब्राम्हण ते एकडे मेळनु।
परस्पर विचार कोर्नु। गेल्ले सोणणु पोळनु॥८८॥

येत्तोरि शीघ्र सुकाळु। तू मेज्जे मोगाचो बाळु।
बालकु तु कोमलु। तरी तू वेदज्ञु हे खरे ॥८९॥

आपद्धर्म मानून। मत्स्य एकु भक्षी दिन।
करून घे प्राणरक्षण। राकरे वेद चारी ॥९०॥

औषधत्वेन सुराभिष। स्वीकार करिती विशेष।
दुष्काळी भक्षिले श्वानमांस। विश्वामित्र ऋषि ॥९१॥

मानु नका लोक निंदा। रक्षण करी पवित्र धंदा।
तुजि सत्कीर्ति ती झेंडा। फटकूरे जगीं ॥९२॥

देवीले वचन आईकूनु। शिरसा मान्य कोरनु।
वेद रात्तालों म्होणु। चिंतिले सारस्वताने ॥९३॥

दुर्गा ती वेदाभिमानी। जड प्रकृतीक स्वामिनी।
प्रसन्न जाल्लि त्या क्षणि। समृद्धरे साधका ॥९४॥

मेघ व्यापिले गगनांतु। आडैले सूर्यापथांतु।
पृथ्विव बुडलीगा काळ्खांतु। प्रज्वलता तेजवीज ॥९५॥

तान निवली पृथ्वीची। पर्जन्य धारा अमृताची।
वर्षान भुलर्लीं वृक्ष जाती। फुल्लां फलां सहित ॥९६॥

वापी कूप तटाक। भरलें उदकऽचि उदक।
धान्य शाकादि फलपीक। पिकलेगा समृद्ध ॥९७॥

जाल्लें सर्वत्र सुभिक्ष। पळलें सकल दुर्भिक्ष।
परतले ब्राम्हण सुरक्ष। पूर्व स्थळीं सर्व ॥९८॥

वर्ष द्वादश क्षामान। केल्लें व्यर्थ जीवन।
विसरले वेदगान। शिकैता कोण कोणा? ॥९९॥

सरस्वति दृषद्वती मध्य। कुरु क्षेत्र म्हणताती सद्य।
ब्रम्हावर्त नांवाने वेद्य। मूल गा ते आर्यांचे ॥१००॥

जमले ब्राम्हण वृद्ध। जाल्ला सर्व समृद्ध।
वेद गाताति अबद्ध। जाल्ले आम्हि द्विजबंधू [७] ॥१०१॥

नष्टली गा परंपरा। वेद नेणती सस्वरा।
विप्र जल्ले गो खरा [८]। सांगू आत्ता किल्ले ॥१०२॥

साधका ऐक तेद्दणा। दृष्टि पडलो वृद्ध जना।
तेजःपुंज वदना। सारस्वतु तो ज्ञानी ॥१०३॥

करता वेद गान। स्वर भेदान अर्थ पूर्ण।
चकित ते विप्रगडण। नमस्कारिलें ताक्का भक्तीन ॥१०४॥

श्री गुरु चरितामृत

जटा घनादि पाठ। आईकूनि विप्र उत्कठ।
म्हणतातिं पति वैकुंठ। पाव्लोगा आमका ॥१०५॥

जय जय म्हणता ब्रम्हवृन्द। धरतातो भक्तीन पाद द्वद्व।
म्हणतातिं आम्हीं मतिमन्द। शिकैगा छद आम्का ॥१०६॥

वेदवेदांत प्रतिपाद्यु। नारायणाख्यु श्रुतिवेद्यु।
म्हणतातिं ज्ञानी निरवद्यु। अभेद्यु आदि ॥१०७॥

अन्यायीं आम्हीं अगणित। ब्राम्हण नाव हे व्यर्थ।
विषयोपभोगी स्वार्थ। नष्ट धर्मात्म गा आम्हीं ॥१०८॥

देखून विप्राले अनुताप। कृपावत् पावलो परिताप।
हो कालाचो प्रताप। सुपीक गा अज्ञानाचे ॥१०९॥

द्विजांक सांगलें समाधान। घाल्लि सरस्वतीलि आण।
शिकैऽन तुमका वेदु पूर्ण। तुमचि संख्या ती कितली ॥११०॥

म्हणता विप्र मंडळी। साठसहस्र आम्ही सगळी।
शिष्य वृत्ति स्वीकरिती तुग्गेलि। करी स्वीकारू आम्का ॥१११॥

शिष्यार्पित ती कुश समिधा। पडल्या पर्वताकार विविधा।
आईकरे साधका बहुधा। सांगूक शक्य ना गा ॥११२॥

मूर्ख सर्वदा असताती। मत्सरि मदांध दुर्मीति।
अहंकारि आणि अल्पमति। बाधिती सर्वकाळ ॥११३॥

म्हणता एकलो ब्राम्हणु। सारस्वतु वयान सानु।
आम्हि ताज्जे शिष्य म्होणु। सांगचे तरी कशिश? ॥११४॥

श्री गुरुचरितामृत

वयानि आम्ही होड्ले। प्रारब्धान हे अशिश घड्लें।
लहानाक[९] पायां पड्ले। विपरीत गा काळु ॥११५॥

आईकूनु म्हणता सारस्वतु। वयान ज्येष्ठु व्यर्थु।
कोण वेदांतुपारंगतु। श्रेष्ठु तो सर्वा मधें ॥११६॥

पिकल्या मीसेदाडि[१०]। चर्म सुक्ला हाड्डा काड्डी।
तारुण्यांतु बहु लबाडि[११]। हो होडुकी पाडु? ॥११७॥

जाल्ले सर्व शरणागत। सारस्वता जाणै वेदांत।
शिक्षै वेद सर्वांत। सारस्वत पाठ्चि श्रेष्ठु ॥११८॥

ही आमचि कुल कीर्ति। तुज्जी तू राकपूर्ति।
दी आमका ती स्फूर्ति। दाकैगा वेदपुरुषा ॥११९॥

९ दाक्लो १० खाड ११ लुटि

मुनि जाल्लो प्रसन्नु। सर्वांक वेद शिकोऽनु।
कर्ता उद्धार म्होणु। दिल्ली शीक्षा वेदांचि ॥१२०॥

साधकान केल्लि विनंती। आईकला वेदाचि ख्याति।
तरी ना ज्ञानपूर्ति। म्हणता विवरिता सिद्धु ॥१२१॥

वेद अनंत म्हणताती। चारींतु सर्व मेळताती।
कळैता अल्प माहिती। आईकरे तू लक्षदीवनु ॥१२२॥

ऋक् यज्जुस्साम तीनि। अथर्वु चौथो आनि।
चारी ही देववाणि। अचूकरे अपौरुषेय ॥१२३॥

शाकल बाश्कल शाखा। दक्षिणोत्तरांतु सारिखा।
दक्षिणी विप्रा अनेका प्रीती शाकली शाखा ॥१२४॥

श्री गुरुचरितामृत

वेदाक पुनः उपवेद। चारी अर्थ कामास्पद।
आयुर्वेद आणि धनुर्वेद। स्थापत्य आणि गाधर्व ॥१२५॥

वेदांतुले कर्माचरण। कोरैंचे विधि विधान।
सांगता वेदांग पूर्ण। ती षडंग रे आईक ॥१२६॥

शिक्षा कल्प व्याकरण। छंद निरुक्त ज्योतिष्य जाण।
चौदा विद्यांचे हे धन। वेद वेदांग सहित ॥१२७॥

अपौरुषेय गा वेद। व्यर्थ ना एकूई शब्द।
सारभूत ते उपनिषद्। तीं सख्येन दशम ॥१२८॥

ईश केन बृहदारण्य। छांदोग्य आणि कठ प्रश्न।
मुडक माडूक्य गहन। तैतरीयैतरेय ॥१२९॥

सहा शास्त्र पौरुषेय। रचनेक वेदसहाय।
साधकांक बहु सहाय। केल्ला महंत ऋषीनि ॥१३०॥

सांख्ययोग वेदांत। वैशेषिकादि शास्त्र ग्रंथ।
मिमांसा न्याय सहित। नांव पट्शास्त्र ॥१३१॥

संहिता आणि ब्राम्हण। हे वेदाचे भाग दोन।
संहिता ती मंत्र पूर्ण। ब्राम्हण तें गद्यात्मक समज ॥१३२॥

मंत्र ते छंदो बद्ध। ऋचा म्हणताति प्रबुद्ध।
ऋचार्थाचें संबंध। विवरिला तें ब्राम्हण ॥१३३॥

हे नंता आरण्यक। ते मेळ्नारे लेख्नाक।
साठि हजार लोकांक। शिकैले ते सारस्वतान ॥१३४॥

वाढले वेदधर्म। होम हवनादि कर्म।
वेद शास्त्राचे खरे मर्म। अनुष्ठिलें सारस्वतानि ॥१३५॥

वेद विद्येचि परंपरा। उरली सरस्वती तीरा।
प्रसार सारस्वतां द्वारा। करैलें वेद पुरुषान ॥१३६॥

नांव हें सारस्वत। मेळ्ता प्राचीन ग्रंथांत।
व्यास हें जाल्लेति बहूत। मन्वंतरा स्वायंभुवि ॥१३७॥

आद्य मन्वंतरांतु। व्यासनामि ऋषिख्यातु।
नांव तागेलें सारस्वतु। प्रसिद्ध गा पुराण कालिं ॥१३८॥

वेदेतिहास सगळे। पुराण शास्त्र वेगवेगळें।
सारस्वत महर्षि गेले। सांगल्या कीर्ति प्रामाणिक ॥१३९॥

महिमा ती नारायणालि। प्रकटाईली वेदकाळिं।
पुण्य कृति ही सारस्वतालि। आमचो तो पूर्व बंधु ॥१४०॥

पूर्वि बहुत सारस्वत। चारी वेदांतु निष्णात।।
शाखोपशाखायुक्त। शिक्ताले तें सूत्र सहित ॥१४१॥

पंच शाखेचो विवरु। उपशाखेंचो विचारु।
नाना सूत्रांचो प्रकारु। धन्य गा हें आईकणार ॥१४२॥

शाकल सांख्यायन। बाष्कल आणि आश्वलायन।
पाच्वो मांडुकायन। शाखा हें ऋग्वेदाचि ॥१४३॥

उपरात्त उपशाखा। आस्सत्ती सात आईका।
जाणताल्यालि आख्याईका। समज ते आप्तवाक्य ॥१४४॥

बर्हि मल्लेर तुलवी। प्रभा इंद्रसेन शेणवी।
कुशलव शाखा सातवी। वर्णिल्या योगेश्वरान ॥१४५॥

शेणवी ही उपाधि। दिल्ला सारस्वताक आदि।
शाखा निर्णय चतुर्वेदि। भाष्य हे त्र्यंबकाले ॥१४६॥

आईले सारस्वत दक्षिणाक। दिल्ले प्राधान्य ऋग्वेदाक।
मुख्यतः शाकल शाखेक। सूत्र ते आश्वलायन ॥१४७॥

एकवीस गोत्रचि नाम। सांगताति दक्षिणी महिम।
सारस्वताले गुणग्राम। निर्पालि निसर्ग गर्भि ॥१४८॥

वत्स कौंडिण्य कौशिक। वासिष्ठ मुद्गलादिक।
जाम्दग्न्यात्रि प्रमुख। भारद्वाज आणि काश्यप ॥१४९॥

श्री गुरुचरितामृत

आंगीरस सांख्यायन। नैध्रुव शांडिल्य नावांन।
विश्वामित्र धनंजय जाण। गौतम गर्ग कुत्स ॥१५०॥

वत्स ते पंचप्रवर। गर्गांक मातृ चतुर।
इतर गोत्रांचे विवर। आईकूया सावधान ॥१५१॥

भार्गव च्यवन आप्तवान् औरव जामदग्न्य महान्।
पंचप्रवर हीं गुणवान्। प्रथमगा श्रावणी पर्वि ॥१५२॥

त्रिप्रवर ते इतर गोत्र। द्विजोत्तम गौरव पात्र।
सर्वांक आश्वलायन सूत्र। कौंडिण्य वत्स खरें अधिक ॥१५३॥

वासिष्ठ मैत्रावरुण। कौंडिण्य ह्या गोत्रोच्चारान।
आपले नांव सांगून। म्हणता अहंभो अभिवादये ॥१५४॥

श्री गुरु चरितामृत

आदि प्रपितामहालें। उपरांत पितामहालें।
तदनंतर पितालें। हो नियमुगा गोत्र सांगचो ॥१५५॥

विश्वामित्र अघमर्षण। त्यानंतर कौशिक नांवान।
कर्तीति गोत्रोच्चारण। कौशिकुचि गोत्र मुख्य ॥१५६॥

आंगिरस बाईस्पत्य। भारद्वाज म्हणताति नित्य।
वासिष्ठ इंद्राममर स्तुत्य। आभरस्वत् नांव तिसरें ॥१५७॥

गोत्रनाम हे उपराटे। नकळे खरें खोटें।
वासिष्ठ गोत्र हे स्पष्टे। सांगताती सकळ नाहें ॥१५८॥

भार्गव च्यावन आप्नुवान्। औरव जामदग्न्य विद्वान्।
हे वै पंचप्रवर महान्। भार्गव परशुरामालें ॥१५९॥

आंगीरस आणि भौम्याश्व। मुद्गल आत्रेय आर्चनानस।
श्वावेश्व त्रिप्रवरेश। मुद्गल अत्रि गोत्राचे ॥१६०॥

आंगीरस आंबरीष। यौवनाश्व आंगीरस।
आयास्य गौतम गोत्रेश। प्रवर हो कुत्स गौतमादि ॥१६१॥

केवलांगीरसज। बार्हस्पति भारद्वाज।
आंगीरस गोत्रोच्चार निज। आता आईक नैध्रुवाचे ॥१६२॥

काश्यप अवत्सार नैध्रुव। होंचिगा काश्यपास्तव।
देवरात औडल मेळव। गोत्र त्या विश्वामित्र नाव ॥१६३॥

शांडिल्य असित देवल। शांडिल्य गोत्र विशाल।
धनंजय गोत्र हे विरळ। पण ताचे प्रवर तीनि ॥१६४॥

वैश्वामित्र माधुच्छंद। धानंजय ते वै छांद।
आईका साख्यायन अमंद। ते विरळरे गोत्र राशिं ॥१६५॥

गेम वसु साख्यायन। गर्ग तरी जाल्यारि मिलन।
गोत्र ही अठरा संख्येन। प्रसिद्ध गा सारस्वतांतु ॥१६६॥

गार्ग्य चतुःप्रवर निज। आंगीरस आणि भारद्वाज।
बार्हस्पत्य गार्ग्य द्विज। हे गोत्र ही विरळ ॥१६७॥

आईकता गोत्र विवर। साधकांक वाढ्लें आदर।
ह्या गोत्राचे मूळ ऋषिवर। सांगा विवरु तांचो ॥१६८॥

है महान् विद्वन्मणि। गुरुदेवा सिद्धमुनि।
सर्व गोत्रांचे खनि। कोण बा महात्मते ॥१६९॥

ते नांवाच्या श्रवणान। शुद्ध जात्लें मेज्जे मन।
करै माझ्का गंगा स्नान। कथा तीर्थपादालि ॥१७०॥

सांगता सिद्धु हर्षान। साधकाक आंगचि कान।
मुनिलें मंगल वचन। जाल्लें थेंबे अमृताचे ॥१७१॥

कश्यपात्रि भारद्वाज। वसिष्ठ गौतम गाधिज।
जमदग्नी महातेज। मूळ हे गौत्र प्रवरांक ॥१७२॥

गोत्र मूल हे सप्तक। अगस्त्य ही गोत्र संज्ञक।
ते मेळ्नु जात्ता अष्टक। हेचि म्हणां गोत्र मूल ॥१७३॥

ऋषिले पुत्र पौत्रानि। वाड्डैलि गोत्र तान्नि।
आम्ही बहु आदरानि। कोर्या स्तोत्र तांचें ॥१७४॥

गोत्र वंश निर्देशक। सौज्ञा ती वंश शुद्धीक।
वैवाहिकादि कार्यांक। निरुपिता सूत्रकर्तु ॥१७५॥

ब्रम्हाले चारि पुत्र। भृगु आंगीरस पवित्र।
मरीचि अत्र्यादि कर्तृ। प्रवर्तक सर्व गोत्रां ॥१७६॥

भृगु कुलांतु जमदग्नि। गौतम भारद्वाज ज्ञानि।
आंगीरस सुत शिरोमणि। पुत्र ही तीन्ही ख्यात ॥१७७॥

काश्यप वसिष्ठ कुंभज। मरीचि पुत्र महातेज।
विश्वामित्र अत्रियात्मज। हे जनक सर्व द्विजांक ॥१७८॥

एकूण पन्नास प्रवर। एकशे एकूणतीस ऋषिवर।
दत्तकांक उभयु प्रवर। हो निश्चयु शास्त्रकारालें ॥१७९॥

अध्ययन आणि आचार। प्रधान सोळा संस्कार।
ब्राम्हणांक हेंचि आधार। मूळ हें वर्णघटना ॥१८०॥

संस्कार म्हळचारि सोळा। आईकरे साधका बाळा।
विस्सोर्नु विस्खलित जाल्ला। बहुधा ब्रम्हवृंद ॥१८१॥

गर्भादान पुंसवन। नंतर सीमंतोन्नयन।
जातकर्म आणि नामकरण। निष्क्रमण कर्म सट्टवें ॥१८२॥

अन्नप्राशन केश कर्तन। उपनयन मेधा जनन।
महानाम्नी महावृतान। उपनिषद्व्रत तें तेरावें ॥१८३॥

समावर्तन आणि लग्न। अंत्येष्टि ह्या नांवान।
संस्कार अशिश सोळान। टिक्ता ब्राम्हण्य ब्राम्हणाले ॥१८४॥

षडंग सहित वेदाध्ययन। अहरह संध्या वंदन।
गायत्री पुरश्चरण। होचि गा धर्म ब्राम्हणालें ॥१८५॥

अध्यापन अध्ययन। यजन आणि याजन।
दान आदान प्रदान। हेंचि षट्कर्म ब्राम्हणांलें ॥१८६॥

हाक्का आधार आश्वलायन। सूत्र रचिला ऋषि जनान।
कोर्या आम्ही मोक्ष साधन। तरी राक्ता वेदपुरुषु ॥१८७॥

अध्यनांतु आचार। संध्या आणि ब्रम्हविचार।
अर्घ्य आणि जप प्रकार। गायत्री नारायणालें ॥१८८॥

देव भूत आणि पितर। मनुष्य ब्रम्हादि इतर।
वैश्वदेवा स्वाहाकार। यज्ञ पांच हे गृह मेधि ॥१८९॥

प्रामाणिक कर्तृत्व बुद्धि। ताज्जेन सर्वांहि सिद्धि।
कृतज्ञतेन समृद्धि। तत्त्वहे पंच यज्ञांचे ॥१९०॥

अग्नि देवताराधन। हेंचिगा देव यजन।
पितृ देवतेंक तर्पण। पूजन अतिथि देवांक ॥१९१॥

गवांतर्यामि कृष्णाक। क्रिमि कीटादि भूत वर्गांक।
मनुष्याल्या ज्ञान वृद्धीक। कारण ऋषि महर्ष्यों ॥१९२॥

तांका तर्पण ब्रम्हयजन। तांचे ग्रंथ पठण मनन।
कृतज्ञतेन ऋण चिंतन। जावका आम्हि ऋणमुक्त ॥१९३॥

ब्रम्हहत्यादि पातक। सांगला प्रायश्चित्तादिक।
प्रायश्चित्त ना कृतघ्नांक। जन्मता तो पिशाच योनि ॥१९४॥

सर्व ऋणान मुक्त। यज्ञार्पितान्न भुक्त।
कृष्णार्पण बुद्धियुक्त। खरें ते मुक्तियोग्य ॥१९५॥

मुनि सांगता साधकाक। आईकरे साधका आणिक।
सारस्वत आईले दक्षिणांक। विसरलि पूर्व आप्लें ॥१९६॥

दक्षिणी सारस्वतांतु। खरे भेदु ना तांच्यांतु।
स्मार्त वैष्णव म्होण्चांतु। दाक्कैला भेद दोन्ही ॥१९७॥

ओळ्खताति ग्रामनाम। तरी सारस्वत एक आम्हिं।
अशिशसमजून प्रैमि। साधूयां ऐक्यता बरें ॥१९८॥

शेणवि कुडाळकर। भालावल पेड्णेकर।
सासष्ठ भार्देशकर। राजापूरकर। शेण्विपैकि ॥१९९॥

मुंबईकर मंगळूरकर। कोच्चिकर गोयकार।
बोरकर लोटलीकर। आन्हि काहि लोक ते आद्य ॥२००॥

नाक्कारे हे करकर। जावूया आम्हि एकाकार।
पसरले आम्हि दक्षिणोत्तर। तरी ओळ्खना आमका आम्हि ॥२०१॥

भाषा आमचि कोंकणि। उलैताति चतुर्वीर्णि।
जननी तिज्जी गीर्वाणि। भाषा ती ब्रम्हवृंदालि ॥२०२॥

भाषेन आम्हि एक। देशानी आम्हि एक।
आम्हि परस्पर पूरक। जाल्यार बरें राष्ट्रप्रेमि ॥२०३॥

सावधान अस्सुका श्रोतानि। विषयांतर कर्ता हो प्राणि।
अशिश समजूनये कोणि। कोंकणि ती आवैई गा आमकां ॥२०४॥

भाषेंतूचि भावन। ताज्जेनऽचि संवहन।
भाषेनऽचि कवन। म्हणा हे भाषे खात्तिर ॥२०५॥

भाषेनऽचि भाषण। भाषेनऽचि संभाषण।
भाषा संस्कृतीक भूषण। दूषण सुदा भाषेनचि ॥२०६॥

कोंकणि ही काणकोणि। कोंकणि आईलि मराठीनि।
कोंकणि आईलि संस्कृतानि। कोंकणि ही शूरसेनि आणि मागधि ॥२०७॥

काहीं सांगोति भाषाज्ञानि। निंदा कोरो कोणिपुणि।
आमका आवैईती कोंकणि। आमचि ती आमका बरीं ॥२०८॥

कोंकणि ही प्राकृत। आम्हि ब्राम्हण सुसंस्कृत।
आदर कित्या बहुत। व्यर्थ श्रमुगा अर्थ हीन ॥२०९॥

भाषा ही बाईलालिं। अंतःपुरा व्यापिलेलिं।
वर्ण हीन प्राकृतालि। प्रबुद्ध ना ती बालभाषा ॥२१०॥

देह हे प्राकृत। खाण जेवण ही प्राकृत।
त्रिगुण ही प्राकृत। प्रकृति निर्माण ॥२११॥

देह अप्राकृत। गुण ही अप्राकृत।
लीला ही अप्राकृत। समज द्यावाक मात्र ॥२१२॥

तुझे सर्व प्राकृत। म्होणु भाषा ही प्राकृत।
सऽर्नि तुज्जे पुराकृत। सोडिरे व्यर्थ निंदा ॥२१३॥

आईका हो श्रोत्र जना। भाषा ही कोण ओळ्कना।
आवैले दूद तरी मेळ्ना। बाळु ते दुर्भागि सत्य ॥२१४॥

श्री गुरु चरितामृत

तुटले भाषा बांधव्य। आचार सर्व अपसव्य।
भाटलें सर्व हव्य कव्य। जाल्ले अपरिचित एकमेका ॥२१५॥

परनिंदा आत्म स्तुति। जाल्लि ही ब्राम्हण रीति।
सारस्वतालि ही दुर्गीति। कालाय तस्मै नमः ॥२१६॥

वेगवेगळे घरचि रांधई। वेगळे रुचि आणि चंदाई।
तांदुळुदाळि सोई। ती तरी एक्कीचिमुगा ॥२१७॥

तशिश आम्हि सर्व एक। सारस्वतांतुले वैदिक।
आमका आणि परंपरेक। जोडा संबंधु बरो ॥२१८॥

साधकु आणि सिद्धु मुनि। दोग्गालि भाषा ती कोंकणि।
सारस्वत कुलाचे शिरोमणि। भेट्लेति दैवयोगिं ॥२१९॥

परंपरा सारस्वतांचि। महोन्नति आणि अवनतीचि।
विवर सर्व आईकतऽचि। आईलो कंठाळो साधकाक ॥२२०॥

मुनिले प्रसन्नता चोव्नु। साधका जाल्ले समाधान।
लाग्ल्या श्रवणाचि तान। निवै म्हणता मुनीक ॥२२१॥

सांगरे हे मुनिराया। सरस्वती नदीचा विषया।
पवित्र जाल्ले श्रवणद्वया। जात्ता बाह्यांतः शुद्धि ॥२२२॥

आनंदु जाल्लें सिद्धमुनीक। अपार तुज्जि तान भूक।
नुप्रो मेज्जे शाकपाक। वृक वृकोदरु तूं ॥२२३॥

म्हणता सरस्वती सरस्वती। ताक्का मेळ्ता परमगति।
जन्माचे पाप सरतातिं। स्तुति मात्रान हे सत्य ॥२२४॥

हिमगिरीचे शिखर महान। ते नांव प्लक्ष प्रस्रवण।
सरस्वतीलें उगमस्थान। नदींतु ही प्राचीन आदि ॥२२५॥

सरस्वती ही वैदिक नदी। ती सकलनदींक आदि।
करताति स्तुति ऋग्वेदादि। माते सरस्वतीलें ॥२२६॥

माते तुग्गेल्या सन्निधीरि। जन्मले जीवजाल उपरि।
तुज्या जलामृताचेरि। वांचला चैतन्य सर्व ॥२२७॥

तुज्जिसप्तजलधारा। होळ्ता सात नावांन अमरा।
अनेक ऋषि मंत्र दृष्टारा। वाड्लीं पदरांतु तुज्जे ॥२२८॥

हे ब्रम्हमानस पुत्रि। नदीतमा जगद्धात्रि।
लोकमाता पाप हर्ति। अंबीतमा तू पाव ॥२२९॥

हे ब्रम्हसर संजाता। तूगें माता सारस्वतां।
तू सुप्रभा विशाला ख्याता। कांचनाक्षी मनोरमा ॥२३०॥

सरस्वती आणि औघवति। सुरेणु विमला सति।
सात नांवान आप्पैताति। पावगे पाव आमका ॥२३१॥

आणिकई जन्मायेनि गंगा। तेन्ना राक्किलि तू पापभंगा।
सर्व तीर्थ तुग्गेल्या अंगा। जाल्लीति गे समावेश ॥२३२॥

ऋषिं गेले निवासस्थान। पुण्यतमे तव सन्निधान।
तुजे म्होणु तवचरण। इच्छिती मनु महर्षि ॥२३३॥

तूंचि गे वेदस्वामिनि। अदृश्य तू गुप्तगामिनि।
पुष्करांतु तू ब्रम्हाणि। आईला मानूनु ब्रम्हाक ॥२३४॥

सप्त द्वीपांक तू जननी। सर्व जलांतु तू व्यापिनि।
भीष्मादिकांक तू पावनि। पाव्ल्याम्हळच्या भारतांतु ॥२३५॥

चल्ले सारस्वत यजन। तुज्या तीरारि होम हवन।
कर्तीति मुनि ध्यान चिंतन। मुक्तिगे तव कृपेन ॥२३६॥

हे माते अंतःसलिले। नांव तुक्का विनशन पडलें।
प्रवाह तुज्जे पश्चिमा वळले। मावळलि सिंधु गर्भा ॥२३७॥

सरस्वती तीर वास। मेळ्का तरि पुण्य शेष।
ना काहीं तरी विशेष। उर्का कृपा श्रीहरीलि ॥२३८॥

सरस्वती तीरा वासानन। जात्ले सर्व ताप दहन।
प्राप्त परमार्थ साधन। फलित गा दैवयोगी ॥२३९॥

सरस्वती तू कांतिमति। शमवी लोकनिंदा स्तुति।
सारस्वतु सहित तू सति। योगे यो बैस वेदिं ॥२४०॥

स्वर्ण वर्णा उग्रपथा। पाप नाशवी गे सुवृता।
आमुचि स्तुति अपेक्षिता। आणि आईकता हे सत्य ॥२४१॥

ऋग्वेदान केल्या स्तुति। बलरामु करता प्रणति।
प्रभास क्षेत्रांतु तू सति। निमज्जली समुद्रांतु ॥२४२॥

बलराम यात्रा प्रसंगिं। सांग्ला हे आनुषंगि।
बहुनामीं बहुरंगीं। भजताति गे वेदमूर्ति ॥२४३॥

प्लक्ष प्रस्रवणांतुलेन। औदुंबुर वना मध्येन।
सरस्वती तू नाना नांवान। प्रवाही तूं नदीतमा ॥२४४॥

ते सर्व आर्यावर्त। समृद्ध फलपुष्पभरित।
देश नांव त्या सारस्वत। तुजे नावान सरस्वती ॥२४५॥

आता उवाच साधकालें। सिद्धमुनीक प्रश्निलें।
सरस्वती भू लोका आय्यिले। कारण तरी सांग बा गुरु ॥२४६॥

गंगेक भगीरथान हाड्‌लि। ती रुद्रजटेंतु मांड्‌लि।
उपरांत रुद्रान सोड्‌ली। बुडैले तीणे जन्हूंक ॥२४७॥

जन्हून केल्ले आपोशन। भगीरथालि स्तुतीक मानून।
सोड्‌लि तिक्का जांघेन। पड्‌ले गा नांव जान्हवि ॥२४८॥

तशिश सरस्वतीलि काणि। असल्यारि सांगरे मुनी।
प्रश्नु हो अनुमानानि। केल्लो ना क्षमकरी ॥२४९॥

श्री गुरुचरितामृत

साधका हांव तरी सिद्ध। प्रश्नु कोर्चाक तू प्रसिद्ध।
सांगता तुक्का प्रबुद्ध। जाव्का पळेऽरे सच्छास्त्री ॥२५०॥

एक्का दिवसु ब्रम्ह सभेक। दुर्वासु आईलो अचानक।
मंत्र सांग्तान स्वरादि। भंगले अर्थ सहित ॥२५१॥

अईकूनु हे ब्रम्हाणि। ती वाणि वेदाभिमानि।
हास्लि हे पोळोनु मुनि। शाप्ता तिक्का रुद्रांशु ॥२५२॥

जन्मु घे मनुष्ययोनी। ब्राम्हण निंदेच्या कारणानि।
नाना दुःख संकटानि। भोग्तलि क्षीणपुण्यां ॥२५३॥

आईकून ही ऋषिवाणि। ब्रम्हाणि शाप भीतीनि।
मागता दैन्य वाणीनि। क्षम करीगा रुद्ररूपा ॥२५४॥

जाल्लें मन द्रवीभूत। मुनी सरस्वतीक पळैत।
तूं अत्रिकुला उब्जत। नावंतुक्का हेंचि उरता ॥२५५॥

ऋषि भृगुकुलोत्पन्नु। दधीचि तो वेदसंपन्नु।
तुक्का पत्नीरुपान स्वीकारनु। पावता संतान एक ॥२५६॥

सर्व वेदांचो रक्षकु। वेद वेदांग प्रचारकु।
ब्राम्हणकुल उद्धारकु। सर्वज्ञु ज्ञानमूर्ति ॥२५७॥

अलंबूषेल्या दर्शनान। दधीचीक इंद्रियपतन।
तें तूवें गर्भांतु धारण। कर्ता विधिचोदनेन ॥२५८॥

तो सरस्वतीलो पूतु। नांव पड्ता सारस्वतु।
भीकर क्षाम कालांतु। रात्ता तो वेदसर्व ॥२५९॥

मुनीलि भविष्यवाणी। आईकलि सर्व ब्रम्हाणि।
अस्सलि ही विचित्र करणि। कोण जाणरे देवुनंता? ॥२६०॥

हे सिद्धमुनी तू तारकु। हांव एकु अनाथबालकु।
विपरीत बुद्धिचो कुहकु। खरे हांव बाधकूचि ॥२६१॥

अशिशसमजूनु माक्का। उत्रांक जवाब दिव्का।
मंदमतिकई कोळ्का। तोडे तरि सारस्वतालें ॥२६२॥

प्राचीन अर्वाचीन। जाल्ले कोण महान।
तस्ले सारस्वतकुल भूषण। सांगारे साधुवर्या ॥२६३॥

सांग्ले सिद्धान चरित्र। सारस्वताले पवित्र।
नाना सन्निवेश विचित्र। विवरिलें साधकाक ॥२६४॥

साधका तूं कुशलमति। श्रोता मधें तुज्जि ख्याति।
बहूत म्हणता सिद्धयति। सांग्ता कथा सारस्वतालि ॥२६५॥

सारस्वत कुलांतु पैलें। जे महात्म्ये जन्मलें।
चरित्र हे आईकतालें। पुनीत रे परमधन्य ॥२६६॥

देवाचो सहावो अवतारू। परशुरामाख्य शुरु।
तो भृगु कुल प्रवरु। सारस्वतु यज्ञनामु ॥२६७॥

भृगुलो पूतु च्यवनु। तोचि दधीचिलो आनु[१२]।
सारस्वतु ऋषि महानु। पुत्र तो दधीचिलो ॥२६८॥

तेचि कुलाचो ऋचीकु। तपस्वी तत्त्वचिंतकु।
जमदग्नि हरि पूजकु। पूतुरे बहु निष्ठेचो ॥२६९॥

१२ आणपे

श्री गुरुचरितामृत

परशुरामु यज्ञेश्वरु। परमात्मालो अवतारु।
जमदग्निलो कुवरु। बाळु तो रेणुकेलो ॥२७०॥

अक्षत्तईच्या दिवसु। जाल्लो प्रकटु विशेषु।
वैदिक धर्मांक प्रकाशु। दिल्लो खरें ताणे ॥२७१॥

ज्या कुलांतु आइलो देवु। भगवंतु तो भार्गवु।
सारस्वतु महानुभावु। ते कुल धन्य धन्य ॥२७२॥

दक्षिण दिशेक्काईल्यांतु। सारस्वत ब्राम्हणांतु।
भार्गवु प्रथमु मोण्चातु। ना गा संशय सत्य सत्य ॥२७३॥

भाद्रपद शुद्ध पंचमि। जाल्लो सारस्वतु ऊर्धगामी।
ऋषि पंचमि म्हणताताम्मि। तरी आचरण शून्य ॥२७४॥

महर्षि सारस्वतान। त्या तिथि देह सोड्ल्यान।
तर्पणादि पुण्य क्रियेन। पावोका ऋषिले ऋण ॥२७५॥

ऋषिपंचमिचो दिवसु। सारस्वत समाजु अशेषु।
एकत्रित मेळ्नु विशेषु। कोरुका श्राद्धकर्म ॥२७६॥

परंपरा हि सारस्वतालि। प्रसिद्ध गा वेदकाळीं।
ताचि तात्त्विक प्रणालि। अगाध गा श्रवणयोग्य ॥२७७॥

व्यास शुका उपरांत। नांव ते प्रथमख्यात।
तांक गौडपाद म्हणताति। तत्त्वज्ञानींक आद्यते ॥२७८॥

वेदोक्त शुद्ध संन्यास। पद्धतीक हे आदिपुरुष।
अद्वैतज्ञान विशेष। विवरिले विश्व मान्य ॥२७९॥

मांडूक्य उपनिषदाचेरि। रचैलि कारिका थोरि।
अजातवाद ते भारी। प्रकटिला कारिकेंतु ॥२८०॥

तांचें शिष्य गोविंदयति। संयमी बहु नियति।
ज्ञानी वैराग्य मूर्ति। अतिभक्त गौडपादालें ॥२८१॥

तांचोशिष्यु शंकरु। लोकविख्यातु यतिवरु।
अद्वैतज्ञानाचो मेरु। द्रविडु केरळाचो ॥२८२॥

गौड पादाली कारिका। ताज्जेरि अद्वैत भूमिका।
मांड्लि शंकरान लोका। मैळैलि पदवि आचार्यांचि ॥२८३॥

सारस्वतु गौडपादु। ताज्जोचि तो अद्वैतवादु[१३]।
प्रचुर कोरनु जनाबोधु। दिवैले ते शंकरान ॥२८४॥

१३ जीवु देवु एक्कांचि म्होण्चे

श्री गुरु चरितामृत

ख्याति मेळ्ळी शंकरांक। विसरले लोक गौडपादांक।
शांकरमत ना प्रत्येक। सगळे ते गौडपादालें ॥२८५॥

श्रीपादाले शिष्य गोविंद। गोविंदाले विवरणानंद।
परंपरेचे यति वृंद। सारस्वत कुळा सगळें ॥२८६॥

पैले शिष्य शंकराले। ते वै सारस्वतांतुले।
मंडनमिश्र ते पुळ्ळे। उपरांत जाल्ले सुरेश्वर ॥२८७॥

साधु संत आणि कवि। तत्त्वज्ञानी ब्रम्हानुभवि।
राजकारणी रे विभिवि। सारस्वतांतु तरी अगणित ॥२८८॥

कल्ळणादि कवीश्वर। काळिदासादि कविवर।
सारस्वत मूळ काश्मीर। पुरवासी ब्रम्हवृंद ॥२८९॥

सिद्धु वर्णिता साधकाक। आईकरे हे कथानक।
सारस्वताल्या कीर्तीक। जाल्ला एक्कलो कलश प्रायु ॥२९०॥

जन्मु ताज्जों मिथिलेंतु। ख्यात सारस्वत कुलांतु।
नृगरायाल्या सभेंतु। पंडितु तो अग्रमान्यु ॥२९१॥

नांव ताज्जे वाचस्पति। बुद्धींतु बृहस्पति।
काव्य कवितेंतु परिणति। पाव्ला यत्नान बहूत ॥२९२॥

सारस्वतालि यशो गाथा। सागूनु सरना सर्वथा।
भामति कारालि ही कथा। आइकरे आईक साधका ॥२९३॥

मिथिलेंतु वासु कोरचो। वाचस्पतिमिश्र नामांचो।
सारस्वत ब्राम्हण वर्गाचो। निर्धनु विद्याभिलाषि ॥२९४॥

विद्या ज्ञान संग्राहकु। निरंतर अभ्यासकु।
तरी जाल्लो निरर्थकु। नारे दया सरस्वतीलि ॥२९५॥

आईला बाळु एक्लाक[१४]। विद्याखातिरि गुरुकुलाक।
भीति आतंक साहजिक। घाल्ता नमस्कार गुरुक ॥२९६॥

गुरु तो त्रिलोचनु। चोईता हो बाळु कोणु?।
विचारता गंभीरजावनु। सांगरे गोत्र सूत्र ॥२९७॥

स्वनाम गोत्र सांगोनु। वंदिले पाय धोर्नु।
मंद मतीक स्वीकार्नु। उद्धार करी गुरुराया ॥२९८॥

त्रिलोचनु शीघ्र क्रोधि। शिक्षक बरो तत्त्ववेदि।।
हठी सूक्ष्मसंवेदि। कांपताति शिष्य सगळें ॥२९९॥

१४ आरभाक

मनान तो मोवाळु। कोप्ल्यारि कालानलु।
वाचस्पति तरी दुर्बळु। स्थिति ताज्जे दयनीय ॥३००॥

महा पंडित वरेण्यु। गुरु तो त्रिलोचनु।
सांगता सूत्र विवरूनु। व्याकरण पाणिनीले ॥३०१॥

समजना वाचस्पतीक। जाईना मनन सूत्रादिक।
संतापूनु त्या क्षणांक। दिल्ले सोवे शिष्याक ॥३०२॥

मऽरे मूर्खा तूं। पडरे बाईतु तळचांतु।
विद्या येना ह्या जन्मांतु। मूर्खा तू मोर्चे बरें ॥३०३॥

शाप वाणि ही आईकुनु। बाळाकाईले डोळे भोरनु।
रळ्ळो होडान खळ्स काण्णु। देवा दी गा मरण बेगि ॥३०४॥

चिंता आवरुनु मनांतु। सोळ्ळें गुरुकुल क्षणांतु।
गुरु आज्ञा पालनेंतु। प्रवृत्तु आत्ता आत्महत्या ॥३०५॥

वापी कूप तटाक। सोद्दिता देह त्यागाक।
दिसले काहीं बाईलांक। प्रयत्न आत्म हत्येचे ॥३०६॥

तरुणांक दिव्चा बोधु। आरंभिलो तान्नि संवादु।
कोण बा हो अबोधु। जेवणा पान उडैता ॥३०७॥

देह म्हळ्ळेलेंचि पान। हाज्जेंरि जीवात्माले जेवण।
करनी आनिकई उष्टावण। पान उडैतलें कशिश? ॥३०८॥

शरीर हे देव दत्त। साधका हाज्जेन परमार्थ।
कोरनई सर्वथा व्यर्थ। मेळ्चिना आणि हे देह ॥३०९॥

महिळचालें हे वचन। आईकता जाल्ले समाधान।
सोडले आत्म हत्या प्रयत्न। केल्लो निर्धारू ज्ञानप्राप्ति ॥३१०॥

गुरु आणि गुरुकुल। सोद्दीत आईलो सकळ।
काशी दर्शनाचि प्रबळ। जाल्लि आशा मनांतु ॥३११॥

काशी म्हळचारि विद्यानगर। सरस्वती देविलें कुळार।
थईच वासु निरंतर। कोर्नु संपादीन विद्या ॥३१२॥

काशीक पावलो वाचस्पति। अध्ययन कर्ता अहोरात्रि।
अपूर्व बा असलो विद्यार्थि। दृढ़ मनांचो रे बापा ॥३१३॥

न्याय तर्कादि व्याकरण। वेद वेदांग ते पूर्ण।
शिकलो सांख्य वेदांतज्ञान। जाल्लो सागरुविद्येचो ॥३१४॥

दृढ़ संकल्प आणि साधन। हेंचिगा विद्यार्थि लक्षण।
यत्न कोर्नु कर्तृपण। समर्पुकारे हरिचरणां ॥३१५॥

वाचस्पति जाल्लो पंडितु। तो मैथिली सारस्वतु।
परत येवुनु गुरु पदांतु। दवरिले मस्तक गौरवाने ॥३१६॥

नीयाळ्नु त्रिलोचनान। दिल्लें प्रेमान आलिंगन।
रे वाचस्पति तू ज्ञानान। म्हालगडो रे हे खरें ॥३१७॥

पापि हांवु दुर्मदु। अहंकारी रे मदांधु।
अज्ञानी आणि अबोधु। दुर्जनुगा नरकभागी ॥३१८॥

बाळा भोगलो दुःख बहुत। अपमान तरी विपरीत।
मनांक जाल्ला बहु आघात। जाल्यारि साधिली विद्या बरी ॥३१९॥

श्री गुरुचरितामृत

नांव मेज्जे त्रिलोचनु। ज्ञान नेत्र विहीनु।
तू तरी प्राज्ञुमहानु। केल्लेरे धन्य माक्का ॥३२०॥

आईकतां हे वाचस्पतीलें। डोळ्या अश्रुगळ्ताति पळें।
गुरु चरणि मस्तक दवरिलें। आणि म्हणता गुरुदेवा ॥३२१॥

आठैत चरण तुगेलें। विद्येंतु बरे लक्ष्यदिल्लें।
गुरु कृपेनऽचि साधिलें। कृपा ही श्रीचरणाचि ॥३२२॥

गुरु राया तू प्रेमाळु। तुगेलो आशीर्वादु उज्वलु।
तो पापांक कालानलु। राकता शिष्यांक सर्वदा ॥३२३॥

वर्षावर्षीचि जात्रा भर्लि। बाईल सगळि भाईरि सरलि।
हुडि हुडि चडांघेवुनु येक्लि। आईल्या जात्रेक समजा
॥३२४॥

बाळु मागता खेळणी। कोपता ताज्जेरि जननी।
हठी तो सड्ता होडानि। वर्डण आईकूंक जाईना ॥३२५॥

उपरांत खेळणी घेवुनु। दिल्ली ताक्का मऽर म्होणु।
खेळता बाळ नांचूनु। पळैत नंदली आई ॥३२६॥

गुरुन सांग्ले मऽर म्होणु। शिष्यांक तो वरुचि जावुनु।
राकता सर्व ज्ञानादि दीव्नु। हाक्क साक्षि हावूंचि ॥३२७॥

गुरु शिष्यालो संवादु। चाल्लो शास्त्रार्थ विनोदु।
तांचो आमोदु प्रमोदु। कोळ्चेना विषयी जना ॥३२८॥

कीर्ति पसरली वाचस्पतीलि। जमलि ब्राम्हण मंडळि।
आईलि पाळि कन्यापितृलि। लाग्लि गा चोई दिगायेक
॥३२९॥

म्हणता तांक वाचस्पति। कित्याक तुम्चि कितापति।
विवाहाक ना सम्मति। गडबडि तुमचि व्यर्थ ॥३३०॥

आपण आणि कैं विद्यार्थि। ब्रम्हचारी निस्वार्थि।
वेदाध्याई नियति। व्यर्थ गा विवाद तुमचो ॥३३१॥

तरी आईकनी ब्राम्हण। समजाईताति बंधुजन।
विलंब कित्या विनाकारण। जारे शीघ्र गृहमेधि ॥३३२॥

मिळालि ब्राम्हण मंडळि। उत्तम कुल वधूक हाळ्ळि।
भामति नांवाचि चेल्लि। दश[25] अथवा द्वादशी ती[26] ॥३३३॥

सकल सद्गुणवति। रुपसंपन्ना सुदति।
चोईता तिक्का वाचस्पति। चकित जाल्लोमना ॥३३४॥

२५. दाहवर्षांचि २६. बारावर्षांचि

वाचस्पतीले मौन। हेंचि सम्मति लक्षण।
अशिश चिंतिले द्विजान। ठरैले लग्न कार्य ॥३३५॥

महूर्त काळ्ळा लग्नाक। कळैले बंधु वर्गाक।
पुरोहित आणि जेष्ठांक। निवेदिले बा सगळें ॥३३६॥

आदीं तो कुलदेवु। उपरांत ग्रामदेवु।
विशेषु गा इष्टदेवु। भूदेव तरी ब्राम्हण म्हणा ॥३३७॥

शुभं शोभनमस्तु। सकल सन्मंगलानि भवंतु।
प्रार्थितां हे पुरोहितु। नांदी कार्या ॥३३८॥

कन्यादान पाणिग्रहण। होमु आणि अश्मारोहण।
सप्तपदी तारादर्शन। चाले हे विधियुक्त ॥३३९॥

विप्रालें आशीर्वचन। आणि अक्षतारोपण।
सर्व ब्राम्हण पद्धतीन। संस्करिलें त्या गृहस्थांक ॥३४०॥

सरले अनेक दिवस। पक्ष मासादि वरुष।
शोभन प्रस्थ विशेष। सजलेंगा शयनगृह ॥३४१॥

प्रवेशिले अंतःपुर। पूजूनि तें महाद्वार।
मुग्ध स्नेहि परस्पर। जाल्ले एक हृदयि ॥३४२॥

जाल्या अवनत वदना। भामती ती सुखसदना।
मस्तक दवरिले चरणा। जोडल्या हाथ दोन्ही ॥३४३॥

वाचस्पती ज्ञान मेरु। संपूर्ण वैराग्यपरु।
रति सुखाचो अवसरु। ना गा ताक्का सर्वथा ॥३४४॥

आलिंगिले आदरान। मृदु संभाषणान।
कोरनु सतीक सांत्वन। विवरिलें ध्येय वाक्य ॥३४५॥

हे सुभगे सह धर्मिणी। समान ना तुक्का कोणि।
तू तरी उत्तम गृहणी। धर्म पत्नीगो कुलवधु ॥३४६॥

वेद शास्त्रांचें अध्ययन। जाईनि आनिकैं संपूर्ण।
भाष्य टीकादि लिखाण। करता दी सहायता ॥३४७॥

ग्रंथ समाप्ति पर्यंत। आवरु या चंचल चित्त।
पाळूयां ब्रम्हचर्य व्रत। निश्चल नेमस्थ पणे ॥३४८॥

सर्वदर्शन शास्त्रांक। शंकराल्या महाभाष्याक।
टीका रचूनु अमोलिक। उपरांत रमविता तुक्का ॥३४९॥

ते पर्यंत तरी। येवुनक्का मेज्जा मुखारि।
लक्ष्य विषयांचेरि। येनाशी तू करी माक्का ॥३५०॥

हे वचन आईकूनु। पति चरणांक वंदूनु।
विषयभोगांतूनु। जाल्लि ब्राम्हणी मुक्त म्हण ॥३५१॥

धन्य ती पतिपरायणा। आट्टैता विषयवासना।
लक्ष्य त्या लक्ष्मीरमणा। समर्पिलें बुद्धियुक्त ॥३५२॥

निर्जन वनांतु एक। निर्मिलो आश्रम प्रत्येक।
ताळपत्र आणि कंटक। संग्रहिलें वाचस्पतीन ॥३५३॥

एक शुभ मुहुर्तारि। मंगलचरण ती भारी।
कोर्नु सद्गुरु कैवारी। तारी म्हणता भवदुःख ॥३५४॥

कोर्नु आचार्य स्मरण। सूत्र[१७] भाष्याचें चिंतन।
करीत तत्त्वार्थ मंथन। करता ग्रंथु स्वतंत्रु ॥३५५॥

रात्रंदिन ते लिखाण। संपूर्ण देह विस्मरण।
आपो आप तो निद्देन। पडता धरणी विवशता ॥३५६॥

पतिव्रता हे पळैता। उशिशं दीव्नु पांगुरता।
शौचाचमनाक सिद्धुता। कोर्नु ती निप्ता निवांत ॥३५७॥

उठान प्रातर्विधि। कर्ता संध्यावंदनादि।
ना लेखनाक अवधि। ऋणि ताक्का विप्रसर्व ॥३५८॥

पक्ष मास अयन। संवत्सर बहु संख्येन।
सरले तरी लेखन। सर्नि वाचस्पतिलें ॥३५९॥

१७ ब्रम्हसूत्र

निष्कामि महामौनि। सती पतिपरायणी।
कर्ता सेवा विदून्मणि। बसता जागरण नित्य ॥३६०॥

ना तिक्षा तान भूक। सर्वार्पण पति सेवेक।
त्याग मई जननीक। कोर्या प्रणामु सहस्र ॥३६१॥

वाचस्पतीक ना वेळुकाळु। कर्ता कोणु सांभाळु?।
अन्नोदक वेळोवेळु। नेण गा दित्ता ते कोण? ॥३६२॥

लिखित पत्र सांभाळ्नु। दवरता क्रमांक मेळोनु।
तळत आणि कंटक काण्णु। मंडाईता ती व्यवस्थित ॥३६३॥

तारुण्य गेल्ले सगळें। प्रौढेन सर्व समर्पिलें।
पति सेवेंतु लक्ष्यलाईलें। विरले भाव विषयांचे ॥३६४॥

देश काल निमित्त। विस्सरु पडला बहूत।
आनंदामृत सेवीत। जाल्ला उन्मत्तु वाचस्पति ॥३६५॥

काल पुरुषु तो घोरु। सर्वैं गिळता तो क्रूरु।
सकालारि कर्ता प्रहारु। ना गा ताक्का पक्षपात ॥३६६॥

निवर्तले वर्ष साठि। आईली जरा[१८] पाटोपाटि।
कित्ते केल्यार कटपटि। सोड्ना रे कालपुरुषु ॥३६७॥

दंपति जाल्लि जर्जरित। दोग्गाई मौनव्रत।
निकट तरी अपरिचित। तपस्वी ते तापरहित ॥३६८॥

वाचस्पतीक चौर्यांशि। सति भामतीक पावुणशि।
दोग्गाले ती पुण्यराशि। अगाध गा अगणित ॥३६९॥

१८ म्हांतार्पण

तो एकु पुण्य दिवसु। संध्या काळुरे प्रदोषु।
कोर्नु पूजा विशेषु। घेतल्या लेखणि ती हात्तां ॥३७०॥

शांकर भाष्या उपरि। टीका ती लोकोत्तरी।
परंतु एक श्लोकाचेरी। कोर्का विवर पूर्ण ॥३७१॥

जाल्लो सूर्यास्तमानु। काळ्कांतु प्रकाशमानु।
उज्वळ ज्योति पोळोनु। पुर्णाईले श्लोक सर्व ॥३७२॥

जाल्ले ग्रंथ समाप्ति। त्या आनंदी वाचस्पती।
नांचलो हे सरस्वति। पावगे वेदमाता ॥३७३॥

हांवु एकु सारस्वतु। तुग्गेल्या सेवेंतु रतु।
अज्ञानि अबोधु श्रांतु। दयकरि गे कुलदेवि ॥३७४॥

त्या वेळारि अनिरीक्षित। सुटले पळे चक्रवात।
उब्बैत वस्तुजात। निवैलो गा दिव्वो ॥३७५॥

पळैत अंधकारु। भीवुनु मागता भूसुर।
देवि करी परिहारु। अंधकारु अज्ञानाचो ॥३७६॥

रात्तचि पतीक आपुल्या। भामति आड निपल्या।
मुग्धामनांतु हासल्या। पंडिताल्या बाळपणा ॥३७७॥

वाचस्पति खरे पंडितु। सर्व शास्त्र पारंगतु।
आत्त पळ्ळा काळ्कांतु। दिव्वो लावुचां न्याणतो ॥३७८॥

लाईता भामती ब्राम्हणि। प्रकाश तो अवलोकूनि।
हात तिज्जो पळैता ज्ञानी। जोड्ता हस्त भक्ति भावें ॥३७९॥

हे जननी सरस्वती। तू लाईली ज्ञानज्योंति।
उजवाडाक हाडिगे कृति। जगदंबे पावगे आत्तां ॥३८०॥

दीगे माते दर्शन। करीन ग्रंथ समर्पण।
पावैता देवि तुज्जे ऋण। निवैगे तरी ज्ञानतृषा ॥३८१॥

निपता कित्याक जननी। आईक ही दीनालि वाणि।
मंदमति हांवु अज्ञानि। तूं गे आधार आम्का ॥३८२॥

जाज्वल्यमान पणति। प्रसरला प्रकाश पूर्ति।
राबल्या तपस्विनी सति। भामत्ति भाग्य दाता ॥३८३॥

वाचस्पति भय भक्तीन। विचारता गे तूं कोण?।
सांगगे आई मेज्जाण। कर्ता विनंति आईक ॥३८४॥

कांपता देह तिग्गेले। वयोधर्मान सगळे।
कुडल आनि केश धवले। जळकाताती अतिरम्य ॥३८५॥

आईकली भामति तेन्ना। जाल्लि अश्रुमुखी खीन्ना।
उचंबळि दुःख मना। कोस्सळलिगा पतिचरणा ॥३८६॥

घट्टि धोरनु पतिचरण। घालता सति लोटांगण।
घडले कशिश विस्मरण। दुर्भाग्य मेज्जे पतिराया ॥३८७॥

सरले साटी संवत्सर। सर्वथा सेवातत्पर।
केल्ले कितें तिरस्कार। अभागीनीक पतिदेवा ॥३८८॥

तुमगेल्या वचन प्रमाणे। केल्यासेवा चड उणे।
आणि मेज्जे व्यर्थ जीणे। मरणचि बरे पतिराया ॥३८९॥

स्वामि हे एकी मागणी। मागता हे वृद्धपणी।
कुंकुमशोभित भाग्यानि। येव्वो मरण त्वरित ॥३९०॥

भामतीलि अल्प सेवा। स्वीकारि महानुभावा।
निरोप[११] दी म्हणताधवा। जाल्ली सती गद्गदित ॥३९१॥

वयान ज्ञानान वृद्ध। वाचस्पति खरे प्रबुद्ध।
आपण कंठावरुद्ध। जाल्लो क्षणीं स्तंभितु ॥३९२॥

आठैता तो पूर्व वाक्य। वचन दिल्लेले मुख्य।
भामतीले परम सख्य। उद्गासाकाइले तेन्ना ॥३९३॥

त्याग सेवेचि मूर्ति। राबल्या मुखारि भामति।
कंपित काया वाचस्पति। गद्गदित रे गळित अश्रु ॥३९४॥

११ आज्ञा.

श्री गुरुचरितामृत

तूं तरि वचन पाळिले। मजकुणि[२०] जीव शोषिले।
वचन मेज्जे भंगले। कृतघ्न हांवु घातकि ॥३९५॥

तुग्गेल्या त्याग तैलान। उजळले मेज्जें ज्ञान।
पावैन तरि तुज्जे ऋण। माग तूं इच्छितार्थ ॥३९६॥

कृति रचना नंतर। कर्ता म्हळ्ळें संसार।
आत्ता पंचाईशि संवत्सर। सरले देह जिरले पळें ॥३९७॥

भामतीन माग्लि पतिसेवा। दी हे देवाधिदेवा।
कीर्ति कामना ना ह्या जीवा। अपेक्षिता भाग्य सेवेचे ॥३९८॥

आईकूनु हे वाचस्पति। भाष्यांदिकाक तूं स्फूर्ति।
आजि ही तू निपल्या सति। निपता आनि नांव वाचस्पतीले ॥३९९॥

२० मेज्याखातिरी

वेदांताचि टीका कृति। समर्पिता तुझ्झा भामती।
ग्रंथु तुज्जा नांवान ख्याति। पाव्ता खरें समज ॥४००॥

निपले नांव वाचस्पतीलें। भामतीकारु नांव पळ्ळें।
ह्या सारस्वत दंपतीलें। वैभव आणि कीर्ति चिरस्थाई ॥४०१॥

सम्मजूकावे शांकर मत। वाचका भामत्ति ग्रंथ।
प्रमाण अद्वैत सिद्धांत। विवरिला भरपूर ॥४०२॥

शांकर भाष्याचेरि। टीका ती बहु वैखरी।
पंडित घेत्तात मात्त्यारि। ग्रंथ नांवचि भामति ॥४०३॥

हे नंता अनेक ग्रंथ। बरैल्या ताणे स्वंत।
अर्थ गौरवाने श्रीमंत। भंडार ते ज्ञानरत्नांचें ॥४०४॥

ब्रम्हसिद्ध ग्रंथु तरी। कर्तु सुरेश्वर मस्करी[२१]।
ब्रहत्तत्त्वसमीक्षा नांवारि। टीका ताज्जि विख्यात ॥४०५॥

सांख्य कारिकाचेरि। तत्त्वकौमुदी ती भारी।
तत्त्व वैशारदी योगारी। ह्यो टीका बहु अमूल्य ॥४०६॥

न्याय दर्शनाचेरि। वार्तिका तात्पर्य विवरि।
सूचि निबंध वैखरी। दोन्हि ही ग्रंथ अपूर्व ॥४०७॥

भाट्टावरी तत्त्वबिंदु। मंडनमिश्रु तो ज्ञानसिंधु।
विधिविवेक ग्रंथु चंदु। टीका ताज्जि न्याय कणिका ॥४०८॥

ताज्जो रचकु वाचस्पति। पंडिता मध्ये ताज्जे ख्याति।
तात्पर्याचार्य कीर्ति। मेळ्ळे नांव विख्यात ॥४०९॥

२१ सन्यासी

तो उच्चकोटिचो साधकु। परमार्थाचो चिंतकु।
तो तरी अवतारु एकु। आचार्य सुरेश्वरालो ॥४१०॥

मिथिलेचो नृगरायु। दित्ता ताक्का आश्रयु।
वाचस्पतीले सगळायु। समर्पण देव चरणि ॥४११॥

सारस्वतांली ही काणी। सांगता आईक साधक मणि।
संदेहतरी सोडि आणि। जारे धन्य श्रवणान ॥४१२॥

मल्लिकार्जुन भट्ट। सोमेश्वर पंडित वरिष्ठ।
हे सर्व सारस्वत श्रेष्ठ। पंडित काश्मीर वासी ॥४१३॥

कर्नाट वाङमयांतु। मल्लिकार्जनु कीर्तिवंतु।
तशिश सोमेश्वर पंडितु। विख्यातु तत्त्ववेत्ता ॥४१४॥

सारस्वत महोदयु। सात्त्विक आणि सुहृदयु।
आजिही तो कीर्तिकायु। रायु कविकुलाक ॥४१५॥

विजय नगराचि ख्याति। वाडुईलो सेनापति।
चावुंड माधवा प्रति। आदरु गा पूर्वजांक ॥४१६॥

मंत्रि आणि दंडाधिपति। तो मंडलेशु म्हणताति।
सारस्वतालि ही कीर्ति। उरल्या पळें कालगर्भा ॥४१७॥

वेदांत मार्ग दर्शकु। शैवागम प्रवर्तकु।
शौर्य धर्याचो प्रतीकु। नामांकितु माधवाख्यु ॥४१८॥

भाष्याचार्य सायणु। माधवा पेक्षा ल्हानु।
तोवै कीर्तिमानु। मुकुटमणि सारस्वतालो ॥४१९॥

वसंतमाधवु वीरु। तो वै सारस्वत कुवरु।
इतिहास कर्ता आदरु। निवसी हो गोमांतकाचे ॥४२०॥

तौलव चक्रेश्वरु। सप्त कोंकणाधीश्वरु।
स्वामी सेवेंतु तत्परु। विजयनगराचो ॥४२१॥

राज्य केल्लां सारस्वतानी। कळता दानशासनानि।
ना तांका विषयाचि तानी। निष्कामि ते राजकर्ते ॥४२२॥

देवगिरीचो हेमाद्रि। वत्सगोत्रि यजुर्वेदि।
राम देवाल्या कार्यकिर्दि। करुणाधिपु तो प्रसिद्धु ॥४२३॥

चतुर्वर्ग चिंतामणि। ग्रंथकर्तु विद्वन्मणि।
महापंडितु गीर्वाणि। निपुण पुराण शास्त्र ॥४२४॥

वैदिक धर्मांचि अवनति। नास्तिकांचि उन्नति।
समजून काल गति। ग्रंथु करी हेमाद्रि ॥४२५॥

यादवांचो सेनापति। जाणतो सर्व राजनीति।
राज कार्यांक तीव्रमति। हाड्लि पद्धति शेणवाई ॥४२६॥

हेमाद्रि महा प्रतापि। शोधिलि मोडिलिपि।
मराठि सर्व व्यापि। केल्लि ती हेमाद्रिन ॥४२७॥

वैद्य शास्त्र शिल्प शास्त्र। युद्ध शास्त्र भाषा शास्त्र।
वेद आणि तत्त्वशास्त्र। अवगत सर्वै ताक्का ॥४२८॥

बाराव्या शतकांतु। म्लेंछ मातले भारतांतु।
हेमाद्रिल्या राज तंत्रांतु। अटकले धूर्त सगळे ॥४२९॥

सारस्वत कुल ललामु। हेमाद्रि महामहिमु।
पंडितु शूर उद्दामु। पुत्रु तो वेदमातेलो ॥४३०॥

आनि एक्लो प्रातःस्मरमीयु। सारस्वतांतु कीर्तिकायु।
इतिहासाचो स्वर्णाध्यायु। प्रीतिपात्रु सर्वालो ॥४३१॥

सरस्वतीलो शब्द भंडारु। लुट्टिलो व्याकरणकारु।
भट्टोजी दीक्षितालो विवरु। जाणती ज्ञानी सगळे ॥४३२॥

सिद्धांत कौमुदी नांव। ग्रंथु प्रसिद्धु सर्वगांव।
काशी क्षेत्रांतु एक वोवं। गेल्यारि कळता ती कीर्ति ॥४३३॥

आईकूया ते चरित्र। नाना सन्निवेश विचित्र।
देवाले कृपापात्र। धन्य गा सर्व भाग्यवंत ॥४३४॥

भट्टोजिले पूर्वज अर्चक। दीक्षीत नांव औपाधिक।
मूळ हे महाराष्ट्रीक। जाल्ला जन्मु सारस्वतांतु ॥४३५॥

भट्टोजिली ज्ञानतृषा। नीव्नी त्यजिले स्वदेशा।
बदलली ताज्जि महर्दशा। चल्लो तो श्रीक्षेत्रकाशी ॥४३६॥

केल्लें अहर्निशी अध्ययन। न्याय आणि व्याकरण।
जाल्ले सरस्वती करुण। रचिले सिद्धांत कौमुदी ॥४३७॥

काशीचे पंडित जन। कौमुदी ग्रंथु वाज्जून।
ग्रंथु मस्तकारि घेव्नु। म्हळ्ळे भट्टोजी तू धन्यु ॥४३८॥

अप्पय्य दीक्षितु द्रविडु। शास्त्रज्ञु मानेस्तु होडु।
ताणे केल्ले निवडु। सिद्धांत कौमुदीचो ॥४३९॥

आपुल्या ग्रंथ पद्धतीन। दिव्का म्होणु शिकवण।
काडलें विद्यालय महान। श्री क्षेत्रा विश्वनाथि ॥४४०॥

भट्टोजीन अपर वयांतु। मेळैले ज्ञान न्याय शास्त्रांतु।
अम्ममानु सर्व शास्त्रांतु। वाड्लि ख्याति दिग्दिगंत ॥४४१॥

असली विद्या आणि धन। केल्ले शिष्यांक समर्पण।
सतत वर्ष छप्पन्न। केल्ली सेवा त्या पाणिनीली ॥४४२॥

भानुदीक्षितु एक्लो पूतु। तौवै शास्त्रज्ञु ख्यातु।
भाषाभिज्ञु पारंगतु। रत्नूगा सारस्वतांलों ॥४४३॥

भट्टोजीलि अद्भुत करणी। सांगतारे आईका कोणि।
अभिमानु आसका थोडेपुणि। सुकृति रे आमचे पूर्वज
॥४४४॥

व्याकरण शास्त्र प्रवर्तकु। पाणिनी शब्द जनक।
ताज्या अष्टाध्याय नामकु। ग्रंथाक भाष्य दीक्षिताले ॥४४५॥

लक्ष श्लोकानियुक्तु। शब्द कौस्तुभाचो लेखु।
अवलोकनेक अशक्यु। म्होणु विसर्जिलें गंगामध्ये ॥४४६॥

गंगेन दिल्ले निवडून। एका अध्यायु नव प्रकरण।
ते नवान्हिकि नांवान। आजी ही लभ्य ग्रंथरुपि ॥४४७॥

ताज्जे श्लोक नवहजार। त्या उपरांत भूषणसार।
तशिश धर्मशास्त्राचे सार। बरैले खरें दीक्षितानि ॥४४८॥

आन्हीक अशौच निर्णयु। ग्रंथ दोन्ही समन्वयु।
भट्टोजीले सर्व वाङमयु। आभरणरे गीर्वाणदेवी ॥४४९॥

सर्व पंडिताले हृदयांतु। सर्व मान्यु गा प्रतिष्ठितु।
सदैव भट्टोजी दीक्षितु। जात्ता व्यक्तु शब्दरुपी ॥४५०॥

हे सर्व सारस्वत। आमुचे पूर्वज विख्यात।
समजून हें चरित। घालूयां नमस्कार आम्हीं ॥४५१॥

आनिकै काहीं सारस्वताली। चरित्र नांता बिर्दावली।
महिमा संत महंताली। आईक हें श्रवणयोग्य ॥४५२॥

गदाधर भट्ट नामकु। तर्क न्यायाचो प्रमुखु।
गुरु ताक्का हरिरामाख्यु। तर्क वागीशुनामि ॥४५३॥

जन्म भूमि पूर्व बंगाल। उत्तम तें सारस्वत कुल।
ज्ञानी तरी बहु सरळु। पंडितु अग्रमान्यु ॥४५४॥

जीवाचार्यालो पूतू। गुरु सेवकु पुनीतु।
तर्काचेरि टीकाग्रंथु। निर्मिला बहूत मानी ॥४५५॥

नवद्वीपांतु पाठशाला। चोलोचो गुरु त्यावेळा।
तर्कज्ञु म्होणु नांव पाव्ला। पूज्य हो ज्ञानी जना ॥४५६॥

तर्काचो मेरुमणि। ज्ञान्यांचो शिखामणि।
ग्रंथतरी विपुल संख्यानि। बरैला अभूत पूर्व ॥४५७॥

ग्रंथ अस्सति बहूत। गदाधरि नांवान ख्यात।
अष्टादश जय संख्येंत। प्रसिद्धुगा पंडितामधें ॥४५८॥

भारताचा दक्षिणोत्तर। व्यापिले ती पंडित प्रवर।
आतां साधु संताले विवर। सांग्ता आईका बरें ॥४५९॥

शतकसोळाव्याप्रांत। जाल्ले कवीश्वर बहूत।
धार्मिक सांस्कृतिक सहित। कृती गा तांचि अगाध ॥४६०॥

महेश्वर भट्ट नामीं। गोयां ताज्जि जन्म भूमि।
महाशाल नामक ग्रामि। आईलो जन्मा साहजिक ॥४६१॥

शांता दुर्गेलो कुळवि। जन्मजात महाकवी।
दर्शनदित्तालि ताक्का देवी। साक्षात्कारी तो सुजीवि ॥४६२॥

भागवत पुराणाचेरी। टीका प्रसिद्ध श्रीधरी।
त्याटीकेक्क पूरक भारी। टीका ती महेश्वरालि ॥४६३॥

उत्तम स्वात्मदीपीका। गीता सिद्धांत चंद्रिका।
वाक्य सुधाक ती टीका। गद्य पद्यात्मक अपूर्व ॥४६४॥

श्रुतिशास्त्र परायण। टीकादि काव्य निर्माण।
असले सारस्वत ब्राम्हण। ललामभूत भारताक ॥४६५॥

ग्रामनाम हळदीपूर। गावांमध्ये अग्रहार।
मारुति उपासक द्विजवर। वास कर्ताले बहूत ॥४६६॥

नागेशभट्ट कविवर। ज्योतिर्विद्येचे ग्रंथकार।
ग्रंथ निर्मिलेत्ती चार। गणित आणि धर्मशास्त्र ॥४६७॥

सागर रामाचार्यु। प्रसिद्धु गा कविवर्यु।
ग्रंथु कोंकणाभ्युदयु। बीज ग्रंथु सारस्वतांक ॥४६८॥

रंगा भट्ट अप्पाभट्ट। आयुर्वेदाचे वरिष्ठ।
पश्चिमांचे अनेकराष्ट्र। मांताले त्या वैद्यांक ॥४६९॥

आतां आईका संत चरित। साधुवर्य सोईरानाथ।
नाईकस्वामि बापुमहंत। पूज्य गा ते साक्षात्कारी ॥४७०॥

गोपाळनाथ गोसावी। भावु महाराज दळवी।
टाकीं महाराजपूर्वि। जाल्ले समर्थ अप्पया ॥४७१॥

पूर्णदास उपस्कर। कृष्ण भट्ट बांदकर।
नारायण भट्ट कीर्तनकार। भक्त दत्तालें एक मुखी ॥४७२॥

जाल्ले बहूत शूर वीर। कर्तालें काहीं राज्यभार।
मुत्सद्दीमुख्य नेतार। प्रवीण गा युद्ध विद्या ॥४७३॥

पुण्यात्मुरामकामति। समर्थु तो रण नीति।
आंग्ल विद्येंतु परिणति। पाविलो अर्थ शास्त्रीं ॥४७४॥

हे सगळे सारस्वत। लौकिक तरी नीतिवंत।
आईकूसा साधु संत। चरित्र आणि पुण्य कीर्ति ॥४७५॥

सत्र्याव्या शतमानांतु। सारस्वताल्या सत्कुलांतु।
पेडणे महाल पालियेंतु। वसति बहुत ब्राम्हणाल्ली ॥४७६॥

अंबिये उपनावाचे। कुलकरणि वृत्तीचो।
स्मार्त सारस्वत कुलाचो। नांव ते अनंतशर्मा ॥४७७॥

अनंतु पालि यो सोण्णु। बांदे ग्रामांक येव्नु।
राबलो पूर्वजांक स्मरुनु। साधले अर्थ परमार्थ ॥४७८॥

मनाक एकीचि खंति। नारे देवा संतती।
लाव्का तूवें पणति। जोळोका कुलज्योति आम्ही ॥४७९॥

अशिशप्रार्थना दंपती। नित्य निष्ठेन करताति।
शांता दुर्गालि स्तुती। आणि मांगीरीशालि ॥४८०॥

कृपा ती आदिनाथालि। सती गर्भवती जाल्लि।
कुलपरंपरेचि वालि। वाढलि अंकुरलि पळे ॥४८१॥

शक सोळाशि बत्तीस। शुभमास शुभदिवस।
ब्राम्ही मुहूर्तु विशेष। प्राप्तु त्या समयीं शुभ ॥४८२॥

जन्मलोरे महायोगी। आत्मसुखी तो वैरागी।
अनंतु तरी पुण्य भागी। आवैक गळलेरे आनंदाश्रु ॥४८३॥

वैदिणीक लागलि भीति। भुर्गाक [२३] ना बह्य स्मृति।
नांति इंद्रिय प्रवत्ति। पडला चोंई मृतप्राय ॥४८४॥

२३ चेर्डक

श्री गुरुचरितामृत

मुष्टि आणि दृष्टि शिथिल। हात पाय तरी अचल।
ना काही हाल चाल। वार्ता ही पसरलि ग्रामीं ॥४८५॥

काहीं सांगताती भूतबाधा। काहीं मंत्र तंत्रानि साक्षा।
व्यर्थ यत्न ऋणानुबंधा। भोगुया अपरिहार्य ॥४८६॥

बांदे गांवु सगळो। प्रसूति ग्रहांतु रिगलो।
उल्लेईता वेगवेगळो। निर्जीव रे चेर्डु जडतुल्य ॥४८७॥

आवैइले दुःख दारुण। रड्ताती क्षीण स्वरान।
जन्मांतरांचे हे ऋण। खरें हे घेतले रे बाळा ॥४८८॥

अनुभवी बईललि म्हणिण। सटवो दिवसु तो येनि।
दुःख कित्या व्यर्थ आनि। मागूया देव चरणा ॥४८९॥

केल्लि सगळ्यानि प्रार्थना। मांगिरीच्या शिवराणा।
मृत्युंजया अहि भूषणा। राकरे राक बाळां ॥४९०॥

शंकरा पार्वति रमणा। गंगाधरा त्रिलोचना।
नीलकंठा निरंजना। दीगा आयुष्य बाळाक ॥४९१॥

राकगे कुल स्वामिनी। शांता दुर्गा साइबिणि।
अंबे तू लोक जननी। ध्यागे पदरी बालकाका ॥४९२॥

दय करीगे दाक्षाईणी। सर्व मंगले भवानी।
भद्रे मंगळे मृडाणी। राकगे बाळु तुगलेचि ॥४९३॥

सर्वालींही मागणी। आईकलों शूलपाणी।
सात्तादिसु सकाळीं[24]। पावलो मंगेशु बांदा ॥४९४॥

२४ प्रातःकाली.

पडलो आंगणा प्रकाशु। रावला अवधूत वेशु।
भस्मधारी महेशु। दिसला तो अंबियेक ॥४९५॥

केल्ले भक्तीन साष्टांग। लोटांगणान सर्वांग।
चरणांक उत्तमांग। समर्पिले त्या दंपत्यानी ॥४९६॥

अभय दित्ता अवधूतु। धन्यु गा तुजो पूतु।
ज्ञान वैराग्य युक्तु। योगी तो अलक्षलक्षु ॥४९७॥

कर्ताहो कुलोद्धार। सांगू कित्या साब्बांर।
म्हणातातो त्रिपुरहर। जाल्लो अदृष्य त्या क्षणी ॥४९८॥

पत्नीसहित अनंतु। दिव्यानंद स्थितींतु।
मंगेशूचि अवधूतु। संदेहु ना धन्य आम्हीं ॥४९९॥

संचरली गा शिव शक्ती। योगीशाक सुचली युक्ति।
दाक्षेता बाह्य आसक्ति। जाल्लो योगी बहिर्मुख ॥५००॥

जाग्रत जाल्लो साधकु। केल्लो ताने प्रश्नु एकु।
जन्मापुढ़ेचि बालकु। योगीशु जाल्लो काशिशं? ॥५०१॥

योगींक परत जन्मुना। तूंचि जाण महा मना।
जन्मकित्या योगी जना। तूं हे जाणता सिद्ध मुनी ॥५०२॥

विवरिलें सिद्ध मुनीन। शिष्यु केल्लो गोरख नाथान।
आप्पैलो गहनी नांवान। तो वरिष्ठु रे नाथ पंथा ॥५०३॥

गहनीनाथा निवृत्ति नाथु। निवृत्तिलो ज्ञानेशु ख्यातु।
ज्ञानेशालो भक्ति पंथु। प्रसिद्धु खरे पंथा मधें ॥५०४॥

भक्ती सुख सेवनेक। आइलो गहीनी जन्मांक।
अंबियेले कुल राक्चाक। जाल्लो प्रकटु त्या कुलां ॥५०५॥

असो आईक पुढील काणि। बालकाक चोव्नु जननी।
भुलि मनांतु आनंदानिं। चोय्ता मोगळ्याक आपल्या ॥५०६॥

नांव दवरिले शंकरु। आप्पोचे आज्जेन सोयिरु।
सांगू कित्तें विवरु। नांव ते शंकरु अज्जालें ॥५०७॥

शंकरु नांव निपलें।सौरो हेंचि उरले।
अज्जेन हे दवरिलें। नांव शाश्वत गा बरें ॥५०८॥

संत ते सौरे सर्वांक। बरें आटैताति वैर्यांक।
वैरि सौइरांक समानांक। दिव्चे संत ते मानेस्त ॥५०९॥

ह्या योगिले दृष्टि ऊंच। नियाळ्ता भूत पांच।
चेर्डालें लीला प्रपंच। दित्ता आनंदु अतिशय ॥५१०॥

गर्भाष्टमारि उपनयन। बप्पैलेचि शास्त्र शिक्षण।
अमरकोशादि व्याकरण। चाल्ले अध्ययन छंद शास्त्र ॥५११॥

बालकु तो कुशाग्र मति। शिकलो सर्व श्रुति स्मृति।
अभ्यासु चिंतकु स्थिरमति। तरी प्रीति ताक्का परमार्थ ॥५१२॥

करता कुलकरणि वृत्ति। अध्यात्माकडे प्रवृत्ति।
विषयांतुलेन निवृत्ति। ध्येयु हो मुमुक्षुंगेलो ॥५१३॥

कृषि कार्य ही कोर्नु। वैदिक मार्गारि चोल्नु।
कुलवृत्ति ती सांभाळ्नु। सुखी तो संतु सन्मार्गि ॥५१४॥

प्रपंच हे दुःख मूळ। कांटचाचें हे हांतूळ।
निदल्यारि तोप्ताले[२५] करळ। नीद कंचि स्वप्नभ्रम ॥५१५॥

सोईराक एक्ली भैणि। कन्या ती उपवर जाईनि।
पतीवरान सामके चोइनी। घडता वैधव्य घोर ॥५१६॥

विधवा परतली कुळारा। आवै दुवेलि अश्रुधारा।
उचंबळीं दुःख दुर्धरा। अनंताक दुःख भारी ॥५१७॥

सोईरो कर्ता समाधान। भरले बांदाचें जन।
कठोर गा विधिशासन। प्रारब्ध चुक्कोचें कशिशं? ॥५१८॥

सिज्लो भाज्लो दुःखाग्निं। मंदली गा उलवणी।
विसरलो भूक तानि। बुद्धि भ्रमण अनंताक ॥५१९॥

२५ खोपाले

दूवेक वैधव्य दीक्षा। देवा कित्याक रे ही शिक्षा?।
मेगेलें मांगल्याचि रक्षा। करगे अंबा शांतादुर्गा ॥५२०॥

सोइरो पळैत आवेक। संसारुचि भयानक।
चिंतीत तो अंतर्मुख। खरें बा साक्षिभूतु ॥५२१॥

कोण जाणरे विधिलीला। अनंताले आयुष्य सरला।
शाश्वत कोण बा उरला। जनन गमन हेंचि जग ॥५२२॥

सरलो अनंतु दुःखान। बाइलेन दोळे उदकान।
दूवेक घाल्लें न्हाण। रडले दोगैं हंबरत ॥५२३॥

आवै दूव दोगई दुःखी। सोइरो तरी अंतर्मुखि।
घरांतु कोण बा बाकि। सर्व क्षणिक सर्व शून्य ॥५२४॥

श्री गुरुचरितामृत

विधिपूर्वक श्राद्ध कर्म। कर्ता सोइरो पुत्रधर्म।
जाणता तो खरे मर्म। म्होणूचि निःसंगु गा तो ॥५२५॥

काहीं दिवस गेल्ले। राति दिवसु एक्क जाल्ले।
दोळ्या उदकान हात दुल्ले। आवैइ दूवेन ॥५२६॥

अमंगळ ते अभागिं। दुःखांतु जाल्ले सहभागी।
शोक कित्याक वुगि। सांभाळागे परस्पर ॥५२७॥

अशिश सांगता सोइरो तांका। आवैन तरी बहुशंका।
पूतु एकलोचि माक्का। खरों जाल्लो हो संन्यासी ॥५२८॥

म्होणु ती पुत्ताल्या सांगता। पूत्ता हे तुजल्या मागता।
आम्हीहे प्रारब्ध भोगता। बाळा तू बरो ग्रेस्थु[२६] ॥५२९॥

२६ गृहस्थु

बाळा तूं वार्डीक जाव्का। घरभरवण कोर्का।
घराण्यांचो दिव्वो लावका। काळकांतु घाल्कूका आमका ॥५३०॥

तूं लग्न तरी करना। खरें बाळा हांव उरना।
भैणीक कोणी आधार ना। आम्ही जाल्ले रे अंध पंगु ॥५३१॥

सोइरो जाइलो निरुत्तरी। आवै दूव रड्ली भारी।
देवा आमका दोग्गांक व्हरि। दी समाधान सोईराक ॥५३२॥

आवैले दुःख पोळोनु। ठरैता तो लग्नु जाव्नु।
आवैक भैइणींक रक्षूनु। पाळ्ता धर्मु अपत्यालो ॥५३३॥

सोइर्याक आइला सोइरीक। ठरैलि रे बेग्गि वार्डिक।
येज्चे पैलें ही वर्षांतिक। मगळ कार्य घोड्का ॥५३४॥

विवाह कार्य वैभवान। जाल्लें घर भरवण।
शुभमहुर्ता उष्टावण। घडले विनोद घटना ॥५३५॥

सुन्नेल्या पाय्या लक्षण। सम्मृद्धिगा धनधान्य।
केल्ले तीणे अभिवादन। माई नणदेक तेन्ना ॥५३६॥

जाल्ले ताक्का एक संतान। पावैले ते पितृऋण।
आवैकई जाल्ले समाधान। सोड्रो तरी निर्द्वंद्व ॥५३७॥

सुख दुःख आगम्मापयीं। आजि येत्ता वत्ता पायीं।
प्रवाह प्रवाही न्यायी। सुख दुःख दोन्ही ही क्षणिक ॥५३८॥

प्रपंच आणि परमार्थ। सोड्रो साधिता निस्वार्थ।
कर्म सर्व ते यज्ञार्थ। असो कुलकर्णि व कृषि ॥५३९॥

संसारु चलैले नीट। सोईर्याले पूजा पाठ।
अंतरंगाचे कवाट। उघडते निष्कपट ॥५४०॥

प्रातरान्हीक ब्राम्हीरी। पूजा अलंकार उपरी।
अतिथि विप्रा बरोबरी। सेवि अन्न चतुर्विध ॥५४१॥

विश्रांति उपरांति लेखनी। घेत्ता हात्तांतु कुलकर्णि।
कृषि कार्यांचि पळवणी। कर्ता श्रद्धेन आपण ॥५४२॥

इंद्रियव्यापार आपोआप। करैताती पुण्य पाप।
सच्चिदानंद ते स्वरुप। सोईरा माग्नु तांतूचि ॥५४३॥

खरे सोइरो अव्यवहारी। प्रेमळु पर उपकारी।
गरींबाक तो कैवारी। म्होणुचि भंडार क्षिणिले ॥५४४॥

दुर्बळच्यांक विनायति। शेतकरीक रियायति।
पोळोनु ही अर्थ नीति। कोपलो सावंत वाडीचो ॥५४५॥

सावंतु प्रजा पीडकु। साधुसंताक आतंकु।
काड्ता आज्ञा तो मूर्खू। हाडा वाडीक कुलकर्ण्या ॥५४६॥

चाल्लो सोइरा वाड़ीक। चिंतीत मनांतु देवाक।
ताज्जा सृष्टि सौंदर्याक। भुललो भक्ति युक्त ॥५४७॥

गगन चुंबी गिरिशिखर। भीमकायाचे तरुवर।
भीभत्स दिवांधकार। आगर हिंस्र पशूंचें ॥५४८॥

सोइरा चडता डोंगर[२७]। पळैता दृष्य सुंदर।
दिसले एक सरोवर। निर्मल उदकाचि झरी ॥५४९॥

२७ पर्वतु

सोइरा ध्यानस्थु बसलो। देह संपूर्ण विसरलो।
दहिराकाशांतून आईकलो। शब्दु अल्लख निरंजन ॥५५०॥

सुटलें ताज्जे ध्यान। दिसता तेजःपुंज वदन।
देह बुडला भस्मान। पळैता धसकलो सोईरा ॥५५१॥

विभूति पुरुषाक चोवनु। साष्टांग प्रणिपात घाल्नु।
अश्रूनि पाय धोवनु। धर्ता गट्टि ते चरण ॥५५२॥

योगिराजु उद्गारु काड्ता। बाळा मक्का भूक जात्ता।
काहीं तरीं खावैरे आत्ता। दीरे प्रेमभावें ॥५५३॥

आपण्याक म्होणु हाळ्ळालो। पोणोसु मुखारि दवरलो।
कांटे सहित सगळो खाल्लो। दिल्ली ढेक त्या क्षण ॥५५४॥

योगींलि अद्भुत करणि। चोइताचि तो कुलकरणि।
लोळ्ळो त्या दिव्य चरणिं। मागता ज्ञानभिक्षा ॥५५५॥

योगी म्हणाले रे बाळा। भूक निवलि पणसा फळा।
पांच गरे तरी वेगळा। दवरिल्या रे तुजकारणि ॥५५६॥

पणसा गरे तोंडातूनु। दिल्ले ताक्का काडूनु।
सोहिरा प्रसाद म्होणु। स्वीकारता शुद्ध भावे ॥५५७॥

प्रसाद भक्षीत्या क्षणा। जाल्ले सोहिरा उन्मन।
स्वरूपांतु जाल्लो मग्नु। जाल्लि भग्न भवचिंता ॥५५८॥

तो योगीच गोरखु। सोहिराक मेळ्ळो ओळोखु।
पूर्व जन्माचो तोकु २८। त्या गोरखनाथाचो ॥५५९॥

२८ पुत्र

स्थूल देहचिरें पोणोसु। म्हळचारि अन्नमय कोशु।
योग बलान ताज्जो नाशु। कोर्का साधक समज ॥५६०॥

पंचप्राण पांच गरे। लिंग देह तें बरें।
आनंदमय कोशु तो खरें। रस रुप रे त्या गऽऱ्यांचि ॥५६१॥

सोहिरालि देहात्म बुद्धि। गेल्लि तापलो आत्मसिद्धि।
विषय विषांचि अबुद्धि। आट्लि त्या गुरुकृपेने ॥५६२॥

मेळ्चा सुषुम्नेचि वाट। शमले इंद्रियांचे आर्भट।
चढला त्रिकूटाचो [२९] गुमट [३०]। देखिले दृश्य अनिर्वाच्य [३१]
॥५६३॥

सुइला गरुन काज्जाळ [३२]। दिसले स्वरुप सोज्वळ।
शोधिला निधीचे स्थळ। ना गा ताक्का रातिदिवस ॥५६४॥

२९ एकियौगिक संज्ञा. ३० शिखर. ३१ सांगूक जाय्ना. ३२ अज्ञन.

नारे आधि व्याधि। निजबोध आणि समाधि।
लागला अनादीच्या नादीं। न बाधि विषय पंक[३३] ॥५६५॥

पळ्ळा सूर्य प्रकाशु। अज्ञान तमाचो[३४] नाशु।
ऊंच नीच चिदाकाशु। व्यापिला गा तेजोन्वित ॥५६६॥

आनाहत[३५] नादांतु बुड्ला। आकाशायेद्दो वढ्ला।
सहस्राराक[३६] उडला। सुख तें अवर्णनीय ॥५६७॥

आसक्ति ना प्रपंचाचि। कुलकर्णि कृषिकार्याचि।
लेखनि धर्नी शायेचि। आनि राय नांति वेगळे ॥५६८॥

पावलो सोइरा सांवतवाडी। रायाक वंदून रोकडी[३७]।
लेखनी सहित ती पगडी[३८]। दवरुनी आइला घरां ॥५६९॥

३३ चिक्कोलु ३४ काळोखु ३५ षट्चक्रातु हृदयगतचक्र ३६ मस्तिष्कांचे सहस्र दळ कमल ३७ त्वरीत
३८ मुंडासु

श्री गुरुचरितामृत

केल्लो नमस्कारु आवैक। नर सेवेंतु मोकळीक।
नां गे माझ्ना आणिक। सेवा अर्थ कामाची ॥५७०॥

मन जाल्ला संन्यस्थ। उरता स्वरुपांतु स्वस्थु।
स्त्री वर्ग हे समस्त। मान्ता आवईचि म्होणु ॥५७१॥

गुरु उपदेशाचें बीज। रोईला गे हृदयांतु निज।
आतां अजात वाद सहज। पिकैतां पूर्ण ब्रम्ह ॥५७२॥

बांदेचे लोक हासलें। सौरो पिस्सूचि म्हणाले।
भिकारि जाल्ले हे सगळे। बुडले घराणे हांचे ॥५७३॥

निंदा स्तुति दोन्ही समान। आप पर म्होणु नारे कोण।
सर्वै भेद नाम रुपान। स्वरुप सदा एकचि ॥५७४॥

सोईर्यालि समदृष्टि। ब्रम्हु भरला ह्या सृष्टि।
दिसता तो व्यष्टि समष्टि। हेंचि जाण परमार्थ ॥५७५॥

भैणि आणि आवैक। शिक्कले पारमार्थिक।
बाईलेक सहित बंधूक। लागलि खरे ज्ञान तृषा ॥५७६॥

कोणाकई करना विरोधु। सर्वांक दित्ता आत्म बोधु।
अद्वेषि निर्विकारि साधु। विवेकि तो सोइरो बा ॥५७७॥

साधकु कर्ता विनंति। सिद्ध मुनि तुक्का प्रणति।
सोइरो संसारी आणि वेदांति। दोन्ही हे साध्ले कश्शि?
॥५७८॥

संसारु तरी बंधन। मोक्ष ते संकटपण।
दोन्ही एकी कठिण। राव्ता टिक्ता तरी कसे? ॥५७९॥

श्री गुरुचरितामृत

साधका तू सुविचारी। ऋषिजन सर्वीहि संसारी।
साधल्या तान्नि मुक्ति चारी। आम्ही गोत्रज रे ऋषिंगेले ॥५८०॥

असोनि संसारी। जिव्हे वेगु करी।
म्हणता ज्ञानेश्वरी। ते तरी समज ॥५८१॥

अशिशं सांगून सिद्ध मुनि। वर्णिता पाट्लि काणि।
साधकु मात्तें हाल्लोनि। आईकता श्रृद्धा युक्त ॥५८२॥

त्यजिला सोईर्यान अर्थकाम। बाल भुर्ग्याचेंरि बहुप्रेम।
धरला ब्रम्हचारीलें नेम। निस्संगु तो ज्ञानमूर्ति ॥५८३॥

गोरख्याला आज्ञेन। उपक्रमी ग्रंथ लेखन।
मुमुक्षूंक मार्ग दर्शन। सेवा सरस्वितीलि ॥५८४॥

प्रथम सिद्धांत संहिता। अठ्रा अध्याय आस्ता।
मनन केल्यारी तत्त्वता। नारे खरें जन्ममरण ॥५८५॥

ज्ञानेश्वरीचा आधारान। महदनुभवेश्वरी जाण।
केल्या पूर्ण लिखाण। गुरु गोरख प्रसादें ॥५८६॥

नाना साहित्य प्रकार। पद्यगद्यात्मक वेदसार।
आद्यंत तत्त्व विचार। सांगला त्या ग्रंथामधें ॥५८७॥

संगीत साहित्यांचे माधुर्य। काव्याचे शब्द सौंदर्य।
नाना अर्थात्मक गांभीर्य। आस्वादिले खरें संत ॥५८८॥

दृष्टिसदा स्वरूपावरि। दिसता सामान्य संसारी।
तिलक आणि पगडी मात्त्यारि। उपरि एक उत्तरीय ॥५८९॥

सरळ शुद्ध सादापण। कर्ना कोणाकर्ई फटवण।
अहोराति स्वरुप चिंतन। लिखाण करी यज्ञभावें ॥५९०॥

संसार सहित बहु कठिण। केल्लि यात्र पायवाट्टेन।
भैणि कर्ता फाटि राखण। कर्तीति सेवा पत्नीपुत्र ॥५९१॥

ना काहीं वाहन सोकर्य। परस्पर बंधूलें सहकार्य।
सदा सत्संग ब्रम्हचर्य। हेंचि गा तात्पर्य यात्रेचें ॥५९२॥

नाना व्रत आणि उपवास। नियमान करी चातुर्मास।
नवरात्रि तरी विशेष। कुळावि तो शांतादुर्गेलें ॥५९३॥

नानालंकार घटस्थापन। दीपप्रज्वलन अंकुरार्पण।
ब्राम्हण सुवासिनी पूजन। मुख्य गा कुमारिपूजा ॥५९४॥

ब्राम्हणांक संतर्पण। सम्मानांक समाराधन।
दीन दुर्बळांक अन्नदान। चलैता शास्त्र युक्त ॥५९५॥

सोहिराले कुटुंब निर्धन। तरी गा भिक्षावलंबन।
घ्यानांति कंचे ही दान। निष्किंचन तरी निष्ठेचे ॥५९६॥

कृषि कार्यान जीवन। नाना तर्हे कष्ट सहन।
कर्तांति सर्व ही श्रद्धेन। पूजूका अशिश परमात्मा ॥५९७॥

कीर्ति ही सोहिरोबाचि। आईकले राजवाडींचि।
खेमा सावंत राजाचि। आईली विनंति भेंटीक ॥५९८॥

पावले नाथ वाडीक। राबलेतिं राय स्वागताक।
नाथाल्या चरण पादुकेक। नत मस्तक रे राजश्री ते ॥५९९॥

नाथांक गुरु मानूनु। योग मार्ग ते साधूनु।
अर्पिले गुरु दक्षिणा म्होणु। अपार धन रत्नादिक ॥६००॥

पळले नाथ रातोरात। राज धनांक मार्ले लात।
राय मेज्जो गोरखनाथ। दिल्ले ताणे रत्न अपूर्व ॥६०१॥

खजानि तो सोम सावंतु। उन्मत्तु सदा मदिरेंतु।
दर्बारि तोचि उन्नतु। बंधिले ताणे नाथांक ॥६०२॥

देवाक स्मरीत नाथु। गेल्लो बंदीखानेंतु।
रान्ना वनांतु तो निर्भीतु। दिल्ला अभय गोरखानाथ ॥६०३॥

आईकता गुरूलि गर्जन। ती अल्लखनिरंजन।
सर्वत्र दिव्य दर्शन। घड्ता पळे नाथांक ॥६०४॥

मदिरोन्मत्तु सावंतु। सोव्ता अवाच्य शब्दांतु।
भिकारि दरिद्र रे तूं। भाट्टैता कित्ते खेमांक तूं ॥६०५॥

मार्ता चिर्ता तुका जिंती। कोण कित्तेहि म्हणोंति।
कोणि तुक्का वांचैनांति। उष्टच्या उगडरे तोंड ॥६०६॥

नाथानि दृष्टि ऊर्ध्वैंलि। योगाग्नि ती उठायिलि।
श्वासोच्छ्वास तीव्र जाल्लिं। उसळलि गा प्रळयाग्नि ॥६०७॥

थरथरलो सोम सावंतु। शिर्कला अग्नि ज्वालेंतु।
मेल्लोरे मेल्लो अग्नींतु। नाथा चुक्लो क्षमकरा ॥६०८॥

खजीन्दार गेल्लो पोळ्नु। नाथ बसलेति ध्यान धोर्नु।
राव्ळाराचे भृत्य येव्नु। केल्ले मुक्त नाथांक ॥६०९॥

पसरलि नाथालि कीर्ति। करु लाग्ले सर्वींहि स्तुति।
नाथालि पारमार्थिक गति। नेणे लोक मूर्ख ॥६१०॥

काहींतरी चमत्कार कोर्का। तेन्नाचि ताक्का साधु म्होण्का।
नात्तिले माग्ल्यारि दिव्का। तोचि गा खरे साधु ॥६११॥

दोळे नात्तिल्याक दीव्का दोळें। मेल्लेल्यांक वांचोका पळें।
दरिद्रांक कोर्का दुडुवाळे। तोचि गा खरे साधु ॥६१२॥

विभूतीन रोग वोच्का। वंध्येक चेर्डु जाव्का।
गाढवाक घोडो कोर्का। तोचि गा खरे साधु ॥६१३॥

सोईरालि अतर्क्य शक्ति। दृष्टिक्षेपानि मुरडलि वृत्ति।
ना गा पुनरावृत्ति। करता धन्य शिष्यांक ॥६१४॥

चमत्कारान मेळ्ता नमस्कार। पांडित्याक मेळ्ता पुरस्कार।
सत्संगान जात्ता भवपार। तोचि गा खरे संतु ॥६१५॥

नाथाले शिकवण। तांचे जीवित्ताचे दर्शन।
आचरणाचे निदर्शन। घेत्ल्यारि बरें साधकानि ॥६१६॥

मनतरी देवाचेरि। जाल्यारि कित्ते संसारी।
तेल लाव्नु पणसारि। दवरुयेत हातक धैर्यान ॥६१७॥

एकदा गुरु गोरखालि। सोड़राक आज्ञा जाल्लि।
उत्तर दिशेक पाव्ल घालि। कोंकण सोडि वा शीघ्र ॥६१८॥

दिल्लि तिलांजली कुटुंबाक। आशीर्वदिलें पुत्रवधूक।
आवै भैणि मृत विधवांक। दिल्लें अंत्याचें तर्पण ॥६१९॥

सोईरा जाल्लो विदेहु। ना ताक्का संसार स्नेहु।
जाल्ला गत संदेहु। वोढ ताक्का गुरुस्थानाचि ॥६२०॥

प्रथम भेटि पंढरपूर। ते सर्व संताले कुळार।
उपरांत उज्जयिनी नगर। थंई सन्निधि महाकालालि ॥६२१॥

राव्ले सन्निधि बहु काल। महाकालाक त्रिकाळ।
पूजूनि सत्संग मेळ। भरैता ती भक्तिप्रेमे ॥६२२॥

शिंध्यांचो सेनापति। आईकूनु नाथालि कीर्ति।
साधकु ते परमार्थि। आमंत्रिले आपुल्या घरां ॥६२३॥

नांव ताज्जे जीवबादादा। ब्राम्हण सेवकु सदा।
भजनानंदी सर्वदा। उदारि धर्मप्रज्ञु ॥६२४॥

सेनापतिले घरणे। सत्संगी सद्गुणाचें।
नाथाल्या चरण दर्शनाचे। भाग्यान जाल्ले आनंदित ॥६२५॥

शिंध्याल्या दरबाराक। आमंत्रले नाथ वर्याक।
रावळाचे काही डांभिक। करताति निंदा नाथालि ॥६२६॥

शिंधेन संप्रदाय पाळिलें। नाथांक अर्घ्य पाद्यादि दिल्लें।
देवालें मंदिर दाखैलें। डांभिकांक औळखलें नाथ ॥६२७॥

शिंधे आमुचो साहित्य ब्रम्हु। करगत ताक्का शब्द समूहु।
सरस्वतीचि हागेलो स्नेहु। अपेक्षिता म्हणालो एक्लो ॥६२८॥

आर्या ओवि अभंग। रचिला साहित्य उत्तंग।
जिंकला हो साहित्यरंग। प्रबलु गा पूर्वा पेक्षा ॥६२९॥

शिंधे ह्या स्तुतींक भूल्लु। आपुलें साहित्य हाडोनु।
नाथा मुखारि दवर्नु। करा अवलोकन ग्रंथराशि ॥६३०॥

आईकता सभा मौनलि। नाथालि चहरा पालटलि।
अवलोकिता कवितावलि। निडळारि पड्ल्यो मिरियो ॥६३१॥

नाथानि काड्ले उद्गार। कविता ही सुंदर।
हे विधवेले श्रृंगार। शिंधेले आयुष्य व्यर्थ ॥६३२॥

इक्षु दंड आणि वंश। देखल्यारि दिस्ता समानांश।
वंशातु ना रसांश। कविता ही नीरस आणि पोकळ ॥६३३॥

ज्यांतु ना श्रीहरि स्तुति। व्यर्थ माना कविता ती।
सज्जानांक ना हाज्जोरि प्रीति। खरें हे शव श्रृंगार ॥६३४॥

शिंध्या अवनत वदन। चिडले सगळे सभाभवन।
कर्ता भिकारी राजापमान। काढारे ते दंडसंहिता ॥६३५॥

निर्भीत ते सोईरानाथ। राजान केल्ले दंडवत।
नाथ तरी समाधींत। निमग्न गा निर्विकारि ॥६३६॥

व्यर्थ रे हे धन दौलत। राजा जाल्ले अपरिमित।
सर्वैं मेल्ले वळवळता। भोगान आणि रोगान खरें ॥६३७॥

तुमचे खड्ग आणि ढ़ाली। आमुचे जीवन ही जोली[३९]।
तुम्चि सिंहासन उंचाइलि। आमुचि ही बसकि पर्वतारी
॥६३८॥

३९. भिक्षापात्र

राजा रंका ही भ्रांति। हाज्जेन अहंकार वृत्ति।
जनन मरणांतून निवृत्ति। नाहीं सत्य समज ॥६३९॥

अपेक्षिता तरी शांति। स्वीकारिरे सत्संगति।
राज्यभोग व धन संपत्ति। स्वप्न हे क्षण भंगुर ॥६४०॥

आइक्कत हे हितवचन। शिंध्या जाल्लो अश्रुनयन।
घाल्ले चरणां लोटांगण। स्वीकरलि शिष्य वृत्ति ॥६४१॥

त्यजिले ते राजगृहा। वसति केल्या एक गुहा।
विषयाची नारे स्पृहा। उन्मत्त ते अवधूत ॥६४२॥

विठलाचार्य भूसुरु। हरि कीर्तनिंतु चतुरु।
शुद्धनाश्शिलो ताज्जो आचारु। नित्य करी संगु वेश्येलें ॥६४३॥

एकदा सांग्ले नाथान। धरिरे शुद्ध आचरण।
पांडित्यपूर्ण हरिकीर्तन। कर्ता तरी सर्व व्यर्थ ॥६४४॥

नाथांचेरि कोपान। कोर्नु तांचे अपहरण।
शिला एकि गळा बांधून। बुडैले विहिरीं मधे ॥६४५॥

जशिशं निदताति हांत्लारि। तशिश शिलायुक्त उदकारि।
लाग्ल्या नाथांक नीदबरी। पळैत हें आचार्यु पळलो ॥६४६॥

अवधूतालि ही करणी। तांचि रसाळ लेखणी।
अजात वादाचि उलवणि। स्पष्ट गा साधकांक ॥६४७॥

नाथ पंथाचें मुकुटमणि। इहपर दोन्नि साध्ले तान्नि।
दूद वरोनु खाल्लि लोणि। अशक्य हे इतरे जनां ॥६४८॥

साधका आईकरे काणि। सांगलि सूक्ष्म तुज कुणि।
सारस्वतालो कुलमणि। संतु हो आमुचो सोहिरोबा ॥६४९॥

शक सत्रांशे चौदा। चैत्र नवमी शुद्धा।
नाथ पाव्‌ले मुक्ति पदा। धन्य गा वंश तांचे ॥६५०॥

सारस्वत विप्र कुलांचे। साधु संत महंताचे।
चरित्र बहु कौतुकाचे। सांगतारे बाळ आईक ॥६५१॥

मंगेश देवालो उपासकु। नाईकस्वामी नामकु।
स्मार्त ब्राम्हणु संसारिकु। पूजकु गुरु देवतालो ॥६५२॥

गांवु ताज्जो अंत्रपल्लि। कुटुंब बंधु सगळीं।
सत्संगातु वेळु घाल्तलि। निर्धनी तरी देव धर्मि ॥६५३॥

सकुटुंब सहित यात्रा। संचरलि बहुत तीर्था।
सेवा करीत सत्पात्रा। पाव्लो गोमांतकाक ॥६५४॥

मधे अरण्य मार्गातु। वाट चुकली रात्रांतु।
तरुण पत्नील्या शोधेंतु। भटकलो गिरीकंदरा ॥६५५॥

भरला दिवांधकारु। आईकता मृगांचो गजरु।
भिल्लो मनांतु द्विजवरु। चुकलो रे देवा राक ॥६५६॥

पत्नीले नांव ते घेव्नु। आप्पैता तो बोब मार्नु।
आड नीट धांवता भीव्नु। जाल्लो अस्तमानु तेन्रा ॥६५७॥

गर्जिताति क्रूरमृग। निपली ती वृक्षारि खग।
नाईकाक जाल्ला उद्वेग। चिंतीत पत्नीमुख ॥६५८॥

मंगेशा पार्वतीरमणा। गंगाधरा अघनाशना।
आइलारे तुग्गेल्या दर्शना। दाखैवाट शंकरा ॥६५९॥

वाड चुक्कूनु भ्रमण। अरण्य संचार कठिण।
दंपति आमका मरण। चुकवीरे मांगिरीशा ॥६६०॥

व्होर भेटि कोर्का म्होणु। आइलिंरे गांव सोण्णु।
बाईलेक धैर्य दीव्‌नु। हाड्‌लि दर्शनांक देवा ॥६६१॥

क्रूर मृगान घेत्लीती बली? ना कंदकांतु निस्सरलि।
विष जंतू तरी दंशलि। अपमृत्यु ती पाव्‌लि खरें ॥६६२॥

मृत्युंजया मृकंडुवरदा। पाव्ता आपदांतु सदा।
कुशस्थळीवासा अभयदा। कुळाव्यांक तरी राक देवा
॥६६३॥

त्रिनेत्रा शूलधरा। भूतनाथा गंगाधरा।
नीलकंठा चर्मांबरा। शंकरा पाटि राखा ॥६६४॥

कंगाल हाल नाईकालि। पोळोनु द्रविलोतो शूलि।
अवधूत रुपानि जटाळि। शोभली ती वनामधे ॥६६५॥

जटाधारि रे धवलांगु। कायोन्नतु तो महालिंगु।
कोणरे कित्या आशाभंगु। सांगरे बाळा निर्भीड ॥६६६॥

बाबा आम्हीं वाट चुकलि। परस्पर वियोगे थकलि।
बाईल वनांतु एकलि। घडला वियोग पति पत्नी ॥६६७॥

हासलो बाबा होडान। रात्रांतु तूं वाट चुकल्यान।
रडता पत्नी वियोगान। तरी आईक सांग्ता तुका ॥६६८॥

भवारण्य हे म्हणताति। वाट चुकून भटकताति।
जन्मो जन्मी फिरताति। हाज्जो तरी आठवुना कित्ते? ॥६६९॥

मुक्काम खैंइचे आपुले। नेणति सगळे चुकले।
विषय गंधाच्या चिकले। बुडताति बावडे [४०] नित्य ॥६७०॥

योरे बेगि कुशस्थळी। पळे आईल्या तुजी मंडळी।
हासताचि अवधूतु तत्काळि। दिसलो ना अदृश्य योगी ॥६७१॥

आश्चर्य पोळोनु दंपती। आईलो होचि उमापति।
चिंतीत त्वरित गति। आईले अघनाशिनी कडे ॥६७२॥

श्रीफल सहित मंगेशाक। भेटले कुल दैवताक।
अरण्यांतु पाविल्याक। केल्ले साष्टांग भक्तीन ॥६७३॥

४० पिस्सें.

उपरांत आइले कवळेक। होंटि दिल्लि शांतादुर्गेक।
केल्ले अर्चन अभिषेकादिक। परतले मंगेशाकडे ॥६७४॥

निर्धारिले दंपतीन। आयुष्य भर कोर्या सेवन।
मंगेशाली दिव्य चरण। साक्षात्कार पर्यंत ॥६७५॥

स्नान आणि संध्यावंदन। सूर्याघ्र्य पितृ तर्पण।
बिल्वादि पुष्प संचयन। प्रसाद ग्रहणा तृप्ति ॥६७६॥

मंगेशालि स्तुतिकवन। आपणचि गाई गायन।
नृत्यादिकादि सेवेन। उपासिता भावे नित्य ॥६७७॥

शिबिकोत्सवु तो जात्ताना। आरंभाक झिलवे सांगताना।
त्या संबंधि कृति रचना। केल्लि नाईक स्वामिने ॥६७८॥

काहीं दिवसान तांका। काशी यात्रेक वच्का।
गंगास्नानादिक कोर्का। अशिश दिसले दंपतींक ॥६७९॥

स्वप्नांतु दिसलि काशी। मंगेशालि रीतिचि अशिश।
हांतूळ सहित ते उशिश। तिंब्लि ती गंगाजळी ॥६८०॥

चोईल्यारि आंऽगते ओल्ले। गंगास्नान हांगाचि जाल्ले।
काशी गंगा तूचि सगळे। पाव्ला तू पावुलापाव्ल ॥६८१॥

उरलि ना काहीं अशा। तूंचि रे सर्व मंगेशा।
अशिश दंपतीन आयुष्या। समर्पून देह त्यजिले ॥६८२॥

वैशाख वद्य द्वादशीचि। पुण्य तिथि नाईक स्वामींचि।
प्रासादिक कवि ते तांचि। पादुका पूजिती पुण्यात्मा ॥६८३॥

तुकाराम बाबा वरदे। भावु महाराज सादे।
आणिकई कृष्ण भट्ट बांदे। हे सर्वे सारस्वती पुत्र ॥६८४॥

भावु महाराज दळवि। भटकळप्पय्या अनुभवि।
कित्लेहि रचिल्यारि ओवि। न पुरो उणाव्ता वेळु ॥६८५॥

रमावल्लभि पंथिणि। आवडीबाई ती संतीणि।
बालकृष्णांलि विरहिणि। आदर्श सारस्वतालि ॥६८६॥

कवि आणि संत महंत। यक्षगान संगीत नाटकांत।
कथा पुराण प्रवचनांत। जाल्ले प्रसिद्ध आईका ॥६८७॥

वेंकण्ण कवि मुलिकेचो। शांतप्पय्या गेरसोप्पेचो।
प्रभु श्रीनिवासु मट्टीचो। महा कवि हे यक्षगानाचे ॥६८८॥

राज कारणि मुत्सद्दी। गो रक्ष वाणिज्य सिद्धि।
पुण्य वृत्तीन जाल्ला समृद्धि। राष्ट्र आणि राजकारणा ॥६८९॥

सारस्वतालि गुरुभक्ति। लोक सेवैंतु आसक्ति।
अपूर्व संकल्प शक्ति। देणिगी ही पूर्वजालि ॥६९०॥

विभूति पुरुषाले चरित्र। आईकता पुण्य पवित्र।
ऋषि मुनिले कृपा पात्र। जात्ले ते भाग्यवंत ॥६९१॥

सारस्वतु श्रुति परायणु। आमुचो मूल कारणु।
श्री सुधींद्र यति वरेण्यु। गुरु गा धन्य आम्हीं ॥६९२॥

पाव्ता मूल नारायणु। आर्त त्राण परायणु।
सकल मंगल निधानु। स्वीकार्तालो सेवा मेज्जि ॥६९३॥

भक्ति ज्ञान वैराग्य। माग्ता हेंचि महाभाग्य।
करी देवा मुक्ति योग्य। गुरु कृपा प्राप्त ॥६९४॥

सर्वांक सर्वार्थ सिद्धि। दीगा देवा सर्व समृद्धि।
चेर्डु बाळांक विद्या बुद्धि। दीवैइ प्रसिद्धि वासुदेवा ॥६९५॥

कोर्का चरितामृत श्रवण। पढण सप्ताह क्रमान।
जावुका भावुकाले मिलन। भज्का गुरुंक भक्तीन ॥६९६॥

व्यष्टि समष्टिक शांति। संघर्ष रहित प्रीति।
घडो सामरस संक्रांति। ओं शांतिः शांतिः शांतिः ॥६९७॥

श्री गुरुचरित्रामृताचो सारस्वत चरित्र नामक
तिसरो अध्यायु समाप्तु
॥श्री कृष्णार्पणमस्तु॥

देव देवेश्वर भगवान् परशुरामु

ॐ

श्री गुरुचरितामृत

परशुरामचरित्र नामक

चौथो अध्यायु

2214

श्री गुरुचरितामृत

॥श्री गणेशायनमः॥ ॥श्री गुरुभ्योनमः॥

मंगलाचरण

ओं श्रीपति नारायणा। ज्ञानानंदात्मका हयवदना।
संपद्यशादिजय कारणा। जगत्राणा पाव आम्का ॥१॥

बदरींतु तुग्गेलो निवासु। नांव तुज्जे वेदव्यासु।
काशीमठांतु अधिवासु। वासुदेवा पाव आम्का ॥२॥

वाणी पति चतुर्मुखा। जगद्गुरु म्हणताति तुक्का।
तूं हरीलों प्रथमु तोका[१]। दित्लो आयुष्य पद्मजा ॥३॥

अमृत दिवैलें देवतेंक। विष तूं सेविलें एक्लाक।
अभिमानिरे तूं मनांक। महादेवा पाव आम्का ॥४॥

श्री गुरु चरितामृत

१ पूतु

पुरुहूता तूं भोगाधीशु। दी आम्का भोग विशेषु।
हरि भक्तींतु उल्लासु। दी गा देवा पुरंदरा[२] ॥५॥

मोरया मंगल मूर्ति। नीवारिरे विघ्न संतति।
विद्या बुद्धि आणि सन्मति। दी रे भक्तांक बेगि ॥६॥

हे वैद्य राजा धन्वंत्रि। दी रे आरोग्य भाग्य संपत्ति।
अहर्निशि अध्यात्म प्रवृत्ति। दीव्का पूर्ति आयुष्य ॥७॥

हे जीवोत्तमा मुख्यप्राणा। बुद्धि बलादि ज्ञान पूर्णा।
हे दैत्य कुल निर्दालना। दी गा भक्ति ज्ञान युक्त ॥८॥

आदिमूला नारायणा। दामोदरा मधुसूदना।
करिवरदा लक्ष्मीरमणा। घे आम्का चरणांकडे ॥९॥

२ इन्दु.

वंदूनु गुरु चरणांक। सद्गुरु सुधींद्रतीर्थांक।
समस्त सद्वैष्णावांक। कर्ता नमन आदी ॥१०॥

माता पितरादि जेष्ठांक। पूर्वींचे संत कवींक।
आणी सज्जन श्रोतृ वृंदांक। कर्ता नमन विधि युक्त ॥११॥

सारस्वत कुल दीपकु। ब्रम्ह वृंदाचो रक्षकु।
वेद धर्माचो परिपालकु। स्थापकु वर्णाश्रमांचो ॥१२॥

यज्ञेशु यज्ञ नामकु। यज्ञाचो उद्धारकु।
यज्ञांक फल दायकु। विष्णु तो सुयज्ञनामा [३] ॥१३॥

हे भार्गवा परशुरामा। भू वल्लभा कालकामा [४]।
हे भक्त विश्राम धामा। विक्रमा त्रिविक्रमा पाव ॥१४॥

३ देवालो एकु अवतारु. ४ परशुरामाल्या दोनिशक्ति.

भार्गव रामाले कथन। सांग्ता आईकता श्रद्धेन।
कथा ही श्रवण मात्रान। दित्तां सर्वार्थ सिद्धि ॥१५॥

सारस्वतालें पूर्व कथन। आईकूनु त्या साधकान।
प्रश्निलेंगा अभिमानान। वंदूनु सिद्ध चरणां ॥१६॥

हे मुनिकुल तिलका। मेज्जेरि कृपा कोर्का।
ज्ञान निधि निष्कळंका। कर्ता हो प्रश्नु एकु ॥१७॥

परशुरामु सारस्वतु। तो भृगुकुल संजातु।
सारस्वतांक दक्षिणांतु। केल्ले ताणे चिरस्थायीं ॥१८॥

विष्णुलो सहावो अवतारु। तो क्षात्र कुल कुठारु।
जाल्लो तो कित्या क्रूरु। ब्राम्हणु शस्त्र धारी ॥१९॥

केल्लें मातेचे हनन। क्षात्र कुलांचे संहरण।
तरी तो सद्ब्राम्हण। ही हिंसा की अहिंसा ॥२०॥

तोंडान सांग्ता वेदु। चोइल्यारी भयंकर योधु।
शस्त्रधारीक येत्ता क्रोधु। हे ब्राम्हण की क्षात्र ॥२१॥

प्रश्नु हो साधकालो। समजूका म्होणु केल्लेलो।
मंद मति ह्या शिष्यालो। वितंड म्होणुका गुरु ॥२२॥

कोपु कनरि बाळा। संमजूकारे देव लीला।
अलौकिक महिमा सकळा। कळ्नारे प्रश्निनल्याशिवाई ॥२३॥

ब्राम्ह क्षात्र दोन्ही एक। जाल्या ह्या अवताराक।
क्षात्र आवुसु रेणुकेक। पति ब्राम्हणु जमदग्नि ॥२४॥

क्षात्र ब्राम्ह दोन्ही शक्ती। प्रकटल्या देव युक्ति।
अशिश सांग्ता पुराणोक्ति। समजूका रे खरें ॥२५॥

साधुनये अर्थांतर। देव चर्या ही महत्तर।
तरी दीत्ता प्रश्नेक उत्तर। आईकरे बाळा सामके ॥२६॥

भरत वंशाचो अजमीढु। ज्ञान वैराग्यान धृढु।
यज्ञ कर्ता होडु होडु। वैराग्य मूर्ति ॥२७॥

कुशिक नामाचो पूतु। जन्मला ताक्का लोक विख्यातु।
पौरकुत्सि सौंदर्यातु। असमान बाईल ताक्का ॥२८॥

कुशिक तो संतान हीनु। पुत्र इच्छी इंद्र समानु।
यज्ञ करी दान प्रधानु। केल्ली पूजा यज्ञेशाली ॥२९॥

इंद्धुतो मनांतु भीव्नु। स्वर्गाधिकारु वत्लो म्होणु।
जन्मलो स्वतः आपणु। नांव जाल्ले गाधी ताक्का ॥३०॥

गाधीकई जाईनि संतान। ताणे निवडिले तपोवन।
सोम यागाच्या फलान। पाव्लो संतान भाग्य ॥३१॥

नांव तिज्जे सत्यवती। रती पेक्षा रुपवती।
एकदा ॠचीकु सुव्रती। पावलो त्या पुण्याश्रमा ॥३२॥

केल्ले स्वगत गाधीन। अर्घ्य पाद्यादि समर्पून।
विनंती केल्लि विनयान। करा आज्ञा सेवेक ॥३३॥

पूर्ण करीन मनोरथ। आम्ही राय सत्यव्रत।
विचारा तुम्ही निश्चिंत। सांगा ते शिरोधार्य ॥३४॥

हसन्मुख जाल्ले ऋचीक। नियाळ्नु सत्यवती मुख।
सुंदर ह्या नारीमणीक। अपेक्षिता दी दान ॥३५॥

धर्म प्रजार्थ[५] ही भीक। अवश्य म्हणताति प्रमुख।
आधार सर्वाश्रमांक। मनु म्हणता गृहमेधि[६] ॥३६॥

आईकता ऋषि वचन। गाधिले धसकले मन।
उपाय तो चिंतिले क्षण। म्हणालो नियमु हो आईका ॥३७॥

घोडे वायुवेगाचे। हजार चन्द्रतेजाचे।
श्याम कर्ण बहु उंचें। दीव्का गा कन्याशुल्क[७] ॥३८॥

मुनी आईलो वरुणा कडे। मागता तो हजार घोडे।
जलांतूनु काण्णु रोकडे। दिल्ले ऋषीक त्या क्षणि ॥३९॥

५ उत्तम संतान. ६ गृहस्थाश्रमु. ७ चेल्लियेक दिव्चे देणे

हाडूनु ते घोटक[८]। समर्पितातित ऋचीक।
आश्चर्य दिसलें गाधीक। पाव्ली खबर राजमाता ॥४०॥

आपुल्या वचन प्रमाणे। कन्या समर्पिलें राजाने।
तरुणी सत्यवती तीणे। वरिले त्या ज्ञानवृद्धा[९] ॥४१॥

ऋचीक कठिण तपस्वी। हठ योगी यशस्वी।
राजकन्या तरी तेजस्वी। जाल्लि पत्नी ऋचीकालि ॥४२॥

तपान तो क्षीणकायु। विषयांक दिल्ला विदायु।
सत्संगातु घाल्ता आयु। ध्यानस्थु उरता सदा ॥४३॥

राजश्री लो जामातु। पत्नी सहित आश्रमांतु।
तिज्या त्या सहायांतु। जाल्लो मुनी गृहमेधि ॥४४॥

८ घोडो. ९ ज्ञानाचे होडपण.

शिष्यालि शीक्षा रक्षा। अर्हांक ती ध्यान दीक्षा।
शास्त्रार्थींचि विवक्षा। विवरिता विधियुक्त ॥४५॥

काहीं दिवस सरले। परस्पर विसर ते पड्‌ले।
एकदा ते बंधू सगळें। पाव्ले गाधि सहित आश्रमां ॥४६॥

आव्सु धूव एकी कडे। भेट्‌ले एकांति बावुडे[10]।
आम्ही संतान हीन सुकडे। जाल्लि व्यर्थ भू भार ॥४७॥

दोग्गांकय्यिना ते भाग्य। पाव्नींति संतान योग्य।
सांगू कितें हे दौर्भाग्य। निवेदूयां ऋषिवर्या ॥४८॥

दोग्गई आइलीं सत्वरी। ऋषीक पोळोनु मुखारी।
संतान भाग्य हे कशिशतरी। दीवै गा शोधि उपाय ॥४९॥

१० मुग्ध

बरे म्हणता ऋचीकु। चरुखंडु[११] हो मंत्रात्मकु।
ऋतु कालारि एकेकु। कोर्का स्वीकारु श्रद्धेन ॥५०॥

ऋतु स्नानानंतर। आलिंगून औदुंबर[१२]।
सत्यवती खा तूं सत्वर। जन्मा येत्ले ब्रम्ह पिंड ॥५१॥

अश्वत्थ आलिंगुनि श्वशुरी[१३]। पिंड खाल्या बरोबरी।
क्षात्र पिंड पृथ्वीवरी। उतरता अमोघ शक्ति ॥५२॥

अशिश सांगून ऋचीक। गेल्लो एकांत तपस्याक।
आव्सु धूव जाव्नु एक। बदलिले पिंड एकमेका ॥५३॥

साधका आईक कथन। पिंड बदलिल्या कारणान।
गाधी पत्नींतु जनन। जाल्ले गा ब्रम्ह पिंड ॥५४॥

११ मंत्रपिंड. १२ रुबडारूक्. १३ बाइलेलि आव्स्.

श्री गुरुचरितामृत

नांव ताज्जे विश्वामित्रु। गायत्री दृष्टार ख्यातु।
ब्रम्ह विद्येंतु निष्णातु। साहसी सृष्टि कर्ता ॥५५॥

सत्यवती उदरांतु। क्षात्रु तो तेजोवंतु।
जमदग्नि नावांन ख्यातु। जाल्लो कुलदीपु तांचो ॥५६॥

आवई साखीं सुंदरु बाळु। बाप्पैल्या बुद्धिचो सोहळु।
ब्रम्ह क्षात्राचा सम्मेळु। तेजु तो शिव शक्तिचो ॥५७॥

उपनयनादि संस्कार। वेदाध्ययन सकालार।
अभ्यास कर्ता निरंतर। जमदग्नि ब्रम्हचारी ॥५८॥

जमदग्नि हे नांव। आईकनी गा कई हाव।
नांव असले अपूर्व। अर्थ तरी सांगा आम्का ॥५९॥

सिद्ध मुनीन साधकाक। सांग्लो अर्थु नावांक।
शंकराल्या सामर्थ्याक। पडले नांव जमदग्नि ॥६०॥

जेन्ना प्रळयाग्नि भडकली। रुद्रान ती पान केल्ली।
त्या कारणान कीर्ति मेळ्ळी। जाल्लो रुद्रु जमदग्नि ॥६१॥

जमदग्नि नांव शिवालें। सहस्र नामांतु सांगिलें।
शिवूचि जमदग्नि म्हळ्ले। चरित्र पुराण सांग्ता ॥६२॥

रेणुका ती पार्वती। रेणु रायालि पुत्री।
जमदग्निक जाल्लि सती। ती अवतार शक्तिचि ॥६३॥

वायु आणि पद्म पुराण। सांग्ता रेणुकेले कथन।
इक्ष्वाकु कुलांतु जनन। जाल्या ती अयोनिजा ॥६४॥

इक्ष्वाकु वंशाचो रेणु। दुःखि संतान हीनु।
दंपती दोग्गई मेळ्नु। भजति शिव पार्वती ॥६५॥

मागणी तांचि विशिष्ट। तांका कन्या संतान इष्ट।
तिज्यांतु देवता प्रविष्ट। जाव्का ती कुलस्वामिनी ॥६६॥

प्रसन्न जाल्लो शंकरु। दित्ता दंपतीक वरु।
करा तुम्ही कन्येष्टिचरु। करा स्वीकार भक्तीन ॥६७॥

सर्वलक्षण संपन्ना। अग्नींतु प्रकटिता तेन्ना।
स्वीकारा दिव्यांगना। अवतारु समजा खरे ॥६८॥

उपरांत रेणु राजान। आमंत्रिले ऋषि गडण।
गंगा तीरारि यजन। केल्ले श्रद्धेन दान युक्त ॥६९॥

जाल्ली ती पुर्णाहुति। कर जोडोनि प्रार्थिताति।
तेन्ना प्रकटली महा शक्ती। उठली गा कुंडामधे ॥७०॥

सती ती अग्निवेष्टित। मुनि गडण जाल्ले चकित।
लोक सगळे भयग्रस्त। वंदिलें अग्निगर्भा ॥७१॥

रेणूचि ती भूमि पुत्रि। वारुळांतुलेन[१४] प्रकटती।
निपल्या त्यांतु म्हणताती। भक्त कर्नाटकाचे ॥७२॥

रेणु म्हणताती धुळीक। अणु रेणूंतु व्यापक।
एल्लम्मा हे नावांधिक। पडले गा त्या कारण ॥७३॥

एल्लम्मा सगळचा आव्सु। रात्ता ती राति दिवसु।
शिव शक्तिचो समावेशु। ही महिमा रेणुकेचि ॥७४॥

१४ हुंतो

रेणु पुत्री ही रेणुका। अयोनिजा हे समजूका।
इक्ष्वाकु कुलोद्धारका। प्रवर्धीलि गा राजगृहा ॥७५॥

रेणुकेलि लीला अद्भुत। रायाक पत्नी बहुत।
सापत्न्या[१५] कन्येक पळैत। भोग्ले ते पोट जाळ ॥७६॥

योजिली युक्ति पाप्यानि। मारोया सर्प विषानि।
रेणुकेलो नाशु चिंतूनि। पाळ्ण्यातु सोळ्ळो विषसर्पु ॥७७॥

त्या वेळारि आईलो रेणु। धूवेक घेत्ता उक्कोळ्नु।
विषसर्पु कुड्को जाव्नु। व्होळ्तलें रक्त भारी ॥७८॥

कुलदेवी कडे आईलो रेणु। कन्या सहित नमस्कारुनु।
पळैता देविल्या खड्गांतूनु। गळताति रक्त बिंदु ॥७९॥

१५ दाक्चिबाइलो

खरें देवीचि रेणुका। आम्ही अश्शीं समजूका।
अश्शि दिसले तांका। लागली भीति मनांक ॥८०॥

राण्यांक जाल्ले पश्चात्ताप। केल्ले आम्ही घोर पाप।
देवीलि लीला आपो आप। कळता माग्लि क्षमा ॥८१॥

एकदा जमदग्नि ऋचीक। पाव्ले भागीरथी तीराक।
त्या स्थळी राजा रेणूक। घडली भेटि दोग्गांचि ॥८२॥

सूर्य चंद्र सारिखे। दिस्ताति दोग्गई सामके।
साष्टांग कोर्नु विवेकें। निम्गिले कोण आपण ॥८३॥

आम्ही भृगुवंशीय मुनि। हो मेज्जो पूतु जमदग्नि।
ऋचीक म्हळ्ळेले नावांनि। परिचितु हांव लोकां ॥८४॥

आइकता हे रेणुराजा। आमंत्रिले त्या भृगुकुलजां।
धूव मेज्जि अयोनिजा। तिज्जे फाल्या स्वयंवर ॥८५॥

जमदग्नि चोन्चा चंदु। घड्ल्यारि हो संबंधु।
धन्य गा क्षात्र वृंदु। जात्ले सौरे भृगु कुलाचे ॥८६॥

रेणुकेल्या स्वयंवराक। भर्ले असंख्य राजादिक।
रेणुका ती जमदग्निक। पळैता डोळे भरी ॥८७॥

स्वीकार्ले मनपूर्वक। पति म्होणु जमदग्नीक।
दृष्टि क्षेपिता बाप्पैक। कर्ता नीरीक्षा आज्ञेचि ॥८८॥

बाप्पैलि आज्ञा ती मेळ्ळी। रेणुका सभेक चाल्ली।
रत्न माला हात्तांतु घेत्ली। आइली सती मंदगमना ॥८९॥

समस्त राज पुत्रांक। तिरस्कारुनी जमदग्नींक।
घाल्लि माळा हृत्पूर्वक। चिडले गा क्षात्र सर्व ॥९०॥

घन घोर युद्ध उद्भवलें। सर्वत्र हाहाकार उडलें।
तपस्वी जमदग्नीन शस्त्र धरिलें। गडबडले क्षात्र सर्व ॥९१॥

मांत्रिकाल्या मंत्राक। सर्प कशिश धांवपेक[१६]।
तशिश त्या भूमिपांक। धांव्याक वाटऽचि मेळ्‌नि ॥९२॥

अग्नि साखों जमदग्नि। सर्वत्र व्यापिला बाणानि।
राजकुमार भंय्यानि। आइले शरणु मुनिवर्या ॥९३॥

जमदग्निले अपार शौर्य। रणकणांतु ताज्जे धैर्य।
शत्रूं तांचेरि औदार्य। धन्य म्हणालो रेणु राजा ॥९४॥

१६ धांवचि

रथ हय आणि वारण[१७]। दहा हजार गो धन।
समर्पिलें कन्या सहित रेणून। दक्षिणा ही जमदग्निक ॥९५॥

भांग्रान सजलेंलिं स्त्रींक। दासी म्होणु जमदग्निक।
सालंकृत रेणुका सहित। समर्पूनु जाल्ले धन्य ॥९६॥

इंद्रान रेणुकेक। स्वर्गाचे भाग अनेक।
कल्प वृक्ष कामधेनु प्रति एक। दिल्लि पादुका आणि परुष ॥९७॥

दिव्य कान्यकुब्ज नगर। जमदग्नीक दिल्ले नंतर।
पट्टाभिषेक सुंदर। करैलो जामातवर्या[१८] ॥९८॥

१७ हस्ति. १८ जावइ.

विरक्ताक राज वैभव। कित्त्या म्हणताति मानव।
विरक्त ते महानुभाव। वांटताति भोग सर्वा ॥९९॥

राज्य राज्यैश्वर्य मेळ्ळां। वैभवान विवाह जाल्लां।
उपेक्षि मुनि ते सगळां। परतलो गा आश्रमां ॥१००॥

भागीरथि तटाकांतु। आपल्या दिव्य आश्रमांतु।
पत्नी सहित तपस्यांतु। निमग्न गा तो जमदग्नि ॥१०१॥

जमदग्निलें अस्त्र कौशल्य। अद्भुत आणि अतुल्य।
एक तरी ना वैकल्य। कीर्ति ही जमदग्निचि ॥१०२॥

आश्रमांतु एक वेळा। दंपती करी ही लीला।
जमदग्नि तरी बाण मार्ला। हाड्ता परऽत राजपुत्री ॥१०३॥

बहु बाण तीणें हाडिलें। शरीर बहूत थकले।
सूर्ये शाखेक भाजलें। चरण ते रेणुकेलें ॥१०४॥

कोपान ताप्लो मुनि। पाडैता सूर्याक धरणि।
अशिश चिंतून तो मुनि। काडी बाण महोग्र ॥१०५॥

वळलो सूर्या पथान। मुनि बाणांक भीवून।
छत्र पादत्राण[१९] दीवून। मागणी केल्ली उपरांत ॥१०६॥

अहो मुनि दंपत्यानु। तुमचा गर्भि जन्म घेव्नु।
कुलाचि कीर्ति वाड्डोनु। कर्ता रक्षण धर्माचें ॥१०७॥

आईकता मुनि हर्षलो। हात्ताचो बाण उतरलो।
रेणुका कडे दृष्टि क्षेपिलों। धन्य गे तूं देवमाता ॥१०८॥

१९ व्होण.

श्री गुरुचरितामृत

चिदग्नि संभूता सति। तीचि भूदेवी अदिति।
येत्ता नारायणु धरति। भृगु कुल ते धन्य जाल्ले ॥१०९॥

रेणुका देवि उदरीं। जन्मलें ते देवचारी।
भाग्यवती ती नारी। म्हणूया लोक माता ॥११०॥

सूर्यु जाल्लो रुम्ण्वंतु। इंद्र तो सुषेणु ख्यातु।
अग्नि वसु नामकु पूतु। विश्वावसु तोचि वायु ॥१११॥

रेणुका लोकमाता खरीं। अंधपंगूंचि[20] सेवा करीं।
दान धर्मादि कार्या बरीं। कर्ता गृहिणी श्रद्धायुक्त ॥११२॥

कामधेनुली पूजा। अतिथि अभ्यागत द्विजा।
सेवा कर्ता ती रेणुजा। तुष्टले गा देव सर्व ॥११३॥

२० दोळेपांयनात्तिल्ले.

त्रेताग्नीचि [२१] उपासना। देव गुरुचि पूजना।
जमदग्नी तो महामना। करी अनुष्ठान हव्य कव्य ॥११४॥

जमदग्नि आणि रेणुका। ख्यात जाल्लि तीन्ही लोका।
एकदा नारदु तो भूलोका। आइलो ह्या आश्रमा कडे ॥११५॥

स्वागतिले नारदाक। आदरातिथ्य अनेक।
प्रीतीन केल्ले सकळिक। आणि म्हणे आज्ञा करा ॥११६॥

महाविष्णुलो आदेशु। मेळ्ळा तुम्का विशेषु।
इच्छितो गर्भ वासु। तुज्जांतु गे माता ॥११७॥

आईकता ऋषि दंपति। अती आनंद पाव्ताति।
नारदाक वंदूनु सांग्ताति। स्वागत मुने सुस्वागत ॥११८॥

२१ गार्हपत्य, दक्षिण आहवनीय ही तीनि अग्नि.

एकवीरा[२२] तू रेणुका। तूंचि जननी गे त्रिलोका।
महाविष्णु तुगेलो तोका। जात्तागे कुल दीपकु ॥११९॥

आईकरे हे साधका। सकल ब्रम्हांड नायका।
महाविष्णु प्रवेशिलो रेणुका। गर्भागणी त्या क्षण ॥१२०॥

पळ्ळो फुल्लांचो पाव्सु। रेणुका देवालि आव्सु।
यत्ले ते पुण्य दिवसु। म्होणु रात्तातिं ऋषिवर्य ॥१२१॥

शंख वीणादि मंगल वाद्य। वाजताती हे सिद्ध साध्य।
दुंदुभ्यादि वादन सद्य। आईकरें भविष्य सूचि ॥१२२॥

जय जय वैकुंठरमणा। लक्ष्मीपति नारायणा।
हे दुष्ट कुल निर्दालना। यो बेगि राक आम्का ॥१२३॥

२२ रेणुकेले आनिएक नांव.

हे भृगु कुल उद्धरणा। हे रेणुका नंदना।
दुरतिक्रमा क्षात्र मथना। यो बेगि राक आम्का ॥१२४॥

शंख चक्र गदाधरा। पंकजाक्ष रमावरा।
भू धरा श्रीधरा वीरा। यो बेमि राक आम्का ॥१२५॥

अनंता मधुसूदना। सृष्टि स्थितीक कारणा।
लय कोर्चो जनार्दना। यो बेगि राक आम्का ॥१२६॥

मातले[23] गा दुष्ट क्षात्र। उदंड ते अपवित्र।
रुष्ट मदांध अपात्र। यो बेगि राक आम्का ॥१२७॥

वेदाज्ञा ती उल्लंघन। कर्तीति पुण्य हीन।
भोग्ताति दुःख ब्राम्हण। यो बेगि राक आम्का ॥१२८॥

२३ उन्मत्त.

गो भू हे ब्राम्हण धन। कर्तीति अपहरण।
ना धर्माधर्म ज्ञान। यो बेगि राक आम्का ॥१२९॥

दुर्बलांक ना रक्षण। अति भोगि क्षात्र जन।
अनाथ आम्ही भक्त जन। यो बेगि राक आम्का ॥१३०॥

मत्स्य कूर्म सूकरु। जाल्ला त्रिविक्रमु भीकरु।
बलि शिक्षि जगदाधारु। यो बेगि राक आम्का ॥१३१॥

जय जय हे जगत्पावना। सर्वज्ञा सर्व कारणा।।
पावरे ह्या भक्त गणा। यो बेगि राक आम्का ॥१३२॥

प्रसन्नु जाल्लो भक्त वत्सलु। दीनानुकंपी दयाळु।
कर्ता संकल्पु प्रबलु। शिक्षि ब्रम्ह द्वेषि ॥१३३॥

विष्णु प्रवेशिला गर्भि। पृथ्विंतु त्या संदर्भि।
उंडालो उठ्लो अग्नि गर्भि। उसळे बा गिरि शिखर ॥१३४॥

कोसळले तारा मंडल। थरथरले गिरिसंकुल।
निस्सरले गा ग्रह गोल। उचंबळी समुद्र सात ॥१३५॥

झंझावात सुटले घोर। वृक्ष लतादि द्रुम निकर।
जाल्लीं धराशायि भीकर। कांपलि क्षात्र शक्ति ॥१३६॥

गर्भवती क्षात्र रमणी। अकालारि प्रसवुनि।
मृत शिशूंचि जननी। रडताति गा बहु संख्य ॥१३७॥

क्षात्रांक घडताति विघ्न। पडताति बहु दुःस्वप्न।
भिल्ले बहूत कृतघ्न। काहीं त्यजिले स्वदेशा ॥१३८॥

हैहय वंशाचो रायु। सरले गा आमुचि आयु।
थरथरता हाथ पायु। पीडलो मृत्यु भीति ॥१३९॥

पृथ्वींतु भरला अंधकारु। क्षात्र पिंडाचो चीत्कारु।
जेन्ना श्री रामालो अवतारु। तेन्ना हें घडले पळें ॥१४०॥

सहस्रबाहु अर्जुनु। नांव कार्तवीर्यार्जुनु।
शरण आईलो भीव्नु। वंदिले चरण मातेचे ॥१४१॥

केल्ले पुत्राक सांत्वन। करीऽ ध्यान त्रिनयन[२४]।
धऽरि धर्मानुसरण। नारे भीति कोणालि ही ॥१४२॥

नाक्कारे ब्राम्हण विरोधु। ते तरी खरे साधु।
राक्ता तांका चारी वेदु। कोर्नुकारे ब्रम्ह व्देषु ॥१४३॥

[२४] मद्र

वंदनीय रे ब्राम्हण। तांका तरी अपमान।
केल्यारि जात्ले पुण्य क्षीण। कोरनक्कारे ब्रम्ह व्देषु ॥१४४॥

ज्ञानी ते ब्राम्हण जन। तांच्यांतु सर्व देव गण।
अस्ताति हे समजून। कोरनक्कारे ब्रम्ह व्देषु ॥१४५॥

पुत्ताक उपदेशु कोर्नु। अर्जुनाक धैर्य दीव्नु।
राकावति आवै येव्नु। विरामलि पुत्रा सह ॥१४६॥

श्री राम जन्म वृत्तांतु। आईला सह्याद्रि खंडांतु।
त्रेता द्वापर मध्येंतु। अवतरला रामु वीरु ॥१४७॥

वैशाख शुद्ध तिथि तिसरी। पुनर्वसु नक्षत्रारि।
प्रगटलो गा श्री हरी। तारिका अदित्यात्मक ॥१४८॥

नर्मदा तीरारि प्रथमु। जमदग्निलो आश्रमु।
त्या ठिकाणि श्री रामु। अवतरलो ब्रम्ह तेजे ॥१४९॥

वसुदानादि पुत्र चारी। दाकलो श्रीरामु हरी।
ताज्येरि मोगु भारी। निःसंगी जमदग्निक ॥१५०॥

गर्भाष्टमारि[२५] उपनयन। उपक्रमिं वेदाध्ययन।
गायत्री जपानुष्ठान। निष्ठेन करता नित्य ॥१५१॥

शालिग्राम पर्वतारि। कश्यपाश्रमु तो भारी।
आईकूनु रामालि स्वारी। पाव्लि त्या पर्वता ॥१५२॥

कश्यपालो मंत्रोपदेशु। धनुर्विद्येंतु विशेषु।
जाल्ले प्रवीण यज्ञेशु। लीला ही अवताऱ्यालि ॥१५३॥

२५ जन्माचे आठ्ठांवर्ष.

उपासूनु शंकराक। ताज्ल्यागि घेत्ले अस्त्रादिक।
तीक्ष्ण धारेचि परशु एक। दिल्लि खंडपरशून[२६] ॥१५४॥

धनुष्यदिल्लो पिनाक। पाशुपत अस्त्रादिक।
परशुविद्या सर्वाधिक। समर्पिले राम चरणा ॥१५५॥

सर्व विद्येचो आगरु। विष्णु कृपा सागरु।
संहारु कर्ता शंकरु। पाळ्ता नारायणाज्ञा ॥१५६॥

तरी लोकसंग्रहाक। कोर्का लीला अनेक।
हें सगळे असुर मोहक। जाणतालेचि जाण ॥१५७॥

शस्त्र शास्त्रांतु निपुणु। पितृ भक्तु गा महानु।
भृगु वंशाक भूषणु। रामु परशुरामु ॥१५८॥

२६ रुद्रु.

चारी वेद मुखारी। बांध्ल्या भातोडी ती भारी।
शाप चापान परिहरि। बल ते दुर्जनांचे ॥१५९॥

स्कंदु[२७] सांगता ऋषिवर्यांक। देवाली लीला सर्वांक।
न कळे ब्रम्हादिकांक। कळ्ताले थोडे बहूत ॥१६०॥

एकदा नदी तीराक। आईली रेणुका स्नानाक।
जलक्रीडा मग्न गंधर्वांक। पळैत भ्रमली मनीं ॥१६१॥

तो पत्न्या बरोबरी। श्रृंगार चेष्टा करी।
मन किंचित् व्यभिचरी। स्मरीत पतिराया ॥१६२॥

रेणुकेलि विळंब चर्या। ध्यानीं ओळखलो मुनिवर्या।
येत्तचि धिक्करिले भार्या। म्हणे पतिते पापी ॥१६३॥

२७ षण्मुख.

हे भृगु कुल कळंके। पापिष्ठे पाप पंके।
गांधर्व ग्राम्याकांक्षे। असुरे शील भ्रष्टे ॥१६४॥

भयान थरथरलि ब्राम्हणि। अश्रुगळून पडलि धरणि।
मस्तक दवरिले पति चरणि। म्हणाली अपराध सत्य ॥१६५॥

मात्र स्पर्श जाल्ले मन। ग्राम्य सुखाचे आठवण।
त्या क्षण तुमचे चरण। स्मरली हे सत्य ॥१६६॥

दीय्या देहांत शीक्षा। आईका स्वामी मेज्जे दीक्षा।
जन्म जन्मांतरी दी भिक्षा। सेवेचे भाग्य तुमचे ॥१६७॥

पुत्रांक सांगले हीचे। छेदारे शिर पापीचे।
कळंकित ह्या कुटिलेचे। शिंपा रक्त धरणी ॥१६८॥

आज्ञा धिक्करिली पुत्रान। मातृ सहज प्रेमान।
कोपान जमदग्नीन। आप्पैलो परशुधराक ॥१६९॥

आईकता पितृ वचन। रामान केल्ले मातृ हनन।
सहोदर सहित परशून। केल्लें छेद उत्तमांग ॥१७०॥

जमदग्नि जाल्लो संतुष्टु। तूचि भृगु कुल श्रेष्ठु।
मागरे वरु तुगेलो इष्टु। दित्ता रामा तुक्का ॥१७१॥

मागता रामु अश्रु जलान। दी मातेक जीव दान।
जेष्ठांक सहित त्वरेन। रक्षि हे पितृ देवा ॥१७२॥

कृपाळु जमदग्निन। दिल्ले रामाक वरदान।
परतले तांगेले प्राण। जयकारु सर्वा मुखी ॥१७३॥

भगवान परशुरामा। तुग्गेलि लीला अनुपमा।
वेदा न कळे तुजी महिमा। आम्हां तरी न कळेचि ॥१७४॥

जय जय परशुरामा। भार्गवा यज्ञ नामा।
दी रे इष्टार्थ कल्पद्रुमा। भक्त जनांक बेगि ॥१७५॥

साधकु जाल्लो चकितु। भार्गवु कशिश सारस्वतु।
सारस्वतु दधिचिलो पूतु। जुळ्ना ही परंपरा ॥१७६॥

सिद्धु सांग्ता सावधान। साधका करी मनन।
सारस्वत कोणाले कोण। तरी समज सामके ॥१७७॥

कित्त्यारे तुक्का अवसरु। आईक कथा सविस्तरु।
वक्तांक हाण्णुका निरुत्साहु। आईकून घे पूर्ण ॥१७८॥

तलव मूळ कळ्नाशि। प्रश्नु कर्ता पिस्सोशि।
राम्मायण आईकून अहर्निशि। कर्ता रे प्रश्नु एक्कलो ॥१७९॥

राक्षसु रावणु की रामु। माक्का हें सामके कळ्नीमू।
कोण तो हनुमंत मामु। सांगगा स्पष्ट ॥१८०॥

आईक सगळी कथा। त्या उपरांत प्रश्नु यथा।
सारस्वतालि यश गाथा। गान करीऽ नित्य ॥१८१॥

च्यवनऋषि भृगुपुत्रु। दधिचि ताग्गेलो सुतु।
दधिचि तनयु सारस्वतु। भृगु वंशांतलो ॥१८२॥

ऋचीकु भृगु वंशजु। जमदग्नि पुत्रु ताक्का द्विजु।
परशुरामु तो जमदग्निजु। म्हणून तो भार्गवु ॥१८३॥

वंशांतु ख्यातु सारस्वतु। महिमेन रामु ख्यातु।
ताक्काई नांव सारस्वतु। वंश नावांन ॥१८४॥

साधका आईका कथा विस्तार। सांग्ता भगवदवतार।
अवर्णनीय अपार। आईक ते सार सर्व ॥१८५॥

हैहय वंशाचो रायु। नांव ताज्जें कार्तवीर्यु।
पाव्ला ताक्का दत्तात्रेयु। दिल्ला वरु अद्भुतु ॥१८६॥

कृतवीर्यालो पूतु। अर्जुन नांवान विख्यातु।
दत्ताल्या कृपेन सहस्रहातु। पाव्त गा ते गुरुकृपे ॥१८७॥

जाल्लो प्रजापीडकु। साधक सज्जनांक बाधकु।
समजता आपण अधिकु। रायांतु श्रेष्ठु ॥१८८॥

एकदा खेळ्‌चाक शिकारि। आइलो सैन्या बरोबरी।
भटकला वनांतरी। पाव्लो जमदग्नि कडे ॥१८९॥

येवकार दिल्लो मुनीन। आतिथ्य केल्लें आदरान।
पंचभक्ष्य परमान्न। निवेदिलें सर्वां ॥१९०॥

जेवीत आश्चर्य पाव्‌नु। विचार्ता तो सहस्रार्जुनु।
हें सक्कड कय्यीं दोक्कूनु। हाडैले गा सांग मुने ॥१९१॥

हास्सून सांगता मुनि। कामधेनु ती जननी।
पूरैता मिग्गेलि मागणि। इष्टार्थ दीव्‌नु सर्व ॥१९२॥

वचन आईकूनु दुर्जनु। मागता त्या कामधेनु।
रायाक अधिकार पूर्णु। अपहरीन सर्व वस्तु ॥१९३॥

सांगलें जमदग्नीन। धेनु आतिथ्या कारण।
कशिश करता अपहरण। ब्राम्हण वित्त सगळें ॥१९४॥

वचन हे जमदग्नीले। आईकतांचि आज्ञापिलें।
व्हरा धेनूक मुनिंलें। म्हणता सैनिकानि ॥१९५॥

मुखावैले आईक अद्भुत। कामधेनूऽले वृत्तांत।
ती जिंक्ली युद्धांत। मेल्ले क्षात्र बहूत ॥१९६॥

धेनु अपहाराचे कार्य। कर्तीति हे अनार्य।
समजून मार्कंडेय। उपदेशिती त्या मूर्खां ॥१९७॥

मार्कंडेय म्हणाले। हें तुज्जें पाप सगळें।
कुलनाशक मूळ जात्लें। समजरे सोडि धेनु ॥१९८॥

धेनूंतु सर्व देव। मंडल सदा सदैव।
तिज्जेरि आस्का मातृ भाव। ना तरीं जात्लें सर्वनाश ॥१९९॥

तोंड ते विस्काळुनु। हास्लो मूर्खु अर्जुनु।
कल्पतरु चिंतामणि हाण्णु। भोग्ता सुख धेनु सहित ॥२००॥

हे हाक्का प्राप्त कशिश?। भोगापेक्षि हो ऋषि।
आम्ही तरी राजर्षि। अधिकारी जन्म सिद्ध ॥२०१॥

राजा अपेक्षिता धेनु। समर्पूका भक्तीन हाण्णु।
ना तरी तुमचो नाशु कोर्नु। करीन अपहार सर्व ॥२०२॥

रायालें क्रूर वचन। कर्ता एकवीरा श्रवण।
म्हणालि सहस्रार्जुन। करी उड्गासु आवैलो ॥२०३॥

आवै तुज्जि राकावति। धर्मज्ञा महामती।
ब्राम्हणालि महती। सांग्ला तिणे याद करी ॥२०४॥

सांग्तारे ही देव वाणि। राजा श्रद्धाभक्तीनि।
ब्राम्हण ते ब्रम्हज्ञानी। अभिमानी देव प्रिय ॥२०५॥

ब्राम्हणालें इष्टानिष्ट। ब्राम्हणालें कष्टनष्ट।
तांका येव्चे संकष्ट। सर्वै स्वताचें समज ॥२०६॥

तांचे ते सुखदुःख। तांगेलि ती तानभूक।
ऐहिक आणि पारमार्थिक। तें सगळें हावूंचि गा ॥२०७॥

ब्राम्हणऽचि मेज्जेप्राणु। पापी अथवा पुण्यवानु।
गरीबु किंवा धनवानु। समान गा आप्तमित्र ॥२०८॥

संचारुनि भू मंडळ। सेवा कर्तांति विपुल।
विचार आचार निर्मळ। सज्जन ते साधु श्रेष्ठ ॥२०९॥

तांचो रक्षणाचो भारु। त्यां कारणाक अवतारु।
घेत्तां हांव निर्धारु। कर्ता संहारु विरोध्याल़ों ॥२१०॥

हे देव वाक्य आठोनु। वऽच आत्तां परतूनु।
एकदा विचारु कोर्नु। प्रवृत्त जारे क्षात्रा ॥२११॥

त्या उपरांत गौतम। उठले ते महामहिम।
ब्राम्हणांचेरि बहुप्रेम। दाख्खैला देवानपूर्वि ॥२१२॥

एकदा वैकुंठांतु। एकांति निदला श्रीकांतु।
भृगु पाव्लो त्या क्षणांतु। उठाईनि हरि स्वागताक ॥२१३॥

ब्राम्हण श्रेष्ठु भृगुमुनि। श्रीहरीचेरि क्रोधानि।
लत्ता प्रहार त्या क्षणिं। केल्लें कळंकि वक्षस्थळ ॥२१४॥

ब्राम्हणालि पाद चिन्हा। श्रीवत्स म्होणु धरल्या तेन्ना।
हे तरी मनन कर्ना। मूर्खा तूं मनुकुलाचो ॥२१५॥

मांडव्य सांग्ताति राया। अगस्त्य महिमा चिंतूया।
वातापि इल्वला उभया। गिळ्नु ताणे भस्म केल्लें ॥२१६॥

समुद्रूचि आपोशन घेव्नु। देवादिकांक मान दीव्नु।
समस्त उद्दाक क्षार कोर्नु। दाख्खैला ब्रम्ह शक्ति ॥२१७॥

हे दृष्टांत समजूनु। सोडिरे कामधेनु।
व्यर्थ तू साहस कोर्नु। जाव्नका कुल कंटकु ॥२१८॥

मुनिवचन हे आइकूनु। त्वेषान सहस्रार्जुनु।
राज्य हे घेय्या विप्रानु। सोणा गा धेनु मात्र ॥२१९॥

आईकूनु हे राममाता। मृदुउत्रांन सांग्ता।
योरे कार्तवीर्य पुत्ता। योरे दाता दत्त भक्ता ॥२२०॥

तूं केल्लींत यज्ञ बहूत। राजसूय हयादिख्यात।
तुग्गेल्या दानान विप्रव्रात। जाल्लेति म्हणे तृप्त पूर्वि ॥२२१॥

त्रिलोकांत तुजि ख्याति। पसरल्या म्हणताति।
कित्या ह्या ब्राम्हण वित्ताप्रति। कर्ता सोडि दुराशा ॥२२२॥

आइलाविनाशु कालु। आईकना कोणा चांडाळु।
तांकांचि हो सुकाळु। विचारी ना कोण ॥२२३॥

धरा। चिरा। मारा।। पुरा। करा। त्वरा।।
हरा। धेनु व्हरा।। आवरा लभ्य वस्तु ॥२२४॥

भीव्नु ती कामधेनु। यज्ञ शालेक येव्नु।
त्रेताग्नीक चोव्नु। देव देवतानो राख्खा आम्का ॥२२५॥

अग्नीक केल्लि विनति। तूचि सर्व जाणति।
जमदग्नि करीत युक्ति। वऽचगे मग ताज्ल्या ॥२२६॥

रडत आईलि कामधेनु। जमदग्नि कडे भिव्नु।
मुनि बसला मौन धोर्नु। हंबरत म्हणता अशिशं ॥२२७॥

आक्रंदूनु कामधेनु। क्षात्राक मार्ना काण्णु।
राक हांव तुग्गेलि म्होणु। धर्ता कित्या हें मौन ॥२२८॥

हे मुने जमदग्नि। जाळ्नु घालि हाक्का शापाग्नि।
दुष्टांक नाश कोर्नु क्षणि। रक्षि ह्या अनाथीक ॥२२९॥

जमदग्नि म्हणाला धेनु। प्रिय अतिथि तो अर्जुनु।
अतिथीक मार्नु काण्णु। जातलो कारण लोकनिंदा ॥२३०॥

धेनुलें राब्लें रुदन। अग्निसार्खें धग धगीवदन।
उसळी विस्फुलिंगाचि[२८] कण। पसरलि गा दशदिशां ॥२३१॥

धेनु करी हुंकार। श्वासातूनु भयंकर।
विविध शस्त्र धारि पुरुषाकार। घोर रे मृत्यु रूप ॥२३२॥

तोंडातून किरात। डोळ्यानि यवन[२९] बहूत।
कान्नान बर्बर[३०] प्रेत। काळे कुट्टैते मूत्ररध्रें ॥२३३॥

२८ उज्जाकिटियो. २९ म्लेंछादिक. ३० असंस्कारित.

गोमय आणि रोमान। जन्मलें कोटि संख्यान।
अर्जुनालें सैन्य भीतीन। निपलें लभ्य स्थानि ॥२३४॥

कार्तवीर्यालें चतुरंग। बहु भाग जाल्लें भंग।
सैन्य पोळोनु उत्तंग। पाव्ले भीति मनांतु ॥२३५॥

तीक्ष्ण श्रृंगी धेनून। शत्रूंचेरि आक्रमून।
अर्जुनाल्या बंधूचें प्राण। काळ्ळे देह विदीर्ण ॥२३६॥

शत्रु हात्तांतु चुक्कोनु। धेनु जमदग्निक सोड्डूनु।
हुंबरत लाग्गि चेव्नु। देह ते रक्त बंबळ ॥२३७॥

परसिले तिक्का हात्तान। जमदग्नीन मोगान।
जननी तुग्गेल्या दुद्दान। वाढ्लि आम्हीं चेर्डुव ॥२३८॥

तटस्थ जमदग्नीक चोव्नु। खड्ग हात्तांतु घेवुनु।
आईलो मार्चाक घाव्नु। क्रूरुतो कार्तवीर्यु ॥२३९॥

यज्ञ वेदि ध्यानस्थ। जमदग्नि जाल्ला तटस्थं।
वेदी करून अस्तव्यस्त। तांड्लि जटा मुनीलि ॥२४०॥

ज्ञान दृष्टि ओळखलो मुनि। आइकू लागलि अंतर्वाणि।
सोडि चिंता जमदग्नि। करीऽ चिंतन लयाचि ॥२४१॥

विसरता देह भान। स्मरींऽ नारायण चरण।
तोचि पुत्ररुपान। सदैव प्राप्त धन्य ॥२४२॥

दुष्ट हैहय पुत्रान। जमदग्नीलें शिरच्छेदन।
केल्ले निर्दय पापीन। मारण महर्षिलें ॥२४३॥

काडून तीक्ष्ण तलवारी। जमदग्निच्या मस्तकाचेरि।
केल्ले आघातु भारी। करी घात अनेकदा ॥२४४॥

तुकडे केल्ले एकवीस। हे तरी भयंकर व्देष।
शिंप्ल्या सर्व अवशेष। प्राकारि यज्ञ वेदिं ॥२४५॥

ब्रम्ह ज्ञानी उपकारी। निष्कपटी लोकसंचारी।
निष्कामि साक्षात्कारी। बलि पडलो पापि जनां ॥२४६॥

त्या उपरांत वन सुंदर। मोड्ले सगळें तरुवर।
यज्ञ यागाचे सांभार। केल्लें नाश धूर्तीनि ॥२४७॥

घूव्नु पळैता गोमाता। कोणुगा माक्का सोड्वैता।
क्षात्राचे हे धूर्तता। जाय्ना गा सहन ॥२४८॥

केल्ले अपहरण कामधेनु। आईकना तो सहस्रार्जुनु।
रऽडत आश्रम सोडुनु। वऽच ना ती राया कडे ॥२४९॥

सरलो गा मुनिवर्यु। कृतघ्न गा तो कार्तवीर्यु।
ब्राम्हण हिंसकु अनार्यु। पापिगा अतिमूर्खु ॥२५०॥

पळैत क्रूर कृत्य। आक्रंदती सकल भृत्य।
कोर्नु हे कुकृत्य। पळलो तो कार्तावीर्यु ॥२५१॥

आईकूनु वार्ता भयानका। धाव्नु आईली रेणुका।
कोसळलि सती प्रमुखा। नियाळ्ता पतीलें देह ॥२५२॥

हळदी कुंकुमाचे भाग्य। हरले गा विधीन सौभाग्य।
कोणा सांगो दौर्भाग्य। जीणे हे व्यर्थ आणि ॥२५३॥

तूंवे दिल्ली मरण शीक्षा। परताइलि प्राण भिक्षा।
आतां तरी वैधव्यदीक्षा। ह्या पेक्षा मरणचि बरें ॥२५४॥

दीर्घद्वेषि ते क्षात्र। पाप कर्मि कुपात्र।
मेळ्नु सर्वही एकत्र। ठरैले दुष्ट कार्य ॥२५५॥

परशुधरा योरे बाळा। दाक्कैतुजी अवतार लीला।
तुग्गेल्या बाप्पैक मारला। दुष्ट ते क्षात्र पापी ॥२५६॥

प्रथमु तो ब्राम्हणु। ज्ञान्यांतु अग्रगण्यु।
निर्वैरी प्रेमपूर्णु। तरी मार्लें मूर्खांनि ॥२५७॥

पीडा दिल्ली बहुविध। जाल्यारि मुनी निर्वेद।
उपरांत केल्लें शिरच्छेद। उसळलें रक्त बहुदिशा ॥२५८॥

मस्तक मस्तूनु मुनिलें। शस्त्रान देह चिरलें।
आश्रम सगळें ध्वस्थ केल्लें। विचारीना कोणि ॥२५९॥

हे रामा परशुधरा। रक्षण करी बा त्वरा।
मातलें क्षात्र क्रूरा। शिक्षिगा दुर्मदांक ॥२६०॥

यो रे बाळा रामा। ब्राम्ह क्षात्राचे संगमा।
रक्षकु तू वेद धर्मा। प्राणु गा सज्जनालो ॥२६१॥

क्रूराले मार खाव्नु। रक्त सिक्तांग ती धेनु।
त्या वेळि आश्रमा येव्नु। पळैता दृष्य दारुण ॥२६२॥

मुनीले छिद्रांग चोव्नु। रडली भूईंतु लोळ्नु।
क्षात्र कुलाक शाप दीव्नु। गेल्लि धेनु स्वर्गाक ॥२६३॥

आवैले आक्रंदन। आईकलो रामु दारुण।
कैलास शिकरांतून। उतरलो ऊर्ध्वरिता ॥२६४॥

घेत्ले हात्तांतु कुठार। प्रळयाग्नि समान घोर।
देखून कांपिले अमर। प्रळय सन्निहित हे खरें ॥२६५॥

महा धनुष्य पिनाक। भातोडींतु बाण अनेक।
कालानल[३१] समानरे मुख। रुद्रु हो ऋषि रूपाचो ॥२६६॥

कर्ता साष्टांग मातेक। विचार्ता कारण शोकाक।
शोकातिरेकान ती मूक। रड्ता क्षीण स्वरान ॥२६७॥

उध्वस्थ आश्रमु एकडे। आवैलें दुःख ते तेकडे।
बाप्पैले देहाचे तुकडे। शिंप्ला सर्वत्र रक्त मांस ॥२६८॥

३१ प्रळयाग्नि.

श्री गुरुचरितामृत

खड्गाचे एकवीस मार। दिस्ता आवैल्या अंगार।
रक्त स्नातल्या पाय्यार। पडलो तो परशुरामु ॥२६९॥

एकवीस तुकडे देहाचे। पवित्र ताज्जा बाप्पैचें।
चित्लें गा कारण मागचे। उकळता परशु हांत्तां ॥२७०॥

स्मरिलें अवतार कारण। कर्ता दुष्टालें मारण।
निःक्षात्र[32] पृथ्वि करीन। सृष्टिं न पुनः क्षात्रां ॥२७१॥

बहु संख्ये वाढले क्षात्र। न मानीति धर्म शास्त्र।
अजिंक्य म्हणूनि शस्त्र। घेवून हिंसिती जना ॥२७२॥

अखंड भूमंडळ। घाल्ता प्रदक्षिणा प्रबल।
क्षत्रियांक कर्ता हतबल। रण करी तरी नाश ॥२७३॥

३२ क्षत्रियांक ना कोर्चे.

श्री गुरुचरितामृत

संतापूनु परशुधरु। करुं म्हणता क्षात्र संहारु।
परिहरीन धरणी भारु। करीन दमन त्या दुष्टां ॥२७४॥

जननीक सांग्ता समाधान। आइलो आश्रमाक त्वरेन।
पळैता उद्विग्नु कोपान। देखता दृष्य सगळें ॥२७५॥

जननी तुग्गेले अश्रु गळलें। त्या पेक्षा अधिक क्षात्राले।
व्होळैता रक्त ते सगळें। निवैता तान पृथ्वीचि ॥२७६॥

तुग्गेल्या एकवीस माराक। एकवीस प्रदक्षिणा भूमिंक।
बाप्पैल्या एकवीस तुकडचांक। रण यात्रा ती एकवीस ॥२७७॥

आइक ही प्रतिज्ञा माते। जननी अग्निसंभूते।
सुरेश्वरी तूं पतिव्रते। दी आज्ञा एकवीरा ॥२७८॥

रेणुकेलि बहु यातना। शमन जाल्लिगा तेन्ना।
पळैता पुत्र वदना। आप्पैता योरे बाळा ॥२७९॥

योरो रामा मोगाच्या। दीरे आलिंगन भाग्याच्या।
योरे रत्न भृगुकुलाच्या। आइकरें ही अंत्य वाक्य ॥२८०॥

देवालि अशरींर वाणि। खंथै जाल्ले त्या ठिकाणि।
करी प्रेत संस्कारु तत्क्षणि। बाप्पैलो बाळा विधियुक्त ॥२८१॥

बाप्पैक तूंचिरे आप्तु। तूंवे हें केल्यारि तृप्तु।
तूं तांचो आज्ञप्तु। म्हणताति सर्वदेव ॥२८२॥

कोपारुण नेत्रु रामु। आवैक कर्ता प्रणामु।
पितृ कार्याचो सर्वनेमु। करीन म्होणु समर्पक ॥२८३॥

बाप्पैले अंग प्रत्यंग। जोडिलें तें उत्तमांग [33]।
अश्रुजलान सर्वांग। भिजलें [34] परशुधरालें ॥२८४॥

कावडी हाण्णु रामान। आवैक एक बाजून।
बसैलि भक्ति भावान। आनि एकडे पितृ देह ॥२८५॥

कावडी घेव्नु खांद्यारि। मुनि मंडळी बरोबरी।
नाना तीर्थ गिरिकंदरीं। भोंव्तचि पाव्ले अलकीनदीं ॥२८६॥

दूर्चान दिसलें आश्रम। पवित्र ते दत्त धाम।
तीर्थीर्थि घेत्ताति विराम। चिंतूनि अवधूताक ॥२८७॥

थैंचान सहयाद्रीक। आइले सर्व भाविक।
आश्चर्य जाल्लो सर्वांक। आईकली अशरीर वाणि ॥२८८॥

३३ मात्तें ३४ तिवले

आईकरे परशुरामा। स्थळ हे श्रेष्ठ पितृकर्मा।
बाप्पै पाव्ता स्वधामा। घे दत्तालो सहायु ॥२८९॥

कावडी दवर्लि भूंइचेरि। पळैत आइलो दिशाचारी।
दिसलो एकु आश्रम भारी। संचरताति सिद्धमुनि ॥२९०॥

भरपूर कंद मूल। प्राप्त गा सर्व काल।
निर्भीत सिद्धमुनि जाल। निवास करती थांगा ॥२९१॥

अवधूतु एक्लो निदला। लाग्गि राब्ल्या विवस्त्रबाला।
विभूतिगंध कपाला। हात्ता धर्ला पानपात्र ॥२९२॥

तोचि भगवानु दत्तु। कर्ता ही लीला उन्मत्तु।
तत्त्वज्ञानी तो अवधूतु। अलक्ष्य लक्ष्यु तो खरें ॥२९३॥

भार्गवु कर्ता अभिवादन। गुरुनाथा अत्रि नंदन।
दी गा तुजो सहायपूर्ण। बाप्पैल्या अंत्यविधीक ॥२९४॥

तूं धर्माधर्म ज्ञानी। वेदांत शिरोमणी।
तुक्का समान ना गा कोणि। करै गा ऊर्ध्व दैहिक ॥२९५॥

असुरांक दित्ता मोहु। दुष्टांक दित्ता द्रोहु।
भक्तांक मात्र धृढ़ स्नेहु। लीला ही दत्त चर्या ॥२९६॥

हे आईकूनु दत्तु सांग्ता। तूं मिज्ल्या कित्त्या माग्ता।
आमका नारे देह सत्ता। आम्ही अजात अंतर्गामि ॥२९७॥

बाळा आम्ही दिगंबर। विधि निषेध बाहिर।
धर्म विधीचे विचार। ना रे आम्हीं पानमत्त ॥२९८॥

अस्पर्श आम्ही दुराचार। कळंकित रे अनाचार।
ना आमुका वेदाधिकार। पंचमरे[३५] शूद्रातिशूद्र ॥२९९॥

ना आमुका लिंग भेद। खरें ना खेद मोद।
आणि खैंचे आत्मबोध। बहिस्कृत भुमि भार ॥३००॥

अश्शिं सांग्चो अवधूतु। उठलो रे तो पुनीतु।
जोडोनि दोनीं हाथु। करीऽ नमस्कार रेणुकेक ॥३०१॥

हे योगीजन वंदिते। देवी माते अनिंदिते।
आदिमाद्ये शक्ति दाते। अचिंत्ये लोकमाते ॥३०२॥

हे माते भवतारिणी। सृष्टि स्थिति संहारिणी।
अनंत रुपिणी ब्रम्हाणि। तू जगदेकवीरा ॥३०३॥

३५ चतुर्वर्णाबहिर

मागीर त्या महात्मान। केल्लें मृत मुनीक नमन।
तिल आणि जल तर्पण। पिताक दी विधियुक्त ॥३०४॥

हे भृगु वंश ललामा। भार्गवा परशुरामा।
बाप्पैक गति अनुत्तमा। जात्लीं हे निःसंशय ॥३०५॥

अशिश सांगूनु योगिराणु। क्षणान जाल्लो अंतर्धानु।
उपरांत भार्गवान बाणु। मार्नु एक सह्याद्रि ॥३०६॥

उपजलीं सर्व तीर्थ। सकल देवता स्नानार्थ।
स्नानान साधक कृतार्थ। तीर्थी त्या राम निर्मित ॥३०७॥

गंगा यमुना सरस्वती। तुंगा नर्मदा पुष्करा ती।
गोदावरी गया तीर्थी। केल्ले स्नान रामान ॥३०८॥

स्थापिली प्रदीप्त अग्नि। प्रदक्षिणा करी जामदग्नि।
मृता देहा अग्नि अर्पुनि। केल्ली अंत्येष्ठि ती पूर्ण ॥३०९॥

त्यासमयीं रेणुका माता। जाल्ली सर्वालंकार भूषिता।
दत्ताले नांव आप्यैता। आणि सांग्ता परशुरामा ॥३१०॥

पतिसहगमन कोर्नु। पति रायालो मार्ग धोर्नु।
वत्तरे सर्वा सांभाळ्नु। राकरे बाळा आश्रमु ॥३११॥

वऽच तूं गुरु देवा लागिग। अग्निप्रज्वाल्य करी वग्गि।
कित्याक राब्ला रे उगि। करीं प्रतिज्ञा ही पूर्ण ॥३१२॥

अगम्या गा देव लीला। साक्षात् नारायणु केवला।
नरा सार्खे रोडु लागला। द्विज गण सहित सर्व ॥३१३॥

रमणीय पर्वतोत्तुंग।। सदा देवर्षिलो संग।
तुजकुणि वेद वेदांग। तू सिद्धिरुप आईक ॥३१४॥

तू तरी आम्का विसरलि। सर्वा सोण्णु अंतरलि।
जग जीव ही सगळीं। माये मावळता[३६] खरें ॥३१५॥

आलिंगिले पुत्ताक। अश्रून केल्लें अभिषेक।
आप्पोनु रामां प्रत्येक। सांग्ता आईकरे बाळा ॥३१६॥

सह्याद्रिच्या सकल तीर्थांतु। ह्या गिरीवन कंदरांतु।
हांव व्यापकरे सर्वांतु। आस्तारे तुज लाग्गि ॥३१७॥

अशि़श सांगूनु सुमंगलि। सकल मुनि सिद्धांक वंदिलि।
धगधगींतु अग्नींतु उडली। निपलि गा अग्निगर्भा ॥३१८॥

३६ अस्तगत

उपजलि अग्नींतु पूर्वि। पति भक्ति प्रकटोन ऊर्वि।
निघलि अग्नीं निगर्वि। जय माता रेणुका पाव ॥३१९॥

जाल्लि पुष्प वृष्टि तिज्जेरि। ऐकली वीणा मृदंग भेरी।
नांचली गंधर्व नगरी। जय हे एकवीरा ॥३२०॥

मातापित्यालि अंत्यविधि। दत्तात्रेयाल्या सन्निधि।
कर्ता रामु कृपानिधि। मानुषा सार्खे खरें ॥३२१॥

अंत्य विधिचे नंतर। आप्पैले माता पितर।
दिसले ते आकाशार। सुरवर सहित दोघैं ॥३२२॥

कार्तवीर्याल्या वधेक। मेग्गेल्या सत्य प्रतिज्ञेक।
आज्ञा आणि आशीर्वादक। माग्ता दिय्या सर्वशक्ति ॥३२३॥

रामान अशिश मागताना। घडली अद्भुत घटना।
सह्याद्रि वासिनी देवि तेन्ना। प्रवेशिलि रेणुका देही ॥३२४॥

देव गंधर्व यक्षादि। रिगलि देविल्या सन्निधि।
व्यापिली तीज्जे परिधि। विरलि तिज्जांतु सर्व ॥३२५॥

महाशैल मेरुमलय। श्री शैल आणि हिमालय।
रेणुकेंतु जाल्ली विलय। रण भैरवी ती रेणुका ॥३२६॥

सर्व तीर्थ रेणुकेंतु। राव्लि तिज्जा अंगांतु।
मग्न ती आनंदांतु। भजताति भक्ति युक्त ॥३२७॥

आवैलि बाप्पैलि अंत्यविधि। श्रद्धेन कोर्नु आनंदी।
द्विजांक भोजन समृद्धि। पूजा केल्लि देव ऋषिलि ॥३२८॥

माता पित्याल्या प्रीत्यर्थ। दिल्लें ब्राम्हणांक सकलार्थ।
बहु मूल्य रत्न पदार्थ। समर्पिलें गो धनादि ॥३२९॥

आश्रमाचे सर्व वस्तु। जाल्लें ब्रम्हार्पण मस्तु।
ब्राम्हण म्हणालें तथास्तु। जय हे परशुरामा ॥३३०॥

परशुरामु जननी लाग्गि। माग्ता दीगे आज्ञा बेगि।
मेळ्का तुजी परवानगि। वधेक कार्तवीर्या ॥३३१॥

पितृ घातिलो संहारु। मुख्य हो कार्यभारु।
ब्रम्ह वंशाचो प्रतीकारु। कऽरी माये जयप्रद ॥३३२॥

करीरेऽ बाळा काहींतरी। कुलाक हाडि कीर्ति बरि।
दुष्टालो संहार करी। राकरे ब्रम्ह वृंदा ॥३३३॥

तूंचि हे कोरु शक्ता। शीघ्र हे कोर्का पुता।
शत्रूंलें तरी बल वाढ़ता। जात्लें कठिण बहूत ॥३३४॥

वयान तू धाकलो। पण कोटींतु तूं एकलो।
क्षत्रियांक तूं जिंकलो। अशिश घेरे कीर्ति बाळा ॥३३५॥

एकवीरेलो[३७] संदेशु। आइकतां आइलो आवेशु।
हात्तांतु घेव्नु परशु। आणि पिनाक ते शरयुक्त ॥३३६॥

गगनांगणाक उड्डाण। केल्ले परशुरामान।
सूर्या सार्खे ते वदन। पळैता नारद ऋषि ॥३३७॥

दोग्गाईं जाल्ले खेचर। नारदु कर्ता नमस्कार।
आलिंगन दिल्ले परस्पर। उपरांत म्हणता नारदमुनि ॥३३८॥

३७ रेणुकेले आंश एक नाव

आइकरे भृगु नंदना। नर्मदा तीराचि घटना।
कार्तवीर्यान तपस्साधना। केल्या बहूत दिवस ॥३३९॥

ताज्जा तपोभंगाक। रुद्रान धाड्लिं भुत्तांक।
ते तरी बहु हिंसक। करताती तीर्थ ते कलुष ॥३४०॥

अशुभ तीं भूत प्रेतं। क्षेत्रांतु करी उत्पात।
अस्थि मांसादि सहित। थुक्ताति तीर्था मध्यें ॥३४१॥

मुनिले वचन विस्तार। ऐकता परशुधर।
तीर्थांचें करीन उद्धार। अशिश निर्धारु केल्लो मनिं ॥३४२॥

भुत्तांचे निवास स्थान। तांचो तो मुक्यकोण?।
पिशाच गणांगेले वन। दाखखैरे हे ब्रम्हपुत्रा ॥३४३॥

त्या उपरांत उभय। रिगलें वनांतु निर्भय।
घोरांधकार सभय। असूर्या अंधतम ॥३४४॥

मांस भक्षी वनचर। रक्ताशनी[३८] रे खेचर।
हिंस्र पशूंलें आगर। ऐकता किन्नाटचो बोब ॥३४५॥

चिक्लांतु पुर्तीति पाय। पाव्लपाव्लांक अपाय।
नारदाक तरी प्राणभय। ना गा अपायु अन्यथा ॥३४६॥

त्या वेळी परशुधरु। कोपान जाल्लो भयंकरु।
प्रेतांचे कर्ता संहारु। अशिश येव्चिताना तेन्ना ॥३४७॥

विकटाट्टहासु करुनु। उतरलि त्या झाडांतूनु।
असंख्यात गा आक्रमानु। आईलि परशुरामा कडें ॥३४८॥

३८ रक्ताचि आहार

रामान काड्लें भयंकर। परशु धनुष्य क्रूर।
केल्लें अनेक प्रहार। उसळलीं प्रेत असंख्य संख्यें ॥३४९॥

विकराळ बोब करीत। लोळ्ळिं प्रेत भूमींत।
नाना पुष्प ती वर्षीत। नांचले देव सर्व ॥३५०॥

हे परशुरामा सद्धर्मा। भृगुवर्या पुण्य कर्मा।
जय जय पुरुषोत्तमा। परब्रम्ह विष्णु रूपा ॥३५१॥

मत्स्य कूर्म अवतारान। केल्लें गा पृथ्वी रक्षण।
नर्मदा तुग्गेल्या स्पर्शान। जाल्लि सेवना योग्य ॥३५२॥

नारदा सहित श्रीरामु। कोर्नु नर्मदेक प्रणामु।
थैं दिस्ता एकु आश्रमु। महामुनि मार्कंडेयालो ॥३५३॥

कर्ता स्वागत मार्कंडेयु। तत्त्व ज्ञानी जितेंद्रियु।
माग्ता रामालो सहायु। परिहारक असुरपीडा ॥३५४॥

हे देवोत्तमा रामा। विष्णु रुपा परब्रम्हा।
परशुधरा द्विजोत्तमा। भृगुनंदना राक आम्का ॥३५५॥

सृष्टि स्थित्यादि कारणा। आदि मूला नारायणा।
प्रणव स्वरुपा निरंजना। महामना राक आम्का ॥३५६॥

व्यर्थ कित्या अर्थवाद। आम्ही बालक अबोध।
बंधु वियोगादि खेद। जाल्ला आम्का बहुविध ॥३५७॥

आइकता हे भार्गवु। आपुलो लीला वैभवु।
निप्पोनु म्हणता असंभवु। ना गा शक्ती आम्का ॥३५८॥

घेय्या शक्ति नारदालि। चतुर्मुख ब्रम्हदेवालि।
रुद्रादि योगी वर्यालि। आम्ही तरी अनामधेय ॥३५९॥

नारद म्हणालो देवा। तूं सर्वोत्तमा श्रीधवा।
ब्रम्हु तो पद्मुसंभवा। पुतु तुजो तो श्रेष्ठु ॥३६०॥

मार्कंडेयु दीर्घायु। ताणे पळैलां महा प्रळयु।
रामु हो श्री निळयु। जाण्ता हो लीलावतारी ॥३६१॥

हाथ जोडूनु मार्कंडेयु। जाणरे तुजो ध्येयु।
माहिष्मतीलो दुष्टु रायु। तुक्का वैरि तो जन्मजात ॥३६२॥

ताक्का अम्चेरि व्देषु। केल्लो आश्रमाचो नाशु।
राक्षसांक कोरोनु प्रवेशु। ध्वंसिले मुनि संतती ॥३६३॥

मुनी मांस भक्षी असुर। कर्तीत नित्य संहार।
भीत मनान ऋषिवर। भोगी दुःख दयनीय ॥३६४॥

करी रक्षा ब्राम्हणालि। निःस्पृही ह्या ब्रम्हवृंदाली।
वांचै द्विज वंशावळी। भार्गवा तारिरे आम्का ॥३६५॥

ऐकता मुनी वचन। घेव्नु ते धनुर्बाण।
केल्लें आकाश उड्डाण। ललत्कारी[३९] भार्गवेंद्रु ॥३६६॥

त्रिशूल धारी राक्षस। जाल्ले एकडे समावेशु।
प्रकटे भयंकर आक्रोश। दिसताति ते पर्वत प्राय ॥३६७॥

भार्गव करमुक्त बाण। कर्ता असुरां विदीर्ण।
घेत्लें ते सर्वाले प्राण। अतिशय गा रामबाण ॥३६८॥

३९ युद्धाक दिव्चे आव्हान.

ज्याक लाग्ले राम बाण। त्या कलेवराचि भ्रमण।
माहिष्मतीचे महाजन। पोळोनु सांग्ले कार्तवीर्या ॥३६९॥

हे तरी अनिष्ट सूचक। हैहयांचे कुल नाशक।
दिसलें अशिश अर्जुनाक। स्मरिले ताणे दत्तराया ॥३७०॥

दिल्लीं आज्ञा चतुरंगाक। दवरिले जाग्रत सैन्याक।
आप्पैलें ब्रम्हवृंदाक। भरैलि सभासप्तांग[४०] ॥३७१॥

बंद करा किल्लें द्वार। काहीं ठिकाणी आडसर।
बांधा सैन्य भरपूर। दवरा महाद्वारी सैन्य ॥३७२॥

नगरांतु आपपर। तांचे संपूर्ण विवर।
संग्रह करा सत्वर। अस्सो लक्ष्य शस्त्रांचेरि ॥३७३॥

४० विद्वान्, कवि, भट्ट, गायक, विदूषक, इतिहासज्ञ, पुराणज्ञ

गुप्तचरांचो संचारु। शत्रु मित्रांचो विचारु।
राज कार्य तत्परु। करा तांका नेमणूक ॥३७४॥

सांभाळां राज्य कोशु। साधां शत्रुलो विनाशु।
राज निष्ठालो समावेशु। भरैय्यां शीघ्रातिशीघ्र ॥३७५॥

आमंत्रिले ब्रम्हवृंदा। वंदिलें त्या चरण वृंदा।
आपलें स्वप्न संबंधा। कर्ता प्रश्नु कळकळीने ॥३७६॥

सहस्रबाहु मिग्गेलें। झड्ले तें हावेंचि पळैलें।
गऽळो पायु काप्लें। हांव तरी संपूर्ण नग्नु ॥३७७॥

आवै राकावती निर्वाण। रडऽत कर्ता दक्षिणा प्रयाण।
माहिष्मती नगर संपूर्ण। बुड्ले समुद्रामधे ॥३७८॥

उठ्च्या बोश्चा वेळि। सतील्या एकांत काळीं।
त्या विप्रदंपतींलिं सावुळि। लाग्ल्या फाट्ल्यान हें खरें ॥३७९॥

वधिले हांवे दंपतीक। छाया तांचि बारीक [41]।
भोज्य वस्तूंत व्यापक। दिस्ताति भीत्यास्पद ॥३८०॥

निर्भयान स्वप्नार्थ। सांगा ज्ञानिनो यथार्थ।
कार्तवीर्याक ना गा स्वार्थ। सांगा गा स्वप्नार्थ बेगि ॥३८१॥

विप्रानि सांग्ले स्वप्नफल। कृतघ्नतेचे फल।
ते सर्व पापांचे मूळ। दित्ताति दुःख बहुविधानें ॥३८२॥

ब्रम्हज्ञानी महोपकारी। मुनी समजला वेद चारी।
जमदग्नि बहु उदारी। निष्ठु तो क्षत्रियांक ॥३८३॥

[41] सूक्ष्म

आतिथ्य तांचे घेवनु। पत्नीसहित मार्नु काण्णु।
अपहरिती कामधेनु। जाल्लो घातकु भृगुवंशा ॥३८४॥

गो ब्राम्हण हंतक। कृतघ्नु तूं परपीडकु।
भार्गव कुल दीपकु। कर्ता तुजे कुलनाश ॥३८५॥

ब्राम्हण गेल्ले उठानु। रुष्ट जाल्लो सहस्रार्जुनु।
चारीही पुत्रांक आप्पोनु। दिल्ली आज्ञा भयानक ॥३८६॥

एकडा करा सैन्य प्रबळ। करा विप्रांक हत बल।
बाल वृद्धांक सकळ। धरा मारा भाईल भुर्ग्या ॥३८७॥

कर्तात्ति चारक स्तुति। तुजसमान नाहो ह्या क्षिति।
सोडिगा मनाचि खंति। व्यर्थ हे स्वप्न भ्रम ॥३८८॥

अट्टहासान हास्लो रायु। माक्का खैंचरे पराजयु।
शंकरु आणि दत्तात्रेयु। दोग्गांकई जिंक्ता रणी ॥३८९॥

तेन्नाचि घड्ले अवघड। रक्ताचो पाव्सु उघड।
पळ्ळो कोस्सोळें ते गड। उसळ्ळे शिखर राज गृहाचें ॥३९०॥

राजवाडचा मुखारि। रड्ताति क्रूर मृग भारी।
रान्नांत्ली ती संचारी। निर्भयान नगरा मधें ॥३९१॥

भीकर भविष्य आठोनु। उद्विग्न जाल्लो अर्जुनु।
शस्त्रास्त्र सर्व धोर्नु। सन्नद्ध गा सहस्रबाहु ॥३९२॥

नारदु महर्षि शांतु। एक्लो रिग्लो तो नगरांतु।
सैन्य शस्त्र संग्रहांतु। मग्न गा दिङ्मूढ सर्व ॥३९३॥

नारदु आइलो परतूनु। परशुरामाक सांगता येव्नु।
नगर वनांतु प्रवेशूनु। करी ठेंकार धनुष्याचो ॥३९४॥

बरे म्हणता परशुधरु। गंगेतु न्हाल्लो निर्भरु।
वनांतु रिग्गूनु शूरु। कर्ता ठेंकार भयंकर ॥३९५॥

तीनीं लोक हे भयग्रस्त। ग्रह तारिका जाल्लें अस्त।
आड नीट धांव्ले समस्त। जाल्लें नगर अस्तव्यस्त ॥३९६॥

प्रळय समुद्राचे दर्शन। किंवा ताज्जे सिमोल्लंघन।
की कैलासांतु धिनाकीन। तांड्लो राज्जु धनुचो ॥३९७॥

विष्णुले शार्ङ्गधनु। खाल्ला पडलो कि चक्रूनु।
आवाज ताज्जो सट्टूनु आइले की भूमितळा ॥३९८॥

रक्षणा गोपुराचेरि। राब्बूनु उंचारि।
पळैता अर्जुनु कोपारि। दिसलो धनुष्पाणि जामदग्नि ॥३९९॥

अंगुष्ठि अंगुलीत्राण। धनुष्यांत वेधिलेले बाण।
दृष्टि भयंकर तीक्ष्ण। खाद्या परशु कांतियुक्त ॥४००॥

मेरु मंदराचे समान। दिस्ताति शिखरारी उंचान।
रामालि भीकर गर्जन। जाल्ली अनुरणित वनामधें ॥४०१॥

श्रीरामालो सिंह नादु। आइकूनु तो दुर्मदु।
जाल्ला ताक्का हृदय भेदु। रिग्ले ताक्का भय काळ्जांतु ॥४०२॥

हे ब्रम्ह घातिं पातकी। अन्न द्रोहि तूं पातकी।
हजार हाथ पड्ता पृथ्वि। आप्पै मूर्खा रक्षकांक ॥४०३॥

तुज्जे संस्कार हीन शरीर। खाव्वो क्रूर जनावर।
सुणिं माज्‌रांक आहार। जाल्ले खाद्य सुस्वाद ॥४०४॥

परशून तुजे घड। कर्ता मार्नु खंड खंड।
पापिष्ठा तुजे पापभांड[४३]। भर्ला अचूक रे मूर्खा ॥४०५॥

सांपळ्ळा तू हात्तांतु। हांव क्षात्रकुल कृतांतु।
जिव्‌शि मार्ता तू जीवंतु। आणि ना ह्या पृथ्विचेरी ॥४०६॥

ऐकता ताप्लो अर्जुनु। हे पोरा तूं ब्राम्हणु।
मार्ता तुक्का चिरडूनु। मोर्नुकारे व्यर्थ ॥४०७॥

कैलास पति शंकरु। जिंकशी ना संगरु।
तूं तरी सानु पोरु। वांचना मर्ता खरें ॥४०८॥

४३ पापाचे आइदान

तूं बालकु ब्रम्हचारी। येत्ता दयाभाव तुज्जेरि।
तूं तरी शरणु आइल्यारि। मान्ता तुका मानेस्थु ॥४०९॥

अर्जुनालि आत्म प्रशंशा। आईकता रामु क्रोधावेशा।
तमो अस्त्रानि भरली निशा। सर्वत्र व्यापी अंधकारु ॥४१०॥

सत्य पराक्रमि रामान। सोड्ले एक अग्निबाण।
जळलें नगर तें पूर्ण। उडले हाहाकार गगनभेदि ॥४११॥

तुटूनु पड्ले सैन्य सगळें। जग सर्व तळमळलें।
रामादिक हसूं लागलें। भित्तवे अग्नि क्रिमि कीटा ॥४१२॥

परशुधराल्या बाणान। जाल्ले सैन्य छिन्न भिन्न।
नर्मदानदी रक्त पूर्ण। जाल्लि पृथ्वि मांस युक्त ॥४१३॥

ऊंच नीच फाट्ल्यान। मुखारि खालि बाजून।
रामुचि परशु घेवुनु। भोंवता दिसले कार्तवीर्या ॥४१४॥

गुरु गणेशु आणि दत्तु। रामुचि गा सर्व समस्तु।
वराहु नरसिंहु त्रातु। दिसता सर्वत्र कार्तवीर्या ॥४१५॥

भयंकर द्वन्द्व युद्ध। केल्ले दोग्गई छलबद्ध।
जाल्ले परस्पर क्रुद्ध। काप्ले रामान सहस्रबाहू ॥४१६॥

ज्या बाहूनि पृथ्वि जिंक्ला। तो अर्जुनु रामाल्या थकला।
होचि विष्णु गुरु आपुला। दत्तुचि हो अवधूतु ॥४१७॥

ज्या बाहूनि रावणाक हारैले। नर्मदेचो प्रवाहु राब्बैले।
कुलाचल धोर्नु हाल्लैलें। ते बाहु काप्ले भार्गवान ॥४१८॥

मंत्रास्त्र सर्व विसरलें। रामबाणान वक्ष छेदिले।
विष्णूचि नाना रूप दिसलें। जाल्ले अनुताप कार्तवीर्या ॥४१९॥

विश्व केल्ले पादाक्रांत। अष्ट मदान जाल्लो भ्रांत।
गो ब्राम्हणांचे केल्ले अंत। भोग्ता प्रचंड पाप कर्म ॥४२०॥

रामान काड्लो उग्र बाणु। वक्ष स्थळ ते विदीर्ण जाव्नु।
अर्जुनु जाल्लो नित्राणु। सोड्लो प्राणु तेन्ना ॥४२१॥

पळले गा बंधु सगळे। प्राण भयान तें निपलें।
सेनाप्रमुख ही जुरलें। सतीनी स्विकार्लें सहगम्मन ॥४२२॥

जय जय हे परशुरामा। भार्गवा त्रिविक्रमा।
संरक्षणा वेद धर्मा। सत्यात्मकु तूं विप्रप्रियु ॥४२३॥

गो ब्राम्हण संरक्षण। दुष्ट क्षात्रालें मर्दन।
माता पितालें ऋण। पावैला तूं धर्मीनिष्ठु ॥४२४॥

प्रर्थिता देव संतुष्टि। कर्तीति दिव्य पुष्प वृष्टि।
भार्गवाल्या चरणारि दृष्टि। दवनु वंदिले साष्टांग ॥४२५॥

सिद्ध मुनि म्हणालो साधका। अवधारिरे[४४] कथानका।
वंदूया क्षात्र कुलांतका। भार्गवाक भक्तियुक्त ॥४२६॥

प्रतिज्ञा कोर्चाक पूर्ण। भूंईक एकवीस प्रदक्षिण।
दुष्ट क्षात्रालें नाशन। ध्येयु गा भृगुनंदनालो ॥४२७॥

मालव कांबोज सिंहल। अंग वंग कलिंग चोल।
सौराष्ट्र कुरु कोसल। अयोध्या मगध सोबलादि ॥४२८॥

४४ आइकरे

केकय काशी केदार। निषध विदर्भ गांधार।
बर्बर सहित काश्मीर। जिंक्ले राज्य एकवीस ॥४२९॥

मातेक दिल्लेलें वचन। कोर्का श्रद्धेन पूर्ण।
अशिश रामान यवजून। काड्लि जैत्र यात्रा ॥४३०॥

भांव्ड चारी बरोबरी। वीर वैदिकालि स्वारी।
नाना मंत्रास्त्र ती भारी। संग्रह अभूत पूर्व ॥४३१॥

साधकाल्या तोंडारि खिन्नता। सिद्ध मुनि हे ओळ्कता।
कित्तें विचार परता। काडिरे प्रश्नुभागु ॥४३२॥

ब्राम्हणु केन्नाई दयापरु। हो तरी कर्ता संहारु।
अर्जुनालो दुर्व्यवहारु। शिक्षा बरी अपराध्याक ॥४३३॥

हो कित्या वर्ण द्वेषु। अज्ञान वाड्ता त्वेषु।
वैदिकु दित्ता संदेशु। अहिंसा आणि शांतिचो ॥४३४॥

संदेह निवारिलें सिद्धान। दुष्ट क्षात्रांचे मरण।
केल्लारें खरें रामान। तरी राख्लें शरण क्षात्रां ॥४३५॥

शरणाचें कुलरक्षण। दुष्टांचें निर्दालन।
हेंचि अवताराचे कारण। दुर्मदांक शिक्षा बरी ॥४३६॥

जो आस्स विवाहवेदि। कोणकी यज्ञ साधीं।
तांका राख्तालो आदि। अनुकंपी रामु आमुचो ॥४३७॥

जनकु सदा यज्ञशीलु। दशरथालें लग्नकालु।
चोय्ता रामु दयाळु। राक्ले त्या शरण क्षात्रां ॥४३८॥

रणयात्रा ती रामालि। मालव देशांतु रिगलि।
रायु थंचो बलशाली। मित्रघ्नु शत्रुजित् नामा ॥४३९॥

तोंचि प्रथम बली रामाक। नंतर चंद्रवर्धनांक।
आइलि पाळी बलि पौत्राक। श्वशुरु[४५] तो कार्तवीर्या ॥४४०॥

हेमभद्र आणि सुरथु। वंग देशी महारथु।
सिंहलाधिपति विक्रतु। बुडले सगळे परशुधारा ॥४४१॥

अखंड परशु खाद्यावरि। शोभ्ता खंडपरशुवरि।
चाल्लतों नर केसरी। कैवारि गा ब्राम्हणांचो ॥४४२॥

काहीं शरण आइलें। काहीं मरण पाव्ले।
काहीं लोक निपलें खपलें। भटकले गावो गाविं ॥४४३॥

४५ मत्रु

भार्गवाले आगमन। आईकता गावांतून।
धाव्ले प्राण भयान। गत प्राण गा क्षात्र ॥४४४॥

गर्भगलित गा नारीं। उसळ्ळें परशु प्रहारि।
रुंड क्षात्रालें भारी। माग्ताति क्षमा कांपीत ॥४४५॥

सौराष्ट्राक पाव्ताथइ। क्षात्रालो विरोधु काई।
ना म्होणु सगळे एकठाई [४६]। विश्रमले वीतरागि [४७] ॥४४६॥

सौराष्ट्राचो सारणु। राज कारणी निपुणु।
यज्ञ कर्ता तो धनवानु। प्रजापीडकु मूढधीः ॥४४७॥

परशुधरान सांग्ले। यज्ञ विधि तुम्ही न कळे।
वेद धर्माक अपचारिलें। तुम्मि अधर्मि शिक्षार्ह ॥४४८॥

४६ एक जागेरि ४७ मोहनत्तिलो

उठले ते वेदीतूनु। अवाच्य उसळें तोंडातूनु।
ब्राम्हण द्वेषिक पोळोनु। परशु उक्कळ्ळे भार्गवान ॥४४९॥

क्षात्रा बली रण यज्ञाक। शिर तें पूर्णाहुतीक।
रक्त तें महाप्रतीक। आज्य [४८] आणि तिल मज्जा ॥४५०॥

यज्ञ सांभार सगळें। द्विज वर्याक दिवैलें।
तीसरी यात्रेन परतलें। जमले मुनिवर स्वागताक ॥४५१॥

जैत्र यात्रा जाल्लीं सोळा। परशुरामु एकवेळा।
आठैता जनकालि मिथिला। चाल्लो भेटीक जनकाल्या
॥४५२॥

४८ तूप

श्री गुरुचरितामृत

तपस्वी जानकाक पोळोनु। अकृतव्रणाक आप्योनु।
असलो क्षत्रियु महानु। तत्त्वज्ञानी हो अधिकतमु ॥४५३॥

शिष्टांचे पालन। दुष्टांचे निर्दालन।
हे मेज्जे अनुष्ठान। हेंचि गा नित्यकर्म ॥४५४॥

कुशल विचार्लें जनकालें। कोसला कडे गमन दिल्लें।
दुंदुभादि राय भिल्लें। धाव्ले रक्षणाक बलींद्राल्या ॥४५५॥

बलींद्रालि प्रार्थना। आइकलो बलि मर्दना।
क्षात्र धर्माक विवंचना। कर्ना अशिशं प्रतिज्ञाइलि ॥४५६॥

स्वीकार्नु बलीलि पूजा। आइला साकेत साम्राज्या।
जयशीलु थांचोराजा। ख्यातु तो दिलीप पुत्रु ॥४५७॥

वसिष्ठाले मार्गदर्शन। तांचे वचन पालन।
कऽरी म्होण्णु परशुरामान। सोड्लें पुत्र पितरांक ॥४५८॥

गांधाराचो वृक्षभुजु। पांचालाचो बाहुजु।
रामु तो राजाधिराजु। सर्वांक धाड्ले परलोकां ॥४५९॥

काशीचो भद्रायु। करता नित्य अन्यायु।
सरले गा ताज्जे आयु। मार्लो ताक्का भार्गवान ॥४६०॥

अशिश एकवीस पाव्टी। संचरलो जगजेठिं।
दुष्टांक मार्नु ही सृष्टि। राख्लि त्या परशुरामानें ॥४६१॥

क्षात्र रक्ताचे तर्पण। कर्ता विप्रांक समर्पण।
ताज्जेन पाव्ता पितृऋण। समाधान रे पितृ आत्मा ॥४६२॥

कुरुक्षेत्र निर्माण। केल्लें परशुरामान।
पितृ तर्पणादि क्रियेन। केल्लें ते धर्मक्षेत्र ॥४६३॥

तर्पणाचे जलधार। जाल्लि पांच सरोवर।
रामहृद नांव सुंदर। म्हणताति स्यमंतपंच ॥४६४॥

रक्त सिक्ताचे कुठार। धुल्लें रामान पापहर।
स्नान संध्या नंतर। घेत्ली विश्रांति थोडी बरी ॥४६५॥

शेष राजे एकत्रित मेळ्ळें। राज्य सर्व समर्पिलें।
रामाक राजेश्वर म्हणालें। अर्पिली बिर्दावली ॥४६६॥

हे राज राजेश्वरा। परशुधरा सर्वेश्वरा।
यज्ञनामा यज्ञेश्वरा। राक गा आम्का ॥४६७॥

विश्वचि जिंक्ले रामान। उपरांत केल्लें चिंतन।
विश्वजित् याग कारण। करीन भू दान ब्राम्हणांक ॥४६८॥

प्रभुत्वाक कर्नि युद्ध। आपण केन्नाहि वचनबद्ध।
दुष्ट क्षात्र ते अबद्ध। निरंकुश[४९] ब्रम्ह द्वेषि ॥४६९॥

म्हणोनि यागाक योजिलें। सर्व सामग्रि संग्रहलें।
विविध ऋत्विजा आमंत्रिले। रामु जाल्लो यज्ञ दीक्षितु ॥४७०॥

बत्तीस हात लांबीचि। स्वर्ण मय यज्ञ वेदिचि।
ताज्जेरि नाना रत्न मणीचि। विन्यास ते चंद शोभायमान ॥४७१॥

४९ सर्वाधिकारी.

वर्ण वर्णमय ध्वज। दीक्षा घेत्लेलें ऋत्विज।
विश्वामित्राले आत्मज। मधुच्छंद शतार्ध[५०] ॥४७२॥

कशयपूचि आचार्यु। वसिष्ठ तो अध्वर्यु।
ब्रम्हु श्रंगीऋषि आयु। सभासदु भरद्वाज मुनिं ॥४७३॥

माल्यवंत पर्वतारि। लोहार्गल त्या तीरी।
ऋचीक आश्रमाचा भाइरी। सोधल्या भूमि ऋचीकानि ॥४७४॥

क्षात्र धर्म हे आपद्धर्म। आता सोडलें युद्ध कर्म।
यजन याजनाचे मर्म। अनुष्ठाईलें परशुधरानें ॥४७५॥

५० पन्नास

श्री गुरुचरितामृत

मूल वृत्तिचो विकासु। कोर्चांक हो अवकाशु।
यज्ञ समाप्तिच्या दिवसु। दक्षिणा वांट्लि गा भरपूर ॥४७६॥

जिंकिलें सर्व भू मंडळ। राखिले ब्राम्हण कुल।
वांटिलें भूमि सकळ। कश्यपादि ब्रम्ह वृंदा ॥४७७॥

विरक्त आपुलें धन। वापरि[५१] लोक कारण।
न घेत्ताति भोग आपण। लोकोद्धारक तें ॥४७८॥

साधका आईक मुख्य काणि। दीव्नु समऽ कान दोनि।
रामालि लीला लोकबोधिनि। व्यर्थगा बिर्दावळि ॥४७९॥

गंगेक अस्सवे तानी। सूर्य जाणवे काळ्का काणि।
वारेक जाय्वे तंड साणि। निस्सणि व्यर्थ मेघांक ॥४८०॥

५१ उपयोगकारी

मोराक जाय्वे नेंसण। शित्ताक जाय्वे जेवण।
दुद्धाक जाय्वे दूवण। समजल्यारि हे बरें ॥४८१॥

परशुरामु तो देवु। ताक्का कित्या हो वैभवु।
ज्ञानानंदु ताज्जो स्वभावु। निर्मलु निर्विकल्पु ॥४८२॥

तरी हे अवतार कार्य। दाक्कैताति गुरु वर्य।
द्विजोत्तमु महा शौर्य। प्रकटिता लोक शिक्षा ॥४८३॥

नाशले क्षात्र सगळें। राज्य रक्षणेक ना वेगळे।
उरले ते राय निपलें। भीव्नु परशुरामाक ॥४८४॥

अराजकताचे तांडव। रक्षणेचे अभाव।
लुटारि दरोडा दुर्भाव। वाड्ले सर्वत्र स्वैर ॥४८५॥

भार्गव रामाल्या भीतीन। येनाति क्षात्र धैर्यान।
कशिश कोर्नु उपायन। काड्का बाईरि भार्गवाक ॥४८६॥

कश्यपान केल्लिं विनंति। रामा आईक ही नीति।
दान भूमींतु राब्बानाति। जाण्ते वत्ताति क्षणा ॥४८७॥

कऽरि सृष्टि तू नवीन। आप्पैताति लोक तुज नावांन।
क्षाम आणि रोग रुजान। कऽरि मुक्त सृष्टि तुजि ॥४८८॥

कश्यपालि विनंति मानूनु। घेत्तलि भूमि समुद्रांतूनु।
नांव इषुपात म्होण्णु। केल्लें वसति योग्य ॥४८९॥

भुई सागरान दिल्लीं। परशुरामालि कशिशजाल्लीं।
सागराल्या घेत्ली कित्ति। भू भाग परशुरामान ॥४९०॥

श्री गुरुचरितामृत

सांग गा सिद्ध मुनि। कतूहलाचि काणि।
विप्रोद्धारकु जामदग्नि। आदरणीय ब्रम्ह वृंदा ॥४९१॥

साधकु अशिशविनंति कर्ता। कथा कित्या मुखारि वर्ता।
सिद्ध मुनि सांगरे वार्ता। लीला ती परशुरामालि ॥४९२॥

अरे साधका अधिका प्रसंगि। तरी तूं आस्स सत्संगि।
सांग्ता तुका बहिरंगी। कथा ही कुतूहलाचि ॥४९३॥

ऐकरे साधकाग्रणि। लीला कर्ता जामदग्नि।
वसति योग्य धरणि। माग्ली ताणें समुद्राकडे ॥४९४॥

कश्यपाल्या वचनानुसार। घेईन भूमि थोडे फार।
समुद्राकडे कर्ता विचार। वर्ततो त्या प्रमाणें ॥४९५॥

अशिश चिंतून मनांतु। परशु पावलो सह्याद्रींतु।
राब्बुनु गिरि शिखरांतु। निरीक्षि समुद्रा तीरा ॥४९६॥

हे समुद्र राजा आईक। स्थळावकाश नारे वसतीक।
सगळे वांट्लें विप्रांक। दीगा तुज्जांत्ली भूमिदान ॥४९७॥

केल्लो तिरस्कारु सागरान। घर्लों ध्नुष्य भार्गवान।
कोर्नु बाणानुसंधान। शोषिले गा सप्तसिंधु ॥४९८॥

परशुरामालो पराक्रमु। आश्चर्यांनि चोईता सुरस्तोमु।
व्यापिला रामु भू व्योमु। कांप्ले गा ती ग्रहगोल्ल ॥४९९॥

त्र्यंबकगिरिरी एक चरण। हरिषगिरी आणेक पादान।
धनुष्याचे दोर खींचून। कर्ता संधान बाणावळी ॥५००॥

गिरि वन सहित वनधि। उडलि ग्रह नक्षत्रादि।
कांपलि सृष्टि बुनादि। उचंबळी जलधि सगळीं ॥५०१॥

थरथरलि सुर किन्नर। कर्तीति स्तुति अपार।
विनविताति वारं वार। रेणुका तनया राक ॥५०२॥

समुद्ररुपी तीर्थ राया। ब्राम्हण रुपान माग्ता अभय।
नारायण तूं अद्वय। न कळो हांव क्षण करी ॥५०३॥

माग्ता समुद्र हे राया। हांव तरी तुग्गेलि शय्या।
व्यापकु तूं अव्यया। तुज्जेंचि हे सर्व ॥५०४॥

आम्ही तरी तुग्गेले दास। आज्ञा पालनेंतु दोष।
घड्ल्यारि राक अशेष। उपसंहारि बाण तुग्गेलें ॥५०५॥

तेन्ना सांगले भार्गवान। केल्लेलें बाणानुसंधान।
परत घेव्चि ना तुज्याण। तरी रात्कारे प्राणु तुग्गेलो ॥५०६॥

त्या उपरांत रामान। सोड्लो बाण बलिष्ठान।
सागरु सर्लो माग्ल्यान। जाल्लि नव भूमि रामक्षेत्र ॥५०७॥

दीव्नु अभय शरणांक। अपेक्षूनु भूमि वसतीक।
सोड्ता बाणु एक्लाक। पड्लो पश्चिम दिशेंतु ॥५०८॥

सागरा दिल्यातित्लीरुंदि। तुजा गर्भाचि भू निधि।
लांबि सह्याद्रि तेद्दी। दी हे स्थळ ब्राम्हणांक ॥५०९॥

रामान मार्ले चोदा बाण। सह्याद्री शिखरांतून।
बाणाग्निचि जळण। अद्भुत गा प्रळयाग्नि ॥५१०॥

जय राम्मा परशुधरा। राक आम्का सुरवरा।
राक गा मुग्ध सागरा। भयग्रस्त तीनीं लोक ॥५११॥

द्रविले राम्माचे मन। देव संगळच्यांक रक्षण।
कोर्चांक घेत्ले समाधान। केल्लि कृपा त्या सागराचेरि ॥५१२॥

कमंडलाचे दिव्य उदक। शिंपूनु ते मंत्र पूर्वक।
शमइलें सगळच्या अग्नीक। पण उरले ना जीवजंतु ॥५१३॥

प्रवाल मौतिक संपन्न। रुंदी ती सहा योजन।
चार्शि योजन विस्तीर्ण। नव सृष्टि ती भार्गवालि ॥५१४॥

दक्षिणाचि कन्याकुमारि सुकूनु। उत्तरेचि तापी लागूनु।
भृगु कच्छ थांड महानु। देशु हो रामु निर्मितु ॥५१५॥

कन्याकुमारि सकूनु। परशु उडैलि घेव्नु।
ती पडलि वच्चूनु। गोकर्ण पेल्ला गोमंता ॥५१६॥

पश्चिम गिरींतु राब्बूनु। परशु ती उडौनु।
घेत्ली भूयीं समुद्रांतूनु। नांव गावां तौलव ॥५१७॥

परशु पड्ल्या पर्यंत। रामु राब्लो निश्चिंत।
सप्त कोंकण नावांत। जाल्ले प्रसिद्ध क्षेत्र ॥५१८॥

सप्त कोंकणाचें नांव। सांगता तुक्का हांव।
हे वेगवेगळे गांव। व्यापक नांव अपरांत ॥५१९॥

केरळ तुलंग कोंकण। सौराष्ट्र कर्नाट करनन।
काहीं स्थळ बर्बर नावांन। सांग्लि गा सह्याद्रिमधें ॥५२०॥

गोमंत आणि गोश्रीपूर। ह्या मधेंचि भूमि सुंदर।
आईका तांचो विवर। सांग्ता रे राम कृपेन ॥५२१॥

जात्ता समृद्ध पीक। ऋतुभेद नारें फलांक।
नीर क्षीरादिक समृद्ध। क्षाम दुष्काळ नांति ॥५२२॥

नागा सांक्रामिक रोग। जन साधताति योग भोग।
स्व सामर्थ्याचे कर्मयोग। जात्ले तांका करवश ॥५२३॥

सप्त क्षेत्र आणि सप्तनदी। सृष्टि वैभवाचि गुप्तनिधि।
नाना खनिज्जयुक्त सह्याद्रि। आस्सारें औषधी युक्त ॥५२४॥

रजत पीठादि क्षेत्र। मतांतु एकता सूत्र।
सर्व कृष्ण कृपेक पात्र। भक्ति वैराग्यवंत ॥५२५॥

देवालय शिवालय सगळें। भूत चैत्यालय वेगळें।
नाना मतांचे जमलें। तरीं ना द्वेष संघर्ष ॥५२६॥

पुळिंद आणि पुल्कसादि। कलावंत हे विनोदि।
अनक्षरी तरी बहुवादि। भक्त गा ब्राम्हणांचें ॥५२७॥

कृषि वाणिज्यावलंबी। ना गा कोणि परावलंबि।
उदार आणि अविळंबि। तृप्त ते अर्थ कामि ॥५२८॥

जन सुंदर गौर वर्ण। आभरणान अलंकरण।
देखता नित्य नूतन। वृद्ध तरी तरुणोत्साही ॥५२९॥

पणस नारिंग आंबे। रसाळ मोव्हाचे तेंबे।
लिंबू केळि दाळिंबे। प्राप्त गा सर्वकाळ ॥५३०॥

तीळु एळु मिरियासांग। मीरे आल्लें इक्षु चांग।
ताक्कातण वायविळंग। सांबार हे औषधीय ॥५३१॥

साधका सांग्ले साब्बार। राम क्षेत्रा चे सविवर।
क्षेत्राचे सर्व कारभार। रामाले गा सत्य ॥५३२॥

असली सुंदर सृष्टि। ताज्जोरि रामकृष्ण दृष्टि।
यज्ञ पुरुषु तो इष्टि। कोरू इच्छिलो ह्या जागी ॥५३३॥

त्या सर्वांतु सुंदर। गोमांतक महानगर।
श्री कृष्णालें परिवार। पावल्या ह्या नगरपूर्वि ॥५३४॥

म्हणोनु गोमांतक प्रिय। वास इच्छितो रमाप्रिय।
दुर्मिळ रे विप्र वर्य। निर्माण कठिण यज्ञ संस्था ॥५३५॥

वंदून सिद्ध मुनीक। क्षम करी ह्या पृच्छकाक।
साधकालें अविवेक। जाल्ले म्होण्णुका आत्तं ॥५३६॥

अशिश सांग्ता साधकु। हांव तुम्का बाधकु।
आइला संशय एकु। सारस्वत नांवावरी ॥५३७॥

सारस्वत नांव हे बरें। देश की ऋषि की खरें।
सांग गुरु राया त्वरें। होचि संदेहु माक्का ॥५३८॥

हांव तरी थकलो बाबा। केल्लोरे माक्का तोबातोबा।
प्रश्नु तुग्गेलो सर्ना बा। सुंटैता देवु केन्ना ॥५३९॥

हांव तरी संशय पिशाचि। वाट सोद्दि सोड्वाचि।
सारस्वत ह्या नावांचि। व्याख्या दी गा सिद्ध मुनि ॥५४०॥

शुद्धमतीरें तूं साधका। तुक्का ही कथा सांगूका।
तरी आम्का प्रेरणा जाव्का। अशिश प्रार्थुया देवा ॥५४१॥

आइक तरी संक्षिप्त। सारस्वत चरित्र गुप्त।
सांगताती महिम आप्त। आइकरे बाळा ॥५४२॥

सरस्वती आणि दृषद्वति। ह्या नदीचा मध्य प्रांतिं।
ब्रम्हावर्त म्हणून प्रतीति। ही चि गा वेदी ब्राम्हणालि ॥५४३॥

ब्रम्हावर्त हे बहुकाल। वैदिक संस्कृतीचे मूळ।
वसति सरस्वतिचें कूल। ताक्का नांव सारस्वत ॥५४४॥

सारस्वता कडे वेद शिकलें। तें साठि हजार मोकळें।
वयान ते थोरलें। जाल्यार घाक्ले योग्यतेन ॥५४५॥

तांकाई नांव सारस्वत। वेद सरस्वतीलें सुत।
हे नांव विख्यात। सकल वैदिकांक समज ॥५४६॥

आणि एकी गोष्ट आईक। सारस्वत आइले दक्षिणांक।
कारण अस्सति अनेक। सांग्ता कारण तें मुख्य ॥५४७॥

वेदांतु सांगला यज्ञादिक। यज्ञांतु अग्निंचि प्रमुख।
अग्निद्वारा देवतेंक। पावैतातिरे हविष्यान्न ॥५४८॥

म्हणताना अग्नींचि प्रमुख। जीवन उज्जीवन प्रतीकु।
अग्नि आणि आचार्यु एकु। तात्पर्य ज्ञानऽचि अग्नि ॥५४९॥

माधव विदेह गौतम। यजमान पुरोहित नाम।
ज्ञान प्रचारार्थ महिम। संचरी चारी दिशा ॥५५०॥

अग्नि निपला विदेह मुखी। तो उल्लैना अंतर्मुखि।
'घ्रतासु' मंत्रान एका एकी। आप्पैलें गौतमान अग्नीक ॥५५१॥

घृत[५२] शब्द ऐकता शीघ्र। ज्ञान प्रकटलें मुखाग्र।
गौतम विप्र समग्र। अनुसरलें माग्ल्यान बेगि ॥५५२॥

सरस्वतीतून सदा नीर। वेद ज्ञानाग्नि प्रचुर।
प्रज्वललें अग्निधार। गंगा समुद्रांतु मेळ्ळि ॥५५३॥

अग्न्यानुसरि विप्रवर। पाव्ले त्रिहोत्र पुर।
कीर्ति तांचि अपार। पसरलि गा पुण्यभुमि ॥५५४॥

५२ तूप

ब्राम्हण राब्ले त्रिहोत्री। निष्ठावंत अग्निहोत्रि।
ज्ञानी ते वैराग्य वृत्ति। निष्कामि निष्ठावंत ॥५५५॥

दक्षिणांत याज्ञिक नांति। उत्तरांतु मेळ्ताति।
सारस्वत हे वेदांति। समर्थ गा यज्ञ कर्मि ॥५५६॥

सारस्वत आपुले जन। यज्ञ यागांतु निपुण।
दित्ता तांकांचि आमंत्रण। निर्मिता यज्ञ संस्था ॥५५७॥

कुलवंत कुटुंब सासष्ठि। दशगोत्र सदा संतुष्ठि।
हाड्ले तांका बहू कष्ठि। निष्ठावंत निर्लोभींक ॥५५८॥

दशगोत्रि हाड्लें। चारी उपरांत आय्यिलें।
चौदा गोत्रांचे शिक्कल्लें। त्रैविद्येंतु ते निपुण ॥५५९॥

श्री गुरुचरितामृत

नदी सरस्वती गुप्त जाल्लि। ब्राम्हण सर्वहि भिल्लिं।
निराश्रित त्रिहोत्रा काइलिं। देश नाम ते गौड ॥५६०॥

गौडातुकूनु गोमांतकाक। आइले ते यज्ञ कारक।
रामाले आज्ञा धारक। सोड्लि गा जन्म भूमि ॥५६१॥

मूल तें सारस्वत। देशावैल्यान गौड म्हणत।
म्हणून नांव पडत। गौड सारस्वत खरें ॥५६२॥

ऋग्वेदि शाकल शाखी। आश्वलायन विवेकि।
अनुष्ठान पर नैष्ठिकी। रममाण वेद निष्ठ ॥५६३॥

मूळ सरस्वती तीर। उपरांत त्रिहोत्र पुर।
आतां पाव्ले समुद्रतीर। गांवु गा गोमांतक ॥५६४॥

भार्गवाल्या इच्छे प्रमाणें। यज्ञ याग उत्तमपणें।
चलैले बहुकाल ताज्ञें। धर्म कृत्य उत्कृष्ट ॥५६५॥

यज्ञ सांगोपांग जाल्ले। ब्राम्ह स्वदेशाक चाल्ले।
भार्गवान तांका राब्बैले। दिल्ले दान आठगांव ॥५६६॥

चौदा गोत्रांचे त्रिहोत्री। अष्टग्रामांतु वसति।
लाईली वैदिक ज्ञानज्योति। इच्छा ती भार्गवालि ॥५६७॥

देवालय आणि छात्रनिलय[५३]। एकत्र विप्रसमुदाय।
वाडैलें वैदिक संप्रदाय। जाल्लो आनंदु रामांक ॥५६८॥

स्मार्त शाक्त सारस्वत। स्थाई जाल्लें गोव्यांत।
तांगेले ते कुल दैवत। स्थापिले गा यथायोग्य ॥५६९॥

५३ विद्यार्थिनिलय

शांता दुर्गा मंगेशु। महालक्ष्मी आणि नागेशु।
दामोदरु रवळेशु। रामनाथ कामाक्षि बरीं ॥५७०॥

महामाया गणपति। नवदुर्गा महालसा ती।
देवकीकृष्ण म्हणताति। मल्लिनाथ बेताळयुक्त ॥५७१॥

कात्यायिनी बाणेश्वरु। लक्ष्मी नरसिंहु कोटीश्वरु।
परशुरामु चंद्र मौळेश्वरु। मंदिर निर्मिलें सारस्वतानें ॥५७२॥

सुभिक्ष जाल्ले सुपीक। उणेना गोमंत स्वर्गाक।
कलाविदाल्या कौशलाक। लज्जिलें गंधर्व गणिका ॥५७३॥

चौषष्ठ कलेंतु निपुण। मंत्र जपादि कठिण साधन।
नाना मताचे अनुष्ठान। कर्ताति ब्राम्हण बहुत ॥५७४॥

नारायणु परशुरामु। कालातीतु पुरुषोत्तमु।
जन्म मृत्युचो नेमु। ना गा तोचि काल पुरुषु ॥५७५॥

अश्वत्थामा बली व्यासु। हनुमंतु कृपु विशेषु।
विभीषणु तो राक्षसु। भार्गवु मेळ्नु सात ॥५७६॥

हे सर्व चिरंजीवि। सांगताति हें अनुभावी।
व्यास भार्गवु अभवि। स्वरुप ते नारायणालें ॥५७७॥

असुरांक मोहु घाल्नु। चेष्टिताति मनुष्य म्होणु।
सर्वोत्तमांक अजन्मु। जाणताति ज्ञानीं बरें ॥५७८॥

सर्व व्यापक श्रीहरि। लीला ती बहु वैखरी।
अनंत रुपानि व्यवहरी। आइका तरी राम चरित्र ॥५७९॥

सीता रामालें व्हरण। अडैुलें परशुरामान।
सगळें भय भीतीन। कांप्ले ते दशरथादि ॥५८०॥

रामालें हे दोनि रुप। एकऽचिगा हरिस्वरुप।
बाण सहित विष्णुचाप। दित्ताभार्गव श्रीरामा ॥५८१॥

रावण्याच्या वधेक। पाव्लें तेचि सायक।
न कळेरे हे जनांक। लीला तांचि अलौकिक ॥५८२॥

भार्गव नाभींतु वासु। कर्तालो अतुल 6राक्षसु।
रामान ताज्जो नाशु। केल्लो हें ऐका बरें ॥५८३॥

भार्गवाक क्षात्र द्वेषु। ना तो खरें लक्ष्मीशु।
क्षात्रांक दिल्ला विद्याभ्यासु। साक्षि तें भीष्म कर्ण ॥५८४॥

क्षात्र स्वीकार्लें द्रोणान। ताक्काई शस्त्रास्त्र ज्ञान।
दिल्ला परशुधरान। देवु तो निर्वैर गा खरें ॥५८५॥

वृद्धि ह्रासु रहितु। नित्याल्त्यांतु तो नित्यु।
भृत्य जानांगेलो भृत्यु। अनंतु अप्राकृत गा तो ॥५८६॥

जशिश रामचंद्राक भेट्ला। तशिश कृष्णाकई गांट्ला।
वेणा तटींतु दिसला। भार्गवु वासुदेवाक ॥५८७॥

हरि वंशांतुलि काणि। आईकूका साधकानि।
विचित्र रे देवकरणि। आनंदु तो सुजीवींक ॥५८८॥

कंस वधेच्या उपरांत। मथुरा ती जाल्लि शांत।
उग्रसेनाक वंदीत। समर्पिलें राज्य कृष्णान ॥५८९॥

कंस श्वशुर जरासंधु। असुर तो मदांधु।
युद्धाक आइलो तो बंधु। ससैन्य सत्राणावटि ॥५९०॥

अपजयान गेल्ला तरी। परत सैन्या बरोबरी।
आक्रमलो तो नगरी। पळलें गा राम कृष्ण ॥५९१॥

देवालि ही नर लीला। बंधक शक्ति ती प्रबला।
समजलेलेचि विरळा। म्होणुचि मागधु फसलो ॥५९२॥

बलराम कृष्ण उभय। दक्षिणांक आइले सदय।
करवीर श्री निलय। पाव्ले सैह्याद्रितीरा ॥५९३॥

कृष्ण वेणा संगम। दिसले हृदयंगम।
नरवत् वर्तलो महिमा। घेत्ली विश्रांति थांगा ॥५९४॥

श्री गुरुचरितामृत

दृष्टि पडलो महानु। वटवृक्षु एकु पुरातनु।
तळवटी[५४] एकु विराजमानु। बसला तेजस्वी ज्ञानी ॥५९५॥

शुभ्र वस्त्र परिधान[५५]। देदीप्यमान वदन।
दिसता परशु भुजान। कालाग्नि सार्खें पळें ॥५९६॥

स्नान कोर्नु त्रिकाल। आर्द्र ते देह स्थूल।
होम धेनु ती जवळ। प्रसरला गा दिव्यधूम ॥५९७॥

चरण तळीं बसले द्वय। कर्तांति लीला उभय।
मधुर उत्रं आणि विनय। जाल्लें प्रकट तेह्णा ॥५९८॥

हे भगवन् अवधारी। आम्ही यादववंशी बरीं।
राव्तांति मथुरा पुरी। संवर्धन करीत गो धन ॥५९९॥

५४ मूळान् ५५ नेस्सून

कंस वधेच्या नंतर। वाढ्ले द्वेष निरंतर।
जरासंधादि असुर। कर्तीति गा कलह नित्य ॥६००॥

नगर आणि प्रजा सोण्णु। आईले आम्ही दोग्गई पोळ्नु।
आमका वाट दाक्कोनु। करीगा कृपा जामदग्नि ॥६०१॥

आईकूनु कृष्ण वचन। दिल्लि सलहा भार्गवान।
चला तुम्ही हांग्चान। गमन करा गोमंतगिरी ॥६०२॥

हेंचि सांग्चे खातिरी। सोण्णु आइलो मंदरगिरी।
कृष्णा तुजी लीला बरी। आइकला पूर्वि बहूत ॥६०३॥

तुजें दुष्ट संहार कार्य। धर्म स्थापनेक अनिवार्य।
धरी स्थैर्य आणि धैर्य। विजय तुमचेचि खरें ॥६०४॥

त्रेत्राग्निसारिखें त्रिमूर्ति। गोमंताचल चडताति।
पवित्र जाल्लिं ती धरती। जाल्लीं वैभवी श्रीमंत ॥६०५॥

होम धेनुचे क्षीर। पीव्नु ते यादव वीर।
कर्ताति दोग्गई नमस्कार। सुटलो जयकारु मळबां[५६] ॥६०६॥

कृष्ण भार्गवाली लीला। चोइताति देव सगळा।
शिंप्ली वैलान फुल्लां। जाल्ले हर्ष निर्भर ॥६०७॥

त्रेतें दाशरथी रामु। आणि भगवान् परशुरामु।
द्वापरेचें कृष्ण बलरामु। हे सर्व विभूति त्या भगवंतालि ॥६०८॥

श्री गुरुचरितामृत

५६ आकाशातु

आइक काणि मुखावैलि। कीर्ति ती परशुधरालि।
जेन्ना विप्र पतित जाल्लिं। राख्लें परत रामान ॥६०९॥

कालाच्या वैपरीत्यान। सारस्वत जाल्लें पतन।
वैदिक मार्ग सोडून। स्वैराचार गा पतित ॥६१०॥

अभिचारादि मारण। वाम मार्गाचि अनुकरण।
अंधानुकरण पठण। हे वै घडलें आइका ॥६११॥

पंचमकार[५७] सहित। वाम मार्ग ते अनुचित।
शास्त्र मार्ग सोण्णु पतित। जात्तऽगेल्लें जन जनित ॥६१२॥

ज्ञान्यानि केल्लि प्रार्थना। आइली दुर्गति ब्राम्हणा।
राख्तालें तरीं कोणि ना। राकरे देवा वेदधर्मु ॥६१३॥

५७ मत्स्य, मांस, मैथुन, [illegible], मद्य

प्रसन्न जाल्लो नारायणु। अवतरलो गा मुख्य प्राणु।
ताचि गा हरि नंदनु। प्रगटलो मध्व नामां ॥६१४॥

व्यासाल्या आज्ञेन। वैष्णवालें पुनरुज्जीवन।
केल्ला मध्वाचार्यान। तोचि गा जगतारकु ॥६१५॥

गोयंक येव्नु मध्वान। दिल्लें खरें तत्त्वज्ञान।
दशगोत्री सारस्वतान। घेत्लि दीक्षा मध्वालिं ॥६१६॥

आइकता हे वचन। जाल्लें साधका रोमांचन।
कर्ता भक्तीन प्रार्थना। वंदूनु सिद्ध मुनींक ॥६१७॥

मुख्यप्राणु हे नांव। आईकलो प्रथमऽचि हांव।
मंद आम्ही ना जाणीव। विवरि गा सिद्ध श्रेष्ठा ॥६१८॥

साधका सांग्ता विवर। हे तत्त्वज्ञानाचे विचार।
सुजीवि आणि संस्कार। हेचि गा श्रवणाधिकारी ॥६१९॥

सर्वोत्तमु नारायणु। जीवोत्तमु मुख्यप्राणु।
तोचि जगाचो प्राणु। पुत्रु तो नारायणांक ॥६२०॥

सुंदरु तो मुख्यप्राणु। बत्तीस लक्षणान पूर्णु।
तो वै अवतार कोर्नु। सेवा कर्ता नारायणालि ॥६२१॥

त्रेतायुगांतु हनुमंतु। तोचि भीमु द्वापरेतु।
मध्वाचार्य कलियुगांतु। साधकु तो भगवत्कार्या ॥६२२॥

एकवीस हजार साहाशिशं। श्वासोच्छ्वास अहर्निशि।
चलता आम्का कळ्नाशि। चलैता खरें मुख्य प्राणु ॥६२३॥

हंस नामक परमात्मालो। जपु कर्तालो हरिलो।
तो जपु श्वासु आम्गेलो। जीव ते अधीन जीवोत्तमाले ॥६२४॥

जीवोत्तमालो अवतारु। जाल्लो तत्त्वाचो प्रचारु।
वैदिक धर्माचो उद्धारु। घडलो ह्या रामक्षेत्रां ॥६२५॥

राम निर्मित सप्त क्षेत्र। मोक्षदायक ती पवित्र।
दर्शन निमित्त मात्र। जात्लें कृपापात्र भार्गवाल्या ॥६२६॥

कुमारगिरी कुंभकाशी। शंकरनारायणा बर्शि।
ध्वजेशु [५८] तो गोकर्णवासी। महाबलु मुकांबा ॥६२७॥

५८ कोटेश्वर

श्री गुरु चरितामृत

रजतपीठ सहित। सात ही राम निर्मित।
दर्शन मात्रान जीवित। सार्थक सत्य समजा ॥६२८॥

त्या मध्यें रजत पीठ। सर्व क्षेत्रांपेक्षा श्रेष्ठ।
भार्गवाक हें क्षेत्र इष्ट। अइक गोष्ठ विचित्र ॥६२९॥

सात क्षेत्रांक अधिपति। रामभोजु तो नृपति।
सदाचार संपन्न व्यक्ति। भक्तु तो भार्गवालो ॥६३०॥

तो योजिता अश्वमेधु। जमलें त्रैविधा साधु।
नाना राज्यांचे द्विजबंधु। भर्ले एकत्र तेन्ना ॥६३१॥

रामभोजालि विनंति। मानूनु आइला जगत्पति।
जामदग्नीक प्रणती। केल्लि त्या विप्र वृंदाने ॥६३२॥

बसोनु रजत पीठारी। मस्तक दवोर्नु चरणारी।
पूजिती अत्यादरी। गायलें गुण नारदानें ॥६३३॥

प्रसन्नु जाल्लो परशुपाणि। केल्लें अनुग्रह त्या क्षणी।
अनंतासन नांवानि। ह्या पीठारि सदैव अस्ता ॥६३४॥

दित्ता दर्शन लिंगरुप। रुद्रु नारसिंह स्वरूप।
दाखैन भक्तांक प्रताप। दित्ता इष्टार्थ प्रार्थितांक ॥६३५॥

अनंतेश्वरु म्हणताती। अशिशसांग्चि लोकरीति।
विष्णुलिंगई असताती। लिंग म्हळचारि प्रतीक[५९] समज ॥६३६॥

५९ प्रतिमा.

असो अनंतासनु। तोचि भार्गवु नारायणु।
तांच्या कृपेन मुख्यप्राणु। अवतरलो रजतपीठा ॥६३७॥

यज्ञ नाम यज्ञेश्वरा। भृगु नंदना सर्वेश्वरा।
ज्ञान भक्ति दीगा उदारा। ह्या गुरुचरितामृताक ॥६३८॥

तूंचि देवा प्रेरकु। अबोधाक तूं बोधकु।
गुरु तुग्गेलों प्रतीकु। तूं गा ताक्का बिंबु ॥६३९॥

मूलनारायणाली कीर्ति। सांग्चाक निमित्त ही कृति।
श्रीहरिली आणि गुरुप्रीति। मेळ्का माक्का निरंतर ॥६४०॥

यज्ञपुरुषाली [६०] कथा। कोण श्रद्धेन आइकता।
श्रवण कर्ता विवरिता। ताक्का प्राप्त इष्टार्थ ॥६४१॥

६० परशुरामु

दारिद्र्य आणि घनरोग। जात्ता परिहार उद्वेग।
ग्रहचार दुर्योग। न बाधि केद्दाण ताक्का ॥६४२॥

धन्य म्हणालो साधकु। जाल्लो गुरुचो तोकु।
तू तरी हरिलो प्रतीकु। सांग कथा जीवोत्तमालि ॥६४३॥

सिद्ध मुनी कृपाकरी। मध्वालि कथा विवरि।
मुख्य प्राणालें अवतारी। पाव्ले कशिशं सारस्वताक ॥६४४॥

ध्यानस्थु जाल्लो सिद्ध मुनि। हनुम भीमांक नमुनि।
आइकरे बाळा काणि। जगद्गुरु मम गुरुलि ॥६४५॥

श्री गुरुचरितामृताचो परशुराम चरित्र नामक
चौथो अध्यायु समाप्तु।
॥श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

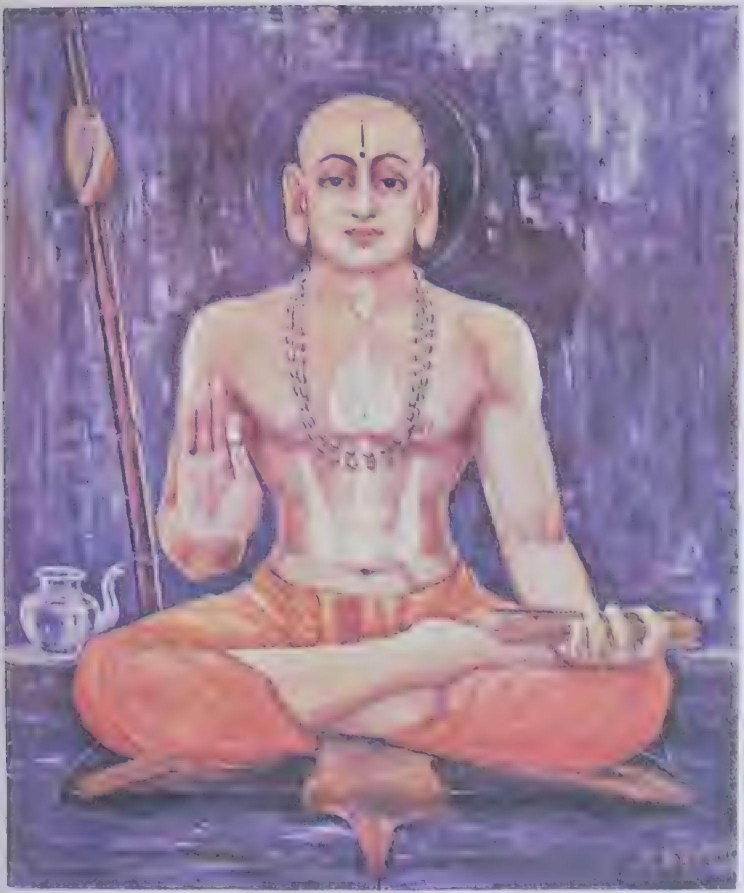

श्रीमदानन्दतीर्थ (मध्वाचार्य)

ॐ

श्री गुरुचरितामृत

मध्वचरित्र नामक

पांच्वो अध्यायु

श्री गुरुचरितामृत

।।श्री गणेशायनमः।। ।।श्री गुरुभ्योनमः।।

मंगलाचरण

श्री हरे सर्वोत्तमा। क्षीराब्धि तनया रमा।
मुख्यप्राणा जीवोत्तमा। पावा ह्या पामराक ।।१।।

मरुत सती भारती। ब्रम्हाणि हे सरस्वती।
रुद्राणि तूं पार्वती। दिय्या गति तत्त्वज्ञानां ।।२।।

श्री भू दुर्गारुपी। त्रिगुणात्मिका सर्वव्यापी।
विष्णुमाया स्वरूपी। दी माये भक्तिज्ञान ।।३।।

लक्ष्मी वायु सरस्वती। तुम्का परशुक्ल[१] म्हणताती।
अज्ञान सर्वथा नांती। तुम्हीं गे दोष रहित ।।४।।

१ अज्ञानादि दोषरहित

आतां माता पितांक। कुलपूज्य पूर्वजांक।
भक्तीन तांच्या चरणांक। कर्ता नमस्कार आदिं ॥५॥

स्वरूपोद्धारक गुरूंक। श्रीसुधींद्र कल्पतरूंक।
श्रीपाद राघवेन्द्रांक। कर्ता प्रणाम श्रद्धेन ॥६॥

सकल सद्वैष्णवांक। वंदिता भक्तीपूर्वक।
तुम्हीचि ह्या कृति प्रेरक। करा गा कृपा नित्य ॥७॥

मूलनारायणा हरि। नमस्कार तुक्का अवधारि।
सृष्ट्यादि सकल कर्यांचेरि। सत्ता तुजी सर्वोत्तमा ॥८॥

मध्वाले मानस पुत्र। त्रिविक्रम पंडित छात्र।
देवाल्ये कृपेक पात्र। तांचे पुत्र नारायणाख्य ॥९॥

तान्नि रचिलें मध्वविजय। अनुवादु हो हरिप्रिय।
जाव्वो अशिशं प्रार्थिता उभय। रात्ताले मध्व आम्का ॥१०॥

अनंत ज्ञानानंदु। कल्याण गुणाचो कंदु[२]।
चेतनाचेतनाक बंधु। चंदु बालार्कतेजु ॥११॥

नाथु तूं रमादेवीक। भारती मुख्यप्राणाक।
परमशुक्ल हे त्रयांक। स्वामी तू नारायणा ॥१२॥

निर्भयू तूं वेदरक्षकु। पांडवप्रियु गोपालकु।
नीलवर्णू निर्मलात्मकु। नमन गा वासिष्ठकृष्णा[३] ॥१३॥

तुज्जो कीर्ति भास्करु। आमुचो हृदयांधकारु।
काडों कीर्ति तुजी प्रखरु। दिव्वो सुज्ञान निर्मल ॥१४॥

२ गूढ ३ वेदव्यासु

श्री गुरुचरितामृत

त्रेतेंतु तू हनुमंतु। भीमु जाल्लो द्वापरेंतु।
आनंदतीर्थु कलियुगांतु। तू प्रथमु गा देवा ॥१५॥

दी निर्मल ज्ञानदृष्टि। आम्चेरि करी कृपावृष्टि।
राक सज्जना समष्टि। पावगा तूं हरिपुत्रु ॥१६॥

हरि भक्ति प्राप्तीक। गुरु भक्ति हे आवश्यक।
विश्व गुरु वायुक। करः वंदन भक्तीन ॥१७॥

विश्व गुरु वायुदेवालि। अवतार लीला वर्णिलि।
गुरु भक्ति तरी उद्देलि। वाड्ला वाली हरिभक्तीचि
॥१८॥

वायु तो जीवोत्तमु। रुद्र इंद्रांक श्रेष्ठतमु।
मंद मति हांव अधमु। क्षमकरा वर्णू कशिशं? ॥१९॥

ब्रम्ह रुद्रादि मुक्तांन। सांग्ला बळित्था सूक्तान।
तसल्या गरुली वर्णन। कर्ता हांव मतिमंदु ॥२०॥

सज्जना तुम्ही गुणग्राहि। कृपाकरा साधु स्नेहीं।
मेज्जे हें सान उत्रां ही। माना तुम्हि महात्मा ॥२१॥

असमर्थु वर्णनिक। बरप हे मन शुद्धीक।
गुरु महिमा सांग्चाक। उत्सुकु गा क्षमकरा ॥२२॥

सर्वज्ञु सर्वप्रेरकु। भगवत्कार्याचो साधकु।
अद्भुत कर्माचो प्रतीकु। अप्रतिमुगा गुरुरायु ॥२३॥

तरी मनशुद्धि खात्तिरी। गुरु महिमा सांग्ता बरी।
समुद्रस्नाना उपरी। जलधि आठ्तलि वे सांग ॥२४॥

मंदु हांव गांतां माळा। रत्नं तीं वायुलीला।
विषय क्रम पालटला। उरला उत्साहु बरें ॥२५॥

देवालि आज्ञा मानूनु। देवतेंक अनुकूल जाव्नु।
अंजनी गर्भा येवुनु। राक्ले वायुन साधूं ॥२६॥

श्री पतिली आज्ञा घेव्नु। सज्जनोद्धार चिंतूनु।
देवतेंक राक्ता म्होणु। अवतारु गा वायूलो ॥२७॥

कपिराजु तो केसरी। पत्नी अंजना सुंदरी।
त्यांच्या पुण्य उदरीं। प्रकटलो तो जीवोत्तमु ॥२८॥

अंजनी केसरींतु। जन्मलो म्हणे हनुमंतु।
वायु देवु ताच्यांतु। येव्चे कारण तरि सांगा ॥२९॥

WORLD KONKANI CENTRE LIBRARY
2214

साधकालो हो संशयु। ताज्जो मनाचो आशयु।
आइकता सिद्धालो रायु। सांग्ता कथा यथार्थ ॥३०॥

महामुनीं भारद्वाज। आश्रमा आस्ताना सहज।
आइलें एकु उन्मत्त गज। विघ्न करी यात्रिकांक ॥३१॥

आइकूनु हें केसरी। दुष्ट गजाक संहरी।
प्रसन्नु जाल्लो ताज्जेरि। मुनीं तो भारद्वाजु ॥३२॥

दिल्लो ताणे वरदानु। तुज्जा कुलांतु हनुमानु।
नाक्का तुक्का अनुमानु। जन्मता हे सत्य समज ॥३३॥

सद्गुणाचें वर्णन। कर्ताना ज्ञानी जन।
घेत्ताति ताज्जे निदर्शन। म्होणुची तो हनुमंतु ॥३४॥

ज्ञान भक्त्यादि गुणान। येत्ता हनुम नावांन।
आपैताति ऋषिगडण। हनुम म्हळचार ज्ञान ॥३५॥

बाल मारुतीली लीला। अगाध तो आकाशा उडला।
गिळ्चाक सूर्य मंडला। शक्य ना गा आड्डोचाक ॥३६॥

इन्द्र ताडी वज्रायुधान। निर्लीक्षिलें वज्र देहीन।
अद्भुत अशिशं उद्दारान। केल्ले स्तुति देवतेनि ॥३७॥

पोळोनु देवता रूप। हेंचि नारायण स्वरूप।
अशिशं समजून प्रताप। वर्णिलें सुग्रीव मित्रा ॥३८॥

पूर्ण भक्तीन नमस्कारु। कर्ता हनुमंतु वीरु।
दित्ता आलिंगान सीतावरु। कोमल भुजद्वयान ॥३९॥

एक बाणान ताल वृक्ष। आणि एकान वालि वक्ष।
छेदिं सुग्रीव समक्ष। दिल्लो ताक्का सर्व भोग ॥४०॥

धाडिलें हनुमंताक। सीताकृत्तीचे शोधाक।
दिल्लो संदेशु सीतेक। निर्गमिलो वानरेंद्रु ॥४१॥

रामबाणाभिमानी। जीवोत्तमु पावमानी।
रामबाणूचि मानी। सदा तन्मय रामकार्यां ॥४२॥

मारुति महा मेघु। संदेश रूपी जल अमोघु।
सीताकृती सस्याक अनघु। शिंपून केल्ले समृद्ध ॥४३॥

अशनी माल्र्या भूजात[6]। जात्ताति पळें भस्मसात।
तशिशं मारुतीसुत। लास्ता लंका ते अशेष ॥४४॥

अशनी [५] आकाशांतु लीन। तशिशं मारुती लंकेचान।
येव्नु गा तो महानु। रिगलो राम चरणां ॥४५॥

ब्रम्हांडोदर रामांक। खांद्यारि घेव्नु लंकेक।
उड्डिल्या ह्या विक्रमाक। अधिक रे बल गरुडापेक्षा
॥४६॥

पाक्कां नात्तिलो पक्षिराजु। भोग नात्तिलो योगिराजु।
अंतर्बाह्य सहजु। व्होंव्ता हो श्री हरीक ॥४७॥

देवु वायुवाहनु। ह्या नावान हनुमानु।
प्रसिद्धु गा महिमापूर्णु। अधिकु हो गरुडापशिशं ॥४८॥

क्रुद्धु त्या रामा चोव्नु। समुद्रराजु तो भीव्नु।
आपण पेल्तान सऽर्नु। दिल्ली वाट रामांक ॥४९॥

५ विद्युत्-विज

जाल्ले सेतु बंधन। युद्ध घडले राम रावण।
त्यामधें हनुमंतान। केल्ली शिक्षा रावणांक ॥५०॥

केल्लें सीतापहार। घेरे हे प्रत्युत्तर।
म्हणतचि मुष्टि प्रहार। कर्ता मारुती दशकंठा ॥५१॥

दाहा तोंडान वमन। केल्लें रक्त रावणान।
वालि आणी सहस्रार्जुन। जिंकलेत्ति पूर्वि ताका ॥५२॥

हनुमद्विजय हे श्रेष्ठ। सकडापेक्षा गरिष्ठ।
सीतारामांक जे इष्ट। कर्ता तेंचि हनुमान ॥५३॥

राम रावणाले युद्ध। यज्ञ गा तें प्रबुद्ध।
त्या यजमान्यांक बद्ध। सुग्रीवु तो रामालो ॥५४॥

अध्वर्यु तो हनुमंतु। लक्ष्मणु ऋत्विजु तांतु।
अध्यात्मिकु हो अर्थु। केल्लो पैलें मारुतीने ॥५५॥

रावणीन[६] मार्ले कपींक। बली लक्ष्मणु नागपाशाक।
वांचैता हनुमु कीशांक। हाण्णु पर्वतु संजीवनु ॥५६॥

कोमल कुसुम हार। रामपूजेक हाळचा सर।
गंधमादन गिरिवर। हाड्लो त्या कपिवरान ॥५७॥

रावणादिकांक मार्नु। अग्निदिव्या सीतेक घेव्नु।
अयोध्ये रामु महानु। आइलो पवमान सहित ॥५८॥

रामाक अनुसरुनु। आइलो तो हनुमानु।
रामसेवेंतु आपणु। समजता खरें सानु ॥५९॥

६ इन्द्रजित्

शामल कोमल काय। तांबडे कमलासार्खे पाय।
हनुमंताक ना सोय। नीयाळीत राम रूप ॥६०॥

सुपुष्ट दीग हात। कमल नेत्रांचि ज्योत।
जगमंगळ रामा नीयाळ्त। केल्लि सेवा बहुकाल ॥६१॥

पाटु जात्तरि रघुनाथु। रत्नहारु दीव्नु हात्तांतु।
आत्मीयांक दी अश्शिल्यांतु। घेगो सीते म्हणालो ॥६२॥

सीतेन तो रत्नहारु। केल्लो हनुमंताक अलंकारु।
पळैता हे जानकीवरु। धन्यु रे मारुतिराया ॥६३॥

आपल्या सेवेंतु निष्णातु। म्होणु कृपेन रघुनाथु।
दवोर्नु माथ्यारि हातु। चोइता कृपेन मारुती ॥६४॥

ब्रम्हु तूं खरें भावि। दिल्या ही सहभोग पदवी।
दयार्द्र वचनि निववि। तान्ह कानाचि दोनि ॥६५॥

मारुति सार्खे रामप्रीति। संपादिलेलें कोणि नांति।
अयोध्येचि सुख संपत्ति। उपेक्षि राम भक्तु ॥६६॥

हे रामा रघुनाथा। जगन्नाथा हनुमनाथा।
पुनः पुनः वंदिता। नंदलो [७] कपी आनंदाने ॥६७॥

मारुती हो महाबली। रामपंरधामा वेळी।
एक रुपान तुजा जवळी। राव्ला सदैव सत्य ॥६८॥

हनुमंता तूं जीवोत्तमु। तुज्जेरि रामा बहुप्रेमु।
कोणां मेळ्ना तो त्रिधामु। प्रसन्नु सदा तुज्जेरि ॥६९॥

७ सन्तोष पाव्लो

मोक्षाक अपूर्व साधन। श्री राम कथा श्रवण।
तें करीत प्रतिदिन। राब्ला किंपुरुषखंडा ॥७०॥

वायुल्या स्पर्श मात्रान। कुंतीक पुत्र संतान।
संतोषान सद्योजनन। ना गा ताका गर्भवासु ॥७१॥

तो पुत्रुचि भीमसेनु। श्री वायुदेवु महानु।
एकदा कुंती ताका घेव्नु। राब्ल्या खेळेत बाळा ॥७२॥

आइकता व्याघ्र गर्जना। पिल्लि कुंती महामना।
हात्तां निस्सर्ली भीमसेना। चूर्ण जाल्लो शिला ॥७३॥

इंद्रालें वज्रायुध। कर्ता पर्वत छेद।
भीम शरीर अच्छेद। जाल्ले पर्वत ही चूर्ण ॥७४॥

स्नान प्रायेरि भीमु। भोंवतालो बदरिकाश्रमु।
थंचो तो सिंहस्तोमु। थरथरी भीममुष्टि ॥७५॥

तस्सलो भीमु गजनगरी। खेळ्ता कौरवा बरोबरी।
तांचे दौर्बल्य हास्य करी। एव्जीत बाल्य आपुलें ॥७६॥

कौरवाले कालकूट। जीरैले भीमान नीट।
मार्ले ते दुष्ट कूट। मऽर्नि तो प्रमाणकोटी[८] ॥७७॥

आश्चर्य नई हे भीमांक। आधारु तो सर्वजीवांक।
लीला ही जीवोद्धारक। करणि ती हरि आज्ञा ॥७८॥

योगी एकलो योगाग्नीन। कर्ता स्वतः शरीरदहन।
आपुल्या धर्म संग्रहान। जिंकता कामादिकांक ॥७९॥

८ एक जलाशय

बिंबरूपी परमात्मांतु। मेळ्ता जीवु त्वरितांतु।
तशिशं भीकर लाक्षा ग्रहांतु। लीला करी भीमसेनु ॥८०॥

लाक्षागृहाँभीमान। भांव्डांक अग्नि भयान।
हिडिंबासुराल्या वधेन। राक्लें तांणे सर्वांक ॥८१॥

शुद्ध ज्ञानी भीमान। केल्लें पुण्य व्यासार्पण।
सकल विहित कर्मान। केल्लिं पूजा कृष्णालि ॥८२॥

बकासुरा मार्नु काण्णु। द्रौपदीक स्वीकार्नु।
जलांतुले हंस उब्बूनु। फिर्ता जशिशं गगनांगणी ॥८३॥

तशिशं भीमु राजहंसु। बकू असुर विद्वांसु।
ताज्जो पक्षु करी ध्वंसु। मांड्ता सिद्धांत शस्त्रीं ॥८४॥

साधकाक आइलो दुभावु। प्रश्न कर्ता तो सुजीवु।
मेज्जांतु ज्ञानाभावु। जाल्ला हे सिद्धमुनें ॥८५॥

द्रौपदी स्वीकार्ले अर्जुनान। तूं म्हणता भीम सेनान।
तिक्का तरी पांच बाम्मूणं। पतिव्रता म्हणता खरें ॥८६॥

ह्या तत्वाक गूढार्थ। सांगल्या शिवाइ कळ्ना अर्थ।
अज्ञानि कर्ता अपार्थ। विवरिगा गुरु सिद्धां ॥८७॥

आइकरे हे साधका। द्रौपदी पंचात्मिका।
शामला[१] शच्यादि प्रमुखा। पत्न्यो गा पांडवांक ॥८८॥

पांडव देवता पुरुष। त्यांच्यो नियत सती अशेष।
द्रौपदीक सर्व आवेश। घड्ता त्या त्या काळी ॥८९॥

१ श्यामला भारती शचि उषा आनि पार्वति.

तांतु मुख्य सती भारती। ती वायूलि नियत सति।
तीचि गा द्रौपदी शक्ती। म्होणूचि भीमु स्वीकारी ॥९०॥

नील कमलाचि कांति। मंद हास मुखद्युति।
विशाल नयन ज्योति। भीमा प्रीति कृष्णरुप ॥९१॥

माव्ळो भीमा वसुदेवु। पूतु कृष्णु तो देवु।
अवतरलो महानुभावु। ताज्जा सेवेक समज ॥९२॥

कृष्णेल्या स्वयंवरांतु। बहुकाल उपरांतु।
दर्शनमात्रा न हृदयांतु। आनंदान भीमु रमलो ॥९३॥

सदा गदापाणि भीमु। जरासंधाक तो यमु।
कीचक कुलाचो निर्नामु। कर्ता भीमु भयंकरु ॥९४॥

राजसूय महायागु। तांतु प्रधानभागु।
भीमालोचि महात्यागु। धर्मजु निमित्त मात्र ॥९५॥

द्रौपदीले केश बांध्ले। कौरवकुल निर्दाळिले।
दुष्ट ते काळसर्पालें। मृत्यु गा भीमसेनु ॥९६॥

हिंस्र प्राणी ते सगळे। दावानली कशिश उर्तलें?।
वृकोदराग्नींतु भाजले। किम्मीर असुर सर्व ॥९७॥

मिथ्यावादि मणिमंताक। क्रोधवशादि असुरांक।
हे सर्व लोक कंटकांक। खरें मार्ले भीमान ॥९८॥

भस्मावृत अग्निखंडु। वारो सुट्ताना प्रचंडु।
उज्वल तेजान अखंडु। जशिशं लास्ता वंश[10] सगळें ॥९९॥

[10] वासो

तशिशं अज्ञात काळीं। कीचकाली वंशावळी।
दीव्नु भीमान बली। राक्ले गा साधुवंश ॥१००॥

दुर्जयु दुरितक्रमु। कृष्णानुवर्ति तो भीमु।
अर्जुनासहित विक्रमु। कर्ता नाशु कौरवालें ॥१०१॥

अधर्मि ते अतिक्रूर। धार्तराष्ट्र सहोदर।
बाप्पै सहित ते असुर। जाल्ले बली भीमकोपा ॥१०२॥

नाना विध आयुधान। मार्लें तांका भीमान।
भीष्मादि रहित रण। जिक्चें कशिशं त्या पापीन?
॥१०३॥

कौरव कुल कोलाहलु। भीमसेनु तो प्रबलु।
ताज्जो तो कोपानलु। करता भस्म कौरवां ॥१०४॥

कृष्णांघ्रि सरोजांतु। भीमु तो भ्रमर रूपांतु।
निमग्नु द्रौपदी चित्तांतु। संचरी तो राजहंसु ॥१०५॥

प्रजा कमल भास्करु। श्रेष्ठतमु महावीरु।
सहोदर समेतधीरु। शोभ्ता तो राजगृहा ॥१०६॥

पवित्रनाम कृष्णाल्या। भगिनी ती सुभद्रेल्या।
पौत्रु त्या परीक्षिताल्या। रक्षणेंतु दिलें राजस्व ॥१०७॥

सोदरसहित भीमान। परीक्षिताचेरी कृपेन।
दिल्लें राज्य स्वाधीन। स्मरूनु कृष्ण रूप ॥१०८॥

पाव्लें सर्व मूलरूप। आप आप्लें स्वरूप।
आठोनु आप्ले बिंबरूप। सर्वाधार देवाले ॥१०९॥

सदा श्रीहरीक शरणु। पराक्रमि तो समीरणु।
दैत्यांक प्रहार कोर्नु। केल्ले शक्ति शून्य ॥११०॥

वारें कशिशं मेघ उब्वोनु। स्खलित कर्ता विरोनु।
तशिशं राक्षस ते भीव्नु। जाल्ले गा जीर्ण शीर्ण ॥१११॥

असुर ते पूर्ववैरी। मिथ्यावादी आणि मत्सरी।
जन्मा आइले युगांतरी। तोचि गा हो कलियुगु ॥११२॥

जल्पक[११] ते अतिवादी। शास्त्रनिंदकरे प्रमादी।
निर्गुण ब्रम्हांक साधी। रची सर्व दुष्ट शास्त्रं ॥११३॥

श्रीपुष्प सौगंधिक। हाड्ताना भीमसेनाक।
मार्चे पड्ले दैत्यांक। नांव ताज्जें मणिमंतु ॥११४॥

११ वाचाळि.

रुद्र वरान विप्रकुलीं। जन्मलो तो महाकली।
दुष्ट शास्त्र तीं रचिलीं। मोहक मूढग्राही ॥११५॥

अन्यान्य दैत्यचोर। जन्मले गा तें प्रचुर।
बोधिलें वारंवार। मूढां ते मोहशास्त्र ॥११६॥

चोर श्वान मार्जर। इच्छि हविष्यान्न रुचिकर।
तश्शिं ते चोर असुर। करी स्पर्ष वेदपुरुषा ॥११७॥

घेव्नु संन्यासी वेषु। संपादिलो जन विश्वासु।
शास्त्र ज्ञानाचो आभासु। सांगूनु जना भुलैलें ॥११८॥

कमल युक्त सरोवर। शुद्ध जलाचें आगर।
उन्मत्त दुष्ट गजवर। रिग्गूनु करी चिकलाटें ॥११९॥

अवैदिक मताचि ख्याति। पोळोनु केल्लि ही युक्ति।
अपार्थ विवरी श्रुति। पाव्ले राक्षस बहुकीर्ति ॥१२०॥

अवैदिकालेचि शब्द। सांग्ताति कोर्नु युक्तिभेद।
तांगेलोचि नास्तिक बोध। दिव्चो ध्येयु असुरांलो
॥१२१॥

वेदार्थ निर्णायक। पवित्र त्या ब्रम्हसूत्रांक।
अपाख्यानी राक्षसांक। मान्का खरें वेदचोर ॥१२२॥

सूत्र रचिले वेदव्यासान। केल्लें राक्षसान अपाख्यान।
दित्ता क्षमा बादरायण। म्होणु वांच्लें गा दुर्जन ॥१२३॥

मणिदीपांचि ती कांति। चिकलांतु निपता पूर्ति।
असुरालि वचन युक्ति। निप्पैता द्युति वेदांताचि ॥१२४॥

भोळे भावुक जनांक। फसैताति दैत्य मूर्ख।
जीवु देवु सगळे एक। म्हणपि तो आसुरी मिश्र ॥१२५॥

जग हे सर्व मिथ्य। देवु गुणहीनु हें सत्य।
कर्तीति प्रचार दैत्य। म्हणताति जीवूचि देवु ॥१२६॥

अति वाद्याल्या उत्रांक। मोहित ते वासुदेवाक।
विसरले गा अविवेक। पसरलो सर्वत्र काळोकु ॥१२७॥

देवाले आनंदादि गुण। हळूं विसरले गा जन।
भरलें सर्वत्र अज्ञान। जाल्लें जन युगांध ॥१२८॥

तत्त्व ज्ञानाचो भास्करु। अस्तमलो अनिवारु।
अज्ञानाचो तिमिरु। सर्वत्र भरलो जगां ॥१२९॥

तडपडले गा सुजीवि। तत्त्वज्ञानाच्या अभाविं।
ज्ञानीं लोकानुभवि। धर्लें ताज्ञी दुर्मार्ग ॥१३०॥

देवतेल्या बरोबरी। आइल्या ब्रम्हालि तीं स्वारी।
श्रीमुकुंद चरणाचेरी। केल्लि विनंति नमस्कारुनु ॥१३१॥

आइकूनु विनंति त्रियुगु[१२]। म्हणालो हो कलियुगु।
अवतारु ना म्हणे सुभगु। आज्ञा दिल्ली स्सहभोगा[१३]
॥१३२॥

हे पुत्रा सुमुखा[१४]। निवारि दुःख तें लोका।
ज्ञानदीरे जीवसखा। करी अवतारु पृथ्वीं ॥१३३॥

१२ कृत त्रेता द्वापर ह्या तीनि युगान्तु मात्र अवतारु कर्तालो. १३ वायुदेवाक नारायणान दिल्लेले स्थान. १४ वायुदेवु देवालो प्रथमपुत्रु. ताज्जे आनं एक नाव.

मेज्जे सद्गुणाचे निर्णय। विवरूनु वेद वाङ्मय।
करी आनंद तन्मय। सुजीवि साधु वृंदा ॥१३४॥

हरियाज्ञेचें किरीट। धरिले मस्तकारी श्रेष्ठ।
रुद्रादिदेव वरिष्ठ। करी प्रार्थना आदरान ॥१३५॥

तींचिगा मोतियां माळा। मना धर्ला त्या वेळा।
दयाघनु अंजनी बाळा। अवतरी भुवनभाग्यु ॥१३६॥

सज्जन सुजीवि तेन्ना। निरीक्षिति मुख्यप्राणा।
तत्त्वज्ञानऽचि कळ्ना। उद्धारु कशिशं तांचो? ॥१३७॥

साधका तरी हे आइक। येत्ता प्राणु अवताराक।
पैलेचि हीं लोकाक। कळैता रे अनंतेशु ॥१३८॥

मकर संक्रांति वेळु। भर्ता भावुकालो मेळु।
त्या वेळि एक्लो बाळु। चड्लो ध्वजस्तंभाग्र ॥१३९॥

आवेशु येव्नु अनंतालो। ध्वजाग्रारि तो नांचलो।
आणि अशिशं उद्घोषिलो। उक्कोळ्नु बाहु दोनि ॥१४०॥

आईका हे सज्जन। लोक हिताचे कारण।
अवतारु एकु शीघ्रान। जात्लो ह्या पुण्यभूमि ॥१४१॥

विश्वज्ञु तो तत्त्वज्ञानी। सर्वज्ञु गा भक्ताग्रणी।
ही खरें देववाणि। भार्गवु परशुरामालि ॥१४२॥

भार्गवूचि अनंतासनु। ताग्गेलाज़ेन मुख्यप्राणु।
जात्ता सर्वा हिता कारणु। प्रथमांगु तो हरीलो ॥१४३॥

स्वाभाविक सज्जन। आइकूनु भविष्य वचन।
पाव्ले गा समाधान। कृपा ही अनंतेशालि ॥१४४॥

सप्त द्वीपाब्दि धात्रि। कर्म भूमि अशिशं ख्याति।
भरतखंडाचि ही कीर्ति। उंच्चाइलि कली मध्यें ॥१४५॥

वेदाचलु भू धरु। नाना तीर्थांचो आगरु।
अनंतेशु तो रमावरु। कर्ता क्षेत्र पवित्र ॥१४६॥

मेरु गिरीचे भोंवती। शोभ्ता जशिशं उमापती।
शिवबेळ्ळी ग्रामु ख्याति। खंड इलावृत म्हणारे ॥१४७॥

परशुराम प्रतिष्ठित। विमान गिरींतु जाग्रत।
दुर्गा नित्य सन्निहित। क्षेत्र ते पाजकाख्या ॥१४८॥

भार्गवाले चारी तीर्थ। धनु परशु गदा सहित।
बाण नामक तें चतुर्थ। हरता पाप पुंजा ॥१४९॥

ही सगळीं भगवदायुध। पाप नाशितातित सावध।
पाजक नावांचे बोध। प्रध्वंस गा पातकांचे ॥१५०॥

पवित्र ह्या पाजकक्षेत्रीं। ब्राम्हण बहुत वसति।
मध्यगेहु तो बहुख्याति। पाव्ला गा पुण्य पुरुषु ॥१५१॥

शिवबेळ्ळि मूल स्थान। वैदिक तें पुरातन।
सद्गोत्रि तें कुलीन। नांव तें मध्यगेह ॥१५२॥

मध्ये घरचे ह्या नावांन। आप्पैतातित गौरवान।
नांव घेनाशि प्रीतीन। संबोधितित सर्व ॥१५३॥

धर्म प्रजा सिध्यर्थ। अर्थ कामादि पुरुषार्थ।
कन्येक वरिले तदर्थ। सुंदरी सत्कुलीन ॥१५४॥

नानावर्ण शोभित। मोक्षाक साधनी भूत।
अर्थात्मक अविवाहित। श्रुति कन्या सार्खि ॥१५५॥

तस्सलि सुंदर कन्या। ब्राम्हणी बहुत धन्या।
मेळ्ळि जन्मांतराचि पुण्या। पतिव्रता ती निष्ठात्मिका ॥१५६॥

वेदांत ज्ञानी विवेकि। मन इंद्रिय एकामेकि।
निर्मल उपनिषदा सार्खि। शुद्ध भक्ति युक्त ॥१५७॥

अहं ममकार रहितु। आनंददायि सती सहीतु।
भक्ति मुक्ति वेदांतु। अवतारु गा सतिरूपा ॥१५८॥

रमलो तो मध्यगेहु। सती सहित अतिस्नेहु।
अनंतेशारी बहु मोहु। पंडितु पुराण काव्यो ॥१५९॥

संबोधिति भट्ट नावांन। लोक सगळे बहु प्रितीन।
पुराणकथेचे व्याख्यान। करी शास्त्रोक्त नित्य ॥१६०॥

गोविंद सुंदर कथेन। हर्षती गा भावुक जन।
देवता आणि अनंतासन। आनंदले व्याख्याना ॥१६१॥

हरिकथामृत सेवि। सात्विकु तो अनुभावि।
जाल्यारि संदेहु संभवि। ब्रम्हु गुणी की निर्गुणु? ॥१६२॥

असुरालें तत्त्वज्ञान[१५]। ताज्जेन हे मिश्रज्ञान।
नाना संदेह उत्पन्न। गोदांळ्ता तो न कळता ॥१६३॥

१५ देवाक गुणनात्तिलो मोण्चे.

पुन्नाम नरक घोरु। तांतु पड्नाशी उद्धारु।
कर्ता गा निजकुवरु। पितरा तो आधार समजा ॥१६४॥

तसली ती पूर्ण रक्षा। तत्त्वज्ञानाचि निज शिक्षा।
सज्जना साधनाचि दीक्षा। दित्ल्याक म्होण्कारे पुत्रु ॥१६५॥

कर्दमां कपिलु श्रीशु। पराशराक वेदव्यासु।
पांडूक वायु विशेषु। जन्मलें पुत्र भीमादि ॥१६६॥

नारायणालि उपासना। कर्ता सेवा शुद्धमना।
संकल्पितु जाल्लो तेन्ना। आरंभली सेवा हरीलि ॥१६७॥

वर्ष संपूर्ण द्वादश। पत्नी सहित विशेष।
केल्लिं सेवा निर्दोष। कुलदैव अनंतालि ॥१६८॥

पंचेन्द्रिय मनबुद्धि। स्थिर राब्लि अनिरुद्धि।
विवेक वैराग्य वृद्धि। जाल्लें त्या दंपतीक ॥१६९॥

गुण समुद्र पुत्ररत्न। प्राप्तिक कर्तीति यत्न।
नाना व्रतांचे आचरण। करी हरी प्रितीक ॥१७०॥

शुद्ध वंश सदाचार। सदा शास्त्रांचे विचार।
संपूर्ण वैराग्यपर। संयमि जाल्लें स्वयं ॥१७१॥

ब्रम्हाल्या आज्ञानुसार। कश्यपादिति मुनिवर।
पुत्र प्राप्ति खातिर। केल्ला पयव्रतादि सर्व ॥१७२॥

तशिशं ही भट्ट दंपती। नाना व्रतादिक करताति।
पूर्णपुरुषालि [१६] प्रीति। प्राप्तिक करिती यत्न ॥१७३॥

१६ परमात्मु

ह्या दंपत्याक प्रसन्नु। जाल्लो तो अनंतासनु।
लक्ष्मीसहितु नारायणु। सन्निहितु त्या सतिपतीं ॥१७४॥

व्रतोपासीचे शरीर। शोभलें ते मनोहर।
पवित्र ऋतु कालावर। जाल्लिं गर्भवती सती ॥१७५॥

भरले पूर्ण नवमास। प्रसव कालारि विशेष।
श्रीहरिलें आज्ञा रायस। आइलो मुख्यप्राणांक ॥१७६॥

वऽचरे मुख्यप्राणा। प्रकट जारे जगत्राणा।
जगत्कल्याण कारणा। समीरण वऽच बेगि ॥१७७॥

आइकूनु पवनकुमारु। रजतपुराक आइलो धीरु।
अनंतासनाक नमस्कारु। घाल्लो तो विप्रगृहा ॥१७८॥

सुंदर राजमंदिरा। सुशोभित महाद्वार।
अलंकृत शय्यागार। नाना प्राकार युक्त ॥१७९॥

शिल्प कलेचे आगर। वैभवोपेत विहार।
निपला शत्रु त्या नगर। हे ऐकता नृपति ॥१८०॥

शत्रूंक बाइरि काण्णु। रायु प्रवेशिलो आपणु।
तशिशं तो समीरणु। रिगलो त्या शरीरि ॥१८१॥

सतीलें शरीर सुंदर। खरें तें हरि मंदिर।
थंचा जीवि काण्णु बाहेर। प्रवेशिलो प्राणु ॥१८२॥

ब्राम्हणील्या शरीरांतु। सामान्य जीवु गर्भांतु।
ताक्का लोकोनु क्षणांतु। प्रवेशिलो मरुतु ॥१८३॥

ते पर्यंत गर्भातुलो। जीवात्मु तो वेगळो।
तो ते प्रारब्ध भोगलो। दुःख ना वायुदेवाक ॥१८४॥

वायूऽक ना गर्भवासु। सर्व जीवालो अधीशु।
प्राकटचाचो दिवसु। तिथि ती विजय दशमि ॥१८५॥

वाज्ले दुंदुभि देवतेनि। आइकलें तें मंगलध्वनि।
स्मरिलें सर्व सज्जनानि। महिमा ती मारुतीलि ॥१८६॥

बत्तीस लक्षणांगु। श्रीहरीलो प्रधानांगु।
वायु शरीराक ना भंगु। ज्ञानीलो रायु गा तो ॥१८७॥

आराधकु अनंतालो। भट्टुघरां परतलो।
मंगल ध्वनि आइकलो। काड्ले पाय त्वरेन ॥१८८॥

पुत्रोत्सवाचि खबर। आइकता हर्ष निर्भर।
आनंदाश्रु भरपूर। गळ्ळे गद्गदित ॥१८९॥

आनंदमय सदन। सुंदर तें चन्द्र वदन।
घेत्ले गा पुत्र दर्शन। पाव्लो अनंतेशु तांका ॥१९०॥

जातकर्मादि कोर्नु। सकल देवाज्ञा ती घेव्नु।
बाळाक वासुदेवु म्होणु। दवर्ले नांव विधियुक्त ॥१९१॥

बाळु हो मुख्यप्राणु। नारायण परायणु।
सर्वज्ञु ज्ञान पूर्णु। आइला ज्ञान कार्या ॥१९२॥

वासुदेवु ह्या नावांक। अमर जाल्ले अनुमोदक।
वासुदेवाल्या प्रीतीक। पात्रु हो पावमानि ॥१९३॥

वासुदेवाक क्षीरान्न। कोरोका नित्य क्षीरपान।
म्होणु एक गो दान। पूर्वालयान[१७] केल्लें ॥१९४॥

त्या दान पुण्यान। पुत्ताक पूतु जावून।
जन्म आइलो परतून। शिक्च्या शास्त्र मध्वांलिं ॥१९५॥

मध्ध्यगेह दंपतीक। पार ना गा आनंदाक।
अनंतेशाल्या दर्शनाक। जाल्लें मना उत्सुक ॥१९६॥

आइले रजत पीठाक। प्रदक्षिणा घाल्लि एकलाक।
अनंता माधवा राक। तुजे कुळावि आम्का ॥१९७॥

निर्भीतु विशालनयनु। कांतीन चंद्रवदनु।
अमूल्य हो पुत्र रत्नु। अर्पितां तुक्का देवा ॥१९८॥

१७ [illegible]

अशिशं संकल्पि मध्यगेहु। अर्पिता बाळाक निर्मोहु।
अनंतासना तुज्जो स्नेहु। घडै देवा ह्या बाळा ॥१९९॥

अनिष्ट निवारिगा हरी। अनंता तूंचि कैवारी।
गळैत ते अश्रुवारी। जाल्ले कंठावरुद्धु ॥२००॥

अशिशं प्रार्थितां दंपति। बाळा घेव्नु मध्य रात्रि।
करीत श्रीहरीस्तुति। चाल्ले पाजक क्षेत्रा ॥२०१॥

पिशाच्यानि भोंव्चो वेळु। हांडीरि बस्ला तो बाळु।
काळ्कि राति कळवळु। भिल्लां मन सर्वांक ॥२०२॥

मंडळीतूलो एक्लो। पिशाचाक बळी पड्लो।
रक्त ओंक्तऽ कोस्सळ्ळो। वळवळी भूंय्चेरि ॥२०३॥

पिशाच ताज्यांतु रिग्गूनु। सांग्ता अशिश घर्जूनु।
बाळा निमिति वांचूनु। उर्लें हें समजारे ॥२०४॥

बाळु हो लोक गुरु। रात्ता हाक्का लोकेश्वरु।
नित्य हो आम्चो संचारु। चलारे वांच्ले तुम्ही ॥२०५॥

जाल्लो आश्चर्य चकितु। मध्यगेहु तो मनांतु।
बालकु हो अद्भुतु। पुत्रु गा अनंतेशालो ॥२०६॥

बाळाक होंटीतु घेव्नु। दिल्ले स्तन्य पोट भोर्नु।
धुवेल्या हात्तांतु दीव्नु। आवै गेल्लि ती भाइरि ॥२०७॥

वासुदेवालें रण्णें भारी। कशिश सांभाळ्तालि पोरी?।
मुग्धा कर्ता यत्न बहुपरी। पळैता वाट आवैलि ॥२०८॥

आवै आणिकई दिस्सना। बाळाले रणें राब्बाना।
युक्ति काहीं सुच्चेना। कन्या जाल्लि कंगाल ॥२०९॥

बालकु रड्ता भुक्क्षेक। अशिशं दिसले कन्येक।
कुळीतु शिज्जैला गोर्वाक। खावैलो वासुदेवाक ॥२१०॥

खाल्लो बाळान पूर्ति। भावु भैंणि ती खेळ्ताति।
गोर्व तरी निय्याळ्ताति। कोण बा हो वृकोदरु ॥२११॥

आवै आइलि त्वरितान। बाळु रड्तलो कोणेन?।
येव्जीत अशिशं बेग्गीन। जाल्लो वेळु मेज्जो ॥२१२॥

आइकूनु कुळ्ता खब्बर। आवै जाल्लि चिंतातुर।
धुवेर जाल्लि रागार[१८]। आणि मागता अनंतेशा ॥२१३॥

[१८] कांटिल

तूं दिल्लेलो बालकु। तूंचि ताज्जो रक्षकु।
अशिशं कशिशं अतिभक्षकु। आस्तली ही भूतबाधा ॥२१४॥

बालकाक ना अपचन। खेळ्ता तो आनंदान।
चिंतेक नारे कारण। अजब् गा जननी ॥२१५॥

समुद्र मथन ते जाल्ले। कालकूट विष जन्मलें।
विष ते पीव्नु जिरैले। तोचि गा हो मुख्यप्राणु ॥२१६॥

लक्ष्मी ती हरिरमणी। काहीं आश्चर्य पावुनि।
मुख्यप्राणा ती जननी। जाण सामर्थ्य ताज्जे ॥२१७॥

आक्षेपिलें साधकान। विष प्राशिले रुद्रान।
ही कथा सर्वांहि जाण। म्हण्णी तुमची विपरीत ॥२१८॥

संदेह तें निवारण। कर्ता म्हणे सिद्धान।
साधका करी मनन। कथा भागवताचि ॥२१९॥

सांग्ता तुक्का खरी कथा। कित्या तूं अमसर्ता।
रुद्राक गुरु आणि त्राता। दोन्नि ही मुख्यप्राणु ॥२२०॥

काळकूट ते पीव्नु। रात्ता सर्वाक मुख्यप्राणु।
थोडे ते रुद्रान घेव्नु। जाल्लो गा नीलकंठु ॥२२१॥

उपरांत त्या आवैन। धन्वंत्रिल्या मंत्रान।
रक्षा बाळालि चिंतून। दिल्ले स्तन सुमुखाक ॥२२२॥

बाळाले वाग् वैभव। आइकां निरीक्षितालि देव।
भारतीक लज्जा भाव। पतिल्या येंव्की नाक्का? ॥२२३॥

पतीतो भारतीलो। शब्द वेंचीत उल्लैलो।
आगमनु की वाणीलो। मांडलेल्या ब्रम्ह सभा ॥२२४॥

ह्या विश्वचेष्टिताली। बाल लीला आरंभली।
बसता उठता ही चाली। केवल विडंबन गा लोकां ॥२२५॥

एकदा प्रातःकाल। उठूनु बाळु तत्काल।
बैलाले धोर्नु बाल। गेल्लो गा पाटोपाट ॥२२६॥

वासुदेवालि जननी। आप्पैता होड ताळच्यानि।
निरुत्तर ते पोळोनि। विनविता भर्तारा कडे ॥२२७॥

आपणचि कईं निपलो। ना बांय्तु तळचांतु पड्लो?।
ना परऽत वाट चुकलो। येनिमू गा देवा ॥२२८॥

गेल्लो तरी कई बाळु। मध्यगेहाक हो तळमळु।
हो अनंतेशालो खेळु। राक देवा भिवोनका ॥२२९॥

वनचरानि दिल्लिं खब्बर। एक्लो वैला बरोबर।
भोंव्ला गिरिगव्हर। येना आप्पैल्यार सुधा ॥२३०॥

सांजेरि आइलो बाळु। वनचरु तो निर्मलु।
बाप्पै चोय्ता मोगाळु। आलिंगिलें आवैन ॥२३१॥

चिंतामणि दरिद्राक। मोक्ष मार्ग मुमुक्षूक।
मेळ्ळासार्खे पालकांक। ना गा पार आनंदा ॥२३२॥

कुटुंब पोषणेक। जाल्ले रीण भट्टाक।
रीणाचो आइलो घराक। विच्चार्ले ताणे रीण ॥२३३॥

भट्टालि दीनवाणी। आइकणार ना कोणि।
रीण दिल्लेलो तो धनी। करी निंदा निष्ठुर ॥२३४॥

भट्टान धर्रे उपोषण। पावैनश्शिं तुजे रीण।
घेना खरे खाण जेवण। आण अनंतेशालि ॥२३५॥

जेवणा आप्पैले बाळान। बाप्पै सांग्ता मोगान।
बैलाक केल्लेल्या रीणान। जाव्का हांवे मुक्त ॥२३६॥

चिंचारे ते मेज्जून। दिल्लें धनीक बाळान।
जाल्लिं ती नवरतुन। वंदिलो त्या वासुदेवा ॥२३७॥

मुक्ति बीज दिल्लें बाळान। तुटले गा भवबंधन।
बहु जन्माचा पुण्यान। धनिकु तो धन्यु जाल्लो ॥२३८॥

विष्णु भक्तु वायुदेवु। सज्जनालो तो गुरुदेवु।
आनंदु दिव्यो स्वभावु। तरी निपला बालरूपी ॥२३९॥

मेघ धांप्ताले सूर्याक। तरी आतंकना कमलांक।
फुलतांति तीं प्रति एक। फुलले गा साधसंत ॥२४०॥1

वासुदेवाल्या निमिति। पाव्लो मध्यगेहु ख्याति।
सर्वांक बाळाचेरि प्रीति। जाल्ले दंपती जनप्रिय ॥२४१॥

बंधूल्या लग्न कार्याक। आइले घेव्नु बाळाक।
लग्नांतु मग्न आवैक। ध्यासु ना बाळाचेरि ॥२४२॥

तीनि वर्षांचो पोरु। क्षणमात्रान अगोचरु।
कर्तीति जन विचारु। बाळु हो कोणु खंचो? ॥२४३॥

बाळाक पोळोनु पथिक। प्रश्नितातित प्रत्येक।
एक्लोचि वत्ता खैंक। म्हळचार हास्ता बरो ॥२४४॥

रात्रा वाट भीकर। एक्लोचि पाव्लो कुडुउर।
केल्ले भक्तीन नमस्कार। रुद्रांतर्गत श्रीहरीक ॥२४५॥

'ताळेकुडे' ग्रामांकेव्नु। नारायणाक वंदूनु।
लोकप्रिय हरिनंदनु। पाव्लो रजत पीठाक ॥२४६॥

वायुदेवालो नमस्कारु। नारायणांक प्रियकरु।
अनेक अश्वमेधि कर्तारु। त्या पेक्षा हें फल अधिक ॥२४७॥

अशिशं म्हणपि सुर भूसुर। चोइताति हे चमत्कार।
अनंतासनाक नमस्कार। कर्ता बाळु भक्तनिधि ॥२४८॥

सदा देवाल्या लाग्गि। अस्ल्यारि तो महायोगी।
ना देवाल्या सलगि। करी नमस्कार विशेष ॥२४९॥

वायु देवु लोकगुरु। आदर्श आम्ही अनुसरु।
देवाक घाल्ता नमस्कारु। मेळ्ता पुण्य अतिशय ॥२५०॥

अश्याण मध्यगेह दंपति। शोधिले पुत्र प्रति।
रान वन सर्वै भोंव्ताति। विचारी त्या जनपदां ॥२५१॥

विकसित कमल सोद्दूनु। येत्ताति भोवरें धाव्नु।
सुगंध वायु अनुसरूनु। पाव्ताति कमला कडे ॥२५२॥

जनाल्या मार्गदर्शनान। पळैले गा पुत्र वदन।
दिल्लें दोग्गानि आलिंगन। संयमिले सुखाश्रु ॥२५३॥

वासुदेवाक विचार्ले। कोणरे बरोबरी आइले।
तुम्ही खैं खैं फिरले। तुक्का सहायु कोणालो? ॥२५४॥

मधुर मोहक उत्रांन। कर्ता पूज्यांक समाधान।
ताळेकुडे कुडुउर दोन। स्थान रुद्र देवालें ॥२५५॥

रुद्रांतर्गतु नारायणु। तोचि मेज्जालाग्गि येव्नु।
ताणे सगळे कडे भांव्डावुनु। सोड्ले ह्या रजतपीठां
॥२५६॥

बाळाले वचन आइकूनु। अनंतासनाक वंदूनु।
ह्या साहसीक राक्कूनु। पाव ह्या दुर्बलांक ॥२५७॥

हो खरो एकांतप्रियु। निर्मलु आणि निर्भयु।
भोंव्ता हो योगिवर्यु। परिव्राजका सार्खे ॥२५८॥

पाजक क्षेत्र पवित्र। लाग्गिचि विमानगिरी क्षेत्र।
दुर्गा देवि ती सर्वत्र। संचारु कर्ता सदा ॥२५९॥

वासुदेवाक तिज्जी रक्षा। खरे आवैले पेक्षा।
अधिक गा तिज्जि दीक्षा। राक्चे वासुदेवाक ॥२६०॥

शब्दाभिमानि भारती। ज्याक सदा वंदिती।
त्या वायुदेवाक सुकृति। जाल्लो गुरु मध्यगेहु ॥२६१॥

करैता अक्षराभ्यासु। दित्ता सर्वज्ञा आदेशु।
म्हणालो तो जीवेशु। कित्त्या पुनरावृत्ति शब्दांचि ॥२६२॥

महामतील्या ह्या उत्रांक। आश्चर्य दिस्लें बापैक।
दृष्टि जात्ली ह्या बाळाक। म्होणूचि निवडी एकांत ॥२६३॥

वचन वाचनांतु मधुरु। वायुलो हो अवतारु।
नेण कोणु हो विचारु। आइका घटना महत्वाचि
॥२६४॥

नेयंपल्ली ग्रामांक। एक विवाह कार्याक।
आवै ते वासुदेवाक। आइली घेव्नु बंधुवर्ग ॥२६५॥

मडिनाय वंशाचो एकु। ब्राम्हणु शिवनामकु।
बहु प्रसिद्धु पुराणिकु। सांगता पुराण थांगा ॥२६६॥

शास्त्र विरुद्ध वचन। आइकूनु वासुदेवान।
हे पंडिता चूकि सांगूनु। फसैता कित्त्या सज्जना
॥२६७॥

आश्चर्य पाव्ले श्रोत्रगण। बाळान निजार्थ विवरण।
कोर्नु केल्ले समाधान। त्या सज्जनां सर्वां ॥२६८॥

शिवभट्टाक अपमानु। तो जुरलो निप्प्योनु।
मध्यगेहु हे आइकूनु। हर्षिलो शास्त्रप्रेमि ॥२६९॥

प्रतिभा संपन्न पुत्राक। दीव्नु राक्खिलो कुलाक।
अनंतासना एक्लाक। समर्पिलें नमन ताणे ॥२७०॥

तो पुराणांतु अग्रगण्यु। व्याख्यान कोर्चा निपुणु।
श्लोक गायन आपणु। कर्ता वासुदेवु ॥२७१॥

एकदिवसु भट्टान। सांग्ता पुराण व्याख्यान।
कर्तऽचि वनवर्णन। आइलो शब्दु लिकुच ॥२७२॥

जाइनि भट्टाक मनन। कऽर्नि ताज्जे विवरण।
तश्शीचि विवरिले पुराण। सांग्ले पुत्तान विवर ॥२७३॥

लिकुचार्थु पास्पोणोसु। आइकलो हो बाप्पूसु।
पुत्रालो ज्ञान विशेषु। पोळोनु हर्षलों खरें ॥२७४॥

वासुदेवाक उपनयन। जाल्लि सिद्धता पूर्ण।
जमले विद्वांस ब्राम्हण। पळैलें गुरु बलादिक ॥२७५॥

निर्दोष मुहुर्ताचेरी। बाळु जाल्लो वेदाधिकारी।
शोभ्लें जानवें खांद्यारि। वटु वामना सार्खें ॥२७६॥

वेदाभिमानि देवता। जाल्लें सर्व हर्षचित्ता।
आम्चि कीर्ति हो वाडैता। म्हण्ताति मळबांतुलेन ॥२७७॥

विहित साधना युक्त। उपनयन केल्लें सूक्त।
अग्निकार्य ते वेदोक्त। कर्ता शोभली शिखा ॥२७८॥

बाप्पैन केल्लो उपदेशु। सेविं अग्नि गुरु विशेषु।
नाना व्रतादि अशेषु। करी अध्ययन आम्नाय ॥२७९॥

सूर्य चंद्र कर्मसाक्षि। हसलें देव समक्षिं।
भावी ब्रम्हांक शीक्षि। बाप्पै हो नेण बावुडो ॥२८०॥

सदाचार संपन्नु पूतु। कुमार[२०] समान सुव्रतु।
त्रिकाल संध्या क्रियेंतु। निमग्नु गा नित्यकर्मी ॥२८१॥

लोकेशु वायुदेवान। केल्लां कौपीन धारण।
निप्पोनु स्वरूप पूर्ण। घेत्ला वेषु दरिद्रालो ॥२८२॥

२० स्कन्द.

देवसभा सदन। चर्चिता हे कुतूहलान।
अनगत्य कार्याचरण। कर्ता कित्या वायुदेवु ॥२८३॥

एकदा सर्प रूपान। आइलो राक्षसु त्वरितान।
जन ते प्राण भीतीन। धांव्ताति दैन्य दुःखि ॥२८४॥

भयंकर विष ज्वालेन। वासुदेवालो प्राणहरण।
कोर्चाकाइलो त्या क्षणान। दंशी चरण बाळालें ॥२८५॥

तांब्डे मोवाळ बोट्टान। घाल्लें सर्पाक चिर्डून।
राक्षसु तो वळवळूनु। मेल्लो सर्प दर्पाचो ॥२८६॥

पावमानिल्या चरणांक। तोंऽड घाल्लेल्या सर्पाक।
सार्खे तो गरुड तोंऽडाक। पड्लो म्हणा दैत्यु ॥२८७॥

दुर्जन धर्तीतिपाय। नेणती ज्ञानोपाय।
तशिशं सर्प आयुर्दाय। जाल्ले व्यर्थ समजा ॥२८८॥

वासुदेवालि स्तुति। देवगण तीं कर्तीति।
रुद्रेंद्रादि बृहस्पति। करी धारण चरण रज ॥२८९॥

तसलो अवतार कारण। धर्ता ब्राम्हण चरण।
कर्ता शास्त्रांचें अध्ययन। खरें गा ही लोकशिक्षा ॥२९०॥

मानव चर्येंचो महिमु। जाण्ता सर्व वेदधर्मु।
नाना कलेचो मर्मु। जाल्ला ताक्का कर कंदुकु[२१] ॥२९१॥

२१ चेंडु

नाना वयाचे चतुर। आस्सति मित्र प्रचुर।
स्पर्धा लाय्ताति प्रखर। तरी प्रथमु वासुदेवु ॥२९२॥

उड्च्यांतु धांव्च्यातु मुख्यु। मनोवेगाचे हनुमाख्यु।
समुद्रु उड्च्यांतु प्रमुखु। सखू गा रामचंद्रालो ॥२९३॥

खेळ्चें उड्चें पोंव्चे। धांव्चे धोर्चें पाडोंचें।
उखडाइचे आणि उक्कोळ्चे। हात्तूंतु भीमूचिगा खरे ॥२९४॥

वासुदेवालो गुरु। पूगवनाचो[२२] थोरु।
शास्त्री पंडित प्रवरु। तरी मेरु अहंकाराचो ॥२९५॥

२२ तोटतिल्लाय नामकु ब्राह्मणु

श्री गुरुचरितामृत

वासुदेवालो खेळु मेळु। पोळोनु कोपानलु।
सांग्ता अरे तूं उडाळु। शिक्तालो कशिशं शास्त्र?
॥२९६॥

हास्सऽत म्हणता बाळु। अर्धमर्ध सांग्ता कालु।
व्यर्थ कर्ता कित्या सकलु। म्होणु जाल्लों निरासक्तु
॥२९७॥

आइकूनु कोपु गुरूक। आइलो नांका तलवाक।
म्हणालो रे तूं उल्पाक। उद्धटु गा अतिवादी ॥२९८॥

तरी सगळो मंत्रभागु। सांगरे सांगोपांगु।
अइकूचो हो योगु। मेळचार धन्य म्होणूया ॥२९९॥

उच्चार लक्षण सहित। स्खलनादि दोषरहित।
सकल शिक्षणाचें मूल स्तोत्र। आइकलो पूगवनाचो ॥३००॥

आचार्य सहित देवता। आइकून पाव्ली धन्यता।
सहपाठि ते हर्षचित्ता। म्हणालें आमुचो ज्ञानी ॥३०१॥

पूगवनालो पूतु। वासुदेवालो स्नेहितु।
सदा शिरोवेदनेंतु। भोग्ता दुःख अधिक ॥३०२॥

फुंकूनु कान सुमुखान। वेदना हरली क्षणान।
जन्मारभ्याचा दुःखान। केल्लो मुक्तु मित्राक ॥३०३॥

श्रवण मात्रान सगळे। महानारायण सांगले।
हजारो श्रुति संकुले। प्रकटी प्रतिभा बलानें ॥३०४॥

महदैतरेय गुरुक। विवरिलें अर्थ पूर्वक।
विष्णु भक्तीचि काणुक। बीज ते मुक्ति दीव्चें ॥३०५॥

करी करी दुष्टाक दमन। कळै कळैगा तत्त्वज्ञान।
विष्णुलें तें अनंतगुण। सांगरे तुष्टार्थ भक्तां ॥३०६॥

तीनि लोकाचो गुरु। शिक्कूनु शास्त्राचो सारु।
परतलो घरां समीरु। आनंदले तीर्थ रूप ॥३०७॥

संप्लो गुरुकुलवासु। पोळोनु सज्जनालो त्रासु।
दिल्लें तांका आश्वासु। गुरु वासुदेवान ॥३०८॥

हृदयांतु धोऽर्नु श्रीपती। विशाल मनाचो नियति।
सच्छास्त्र ते पळवताती। दैत्य ते दुर्विनीत ॥३०९॥

सच्छास्त्र प्रचाराक। निस्संग हरि प्राप्तिक।
यतिधर्म हे अवश्यक। म्होणु स्वीकार्ता शीघ्र ॥३१०॥

दुष्ट शिक्षणांक दंड। धोर्का अवश्य उद्दंड।
मातले असुर प्रचंड। तमांध ते तत्त्वद्वेषि ॥३११॥

मेज्जें हे तात्त्विक समर। घेत्लीं दुर्गा ती अवतार।
ती कर्ता दैत्य संहार। मेज्जो मार्गु अहिंसकु ॥३१२॥

अनंत नामक हरीलें। ध्यान ते मनांतु धर्लें।
गृह त्यागादि संकल्पिलें। भावें वंदी सर्ववस्तु ॥३१३॥

आवै बाप्पैन विचार्लें। तू सर्व वस्तु कित्या वंदिलें।
वासुदेवान सांग्ले। वंदिले मिगेल्याक[२३] हांवें ॥३१४॥

२३ मिग्गेल्या देवाक.

गुरु शोधिता लोकगुरु। अवतारी नराकारु।
गुरु शिष्याक मुक्तद्वारु। उगडी ना खरें ॥३१५॥

सर्वालंकारु त्यागु। त्यजिल्यारी सर्वभोगु।
नात्ल्यारि विरक्तियोगु। शोभाचि ना भक्ताक ॥३१६॥

विरक्तचालंकारयुक्तु। अच्युतालो परम भक्तु।
निर्मलू शास्त्रासक्तु। संदेही चरमाश्रमी ॥३१७॥

हंस नामक परमात्माल्या। परंपरेतु आइल्या।
अच्युतप्रेक्ष यतील्या। चरित्रेंतु गोष्ट ही आइल्या ॥३१८॥

द्वापरेंतु हो मधुकरी। पांडवाल्या राजघरी।
पांचाली करी स्वीकारी। भिक्षा ती बहुतदिवस ॥३१९॥

द्रौपदी तीचि भारती। तिज्या अमृतान्नान सन्मति।
ताज्जेन सद्विद्या प्राप्ति। मेळ्ळो अधिकारु साधनेंक ॥३२०॥

शिकलो तो मायावादु। कित्ते केल्यारि जाइनि बोधु।
कर्ता गुरु कडे संवादु। सांग्ता तो आइक बाळा ॥३२१॥

धरी तू हरिचरण। माग ताज्ल्या तत्त्वज्ञान।
दित्लो तो मार्गदर्शन। करी साधन निश्चिंत ॥३२२॥

अच्युत प्रेक्षालि स्वारी। आइला रजतपीठापुरी।
अनंतास्नालि भारि। केल्लि सेवा अहर्निशी ॥३२३॥

सेवाकर्ता भक्तीन। माग्ता तो तत्त्वज्ञान।
एकदा अनंतेशान। दिल्लि भविष्यसूचना ॥३२४॥

आवेशु येव्नु येक्लेक। सांग्ले अच्युतप्रेक्षाक।
शिष्यूचि जात्लो ज्ञानांक। कारणु कालांतरान ॥३२५॥

अनंतेशालि आज्ञा म्होणु। ताग्गेलेचि ध्यान धोर्नु।
शिष्यालि निरीक्षा कोर्नु। राब्ले अच्युतप्रेक्ष ॥३२६॥

सकल सज्जनालों गुरु। साधकांलो कल्पतरु।
गुरुक सोद्दित समीरु। पाव्लो रजतनगरी ॥३२७॥

चोय्ता अच्युतप्रेक्षांक। राब्लो तांच्या सेवेक।
आइला ताज्या उद्धाराक। नेण हे रहस्य कोणि ॥३२८॥

आइक्लो हे मध्यगेहु। मनाव्यापि पुत्रमोहु।
सतीसहित अति स्नेहु। आइलो रजतपुरीक ॥३२९॥

जाल्ला आमुचो पोरु। यतींद्रालो अनुचरु।
आवै बाप्पैलो विसरु। पड्ला खरें बाळाक ॥३३०॥

पुत्र विरही दंपती। आपुल्या मोगाच्या मूर्ति।
जात्लो हो विरक्तु यती। आम्ही जात्ली अनाथम्होंणु
॥३३१॥

दंपती रडऽत पुत्राक। वृद्ध ह्या मातापितांक।
तुज्जे खातिर वांचिल्याक। सोऽण्णु संन्यासरे बाळा?
॥३३२॥

नाक्करे पुत्ता नाक्का। संन्यास हे घेवु नका।
अशिशं सांग्तचि ते ताक्का। केल्लें दंडवत प्रणाम
॥३३३॥

वासुदेवु पाव्लो खुशी। तुम्ही पाय्यां पड्ले अशिशं।
ह्या कारणान जाल्लो संन्यासी। मेळ्ळी अनुमति तुम्ची ॥३३४॥

दोगैं जाल्लि निरुत्तर। अश्रुगळतातित निरंतर।
आइले परतून घऽर। तरी जर्जर पुत्रशोकिं ॥३३५॥

तळमळे चित्त दोगांक। आइलें सोड्डूनु पुत्ताक।
"कुत्याडि" नामक मठाक। चोय्ले थांगा गुरुशिष्या ॥३३६॥

संन्यास घेव्चो निर्धारु। आइकूनु ताप्लो द्विजवरु।
परम सात्विकु उदारु। सांग्ता पुत्रा आइक ॥३३७॥

तूं तरी संन्यास घेशि। तूं मेज्जे कलेवर पळैशी।
ब्राम्हणु हांव एकभाषि। दित्ता प्राण बलिदान ॥३३८॥

बाप्पैले प्रतिज्ञा भारी। आइकूनु तो ब्रम्हचारी।
बांधूनु कुर्टा दोरी। केल्लें धारण कौपीन ॥३३९॥

आणि म्हणालो बाप्पैक। तयारी करी मोर्चाक।
संन्यास मेज्जे स्वाभाविक। सांभाळी प्रतिज्ञा तुजी ॥३४०॥

मध्यगेहु मागता बाळा। रत्न तूं आमच्यां कुला।
पढेंहि पुत्र शोक घडला। नष्टलें दोनीं पूर्वि ॥३४१॥

आतां जात्लों तूं संन्यासी। कोणरे आम्चे बर्शि।
वृद्धांक आम्का अशिशं। घाल्नुका वाट्टेरि वत्सा ॥३४२॥

विवरिलें शास्त्र वचन। बाप्पैक वासुदेवान।
कोर्का संन्यास ग्रहण। जेन्ना उपजली विरक्ति ॥३४३॥

तरी तुमच्या पालनेक। जात्ले संतान आणि एक।
त्या उपरांत संन्यासाक। दीय्या गा आज्ञा कृपेन
॥३४४॥

मध्यगेहु म्हणालो। हांव कश्शिं सहन कर्तालो।
आवैलि कश्शिं घेत्तालो। सम्मति वासुदेवु ॥३४५॥

बाप्पैक कोर्नु नमस्कारु। विनंति कर्ता जीवेश्वरु[२४]।
तूं विप्रांतु अग्रेसरु। दी तूं आज्ञा आपुलीं ॥३४६॥

घे तरी आवैलि सम्मति। संन्यासाक मेज्जि सहमति।
आइकां हे मारुती। हास्लो चिंतून हरीक ॥३४७॥

२४ मुख्यप्राणु

मनांतु आइलें भट्टाक। पत्नीक प्रीति पूर्वक।
सम्मती ती नकार्चाक। सांग्चे म्होणु हर्षलो ॥३४८॥

रामांक श्रीलक्ष्मणु। भीमसेनांक अर्जुनु।
गदु [२५] अनुजु गुणवानु। कृष्णांक जाल्लो तशिशं ॥३४९॥

जन्मा आइलो धाक्लो भावु। रूपांतुतरी वासुदेवु।
आइकूनु तो वायुदेवु। आइलो पळें आवैकडे ॥३५०॥

वासुदेवाले ज्ञान। जाइना प्रलयांतूही हनन।
आवैक कोर्नु वंदन। उल्लैलो उत्रं मोवाळ ॥३५१॥

जन्मला तुमका बालकु। तोचि तुमचो रक्षकु।
हांव तरी वचन पालकु। दी आज्ञा संन्यासाक ॥३५२॥

२५ वसुदेवाल्या आणि एक बायेलो पूत

तूं तरी आज्ञा दीना। परत ह्या गांवांक येना।
परस्पर दर्शनचि घड्ना। वत्लो खरें देशांतरा ॥३५३॥

दीव्नइ आज्ञा म्होणु। पतीन तें सांग्ला येव्नु।
जाल्यारि ही भींति पाव्नु। दिल्ली मौन सन्मति ॥३५४॥

मेळऽशिना आप्लो पोर। वोत्लो खरें दोळे भाइर।
दिल्ली सन्मति वद्वार[२६]। चोईन म्होणु पुत्ताक ॥३५५॥

पत्नीलि सन्मति आइकूनु। परिस्थिति ती समजूनु।
मध्यगेहु विस्मितु जाव्नु। राक म्हणे अनंतेशा ॥३५६॥

जगद्गुरु लोकमान्यु। रुद्रादिकांक मानूनु।
अच्युतप्रेक्षा कडेन। घेत्लें संन्यास दीक्षा ॥३५७॥

२६. शीघ्र

चतुराश्रमाचो नियमु। कोर्चो तो जीवोत्तमु।
जाल्यारी यत्याश्रमु। स्वीकार्ता सविशेष ॥३५८॥

शास्त्रोक्त विधि विधान। ना आचरणेंत क्षीण।
विशेष हे संन्यासग्रहण। कृष्णार्पण सर्व ॥३५९॥

प्रणव मंत्राधिकारु। त्रिमात्राचो ओंकारु।
अनंतमात्रेचो सारु। जाण गा तो मारुति ॥३६०॥

वासुदेवा वऽय अकरा। ॠजुगणि हरिकुवरा।
अणुमध्वचरिताधारा। संवत्सर सौम्य समज ॥३६१॥

सुरवृंदवंद्यपाद। वायूक नांव पूर्णबोध।
महिमा ताज्जी सांगतावेद। जाण हे अच्युताख्य ॥३६२॥

पूर्णप्रज्ञ हीं नांम। आइकूनु सुरस्तोम।
अच्युतप्रेक्ष हें महिम। पाव्ले म्हणे गुरुकृपा ॥३६३॥

ना गा श्रृंगार प्रासाधन। ना काइ अलंकरण।
सहज तेज ते स्फुरण। अनुपम पूर्णप्रज्ञालि ॥३६४॥

साष्टांग नमस्कार। कोर्चाक ते देववर।
गरुड शेष आणि शंकर। निरीक्षितातित रे सदा ॥३६५॥

तस्सलो पूर्णप्रज्ञयति। कर्ता गुरूक प्रणति।
महात्मालि ही रीति। म्हणती गा लोकादर्श ॥३६६॥

शिष्याक दित्तऽचि शिकवण। गुरु शिकलें ताज्ज कडून।
पाव्ले आश्चर्य मनान। शिष्यु हो गरूचि खरें ॥३६७॥

एकदा पूर्णबोधाख्य। अनंतासना भेटीक।
आइले रजतपीठाक। नमस्कारिलें अनंतेशा ॥३६८॥

सामान्य मनुष्यांतु। प्रवेशिला तो अनंतु।
आलिंगिलें बाहूंतु। धर्ले त्या पूर्णबोधा ॥३६९॥

आप्पोनु अच्युतप्रेक्षा। तूं कर्तालो रे प्रतीक्षा।
सत्य जाव्वों निरीक्षा। स्वीकरी ह्या शिष्योत्तमा ॥३७०॥

आपण कृतकृत्य म्होणु। अच्युतप्रेक्ष यतिवरेण्यु।
सर्व संग त्यजुनु। धर्लो सत्संगु शिष्यालो ॥३७१॥

गंगा स्नानाचि इच्छेन। माग्ली अनुमती शिष्यान।
देवाक आइलो शरण। देवा न घडो वियोग ॥३७२॥

हे अनंतेशा माक्का। शिष्य वियोग घडोनक्का।
पूर्णप्रज्ञाक राब्बोका। करी काई करणि तुजि ॥३७३॥

देव आवेशान एक्ल्यान। सांग्लीं आणि तीन दिवसान।
गंगा तुमक्का दर्शन। दित्लिं सरोवरां तुमच्या ॥३७४॥

अनंत सरोवरांतु। गंगा ती प्रगटली तांतु।
गुरु आणि शिष्य मनांतु। हर्षले धन्य म्होणु ॥३७५॥

मध्वाखातिर सुरसरी। प्रकटलि तीं सरोवरी।
मध्व सरोवर नांवारी। ओळखलें साधु सर्व ॥३७६॥

दिवस जाल्लेति चाळीस। परमाश्रम घेव्नु विशेष।
आइलो पंडित वैशेष। वादाक तुरीया [२७] कडे ॥३७७॥

[२७] सन्यासि.

वाद कुशल बहुतेक। सगळे ते वैशेषिक।
हरले ते पूर्णबोधाक। आइले शरण भक्तीन ॥३७८॥

अच्युतप्रेक्ष मुनीक। संदेह अनेकानेक।
आपुल्या मत आधाराक। ग्रथु तो इष्टसिद्धि ॥३७९॥

पूर्ण बोधान तांत्लें। बत्तीस दोष दाखैंलें।
गुरुऽक तरी संदेह वाड्ले। निवारिलें तें शिष्यान ॥३८०॥

नित्य ते पाठ प्रवचन। अध्ययन आणि व्याख्यान।
ना तरी कोर्का श्रवण। हे यतीक अवश्य ॥३८१॥

अद्भुत विषय मंडन। निस्संदेह निरूपण।
संप्रदायाचे विवरण। कर्तांति पूर्णबोध ॥३८२॥

अवैदिकांतु अग्रेसरु। नांवान बुद्धिसागरु।
आनि एकलो निरीश्वरु। नांव खैं वादिसिंहु ॥३८३॥

अवैदिक आइलेति वादाक। कळलें अच्युतप्रेक्षांक।
शिष्याक बळोनु [२८] प्रत्येक। आमंत्रिलें मध्वराया ॥३८४॥

वीरु शत्रु संहाराक। धर्ता वेगळ्या बाणांक।
तश्शि आनंदतीर्थांक। आप्पैले रे आपत्काळि ॥३८५॥

जयापजयाचे निरीक्षा। काहीं पांडित्याचि परीक्षा।
काहीं मध्वालि प्रतीक्षा। करीऽत बस्ले बरें ॥३८६॥

त्या वेळी मध्वराय। त्वरितान पव्ले सदय।
धरुनु गुरुलें पाय। माग्ली आज्ञा शास्त्रार्था ॥३८७॥

२८ धाडूनु

श्री गुरु चरितामृत

तीक्ष्ण वचनरूपी बाणु। सोड्लो मध्वानि काण्णु।
दीर्घ वादाचि गदा मोण्णु। काड्ली वीर वादीलि
॥३८८॥

अठरा विकल्प वचन। व्यास वाक्यान खंडन।
केल्लें वाद निरसन। जिंक्ले गा वादिसिंहां ॥३८९॥

श्रीविष्णु पादाश्रय। वायु तो मध्वार्य।
अज्ञान तमांक सूर्य। निवारिलें दुर्मतींक ॥३९०॥

समुद्र एकापोशन। पिल्लां खैं अगस्त्यान।
तशिशं मध्वाचार्यान। आट्टैलें बुद्धिसागरा ॥३९१॥

केल्लें वादीनि पलायन। वरिलें मध्वां जयश्रीन।
अशिशं केल्लि घोषण। भक्त आणि भावुकानि ॥३९२॥

व्यास सूत्राचे सार। पूर्विचे ते भाष्यकार।
समजनि यथाकार। विवरिले दोष युक्त ॥३९३॥

आनंदतीर्थालें वचन। आक्षेपिलें गा गुरून।
खरे अर्थु समजून। तुम्मी लिखा सूत्रभाष्य ॥३९४॥

लिखा तुम्मि सूत्रभाष्य। गुरु वाक्य आइकूनि सूच्य।
सोण्णु तो अर्थु वाच्य। घेत्ले मध्व गुणग्राहि ॥३९५॥

संन्यासी लिकुचवंशी। सद्गुणी आणि मितभाषी।
“ ज्येष्ठ यति ” संभाषी। प्रेमान मध्वां कडे ॥३९६॥

आइकरे मध्वराया। तूं परमप्रीतु व्यासार्या।
हे सिद्धांतवर्या। सांग गा शुद्ध सूत्रार्थ ॥३९७॥

मध्वमुखचंद्रांतूनु। सूत्रभाष्य प्रकटजाव्नु।
हरि स्वरूपाचे ज्ञानमेळ्नु। जाल्ले धन्य सिद्धांति ॥३९८॥

मध्यगेह एकवेळा। पळैताति आपल्या बाळा।
सिद्धांति संन्यासी कळा। पोळोनु दिसलि धन्यता ॥३९९॥

पुत्रालें तेजामृत। दोळ्यानि तृप्त गा पीऽत।
कान्नान वचनामृत। पिल्लें शास्त्र शुद्ध ॥४००॥

एकदा गुरु बरोबरी। दक्षिण दिशा संचारी।
पाव्ले विष्णुमंगला बरी। वंदिलें महाविष्णुं ॥४०१॥

तेन्नाचि विष्णुमंगलांत। भिक्षा स्वीकाल्यां उपरांत।
घडले एक अद्धुत। आइका सगळे गुरुभक्त ॥४०२॥

भिक्षादिल्लेल्या गृहस्थान। कदळी फळ दिल्लें हाण्ण।
हजार हजार संख्येन। गिळले सर्व बालयती ॥४०३॥

आश्चर्य चकित गरून। विचार्ले शिष्याक प्रितीन।
जिर्ता कशिशं बहु संख्येन। खाल्लें केळीं अपार ॥४०४॥

खाल्लि तूवें केळच्यां राशी। दोन्श्यांपेक्षा अधिक अशिशं।
पोटई हें पुग्गनशी। दिस्ता कशिशं हें सांगा ॥४०५॥

अंगुष्ठा येद्दि अग्नि। जळ्ता पोट्टांतु निशिदिनि।
जग भस्म कोर्यत आणि। नीव्ना केन्नाइ समजा ॥४०६॥

हरि भक्तालि ही विवरण। आइकूनु ते गुरुजन।
पवमानालें चरणस्मरण। केल्लें मेळ्नु सर्व ॥४०७॥

हरीसर्वोत्तम ज्ञान। हेंचि गा वेदप्रतिपादन।
हे खरे मुक्ति साधन। अन्यथा सगळे अतार्किक ॥४०८॥

ह्या विषयाचे मंडन। तद्विरुद्ध खंडन।
कोर्नु सर्वत्र संचरण। मुख्यत्वे दक्षिणांक ॥४०९॥

केरळ देश अलंकरणी। पापहारी ती पयस्विनी।
त्या तीरारी भवतारिणी। दुर्गा प्रकटल्या पुढें ॥४१०॥

उपरांत तिरुवनंतपुर। पाव्ले मध्व यतिवर।
चोव्नु त्या शांताकार। वंदिले पद्मनाभा ॥४११॥

त्या क्षेत्राच्या शिष्यांक। सूत्रार्थाचे विवेक।
सांगूनु तत्त्व प्रियांक। केल्ले धन्य मध्वानि ॥४१२॥

जीवापेक्षा विलक्षणु। सर्वोत्तमु नारायणु।
आइक गा विवरणु। ब्रम्ह सूत्रार्थ होचि ॥४१३॥

दुर्वाद्यांक धिक्कारु। नारायणांक नमस्कारु।
करीऽत तो यतिवरु। पाव्लो समुद्र सेतु ॥४१४॥

कन्या तीर्थ स्नान। रामलिंगाचें दर्शन।
केल्लें सर्वत्र वंदन। स्मरून सन्निधि हरीलि ॥४१५॥

रामेश्वरांतु चातुर्मासु। केल्लों क्षेत्राधिवासु।
मेळ्ळो यतीलो उपदेशु। जाल्लें धन्य क्षेत्रीय ॥४१६॥

श्रीरंग क्षेत्र निलयु। कावेरि शीत वलयु।
साधूलो शुभोदयु। सुंदरु शेषशायि ॥४१७॥

रंगनाथाक भक्तीन। केल्लो नमस्कार यतीन।
नारायणानुसंधान। कर्ता सर्वज्ञु संयमि ॥४१८॥

गुरु दयाळुरे साधका। चरित्र तांचे आइकूका।
परस्पर एकमेका। सांगूका कीर्ति गुरुलि ॥४१९॥

करीऽत तीर्थ संचार। श्रीमुष्णा क्षेत्रावर।
आइलो श्रीमध्ववर। भेट्ले त्या यज्ञवरांगा 1॥४२०॥

यती तो पादचारि। त्यांचा दृष्टि मुखारि।
येत्ली एकि गर्भिणी नारी। हांडीरि भारी कळसो
॥४२१॥

पोंडांत्ल्यान उदाक हाड्ता। गर्भ भारान त्रास भोग्ता।
उंच्ले सोपान चड्ता। थकूनु तरी हुम्मैल्या ॥४२२॥

पोळोनु हे यतिवर। आइले घरां मुखार।
दंड ते शिला भित्तर। पुर्ले पळें त्या क्षण ॥४२३॥

झऽरी निर्मल जलाचि। दंड तीर्थ नांवांचि।
साक्षात् भागीरथीचि। पाव्लि त्या दुर्बळीक ॥४२४॥

दयाळु ह्या गुरुक। नमस्कार करी भावुक।
यतील्या ह्या महात्मेक। नत मस्तक गा सगळे ॥४२५॥

षडंग सहित वेद। शिक्षिलें महा विबुध।
अपूर्व म्हणे पूर्णबोध। मानलें गुरु सर्वज्ञा ॥४२६॥

स्वर्णवर्णाचें शरीर। बत्तीस गुणाचें सुंदर।
जगाधार ते मधुर। अलंकार प्राय जगाचें ॥४२७॥

पंडित तारा तेज। ह्या सूर्यामुखार निस्तेज।
दुस्तर्काचे मदगज। निपले भीव्नु यतिसिंहा ॥४२८॥

गुरुले चंद्रवदन। सज्जनास्य कुमुद जाण।
सर्वांक आनंद दान। दित्ताति आनंदतीर्थ ॥४२९॥

सज्जन सुजीवि कुमुदांक। चंद्रसमान यतींक।
आनंद दीव्चे तुरीयांक। वंदूयां भक्ति युक्त ॥४३०॥

साधका आईक वचन। पूर्णप्रज्ञालें कथन।
एकदा अच्युतप्रेक्षान। संकल्पिलें पीठांतराक ॥४३१॥

वेदांत साम्राज्यपाति। पूर्णबोधाख्य यती।
सर्वज्ञु हो पीठाधिपति। घोषण ही गुरुवर्थालि ॥४३२॥

अभिषेकिलें शंखोदकान। आनंदतीर्थ अभिधान।
गरुन केल्लें त्या क्षण। वाज्ले वाद्य देवनगरी ॥४३३॥

आनंदतीर्थ नामक। आनंदकर शास्त्र रचक।
वेदोक्त मध्वं नावांक। व्याख्यान नांव समज ॥४३४॥

गुरुलो पूर्व स्नेहि। दुरहंकारि दुराग्रही।
जल्पकु आणि संदेहि। आइलो मध्वालें पादाक ॥४३५॥

समर्थ पक्षाचो[२९] गरुडु। सर्पु तरी केद्दो होडु।
विक्रमि अस्ल्यारि विगडु। मार्ता जेंशिं सलील ॥४३६॥

२९ पाक्ष

तशिशं ताज्जो अनुमानु। मांडूनु प्रत्यनुमानु।
खंडूनु मिथ्याज्ञानु। जिंकले गा अतिवाद्यां ॥४३७॥

प्रत्यक्ष आणि आगम दोन। ताक्काचि प्रथम स्थान।
ते नात्तिले अनुमान। व्यर्थ अप्रमाण सहज ॥४३८॥

अनुमानाचे अपूर्व अर्थ। सांग्ले मध्वानि यथार्थ।
म्होणु तांक अनुमानतीर्थ। अशिशं पडले नांव सार्थ ॥४३९॥

कर्तीति भागवत पठण। गुरु आणि शिष्यगडण।
पाठांतु पड्ले वळण। खरो पाठु समजेना ॥४४०॥

व्यासालें मूल पाठ। पूर्ण प्रज्ञानि म्हळ्ळे नीट।
दाख्खैलि सर्वांक वाट। सगुण भक्ति पंथाचि ॥४४१॥

आक्षेप काड्लो गुरुन। पाठ सगळे समान।
तुमचो पाठु नवीन। दिस्ता हे पाठांतर? ॥४४२॥

व्यासालोंचि मूलपाठु। सांग्ला हांवे उत्कृष्टु।
देवूचि हाज्जो उपदिष्ठु। निःसन्देह हें गुरुनाथा ॥४४३॥

व्यास ग्रंथाचे स्वरूप। कळ्ळेवें तुक्का आपोआप।
पंचम स्कन्दाचे गद्य रूप। सांग म्हणाले गुरु ॥४४४॥

हास्ले गा पूर्णबोध। गद्योच्चाराचे स्वाद।
स्पष्ट अर्थ सांग्ले विविध। आइकइले गरुक तेन्ना ॥४४५॥

पळैताति वेगळे चेल। श्लोकार्थ सगळे सरळ।
पळैनि ग्रंथ अविरळ। सांग्ले पूर्णबोधानि ॥४४६॥

सर्वज्ञुरे तू दाक्लो। शास्त्रार्थ हे केन्ना शिकलो।
पूर्णबोध म्हणालो। शिकलों सगळें पूर्वजन्मि ॥४४७॥

जगाकाश्चर्य विविध। अपार ज्ञानि पूर्णबोध।
सूर्य उदैलो नवीन। पण प्रकाश तरी अधिकऽचि
॥४४८॥

तत्त्ववाद प्रचारक। सर्वोत्तम हरि प्रीतीक।
विद्वांसा विद्वत्सभेक। आमंत्रिताति श्रीमध्व ॥४४९॥

महायतील्या दर्शनाक। अस्खलित वाक्पटुत्वाक।
विहित कर्म विष्णुभक्तीक। जाल्लेते वशी भूत ॥४५०॥

महापंडित माल्गडे। जमले असंख्य एकडे।
विनंतिले मध्वांकडे। सांगा शाखा ऐतरेयाचि ॥४५१॥

एकतरी सूक्ष्मार्थ। आइकूनु जाल्ले कृतार्थ।
हें आमुचे इष्टार्थ। करा वो पूर्ण यतींद्रा ॥४५२॥

मेघ गंभीर स्वर। वर्ण विशेषाचे उच्चार।
ह्रस्व दीर्घ प्लुत प्रकार। सुंदर अवर्णनीय ॥४५३॥

देव गुरु बृहस्पति। त्यापेक्षा अधिकु गा यति।
सूक्ष्मार्थाक सहमति। पण अर्थांतरु आस्ता ॥४५४॥

वेदांक अर्थ तीनि। दशार्थ भारताक आणि।
सहस्रनाम शतार्थानि। प्रसिद्ध गा देवभाषिं ॥४५५॥

आइकूया म्हणाले पंडित। विष्णु नामाक अर्थ बहूत।
विश्वपदाक अर्थ शत। सांग्ले पूर्णबोधानि ॥४५६॥

पंडित कूप तटाक। संन्यासी हो प्रळयोदक।
आम्हीतरी बहु संख्याक। जिणे हे व्यर्थ दिसता ॥४५७॥

अशिशं सर्वा शरणागत। जाल्ले सर्व गुरु प्रीत।
पसरलें भक्ति सिद्धांत। निसरलें वाद इतरांचे ॥४५८॥

इंदिरापतिलि कीर्ति। मंदरधरालि दिव्यस्तुति।
करीत पूर्णबोधयति। पाव्ले रजतनगरी ॥४५९॥

वेदाभिमानी दुर्गोक। अपमान कर्तांति अतिरेक।
अपराधि त्या दुर्वादीक। दमन करी मध्वु ॥४६०॥

कौरवा मधे याज्ञसेनी। पीडित जाल्लि जननी।
दुर्वादि मध्ये वेदवाणी। भोग्ली दुःख बहुत ॥४६१॥

द्रौपदी खातिर प्रतिज्ञा। कर्ता भीमु सर्वज्ञा।
तशिश हो पूर्णप्रज्ञा। कटिबद्धु वेदरक्षा ॥४६२॥

द्रौपदीक नाना क्लेश। दिवैताति कलिपुरुष।
कौरवाले कुल अशेष। कर्ता नाशु वृकोदरु ॥४६३॥

तशिशं वेदांक दिल्लें दोष। दुष्ट तें कल्यावेश।
त्या दुर्मतांचें नाश। कोर्चि प्रतिज्ञा मध्वांलि ॥४६४॥

बरैला ब्रम्हसूत्र। व्यासदेवान पवित्र।
बादरील्या[30] करुणापात्र। जाल्लें शिवाइ तें कळेना ॥४६५॥

30 वेदव्यासु.

पैलें व्यास दर्शन। उपरांत भाष्यरचन।
म्हणूनि ही तीर्थाटन। माग्ली आज्ञा गुरु कडे ॥४६६॥

लाग्ताले दीर्घकाल। पाव्चा बदरी विशाल।
शिष्यालें मुखकमल। जात्ले दर्शनाक दुर्लभ ॥४६७॥

संन्यास दिल्लेल्या गुरुक। दिव्का बरी काणुक।
रचवूनु भाष्य गीतेक। समर्पिलें तें गुरुनाथा ॥४६८॥

दूरप्रवासि यजमानु। तो तरी खरे धनवानु।
बंधु जनांक म्होणु। दित्ता धन ते अक्षय ॥४६९॥

तश्शिं गीताभाष्य गुरुक। दीव्नु उठलें बदरीक।
सूत्र भाष्य रचनेक। मागता म्होणु व्यासाल्या ॥४७०॥

पुरुषोत्तमालि पूर्णदया। जाव्वो तुझा मध्वराया।
योरे शीघ्र यतिवर्या। घे आशीर्वादु आमुचो ॥४७१॥

मलयाचल गंधवाहु। सुगंधी भ्रमरा मोहु।
ती करी वायुले स्नेहु। दाखै म्हणतातित पुष्पं ॥४७२॥

तशिशं सज्जन तीं भ्रमर। भक्तिगंधानुसार।
मध्वाचार्या बरोबर। चाल्लें व्यासा कडे बरे ॥४७३॥

योग्य शिष्यां समवेत। द्विविध स्नान ते करीऽत।
गंगा आणि भागवत। हेंचिं गा तीर्थ तें दोनि ॥४७४॥

शास्त्र ज्ञानानि चित्तशुद्धि। गंगा स्नानानि देहशुद्धि।
जाल्लि ही दोन्हींवृद्धि। केल्लें मध्वरायानी ॥४७५॥

भागवत अपपाठ। गंगेचे पाप संकट।
मध्वस्पर्शान गेल्लि नीट। अद्भुत गा साधुमहिमा
॥४७६॥

विष्णुपादजा गंगा। विष्णु तो मध्वांतरंगा।
गंगापशीं उत्तुंगा। प्रथमांगा वायुदेवु ॥४७७॥

गंगाले पार कोर्नु। बदरीचि वाट धोर्नु।
अवतार महिमा दाक्कोनु। पाव्ले विशाल बदरी ॥४७८॥

भरतखंडाचो अधिदैवु। तोंचिनारायणु देवु।
हें कोळोचाक वायुदेवु। आइलो बदरी क्षेत्रा ॥४७९॥

अनंतगुणपूर्णु। श्रीबदरी नारायणु।
हे तत्त्व ओळखूनु। केल्लें वंदनमध्वांनि ॥४८०॥

गीता भाष्याचि प्रति। समर्पीलि त्या श्रीपती।
अर्थु सांग्ला यथाशक्ति। स्वीकरिरे नारायणा ॥४८१॥

नारायणु म्हणालो तेन्ना। शक्तितुजि अपार प्राणा।
बरैला लेशतः म्हणा। अशिशं आज्ञा नारायणालि ॥४८२॥

आज्ञा ती स्वीकार कोर्नु। लेशतः प्रवचन कोर्नु।
शिष्या बरोबर घेव्नु। विवरिलें मध्व तेन्ना ॥४८३॥

नारायणु परऽत येत्ता। भूंइचेरि मार्नु जागैता।
अशि एकदा सांग गीता। म्हणता आइकले शिष्य ॥४८४॥

स्वरभेद आइकूनु। खरो हो नारायणु।
अशिशं मध्वानि समजूनु। सांग्ली परऽत गीता ॥४८५॥

शीतलगंगा स्पर्शन। कोर्चाक भित्ताति सज्जन।
त्या अलकनंदेंतु स्नान। करी मध्व अरुणोदयिं ॥४८६॥

अलकनंदा स्पर्शन। आणि अवगाहनस्नान[31]।
हाक्का अधिकारि ऋजुगण[32]। असाध्यगा इतरे जना
॥४८७॥

अनंतमठांतु वासु। काष्ठ मौन उपवासु।
सदा हरिचेरि ध्यासु। करीऽ मंडल कालु ॥४८८॥

प्रसन्नु तांका हरी। तरी कठिण व्रतधारि।
विशेष प्रसन्नते खात्तिरि। मौन उपवास ध्यान ॥४८९॥

३१ ऋजुगणांनि कोर्चे स्नान. ३२ मुक्तियोग्य.

व्यास रुपी नारायणु। जाल्लो तांचेरि प्रसन्नु।
प्रकाश रुपान दिस्सूनु। आप्पैले आपुल्या आश्रमा
॥४९०॥

बरैलो संदेहु शिष्यांक। मौनि मध्वांनि लोकांक।
करुणाळु ते सर्वांक। दाक्कलि वाट मुक्तीचि ॥४९१॥

पाप परिहाराक बदरी। तीर्थां मध्ये सुरसरी।
देवा मध्ये नरहरी। शास्त्रांतु मध्वशास्त्र ॥४९२॥

हे शिवाइ नारे अन्य। अशिशं समजणार धन्य।
तेचिं नरा मध्ये गण्य। वचन करारे मनन ॥४९३॥

ह्या क्षणांतु निर्गमन। ध्येयु गा व्यासदर्शन।
येत्ता की ना परतून। इच्छा व्यासदेवालि ॥४९४॥

अशिशं संदेशु बरोनु। विशाल बदरीतुकूनु।
चमकलें हिमालयु चोण्णु। रिगले दुर्गमारण्या ॥४९५॥

शिष्य सगळे शोकाकुलित। जाल्लां मन झर्झरित।
तरी गुरु आज्ञाविहित। मान्का म्हणें गुरुनिष्ठ ॥४९६॥

ऐतरेय श्रुति त्रिवार। श्रवण केल्लेले यतिवर।
सत्यतीर्थाव्हय अनुचर। गेल्लें बरोबर मध्वालें ॥४९७॥

हिमगिरियारोहण। शिखराग्राचे लंघन।
अतिवेगाचि चमकण। चोइले यति सत्यतीर्थ ॥४९८॥

जाल्लो सूर्यास्तमानु। वऽच तूं परत म्होणु।
संज्ञेन मात्र सांगूनु। क्षणाक पावैले मठाक ॥४९९॥

वर्णिलें सत्यतीर्थांनि। गुरुलि विचित्र करणी।
हनुम भीम रुपानि। दिसले देदीप्यमान ॥५००॥

शिखरांतुलान शिखरांक। शीलेंतुलेन शीलेक।
उड्च्या त्या वेगाक। थकलि म्हणारे हिमगिरी ॥५०१॥

गुरु हो हनुमु भीमु। अगाध लीलेचो महिमु।
ज्ञान भक्ति चो संगमु। कृपाळुगा मध्वरायु ॥५०२॥

उन्मत्तु वृषभराजु। निर्भयु दिव्यतेजु।
हो मुखावैलो कमलजु। अशिश उद्दारु हिमवंतालो
॥५०३॥

सिंह शार्दूल सेवित। वृक्ष तरु द्रुमायुत।
विचित्र खग निकूजित। शोभिता गा ती हिमाद्रि ॥५०४॥

पोळोनु ती हिमगिरी। हो तरी साक्षात् हरी।
लक्ष्मी ती प्रकृति द्वारि। करी सेवा बहु परी ॥५०५॥

साधुप्रियु शेषशायि। बस्ला श्रीदेवा पायिं।
तस्सल्या विष्णूल्या विषयीं। केल्ली स्तुती यतीन ॥५०६॥

रत्नाभरण कांति। स्वर्ण कटकांचि द्युति।
वनमालादि शोभति। तसल्या हरी वंदिताति ॥५०७॥

ज्ञानानंद कायाचो। सुख गंध इंद्रियाचो।
लक्ष्मी मनोहरु आमुचो। अशिशंस्तुति ती यतीलि ॥५०८॥

पार्वलि सर्वज्ञालि स्वांरी। व्यासालि उत्तर बदरी।
पवित्र ती संपत्करी। मानवमात्राक दुर्गम ॥५०९॥

याजक वेदधर्मि। जिंक्लेति ते षडूर्मि।
महा महा यागकर्मि। द्विजाश्रयी महर्षि ॥५१०॥

कौषीतकी ऐतरेय। वेदशाखेचे मुनिवर्य।
वृक्ष वनांचें सौंदर्य। अपूर्व गा शांतिरूप ॥५११॥

शुकपिकाचि अमृतवाणि। परमहंस ते उन्मनी।
सिद्धगण आश्रमस्थानी। शोभ्ताति गा स्वाध्यायि ॥५१२॥

आश्रम तरी बहुशुद्ध। जात्ता मनोरथ सिद्ध।
असूयापर दोषि क्रुद्ध। नांति ह्या मंगलस्थानि ॥५१३॥

स्थळ हे वैकुंठ सदृश। ना कोणा कल्यावेश।
असल्या आश्रम प्रवेश। केल्ला पूर्णबोधानि ॥५१४॥

बत्तीस सल्लक्षण। देह कनकताल समान।
कमलाक्ष चंद्रवदन। गजगमनु कोणु हो? ॥५१५॥

काषाय वसन दंड। अपूर्व तेजोद्दंड।
दिसता धैर्य प्रचंड। कोणु बा हो विलक्षणु? ॥५१६॥

ना चतुराननु कमलजु। हनुमंतुरे ऋजु।
ना तरी हीं लक्षणु सहजु। असाध्यु गा इतर जीवा ॥५१७॥

अश्शिं उल्लैता ऋषिव्रात। मध्वाचार्य ते त्वरित।
सुरद्रुम सार्खे भू जात। पळैताति दिव्यरूप ॥५१८॥

मोवाळ् सालि उन्नतु। शाखा संख्येन बहूतु।
भासता शेषूचि हरिसेवेंतु। निमग्नुशी दिस्ता ॥५१९॥

पल्लवऽचि पक्ष। वर्णात्मक रविकराक रक्ष।
श्रीपति सेवेंतु दक्ष। दिस्ता वृक्षु गरुडा सार्खें ॥५२०॥

अप्राप्तगा अभक्तांक। मुक्तिरूप फलदायक।
शाकलादि शाखा अनेक। वृक्ष हें खरें वेदरूपी ॥५२१॥

अनंताले आप्त भजक। चोइताति भक्तिपूर्वक।
वेदींतासीन तपस्व्यांक। पळैलें तें देवरूपी ॥५२२॥

जटाधारी बहुसंख्याक। जिंकिले षड्वर्गांक।
गुणवंत भोगवर्जक। तपस्वी तें वायु भक्षी ॥५२३॥

गगनांगण वेदिकेंतु। ऋषिमंडलीच्या मध्येंतु।
प्रतिपाद्य सकल वेदांतु। तनयु सत्यवतीलो ॥५२४॥

जाल्लां मध्ये विराजमानु। अनंतानंत गुणपूर्णु।
चोइता शुद्धांतःकरणु। आनंद तो पावमानी ॥५२५॥

मध्वांल्या हृदयाधिवासु। सदा कर्ता वेदव्यासु।
तरी नित्य नूतनु श्रीशु। आनंदाश्चर्य रुपु ॥५२६॥

ब्रम्हादेश प्रमाणे। वासवी पराशराने।
बहु प्रार्थना केल्याने। प्रकटलो हो गुणपूर्णु ॥५२७॥

क्षीर सागर मथनांतु। प्रकट जाल्लीं लक्ष्मीतांतु।
तशिशं ह्या व्यास समुद्रांतु। प्रकटलिगा श्रुतिकन्यां ॥५२८॥

महाभारत तें पारिजात। पुराण सगळे निशानाथ[33]।
अति पवित्रगा तें अमृत। तेचि समज ब्रम्हसूत्र ॥५२९॥

[33] चन्द्रु

वेदार्थमय पुराण। महाभारत पारिजातान।
ब्रम्हसूत्रात्मक अमृतान। मेळ्ता सुखरूप मोक्ष ॥५३०॥

काळ्काक दीव्नु अवकाश। सूर्य निपता सावकाश।
तशिशं कलीक दीव्नु प्रवेश। निपलें व्यास ह्या स्थळीं ॥५३१॥

कृष्णाजिनाचे योग पीठ। मनोहर कांति श्रेष्ठ।
बसलें तें देववरिष्ठ। सार्खे नीलकमलाचें ॥५३२॥

ज्ञानानंदमय शरीर। सकल सद्गुणाचे आगर।
निर्दोष गा मंगलकर। परिपूर्णु अनंतु सर्व ॥५३३॥

रमा ब्रम्ह मरुत। गरुड शेषादि दैवत।
इंद्रादि देवगण सहित। धर्तांति पाद मस्तकीं ॥५३४॥

ते दिव्यपादरज। पुनः मस्तकी धर्ता सहज।
सद्भक्तालें मनोरज। मथन केल्ला चरणानें ॥५३५॥

त्या कारणान चरण। जाल्लेति रक्त वर्ण।
ध्वज वज्रांकुश लक्षण। दिस्ता चरण तलांतु ॥५३६॥

त्या चरणांक वंदीन। ताज्जा नख प्रकाशान।
द्विविध तर तम नाशान। हुज्वाड्ता अंतर्बाह्य ॥५३७॥

एक्का बर्शि आणि एक। तुलन कोर्का एकामेक।
तुलनेक आनि एक। चरणऽचि ना तस्लें ॥५३८॥

म्होणु चरण तें अनुपम। वृत्त जंघा ती उत्तम।
ध्यान प्रकृयेक सुगम। योग पट्टिका ती बान्द्ल्या
॥५३९॥

कटिबंध कृष्णाजिन। रम्य आणि प्रकाशमान।
श्रीहरि कटिस्पर्शान। आइला तेजु चर्माक ॥५४०॥

ब्रम्हांड धर्लेले उदर। वलित्रयानि शोभ्ता सुंदर।
निम्नोदर नाभि मधुर। मनोहरु व्यासदेवु ॥५४१॥

सज्जनानंद मुनीन। विशाल वक्षांतु धारण।
यज्ञोपवीत ते दोन। सूत आणि ब्रम्हसूत्र ॥५४२॥

कौस्तुभ तें कंठाभरण। पूर्ति समर्पिलें ब्रम्हान।
हरि सर्वोत्तम ज्ञान। दिल्लें म्होणु जगाक ॥५४३॥

शंख चक्रादि चिन्हित। कोमल तांब्डे हात।
ज्ञानमुद्राते शोभत। उज्वोगा तो हस्ताग्रु ॥५४४॥

जानुचेरि दावोहातु। अभयाचो तो संकेतु।
भयनाशु मुक्तिहेतु। भजकाक दित्ता भाग्य ॥५४५॥

तीनि वेद अंकित। गळ्याच्या तीनि रेखेंत।
शंखा साख्र्या कंठांतु। उमटली गा त्रैवेद ॥५४६॥

चंद्राक षोडश कला। त्यापेक्षा अधिक निर्मला।
कळंक रहित शशिकळा। व्यास वदनांतु पळें ॥५४७॥

तांब्डे वोंटांचि कांति। दंतपंक्ति तीं मोति।
वेदपति आणि वाक्पति। दित्ता शांति उत्रान ॥५४८॥

प्रश्नु कोर्चे विप्रकूपं। भर्तीति आपोआप।
व्यासवाणी नदीरूप। जिज्ञासु जाल्लें तें धन्य ॥५४९॥

व्यासालि करुणा दृष्टि। ती तरी आनंदवृष्टि।
भक्ताभीष्ट समष्टि। कर्ता पूर्णु क्षणांत ॥५५०॥

व्यासाल्या कर्णा जवळ। शोभ्ता तुळसी निर्मळ।
हें स्थान तरी दुर्मिळ। अपहर्तीत कमलादिक ॥५५१॥

ती तुळसी सांग्ता कान्नांतु। देवा माका ह्याचि स्थानांतु।
दवऽरि गा नित्यांतु। कोर्नुक्का स्थानभ्रष्ट ॥५५२॥

व्यासाल्या भ्रूसन्नेक। ब्रह्म रुद्रादि सकळीक।
जात्ताति स्वयं प्रवर्तक। भंग ना हरियाज्ञा ॥५५३॥

तिलकप्रायाल्या निडळारि। तांब्डो तिलकु दिस्ताभारि।
इंद्रनील गिरीचेरी। माणिक्याचि पंक्ति बरी ॥५५४॥

विद्युद्वलयांतु मेघ। बसल्या सार्खे अमोघ।
दर्शन मात्रान महाअघ। जात्ले नाश सर्व ॥५५५॥

वेदव्यासांक पोळोनु। आपण कृतार्थ मानूनु।
जें चरणनख चिंतूनु। थकली ती रमादेवि ॥५५६॥

आश्चर्यमयाक चोव्नु। धैर्यान लाग्गि येव्नु।
मध्वान हाथ जोण्णु। केल्ले स्तोत्र व्यासालें ॥५५७॥

विनयालंकारि वायून। ज्ञान भक्ति पूर्णान।
व्यास चरण स्पर्शान। नमिले शिर साष्टांग ॥५५८॥

प्रीति पात्राक पोळोनु। दोन्हिहातु उक्कोळ्नु।
गाढालिंगन दीव्नु। कर्ता प्रीति श्रुतिपती ॥५५९॥

मध्वालें देह कनकवर्ण। व्यास ते नीलवर्ण।
दिव्य संगम हे पूर्ण। स्वर्णनदी आणि यमुना ॥५६०॥

व्यास मध्व ते हरिवायु। पुढें ही हांगेलो उदयु।
क्षात्रांतु जाल्ला उभयु। तेन्नाई आलिंगिला परस्पर ॥५६१॥

व्यासपुत्र तें शुक। तांकाइ मेळ्नि हें सुख।
भाग्यवंत हे सुमुख। अश्शी उद्गारु ऋषिंगेलो ॥५६२॥

जश्शीं रुद्रादिक ब्रह्मांक। तशिश व्यासानि शिष्या मध्वांक।
दिल्ले आसन बोस्चाक। विनयान आशि अनुरूप ॥५६३॥

बैसाति अशिश आदेशु। दित्ता श्रीवेदव्यासु।
उपरांत बसलो श्रीशु। नंतर मध्वरायु ॥५६४॥

आपल्यापेक्षा अधिक। अशिश समजूनु वायूक।
अर्घ्यपाद्यादि समर्पक। विधियुक्त सेविं मुनिवर्या ॥५६५॥

सज्जनांक ज्ञानदान। दिव्चे हे मुख्य कारण।
ताज्जे खात्तिर अवतरण। व्यास आणि मध्वालें ॥५६६॥

आनंदमुनि आनंदान। आश्रमांतु विराजमान।
दर्शन आणि संभाषण। अपूर्व दिसलें इतरां ॥५६७॥

एकदा मध्वरायु। धर्ता व्यासालोपायु।
सांग गा खरें मोक्षोपायु। दीगा तुजें एकांत ॥५६८॥

व्यास म्हणाले ज्ञाननिधि। तुझ्या कित्त्या साधनविधि।
तरी इच्छी आनंदवृद्धि। सांग्ता नकळे रुद्रादि ॥५६९॥

आम्हि अनादि गुरुशिष्य। रचन करी महाभाष्य।
मुख्य विशेष विशेष्य। सांग्तां तूं सूक्ष्मग्राही ॥५७०॥

द्वारकासंपद्धरित। आणिकई ती श्रीमंत।
यादव कृष्णा निमित्त। जाल्लि जशीं विख्यात ॥५७१॥

तश्शिं वासिष्ठ कृष्णान। विशेष तत्त्वज्ञानान।
मध्वाचार्यालें मन। भर्ले गा ज्ञानधनां ॥५७२॥

भारत आणि भागवत। इतिहास पुराण पूत।
ब्रह्मसूत्र ती विख्यात। सांग्ले गा पांचरात्रादि ॥५७३॥

वेदांचे मुख्यांर्थ। कळैले ते यथार्थ।
अपरिमित ज्ञानी छात्र। मध्वांशिकले सर्वतीं ॥५७४॥

ऋजुगण श्रेष्ठुमरुतु। सकल शास्त्र पारंगतु।
व्यासु अनंतु भगवंतु। कर्ता कृपा अनंत ॥५७५॥

बदरी पुण्य भूंइचेरि। भगवंतु तो रूपांतरि।
नारायण नांवाचेरि। प्रसिद्धु गा ऋषिचर्या ॥५७६॥

मध्व व्यासा बरोबरी। श्री नारायण चरणारि।
नाना स्तोत्र पाठकरी। वंदूनु भक्तियुक्त ॥५७७॥

आदिपुरुषु नारायणु। कौपीनधरु जटावानु।
धूमरहित अग्निसमानु। दित्ता दर्शन मध्वांक ॥५७८॥

निरपेक्षु निर्मलानंदु। स्वरूप सुखाचे कंदु।
नारायणु भक्त बंधु। दिसलो मध्वराया ॥५७९॥

यमधर्मालो पूतु। नारायणा नामान ख्यातु।
अधर्माक ना सहमतु। हो खरो धर्मपुत्रु ॥५८०॥

विस्मय पाव्नु तो यति। भक्तीन श्रीहरिस्तुति।
कर्ता तो दशप्रमति[३४]। आइका ही चिंतनिका ॥५८१॥

नारायणु हो लक्ष्मीयुक्तु। प्रळयाचो महाभोक्तु।
सृष्ट्यादि कारणु निरासक्तु। पुरुषोत्तमु हो अनादि ॥५८२॥

ब्रम्हरुद्र सुरेश। महा प्रळच्यांतु नाश।
सर्वालें समावेश। चरणांतु नारायणाल्या ॥५८३॥

३४ मध्वाचार्य.

नारायणु सर्वांक मृत्यु। यम देवु लोक मृत्यु।
त्या यमालो अपत्यु। जाल्लो हो नारायणु ॥५८४॥

त्रिगुणात्मिका प्रकृति। आणि जें महतत्त्व म्हणति।
वैकारिका अहंकृति। सर्व ही नारायणाली ॥५८५॥

विधिवायु गरुड सगळे। शिवेंद्र देव वेगवेगळे।
गंधर्वासुर मनुष्यभोळे। सृष्टि ही नारायणालि ॥५८६॥

सृष्टि स्थिति नाश कोर्नु। जीवस्वरुपाक समजाव्नु।
दिव्य ती गति वांटूनु। दित्ता हो लीलामयु ॥५८७॥

स्मरण कीर्तनादि साधन। कोरोंऽति भक्त हे यत्न।
अनेक अवतार त्या कारण। केल्ललो होंचि देवु ॥५८८॥

मृत्युजाव्नु हयग्रीवाक। हयग्रीवु जाव्नु मधूक।
संहार कोर्नु ब्रम्हाक। वेद परताइलें हाणे ॥५८९॥

अमृत प्राप्ति खात्तिरि। मथिलें समुद्र भारी।
तेन्ना ती मंदरगिरि। धर्लला हो कूर्मु ॥५९०॥

षडूर्मिंचो[३५] संसारू। कर्ता होचि पारु।
वराहु हो भूधरु। मार्ला हाणे हिरण्याक्षा ॥५९१॥

प्रल्हादा खातिर सिंहु। जाल्लो हो परब्रम्हु।
तापसु हो पुरुषोत्तमु। राखिल्लो गजेंद्राक ॥५९२॥

वामनावतारु घेव्नु। तीनि पाव्लं ती मागूनु।
तीन्ही लोकैं मेज्जूनु। सुतला धाड्लो बलीक ॥५९३॥

३५ शीत, उष्ण, तान, भूक, सुख, दुःख

दितिसुतांक मोहकु। देवांक ज्ञानदायकु।
अज्ञांक तरी अवैदिकु। ज्ञानीलो ज्ञानदाता ॥५९४॥

क्षात्र कुलांतकु रामु। शस्त्र शास्त्रांतु निस्सीमु।
प्रतिसूर्यु गा परशुरामु। पुत्रु हो जमदग्निलो ॥५९५॥

आनि एकु ज्ञानसूर्यु। तोचि व्यासु पाराशर्यु।
हो ज्ञान्यांक अनिवार्यु। बादरायणु बदरीचो ॥५९६॥

दशरथालो पूतु। सूर्य वंश संजातु।
रामचंद्रु म्होण्णु ख्यातु। स्वरूपु गा नारायणालो ॥५९७॥

वसुदेवालो पूतु। लीलामयुगा पुनीतु।
चंद्रवंशाचो प्रख्यातु। प्रीतीचो वसुदेवाक ॥५९८॥

लक्ष्मणु शेषावतारु। जेष्ठ रामालो अनुचरु।
सेवा मूर्ति तो भूधरु। अग्रजु ताक्का श्रीरामु ॥५९९॥

द्वापरेंतु शेषु प्रथमु। नांव ताक्का बलरामु।
कृष्णांचेरि बहु प्रेमु। पण म्हालगडो कृष्णांक ॥६००॥

ताटकेक मार्ले रामान। पूतनीक वधिलें कृष्णान।
कारण यज्ञरक्षण। केल्लि वधा सुबाहु ॥६०१॥

केशि अरिष्टादि दुर्जन। मेल्लें कृष्णा हस्तान।
केल्लि स्तुति सज्जनान। रामकृष्णादिकांली ॥६०२॥

सच्छास्त्र ज्ञानी ब्राम्हण। कर्तीति रामगुणगान।
प्रेमपूरित सल्लापान। गोपीं गाइलीं कृष्णां ॥६०३॥

ऋषि बर्शि विहार। कर्ता तो रघुवर।
गोपिकाल्या बरोबर। विहार यदुरायालो ॥६०४॥

हर धनुष्य तो मोण्णु। सीतादेवीक स्वीकार्नु।
विश्वामित्रां आनंद दीव्नु। जाल्लो रामु सर्वप्रियु ॥६०५॥

मथुरेचो शिवधनु। कृष्णान मोण्णु काण्णु।
सांदीपनी आनंददीव्नु। दाखैली शक्ति भक्तांक ॥६०६॥

स्वीकार्नु जानकीक। जिंक्लो रामु भार्गवाक।
लीला ही असुर मोहांक। कोर्नु पाव्लो अयोध्या
॥६०७॥

रुक्मिणी हरण कोर्नु। जरासंधाक जिंकूनु।
आइलो द्वारका परतून। कृती दोन्ही एक ॥६०८॥

आवै कैकेल्या आज्ञेक। सीते आणि लक्ष्मणांक।
सज्जनाल्या संतोषाक। गेल्लो रामु वनांक ॥६०९॥

अदितिल्या तुष्टीक। गरुड आणि भामेक।
घेव्नु साधु लोकांक। गेल्लों कृष्णु बदरीं ॥६१०॥

पाव्नु दुर्गम वनांक। शिक्षूनु खरदूषणांक।
घाल्लें भयंकर नरकाक। प्रभु रामचंद्रान ॥६११॥

दुर्गम गिरिदुर्गांक। पाव्नु त्या मुरनरकांक।
भयंकर तत्त्वद्वेषींक। दिल्लों नरकु कृष्णान ॥६१२॥

देव शत्रूंक जिंकूनु। पंचवटी वनाकेव्नु।
दिव्याश्रमी रघुनंदनु। समलो जानकीसहित ॥६१३॥

देवसेना जिंकूनु। पारिजात हरण कोर्नु।
सत्यभामेंक घेव्नु। रमलो हरि द्वारकेंतु ॥६१४॥

सीताकृतीक[36] होर्नु। साधूंक दुःखदीव्नु।
सर्वां अप्रियु दशाननु। मार्लो ताक्का रामाने ॥६१५॥

आपणाल्या भक्त पांडव। तांगेले राज्य वैभव।
द्यूतांतु जिंक्ले कौरव। मारैलें तांका कृष्णान ॥६१६॥

हनुमत्सेवितान। एक्कऽ एक बाणान।
कोर्नु वालि संहरण। दिल्ले राज्य सुग्रीवाक ॥६१७॥

भीमाभिवंदितान। अर्जुनाक दीव्नु ज्ञान।
कौरवादि शत्रु हनन। कोर्नु राख्ले धर्मजांक ॥६१८॥

[36] छायासीता

सीतेलें संदर्शन। सांगले येव्नु हनुमंतान।
रामु पाव्लो लंकापट्टण। शोभीत समुद्रामधें ॥६१९॥

उपप्लाव्यातु भीमु। मार्ता कीचकालो स्तोमु।
आइकूनु हे पुरुषोत्तमु। पाव्लो द्वारका समुद्रत्या ॥६२०॥

रावण आणि कुंभकर्णाक। सैन्य सहित इंद्रजितूक।
भू भार दैत्य सर्वांक। मार्लें प्रभु रामाने ॥६२१॥

सुदर्शन महा चक्रान। भयंकर तीक्ष्ण बाणान।
सेना सहित दैत्य वितान। मार्लें प्रभु कृष्णाने ॥६२२॥

अग्निदिव्या सीता सहित। आइलो नगरा मनुपालित।
बहुकाल राज्य करीऽत। गेल्लो रामु स्वधामा ॥६२३॥

अग्निदिव्या रुक्मिणी सहित। बलरामु भांव्ड सांगात।
ऐक्यु जाव्नु स्वस्वरूपांत। पाव्लो कृष्णु निजधामा
॥६२४॥

ज्ञान भक्त्यादि संपन्नु। ब्राम्हणु शुद्धांतःकरणु।
पत्नी ताज्जि "इतरा" म्होणु। पुत्रु तिज्जो महिदासु
॥६२५॥

तोचि नारायणु श्रीशु। सद्धात्काले पापनाशु।
निर्मिलें शास्त्र विशेषु। साधकां खातिर ताणे ॥६२६॥

विष्णु यशालो पूतु। कल्की नावांन विख्यातु।
ब्रम्हरुद्रादि पूजितु। मार्ता पाप्यांक खड्गी ॥६२७॥

पाप कर्दम रहितु। अकूति रुचि संजातु।
इंद्रपदांतु विराजितु। "दक्षिणा" युक्तु "यज्ञु" ॥६२८॥

लक्ष्मीक निमित्त कोर्नु। सर्व देवांक सृजूनु।
देवहूति कर्दमांतूनु। प्रकटलो नांव कपिलु ॥६२९॥

क्षीरसागरांतु श्रीहरी। अवतरी नांव धन्वंतरी।
देवयोग्य अमृता खातिरि। प्रशांतु चंद्रासा ॥६३०॥

हरिपयोधर[३७] संजात। तरुणि 'नारायणी' ख्याता।
अमृत दिल्लें समस्ता। मोहिती तिक्का असुर ॥६३१॥

सज्जनानंददातु। अत्रिअनसूयालो पूतु।
त्रिलोकां गुरुनाथु। अवतार नांव दत्तु ॥६३२॥

३७ देवाले स्तन.

अमत्सरी ते ऋषिवर। नारायण ध्यानपर।
तांचे खातिर 'कुमार'[३८]। अवतारु धरी हरी ॥६३३॥

"ऋषभ" आणि "हंस" नामी। अवतारु घेत्ता स्वामी।
सनकादि ते अनुगामी। प्रेमी तत्त्वज्ञानां ॥६३४॥

योगी आणि तत्त्वज्ञानी। ते सर्व हांका ऋणि।
वंदिताति सिद्धमुनी। ऋषभ आणि हंसाक ॥६३५॥

यमाक पुत्रु चारि। नर नारायण कृष्ण हरि।
नरु तो शेषावतारि। आनि तीनी भगवद्रूप ॥६३६॥

मत्स्य कूर्मादि दशरूप। नारायणादि शतरूप।
विश्वादि तें सहस्ररूप। अभिन्न तें मूलरूपा ॥६३७॥

३८ सनत्कुमार

हे ज्ञानानंदमया। परब्रम्हा चिन्मया।
निर्विकारा निरामया। नारायणा नमस्कार ॥६३८॥

अशिश तें पूर्णप्रमति। कोर्नु श्रीनारायण स्तुति।
भक्तीन केल्ली प्रणति। हरी नारायणाक ॥६३९॥

व्यास आणि नारायण। कर्तीति गा आलिंगन।
बसली उभय आसन। लीला ही मोहनार्थ ॥६४०॥

श्रीव्यास नारायण। करी कुशल संभाषण।
उपरांत नारायणान। पळैऽत श्रीव्यासांक ॥६४१॥

संबोधिलें मध्वांक। महाबली भीमसेनांक।
तूं व्यास सम्मत कार्याक। आइला घेव्नु अवतार
॥६४२॥

बादरायण सूत्रांक। दुर्भाष्य आस्सति अनेक।
अर्थु कऽळ्नि साधकांक। पडल्या विस्मृति घोर
॥६४३॥

वऽच हांग्चान परतूनु। ब्रम्हसूत्रार्थ बरोनु।
लोकांक ज्ञान दीव्नु। संयोजूनु श्रुति स्मृति ॥६४४॥

नारायणु आणि व्यास। कर्तीति आज्ञा विशेष।
विळंब कर्नीशि वऽस। अवतार कार्या ॥६४५॥

जगद्गुरु नारायणालि। आज्ञा मध्वानि स्वीकार्लि।
मनांतुचिंता पसरलि। दुःख तें वियोगाचें ॥६४६॥

मध्वानि केल्लिं प्रार्थना। हे षड्गुणैश्वर्यपूर्णा।
अनुग्रह करी नारायणा। आपुलों सेवा द्दयांचि ॥६४७॥

मंगलकर हे सुख। शोध्लारि तीनि लोक।
दुष्प्राप्य गा सामान्यांक। सोडीना अलभ्यलाभ ॥६४८॥

कलियुगाचें लक्षण। ना कोणा तत्त्वज्ञान।
सूण्या दिल्यारि हविष्यान्न। अनुचित आणि व्यर्थ ॥६४९॥

मध्वांलें उत्रं आइकूनु। हास्लो देवु नारायणु।
आस्सती रे बाळा आजूनु। सुजीवि लोकामध्यें ॥६५०॥

गांत्च्या येव्चि योग्य मणि। माळेंचान तुंटूनि।
पड्ल्यार तरी धरणि। कोर्येत धूव्नु शुद्ध ॥६५१॥

तशिशं सुजीवि सज्जन। दुःशास्त्रांचा प्रभावान।
जाल्लेति सर्वत्र मलिन। करै तच्वमनन ॥६५२॥

निर्मल शास्त्र वचनान। करै तांका शुद्धस्नान।
ज्ञानादिगुण अर्हतेन। योग्य तें साधुजीवि ॥६५३॥

गुग्गुमांक कशिशं सूर्यु। तशिश दुर्जनांक मध्वार्यु।
सज्जनांक तो सूर्यू। करी विकास हृत्पद्म ॥६५४॥

नारायण पर्वतातुल्यानि। उगवल्या ही तरंगिणी।
श्री विष्णुवचो वाहिनि। मेळ्ळ ती मध्वसरसी ॥६५५॥

वाहिनी समुद्रासार्खि। व्यास उपदेश चंद्रिकी।
उचंबळूनु म्हणा की। विरली मध्वसागरा ॥६५६॥

सर्वोत्तम देव ते दोनि। आज्ञाकरितात्ति मध्वमुनि।
मस्तक दवरुनु चरणि। तथास्तु म्हणालो धीरु ॥६५७॥

ऋग्यजु सामवेद। कर्तीति तत्त्वार्थ बोध।
त्रेताग्नि की पापछेद। अथवा लोकाधार तीनि ॥६५८॥

श्रीव्यासु नारायणु। मध्वु हो मुख्यप्राणु।
तिग्गईऽ एकत्र मेळ्नु। शोभलें आनंदमूर्ति ॥६५९॥

वंदूनु धर्म पुत्राक। आइले परत बदरीक।
ज्ञानीं आनंदतीर्थाक। गुरु साक्षात् व्यासदेवु ॥६६०॥

वासिष्ठ कृष्णुतो व्यासु। दित्ता दिव्य उपदेशु।
मध्वालो मति प्रकाशु। वर्धलो सेवेन प्रखर ॥६६१॥

ज्ञानियांचो शिरोमणि। सर्वज्ञु तो मध्वमुनि।
व्यास चरणी लोटांगणी। घेत्लो अनुवादु तांचो ॥६६२॥

पूर्णु तो वेदव्यासु। मध्व मानसाचो हंसु।
दोग्गालो एक्कू वंशु। समजारे बाप्पै पूतु ॥६६३॥

समुद्र तरण कोर्नु। रामकार्य तें साधूनु।
आयिल्या सार्खें हनुमानु। तशिशं शोभ्ले गा मध्व
॥६६४॥

की स्यमंतकाचो महिमु। श्रीकृष्ण पुरुषोत्तमु।
ना सौगंधि हाडिल्लो भीमु। तशिश शोभ्ले गा मध्व
॥६६५॥

सत्यतीर्थादि सगळे। गुरु मध्वांक चोइलें।
आनंदान वंदिलें। सांग्ले गुरुंक जयकार ॥६६६॥

अग्निशर्मादि ब्राम्हण। दित्ताति विपुल भिक्षान्न।
भक्षिले तें भीमसेनान। समर्थु गा वृकोदरु ॥६६७॥

व्यास देवालें मनोगत। विषय तें प्रतिपादित।
नारायणालें अनंत। गुणसमुदाय सांग्चिं ॥६६८॥

ज्ञान वैराग्य भक्ति। अनंत सुखाचि मुक्ति।
वेदवाक्यान सयुक्ति। पोषक मध्व ग्रंथ ॥६६९॥

विद्वांस ही असमर्थ। गूढ़ गंभीर अर्थ।
मंदाकय्यिं ग्रहणार्थ। प्रियु साधूकई तो ॥६७०॥

एकवीस भाष्य खंडन। सर्वोत्तम तत्त्वांचे मंडन।
अभूतपूर्व हें विवरण। भाष्यं ब्रम्हसूत्रा ॥६७१॥

भाष्यांतु ना अपशब्द। भिल्ले मनांतु अबुध।
सार्थक म्हणताति विबुध। तस्सले भाष्य ब्रम्हसूत्रा ॥६७२॥

गंगा तीरो हरिमंदिर। तरी बांध्ले बहु सुंदर।
तें कीं अपार पुण्यकर। तश्शिशचि हें ब्रम्हसूत्र ॥६७३॥

श्रद्धेन हांत्ले एक अक्षर। बरेता कोण ते नर।
ताक्का उगड मुक्तिद्वार। बरैला सत्यतीर्थांनि ॥६७४॥

त्या उपरांत मध्वराय। घेव्नु शिष्य समुदाय।
दवलिरे ते पुण्यपाय। पवित्र तीरा गोदावरीं ॥६७५॥

पुर्वि गौतम शापान। ब्राम्हणांक आइलें अज्ञान।
तेचि स्थळारि मध्वांन। विवरिलें सूत्र व्याख्या ॥६७६॥

ऋगादि शाखा अठरा। षड्दर्शनाचे सविवरा।
प्रश्निनले त्या विप्रवरा। सांग्ले सर्व समंजस ॥६७७॥

शोभनभट्ट नामकु। ब्राह्मणु महासात्विकु।
जाल्लो सिद्धांत प्रचारकु। शिष्यु मध्वमुनिलो ॥६७८॥

ब्रम्ह रुद्र इंद्रादि। ब्रहस्पति शोभनादि।
सर्व जगाचे तत्त्ववादि। वंदिती आनंदतीर्था ॥६७९॥

निम्नं प्रदेशांतु जल। वर्षाकालांतु निर्मल।
व्होळ्ता तरी गिरिस्थल। निर्जल गा वर्षाकाळिं ॥६८०॥

गिरिसदृश अहंकारी। श्रवणांक अनधिकारी।
मध्व सुजीवींचेरि। कर्तीति कृपा वर्ष ॥६८१॥

करीऽततीर्थ संचार। शिष्य लोकां बरोबर।
आइले रजतपीठपुर। वंदिलें अनंतासना ॥६८२॥

अनंतासना तुज दयेन। जाल्लि यात्रा संपूर्ण।
सूत्रभाष्य व्याख्यान। घडैता तूं अनंतेशू ॥६८३॥

हे जगजन्मकारणा। वेदव्यासा नारायणा।
राक भक्तां कृपासदना। नरसिंहा रुद्रांतर्गता ॥६८४॥

उपरांत यतींद्रांक। गुरु अच्युत प्रेक्षांक।
नमस्कार कोर्चा शिष्याक। पळैऽत गुरु आनंदलो ॥६८५॥

वाज्जूनु भाष्य मध्वालें। संदेह सर्व गुरुलें।
पूर्ण निवारण जाल्लें। विवरिता स्वतः मध्वु ॥६८६॥

दुःश्शास्त्र क्षारोदक। निवैनि तान गुरूक।
मध्वालें हें क्षीरपाक। दित्ता संतुष्टि पुष्टि ॥६८७॥

गुरु शिष्य मेळ्ळे एकत्र। करी व्याख्या ब्रम्हसूत्र।
आइकूनु जाल्लें छात्र। कृतार्थ गा धन्यजीवि ॥६८८॥

तप्त मुद्रांकनांक। निवडिले काई सात्विकांक।
सुदर्शन समेत शंख। मुद्रेन केल्लें विशुद्ध ॥६८९॥

निराश्रय सज्जनांक। मुक्तिचि सुख मेळ्चाक।
काम कर्मादि निवारणेक। योजिले गा उपाय ॥६९०॥

गोपिकालों वल्लभु। श्री कृष्णु भक्तिसुलभु।
श्रीद्वारकेचो विभु। ताक्का हाड्तां रजतपीठा ॥६९१॥

अशिशं संकल्पित यति। समुद्रा स्नानांक नियति।
रचीत द्वादश स्तुति। पाव्ले वडभांडाक[३९] ॥६९२॥

स्नान जपादिकोर्नु। बस्लेति ध्यान धोर्नु।
द्वारका द्वीपातुकूनु। येत्ता एकी नौका ॥६९३॥

भयंकर वारे उठलें। तीर दिसेऽना जाल्लें।
नौकाधिकारी सगळें। करी ध्यान कृष्णालें ॥६९४॥

सर्वज्ञ मध्व ओळखलें। नौकेंतु बस्लेति आपुलें।
गोपी चंदनांतु निपलें। हाडून काडीन भाइरि ॥६९५॥

उठानु मध्वमुनि। दाक्कैता वस्त्र निशानि।
नौकेक जाइनाशिहानि। पाव्लिं तीं तीरावरि ॥६९६॥

३९ समुद्रतीराचे एकु गावु

केल्लि विनंति तान्नि। काणुक घ्या कायपुणि।
आम्का वांचैललो मुनि। कऽरि कृपास्वामिराया ॥६९७॥

नौकेंतुले मृत्पिंड। दी तीं तीनी खंड।
तांतु बस्लेले उदंड। आपुले ते दी तांकां ॥६९८॥

पाव्ले आश्चर्य नाविक। मृत्पिंड दिल्ले यतीक।
दोनि खंडाचे प्रतीक। जनार्दन बलरामं ॥६९९॥

रामां समुद्र तीरांतु। आनि एकु एर्माळग्रामांतु।
प्रतिष्ठिलें त्या तिसर्यांतु। निपला कृष्णु मध्वेशु ॥७००॥

बिंब शुद्धि खात्तिर। मध्व तळच्यां भित्तर।
निमज्जिताक काड्चा भाइर। यत्नी बलाढ्य लोक
॥७०१॥

तीस लोकालें बल। जाइनि तेन्ना सफल।
आचार्य तें महाबल। मारुति ब्रम्हवेत्ता ॥७०२॥

अनायासान प्रतिमा। घेत्ता खांद्यारि भीमा।
द्वादश स्तोत्रानि महिमा। सांग्तचि कृष्णकीर्ति ॥७०३॥

रुक्मिणी करार्चिताक। विधिपूर्वक अभिषेक।
सुंदर अप्राकृताक। प्रतिष्ठिलें गा आगमोक्त ॥७०४॥

कोर्का यजन याजन। कर्म तीं ज्ञान साधन।
अशिशं जनांक मनन। करैलो गा कर्मयोगु ॥७०५॥

वैदिक कर्माचरण। मोक्ष सुखाक कारण।
पतन गा स्वर्गादिकान। अशिश शिकवण मध्वांलि
॥७०६॥

कर्माकर्म निर्णयान। तंत्रसारोक्त पूजनेन।
आणि तात्पर्य निर्णयान। गीता भागवतादि ॥७०७॥

भारतार्थ ते गहन। मायावाद खंडन।
तत्त्ववादाचे मंडन। केल्लें व्यासाज्ञेन सकळ ॥७०८॥

मिथ्यावादाचो नाशु। वेदधर्माचो संदेशु।
शुद्ध भक्तिचो प्रकाशु। दिल्लो मध्वांनि लोकां ॥७०९॥

स्वविहित वृत्ति। ताज्जेनचि हरि प्रीति।
निष्ठायुक्त दिनंप्रति। कोर्का तें लोकां बरें ॥७१०॥

करा वेदानुसरण। नित्य कर्मानुष्ठान।
विष्णु प्रीति कारण। साधन तें मोक्षप्राप्ति ॥७११॥

मध्वालें सत्कार्य। धैर्य आणि औदार्य।
करणीं तरी आश्चर्य। मनोहर वचन तांचें ॥७१२॥

चर्या तांचि अद्भुत। शौर्या तरी महाद्भुत।
स्थैर्य परमाद्भुत। लीला अचिंत्य गा सदा ॥७१३॥

गंगा गोदा पावनी। भवरोग संजीविनि।
विंध्यगिरीच्या पेल्यानि। सर्व संचार करीऽत ॥७१४॥

उत्तराक गेल्ले दुसरें। भाष्यादि घेव्नु सत्वरें।
व्यास दर्शनावसरे। चाल्ले शीघ्र बदरीक ॥७१५॥

भेट्ले परत व्यासाक। समर्पिले भाष्यादिक।
चोव्नु भावी ब्रम्हांक। व्यासु दित्ता सहभोगु ॥७१६॥

वेदव्यास दयापात्र। मध्व ते पुण्यगात्र।
रजतगिरी पवित्र। येव्नु वंदितातित अनंतेशा ॥७१७॥

पाप पंथीक तापकरु। साधू लोकां पापहरु।
मध्वनामकु दिनकरु। पाव्लो भार्गव क्षेत्रा ॥७१८॥

सांगल्यारि आयुष्यभरि। सर्ना मध्वालि वैखरि।
तौलव मंडला स्वारी। आइल्या मध्वालि आइक ॥७१९॥

ईश्वरदेवनामकु। अहंकारि रायु एकु।
मूर्खू प्रजापीडकु। करैता भू खनन [४०] ॥७२०॥

प्रवास्यांक धोर्नु हाण्णु। त्यांच्या हात्तां घोळोनु।
हास्ता आपण पोळोनु। तो आडुैता मध्वांक ॥७२१॥

४० खोण्दुचें

करर खनन क्रिया। हे संन्यासी महोदया।
मध्व म्हणाले कोर्नु दाक्कया। उपरांत करु आम्ही ॥७२२॥

केल्लें खनन रायान। राब्बोचा जाईना ताज्यान।
वायुदेवाल्या प्रेरणेन। खोंडीत गेल्लो नृपति ॥७२३॥

थकलो रायु भारी। मांग्ता ह्या अहंकारी।
यतिवरा तू क्षमकरी। म्हणता राकले ताक्का ॥७२४॥

सर्वोत्तमु नारायणु। लक्ष्मी आणि चतुराननु।
हांका मात्र सोण्णु। सर्वांक वायूचि प्रेरकु ॥७२५॥

संसार दुःख अशेष। समूल जात्ता नाश।
म्होणूचि शेष ईष। भजताति वायु देवा ॥७२६॥

आइकूनु ती वायु महिमा। एकदा तो जीवोत्तमा।
आइलो गंगा नदी संगमा। शिष्या सहित पूज्यु ॥७२७॥

शत्रूंनि निपैला नौका। गंगा ही पार कोर्का।
आपुल्या माक्षि तुम्ही उतोर्का। शिष्यां सांगून मध्व ॥७२८॥

आपण गंगेंतु पोव्ले। तांचे चरण शिष्यानि धर्ले।
एक्लेन एक्ल्या अनुसरले। आश्रयु गा वायु सर्वांक ॥७२९॥

गुरु पार कर्ता संसारु। तशिशं हे शिष्य परिवारु।
गुरुलो चरणाधारु। घेत्लो म्होणु वांचले ॥७३०॥

एक त्या तुरुष्क रायान। आपण शत्रु भयान।
नौका सर्व अपहरून। निपैल्या गुप्त स्थळां ॥७३१॥

पळैले त्या तुरुष्कानि। धरा! मारा! म्होणु तान्नि।
आइलें चोव्नु मध्वानि। उलैले तुरुष्क भाषा ॥७३२॥

हे महा मूढानु। वोच्चुनका व्यर्थ मोर्नु।
तुमच्या रायाक पोळोनु। दित्ले आम्ही आशीर्वाद ॥७३३॥

उल्लैता हो आपुलि बोलि। आइकूनु ती तुरुष्कटोळी।
सांग्ले राया त्या वेळि। पाव्लो तुरुष्कुथांगा ॥७३४॥

सर्पाक कशिशं गारुड मंत्र। कर्ता तांका अस्वतंत्र।
तशिशं ते तुरुष्क अतंत्र। जाल्ले भीव्नु भ्रांत ॥७३५॥

सृगाला[४१] मध्ये पंचाननु[४२]। शोभ्लो तशिशं मुख्यप्राणु।
प्राणांक चोव्नु मुसल्मानु। जाल्लो नित्राण भीव्नु ॥७३६॥

विचार्ता तो यवनु। कोणु गा तू महानु।
बलवंतु तू धैर्यवानु। आइलो कित्या ह्या कडे ॥७३७॥

समुद्रा सार्खि गंगा। तरले कशिशं तें सांगा।
शत्रूल्या शिबिरांतु हांगा। येव्चाक प्रेरकु कोण ॥७३८॥

जगाक दित्लो प्रकाशु। तोचि सूर्याधिवासु।
तो सर्व सत्ताधीशु। प्रेरकु तो तुक्का माक्का ॥७३९॥

अशिशं ते सर्वज्ञ मुनि। उलैले तुरुष्कभाषेनि।
आश्चर्य पाव्ले मुसलमानि। म्हणाले हो प्रवादी खरें ॥७४०॥

४१ कोल्लो. ४२ सिंहु.

चोव्नु मध्वालि आकृति। स्पष्टोक्ति आणि देहकांति।
पूज्यालि ज्ञान संपत्ति। दिसलि बहु आकर्षक ॥७४१॥

तुरुष्कु नियाळ्ता सहज। कोरु विसर्लो नमाज।
आठैत मुनिलें तेज। अर्पिलें राज्यार्ध तेन्ना ॥७४२॥

निर्भीत भुवन प्राण। सर्व विद्या निपुण।
चोरांक सन्मोहन। केल्लेलि घटन आइका ॥७४३॥

एकदा चोरालि टोळी। आक्रमण कर्ता त्या वेळी।
आचार्यान सम्मोहन घालि। ते एकामेका घाबरले
॥७४४॥

एकलेक एकलो पळैता। परस्पर मध्वशि दिस्ता।
आलतान पेलतान मारु पडता। मोहित गा सर्व ॥७४५॥

आनि एकडे असंख्य चोर। हात्तांतु घेव्नु कुठार।
कोर्चा येत्ताति प्रहार। आइकरे तेन्नाचि लीला ॥७४६॥

शिष्य तें उपेन्द्रनामि। तांच्यांतु आवेशितु स्वामि।
चोराकड्चे कुठार यमि। कोर्नु आकृष्ट आपण ॥७४७॥

तित्ल्यांक यति तो एकलो। मध्वाल्या शिष्यांतु दाकलो।
धाव्डानु सर्वांक जिंकलो। करणी ही वायुदेवालि ॥७४८॥

आनि एकदा लुटारि। आइले संख्येन भारी।
मध्व शिष्यां बरोबरी। राब्ले स्तब्द निःश्चेष्ट ॥७४९॥

दिसले सार्खे हे पात्थर। सरले पेल्लान चोर।
परऽत जाल्लें पूर्वतर। पोळोनु चोर परिवर्तलें ॥७५०॥

चोर जाल्ले परिवर्तित। गुरु दृष्टि कृपा पूरित।
उद्धारले ते कैरात। महिमा अगाध गुरुली ॥७५१॥

सत्यतीर्थ एकवेळी। घेव्नु देवालि पेळी।
चिंतीत लीला गुरुलि। चाल्ले मुखार हिमगिरि ॥७५२॥

व्याघ्र रुपाचो राक्षसु। घाल्तारे तांका घासु।
येत्ता पोळोनु यतीशु। मार्ता मुष्टीन शीघ्र ॥७५३॥

कोर्नु व्याघ्र संहारु। रात्ता शिष्याक सद्गुरु।
उपरांत चड्लें हिमशिखरु। पाव्ले त्या व्यासबदरी ॥७५४॥

व्यास चरण लोटांगण। घाल्नु तीं दोनी चरण।
केल्ले स्पर्ष भक्तीन। आणि माग्ले व्यासाकडे ॥७५५॥

लक्ष्मीयुक्त सन्निधान। आसो सदा आम्चा कडून।
सेवा घे नारायण। करी गा धन्य आम्का ॥७५६॥

न घडो वियोगु कदा। राक सदा आपदा।
मागता वाचे गद्गदा। चोव्नु हे द्रविलोमुनि ॥७५७॥

घेरे ही अष्टप्रतिमा। अचिंत्य हाज्जीं महिमा।
स्वयं हांव आणि रमा। सदा सन्निहित तुजकुणि ॥७५८॥

नांव हाक्का व्यास मुष्टि। हाज्जि पूजा तीचि इष्टि।
भक्तीन पूजील्यारि तुष्टि। मेळ्ता पुष्टि मुक्तिमार्गा
॥७५९॥

जगांतु तूंचि समर्थु। विवरि भारताचो अर्थु।
तात्पर्य बोरोनु कृतार्थु। जारे मध्व महिमा ॥७६०॥

स्नानोदकां भागीरथि। विग्रहांतु हांव यति।
सदा दोग्गैं अस्ताति। वऽच रे वऽच प्राणेशा ॥७६१॥

व्यासमुष्टि घेव्नु। अनुचरां सहित पवनु।
गंगातीराक येव्नु। पाव्लें ते सूर्यास्तमी ॥७६२॥

नावा आणि नाविक नांति। लाग्लि शिष्यांक खंति।
निराश्यांक चोव्नु मारुति। दाकैता सिद्धि लघिमा ॥७६३॥

चमकलें मध्यें उद्कारि। शिष्यांले संदेह निवारी।
स्पर्शना थेंबोइ वारी [४३]। विद्या ही जलस्तंभन ॥७६४॥

४३ उद्दाक

सकलविद्या प्रवीण। गुरु म्हणाले शिष्यजन।
मुख्यप्राणु आणि भीमसेन। हीं गुरु रूप विस्सर्लि
॥७६५॥

गुरुलि शक्ति समजूनु। शत्रुराजु तो यवनु।
शिष्यांक नौका बळोनु। करैता पार गंगा ॥७६६॥

पवित्र गंगा तीरारि। बसल्या गुरुलि स्वारि।
बस्लेति तांचा सेजारि। महा महा विद्वांस भारी॥७६७॥

ब्राम्हणऽ ब्रम्हवादि। जिज्ञासु आणि तत्त्ववेदि।
त्या सभेचा मुख्यवेदीं। दिसलें शिष्यांक मध्व ॥७६८॥

हे भावी चतुरानन। चातुर्मास्य निमित्तान।
करीऽत व्रतानुष्ठान। उरलें श्रेष्ठ गज नगरी ॥७६९॥

गंगा भागीरथि। प्रकटली हस्तिनावति।
केल्लीं शिष्यानि नुति। पाप भंगा गंगेलि ॥७७०॥

शिष्यां पैकि वरिष्ठ। समज्ता आपण बलिष्ठ।
तरी ते गुरुक निष्ठ। एकदा सांग्ले गुरुनि ॥७७१॥

तुम्ही सर्व एक्डे। मेळ्नु येय्या मजकडे।
द्वंद्व युद्धाक उगडे। रिघा सगळे निर्भीड ॥७७२॥

करा शक्ति उपयोग। आस्का तुम्चा सहयोग।
ना भोगतालें दुःखभोग। जात्लो तुम्चो गुरुद्रोह ॥७७३॥

गुरु वाक्य पालक। आइले द्वंद्व युद्धाक।
आइल्या पंद्राहि जनांक। गुरु आपटी भूतळा ॥७७४॥

बलिष्ठ तुम्ही उठारे। उठानुतरी बसारे।
बोसोकावे सांगरे। म्हणताचि हास्ले गुरु ॥७७५॥

देह तें मेरु समान। बोट्टां पर्वतां वजन।
आम्का निश्चित गा मरण। सोड्वाइ वांचैगा गुरु ॥७७६॥

केल्लें शिष्यांक रक्षण। अहंकार्यांक क्षमादान।
दीव्नु श्रीमध्वगुरून। दिल्लि तांक भक्ति दीक्षा ॥७७७॥

वेदशास्त्रांतु मुख्यु। निर्दोषु अहैतुकु।
सर्वव्यापी प्रेरकु। सनातनु जीवभूतु ॥७७८॥

सृष्टि स्थिति संहार। सर्व जीवकृत् व्यापार।
नेण ती असुर फार। पापिगा ते हरिद्वेषि ॥७७९॥

सदागम पूजितु। समाभ्यधिक रहितु।
ज्ञान विज्ञानमयू दातु। पूतु तो सत्यवतीलो ॥७८०॥

कुरुक्षेत्र रणांगणि। आइलो एक्लो मध्वमुनि।
भीमावतार यादानि। हर्षिले शिष्य सहित ॥७८१॥

पूर्वि केल्लां असुरवधा। तेन्नाचि ती भीमगदा।
दाकैलि शिष्यांक सुदा। बरोब्बरि सत्यतीर्था ॥७८२॥

थंचाण हृषीकेशाक। भेटि दिल्लीं रुद्राक।
दिल्लें मृष्टान्न भक्षूंक। स्वयं त्या रुद्रदेवान ॥७८३॥

वेदबंधु मध्वु। गुरु मान्ता तो शिवु।
धन्यु जाल्लो पार्वतीधवु। भेट्ल्यान प्राणदेवाक ॥७८४॥

महाक्षेत्र इषुपात। भार्गव भूमि तीं ख्यात।
भक्तीन मनां स्मरीत। वंदिले त्या यज्ञपुरुषा ॥७८५॥

भीमावतारा मध्वांक। आइलो एकलो परीक्षेक।
राजकेळी हजारेक। दवोर्नु खाय्या म्हणालो ॥७८६॥

ज्ञानवंतु बलवंतु। भक्तिवंतु शक्तिवंतु।
जीवोत्तमु सर्व जीवांतु। खाल्लि केळीं तितुली ॥७८७॥

पाव्ले मध्व गोमांत। श्रेष्ठ सप्त कोंकणांत।
वसति विप्रालि असंख्यात। सारस्वत ते परशुरामाले ॥७८८॥

जमले सर्व एकत्रित। आनंद मुनींक स्वागत।
करीऽत जाल्लें शरणागत। भक्तु हो भार्गवालो ॥७८९॥

हरिसर्वोत्तमत्व। तारगेलें गुण पूर्णत्व।
जीव हे तारतम्योक्त। अनुचर ते हरीले ॥७९०॥

पंचभेदात्मक जग। मुक्तिनैज सुखभोग।
मुक्तीक भक्तियोग। शिवाइ मार्गु ना अन्यथा ॥७९१॥

प्रत्यक्षादि प्रमाण तीनि। वेदगम्याक समजूनि।
जीवोत्तमाल्या दयेनि। संपादुका ज्ञान शास्त्रांचें ॥७९२॥

बादरायणालो हो मतु। भार्गवरामांक सम्मतु।
सासष्टि दशगोत्रांतु। जाल्ले वैष्णव बहुश्रुत ॥७९३॥

मध्वभक्त भार्गवाले। भार्गवसारस्वतांतुले।
अशिशं संबंध योजिले। पूर्णप्रमतिन तेन्ना ॥७९४॥

केल्लें सर्वां चक्रांकन। निषेधिलें वामाचरण।
हिंसामय यज्ञांतून। सोडैलें त्या सज्जनांक ॥७९५॥

यज्ञ हे मोक्ष साधन। बलिकरा पिष्ट पशून।
यज्ञांतर्गत भार्गवान। सांग्ला मार्गु हे समजा ॥७९६॥

अलंघ्य व्रत एकादशि। हरि चिंतन अहर्निशि।
नियत कर्म चुक्कानाशि। करा पूजा गुरु आणि देवा ॥७९७॥

तुम्चे खातिर सर्वमूल। सात्तीस ग्रंथ प्रबल।
वेदव्यास दयेन सकल। कोर्नु समर्पिला ताक्का ॥७९८॥

खंचै देवालि पूजा। घेत्लो नारायणूचि समजा।
कर्म कृष्णार्पण सहजा। करा सेवा हरिगुरुलि ॥७९९॥

वर्णाश्रमाचें कर्म। तेंचिगा सहज धर्म।
निष्काम ताज्जे मर्म। करा समजून नित्य ॥८००॥

उपदेश पूर्ण प्रज्ञालें। सर्व वैदिकांक पटलें।
शुद्ध वेद मत स्वीकार्लें। वाढ्लि भक्ति शास्त्रीय ॥८०१॥

शंकर नामकु ब्राम्हणु। चारि हजार केळीं हाण्णु।
तीस कळ्शे दूद दवोर्नु। तूं तरी भीमु घे हें ॥८०२॥

सर्लें दूद आणि केळें। जिरैता तो भीमुपळें।
हे रायाक कळ्ळें। आइलो परीक्षेक धूर्तु ॥८०३॥

आचार्य वसति भोंव्ती। सशस्त्र सैन्य दवतींति।
मध्वपूजेंतु आस्सऽति। कवाट धांप्ला बरे ॥८०४॥

उगडूनु कवाट दोनि। रायु चोइता निय्याळूनि।
पूजा कर्तीति रूप तीनि। हनुम भीम मध्व ॥८०५॥

जाल्लि राया दृष्टिहानि। पुरोहितांक आप्पोनि।
गुरु कडे केल्लि मागणि। क्षमकरी मध्वराया ॥८०६॥

नेण आम्ही गुरुमहिमा। पडले अज्ञान तमा।
राकरे जीवोत्तमा। दीगा दृष्टि आणि दर्शन ॥८०७॥

दिल्लें आयुष्य षणमास। राज्य तुज्जे जात्ले नाश।
परचक्रांतु बुड्तादेश। व्यर्थरि तुजें सैन्य ॥८०८॥

भयानक हे भविष्य। सांग्तऽचि जाल्ले अदृश्य।
पापीक शिक्षा ही अवश्य। वक्तव्य हें शिष्यांलें ॥८०९॥

साधका आइक कथन। सांग्ता तुक्का समाधान।
सारस्वत हे प्राचीन। वैष्णवऽचि हें समज ॥८१०॥

आशिशले तरी अद्वैति। देवु जीवु एक्कु म्हणताति।
तांच्यांतु जाल्लि जाग्रति। घेत्लो सिद्धांत पक्षु ॥८११॥

अनंतासनु भार्गवु। मध्वालो मूल देवु।
सारस्वतांतु ना दुभावु। दोग्गांक देवु एक्लो ॥८१२॥

मध्व संस्कार औत्तरेय। सारस्वत सार्खे स्वकीय।
अशिश ओळखले मध्वराय। जाल्ले प्रसन्न तांका ॥८१३॥

श्री गुरु चरितामृत

जाल्ले वैष्णवी करण। श्रुति स्मृतीचे पुनरुत्थान।
तांचे यथार्थज्ञान। करैले खरे मध्वांनि ॥८१४॥

उपासनेंतु एकता। विष्णूचि पर देवता।
वेगवेगळें नांव उरता। तरी अंतर्यामि एक्लो ॥८१५॥

तीचि श्री भू दुर्गा। उपासनेक द्विजवर्गा।
दित्ता ती स्वर्गापवर्गा। अशिशं समजूति वाड्लि ॥८१६॥

गोयांचान पशुपेंक। आइल्या आनंदयतींक।
त्या ग्रामांतुले कृषिक। जाल्ले भजक गुरुराया ॥८१७॥

वृक्ष सगळे फल रहित। प्राण्यो तृषा पीडित।
दुष्काळान दुःखित। पोळोनु मध्व द्रवले ॥८१८॥

केल्लें हरिगुणगान। दिव्य मंगल स्वरान।
सुषुप्ति पाव्ले सज्जन। प्राज्ञालिंगन म्हणारे ॥८१९॥

वृक्ष फल पुष्पभरित। अंकुरले तरु निवांत।
मध्व हे गान शास्त्रांत। निष्णात गानयोगी ॥८२०॥

साहित्याक मूंल ते वेद। संगीताक मूल नाद।
वेदनादान बोध। करैता मध्वरायु ॥८२१॥

सकल शास्त्रांचें सार। वेदांचे मतानुसार।
भाष्य संग्रह अपार। भक्ति आणि मुक्तिप्रद ॥८२२॥

समजल्यारि भाष्य भावु। पाव्ता वैकुंठ देवु।
ना आनंदाचो अभावु। ना गा निरयु निश्चय ॥८२३॥

वेदाचे उपब्रम्हण। तेचिगा अठरा पुराण।
उपनिषदांचे अर्थपूर्ण। विवर भारता मधें ॥८२४॥

भाष्य भाव विवक्षित। दाहाइ उपनिषत।
भागवत आणि भारत। गीता ऋग्भाष्य सहित ॥८२५॥

आनंदतीर्थालो मतु। भक्तीन ओतप्रोतु।
होचि गा मुक्ति पंथु। सिद्धांतु निर्विवादु ॥८२६॥

पंथु हो वेदानुसारि। व्यास सूत्रार्थ विवरि।
तरी काहीं दुर्विचारि। करी द्वेष व्यर्थ ॥८२७॥

पुंडरीकपुरी एक्लो। पद्मतीर्थ आनि एक्लो।
तो तरी होडु पाक्ळो। दोग्गानि योजिलि युक्ति ॥८२८॥

मध्वालें ग्रंथ चोर्नु। विष्णुमंगलाथानु।
निष्पैता तो दुर्मनु। पापी नरकभागि ॥८२९॥

उद्देचा सोणा सूर्याक। म्होणु पंचांग चोर्चाक।
यत्न कोर्चा मूर्खाक। सांगा उपदेशु कस्लो? ॥८३०॥

तशिशं हो मध्वसूर्यु। सोड्तल्वे आपणेलो कार्यु।
ग्रंथु चोर्ता अनार्यु। शिक्षिलें ताक्का रायाने ॥८३१॥

तत्ववादाचि जयभेरि। निनादलि देशांतरी।
आनंदतीर्थांलि स्वारी। आइलिं "कोडिपाडि" ग्रामां ॥८३२॥

तेचि स्थळारि चातुर्मासु। शिष्यांतरी भाग्यविशेषु।
निरंतर शास्त्राभ्यासु। पठण करी पुनःपुनः ॥८३३॥

निरपेक्ष गुणपूर्ण। दैत्याक हे ब्रहद्बाण।
चतुराननांक समान। करी खंडन दुश्शास्त्रा ॥८३४॥

पूर्ण चंद्राननु गुरु। सर्व जयी उदारु।
विष्णु भक्तिचो आगरु। निरोगि विरागि योगि ॥८३५॥

सज्जन वृक्ष फुलले। शुष्क ही पल्लवित जाल्ले।
आनंदऽचि अवतरलें। नांव आनंदतीर्थ ॥८३६॥

मध्वकरी प्रवचन। आकाशरि देवगण।
सनक आणि सहस्रानन[४४]। कर्तीति श्रवणनित्य ॥८३७॥

एक दिवसु सनकादिक। प्रश्नु कर्तीति शेषाक।
मध्वकृत भाष्यादिक। पठण कित्या पुनरावर्त ॥८३८॥

४४ आदिशेषु

लक्ष्मीसहित श्रीहरि। तूं तांचि शय्या बरि।
खरें श्रवणाधिकारि। तूचि गा शेषा ॥८३९॥

आइकूनु हे शेषदेवु। सांग्ता श्रवण प्रभावु।
सर्व जीविलो ठावु। ताक्का नांव मोक्ष ॥८४०॥

मुक्तिचि गा मुख्यफल। स्वर्ग मेळचारि हि चंचल।
अपेक्षी तरी हतबल। जात्ले खरें पतन ॥८४१॥

वेदशास्त्राक सम्मत। विशुद्ध गा मध्वमत।
मनन करी अर्थ सहित। तोचि मुक्तु सत्य ॥८४२॥

तांचे खातिरि श्रीहरी। आपुलि वैकुंठनगरि।
विहाराक दीवु उपरि। दित्ता सर्व हि भोग ॥८४३॥

लक्ष्मी ती संपत्करी। सर्वांतु व्यापिला बरी।
उपमातीत नगरी। प्राप्त ती विष्णु भक्तां ॥८४४॥

असंख्यात दासी जन। करी लक्ष्मी सेवन।
लक्ष्मी ती जगपावन। करी स्वयं हरिसेवा ॥८४५॥

स्वरमणु नारायणु। लक्ष्मीं देविलो प्राणु।
तिज्जो तो सुखस्थानु। दर्शनीयु निजभक्तां ॥८४६॥

अनंतकल्याण हरि गुण। नेण ती लक्ष्मी संपूर्ण।
हांव सहस्र तोडांन। सांगूनु थकलो बापा ॥८४७॥

असंख्यात ब्रम्ह रुद्र। गरुड शेषादि इंद्र।
अगणित मुक्त मुनींद्र। करीऽ विहार सतिसहित ॥८४८॥

संकल्प मात्रान सिद्धि। वैकुंठी आनंद वृद्धि।
पुरुषार्थ हे समृद्धि। गम्य स्थान वैष्णवांचें ॥८४९॥

नाना आभरणयुक्त। चतुर्भुजाचे भोक्त।
नेस्लेति पीतांबर सूक्त। सार्खे नारायणाले ॥८५०॥

मुक्ति ही सारुप्य। तशिशं सालोक्य सामीप्य।
सायुज्यादि चारी गौप्य। प्राप्त केवल विष्णुभक्तां ॥८५१॥

जनन मरण त्रिताप। ना दुःख भयादि कोप।
सर्व सुखी गा चिद्रूप। सुख तारतम्योक्त ॥८५२॥

यज्ञान यज्ञपतीक। भजताति यज्ञ नामांक।
ज्ञान गानादि यज्ञांक। प्राप्तु यज्ञांतर्यामि ॥८५३॥

दंपति एकमेक। भोग्ताति सुरतसुख।
श्रमरहित ते अदुःख। नागा पतन इंद्रियाचें ॥८५४॥

विरह वियोगूचि ना। जरा रोगाचें भय ना।
सर्वाकय्यी हे मेळ्ना। केवल भक्तांक मुक्ति ॥८५५॥

आश्चर्य आनंदमयु। सुखगंधाचो चिन्मयु।
भक्त रक्षणांतु तन्मयु। रमारमणु वैकुंठु ॥८५६॥

व्रत समाप्ति नंतर। उपक्रमी देशसंचार।
मध्ये भेट्ले मदनेश्वर। वासु ग्रामैक रात्रि ॥८५७॥

प्रातरान्हिक संप्लें। आचार्य सिद्ध उठले।
प्रयाण सूचना समजले। इतर संन्यासी प्रवर ॥८५८॥

काषाय वस्त्र अजिन। दंड कमंडल महान।
शंख चक्रादि मुद्रेन। शोभ्ले संन्यासी तरुण ॥८५९॥

सुंदर पुष्ट शरीर। ते साक्षात् हरिमंदिर।
आनंदतीर्थ यतींद्र। अपूर्व गा तेजोन्वित ॥८६०॥

हरि निर्माल्य तुलसी। शिष्यु एकलो निरालसी।
गांतूनु दळा बर्शि। घाल्लिं गुरु मध्वांक ॥८६१॥

शंख चक्रादि चिन्हित। कंठ तुलसीमणी भूषित।
आचार्य मध्व रचित। स्तोत्रयुक्त तरुण ॥८६२॥

कर्तीति भक्ति नृत्य। हरि भृत्याले ते भृत्य।
मध्वांलें जगत्सत्य। तत्त्व वर्णीऽत मुखारि ॥८६३॥

सालिग्राम सहित देवालि। दोरानि बांधिलि पेळि।
शिष्य भक्तीनि सांभाळि। पूजापात्र सहित ॥८६४॥

बलाढ्य तरुण चेल। मस्तकां धरी सर्वमूल [४५]।
आइकता घांट मंगल। म्हणताति शकुन शुभ हे ॥८६५॥

चमकण श्रीमध्वांलें। गंभीर कंठीरवालें [४६]।
तेज तें भास्करालें। शरीर ते महोन्नत ॥८६६॥

चरणारुण कोमल। पावन करी भूमंडल।
नख कांति ती उज्वल। अधिक गा माणिक्यापशीं
॥८६७॥

४५ मध्वाचार्यांले सत्तीस ग्रंथ. ४६ सिंह

कासवा सार्खे श्रीपाद। रुद्रादिकांक आमोद।
जानु जंघा ती द्विरद[४७]। शुंडा दंड सारिखें ॥८६८॥

कौषेय बाह्य वसन। दिस्ता शोभायमान।
उदर कंठ वलित्रयान[४८]। देदीप्यमान स्पष्ट ॥८६९॥

मृदु सूक्ष्म पांगुरण। तें तरी उदयाचें किरण।
स्वर्ण शिखराचे मेरुम्हण। आचार्य मध्व आम्चें ॥८७०॥

विशाल वृक्ष आणि स्कंध। पुष्ट वर्तुलाचे बाहु चंद।
लांछनाचे करारविंद। ध्वज चक्र रेखा ॥८७१॥

सुंदर ती दंतपंक्ति। तांचि धवळकांति।
तांब्डे वोंट शोभ्ताति। दोळे विशाल कमल ॥८७२॥

४७ हस्ति. ४८ पोट्टाचि तीन रेखा.

शोभ्ता तुलसी गुच्छान। अति सुंदर कान दोन।
कपोल दर्पण समान। शिर तें कांति युक्त ॥८७३॥

भ्रूविलासान भूसुर। हर्षताति निरंतर।
असले तें मध्व प्रवर। साक्षात् वायु देव ॥८७४॥

गुरुगमनागमन। करीरे तूं नित्य चिंतन।
स्मरण संभाषण मात्रान। मोक्ष गा हें निस्संशय ॥८७५॥

प्रतिमा लक्षण तें बरी। चोव्का म्हळ्यारि कोणातरी।
त्या लक्षणाचो साकारि। मध्वुगा आमुचो ॥८७६॥

विहित कर्मानुष्ठान। अरुणोदयारि स्नान।
श्रीहरीलें कल्याणगुण। करी ध्यान एकांत ॥८७७॥

गुरुलि ही आचार निष्ठा। भक्तीचि तरी परकाष्ठा।
सर्व ही शिष्य उद्दिष्ठा। शिकवण आदर्शींचि ॥८७८॥

गुरु शयनानंतर। विरमताति शिष्यवर।
उठताति ते सत्वर। गुरुपेक्षां आदिं ॥८७९॥

पूजा ती पूर्णप्रज्ञालि। अनंतगुण पूर्णालि।
बिंबापरोक्षा वेळि। घेत्ता गुरु मूलरूप ॥८८०॥

तंत्रसारोक्त क्रमु। षोडशोपचार नियमु।
पूजेंतु भक्ति प्रेमु। असदृशु गा तांचो ॥८८१॥

विष्णु मंगल क्षेत्रांतु। केल्लेल्या वास्तव्यांतु।
उद्धरिलेल्या अनेकांतु। रायु जयसिंहु एक्लो ॥८८२॥

एकु दिवसु फांत्यारि। शिष्य एक्लो अवसरी।
निर्माल्य कोर्चे खातिरि। देवगृहांतु रिगलो ॥८८३॥

निर्माल्यांतु अमृतस्राव। समजलो गुरु प्रभाव।
हासले ते वायुदेव। केल्लें धारण निर्माल्य ॥८८४॥

विष्णु सर्वोत्तमत्व। जीवोत्तम वायु तत्त्व।
वेद शास्त्रांचे महत्व। सांगताति मध्व सर्वा ॥८८५॥

जपतपानुष्ठान। त्रिकाल संध्या स्नान।
गीता भागवत प्रवचन। हीचि गा मध्वचर्या ॥८८६॥

निद्रा कालु एकु सोण्णु। सर्वदा श्रीनारायणु।
ताक्काचि विषयु कोर्नु। ध्यान संभाषणादि ॥८८७॥

मध्वकरी तीर्थ स्नान। त्या स्थळी गंगावतरण।
गुरुले निर्वाण दर्शन। स्फुटाकृति ती वायूलि ॥८८८॥

अग्रयोदकाचो कलशु। हाड्‌ता एकलो शिष्यु।
निर्मल हस्ताचो यतीशु। कर्ता कलश पूजा ॥८८९॥

सुगंध अमृत जल। भर्ले शंखि निर्मल।
लक्ष्मीरुप पुष्प सकल। तुलसीयुक्त दिव्य ॥८९०॥

गुरु बस्ताति पूजेक। धरी दिव्य शंखोदक।
सालिग्राम शिलेंक। करी अभिषेक तेन्ना ॥८९१॥

नारायणाले स्वरूप। शिलेंतु आपोआप।
दिसताति तीं चिद्रूपं। खरे धन्य गा तें शिष्य ॥८९२॥

उपचार ते षोडश। हरि अर्पिति यतीश।
पूजा तांगेलि निर्दोष। घेत्ता प्रीतीन देवु ॥८९३॥

शरीर कोर्नु मंदिर। श्रद्धा रुपी जलधार।
बिंब रुपीलें सुंदर। चिंतन गुणगणाचें ॥८९४॥

अष्ट भावाचे कुसुम। समर्पितात्ति तें महिम।
चल्ता पूजा प्रती याम। करी सेवा कृष्णालि ॥८९५॥

गंगापेक्षा अधिक। श्रीहरी पादोदक।
एकतप [४९] उपवासाक। मेळ्ता की पुण्य तितलें ॥८९६॥

मेळ्ता प्राशन मात्रान। प्राशिलें ते मध्वान।
त्या उपरांत भक्तजन। सेविले तीर्थ शुद्ध ॥८९७॥

४९ ब्हार वर्ष.

पाद घुल्लें जलान। मस्तकी धरी सर्वान।
हरिपादोदक समान। जल तें गुरु चरणांचे ॥८९८॥

हे जगदीश नियामका। प्रसन्न जारे आम्का।
हे वेदज्ञा प्रेरका। हृद्गता हरि राक ॥८९९॥

अशिशं स्मरीत मनान। प्रसादरुपी परमान्न।
स्वीकरून पवमान। चाल्ले व्याख्यान पीठा ॥९००॥

जमलें पंडितजन। उपक्रमलें शास्त्र श्रवण।
ना गा समयावलोकन। जाल्ले धन्य श्रवणान ॥९०१॥

असंप्रज्ञात समाधि। पाव्ले मध्व विशाल धी [५०]।
दिव्यानंदाचे अवधि। अद्भुत गा अवर्णनीय ॥९०२॥

[५०] बुद्धि

श्री गुरु चरितामृत

सज्जनांक सन्मति। हरिकथेंतु सदा रति।
सुजीवींक खरी मुक्ति। दित्ताति ते आनंदतीर्थ ॥९०३॥

मध्वाले सात्तीस ग्रंथ। करी शास्त्रार्थ विस्तृत।
दहा ईशादि उपनिषत्। तात्पर्य भाष्य गीता ॥९०४॥

भागवत आणि भारत। तात्पर्यनिर्णय समेत।
यमक भारत पुनीत। महार्णव कृष्णामृताचे ॥९०५॥

अणुभाष्य अनुवाख्यान। कंदुकनुति न्यायविवरण।
प्रमाण आणि कथालक्षण। खंडन माया वादाचें ॥९०६॥

निर्णय कर्म जयंती दोन। खंडन मिथ्यात्वानुमान।
नख स्तुति तत्त्व संख्यान। तत्त्वोद्योत विवेक ॥९०७॥

विष्णु तत्त्वाचेंरि निर्णयु। उपधि खंडन स्मरणीयु।
ऋग्भाष्य तरी आम्नायु। विशेष गा सूत्र भाष्य ॥९०८॥

यतिप्रणवकल्प एक। तंत्र सार ते सर्वाधिक।
साधक साधु जीवींक। सात्तीस ही संजीविनि ॥९०९॥

सुभाषित तरी असंख्यात। केलां मध्वानि उद्धृत।
ते सर्वज्ञ पवनजात। आप्त गा नारायणालें ॥९१०॥

अणु भाष्य मेळ्नु आठ्तीस। दीव्नु लोकांक यतीश।
रात्ताति ते प्राणेश। सदा सर्वदा आम्का ॥९११॥

मध्वाले जननी जनक। पाव्ले ते परलोकाक।
मध्वानुज विष्णुभक्ताक। दारिद्र्य पीडिलें बहूत ॥९१२॥

वेदज्ञानी अनुजु। वेदव्याख्यांतु अग्रजु।
साक्षात् मरुतात्मजु। सहज ताक्का सर्वज्ञता ॥९१३॥

वैराग्य पोळोनु अनुजालें। विधिपूर्वक संन्यासदिल्लें।
विष्णुतीर्थु नांव जाल्लें। मध्वाले ते प्रीति तीर्थ ॥९१४॥

मध्वानुज महा विरक्त। श्रीहरीले एकांत भक्त।
महातपस्वी अनासक्त। पाव्ले हरिश्चंद्रगिरी ॥९१५॥

अन्नपानादिक त्यजूनु। बिल्वनिंबादि भक्षूनु।
जलपानांतु तृप्त जाव्नु। बैसूनु क्लिष्ट शिलसिनी ॥९१६॥

प्राण देवाल्या अनुजाक। प्राणायाम सिद्धिक।
ना गा श्रम ते अधिक। जाल्लें इंद्रिय वशवर्ति ॥९१७॥

प्रथम शिष्य ते चारी। पद्मनाभ आणि नरहरि।
माधव अक्षोभ्य मस्करि[५१]। विरक्त विष्णुभक्त ॥९१८॥

तरुण यतिवर्य आठ। हरिगुरुले भक्त श्रेष्ठ।
वेदज्ञ आचार निष्ठ। दिग्गज हे आचार्यालें ॥९१९॥

ऋषिकेश जनार्दन। उपेंद्र आणि वामन।
नरसिंह राम नावांन। अधोक्षज आणि विष्णु ॥९२०॥

सत्यतीर्थादि विरक्त। सदा गुरुसेवासक्त।
असंख्य श्रीहरि भक्त। सिद्धांति तत्त्ववादि ॥९२१॥

हे सर्व तीर्थनावांनि। विख्याति विष्णुसेनानी।
अवैदिक लोक दुर्गुणि। निपलें गा देशांतरीं ॥९२२॥

५१ सन्यासि

मध्वाले शिष्य प्रशिष्य। गुरुलें सर्व भाष्य।
गुरु दयेन वश्य। जाल्ला त्यां पुण्यात्मा ॥१२३॥

अनेकगृहस्थ लोक। पात्र गा गुरु कृपेक।
लिकुचवंशाचे प्रमुख। त्रेताग्नि सार्खें त्रय ॥१२४॥

दोगे शंकर नामक। तीसरे त्रिविक्रमाख्य।
हे टीकाकार वैदिक। उपनिषद्भाष्य ज्ञानी ॥१२५॥

मध्वाले ग्रंथ पालकु। शंकर नामकु एकु।
रघुनाथु ग्रंथ रचकु। आणि बहीणी ती कल्याणि
॥१२६॥

वैष्णव सिद्धांति सगळे। गुरु कृपेन वाड्ले।
भक्तीन संवर्धले। जाल्लें मुक्ति योग्य ॥१२७॥

आनंदतीर्थालें दर्शन। भक्तीन करिऽत कोण।
तांचे दासत्व प्राप्तीन। सिद्धिगा सर्वाभीष्ट ॥९२८॥

मध्वालि महिमा अगाधु। घेय्या की कथा स्वादु।
शूद्रनृपति एकु अबोधु। करीं प्रश्नु मध्वांक ॥९२९॥

जपान बीज अंकुरता। श्रुतिवाक्य व्यर्थ दिसता।
अप्रमाण ही संहिता। फल तरी दाकैया स्पष्ट ॥९३०॥

तत्क्षण मध्वरायान "या औषधि' मंत्रान।
"मुद्गाक"[५२] अंकुर हाडोन। दाकैलि मंत्र महिमा ॥९३१॥

रायु गुरुल्या पाय्यारि। मस्तक दवोर्नु क्षमकरी।
गुरुराया ह्या दीनाचेरि। म्हणतऽचि शरण आइलो ॥९३२॥

५२ मूगु.

श्री गुरुचरितामृत

पाठाचो वेळु संजेरि। निव्लो दिव्वो क्षणभरी।
गुरुल्या नखाग्रारि। प्रकटलो प्रकाशु दिव्यु ॥९३३॥

भद्रानदीचो प्रवाहु। आड्डोचाक बहु उत्साहु।
यत्न कोर्नु जनसमूहु। थकले ग्रामीण सगळे ॥९३४॥

बृहत् शिलाखंडु हाण्णु। दवर्ताले आडम्होणु।
व्यर्थ जाल्लें श्रम कोर्नु। जाल्ले बाव्डे निराशी ॥९३५॥

पळैताति मध्ववयति। जन अशिशं उल्लैताति।
साक्षात् भीमांक ही कृति। असाध्य म्हणतीं जन
॥९३६॥

आइकता हे पवमानु। पूर्वावतार स्मरूनु।
हाड्ल्या सार्खे गंधमादनु। अनायासान तेन्ना ॥९३७॥

एक हस्तान उक्कोळ्नु। उद्दिष्ट स्थळारि दवोर्नु।
हासले हे पोळोनु। नमिलें 'कलश'[५३] गांव्चे ॥९३८॥

एकदा ग्रहण कालांतु। स्नानांक देव्लों समुद्रांतु।
शिष्यसहित तो शांतु। दशमति पूर्णप्रज्ञु ॥९३९॥

भयंकर पाळं उसळीं। शिष्य रेवेंतु लोळि्ळं।
पळैऽत लोक हासलिं। मध्व नियाळि समुद्र ॥९४०॥

समुद्रु जाल्लो शांतु। न्हाल्लो तो भारतीकांतु[५४]।
संन्यासी शिष्या समवेतु। कर्ता जय घोषु हरीलो ॥९४१॥

५३ चिक्कमगळूर्चो एकु गावु ५४ वायुदेवालि पत्नि भारतीदेवि

गंडवाट सहोदर। महामल्ल भयंकर।
कांतेश्वर हरिमंदिर। आइले खळ दर्शनांक ॥१४२॥

गंडवाटालो आवेशु। पळैता तो प्राणेशु।
दुष्टाक दिल्लो आदेशु। करा बल प्रदर्शन ॥१४३॥

दोग्गानि श्रीमध्वालो। गळो गट्टि चिर्‌डिलो।
लोहा सार्खें कठिण जाल्लो। कंठु आणि स्नायु सगळे ॥१४४॥

हूमसुंट्‌लि तांका। सांग्लें गुरुनि भीवुनक्का।
अंगुष्टु हे हाल्लोका। करा यत्न दोगैं ॥१४५॥

अंगुष्ठ दाब्बूनु भूईंक। धर्लें मध्वानि आइक।
हाल्लोचा जाइनि दोग्गांक। लोळ्‌ळें तें मध्वचरणा ॥१४६॥

कोस्सळ्ळो 'कोडिंजाडि'[५५]। हारवलो तो 'मूडेंबाडि'[५६]।
गरीमा शक्तीचि मोडी। नेण ते मूर्ख दोगें ॥१४७॥

भीमबलि मध्वान। एक तरुणाक निवडून।
ताज्जा खांद्यारि बैसून। नरसिंहालय[५७] भोंव्ति ॥१४८॥

प्रदक्षिणा काड्लि तेन्ना। देहाक वजनऽचिना।
तरुणु हर्ष संपन्ना। जाल्लो सिद्धि ती लघिमा ॥१४९॥

तांड्लिं रोम चिमटच्यानि। नासिकाग्राक मुष्टीनि।
केल्ले प्रहार दुष्टानि। तरी शांत गा गुरुराय ॥१५०॥

"पारंकि" ग्रामांचें देवुळ। पूजा ना थई बहुकाल।
मध्वान पाविल्या तत्काळ। रायु आणि ग्रामाधिपति
॥१५१॥

५५ एक्लो दुष्टु. ५६ आनि एक्लो दुष्टु. ५७ मंजेश्वराचे भद्र नरसिंह देवळ.

गुरु दर्शन मात्रान। वशीभूत जाल्ले तत्क्षण।
केवल अर्घ दिवसान। करैलि जात्रा उत्सव ॥१५२॥

वशित्व नामक ही सिद्धि। एकवटल्या गुरु सन्निधि।
ग्रीष्म ऋतुच्या अवधि। पाव्ले "सरिदंतरा"[५८] क ॥१५३॥

सुकलां सर्व तें तळें। आचार्यीनि हे पळैले।
मेघ अपार एक्डे केल्लें। करैलि वृष्टि अद्भुत ॥१५४॥

होचिगा वायुदेवु। अशिशं जनालो सद्भावु।
श्रीगुरु मध्वरावु। पाव्लो शूद्रादिभक्तां ॥१५५॥

वैद्यनाथु धन्वंतरी। 'कोक्कड' ह्या ग्रामांतरी।
प्रकटला थांगा श्रीहरी। भवरोग वैद्यु ॥१५६॥

५८ एक जलाशय.

कृष्णामृत महार्णव। बरैताति महानुभाव।
भक्ताखातिर मध्वराव। करी विषय विषशमन ॥९५७॥

अल्प अन्न अक्षय केल्लें। अक्षय अन्नतें भक्षिलें।
भक्तां खातिर सगळें। लीला कर्ताति मध्व ॥९५८॥

मध्वाचार्यालें चरित्र। देवतेंकई पवित्र।
ती सर्व मेळ्नु एकत्र। करी श्रवण नित्य ॥९५९॥

मध्वाले पाठ प्रवचन। आइकताति देवगण।
आपुल्या सभेंतु वर्णन। करी नित्य जिज्ञासा ॥९६०॥

मध्वाले वचन किरण। कर्ता अज्ञान नाशन।
श्रीमुकुंदालें चरण। दर्शन प्राप्त तत्काळ ॥९६१॥

नमस्कार गा प्राणेशा। भीमा श्रीभारतीशा।
सकल सद्गुण विशेषा। निर्दोषा राक आम्का ॥९६२॥

रामकृष्णादि देवांक। प्रीतिचो तूं मुक्तांक।
प्रियतमु तूं साधकांक। घे नमस्कार आमुचो ॥९६३॥

ज्ञानैश्वर्य संपन्ना। कर्तांति साष्टांग चरणा।
राकरे भक्ताभरणा। चेष्टकु गा तूं जगत्राणा ॥९६४॥

तुजे अवतार कारण। सुजीवीक ज्ञानदान।
दीगा यथार्थ ज्ञान। असों तुक्का जयकार ॥९६५॥

इंद्रादि अमर गण। नित्य मध्वालि प्रार्थन।
करुनु तें वैभवान। घालि वर्षण पुष्पांचे ॥९६६॥

हृषिकेश तीर्थांनि। बरैला गुरु भक्तीनि।
संप्रदाय पद्धति नावांनि। विचित्र लीला मध्वालि
॥९६७॥

वटु रूप त्या मध्वान। अंगणांतु तीर्थ निर्माण।
केल्लें आवैइन नामकरण। म्हळ्ळें वासुदेवतीर्थ ॥९६८॥

मध्वगेल्लो विमानगिरीक। आवैन आप्पैलें जेवणांक।
उऽडि माल्यां क्षणाक। उद्दैलि पाव्लं शिलेरि ॥९६९॥

विष्णु तीर्थाक व्यासमुष्टि। दिल्ली कोर्नु कृपावृष्टि।
पद्मनाभाक मठ समष्टि। दिल्लो अधिकारु गरुनि
॥९७०॥

“सेतुतिलांत”[५९] शास्त्रग्रंथ। केल्ले सर्वही भूगत।
विष्णुतीर्थाक हस्तगत। कोर्का म्हळें शिष्यांक ॥९७१॥

एक्कूण्यांशि वत्सर। दृश्यरूपान ते समीर।
कोर्नु सर्वत्र संचार। केल्लो प्रचारु शुद्धभक्ति ॥९७२॥

एकदा रजत पीठांतु। अनंतासन देव्ळांतु।
आचार्यमग्न प्रवचनांतु। जमलें असंख्यात ॥९७३॥

सर्वत्र हरिनाम घोष। सगळे भक्तीन परवश।
सर्वांक आनंद विशेष। देव्लो वैकुंठ पृथ्वीं ॥९७४॥

कायिं जप ध्यान रत। कायिं भाष्यादि अधीत[६०]।
कायिं असंप्रज्ञात। भोगी सुख समाधि ॥९७५॥

५९ एक गांवु. ६० वाचन

अनंतासना भोंव्ति। ताळ मृदंग गर्जीति।
द्वादश स्तोत्र म्हणताति। नांचताति गुरुभक्त ॥९७६॥

तर्क आणि गद्य पद्य। जाल्लां तत्त्वज्ञान हृद्य।
वेदवेदांग वैविध्य। करगत शिष्यवर्गा ॥९७७॥

श्रीहरीचि मुक्तिदाता। जीविल्या तारतम्यता।
जग हे सत्य तत्त्वता। ना गा ऐक्य जीवदेवा ॥९७८॥

श्रीहरीचि सर्वोत्तमु। मुख्यप्राणु तो जीवोत्तमु।
मुक्तींतूयि तारतम्यु। जग हे परमार्थ सत्य ॥९७९॥

मध्व शास्त्रांचे वाचन। अखंड व्याख्यान प्रवचन।
चल्तान अनंतासन। जाल्लो प्रत्यक्ष मध्वां ॥९८०॥

श्री गुरुचरितामृत

मध्वांक दिल्लें दर्शन। दिसलें तांका व्यासरूपान।
आज्ञादिल्लि त्या क्षण। योरे बदरी क्षेत्रा ॥९८१॥

अवतारु करी समाप्तु। तूं आम्का परमाप्तु।
शतवर्ष बदरीं गुप्त। राब काल देवमान ॥९८२॥

मूलरूपांतु एक। भोगरे स्वरूप सुख।
शाश्वत तुजी कीर्तिमुख। दर्शवी नित्य साधकां ॥९८३॥

मूलनारायणु हरि। आस्ता तुज्या बरोबरी।
तूं तरी ताज्या उदरी। कर्ता सदा वासु ॥९८४॥

आइकूनु व्यासवचन। श्रीमध्वराय त्या क्षण।
अनंतासनासुकूनु जाल्ले। अदृश्य क्षण मात्र ॥९८५॥

जनांक गुरु अंतरले। सन्यासींक अंतरी दिसले।
सर्वत्र दुःख पसरले। रडले अनाथ म्होणु ॥९८६॥

माघ शुद्ध नवमि। संवत्सर पिंगळनामीं।
आचार्यमध्व निर्गीमि। ना गा आणि दृश्यरूप ॥९८७॥

गुरु हो सर्वव्याप्तु। साधकांक परमाप्तु।
सगळच्या हृदयांतु गुप्तु। चेष्टकु जीव जालां ॥९८८॥

मध्वविजयाचें श्रवण। केल्यारि इष्टार्थ पूर्ण।
पठनान जन्म मरण। चुक्तारे आइक साधका ॥९८९॥

धन धान्याचि वृद्धि। सकल इष्टार्थ सिद्धि।
सद्बुद्धि आणि प्रसिद्धि। प्राप्तु गा निस्संशयु ॥९९०॥

श्रीमध्व विजयग्रंथु। बरयिलो त्रिविक्रमसुतु।
श्रीनारायणु पंडितु। भक्तु तो मध्वगुरुलो ॥९९१॥

आइक आतां कथानक। ह्या सारस्वत माध्वांक।
तांच्या मठ परंपरेक। प्रवर्तक कोण मूळ ॥९९२॥

कुलाचारान हे शाक्त। तरी हरीले परमभक्त।
ह्या संदेहान मुक्त। कर्ता सिद्धु साधकां ॥९९३॥

उदेलो संदेहु साधकाक। काशीमठाच्या परंपरेक।
कोण प्रमुख आणि प्रेरक। सांगा गा सिद्धश्रेष्ठा ॥९९४॥

विनंति आइकूनु साधकालि। सिद्धु वर्णिता मुखावैलि।
गोष्ठ ही काशींतूलि। विवर मत मठांचे ॥९९५॥

सारस्वत सगळे अद्वैति। तांतु वैष्णवई अस्सति।
मध्वांनि तांका द्वैति। केल्लिं ही गोष्ट खरी ॥९९६॥

तांचे मूळमठ। काशींतु ब्रम्हघाट।
श्रीपंचगंगा तट। नरसिंहु गा देवु ॥९९७॥

म्लेंछ काळीं श्रीमठ। जाल्ले उध्वस्त सपाट।
दक्षिणांक आइले नीट। जाल्लो मठु अस्तव्यस्त ॥९९८॥

दक्षिणांचे जाल्ले माध्व। भजती तरी कुलदैव।
अंतर्यामित्वेन भाव। भक्त विष्णु चरणीं ॥९९९॥

गोमांताचें देवळ। जाल्लिं सर्व निर्मळ।
भक्ति जाल्ली ती अमल। जाल्लि साधन सायुज्या
॥१000॥

मध्वालि ती सत्कीर्ति। मध्व गुरुलीचिं स्तुति।
मध्वांकऽचि प्रणति। करी वर्णन तांचें ॥१००१॥

काशी मठाचे चरित्र। आणि गुरुलें चरितामृत।
आइकल्यारि जात्ताति पवित्र। आत्म आणि अंतःकरण ॥१००२॥

म्हणालो अशिश सिद्धमुनि। निष्कपटि निरभिमानि।
काशीमठाचो अभिमानि। श्री सुधींद्रालो भक्तु ॥१००३॥

कथा ती श्रीमठाचि। वैभवी परंपरेचि।
अपरोक्षि सुधींद्रयति। सांग्तां चरित्र तांचे ॥१००४॥

श्रीगुरुचरितामृताचो श्री मध्वचरित्र नामक
पांच्वो अध्यायु समाप्तु
॥श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

श्री काशीमठाचे प्रथम यतिवर्य श्रीमद् यादवेन्द्र तीर्थाले गुरुवर्य
श्री विजयीन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, कुंभकोणं

ॐ

श्री गुरुचरितामृत

श्री काशीमठपरंपरा नामक

संचो अध्यायु

श्री गुरुचरितामृत

॥श्री गणेशायनमः॥ ॥श्री गुरुभ्योनमः॥

मंगलाचरण

श्री काशीमठाधिवासु। रघुपति श्रीवेदव्यासु।
तू सकल सत्ताधीशु। यतीशु आदिपुरुषु ॥१॥

सृष्टी ही तुग्गेली लीला। उद्धरता जीव सगळां।
सुजीवि खातिर हें निर्मिला। देहेंद्रिय सकल ॥२॥

हे केशवा नारायणा। अचिंत्या मधुसूदना।
विठला रमारमणा। करिवरदा पाव भक्तां ॥३॥

तूंचीगा महिदासु। बदरीचो वेदव्यासु।
श्री लक्ष्मीवेंकटेशु। शेषाचलु तिरुपतीचो ॥४॥

मत्स्य कूर्म सूकरु। वामनु नरसिंहु धीरु।
भार्गवरामु यदुवरु। तूंचि बुद्धु आणि कल्कि ॥५॥

दत्त धन्वंत्रि कपिल। हयास्य ऋषभादि सकल।
नरनारायणादि निखिल। रूप परस्पर अभेद ॥६॥

तुग्गेलें स्वरूपावतार। विभूतिरूप तें साकार।
तूंचि सर्वा आधार। रमाब्रम्हादिकांक ॥७॥

तूंचिगा सुरगुरु। त्रिगुणरहितु श्रीवरु।
सर्वही करि नमस्कारु। विभू ईशु तूं आदि ॥८॥

परमेष्ट्यादि ते प्रमुख। रुद्रेंद्रादि सुमुख।
आर्यमादि पितरनेक। गाताति कीर्ति तुजी ॥९॥

सत्कथा श्रवण भाग्य। करै आम्का मुक्तियोग्य।
२दीव्नु ज्ञानभक्तिवैराग्य। सोडै देवा भवबंध ॥१०॥

अपमृत्यु आणि दुर्योग। योनाशी घनरोग।
महामुत्युचे सुयोग। स्वीकारता आज्ञातुजी ॥११॥

तूं जाणतलो जाणैतलो। तूं जाणीव जगांतुलो।
जाणीव काय दिवैतलो। न जाणति कोणी तुक्का ॥१२॥

न कळो म्हणपि जिंक्लो। कळता म्हण्तालो चुक्लो।
म्हणता की आपुण दाक्लो। मोक्ळो तो भक्ताग्रणी ॥१३॥

जाणून नेण म्हणपी। जाणीव दी ह्या पापी।
दाकै देवा ज्ञानवापी [1]। निवै तान मेग्गेलि ॥१४॥

१ ज्ञानाचि भांइ.

गुरू तो तुग्गेलि प्रतिमा। अगाध ती गुरुमहिमा।
आम्ची बुद्धीचि काळिमा। ना धरी बिंब गुरुलें ॥१५॥

माता पिता देवगुरू। वैष्णव आणि भूसुरु।
कोण की विष्णु किंकरु। समजता हीं सर्वपूज्य ॥१६॥
माग्तां तुमुका हात जोण्णु। स्वीकारा तुमुचो म्होणु।
गुरुमहिमा सांगूनु। दिय्या बर्पाक स्फूर्ति ॥१७॥

हनुम भीम मध्वांक। अक्षोभ्य आणि जयमुनींक।
परंपरेचे सर्वयतींक। कर्ता नमन पूज्य ते ॥१८॥

श्री गुरु चरितामृत। लेखनांक दिय्या साथ।
हो साधु संतमहंत। करा की कृपा दुर्बला ॥१९॥

गुरुमहिमा ती अगाध। आम्हि मतिमंद अबोध।
ना सरस कविताचे गंध। छंद व्याकरण काहिं ॥२०॥

वाचा ही कलुषित। विचार तीं संकुचित।
बुद्धी तरि सीमित। संचरी इन्द्रियग्रामीं ॥२१॥

वाचाची शुद्धीकरण। बुद्धिती विचारपूर्ण।
निर्मल अंतःकरण। मेळ्का दयेन तुमच्या ॥२२॥

श्रीकाशीमठ संस्थान। महोन्नत धर्मप्राण।
व्यासदेवाले ज्ञान। आदर्श श्रीरघुपतीलें ॥२३॥

यतींद्र सर्व अपरोक्षि। निर्विषयी अंतःसाक्षी।
ज्ञानि भक्त निरपेक्षि। मध्वानुयायि महिम ॥२४॥

तांचे चरित्र अगम्य। अलौकिक तें अतिरम्य।
देवगुह्य गा सौम्य। तरीं सांग्ता क्षमकरा ॥२५॥

साकरेचो पर्वतु। गिळतां म्होणु मनांतु।
योव्जिता ती स्वप्नांतु। पिपीलिका[२] एकि ॥२६॥

स्वप्न जाल्ले साकार। साखर पर्वताकार।
खात्तां एककणभर। भर्ले पोट मुय्येंक ॥२७॥

गुरूलीला ती मधुर। आम्हि पिपीलिका चतुर।
मेळ्चारि साखरे चूर। पुण्य जन्मांतराचें ॥२८॥

कुलदेवि मेज्जि कामाक्षि। ह्या बर्पाक ती साक्षि।
म्हणताति तिक्का शताक्षि। रक्षकी ती आम्का ॥२९॥

२ मूइ.

ग्रामदेवु कामेश्वरु। इष्टुतो वेंकटेश्वरु।
विठल विश्वेश्वरु। देवु भक्तिमार्गाचो ॥३०॥

आमुचो संप्रदायु। हरिकथा मोक्षोपायु।
जनकु गा श्रीपादरायु। म्हणताति ताक्का ध्रुवांशु ॥३१॥

विद्याशिष्यतांचें। व्यासराय नावांचें।
रक्षक दास पंथाचे। शिष्य तांचें विजयीन्द्र ॥३२॥

मागतां सर्वालो आशीर्वादु। महात्म संन्यासि साधु।
कृतिकार्याक अनुमोदु। दिय्या ह्या दीनदासा ॥३३॥

गुरु सर्वांक भारतीशु। मुख्यप्राणु जीवालो ईशु।
मूलनारायणु श्रीशु। तोचि गुरु त्रैलोका ॥३४॥

तो नारायणु व्यासु। काशीमठाधिवासु।
सुधींद्र यती विशेषु। शिष्यु सुकृतीन्द्रालो ॥३५॥

साधकान घाल्लें साष्टांग। सिद्धेश्वरा आतां सांग।
हें सारस्वत जनांग। सुसंस्कृत चांग खरें ॥३६॥

व्यासाले आनि सारस्वतांलें। भार्गव सहित मध्वांलें।
चरित्र सांगून धन्य केल्लें। आतां लाग्ल्या भूक वेगळी ॥३७॥

काशीमठाचि परंपरा। ताज्जि अमृतधारा।
उतरलि केन्ना धरा। विवरा आख्यान सगळें ॥३८॥

सिद्धमुनि सांगता बालका। अभ्यासी हे गुरुसेवका।
आय्करे हे प्रच्छका। खरो तूं प्रेरकु मेज्जो ॥३९॥

पूर्वि वैष्णव वेदांति। सारस्वत हे अद्वैति।
जाल्ले द्वैत सिद्धांति। आर्ता हे आर्वाचीन ॥४०॥

सांग्ता तुक्का आख्यान। हें बुहुत पुरातन।
वेदां चें पुनरुत्थान। केल्लें सारस्वताने ॥४१॥

सरस्वति आणि दृषद्वति। ह्या नदीं मध्येचि क्षिति।
ब्रम्हावर्त म्हणताति। स्थान हे सारस्वतालें ॥४२॥

ह्या स्थळी चतुर्मुखान। केल्लां असंख्यात यजन।
हेंचि कुरुक्षेत्र नांवान। विख्यात की सर्वत्र ॥४३॥

हांग्चान बहुब्राम्हण। बिहार बंगाल कडेन।
उडिया द्वारकापूर्ण। संचरी गुर्जरादि ॥४४॥

करिऽत वेदप्रचार। सर्वत्र सद्विचार।
आचार आणि सारासार। आदरीं शिकवीं जनां ॥४५॥

ग्रंथु धर्मदिवाकरु। सांगता होचि विचारु।
घेव्का हो आधारु। प्रमाण समज ॥४६॥

कुरुक्षेत्र ते विशाल। सारस्वत द्विजाचें मूळ।
त्या स्थळी एकगुरुकुल। प्रसिद्धगा शिक्षणाक ॥४७॥

थंचो विद्यार्थि महेषु। पूर्णकोर्नु विद्याभ्यासु।
गुरुदक्षिण विशेषु। दीव्का गुरूक म्होणु ॥४८॥

कोर्नु गुरूक वंदन। प्रार्थिले ताणे भक्तीन।
निरपेक्षी गुरु आपण। नकारता धनदक्षिणा ॥४९॥

अनेकदा महेशान। माग्लें बहू विनयान।
आपण खंचे तर्हेन। घेव्का सेवा शिष्यालि ॥५०॥

शिष्यालि विनन्ति आइकूनु। गुरु जाल्लो प्रसन्नु।
एकांतवासाक म्होणु। अपेक्षी स्थळ आश्रमाक ॥५१॥

जाल्लो संतोषु महेशाक। चाल्लो धनसंग्रहाक।
पाव्लो देश मगधाक। गेल्लो नृपती कडे ॥५२॥

विद्वत्सभेंतु महेशु। प्रदर्शि विद्या विशेषु।
रायाक जाल्लो संतोषु। वंदिलें विप्र चरणां ॥५३॥

हे पंडित द्विजोत्तमा। अपेक्षा तरी सांग महिमा।
गो भू कनक ग्रामां। समर्पीन आज्ञाकरा ॥५४॥

राजा माग्तां भूदान। गुरू खातिर एकांतस्थान।
नदी तीरारि निवेशन। दीगा आश्रमोदिष्टा ॥५५॥

बरें म्होणु रायान। गंडकी नदी लाग्गून।
दिल्लि भूंई प्रेमान। दक्षिणा म्होणु दक्षिणेचि ॥५६॥

परतलो महेष भट्ट। श्रीगुरु चरणाचो निष्ठु।
भूभागु तित्लो श्रेंष्ठु। समर्पिलि गुरुकाणिका ॥५७॥

स्वीकार्ता तो गुरुरायु। कर्ता एकु उपायु।
बहुभागाक तूंचि रायु। चलै म्हणे राज्य ॥५८॥

अल्पभागु तो गुरूक। बहुभागु महेशाक।
दित्ता आशीर्वादपूर्वक। जाल्लो धन्यु महेशु ॥५९॥

महेशान बांद्लें नगर। नांव दर्भांग सुंदर।
केल्ले ताणे राज्यभार। संपादिली सत्कीर्ति ॥६०॥

महेशु तो सारस्वतु। ताज्जो तो वैष्णव मतु।
मात्र अद्वैत पंथु। जाल्लो रायु विख्यातु ॥६१॥

सारस्वतांतु प्रचलित। वैष्णव स्मार्त आणि शाक्त।
गाणपत्यादि चारी मत। प्राचीन हें समज ॥६२॥

संख्याधिक वैष्णवजन। कर्तालि शिव भक्ति पूजन।
गणपतिऽक अत्यादरान। भजतालि भक्तिभावें ॥६३॥

सारस्वत वैष्णवालें। स्वतंत्र राज्य ते उद्देलें।
दर्भांग संस्थान जाल्लें। वृद्धि समृद्धि सहित ॥६४॥

प्रद्युम्नसिंह नामकु। दर्भांगाचो रायु एकु।
वेदांति आणि साधकु। आय्लो काशिक तेन्ना ॥६५॥

श्री ब्रम्हघाटाचेरि। पवित्र गंगाच्या तीरि।
बांद्ले राव्ळार भारि। सभा भवन युक्त ॥६६॥

कालांतरान नृपति। जाल्लो सहज निवृत्ति।
आपल्या वैष्णव गुरूप्रति। दिल्ले दान स्वधाम ॥६७॥

नांव पळ्ळें काशीमठु। छात्रनिलय तो श्रेष्ठु।
रायु गुरूक निकटु। आधारु तो गुरुकुला ॥६८॥

वेद वेदांग सगळे। चौषष्टि कला ते वेगळे।
शिकैताति गुरू आगळे [३]। आश्रयू गा विद्वज्जना ॥६९॥

[३] होड

साधकान जोडले हात। जाव्नु तो बहुविनीत।
सिद्धा लागिग हास्सऽत। केल्लो प्रश्नु यथा ॥७०॥

सर्व देवांक मान्ताति। सारस्वतां चि ही रीति।
तरी वैष्णव म्हणताति। अर्थु समजेना गुरू ॥७१॥

हरि सर्वोत्तम ज्ञान। हेंचि वैष्णवाले धन।
मध्वां पुडेचि हे मनन। नकळे करैले कोणे? ॥७२॥

सिद्धु म्हणालो बाळा। संदेह सहज सकळा।
नेणत्ति कोणि ही लीला। आचिंत्यगा हरीली ॥७३॥

भविष्य पुराणाचि काणि। पवित्र ही व्यासवाणि।
पूर्वि ज्ञानि यज्ञकारणी। जमलेगा कुरुक्षेत्रिं ॥७४॥

त्या पवित्र यज्ञकाळी। घड्ली चर्चा सर्वोत्तमालि।
आइलो भृगु त्या वेळि। विचार्ले तांचेकडे ॥७५॥

ब्रम्ह विष्णु महेश्वर। तीन्ही देव प्रचुर।
हांच्यांतु कोण सर्वेश्वर। सांग्ता म्हणालो भृगु ॥७६॥

सर्वलोक संचारि। पाव्लो तो कैलासगिरि।
तश्शि चि ताज्जी सवारि। पाव्लि गा सत्यलोका ॥७७॥

ब्रम्हरुद्रालि चर्या। पट्लिना ऋषिवर्या।
आय्लो वैकुंठाक धुर्या। थंयि हरि लक्ष्मीयुक्तु ॥७८॥

योग निद्रित हरीक। चोय्ता रमालिंगिताक।
कर्ता ताडन वक्षाक। त्या कठिण चरणाने ॥७९॥

निस्संगु निर्विकारु। भक्ताभिमानि श्रीवरु।
उठानु कर्ता उपचारु। स्पर्शीत पादद्वया ॥८०॥

ब्रम्हा मन संजातु। श्रीहरीक तो नातु।
करी कृपा रमानाथु। भृगु मोगाचो ताक्का ॥८१॥

निर्विकारु परिपूर्णु। अनंतकल्याणगुणु।
सर्वोत्तमु नारायणु। घोषणा ही भृगूलि ॥८२॥

सारस्वतकुल तिलकु। ऋषींतु भृगु प्रमुखु।
मेळ्ता गीतेंतु उल्लेखु। अध्यायु दशमा मधें ॥८३॥

श्रीहरि सर्वोत्तमु। हें सांगिलो प्रथमु।
भृगु तो महामहिमु। पूर्वजु सारस्वतांक ॥८४॥

सिद्धमुनीले वचन। आय्कूनु साधकान।
प्रश्निनलें हे सावधान। विषय धर्मपीठाचे ॥८५॥

हर्षिलो तो सिद्धमुनि। साधकाल्या ह्या प्रश्नानि।
आप्लें मन सांभाळूनि। विवरिले शिष्यवर्या ॥८६॥

धर्मपीठ आणि गुरुकुल। ना सर्वांक अनुकूल।
ध्येयु एकु वेगळे फल। सांगतां खरें आय्क ॥८७॥

गुरुकुलांतु शिक्षण। शास्त्रार्थांचे विवरण।
वेदाध्ययन व्याकरण। पालन ब्रह्मचर्याचे ॥८८॥

गुरु आस्ता संसारि। लोकांनुभवि उदारि।
काव्य नाटकादि विवरि। शृंगार योग्य ॥८९॥

संन्यास धर्म वेगळें। ते त्यागरूप गा सगळें।
रावूनधि एकी स्थळे। म्होणु ते परिव्राजकु ॥९०॥

अनुष्ठानपरु सन्यासि। तत्त्व ज्ञानि उदासि।
अनिकेतु तो उपदेशि। परमार्थु लोकां ॥९१॥

वर्णाश्रमाचें नियम। विहित कर्माचार नेम।
ज्ञान भक्तयादि प्रेम। शिकवि ते साधकांक ॥९२॥

संन्यासि परिव्राजक। ते संचारि हरिसेवक।
देवालें ऋण पावोंचाक। करी शुश्रूपाजना ॥९३॥

गुरुकुल आणि सन्यास। हाज्जो कश्शीं समावेश।
दोन्नीचे वेगळे उद्देश। जऽमना गा सर्वथा ॥९४॥

काशीमठाचे सन्यासि। निस्पृहीगा निरालसी।
वैष्णवोत्तम निराशी। निष्ठा तांचि अगाध ॥९५॥

संस्थान दर्भागाक। तेचि गा मार्गदर्शक।
अंकित ते गुरुपीठाक। भक्ति रायालि अपूर्व ॥९६॥

देवालें हें कोणजाण। दर्भाग राज्य संपूर्ण।
जाल्लें खरें पतन। स्थिति तरी दयनीय ॥९७॥

पसरलो कलिकालु। धर्म वना दावानलु।
आवरूं येना प्रबलु। व्यापलो सर्वत्र कली ॥९८॥

काशी जाल्लि म्लेंछमय। नष्टलें सर्व विद्यालय।
सगळें सज्जन समुदाय। गेल्ले त्यजुनि काशी ॥९९॥

जाल्लिं नाश मठमंदिर। मतांध म्लेंछ क्रूर।
भाट्टोनु करी बलात्कार। अविंध ते अन्यायी ॥१००॥

मथुरा मायादि क्षेत्र। जाल्लिं सगळी अपवित्र।
पळले लोक सर्वत्र। बिगडली सुव्यवस्था ॥१०१॥

सर्वत्र जाल्लें पतन। तुटले की धर्मबंधन।
म्लेंछ लोकालें अनुकरण। जीवन सगळें ॥१०२॥

यवनाचा काळीं। इतिहासाची सांकळी।
तुटली सर्व मंडळि। पाव्लिं दक्षिणांक तेन्ना ॥१०३॥

कायिं यति काशींतु उरले। कायिं थाय्यिंच सरलें।
मठ मंदिर स्तब्दले। सन्यासि शिष्यवृंद ॥१०४॥

पंडित आचार्य वरिष्ठ। वेदानुयायि कर्मठ।
आपुले शिष्य सहित नीट। चाल्लें दक्षिणां प्रति ॥१०५॥

त्या काळाचे सन्यासि। काशीमठाचे अधिवासि।
कोण कळेना इतिहासि। तुटली गा परंपरा ॥१०६॥

प्रश्नु विचार्ता साधकु। सिद्धु तरी वैचारिकु।
दोग्गांक ध्येयु एकु। सत्संगी संतप्रेमि ॥१०७॥

आचार्य मध्वाले गुरु। तांचो मठाचो विवरु।
शिष्यु कोणु यतिवरु। हें सांग सिद्धवर्या ॥१०८॥

साधका सांग्ता आय्क। गुरु अच्युतप्रेक्षांक।
श्रीसत्यतीर्थनामक। आशिशल्ले शिष्य प्रसिद्ध ॥१०९॥

प्रेक्ष शिष्यां समवेत। सेतु स्नाना निमित्त।
दक्षिणांक आय्ले परत। गेल्ले ना श्रीमठा ॥११०॥

मूलतः हे अद्वैति। श्रीमध्वाचार्यानिमिति।
जाल्ले सगळे सिद्धांति। द्वैति भक्ति मार्गि ॥१११॥

ही एक पुरातन गोष्ट। इतिहासांतु ना स्पष्ट।
गोय्चें सारस्वत श्रेष्ट। जाल्ले तेन्ना माध्व ॥११२॥

त्यांत्ले काहिं पंडित। आय्ले काशी धीमंत।
गंगेच्या परिसरांत। शोधले आपुले मठ ॥११३॥

कितें सांगू दुर्दैव। मठीं ना कोणी वास्तव्य।
त्रुटी पडल्या सदैव। स्थगित गा यतिपीठ ॥११४॥

तरुणांकेक्त्या निवडूनु। कुंडल्यादिक पोळोनु।
सन्यासयोग जाणूनु। केल्लो चरमाश्रमी ॥११५॥

आश्रमनाम विष्णुतीर्थ। दवरिले हरि प्रीत्यर्थ।
सन्यास आनि परमार्थ। शिकवि पंडित ज्ञानि ॥११६॥

आणि की एकि आख्यायिका। सांग्ता आय्क साधका।
अच्युतप्रेक्षाक एका। शिष्यु सत्यतीर्थु ॥११७॥

तांचान दाहांवे गणति। विष्णुतीर्थ महायति।
अशिशं लोक म्हणताति। म्हणाकि ऐतिह्य ॥११८॥

आनंदतीर्थालें शास्त्र। सर्वमूल ती विस्तृत।
विष्णुतीर्थाक करगत। जाल्ले खरें हरिकृपा ॥११९॥

मूल अद्वैति वैष्णव। आतां जाल्ले मध्ववैष्णव।
आचारांतु ना दुभाव। विचार तें बदलले ॥१२०॥

शुद्ध भक्तीचो पंथु। उद्देलो ब्रम्हघाटांतु।
गंगेच्या परिसरांतु। व्यापकु काशी क्षेत्री ॥१२१॥

मध्वशास्त्राचो प्रचारु। उत्तरेंतु जाल्लो प्रखरु।
बंगाली वैष्णवाचारु। पसरलोह्या कारणी ॥१२२॥

कीर्ति ही काशीमठाची। गोष्ट ही महत्वाची।
विष्णुतीर्थ यतींचि। कीर्ति ही सारस्वतांक ॥१२३॥

काशीक्षेत्र धर्मप्राण। तें तरी मुक्तीचे स्थान।
थंचान हीं विद्वज्जन। आय्ले दक्षिणां कित्या? ॥१२४॥

पुण्यक्षेत्र सगळीं। उत्तरेतूंचि उगवलि।
दक्षिणांक कित्या रिगलिं। प्रश्नु हो साधकालो ॥१२५॥

सिद्धु म्हणालो साधका। सावधानान समजुका।
तुजी प्रश्नेचि भूमिका। आस्सारे योग्य आय्क ॥१२६॥

तो तेराव्या शतमानु। जन्मलो एकु महानु।
नांव ताज्जे विद्यारण्यु। संस्थापी विजयनगर ॥१२७॥

पवित्र तुंगातीर। प्रसिद्ध गा विजयनगर।
विख्यात पंपा सरोवर। आश्रम ते मतंगाले ॥१२८॥

ज्या ठिकाणि शबरि। वृद्धा ती सितकबरि।
रामचन्द्राक बोंरिं। खावैले जाण भक्तीन ॥१२९॥

पंपापति विरूपाक्षु। रामालो भक्तु त्र्यक्षु।
विराजिला तो भिक्षु। पंपातीरीं सदैव ॥१३०॥

महापर्वतु ऋष्यमूकु। तो प्रस्रवण नामकु।
भक्तश्रेष्ठु कपिनामकु। कर्ता वासु थांगा ॥१३१॥

म्हाल्गडो तोवालि। मैत्रि ताक्का रावणालि।
दोघांक समान खयालि [४]। परस्त्री आणि परधन ॥१३२॥

दुष्टजनाल्या नाशाक। आयलो रामु अरण्याक।
भेटलो मुख्यप्राणांक। करी सख्य सुग्रीवालें ॥१३३॥

महाबली वालीक। मार्नु त्या किष्किंधेक।
रायु केल्लो सुग्रीवाक। कारणु मुख्यप्राणु ॥१३४॥

४ हव्यास

राम सखू हनुमानु। दुसरो रविनंदनु।
शबरी ती मोक्षसाधूनु। जाल्लि धन्य हांगा ॥१३५॥

दास्यादि पंचभाव। उगम गा ह्या ठाव।
मतंग तपः प्रभाव। कर्ता सद्भक्तां पावन ॥१३६॥

सन्यासी साधु संत। भैसूनु हांग एकांत।
सच्छास्त्र आणि सिद्धांत। पठति शृद्धायुक्त ॥१३७॥

गुरुकुल चलैता यति। पाव्लां तो बहुख्याति।
उत्तरेचे विद्यार्थि। यत्ले पळे बहुसख्यांक ॥१३८॥

यतींलें नांव व्यासतीर्थ। जाणतले सर्व शास्त्रार्थ।
तर्कतांडव न्यायामृत। रची ग्रंथ चंद्रिका ॥१३९॥

तांचे शिष्य अपार। सर्वत्र दक्षिणोत्तर।
मध्वसिद्धांत सार। अवगत त्या महात्मा ॥१४०॥

विजयनगराचो स्थापक। श्रीविद्यारण्य नामक।
विक्रमी ते हुक्कबुक्क। सहोदर शिष्यतांचे ॥१४१॥

आद्यंत कावेरी गोदा। विंध्याचलाचि नर्मदा।
राज्यतांचें निर्बाधा। समृद्ध आणि सुखदा ॥१४२॥

देड शतमाना उप्रांत। जन्मलो विजयनगरांत।
प्रख्यात तौलव कुलांत। अंतकू यवन नृपतीं ॥१४३॥

कन्नड समारमणु। रायांतु अग्रमान्यु।
कृष्णदेवरायु म्होणु। विख्यातु कीर्तिवंतु ॥१४४॥

त्रिमताचे त्रैविद्य [५]। कला संस्कृतीचे वैविध्य।
वास्तु गान नाना वाद्य। वाडि्लं पळे कुशलकर्म ॥१४५॥

मतधर्माचे महाकवि। अनुभवि आणि अनुभावि।
नाना भाषेचिं सुकवि। पाव्ले गा राजाश्रय ॥१४६॥

शंकराचार्य शृंगेरि। तिरुमलै ताताचारि।
मध्वशिष्यां बरोबरि। गुरू तें व्यासतीर्थ ॥१४७॥

आय्लो राया कुहुयोगु। गुरूकर्पी राज्यभोगु।
सिंहासनारि बोस्चो योगु। आय्लो व्यासतीर्था ॥१४८॥

राक्लें तान्नि रायाक। परताइले राज्यादिक।
निस्पृहु त्या यतीक। खंचौ ना गा मोह ॥१४९॥

[५] वेदज्ञ

राजगुरु व्यासराय। तत्वज्ञानी महोदय।
संस्कृत आणि प्राकृतद्वय। साहित्य व्यास दासांचें ॥१५०॥

कोर्नु दोनि समन्वय। सुजीविं दिल्ले रसमय।
सात्विक सर्वही तन्मय। भक्तींतु ज्ञानयुक्त ॥१५१॥

मध्वांले तत्वज्ञान। व्यासराय स्वामीन।
केल्लें पुनरुत्थान। भाग्य हें कर्नाटकाचें ॥१५२॥

दास श्रेष्ठ पुरंदर। कुमारव्यासादि कविवर।
कनकादि दास प्रचुर। जाल्ले निम्नवर्गा ॥१५३॥

जनमन जाल्लें सात्विक। सुजीवींक तत्वविवेक।
हे कार्य लोकोद्धारक। केल्ले ते व्यासरायानि ॥१५४॥

मध्वशास्त्रांचे महोदधि। व्यासराय तपोनिधि।
श्रीपाद सार्खि निधि। मेळ्ळेति गुरु तांका ॥१५५॥

विद्यार्थि आणि विद्यावंत। भर्ले बहु शृद्धावंत।
शिक्चाक मध्व सिद्धांत। गुरू व्यासरायाकडे ॥१५६॥

असंख्यात तरुण यति। पंडित लोक नियति।
गुरू म्होणु मान्ताति। सगळे व्यास यतीक ॥१५७॥

काशीपीठाचे विष्णुतीर्थ। विद्यासंपादनार्थ।
पाव्ले गुरू सन्निधींक। स्वीकार्ता व्यासरायु ॥१५८॥

तेजस्वी बालयति। सुंदरु आणि कुशाग्रमति।
व्यासराय चोय्ताति। जात्त्लो हो आम्चो बरें ॥१५९॥

हो खरों औत्तरेयु। सुदृढु आनि दीर्घायु।
प्रसन्न जाव्नु हरिवायु। धाड्ला सत्य मजकुणि ॥१६०॥

हो तरी बालयति। मूल काशीमठपति।
श्रीहरिवायूलि प्रीति। विशेष हें सत्य ॥१६१॥

आम्हि सगळे चतुर्थाश्रमी। काशीचे हें चरमाश्रमी।
आपल्ल्या परंपरेक स्वामी। जाल्लारि भाग्य आमुचें ॥१६२॥

व्यासमुनी कडे चोवीस। सन्यासी शिष्य विशेष।
विष्णुतीर्थ मठाधीश। काशीक्षेत्राचे गुरु ॥१६३॥

वादिराजु यतिवरेण्य। गोविंद ओडेयादि गण्य।
श्रीनिवासतीर्थ ते मान्य। आणि यती नारायणादि ॥१६४॥

वादिराज विष्णुतीर्थ। ऋजुपदस्थ छात्र।
पंपाक्षेत्र तें पवित्र। केल्लें ह्या यतीन ॥१६५॥

आराध्य देवु वेदव्यासु। रघुपति सहित श्रीशु।
नित्य करी हांचांतु वासु। आप्ले जात्ले खरें ॥१६६॥

म्होणु खुशीं व्यासराय। विष्णुतीर्थ महोदय।
मेळ्ता आम्का निश्चय। म्होणु शिकैलीं शास्त्रं ॥१६७॥

म्होणूचि व्यासरायानि। आश्रमनाम बदलूनि।
विद्यानिधि ह्या नांवानि। संभोधिले सहज ॥१६८॥

गुरु कर्ता नामकरण। आप्पैतात तेचि नांवान।
विद्यानिधिलें स्थानमान। वाड्लेंगा विजयनगरी ॥१६९॥

व्यासरायालें शिष्यगण। जाल्लिं प्रवर्धमान।
दक्षिणोत्तर देशान। येत्ताति दर्शनार्थ ॥१७०॥

श्रीमध्वपरंपरेंतु। चतुर्थाश्रमी यतींतु।
विबुधेंद्र ते तांतु। जाल्ले यतिराज प्रसिद्ध ॥१७१॥

द्रविडांध्र केरळांतु। विभुदेंद्रु ख्यातिवंतु।
ताज्ञि कुंभकोणांतु। स्थापिले धर्मपीठ ॥१७२॥

शिष्यतांचें जितामित्र। श्रीगुरूल्या कृपापात्र।
रघुनंदन यति छात्र। शिष्य ते जितामित्रां ॥१७३॥

सुरेंद्रतीर्थ ख्यात। रघुनंदन तीर्थजात।
विबुधेंद्राल्या वरकुलांत। हे जन्मले महात्म ॥१७४॥

कुंभकोणी त्या वेळी। शैवागमी ते सगळीं।
भोर्नु सर्व व्यापिली। निंदिति वैष्णव जनां ॥१७५॥

शैवानि दिल्लें आमंत्रण। करूं वैष्णवमत खंडन।
शिवसर्वोत्तम वचन। मांड्ताति ते निर्विवाद ॥१७६॥

अशिश तांचि घोषण। आय्कूनु भिल्लें वैष्णव जन।
स्वामेंक आय्ले शरण। आणि म्हणाले रक्षिया ॥१७७॥

श्रीसुरेंद्र महाभक्त। निवृत्त कर्म अनासक्त।
ध्यान आणि पूजासक्त। धाड्ले तान्नि छात्रांक ॥१७८॥

श्रीसुरेंद्राले छात्र। जाल्ले वादाक असमर्थ।
जिंकले वादी अपात्र। गेल्लि बिर्दावळी तांचि ॥१७९॥

आभरण सहित मठांचे। जाल्लें सर्वशैवांचे।
दुर्दैव हें वैष्णवांचें। निराश्रयी सगळीं ॥१८०॥

गुरू सुरेंद्रतीर्थ। श्रीमूलरामा सहित।
बिर्दावळी विरहित। जाल्ले पळे पादचारि ॥१८१॥

मूलरामांक घेव्नु। मठ सर्व शैवांक सोण्णु।
विजयनगराक येव्नु। राव्ले एका वनांतु ॥१८२॥

पूजा वैभव पुड्ले। आठैत अश्रुगळले।
देवसंकल्पानि सगळे। घड्ले अनिरीक्षित ॥१८३॥

मूलरामा जानकीरमणा। निष्कळंका निराभरणा।
दी आश्रय श्रीचरणा। रक्षाकरी आमुची ॥१८४॥

पीठ ते रंभापत्र [६]। पत्र तीं तुक्का छत्रं।
आभरण तुलसीमात्र। घेरे हे रामचंद्र ॥१८५॥

आतां तुक्का अरण्यवासु। फडला हो सन्निवेशु।
मानस पूजेक अवकाशु। मेळ्ळो आम्हि धन्य ॥१८६॥

अशिशं सुरेंद्र स्वामेन। संकल्पिलें भक्तीन।
मानसपूजा आरंभून। माग्लें श्रीदेवाकडे ॥१८७॥

हे भू व्योम व्यापका। सर्वात्मका प्रेरका।
सूर्यचंद्रादि तारिका। आभरण गा तुक्का दिव्य ॥१८८॥

सुगंध गंध फूल। तुज्जा सृष्टिंचि विपुल।
शुद्ध मनान निर्मल। अर्पितां गा स्वीकरी ॥१८९॥

६ केळीपान.

श्री गुरुचरितामृत

तरु वृक्षं हीं चामर। तांचि श्रीफल अपार।
नैवेद्य तुक्का सर्वसार। कोर्नु अग्निं धूप ॥१९०॥

भूंयि तुक्का भद्रासन। आकाशु मंटप जाण।
मळबाचें जलवर्षण। म्हण्ता तुक्का अभिषेकु ॥१९१॥

समुद्रघोष ते मंत्र। सर्वोत्तमा आम्हि परतंत्र।
हें ज्ञानऽचि पूजातंत्र। प्रदक्षिणा शरणागति ॥१९२॥

सुरेंद्रालि मानसपूजा। कळलें त्या व्यासराजा।
उपरांत तांची पूजा। भेटलें गा परस्पर ॥१९३॥

भरलें शिष्य सन्यासी। विद्यानिध्यादि तपस्वी।
जितेंद्रिय मुक्तकेशि। नमिलें सुरेंद्रतीर्था ॥१९४॥

सन्यासि शिष्य चोवीस। तांतु विद्यानिधी ते विशेष।
जाल्ले सुरेंद्राक भास। सार्खे विबुधेंद्र गुरु ॥१९५॥

व्यासराय सुरेंद्रानि। भेटि घेत्ली प्रीतीनि।
गळले प्रेमाश्रु नयनी। कर्तीति कुशल प्रश्न ॥१९६॥

आमंत्रिलें नरपतीक। व्यासादि कृष्णदेवाक।
दर्शीविलें सुरेंद्रांक। केल्लें रायान नमन ॥१९७॥

पूजा उपरांत भिक्षेक। बसलेल्या यतिद्वयांक।
दिल्लें विप्रानि हस्तोदक। साष्टांगयुक्त ॥१९८॥

घेनाति हस्तोदक। सुरेंद्रतीर्थ एक।
पळैताति सन्यासि मूक। विस्मित जाल्ले सगळे ॥१९९॥

विनंतिलें व्यासरायानि। हस्तोदक स्वीकार्नां मुनि।
उपरांत श्रीस्वाम्यानि। सांगा म्हणे अपेक्षा ॥२००॥

सुरेंद्रांक डोळच्यां उदक। गळलें गा अचानक।
पळैत हें व्यासमुनींक। जाल्लें मनांक खेद ॥२०१॥

आतंक कित्या मनांतु। सांग गा यतिवर्य तूं।
आम्मि बंधु पूर्वाश्रमांतु। संदेह नाक्का सांगाकी ॥२०२॥

कुंभकोणाचि परिस्थिति। सांगताति सुरेंद्रयति।
थंचे वैष्णवालि दुर्गीति। विवरिलें विषद ॥२०३॥

शैवागमींक जिंकूनु। मठ संपत्ति संपादूनु।
सिद्धांत पक्षु उंचाव्नु। स्थापुका कीर्तिध्वजु ॥२०४॥

सन्यासि शिष्य चोवीस। चतुर्थ तुमचे खास।
तांका दित्ता म्होणु भास। दिल्यार घेत्लो भिक्षा ॥२०५॥

अपेक्षिता मूलरामु। दित्ता प्रेरणा जीवोत्तमु।
मेळ्ळो तरी हो महिमु। उर्ता कीर्ति रामालि ॥२०६॥

आय्कतां व्यासवदन। जाल्लें चिंतेन म्लान।
कायिं वेळ धर्ले मौन। सोड्लो निश्वासु एकु ॥२०७॥

यती जाल्लो चिंतामग्नु। आय्का हे सुरेंद्रानु।
तुमची मागणी मानूनु। कर्ता पूर्ण सत्य ॥२०८॥

विष्णुतीर्थु तो शास्त्रनिधि। मध्वमत महोदधि।
नांव हे विद्यानिधि। दवरिलें आम्हि खरें ॥२०९॥

मूलरामु तुम्चो विष्णु। आमुचो गोपालकृष्णु।
विचार्चे कितें ना प्रश्नु। विद्यानिधी तुमचे ॥२१०॥

भिक्षा ही घेय्या आदिं। गोपालकृष्णाल्या सन्निधि।
विष्णुतीर्थ विद्यानिधि। तुमचे हें निश्चय ॥२११॥

सुरेंद्रयति तुष्टले। भिक्षा घेव्नु ते उठले।
संध्या काळी सर्व जमले। पीठाचेरि ते व्यास ॥२१२॥

समानांतर आसन। केल्लां नाना अलंकरण।
स्वीकरलें तें सुरेंद्रान। व्यासेच्छेन तेन्ना ॥२१३॥

आय्ले यति विष्णुतीर्थ। विद्यासमुद्र समर्थ।
व्यासराजाल्या प्रीत्यर्थ। सिद्ध ते त्यागवीर ॥२१४॥

प्रथम व्यासचरणांक। उपरांत सुरेंद्रतीर्थांक।
वंदूनु हृत्पूर्वक। विराजिले जवळ[७] ॥२१५॥

विद्यानिधीक आप्पोनु। मस्तकारि हातु दवोर्नु।
वत्सा तुक्का दान म्होणु। दित्तां यति सुरेंद्रां ॥२१६॥

खरे तूं ऋजुगणु। चौषष्टि कला निपुणु।
स्व इच्छेन गोपालकृष्णु। धाड्ता तुक्का रामाल्या ॥२१७॥

जाल्ले व्यास गद्गदित। विद्यानिधींले अश्रुपात।
पळेऽत सुरेंद्रतीर्थ। कंठावरुद्ध जाल्ले ॥२१८॥

व्यास म्हणाले सुरेंद्रानु। आय्का विद्यानिधी सम्मानु।
आनि एकु यतिवरेण्यु। ना खरें आम्चा कडे ॥२१९॥

७ लागि

हो आय्लो काशींतूनु। मध्वशास्त्र शिक्याक म्होण्णु।
सारस्वतांलो गुरु महानु। सांभाळा ही परंपरा ॥२२०॥

म्लेंछालि पीडा बहुत। घडंलि अति अनाहुत।
म्होणुऽचि दक्षिण भारत। निवडिले ह्या यतीनि ॥२२१॥

गौडसारस्वत वसति। दक्षिणांतु बहु आस्सति।
बहुतेक मध्वसिद्धांति। सात्विक गुरुभक्त ॥२२२॥

हांका दीक्षा मध्वालि। ते गोयांक पाविल्ल्या वेळि।
सासष्टि घराण्या त्या काळी। जाल्ले माध्व सगळे ॥२२३॥

हाड्ले हांक भार्गवान। याज्ञिक हें पुरातन।
दशगोत्रि बहु विद्वान। पसरले दक्षिणांतु ॥२२४॥

आम्चे गुरुले गुरु। विबुधेंद्रालो संचारु।
सप्त कोंकणांतु प्रचुरु। सारस्वताल्या मधें ॥२२५॥

सारस्वत शिवाई वेगळे। वैष्णव कोंकणांतु ना पळे।
वैष्णव माध्व ते सगळे। भेट्ले सर्व विबुधेंद्रां ॥२२६॥

वैष्णव हे अद्वैति। जाल्लेति गा मध्वसिद्धांति।
विबुधेंद्र हे जाणति। ख्याति सारस्वतालि ॥२२७॥

मंत्र मुद्राधारण। तीर्थप्रसादादि ग्रहण।
मध्वशास्त्रांचे श्रवण। करैलें विबुधेंद्रानि ॥२२८॥

हांचो मूळमठु काशी। गुरु तरी नित्य प्रवासि।
तान्नि दक्षिणां येनाशि। सरले वर्ष बहुत ॥२२९॥

श्री गुरु चरितामृत

तांचे हे विष्णुतीर्थ। शिक्चा मध्वसिद्धांत।
राव्ले आम्चा सांगात। समर्पितां तुमका ॥२३०॥

गौडसारस्वत द्विज। आत्तां तुमचे जाल्ले निज।
काशी कुंभकोणा सहज। जाल्लो खरें एक ॥२३१॥

आमुच्या परंपरेक। वेंचिले विष्णुतीर्थाक।
श्री कृष्णाल्या सेवक। दिल्ले नांव विद्यानिधी ॥२३२॥

तुमचे संस्थानाधिपति। जात्ता विद्यानिधियति।
तांच्या समुदायाप्रति। कृपा आस्का तुमचि ॥२३३॥

मधुरवाक्य हीं उल्लोनु। विद्यानिधिले हात्त धोर्नु।
सुरेंद्राल्या हात्तां दवोर्नु। जाल्ले व्यास गद्गदित ॥२३४॥

श्री गुरुचरितामृत

आनंदभाष्य सुरेंद्रांक। निय्याळित विद्यानिधीक।
प्रेमोत्कंठित यतीक। सांभाळी यतीश्वरु ॥२३५॥

दृश्य तरी हें पवित्र। दुर्मिळ पऽळे अन्यत्र।
शोकनिमग्न गा छात्र। वंदूनु विष्णुतीर्था ॥२३६॥

व्यासतीर्थाल्या आज्ञेन। राजा कृष्णदेवान।
विद्यानगरी अलंकरण। करैलि अतिशीघ्र ॥२३७॥

काड्ले आज्ञारायस। धाड्ले भृत्यां अशेष।
कुंभकोणांक आदेश। पेटैले सर्वशिष्या ॥२३८॥

खबर पाव्लि देशाक। दक्षिणोत्तराचे लोकांक।
आय्ले गा तुंगातटाक। मुमुक्षु गण सगळे ॥२३९॥

सतीर्थ तत्त्वज्ञानि। यतीलो मुकुटमणि।
वादिराज गोविंदमुनि। बस्ले आसनावरि ॥२४०॥

व्यासाले शिष्य अनेक। जमलें सन्यासि युवक।
नारायण तीर्थादि प्रमुख। श्रीनिवासतीर्थ ॥२४१॥

जगद्गुरु पीठाचेरि। विद्यानिधि यतिकेसरी।
शुभमंगळ मुहूर्तारि। जाल्लें आरूढ़ तेन्ना ॥२४२॥

अवर्णनीय समारंभु। प्रार्थनेन शुभारंभु।
सर्वांक आधार स्तंभु। खरे चंद्रिकायति ॥२४३॥

सामंत मंडळीक सहित। घाल्नु व्यासां प्रणिपात।
विराजिलो सिंहासनांत। नृपति कृष्णरायु ॥२४४॥

अशेष वैदिक मंडळी। जाल्लि एकत्र त्या वेळी।
करी वेदघोष सकळी। स्वस्तिशांति मंत्रां ॥२४५॥

सुरेंद्र मुनीन येव्नु। दंड पल्लट ते कोरोनु।
विजयींद्र नांव दीव्नु। दिल्लें मंत्र विधियुक्त ॥२४६॥

आदि मुद्रा धारण। नंतर उपदेश करण।
आणि नूतन नामकरण। समर्पि पट्ट मुद्रा ॥२४७॥

मध्व मुनिले पुरातन। दिग्विजय सिंहासन।
ताज्जेरि केल्लें आरोहण। मुनी विजयींद्रानि ॥२४८॥

वेदांत साम्राटु म्होणु। केल्लो अभिषेकु पूर्णु।
विजयींद्र यतिवरेण्यु। म्हणाकि नवमध्वु ॥२४९॥

फिरंग्याचे खडखडाट। मृदंग भेर्यांचे आर्भट।
विजयसूची सेनाभट। करी जयघोष श्रींक ॥२५०॥

अलंकृत मूलरामालि। प्रतिमेचि दिव्य पेळि।
व्यासपीठ आचार्यांलि। ग्रंथ आणि स्वर्णदंड ॥२५१॥

रजत स्वर्णाबारि। श्वेत छत्र नगरी।
चित्रासन दिव्ट्योभारी। दिल्लें ग्रंथ व्यासालें ॥२५२॥

शिष्यकोटि मुखारि। घोषिति सूरेंद्रसूरी।
आमुचे हे उत्तराधिकारि। संस्थान मुख्य ॥२५३॥

आइकतां हे गुरु वचन। जय घोष करी सज्जन।
हरिनामाचे गर्जन। व्यापिले गा भू व्योम ॥२५४॥

जगद्गुरु विजयींद्रांक। अर्पिता पट्ट काणुक।
विनयान भक्ति पूर्वक। नृपती कृष्ण रायु ॥२५५॥

कवी भट्ट गायक। नृपती सेना नायक।
दवोर्नु पाद काणुक। करी गुरु वंदन ॥२५६॥

विनोदि पंडित लोक। करी कवि प्रत्येक।
नानार्थ बोधक। श्लेष कविता ॥२५७॥

हे विरूप जाल्लें खरें। पण विकार गेल्ले ना बरें।
विधि लिखित सरले नारे। केल्यारि विष्णुभक्ति ॥२५८॥

विबुधेंद्रु विठलु पैलें। विष्णुतीर्थ विजयींद्र जाल्लें।
'वि' कार मात्र तशें उरले। करणि विचित्र देवा ॥२५९॥

आइकता व्यास हासले। तरी तोंडारि दुःख भासले।
विजयींद्र कडे सरकले। सांग्ली अशिशं हितोक्ति ॥२६०॥

अहो विजयींद्र यति। आत्ता तुम्ही मठाधिपति।
आम्का तुम्चेरि बहुप्रीति। म्होणूऽचि सांग्ता बरें ॥२६१॥

आम्चे प्रेमपात्र। अस्सूका अतिपवित्र।
शरीर हे क्षेत्र। क्षेत्रज्ञु नारायणु ॥२६२॥

तोचि आमुचे धन। तो आमुचो पंचप्राण।
ताग्गेलें गुण व्याख्यान। कर्म हे संन्यास्याक ॥२६३॥

तुमची चौसष्टि कला। देवा खातिरि ती सकळां।
वापराति वेळोवेळा। वर्ज्य परकाय रीगु ॥२६४॥

जगज्जन्मादि कारणु। नारायणु गुण पूर्णु।
अशिशं प्रतिपादन कोर्नु। सेवा करी हरीलि ॥२६५॥

अनादि हे द्वैतसिद्धांत। हाड्लें मध्वानि प्रचारांत।
तत्त्वार्थ हे महोन्नत। कळच्यां सात्त्विकांक ॥२६६॥

पूजन मूल रामालें। शास्त्र तें मध्वरायालें।
हे आत्मसात् जाल्लेले। तुम्का सांग्चेना विशेष ॥२६७॥

प्रवचन आणि व्याख्यान। करा कीं ग्रंथ रचन।
विस्तारया तत्त्वज्ञान। राख्तालो मूलरामु ॥२६८॥

गुरु वाक्य अनुल्लंघन। केल्लें ते शिरसाधारण।
आशीर्वाद माग्ता त्या क्षण। वन्दी चरण सुरेंद्रालें ॥२६९॥

शिष्य सहित दिग्विजयु। कुंभ कोणांतु निश्चयु।
अभय दित्ता व्यासरायु। अजेय गा विजयींद्रु ॥२७०॥

मुहूर्तु काड्लो प्रयाणांक। सुरेंद्र आणि विजयींद्रांक।
संदेशु पाव्लो कुंभकोणांक। आइलो सुकाळु वैष्णवांक ॥२७१॥

अलंकृत गजद्वयारि। घाल्या रजत अंबारि।
शोभ्ले दोग्गयीं मस्करि। सुरेंद्र विजयींद्र ॥२७२॥

सर्वसंग परित्यागि। सत्संगी महायोगी।
दुंखि परस्पर वियोगि। प्रपंच हे दुःखमूल ॥२७३॥

व्यास आणि विजयींद्र दुःखान जाल्ले आर्द्र।
पळैत हें सुरेंद्र। सांभाळिलें शिष्या ॥२७४॥

श्री गुरुचरितामृत

धूव वत्ता कुळार थाव्नु। पळैता धूव्नु धूव्नु।
कुळार्चे ऋण तुंटोनु। स्थिति ही विजयींद्रालि ॥२७५॥

उपरांत दोग्गं विदाय। सांग्ताति ते व्यासराय।
साधका आइक दिग्विजय। गुरुवर्यालें उभय ॥२७६॥

दस्तर्की दुष्ट सगळे। पराजित जाल्ले पाकळे[८]।
नामावशेष पळाले। आइकता नांव विजयींद्र ॥२७७॥

कांची थाव्नु कुंभकोण। विजयींद्रालें प्रस्थान।
येव्कार[९] सांग्ता महाजन। जय जयकार सहित ॥२७८॥

तंजावूर्चो भूपति। नांव चव्वप्पा म्हण्ताति।
आइकूनु विजयींद्र कीर्ति। केल्लि इच्छा भेटीक ॥२७९॥

८ वंचक ९ स्वागत

श्री गुरु चरितामृत

भेटि दोग्गालि जात्तरि। चिडले शैव मत्सरि।
आपली वाद वैखरी। दाख्खोया यतिवर्या ॥२८०॥

कुंभेश्वर देवळांतु। दुर्वादि दुष्टसर्वांतु।
भर्ले निपुण वादांतु। धूर्त मायावि सगळे ॥२८१॥

चौसष्टि कलेंतु निष्णात। सुरेंद्र करसंजात।
तरुण विजयींद्र तीर्थ। विराजिले उच्चासनीं ॥२८२॥

लिंग राजादि शैव। चोइताति यति वैभव।
बसला व्यासु सदैव। अपजय तरी निश्चित ॥२८३॥

पूर्व पक्षाचे खंडन। तत्त्वाचे प्रतिपादन।
आइकतां विद्वज्जन। मौनले विस्मई बरें ॥२८४॥

पूर्व पक्ष शैवाले। विजयींद्रानि खंडिले।
वेद प्रमाण मांडले। साक्षी पुराण सगळे ॥२८५॥

श्रीहरि सवोत्तमत्त्व। पंच भेदात्मक तत्त्व।
सृष्टयादि अष्ट कर्तृत्व। हरीलें तो एकमेवु ॥२८६॥

निर्दोषु तो गुणपूर्णु। व्यापकु अणुरेणु।
जगाचो निमित्त कारणु। ताक्का ना समान अधिक ॥२८७॥

जग भेदात्मक सत्य। नीचोच्छ जीव भृत्य।
बिंब रूपिलें हे कृत्य। जाणीत ही सुजीविलि ॥२८८॥

जीवात्म अस्वतंत्र। प्रतिबिंब आणि परतंत्र।
मुक्तीक मार्गु अन्यत्र। ना खरे भक्ती शिवायी ॥२८९॥

"मुक्ति" हे नैज सुख। प्राप्तगा शुद्ध भक्तीक।
प्रत्यक्ष अनुमान शाब्दिक। प्रमाण गा हीं तीन्हीं ॥२९०॥

वेदवेद्यु नारायणु। परब्रम्ह सनातनु।
जगद्गुरु मुख्यप्राणु। रायु तो ऋजुगणांचो ॥२९१॥

दशम नंता अनेक। अवतार ते व्यासादिक।
कोर्नु हरी सुजीवींक। राक्ता नृसिंहु हरि ॥२९२॥

विजयींद्र वाद वैखरी। पटली गा सर्वोपरी।
श्रींच्या चरण द्वयारि। लाइले शिर शैवानि ॥२९३॥

कुंभकोण मठ सहित। मेळैलें वैभव परत।
लिंगराजु शरणागत। जाल्लो अर्पून सर्व ॥२९४॥

शैव मठाचि संपत्ति। विजयींद्रांक पूर्ति।
लाभलें आणि सत्कीर्ति। घेत्ली मूलरामान ॥२९५॥

आनंदले सुरेंद्रतीर्थ। नंदी घंटा रहित।
सर्व संपत्ति परत। पावैलि त्या लिंगराजा ॥२९६॥

दक्षिणोत्तर संचार। कर्तीति श्री विजयींद्र।
पाव्ले गा कीर्तिशिखर। जाल्ले खरें अजेय ॥२९७॥

स्थापिलें विद्यामंदिर। कुंभकोणांतु सुंदर।
कुलपति ते सुरेंद्र। मुख्य गा मार्गदर्शि ॥२९८॥

विजयींद्र मुख्यगुरु। पंडितालो सहकारु।
करीऽत सिद्धांत प्रचारु। विद्वज्जना सगळे ॥२९९॥

वेद विद्येचे कुळार। जाल्ले कावेरि तीर।
कुंभकोण तंजाऊर। जाल्ले माहेर वैष्णवां ॥३००॥

साधका आइक बहूत। श्री गौडसारस्वत।
केरळ गोवांचे ख्यात। आइले कावेरि तीरा ॥३०१॥

मिमांसा व्याकरण। सक्रमान अध्ययन।
कर्तीति सारस्वत तरुण। जाल्ले मान्य विद्वांस ॥३०२॥

विजयींद्र एक पाव्टी। आपल्यात्या सहपाठि।
वादिराजाल्या भेटि। पाव्ले रजतपीठा कडे ॥३०३॥

जमले द्विज असंख्यात। श्री गौडसारस्वत।
स्वगुरुल्या दर्शनार्थ। जाल्ले उत्सुक सहज ॥३०४॥

बहुकाला उपरांत। मेळ्ळे आम्चे गुरुनाथ।
खरे आम्हि भागयवंत। करूं सेवा गुरुलि ॥३०५॥

ग्राम नगराचे सकळ। जमलें सारस्वत कुळ।
मंजुळादि[१०] सर्व देवुळ। दित्ता आमंत्रण गरूक ॥३०६॥

मंत्र मुद्राधारण। केल्ले पाठ प्रवचन।
भिक्षा घेत्ली यतीन। स्वबंधु द्विजाकडें ॥३०७॥

गोवा गोश्री पर्यंत। विजयींद्र यति महंत।
विचरले सर्व क्षेत्रांत। करी कृपा शिष्यवर्या ॥३०८॥

भार्गवाल्या सृष्टींतु। केरळाचा सारस्वतांतु।
शिक्किले ते कुंभकोणेंतु। विद्यार्थि विजयींद्राले ॥३०९॥

१० मजेश्वर

ते सर्व एकत्र मेळ्नु। आमंत्रिलें गोश्री येव्नु।
चातुर्मासु तो स्वीकार्नु। कोर्का उद्धारु आम्चो ॥३१०॥

अशिशं विनंतिले गुरूक। जाल्लें मान्य विजयींद्रांक।
वैभवान गोश्रीक। घेव्नु ती गुरुआज्ञा ॥३११॥

शिष्यांगेल्या इच्छेने। चातुर्मासु चारिमैने।
राब्ले मुनि आनंदाने। भाग्य गा भावुकांक ॥३१२॥

व्रत समाप्ति नंतर। मेळ्ळे सर्व द्विजवर।
सभा ती गोश्रीपुर। भरलि गा सारस्वतालि ॥३१३॥

धर्लें विजयींद्र चरण। घाल्नु सर्व लोटांगण।
आम्ही सारस्वत जन। जाल्लिं खरें गुरुरहित ॥३१४॥

आम्ची ही गुरुपरंपरा। राक्का तुम्ही गुरुवरा।
आम्का वेगळे गुरु करा। अवधरा ही मागणि ॥३१५॥

गौडसारस्वतांक। मठूचि ना प्रत्येक।
पुळच्या काशीमठाक। नांति गा धर्माधिकारी ॥३१६॥

अनाथ जाल्लि आम्मि। तुम्मि तरी आम्चे स्वामि।
लाय्या आम्का सद्धर्मि। करा गरूक बेगी ॥३१७॥

शिष्य वर्गाचि मागणि। आइकूनु विजयींद्रमुनि।
सर्वांक सांभाळूनि। निवेदिले सुरेंद्रांक ॥३१८॥

वृद्ध वैय्याकरणि। ब्राम्हण ते तत्त्वज्ञानि।
पाव्ले गा कुंभकोणि। वंदिले सुरेंद्र चरणि ॥३१९॥

विष्णुतीर्थ हे आमुचे। जाल्ले आपुले मठाचे।
परंपरा आम्ची साचे। तुटली गा गुरुनाथा ॥३२०॥

ना आम्का धर्म गुरू। कर्ता कोण विचारु।
ना कोणि आधारु। राक्का परंपरा आमुचि ॥३२१॥

ब्राम्हणालि मागणि। आइकता सुरेंद्रमुनि।
योग्य तुमचि म्हण्णी। कोरुयां पूर्ण ॥३२२॥

व्यासरायु स्वामेंक। दिल्ले वचन एक।
कोंकण सारस्वतांक। जाल्ले आम्ही धर्मगुरु ॥३२३॥

तुमचि ही विनंति। आम्ही मान्य करताति।
वेंचा एका महामति। तुमच्यांत्ल्या वटूक ॥३२४॥

आइकूनु गुरु वचन। धन्य म्हणता ब्राम्हण।
श्री मठाचे विद्यार्थिगण। आस्सति तरुण बहुत ॥३२५॥

दिल्लो गुरुनि रायसु। विजयींद्रांक संदेशु।
सारस्वतांतु एकु शिष्यु। वेंचा शीघ्राति शाघ्र ॥३२६॥

तेजस्वीयुत वटूक। विवेकी ज्ञानयुक्ताक।
चला की शीघ्र काशीक। मठाच्या मूल स्थानी ॥३२७॥

समजा संन्यास पद्धति। मध्वसंप्रदायाचि रीति।
शिकोनु संन्यास वृत्ति। यति प्रणवादि सहित ॥३२८॥

गोश्रीचे ब्रम्हवृंद। रायस सहित संबंध।
येव्नु ते चरण द्वन्द्व। धर्ले विजयींद्रांलें ॥३२९॥

सुरेंद्राले रायस प्रत। समर्पिले गा त्वरित।
पूर्ण करा की इच्छित। शिष्यां खातिरि वेगि ॥३३०॥

गुरुले हस्ताक्षर। तांचे कृपेचा विस्तार।
चिंतीत विजयींद्र। वंदिले गुरु चरणां ॥३३१॥

गुरुल्या आज्ञानुसार। ब्राम्हणा धाड्ले मुखार।
काशीच्या गंगा तीर। पाव्ले सर्व ब्रम्हघाट ॥३३२॥

गो श्री पुराचेद्विज। शोधिले वटूक सहज।
शास्त्रज्ञ आणि कुलज। आस्का भक्तु वीतरागी ॥३३३॥

द्विज कुलाचो वरिष्ठु। नैष्ठिकु ब्रम्हनिष्ठु।
नांव हनुमंत भट्टु। वैष्णवु वत्स गोत्रि ॥३३४॥

तेजस्वी तरुणांक। पोळोनु द्विजवर्यांक।
आनंदु जाल्लो मनांक। हाड्लो विजयींद्रांकडे ॥३३५॥

सात्त्विकु वैराग्य परु। अंतर्बाह्यांतु सुंदरु।
गुरु चरणां तत्परु। पळैले विजयींद्रानि ॥३३६॥

जातकादि कुलशील। संन्यासाक अनुकूल।
सम्मति घेव्नु तत्काळ। धाड्लो ताक्का कुंभकोणा ॥३३७॥

सुरेंद्रालि सिकवण। कृपाशीर्वाद पूर्ण।
प्राप्त ते पूर्व पुण्यान। शास्त्र ज्ञान सर्व ॥३३८॥

गोश्रीचे विप्र सगळे। पुढ़े काशीक पाव्ले।
तेन्ना काइ ते घडलें। साधका हे आइक ॥३३९॥

सारस्वत ब्राम्हण। काशीक पाव्ल्या क्षण।
आइले मठाकडेन। सांग्चे कित्ते दुःस्थिति ॥३४०॥

हजारो संन्यासी। विलासी दुराभ्यासी।
भर्लेले विषय पिपासि। आक्रमून सर्व ॥३४१॥

ना कोणि निमगणार। 'संन्यासीमठ' नांवार।
चल्तातिं कायीं अनाचार। कर्ताती कलळी खळ ॥३४२॥

गोश्रीचे विप्र सगळे। चोइतऽचि संतापले।
मठु आमुचे म्हणाले। तरी धिक्कारी धूर्त ॥३४३॥

तुम्चो म्होण्चा आधारु। हाड्ल्यारि करु विचारु।
कोण की वारसदारु। म्हणताति मठु आम्चो ॥३४४॥

निरुपाय ब्राम्हण। कार्य साध्का उपायान।
अशिशं चिंतून मनान। स्थळ खरीदिले वेगळे ॥३४५॥

मूल मठाच्या लागिग। घेत्ले जागो तो बेगि।
राव्ले बहुकाल वुगी। सरले गा पक्ष मास ॥३४६॥

काशीमठु नांव विसरला। संन्यासी मठु नांव पड्ला।
कुंभकोणा कळैला। खबर विजयींद्राक ॥३४७॥

विषय कळ्ता विजयींद्र। हनुमंताल्या बरोबर।
पाव्ले काशीक सत्वर। सांगाति द्विज बहुत ॥३४८॥

पैलेचि पाव्लयानि। केल्ले स्वागत भक्तीनि।
भर्ले काशी विद्वन्मणि। पंडित रसिक छात्र ॥३४९॥

कुंभकोणाचि ख्याति। विजयींद्रालि सत्कीर्ति।
काशी पंडित जाणती। विद्यार्थि विद्वांस सगळे ॥३५०॥

नाना शास्त्राचे विचार। प्रदर्शिले कला प्रकार।
श्री विजयींद्र मुकार। रसिक वारणासीचे ॥३५१॥

श्री मठाचि दुःस्थिति। चोइताति विजयींद्रयति।
सांगताति सन्यासाप्रति। धर्म पीठ हे आमुचे ॥३५२॥

त्या संन्यास्यांतु एक्लो। दाखवया तुम्चो दाख्लो।
तरी आत्तांचि मोकळो। आइका तुम्चो मठु ॥३५३॥

काशीच्या नृपतीक। बरैले रायस प्रत्येक।
बळैलो समर्थ शिष्याक। दर्भांग राया कडे ॥३५४॥

काई दिवसानी दूत। राज संदेश सहित।
आइले काशीक त्वरित। सन्यासी काड्ले भाइरि ॥३५५॥

आनंदले शिष्यगण। जाल्लि पूर्वजालि स्मरण।
'काशीमठु' नावान। ओळ्खले जन काशीचे ॥३५६॥

मंगळ मुहूर्तांचेरि। प्रवेशिले वैभवारि।
विजयींद्रालि स्वारी। मुखारि शिष्य सहित ॥३५७॥

दर्भांगाचे राजकुल। आइला दर्शना सकल।
चोइनि तान्नि बहुकाल। धर्मगुरु आपुल्या ॥३५८॥

अर्पिलि काणुक अपार। शृंगारिले काशी नगर।
सार्खे अमरेंद्र पुर। म्हणा की इन्द्र विजयींद्र ॥३५९॥

मठ मंदिरांक रायस। धाड्ले गुरूनि विशेष।
वैष्णव आणि वैदिक अशेष। भरले ब्रम्हघाटिं ॥३६०॥

आरंभिले विधि विधान। वटूक दशविध स्नान।
उपरांत विरजा होमान। करैले स्वात्म श्राद्ध ॥३६१॥

प्रणवयुक्त अष्टाक्षरी। मुद्राधारण जात्तरी।
हातु दवोर्नु मात्यारि। करी उपदेश शिष्या ॥३६२॥

दवरिले नांव यादवेंद्र। तोषिले श्री विजयींद्र।
स्मरूनी सर्व गुरुवृन्द। श्री सुरेंद्रसहित ॥३६३॥

काशीमठाचे प्रथम गुरु। यादवेंद्र कल्पतरु।
अशिश घोषितातित सद्गुरु। विजईंद्र तेन्ना ॥३६४॥

आदिगुरु परंपरेक। परमगुरु सुरेंद्रांक।
विजयींद्र चरणद्वयांक। नमूनु भक्तियुक्त ॥३६५॥

आरूढले धर्मपीठारि। यादवेन्द्र दंडधारि।
पट्टकाणुक तो भारी। आर्पिती शिष्य सगळे ॥३६६॥

दिल्लो धर्मसन्देशु। यादवार्यांनि विशेषु।
सहस्र संख्येन रायसु। धाड्लो मठ मंदिरा ॥३६७॥

सर्वत्र कळली खबर। लोक तरी हर्षनिर्भर।
गुरुदर्शनांक कातर। जाल्ले जन ग्रामांतरीं ॥३६८॥

काशीची विद्वत्सभा। म्हणताति याति प्रतिभा।
अद्भुतरे हे बाबा। जाल्ले धन्य सारस्वत ॥३६९॥

अश्शीं काड्ताति उद्धार। काशीचे विद्वद्वर।
यादवेंद्र गुरुवर। निमग्न गा सच्छास्त्रीं ॥३७०॥

गुरु आणि शिष्य उभय। पाव्ले ख्याति सुहृदय।
आपुले शिष्य समुदाय। आधिक ते दाक्षिणात्य ॥३७१॥

भार्गव सृष्टीन्तु वसति। समुद्र तटी आस्सती।
गुरुदर्शन अपेक्षिताति। दीवुयां तांका दर्शन ॥३७२॥

अनुयायि सहित उभय। करीऽत चाल्ले दिग्विजय।
कुंभकोणांक तें आर्य। पाव्ले सुरेन्द्रां कडे ॥३७३॥

शिष्य प्रशिष्य द्वय। व्यास आणि शुकवर्य।
शोभ्ले तें उभय। भाग्य हे सारस्वतालें ॥३७४॥

श्री गुरुचरितामृत

यादवेन्द्रांक पोळोनु। अशिश उद्गारु काण्णु।
विजयीन्द्रांक चोव्नु। हर्षलें मुनि सुरेन्द्र ॥३७५॥

आजि थांई सारस्वतांक। आम्मीचि मार्गदर्शक।
आणि तुम्हीं प्रवर्तक। मठ आणि शिष्यवृंदा ॥३७६॥

श्रीसुरेन्द्रालि उलवणि। आइकता अश्रुनयनी।
यादवेन्द्र महामुनि। वंदिलें परमगुरूंक ॥३७७॥

प्रसन्न जाल्ले सुरेन्द्र। दिल्ले सनद सुंदर।
गीर्वाण[११] लिपी ती मधुर। भाषा आइकरे कन्नड ॥३७८॥

तुम्गेले वैष्णव समाज। सारस्वतांतुलें पूर्वज।
तांचे धर्माचार्य सहज। अधिकारी तुम्ही ॥३७९॥

११ संस्कृत

आइका शासनाचे विवर। इतिहासांतु प्रचुर।
आज्ञा तरी प्रखर। विचार सुरेन्द्रालें ॥३८०॥

सिद्धमुनि साधकाक। सांगता विवर प्रत्येक।
सनदाचो[१२] उल्लेख। कर्ता मनन साधकु ॥३८१॥

कोंकणस्थ सारस्वतांक। धर्मगुरु यादवेन्द्रांक।
दिल्लें बिरुदु यतींक। वडेर म्होणु ॥३८२॥

तुम्हि आम्का परमप्रिय। आम्चे बिर्दांचे अन्वय।
जात्लें तुम्का आम्मि उभय। स्वतंत्र सर्वतंत्र ॥३८३॥

उभय चामर नगारि। ध्वज गजादि अंबारि।
सर्वत्र मुक्त संचारि। तुम्हि आम्हि समान ॥३८४॥

१२ अधिकार पत्र

तुम्हि आम्चे प्रीतिपात्र। आम्चे शिश्याले छात्र।
परिवार सहित सर्वत्र। करा संचार मुक्त ॥३८५॥

संचाराच्या वेळि। घेव्का आम्चि बिर्दावळी।
पल्लकि श्वेत छत्राळि। उभयासन दीव्टचो ॥३८६॥

धवळ शंख नगारि। बिर्दावळी घेव्नु भारी।
चलों तुम्चि स्वारि। देशांतरी नित्य ॥३८७॥

व्यासरघुपति देवु। आम्का तुम्का तो देवु।
दोन्नी मठाक प्रेमभावु। म्होणु आम्हि समान ॥३८८॥

जाल्यारि ही प्रीतीनि। घ्या ही प्रतिमा दोनि।
रामु आणि व्यासमुनि। घ्यारे सालिग्राम सहित ॥३८९॥

तुम्च्यांत्ल्या वैष्णवांक। मंत्र मुद्राधारणेंक।
तुम्कांचि अधिकारु आणिक। ही आज्ञा आमुचि ॥३९०॥

चातुर्मासानि अधिक। ते चि पात्र रे गौरवाक।
घोड्चा काई विवादाक। कोरूं आम्हि परिहारु ॥३९१॥

आम्चि तुम्चि परंपरा। चोल्का गौरवादरा।
कोणि करीऽत अनादरा। तोचि गा गुरुद्रोहि ॥३९२॥

सद्धावनेचि ही देणगी। परत घेत्लो पापभोगि।
ना कोणि हाक्का भागी। हे सर्वस्व तुमचें ॥३९३॥

शक्क चौदाशें त्रेसष्ट। प्लव संवत्सर विशिष्ट।
माघशुद्ध पंचमि श्रेष्ठ। लिखाण ताम्रपत्र हे ॥३९४॥

तेचि संवत्सरांतु। आणि एक रायसांतु।
सारस्वतांक तांतु। दिल्या आज्ञा तान्नि ॥३९५॥

आम्चे तुम्हि परमप्रिय। कोंकणस्थ महोदय।
अंगीरसादि गोत्रोदय। भारद्वाज बृहस्पति ॥३९६॥

षोडश संस्कारयुक्त। वैदिक समंत्रोक्त।
सासष्ठि कोंकण नियुक्त। स्थळाभिधान अंत्रूजि ॥३९७॥

कुण्डोदरि कुशस्थळि। मठग्राम बाणावळि।
अग्रहार शंखावळि। भार्गव भू निवासि ॥३९८॥

गोश्री सहित मंगळूर। बार्कूर भट्कळ बिदनूर।
अंकोलादि समुद्रतीर। सोदा गोमंत बिळगि ॥३९९॥

ह्या स्थळाचे महाजन। विद्वद्वैदिक ब्राम्हण।
आनि सद्गृहस्थ सज्जन। सर्वा नारायण स्मरण ॥४००॥

काशीमठु तुम्चो मूळ। पडलो विसरु बहुकाळ।
काशीं पड्लो दुष्काळ। स्वामें आय्ले दक्षिणां ॥४०१॥

त्यांचे नांव विष्णुतीर्थ। जाल्ले आम्चे करसंजात।
विजयीन्द्र नांवान ख्यात। जाणताति लोक सगळे ॥४०२॥

गोश्रीचे लोकानि। गृहस्थ आणि ब्राह्मणानि।
केल्लि अशिश मागणि। आम्का ना धर्मगुरु ॥४०३॥

परंपरेचि सांकाळि। तुंटल्यारि ह्या कलि काळि।
जात्लीं विधर्मी सगळिं। राक्कूका परंपरा खरें ॥४०४॥

मान्ली आम्हि मागणी। विजयीन्द्राल्या हस्तानि।
काशींतु बहु संभ्रमानि। केल्ले यतीक मठपति ॥४०५॥

यति नांव यादवेन्द्र। गुरु तांका विजयीन्द्र।
ज्येष्ठ आम्हि सुरेन्द्र। संदेशु आइका हो ॥४०६॥

यादवेन्द्रतीर्थ तुम्का। गुरू हें सर्वांनि मान्का।
मंत्रमुद्रादि घेव्का। आज्ञापाला आमुची ॥४०७॥

आम्हि सर्व बिर्दावळि। स्वाम्यांक दिल्या सगळी।
ना तुम्का आज्ञा वेगळी। समजा संस्थान तुमचें ॥४०८॥

स्वामे आणि स्वमठु। दोन्नि तुम्का काशीमठु।
चुक्ल्यारि तोचि उद्धटु। गुरुद्रोहि समजा ॥४०९॥

माघ बहुळ तृतीयेक। धाड्ले रायस प्रत्येक।
मेळ्ळो तो सारस्वतांक। कृपा गा सुरेन्द्रालि ॥४१०॥

पाव्लो रायसु महाजना। कळता ते हर्षले मना।
उत्साही गुरुदर्शना। विप्र आबाल वृद्ध ॥४११॥

यादवेन्द्र हे नांव। पाव्लेगा गांवो गांव।
आनंदोत्सव पुन्नाव। जाल्लें पळे सज्जना ॥४१२॥

जमलें ग्रामीण जन। गृहस्थ आणि ब्राम्हण।
गुरूक दिल्लें आमंत्रण। जाल्लें उत्सुक सेवेक ॥४१३॥

गोश्रीक अइलो रायसु। सारस्वतालो समावेशु।
भर्लो हो सन्निवेशु। अपूर्व म्हणता सर्व ॥४१४॥

शंख भेर्यांचे नाद। घांट जागंट मोद।
ताळ मृदंग निनाद। नांचलें जन भक्तीनि ॥४१५॥

ब्राम्हणालें वेदघोष। येत्ताति यति सावकाश।
जयघोष पाव्ता आकाश। जना आवरूं येना ॥४१६॥

म्हाळप्प पै देसाई। गोश्रीचो व्यवसायि[13]।
काशीमठाचो अनुयायि। धनी गुणवान बरो ॥४१७॥

काशीच्या समारंभाक। चातुर्मासादि वृताक।
धन धान्यादि कनक। दिलां ताणे अपरिमित ॥४१८॥

केल्लें स्वागत गुरूंक। यादवेन्द्रतीर्थांक।
म्हाळ पै यतिवर्यांक। करी साष्टांग नमन ॥४१९॥

[13] व्यापार व्यवहार

केल्लि विनंति गुरूंक। गोश्रींतूचि राब्चाक।
शिकोंचा तरुण वर्गाक। सर्व मूल[१४] मध्वालें ॥४२०॥

यादवेन्द्रालिं सम्मति। मेळ्ळिरे शीघ्रगति।
मेळ्ळे तरुण विद्यार्थि। धेत्लीगा छात्रदीक्षा ॥४२१॥

शास्त्रांचे अध्ययन। मध्वांले तत्त्वज्ञान।
शिक्चाक तरुण जन। जमले स्फूर्तियुक्त ॥४२२॥

पद्धति ती शिक्षणाचि। श्रीमठ कुंभकोणाचि।
विजयीन्द्र रीतीचि। पटलि ती पंडितांक ॥४२३॥

अद्वैत[१५] भूमि केरळ। तत्त्ववादी[१६] ते विरळ।
मध्वांलें तत्त्व सरळ। भक्ती ती पटली जना ॥४२४॥

१४ मध्वाचार्यांले सात्तीस ग्रंथ १५ जीवूचि देवु मणताले १६ जीवु देवु वेगळ मणाले

काहीं वर्ष सरलें। तरुण प्रबुद्ध जाल्ले।
मध्व सिद्धांत सगळें। जाल्लें तांका अवगत ॥४२५॥

गोश्रीचे महाजन। खरे बहु पुण्यवान।
ब्राम्हण तरी धर्मप्राण। धन्य गा गुरुदर्शनी ॥४२६॥

मंत्रमुद्राधारण। गायत्रि उपासन।
सर्वत्र पाठ प्रवचन। संजीवलें द्विजत्व ॥४२७॥

गोश्रीचान गोमंत। कोंकण आणि अपरांत।
सर्वत्र पसरली शांत। कीर्ति काशीमठाचि ॥४२८॥

यात्रा निमित्त संचार। मध्व सिद्धांत प्रचार।
इच्छितातित यतिवर। करा सिद्धता बेगी ॥४२९॥

श्री गुरुचरितामृत

छात्रालि[17] ही सूचना। कळलें ते महाजना।
भरलि सभा तत्क्षणा। पालनेक गुरु आज्ञा ॥४३०॥

श्रीयादवेन्द्रतीर्थ। श्रीपादवडेर ख्यात।
यात्रा सिद्धता करीऽत। आमंत्रिलें पंडितांक ॥४३१॥

आज्ञा दिल्लि स्वाम्यान। पैलें वोच्चो छात्रगण।
वसति पूजा सलकरण। कोरों थांगा एकडे ॥४३२॥

गो गज द्विजगण। सेवक आणि विद्वज्जन।
मुखारि मकर तोरण। बिर्दावळी मठाचि ॥४३३॥

वेदघोष वाद्यघोष। ताळ मृदंग विशेष।
यायिवाराची वेष। चल्ता घोष हरिनाम ॥४३४॥

[17] विद्यार्थि

सर्वत्र संचरण। विष्णु तत्त्व प्रतिपादन।
नास्तिकालें निर्दालन। हेंचि ध्येय यतीलें ॥४३५॥

व्यासरघुपतीलि पालकि। दिव्यालंकार कराकी।
खांद्यारि घ्या सम्मुखी। करा सर्व संकीर्तन ॥४३६॥

नाक्का रे लौकिक वार्ता। गांतूका देवगाथा।
असो लक्ष्य परमार्था। यात्रा जात्लेगा सफल ॥४३७॥

यात्रा ही सत्संगाचि। कोर्का दंडण गात्राचि।
सवड़ स्तोत्र पाठाचि। धरा होचि नियमु ॥४३८॥

वृद्ध आणी आतुर। रोगि आणी जर्जर।
जावुनई भागीदार। जाइना यात्रा सफल ॥४३९॥

मंगल मुहूर्तीरि। उठलि श्रींची स्वारी।
दिग्विजयाचि जयभेरि। गर्जीलि दिग्दिगंत ॥४४०॥

पाव्ले गुरुवायूर। वैष्णवाले ते कुळार।
भेट्ले श्रीयादवेन्द्र। सुंदर बाळकृष्णा ॥४४१॥

हे मुकुंदा मुरमर्दना। वासुदेवा जनार्दना।
मध्वार्चिता मधुसूदना। देवकीकंदा हरे ॥४४२॥

योगेश्वरा रोगहरा। विश्वरूपा हे विश्वंभरा।
जगन्नाथा जगदीश्वरा। करुणाकरा राक ॥४४३॥

कंसांतका धरणीधरा। गोपाला गोपिकावरा।
गोविंदा मुरळीधरा। मध्वपते पाव ॥४४४॥

सेवा उदयास्तमान। कैरौलि शिष्यां कडून।
यती यादवेन्द्रांन। वंदिलें यदुनाथा ॥४४५॥

हेरदिवसु उदयारि। चाल्लि स्वाम्यालि स्वारि।
अनंतनारायणपुरि। तो दिवसु दाहावो ॥४४६॥

अनंतपद्मनाभु। पद्मकल्पाचो विभु।
पद्मालयेलो प्रभु। पितु पद्मसंभवा ॥४४७॥

स्तुति रूपाचि सेवा। केल्लि स्वाम्यानि देवा।
भजूनि वायु संभवा। विसरले गा भान ॥४४८॥

हे अनंता नारायणा। मध्व हृत्पद्मसदना।
दयाघना श्रीरमणा। भुजगशयना पाव ॥४४९॥

करी यात्रा सुरळीत। कीर्ती तुजी वर्णित।
भोंवाति यात्रा करीऽत। ध्येय तू नारायणा ॥४५०॥

वेद चतुर्मुखाक। शिकैले तूंवे एक्लाक।
ती परंपरा राक्चाक। दी शक्ति नारायणा ॥४५१॥

केल्लो वेदु विव्यसु[20]। म्होणु तूं वेदव्यासु।
मध्वु तो तुज्जो दासु। आम्मि दास मध्वाले ॥४५२॥

स्तवन सहित लोटांगण। घात्ले श्रीहरीच्या चरण।
उपरांत श्रीस्वाम्यान। घेत्लो निरोपु[21] ताज्जो ॥४५३॥

कन्याकुमारी भूशिर। धनुष्कोटि रामेश्वर।
आइले कावेरि तीर। भेट्ले श्रीरंगनाथा ॥४५४॥

२० विशेष विभागु. २१ आज्ञा.

श्रीमुष्ण वराहाक। भेट्टोनु सप्तगिरीक।
चाल्ले भू वैकुंठाक। सन्निधि वेंकटाल्या ॥४५५॥

क्षेत्र विधि प्रमाणे। कपिल तीर्थी गृहस्थाने।
पितृ पूजन निमित्ताने। केल्ले श्राद्ध तर्पण ॥४५६॥

स्वामि पुष्करिणी स्नान। भू वराह दर्शन।
अश्वत्थाक प्रदक्षिण। घाल्लि त्या यात्रिकानि ॥४५७॥

ब्रम्हेन्द्र देवादिक। भजताति वेंकटेशाक।
त्या पावन चरणांक। वंदिती यादवेन्द्र ॥४५८॥

विजयीन्द्र स्वाम्यान। श्रीवेंकटालें चरण।
केल्लां बहुत पूजन। जाणति हें सर्व ॥४५९॥

सांग्ता आइक कथन। साधका सावधान।
नरसिंह ह्या नामकान। केल्लें राज्य चन्द्रगिरी ॥४६०॥

तो श्रीनिवासालो भक्तु। तिल्लोची विषयासक्तु।
जाल्लो तो देषयुक्तु। अर्चकांचेरि धंचा ॥४६१॥

आभरण ती देवालें। अर्चकानि वापरलें।
राय कुटुंब चिडलें[22]। आइकता ही वार्ता ॥४६२॥

अर्चकालें कुलनाश। केल्लें साधून द्वेष।
ब्रम्हहत्येचो दोष। पीडिलें कुष्ठरूपि ॥४६३॥

वेंकटेशाल्या पूजेक। उरले ना कोणी अर्चक।
केल्लि मागणी व्यासतीर्थाक। विजयनगरीच्या ॥४६४॥

२२ कोप्ले.

आपुल्या शिष्यां बरोबरी। पाव्ले व्यासराय गिरी।
वेंकटेशाल्या चरणांचेरि। जाल्ले नतमस्तक ॥४६५॥

नेमिलें विव्णुतीर्थाक। वेंकटेशाल्या पूजेक।
धन्य समजलें आपण्यांक। स्वामि विष्णुतीर्थ ॥४६६॥

द्वादशाब्द[२३] पर्यंत। केल्लि सेवा नितांत।
हरिगुरुल्या सन्निधींत। प्रेमान गा बहुत ॥४६७॥

व्यासाल्या देखरेखेन। क्षेत्राचे पुनरुत्थान।
जाल्ले पुनर्निर्माण। मंदिर तें सगळें ॥४६८॥

व्यासरायाल्याज्ञेन। राजा कृष्णदेवान।
केल्ले बहुत श्रृद्धेन। आभरण नित्यसेवा ॥४६९॥

२३ बार वर्स

बहुकाल उपरांत। मूळ अर्चक कुलांत।
वेंच्लो [२४] एकल्याक शांत। सद्गुणीक बरें ॥४७०॥

दीव्नु पूजाधिकारु। मंत्रमुद्रा संस्कारु।
आदरानि केल्लो सत्कारु। स्वामि व्यासरायानि ॥४७१॥

बिंब मूर्तीचे पूजन। केल्लां विष्णूनि बहुदिन।
जाल्ले ते अश्रुनयन। पूजा ही अखेरीचि ॥४७२॥

मागताति ते बहुपरि। आज पर्यंत हरी।
सेवा तुझी स्वीकारि। तरी ही दोषयुक्त ॥४७३॥

हे सप्ताचलपते। नारायणा श्रीपते।
जगन्नाथा जगत्पते। राक ह्या दीन भिक्षु ॥४७४॥

---

२४ निर्वाहलो

तळमळतारे मन। तव पाद वियोगान।
दीरे सदा दर्शन। वेंकटेशा नृहरे ॥४७५॥

तुज्जे चि ध्यान पूजन। जागृत सुषुप्ति स्वप्न।
नाक्का देवा विस्मरण। दीगा स्थिरापरोक्ष[२५] ॥४७६॥

अगा हे वेंकटनाथा। रमापते विधिताता।
राक ह्या विष्णुतीर्था। अनन्य अनाथाक ॥४७७॥

बारा वर्षांचि सेवा। सार्थक करिरे देवा।
विस्सरूं कशिश माधवा। हरे मंगळांगा ॥४७८॥

योगी संग त्यागि। विष्णुतीर्थ ते विरागि।
बालवत् रडताति योगि। भिक्षु ते देवोन्मादि ॥४७९॥

२५ निरंतर दर्शन

मातृवियोगाचो बाळु। पळैना वेळु काळु।
जात्ता भयान कंगालु [२६]। हाल ती विष्णुतीर्थालि ॥४८०॥

सांभाळ्लें गुरुरायान। आपुल्या शिष्या मोगान।
वेंकटु तुज्जा सेवेन। जात्ता तृप्तु गा खरे ॥४८१॥

व्यापकु तो अणुरेणु। सर्व शर्व शिव स्थाणु।
अंतरी तो महिमानु। विराजि तुज्जांतु ॥४८२॥

पाव्ता तुक्का स्वप्नांतु। तैजस [२७] नांवान ख्यातु।
सोडि संशय मनांतु। पाव्ता सप्तगिरीचो ॥४८३॥

गुरुवाक्यान मन। पाव्लें गा समाधान।
चिंतित्त हरिचरण। आलिंगिलें प्राज्ञा [२८] ॥४८४॥

२६ हाथ पाय पोड्वे. २७ देवाले एकरूप. २८ देवाले आणि एक रूप

तैजसु दिस्लो स्वप्नांतु। आपण विद्या नगरींतु।
अर्चारूपान[२९] विहिरिंतु। निपला काडि भाइरि ॥४८५॥

तांतु हांवु सन्निहितु। पूजेक तूंची विहितु।
तूं मुख्यप्राणालो दूतु। जात्लो ख्यातु रे बाळा ॥४८६॥

स्वप्न वृत्तांत गुरूक। निवेदी श्रृद्धापूर्वक।
आइकूनु व्यासरायाक। जाल्लि अनुभूति दिव्य ॥४८७॥

विजयपुराक रायसु। धाड्लो शीघ्रसंदेशु।
शेषाचलाचो विशेषु। येत्लो प्रसाद सहित ॥४८८॥

पूर्व पद्धति प्रमाणे। सिद्ध जाल्लें राज घराणे।
राजदंपति क्रमाने। करी स्वागत गुरूक ॥४८९॥

२९ विग्रहरूपान

समलंकृत राज वीधी। मंगलवाद्य निनादति।
नट नर्तक नाचताति। वेदघोषु तो वैदिकालो ॥४९०॥

वंदिले कृष्णरायान। गुरु चरणांक भक्तीन।
कोर्नु प्रसाद ग्रहण। रायु जाल्लो धन्यु ॥४९१॥

धन्य म्हणताचि रायु। धर्ता गुरुलो पायु।
जाल्लो हांव दीर्घायु। वांचैलो कुहूयोगीं[30] ॥४९२॥

दूर कोर्नु दुर्योगु। दीव्नु दर्शनाचो योगु।
सद्गुरु तूं वीतरागु। करी उद्धारु आमुचो ॥४९३॥

गुरुपूजा ती संपन्न। जाल्लि वैभव पूर्ण।
व्यासरायाले दर्शन। धडलें भक्त जनांक ॥४९४॥

30 मरणांतिक योगु

व्यास भेट्ले मारुतीक। यंत्रोद्धारक[३१] प्राणांक।
वंदूनु रामभक्ताक। न्हाव्नु त्या चक्रतीर्थी ॥४९५॥

आपुल्या मठांतु प्रवेशु। कर्ता व्यास यतीशु।
विष्णुतीर्थ महायशु। शोभ्लो गुरु सन्निधी ॥४९६॥

भर्लि शिष्य मंडळी। शास्त्र प्रेमी ती सगळी।
पाठ प्रवचन त्रिकाळी। कर्तीति व्यासतीर्थ ॥४९७॥

विष्णुतीर्थालें मन। जाल्लां तें चिंतामग्न।
रात्रंदिवस स्मरण। हरी वेंकटेशालें ॥४९८॥

स्वप्नाचि ती सूचन। आठोनु क्षणोक्षण।
अर्चा तुका अर्चीन। दर्शन दी बेगी ॥४९९॥

३१ व्यासराय प्रतिष्ठितु हनुमंतु

प्रार्थनेचि तीव्रता। मना मधे व्याकुलता।
वाढली खरी तन्मयता। यती त्या विष्णुतीर्थाक ॥५००॥

एकदा विष्णुतीर्थ। विजयनगरी वनांत।
अइले हरीक चिंतीत। फिरता वना मध्यें ॥५०१॥

प्रभावलयु तो एकु। दिसलो तांका सम्मुखु।
चोइता यति विवेकु। पाव्लो त्वरेन लागगी ॥५०२॥

लतादि कंटकान्वित। द्रुम गुल्मादि शोभित।
आच्छादि पल्लवान्वित। दिसलि विहीरि एकी ॥५०३॥

भू वराह नरसिंहु। वेंकटेशु तो परब्रम्हु।
लक्ष्मी सहितु तो सुगमु। प्रकटला स्पष्ट ॥५०४॥

स्वप्न जाल्ला साकार। पळैत हर्ष निर्भर।
जाल्ले ते यतिवर। उतरले विहिरीं[३२] ॥५०५॥

मूर्त्यो अजकरार्चित[३३]। रुद्रेन्द्रादि वंदित।
धन्यतेन विष्णुतीर्थ। काडताति ती भाइरि ॥५०६॥

आराध्यु श्रीनरसिंहु। इष्टु वेंकटू महिमु।
भू धरू पुरुषोत्तमु। मूळु वेंकटगिरीचो ॥५०७॥

आइका आणि एकि महिमा। भद्र नरसिंहालि प्रतिमा।
मेळ्ळि त्या पुण्यात्मा। यति विष्णुतीर्यांक ॥५०८॥

पाव्लो वेंकटरमणु। जाल्लो धन्यु आपणु।
अशिशं यती समजूनु। पूजिलें भक्ति भावें ॥५०९॥

३२ बाइ. ३३ ब्रह्मान पूजिलेलि.

विष्णुतीर्थ विद्यानिधि। पाव्ले सुरेन्द्र सन्निधि।
विजयीन्द्र ही उपाधि[३४]। लाग्ली कुंभकोणी ॥५१०॥

चरित्र हे सांग्ला आदि। कुंभकोणाचि कीर्तिवृद्धि।
कर्ताती शास्त्र निधि। विजयीन्द्रु विख्यातु ॥५११॥

एक्शें पासष्ट ग्रंथ। मध्वशास्त्रारि स्वंत।
रचिलेलें ते महंत। विजयीन्द्र आमुचे ॥५१२॥

कालांतराचि ही घटना। आइका हो सज्जना।
सुरेन्द्रानि एका तरुणा। केल्लो चरमाश्रमी[३५] ॥५१३॥

नांव दवरिलें सुधीन्द्र। कुंभकोणऽचि केन्द्र।
शिक्षा गुरु विजयीन्द्र। सुधीन्द्र मठपति ॥५१४॥

३४ विशेष नावं. ३५ सन्यासी.

सांग्ले विजयीन्द्रांक। सुरेन्द्रानि प्रत्येक।
आमुच्या परपरेक। जावुनई विच्छिन्नता ॥५१५॥

तुम्हि शिष्य व्यासरायाले। आपत्काळी पाव्विलें।
तरी परंपरी वेगळे। अशिश म्हणपी अपार ॥५१६॥

म्होणु शिष्यु केल्लो हाक्का। तुमची रक्षा ह्या बालका।
ही आज्ञा म्होणु मान्का। म्हणति स्वामि होड्लें ॥५१७॥

आज्ञा शिरसामान्य। करी विजयीन्द्र धन्य।
लोक तरी सामान्य। जाल्ले असंतुष्ट ॥५१८॥

विजयीन्द्र तरी निस्पृह। चिंतक ते अहरत।
संचरी शिष्या सह। निस्संगी निर्मलात्मा ॥५१९॥

सुधीन्द्र जाल्लें मठपति। अधिकारु तांच्या प्रति।
त्यागून विरक्त मति। सोड्लें कुंभकोण ॥५२०॥

पाव्लें तें गोश्रीक। घेव्नु तिन्नी मूर्तीक।
वारंपळ्ळिं वराहाक। प्रतिष्ठिलें विधियुक्त ॥५२१॥

उपरांत वेंकटेशाक। घेव्नु ते गोश्रीक।
आइले मंगळमूर्तीक। चोइताति शहरांतुले ॥५२२॥

म्हाळ पै मागता मूर्ति। आम्चो तो वेंकटपति।
गोश्रीचे जनाप्रती। दिय्या म्हणता भक्तीन ॥५२३॥

हास्लो यतिवरेण्यु। चोइता हे आपुले म्होणु।
प्रतिमा ती भाइरि काण्णु। मण्तालें अश्शिं आइक ॥५२४॥

आइकारे गृहस्थानू। अपेक्षि तुम्मि वेंकटरमणु।
प्रतिमा ती जोक्कूनु। दिय्या स्वर्ण तितुलें ॥५२५॥

बरे म्हणे म्हाळप्पु। ताक्कडिं बस्लो तिम्मप्पु।
म्हाळाले स्वर्णनिक्षेपु[३६]। हरी सर्व अतुलु ॥५२६॥

लज्जेन नत मस्तकु। कर्ता म्हाळप्पु शोकु।
सांग्लो मार्गु एकु। गुरू विजयीन्द्रानि ॥५२७॥

सगळे नमा भक्तीन। मागणि करा श्रृद्धेन।
करा सर्वै समर्पण। एक एक नाण्य ॥५२८॥

सर्वांनि केल्लो नमस्कारु। नाण्य एकान तुलाभारु।
तेन्ना तो लक्ष्मीवरु। जाल्लो प्रसन्नु तांका ॥५२९॥

३६ सर्वसपति.

ऊंच उड्ली पारडि[३७]। घाल्लि सर्वांनि उडि।
बहुपुण्याचि जोडि। मेळ्ळि धन्य आम्मि ॥५३०॥

लोक सर्व आनंदित। हर्षले हें पळैत।
विजयीन्द्र ते त्वरित। नमूनु वेंकटपति ॥५३१॥

प्रतिष्ठिले गोश्रींतु। पाव्लो तो श्रीकांतु।
आइकूनु हो वृत्तांतु। जमलें सारस्वतार्य ॥५३२॥

आम्चो गुरुलो देवु। तोचि आम्का इष्टदेवु।
गुरुभक्तीचो स्वभावु। सहज सारस्वतांक ॥५३३॥

बांद्लें देवूळ अद्भुत। बृहदाकार विश्रुत।
पूजा तंत्रसारोक्त। वैभवु तिरुपतीचो ॥५३४॥

३७ ताक्रडीचे तट्टे

नित्य कल्याण उत्सवु। रमणीय राज वैभवु।
वैदिकाले वेदरवु। गर्जे मृदंग ताळ ॥५३५॥

हरिनामाचो गजरु। ज्ञान तत्त्व विचारु।
षड्रसान्न परिकरु। प्रसादु अमृत तुल्य ॥५३६॥

विजयीन्द्र ते विष्णुतीर्थ। तांचो इष्टदैवत।
वेंकटपति विख्यात। तोचि आम्काइ इष्टु ॥५३७॥

सारस्वतांक समस्त। वेंकटपतीचि दैवत।
विशेष सर्वत्र दिसत। कारण गा गुरुचर्या ॥५३८॥

असोरे साधका। आइक ही आख्यायिका।
यात्रा ती उत्तरमुखा। चाल्लीं यादवेन्द्रालि ॥५३९॥

संन्यास घेत्लें काशी। राब्ले थांगाचि तापसि।
चाल्लें तप एकदिवशीं। गंगा तटी बरें ॥५४०॥

बस्लेति यादवेन्द्र। असंप्रज्ञात[३८] यतीन्द्र।
काईं नारि तीं सुंदर। अइलिं स्नानाकांक्षि ॥५४१॥

काशी राजालि कन्या। परम सुन्दरी अनन्या।
अइल्या स्नानाक धन्या। करी नमस्कार यतीक ॥५४२॥

कंकणादि आभरण। यतीशाल्या बाजून।
निश्चिंतेन दवरून। उतरली गंगा ॥५४३॥

यतीक ना देहभान। गंगेक आइले स्फुरण।
तरंग कल्लोलान। अपहरीलें तें कंकण ॥५४४॥

३८ विशेष ध्यान स्थिति

स्नानानंतर तरुणी। चोइता कंकण दोनि।
दिस्सना यती ध्यानी। बसला मौनमुद्रि ॥५४५॥

आइले तेन्ना भट। सन्यासी हो उद्धट।
कारागाराक नीट। व्हरा ह्या कपटीक ॥५४६॥

कंकण व्हेल्लां गंगेन। आपण काईं नेण।
आइकता राज भटान। उत्रं यादवेन्द्रालि ॥५४७॥

तरी तू महात्मु खरे। हाडैरे कंकण बरे।
गंगे कड्च्यान त्वरे। दिवै आत्ता दागिन्यो ॥५४८॥

तेन्ना यादवेन्द्र यति। कर्ता गंगेलि स्तुति।
हात दोनी दिसताति। कंकण सहित तिज्जे ॥५४९॥

सर्वैं आइले शरण। घालि सर्व लोटांगण।
यादवेन्द्रालें चरण। धरी भक्ति भावें ॥५५०॥

घटना ही ब्रह्मघाटीं। घडलीगा निकटि।
भूदान त्या निष्कपटि। केल्ले रायान अइक ॥५५१॥

संन्यासी हो योगी। जाल्लीं आम्हि पुण्यभागि।
अशिश समजूनि बेगी। गेल्लो रायु धन्यु ॥५५२॥

मठाचे ते प्रांगण। केल्ले विस्तार यतीन।
केल्लि प्रतिष्ठापन। श्रीरघुपतिरामा ॥५५३॥

काशीचे पंडित। जाल्ले बहु प्रभावित।
यति हे महिमान्वित। विरक्त भक्ताग्रणी ॥५५४॥

वेदाभ्यासी तपस्वी। तत्त्ववेत्ता यशस्वि।
तपोनिष्ठ तेजस्वी। राजगुरु काशीचे ॥५५५॥

धर्मात्मा कर्मनिष्ठ। शास्त्रज्ञानी गरिष्ठ।
विरक्तांतु वरिष्ठ। श्रेष्ठ निर्मत्सरि ॥५५६॥

सदाचार संपन्न। काशीचें मानधन।
यतीलें सात्विक गुण। पटले पंडितजना ॥५५७॥

काशीवासा उपरांत। आठैले दक्षिण प्रांत।
आइलि विनंती बहुत। सेवासक्तालि ॥५५८॥

रघुपतीलो आदेशु। दिल्लो व्यासानि संदेशु।
स्मरता दक्षिण देशु। आइलो यादु[३९] गुरुलो ॥५५९॥

[३९] उद्गासु

उठलें परिव्राजक[४०]। विश्वनाथाल्या भेटीक।
आमंत्रिलें पंडितांक। विषय विवरि ॥५६०॥

दक्षिणांक वळलें[४१] मन। इच्छा ती गुरुदर्शन।
प्रीति आणि अभिमान। शिष्यां प्रति ॥५६१॥

पंडितांक संभावना। फलतांबूल दक्षिणा।
दीव्नु यति महामना। म्हणाले अशिशं ॥५६२॥

तुम्हि खरे सज्जन। काशीचे विद्वज्जन।
तुमचे प्रीत्याभिमान। असो नित्य ॥५६३॥

पंडित ते प्रबुद्ध। जाल्ले कंठावरुद्ध।
मुमुक्षु ते मुग्ध। जाल्ले दुःखि ॥५६४॥

४० संन्यासी. ४१ घुंव्ले.

यति तरी निःस्पृही। सुजीविलो स्नेही।
नारायण स्मरणा ही। करीत चाल्ले ॥५६५॥

मुखारि पेळी देवाली। माग्ल्यान बिर्दावळी।
घेवून छात्र मंडली। निर्गमले ॥५६६॥

क्षेत्र संचार करीत। अयोध्या मथुरा सहित।
नर्मदा तीर मांधात। महाकाला ॥५६७॥

प्रभास दारुकावन। द्वारकाधीशालें दर्शन।
पश्चिम सिंधु वैल्यान। पाव्ले ते कोंकणा ॥५६८॥

परशुरामालि ही सृष्टि। नियाळीत संतुष्टि।
गोमंताचेरि दृष्टि। पडली तेन्ना ॥५६९॥

मठग्राम केळोशि। शांतादुर्गा मंगेशि।
सासष्टिचे निवासि। स्मरीत सगळच्यांक ॥५७०॥

देवु परिवार सहित। पाव्ले श्रीगोमंत।
वैदिक संस्कृति श्रीमंत। समृद्ध थांगा ॥५७१॥

तरी आतां दुर्दशा। कलीकाइलि महर्दशा।
निराशेचि निशा। पसरल्या खरें ॥५७२॥

म्लेंछ ते विकृतकामि। भाटैताति यज्ञभूमि।
ब्राह्मण नांति स्वग्रामि। पळलेंगा ते दशदिशा ॥५७३॥

यवन[४२] आणि इसाई[४३]। गो हंतक कसाइ[४४]।
मठ मंदिर स्थायि। मोड्लीं सर्वत्र तान्नि ॥५७४॥

४२ मुसल्मान ४३ क्रिश्चियन ४४ प्राणीवध करणारे

स्मरीत पूर्वजांक। आपुल्या परंपरेक।
श्री गुरु मध्वरायांक। वंदी पूज्यभावें ॥५७५॥

अघनाशिनि स्नान। कुलदैवताचे दर्शन।
सासष्ट्‌यादि मूलस्थान। आपल्यांगेलें ॥५७६॥

वेणानदी कूल[४५]। वृक्षद्रुमादि विपुल।
खगमृगादि संकुल। आठेऽत जामदग्नि ॥५७७॥

गोमंता थानु गोश्री। शिष्य लोकां भर्शि।
संचरलें अहर्निशि। पाव्ले रजतपीठा ॥५७८॥

अष्ट मठाचे यती। श्रीयादवेन्द्रा प्रति।
गौरवादरी प्रीति। करी गुरुबंधु ॥५७९॥

४५ तटाक

रुक्मिणीकरार्चितु। गोप गोपीलो कांतु।
द्वारकेचो श्रीमंतु[४६]। पाव्ला मध्वांक ॥५८०॥

आनंदतीर्थ वरदु। दित्ता सर्वांक बोधु।
आपण्यांक हो तत्त्ववादु। पटलो खरें ॥५८१॥

म्होणूचि आइलो हांगा। यति आठ निस्संगा।
भुल्लों तांचा संगा। भक्ति योगीं ॥५८२॥

वादिराजादि प्रभृति। आदरान आलिंगिताति।
गुरुबंधु स्मरताति। विजयीन्द्रांक ॥५८३॥

विजयीन्द्र ज्ञानसिंधु। आमुचो तो गुरुबंधु।
त्या नातेचो संबंधु। खरें गा आम्का ॥५८४॥

४६ श्रीकृष्णु

अशिश काड्ता उद्धारु। वादिराज यतिवरु।
वयोवृद्धु गंभीरु। समीरु[४७] भावी ॥५८५॥

मध्वसरसींतु स्नान। मुख्यप्राणालें दर्शन।
विमानगिरि[४८] ती पावन। दर्शिता यति ॥५८६॥

भट्कळाचे महाजन। पाव्ले थांगा त्या क्षण।
धोर्नु घट्टि चरण। माग्लें गुरू कडे ॥५८७॥

कळाहीन भट्कळ। भर्लींति म्लेंछ सकळ।
अवैदिक ते विपुल। आम्मि क्षीणताति ॥५८८॥

श्रीगुरूलें आगमन। कर्तीति निरीक्षण।
उत्साही वैष्णव जन। भाव भक्तिं ॥५८९॥

४७ मुखावैलो ब्रह्यु ४८ उडुपी लागिंचि कुंजारगिरि

जोग महालो उदारु। गुरुसेवा तत्परु।
श्रीमंतु विचारपरु। दानशौंडु [४९] ॥५९०॥

नगर निवासि गृहस्थ। गुरूलें परमभक्त।
सर्वै ते सेवासक्त। निष्ठावंत गुरूले ॥५९१॥

श्रीयादवेन्द्रतीर्थ। आपुल्या शिष्यां प्रत।
जाल्ले द्रवीभूत। कृपाळु तेन्ना ॥५९२॥

चाल्लि स्वारी भट्कळा। गांवा तरी दिव्य कळा।
वैष्णवालो सोहळा [५०]। अवर्णनीय ॥५९३॥

अलंकृत महाद्वार। स्वागता राब्ले थोर [५१]।
उत्साही लान पोर। आनंदमग्न ॥५९४॥

४९ दान्यां पैकि होड् ५० आनदोत्सवु ५१ होड

वेदोच्चार सावकाश। ताळ मृदंगाचे घोष।
व्यापिलें सुस्वर आकाश। नागस्वराचो ॥५९५॥

भेरि पणव गोमुख। छत्र चामर अनेक।
पालकेरि देवाक। घेव्नु तें खांद्यारि ॥५९६॥

आंदोलिकां यादवेन्द्र। दंडधारि यतीन्द्र।
यतिकुलाक ते चंद्र। शोभायमान ॥५९७॥

बसल्या ती गुरुमूर्ति। आणि तो व्यासरघुपति।
नमस्कार ते करताति। गुरूंक आपुल्या ॥५९८॥

सभा भरली सांजेरि। जोग मल्यालि भारी।
सम्मर्पि गुरु मुखारि। भूइं इमारत ॥५९९॥

केल्लें ताणे कृष्णार्पण। विनंतिलें भक्तीन।
राब्का हांगा संस्थान। कृपा कोर्नु ॥६००॥

काशीमठाची शाखा। आदि कर्नाटका म्होण्का।
श्रीचरण सेवा आम्का। घडो सदैव ॥६०१॥

जोग माल्यालें शासन। शक ते शालीवाहन।
पंद्रांशें तीस एक्कूण। आइका जना ॥६०२॥

आतां आइका भट्कळ। जात्ले यात्रास्थळ।
वैष्णवालें गुरुकुल। म्होणुया कुळार ॥६०३॥

पूजा ती त्रिकाळ। शास्त्र चिंतनेंतु वेळ।
ना कोणी वाचाळ। जिज्ञासु सगळे ॥६०४॥

अहर्निशी चिंतन। पूजा पाठ प्रवचन।
शरीर त्या कारण। क्षीणलें स्वाम्यालें ॥६०५॥

जल मल तें आटलें। वायु अग्न्यादि उरलें।
चित्त तें स्थिर राब्लें। व्यास चरणी ॥६०६॥

जळला संचित आगामि[५२]। ना काहीं अनुगामि।
उरलें इन्द्रियग्रामि। निमित्त मात्र ॥६०७॥

व्यास आणी रघुपति। यो यो म्हणताति।
सगळें सहाय कर्तीति। तत्त्वाभिमानि ॥६०८॥

स्वामें सदा अंतर्मुखि। कोणा न ओळखी।
गोपी नदि तटाकि। ध्यानमग्न ॥६०९॥

५२ मोक्ष मुक्तीचीं कर्मे

निवली तान भूक। ना काइं हर्षशोक।
आठैत मुख्यप्राणांक। गद्गदित सदा ॥६१०॥

विद्यार्थीतु एकल्याक। विरक्त सुजीवीक।
वेंचून व्यास सम्मुख। म्हणालें अशिशं ॥६११॥

जायरे तूं व्यासाक। आपुल्या श्रीमठाक।
समजाइ बंधूक। आवै बाप्पै ॥६१२॥

मेळैता ते अनुमति। सरळु विरक्तमति।
तत्त्वशास्त्रांतु गति। अपार गा ताक्का ॥६१३॥

श्रीयतिप्रणवकल्प[५३]। त्या आधारी संकल्प।
संन्यास दीव्नु त्रिताप। हरलें त्या खरें ॥६१४॥

५३ मध्वाचार्यांलो एकु ग्रंथ

श्रीकेशवेन्द्रतीर्थ। नांव तें दिव्य सार्थ।
मध्वशास्त्र यथार्थ। समजलेंले ॥६१५॥

श्रीहरि सर्वोत्तमु। निर्दोषु सर्वनामु।
वायु तो जीवोत्तमु। आनंद यति ॥६१६॥

पंचभेद[५४] तरतम। विरिंचि आणि वायू सम।
जग हे सत्य सुगम। प्रमाण तीनि[५५] ॥६१७॥

ज्ञानयुक्त ती भक्ति। विषयीं सदा विरक्ति।
हरि सेवानुरक्ति। हो मुक्ति मार्गु ॥६१८॥

हे शिवाइ अन्यथा। सर्व आसुरी वृथा।
केशवेन्द्रांक यथा। सांगताति गुरु ॥६१९॥

५४ जड जीवांतुले परस्पर पांच भेद ५५ प्रत्यक्ष - अनुमान - आगम

श्री गुरु चरितामृत

केल्लो मठाधिकारु। शिष्यांक हस्तांतरु।
यादवेन्द्र यतिवरु। धर्ता एकांत ॥६२०॥

गोपी नदीचें तीर। आश्रमधर्मानुसार।
जप तप ते गंभीर। कालातीत ॥६२१॥

शरीर तरि दग्धपट [५६]। नाक्का कोणि निकट।
निवृत्त कर्मि [५७] ते श्रेष्ठ। मोक्षगामि ॥६२२॥

करीऽत लयचिंतन। एकवटी प्राणापान।
पाव्ले तांका मुख्यप्राण। यतिवरेण्या ॥६२३॥

संयमिलें सर्वद्वार। जाल्लें मन एकाग्र।
उपरांत नारायणपर। हृत्नामी [५८] ॥६२४॥

५६ लासिसलें वस्त्र. ५७ काम्यकर्मत्यागी ५८ लयकर्ता सकर्षण.

ब्रम्हरंध्र उगडून। जाल्लें प्राणोत्क्रमण।
पळैऽत हे दिग्भ्रमण। शिष्यां सगळें ॥६२५॥

लोळ्ताति गुरुचरणी। संन्यासी केशवमुनी।
गुरुमूर्ति वंदूनी। जाल्ले तटस्थ ॥६२६॥

गुरु तो मुख्यप्राणु। घेव्नु गुरुलो प्राणु।
दित्ता भारतीरमणु। नारायणा कडे ॥६२७॥

शक पंद्रांशें तीस। कीलक आषाढमास।
वद्य पंचमी दिवस। जाल्ले गुरु मुक्त ॥६२८॥

गोपीनदीचे कूल। गुरूलें एकांत स्थळ।
ध्यानांतु बहुवेळ। काड्ला थांगा ॥६२९॥

तेचि जागेरि त्वरित। कोच्यांक देह भूगत।
नाममुद्रेन अलंकृत। तिलक आंगारो ॥६३०॥

श्री तुळसी भूषित। देह ते तेजोन्वित।
नारायण नाम स्मरीऽत। दवर्लें भूगर्भी ॥६३१॥

बांद्ले वृंदावन। प्रतिष्ठिलें मुख्यप्राण।
चाल्ले तें आराधन। समाराधनेन ॥६३२॥

काशीमठाचें द्वितीय। शास्त्रज्ञानि अद्वितीय।
केशवेन्द्र ते आत्मीय। जात्ले सर्वा ॥६३३॥

केल्लें पीठारोहण। श्रीयति केशवेन्द्रान।
जामलेंले शिष्य जन। म्हणात्लें धन्य धन्य ॥६३४॥

श्री काशीमठाचे प्रथम यतिवर्य श्रीमद् यादवेन्द्रतीर्थ श्रीपाद वडेर
हांगेलें मूलवृंदावन, भट्कळ (उ.क.)

चालि बोलि सगळी। संपूर्ण गा वडिलालि[५९]।
पुण्यवंत आम्हि मंडळी। शिष्य वर्ग ॥६३५॥

व्यासरघुपति महिमा। न जाणति ब्रम्ह रमा।
काशीमठाची गरिमा[६०]। अनादि सिद्ध ॥६३६॥

केशवेन्द्र महायोगि। तपस्वी तरुण त्यागी।
मठाचि कीर्ति बहु बेगि। उंचाइलि तान्नि ॥६३७॥

शिष्यकोटि ते अपार। वासकर्तीति वसुपुर।
पंच गंगावळी तीर। गांवु हेज्माडि ॥६३८॥

दोन्नी मठ एककाल। छात्रां कुणी निर्मल।
निर्मूनु गा सेवादळ। राख्लिं वेदवल्लि ॥६३९॥

५९ म्हालगडे. ६० होडपण.

समाजाक आइलो हुज्वाडु। सारस्वतांक तो होडु।
गुरून केल्लो पवाडु[६१]। असदृश म्हणा ॥६४०॥

गुरु आमुचे मूलधन। तांचान गा अभ्युत्थान।
चांग आणि होडपण। दित्ले गुरुनि आम्का ॥६४१॥

दिशा बदललि जनालि। केशवेन्द्र कृपावल्लि।
शिष्यांचेरि पसरलि। सहस्रबाहु ॥६४२॥

मूलमठाक स्वारि। वत्ता हें आइकता भारी।
दिव्यानंदु संचरि। शिष्य कोटि ॥६४३॥

यात्रे चि ती सिद्धता। जमले लोक कळता।
गुरु बर्शि तीर्था। यात्रोत्साहि ॥६४४॥

६१ अलौकिक लीला.

बिर्दावळि सहित मठपति। आराध्यु व्यासरघुपति।
भेरि शंखादि गर्जीति। हरीली कीर्ति ॥६४५॥

भार्गवालें सप्त क्षेत्र[६२]। रजतपीठ ते पवित्र।
वेंकटपतीलें स्तोत्र। करीऽत शेषाद्रि ॥६४६॥

श्रीनिवासालें दर्शन। पुष्करणी पापनाशन।
उपरांत पाव्लें कुंभकोण। गुरुस्थानी ॥६४७॥

भेट्ले ज्येष्ठ यतींक। श्री विजयीन्द्राले सन्निधीक।
वंदूनु वृंदावनाक। चाल्ले रामेश्वरा ॥६४८॥

राम सेतूंतु नाव्नु। मुक्तीक हेतु म्होणु।
सगळच्यांक स्नान कोरोनु। धन्य केल्ले ॥६४९॥

६२ गोकर्ण, उडुपि इत्यादि

श्री गुरुचरितामृत

विशाल ह्या भारतांतु। बहु धार्मिक क्षेत्रांतु।
विविध विद्या कलेंतु। निपुण म्हणति ॥६५०॥

जाल्ले सगळें एकत्रित। गुरुलेंचि एकसूत्र।
सारस्वताले महापात्र। समजलें आतां ॥६५१॥

सारस्वतालि जीवकळा। वसुपुर आणि भटकळा।
देव धर्माचा सोहळा। वाड्लि नित्य ॥६५२॥

स्वधर्मि अचल विश्वासु। देवु रघुपति व्यासु।
कुलदैवताचो अधिवासु। स्थाई सर्वत्र ॥६५३॥

गृहस्थ आणि मानेस्थ। सत्कार्यांतु नेमस्थ।
गुरुंचि खरे मुख्यस्थ। मान्तालें सगळें ॥६५४॥

देवालें प्रतिनिधि। गुरूचि खरे महानिधि।
तांचि दिव्य सन्निधि। शांतिधाम ॥६५५॥

जीवन आणि उज्जीवन। दोन्नींक हे साधन।
अशिशं समजून महाजन। येत्ता गुरु भेटि ॥६५६॥

नेमि आणि अर्थकामि। दोग्गांकई जाइ स्वामि।
योग्यता चोव्नु यमी। दित्ता तांका ॥६५७॥

गुरु बलाचे बल। गुरु दित्ता इच्छा फल।
ही श्रृद्धा प्रबल। वाड्लि सगळां ॥६५८॥

भक्त जनाले ताप। हरताति आपो आप।
केशवेन्द्रालें महातप। सिद्धि गा तीं ॥६५९॥

कांचि अयोध्या मथुरा। द्वारका आणि मायापुर[६३]।
तंचान काशीक त्वरा। आइलें मूलस्थानी ॥६६०॥

कोर्नु गंगास्नान। श्रीरामचंद्रालें दर्शन।
घेत्लें केशवेन्द्रान। विधियुक्त ॥६६१॥

नित्य गा गंगास्नान। जप तपादि अनुष्ठान।
व्यास रामालें ध्यान। मौनमुद्रा ॥६६२॥

आठरा ती पुराण। कोर्नु नित्य पारायण।
कर्तीति समर्पण। व्यासदेवा ॥६६३॥

मना लागल्या तृषा। भेट्का श्रीबदरीशा।
ही एक्कीचि आशा। केशवेन्द्रा ॥६६४॥

६३ हरिद्वार.

हे जान्हवी गंगे। जननी पावनांगे।
हे भवपाप भंगे। पावगे आत्तां ॥६६५॥

हे माते सुरसरी। त्रिताप शमन करी।
माये तुग्गेल्या तीरी। दीगे ठाव ॥६६६॥

अलकनंदा भागीरथि। तूं गे शंकरी त्रिपथी[६४]।
तूं बदरी वसती। व्यासाल्या स्थळी ॥६६७॥

जाण गे तूं व्यासाक। बदरीचा बादरीक।
दाक्षै ह्या मस्करीक। व्यास चरण ॥६६८॥

सवती तुजी सत्यवति। शंतनूलि प्रियसति।
प्रकटलें श्रीव्यासयति। पाराशर्य ॥६६९॥

६४ भू, आकाश, पाताळ.

केल्लो वेद विव्यासु। नांव पडले वेदव्यासु।
काशी मठाधिवासु। दाखै ताक्का ॥६७०॥

एकदा केशवमुनि। आइले स्नाना उन्मनि।
पंचगंगा ती पावनि। दिसली तांका ॥६७१॥

आइक साधकवर्या। न कळेरे देवचर्या[६५]।
प्रकटलो ज्ञानसूर्या। व्यासु तो तेन्ना ॥६७२॥

अर्चारूप घेव्नु। गंगेचा मृत्तिका थूनु।
अज्ञान तिमिर[६६] भानु। दिसलो खरे ॥६७३॥

बुडले यति गंगेंतु। संकल्पिलें मनांतु।
मृत्तिका काण्णु मस्तकांतु। धरीन आत्ता ॥६७४॥

६५ देवालि लीला. ६६ काळोकु.

सांपडले मृत्पिंड[६७]। पळैता हे शिष्यवृंद।
प्रकटले दिव्य गंध। मृत्तिकेंतु ॥६७५॥

लाइलि ती मृत्तिका। मस्तकी ती पिंडिका।
आश्चर्य हे पोळोंका। देव लीला ॥६७६॥

प्रकटलें व्यासरूप। मात्तियेंतु आपो आप।
केशवेन्द्रालें तप। जाल्ले खरें सिद्धि ॥६७७॥

देदीप्यमान वदन। हात ज्ञान अभयान।
जटा मुकुट ते पूर्ण। पद्मासनस्थ ॥६७८॥

जय हे बादरायणा। सत्यवतील्या नंदना।
हे कृष्णद्वैपायना। देव राणा ॥६७९॥

६७ मात्येचो मुद्दो.

हे बदरी निवासा। मध्वहृत्कमलवासा।
श्रीद्वैपायना श्रीशा। ज्ञानरूपा ॥६८०॥

कुरुकुलाचे रक्षण। केल्लें वसिष्ठ कुल पावन।
हरता सर्वा अज्ञान। स्वयं आप ॥६८१॥

हे व्यासा वेदपुरुषा। पाराशर्या निर्दोषा।
लक्ष्मीपते यतिवेषा। त्रिदशाल्या पति ॥६८२॥

योगिवर्या योगीन्द्रा। पाव्लो तू केशवेन्द्रा।
नाशिलें कौरवेन्द्रा। पांडवप्रिया ॥६८३॥

ज्ञानानंद काया। पाव्ला तूं मध्वराया।
अशिशं स्तुती यतिराया। करी भारी ॥६८४॥

हाळ्ळो मठा वैभवान। वेदमंत्राच्या घोषान।
केल्लें पळे प्रतिष्ठापन। पाट्टाचेरि ॥६८५॥

पाट्टाचो देवु व्यासु। हरी संन्यासी वेषु।
दित्ता केशवेन्द्रां तोषु। सर्वकाल ॥६८६॥

मूलमठाचे विस्तीर्ण। केल्लें श्रीकेशवेन्द्रान।
श्रीव्यासाल्या दयेन। परताइले गांवा ॥६८७॥

मठाचि धनसंपत्ति। अन्न दानादि स्वास्ति।
वाडैली स्थिर चरास्ति। व्यास सेवा ॥६८८॥

वसुपुरीं [६८] राब्ले स्वामि। जाल्लि ती पुण्यभूमि।
तत्त्वाभ्यासी संयमि। बहु संख्या ॥६८९॥

६८ बसरूर.

राब्लेति मठाश्रयीं। सुजीवि शास्त्राध्यायीं।
वृद्ध जाल्लेति स्थाइं। वसुनगरी ॥६९०॥

घेत्ले शिष्य दोनि। दूरदर्शि स्वाम्यानी।
राव्का काशी एक्ल्यानि। एक्ले गांवीं ॥६९१॥

उपेन्द्रतीर्थ ते पैलें। यादवेन्द्र ते धाक्ले।
दोघैं प्रेम पुतळे। सद्गुरुलें ॥६९२॥

श्रीमदुपेन्द्रतीर्थांक। धाड्लें स्वाम्यान काशीक।
मूलमठ वृद्धीक। शिष्यप्रेमिं ॥६९३॥

करीऽत क्षेत्रवास। विधिपूर्वक तीनि दिवस।
राव्ताति ते निर्दोष। ग्रामैक रात्रि ॥६९४॥

पाव्ले यति गोश्रीक। भेट्टूनु वेंकटपतीक।
दिव्यानंदु महाजनाक। दर्शनान ॥६९५॥

धर्मगुरूले दर्शन। जाल्लें कुशल संभाषण।
गुरुवाक्य श्रवणान। जाल्ले धन्य ॥६९६॥

त्रिकाल पूजाविधीन। नित्य पाठ प्रवचनान।
तप्त मुद्राधारणेन। शिष्य ते धन्य ॥६९७॥

केल्लि जनानि विनंति। सेवेंतु वेंकटपति।
आम्हि तरी अल्पमति। कर्तीति चुक्यो ॥६९८॥

पूजादि विधि नियम। अखंड सेवा क्रम।
तंत्रसारादि आगम। न कळे आम्मि ॥६९९॥

करा आम्का मार्गदर्शन। दीव्नु निर्णय पत्रान।
तेचि खरे वेदवचन। मान्य आम्का ॥७००॥

आइकूनु ही मागणी। श्रीउपेन्द्रतीर्थांनि।
आगमोक्त विधानानि। दिल्लि आज्ञा ॥७०१॥

पंद्रांशें साहत्तर। जयनाम संवत्सर।
ज्येष्ठ शुक्ल शुक्रवार। द्वादशी तिथि ॥७०२॥

निर्णय पत्र ते सांग। सुंदर आणि सर्वांग।
कोरुनारे भंग। स्वामि आज्ञा ॥७०३॥

सर्वांक जाल्लें मान्य। गुरु भक्ति गा अनन्य।
गुरु शिवाइ ना अन्य। मार्गु आम्का ॥७०४॥

वेंकटपतीक प्रणामु। कोर्नु तो यतिमहिमु।
उत्तर दिशेंक निर्गमु[६९]। यतिवरालो ॥७०५॥

विन्ध्या भोंव्ति[७०] पूर्ण। जाल्ले गा तीर्थाटन।
पाव्ले विश्र्वनाथ सदन। काशी क्षेत्र ॥७०६॥

मठांतु कोर्नु वासु। विस्ताराचो विन्यासु।
निष्ठेन तें संन्यासु। धर्मरक्षी ॥७०७॥

मूलमठाचो विस्तारू। कर्ता तो यतिवरु।
मध्वमताचो प्रचारु॥ करी काशी ॥७०८॥

यादवेन्द्र तें द्वितीय। राब्ले मठांतु स्वकीय।
चिंतित ते गुरुराय। पादपद्म ॥७०९॥

६९ चाल्ले. ७० विन्ध्यपर्वत प्रदक्षिणा

केशवेन्द्र तपोघन। कर्तीति लयचिंतन।
वसुपुरांतु उत्क्रमण। जाल्ले तांचे ॥७१०॥

यादवेन्द्र् सदोदित। सेवेंतु ते निष्णात।
राब्ले श्रुगुरु सन्निधींत। अंत्यकाळी ॥७११॥

पंद्रांशे ब्याण्णव। संवत्सर सौम्य नाव।
फाल्गुण वद्य त्रिदिव। सोड्ले देह ॥७१२॥

गुरु पाव्ले प्राणलोकु [७१]। काशींतून आइलो प्रमुखु।
यति उपेन्द्राख्यु। शिष्य ज्येष्ठु ॥७१३॥

वृंदावनाच्या सम्मुख। उचंबळलें दुःख शोक।
बसले गुरूल्या ध्यानाक। स्थिर चित्त ॥७१४॥

७१ मुख्यप्राणा लागि

श्रीमद् केशवेन्द्र तीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, बसरूरु

श्रीयादवेन्द्र मुनि। ज्येष्ठालें चरण दोनि।
धोर्नु ते दुःकाश्रूनि। न्हाण घाल्लें ॥७१५॥

केल्लि मागणी ज्येष्ठा कडे। बसता एकांत एकडे।
शिष्य ध्या मठाक पुडे। मुक्तु हांव ॥७२६॥

गुरु बंधूलें वचन। आइकता अश्रुलोचन।
जाल्लें ते तपोघन। उपेन्द्रमुनि ॥७१७॥

तपः स्वाध्याय निरत। यादवेन्द्रतीरथ।
जाल्लें वृंदावनस्थ। हेम्माडि ॥७१८॥

भाद्रपद पूर्णिमा दिवस। शक सोळाशें तेत्तीस।
खर संवत्सर विशेष। मुक्त कालु ॥७१९॥

गुरु बंधूलो वियोगु। म्होण्का हो कर्मभोगु।
खरें महात्यागु। धाक्लयांगेलो ॥७२०॥

कर्ता शिष्य स्वीकारु। श्रीउपेन्द्र गुरुवरु।
नांव श्रीराघवेन्द्रु। तीर्थनामि ॥७२१॥

महा मेधावि तपस्वी। तत्वज्ञानि तेजस्वी।
विरक्तु आणि यशस्वी। लक्षणांगु ॥७२२॥

पूर्वनांव नारायणु। हरिगुरु परायणु।
सर्वांगु परिपूर्णु। तेजोन्वित ॥७२३॥

कराळ नरसिंहु। लक्ष्मीपति परब्रह्मु।
ताज्जा पूजेचो नेमु। श्रीराघवेन्द्रा ॥७२४॥

श्रीमद् यादवेन्द्रतीर्थ (द्वितीय) हांगेलें वृंदावन, हेम्माडि (द.क.)

हांचो संचारु अधिकु। खरे हे परिव्राजकु।
प्रह्लादाल्या सारिखु। भक्तु खरें ॥७२५॥

संगून हितवचन। शिष्यांक त्या मोगान।
जर्जीरित आम्हि कायान। सर्व तुम्चे ॥७२६॥

मठाचो मान सांभाळा। राखा शिष्य संकुला।
निस्पृह भाव निराळा। राक्का सदा ॥७२७॥

आम्का तान काशीचि। भवतारिणी गंगेचि।
आयुष्य भऽरि थय्यींचि। राब्चि आशा ॥७२८॥

बहुमान बिर्दावळी। संप्रदायाचि सांकळी।
तुंटूनु ती वेगळी। जांव्चाक ना ॥७२९॥

निरंतर ते संचार। करीऽत बहुत विचार।
धर्मोन्नति खातिर। उर्का चिंता ॥७३०॥

तुम्चे कुळार तें काशी। संचारि तुम्हि सन्यासि।
योग्य छात्राल्या बर्शि। केन्ना तरी ॥७३१॥

उर्ला तरी आयुष्य। भेंट्तलें आम्हि अवश्य।
व्यास रघुपति वश्य। जात्लों तुम्का ॥७३२॥

वृद्ध गुरूलें वचन। आइकूनु केल्लें नमन।
अश्रुपूरित नयनान। राघवेन्द्रा ॥७३३॥

गुरूलें मार्गदर्शन। वचन आणि संभाषण।
आम्हि सहित शिष्य जन। स्मरती नित्य ॥७३४॥

शिश्यां सांगून विदाय। भक्तां दीव्नु अभय।
आलिंगून उभय। जाल्ले वेगळे ॥७३५॥

उपेन्द्रतीर्थ एकांगि। अनंत आकाश संगी।
निराडंबर निस्संगि। चाल्लें काशि ॥७३६॥

विचरले अवधूत। निराडंबरी निर्भीत।
व्यासरघुपतीक स्मरीत। पाव्ले काशी ॥७३७॥

काशींतु बहुतेक। लाग्ले गुरु तपस्याक।
पूजा केवल मानसिक। उर्लि तांका ॥७३८॥

लाइले लक्ष लक्ष्मीपति। निधानलि वायुगति।
प्राणापान एकवटति। योगिवर्या ॥७३९॥

श्रीगंगा तटाकांतु। ध्यानि असंप्रज्ञातु।
उपेन्द्रतीर्थ ख्यातु। मुक्तात्मा ॥७४०॥

पाव्ले ते ब्राह्मी स्थिति। ज्ञानपूर्वक भक्ति।
राब्लि स्थिरऽती अंति। गळले देह ॥७४१॥

पडलें गंगावारींतु[७२]। लीन ते पंचभूतांतु।
जीवात्मा मुख्यप्राणांतु। मेळ्ळो तेन्ना ॥७४२॥

आपो[७३] नारायणांक। समर्पि तांचे सकळीक।
गंगाद्वारा हरिचरणांक। मेळ्ळें तेन्ना ॥७४३॥

गूरूलें वैकुंठगमन। सगळे तें वर्तमान।
राघवेन्द्र श्रीचरण। आइकता क्षणीं ॥७४४॥

७२ गंगाजलांतु. ७३ उदक.

जाल्लें स्तंभीभूत। मौन मुद्रि विस्मित।
अतिशय दुःखान तप्त। जाल्ले खिन्न ॥७४५॥

देह विरलें जल तत्त्वी। गुरु विरह ती परतत्त्विं।
अनाथांक कोण गति। सद्गुरु शिवाई ॥७४६॥

पावैता गुरुले ऋण। मागतां मार्गदर्शन।
माठाम्नाय[७४] रक्षण। करीन श्रुद्धीं ॥७४७॥

गुरु आनि परमगुरु। परमेष्टि गुरु मूलगुरु।
भक्ति सहित नमस्कारु। कोर्नु सर्वां ॥७४८॥

धाड्लो सकळांक रायसु। मुकावैलो चातुर्मासु।
काशींतु कोर्चो विश्वासु। धर्ला मनां ॥७४९॥

७४ वैदिक मठ

कोर्का दीर्घ प्रवासु। जाल्लो मार्गातायासु।
भोग्गूका बहु त्रासु। देह दंड ॥७५०॥

सत्संगाचि ती गोडी। धरा ती बहु होडि।
सुकृतीं मात्र ही जोडि[७५]। जोड्ताति गा ॥७५१॥

सत्पात्रा बरो बरी। कोर्चि यात्रा ती बरी।
देवाल्यो स्तुति खबरी। नित्य चर्चा ॥७५२॥

आरंभा तीर्थस्नान। क्षेत्र देवता दर्शन।
सत्पात्रांक दीव्का दान। यथा शक्ति ॥७५३॥

नाक्का व्यर्थ भाषण। निंदा परदूषण।
सर्वथा निष्ठुर वचन। वदू नक्का[७६] ॥७५४॥

७५ संपादन. ७६ उल्लोनइ.

अति आहार अतिनिद्रा। उल्लोनका गृहछिद्रा।
रक्कूका मौनमुद्रा। धरी ध्यान ॥७५५॥

घरदाराचि चिंता। समर्पि तू भगवंता।
खरी ही यात्रा म्हणता। सिद्धयोगी ॥७५६॥

मुमुक्षु आणि साधक। वैरागी वैचारिक।
विवेकी वृद्ध युवक। यात्रीकरू ॥७५७॥

असंख्यात यात्रिक। जमले गा सहस्राधिक।
वंदीत गुरु सम्मुख। घेत्ली दीक्षा ॥७५८॥

ऋषि पंचमि [७७] कर्तालिं। चाल्लें काईं विधवेलि।
शाकपाकाक [७८] मेळ्तलि। सहाई सगळीं ॥७५९॥

७७ बहिष्ठपण राब्वोलि ७८ राधयाक

हरिगुरुल्या सेवेक। कटिबद्ध नवयुवक।
अनुभवी मार्गदर्शक। ज्ञानवृद्ध ॥७६०॥

मुखारि व्यासरघुपति। पालकीरि शोभताति।
भक्त खांद्यारि घेत्ताति। युववर्ग ॥७६१॥

पादचारि परिव्राजक। संन्यासी कुलतिलक।
सांगताति बहुपराक। राघवेन्द्रा ॥७६२॥

काषाय दंडधारि। आठैता श्रीनरहरि।
राघवेन्द्रा इष्टु भारि। नारसिंहु ॥७६३॥

सकलग्रहांतर्यामि। श्रीनरसिंहु स्वामि।
श्रीसंकर्षण नामि। रूद्ररूपु ॥७६४॥

हरिलें सर्वज्ञत्व। आणि सर्वव्याप्तत्व।
कोळ्वोंचे परतत्त्व। नारसिंहु ॥७६५॥

राघवेन्द्रालो इष्टदेवु। ताज्जेरि भक्तिभावु।
त्या ध्यानान गुरुरावु। सुखमग्नु ॥७६६॥

प्रह्लादा कारण। घेत्ले विकार वदन।
ते रूप दयापूर्ण। गुरू जाण ॥७६७॥

यात्रिक ते भावुक। ज्या ठिकाणि वसतीक।
राव्ता युव रक्षणेक। सिद्ध जात्ले ॥७६८॥

जपतपादि अनुष्ठान। सकालारि संध्यावंदन।
आदित्य हृदय पठण। तर्पणादि ॥७६९॥

काई सूर्यनमस्कार। काई करि प्रणवोच्चार।
गायत्री मंत्रसार। चिंतिताति ॥७७०॥

काई सेवा तत्पर। रोग्यांगेलें उपचार।
काई करि बाजार। सेवारूप ॥७७१॥

कर्ताति जी सेवा। घ्यारे ती गुरुदेवा।
करी उद्धार जीवा। गुरुमूर्ति ॥७७२॥

महा संतर्पण नित्य। आहारु केवल पथ्य।
समजून हे तथ्य। वर्तति सर्व ॥७७३॥

गायिं गोरुं बरोबरि। क्षीर भांडऽचि खरि।
वांटी नैवेद्या उपरि। चेर्डु बाळा ॥७७४॥

तंत्रसारोक्त पूजा। करीऽत गुरु सहजा।
माग्ताति हे रघुराजा। राख्र भक्ता ॥७७५॥

तीर्थ प्रसादग्रहण। करिती शिष्य गडण।
उपरांत मृष्टान्न। भुंजिताति ॥७७६॥

करी काई वामकुक्षि[७९]। काई लोक पूर्वपक्षि।
मांडूनु प्रत्यक्षि। विवादिति ॥७७७॥

पंडितालें प्रवचन। भक्तालें भजनगान।
भक्ति प्रेमाचे नर्तन। भावयुक्त ॥७७८॥

काई करी पिंडप्रदान। काई द्रव्यदान।
काई लोक अन्नदान। श्रद्धा भावें ॥७७९॥

७९ जेवण जालकि घेतिच विश्रांति

अशिशं यात्रा ही सफल। काशीक पाव्ले सकाल।
विश्र्वनाथाक तत्काळ। भेट्ले सर्व ॥७८०॥

विधियुक्त क्षेत्रविधि। केल्लि देव सन्निधि।
दिल्ले दानधर्मादि। यथा योग्य ॥७८१॥

कर्ता माठाचो प्रवेश। व्यासा घेव्नु यतीशु।
भर्ले शिष्य समावेषु। मौनयुक्त ॥७८२॥

दिल्लो संदेशु गुरून। शिष्यांक अवलोकून।
काइं दिवस राब्बून। साधा श्रेय ॥७८३॥

अशिशं ती आज्ञा कोर्नु। बसलें गुरु मौन धोर्नु।
आज्ञा ही मान्य म्होण्णु। प्रवर्तले ते ॥७८४॥

नाना विध होम हवन। जप आणि पुरश्चरण।
पठनादि पारायण। चाल्ले नेमस्थ ॥७८५॥

वेदव्यासाक घेव्नु। पंचगंगेंतु[८०] न्हाव्नु।
केशवेंद्रां आठोनु। राघवेन्द्र ॥७८६॥

परतले श्रीमठाक। स्थान कल्पिले नरसिंहाक।
प्रवर्त जाल्ले वैदिक। प्रतिष्ठेक ॥७८७॥

जागृत् स्वप्न निद्रांतु। नरसिंहाले ध्यानांतु।
निमग्न ते निष्ठेंतु। राघवेन्द्र ॥७८८॥

वैशाख शुद्ध चतुर्दशि। नृसिंह जयंति काशी।
वैदिक भक्ता बर्शि। श्रीराघवेन्द्र ॥७८९॥

८० एकु स्नानघट्

केल्लिं प्रतिष्ठापना। नरसिंहा नारायणा।
वैदिक आणि विद्वुज्जना। दिल्लें दान ॥७९०॥

दक्षिणा सहित द्विजांक। केल्लें तृप्त सर्वांक।
तिळसान्ना प्रार्थनेक। आइले भक्त ॥७९१॥

हे प्रह्लाद वरदा। लक्ष्मीपति शुभप्रदा।
हिरण्यकशिपु वधा। केल्लि तूवें ॥७९२॥

भृत्यवर्गांचे वचन। कोर्चांक ते पूर्ण।
जड त्या स्तंभांतुल्यान। जाल्लो प्रगटु ॥७९३॥

सर्वज्ञु सर्वव्यापकु। तूं सर्वोत्तमु एकु।
अचिंत्युगा भयानकु। राक्षसांक ॥७९४॥

नेण गा तुजी महिमा। साक्षात् भार्या रमा।
राक्षस ते गेल्लें तमा। द्वेष कोर्नु ॥७९५॥
राक रे वीरसिंहा। नारायणा परब्रह्मा।
कराळाक चोव्नु रमा। भीति पाव्लि ॥७९६॥
दैत्यांत्रमालागळा[८१]। घाल्या तूवें कराळा।
राख्ला प्रह्लाद बाळा। अलिंगूनि ॥७९७॥
रूप क्रिया अप्राकृत। भक्त तुग्गेलें प्राकृत।
अपार तांचें सुकृत। पुराकृत ॥७९८॥
भगवंता भक्तवत्सला। तुज्जी अवतार लीला।
जाणते ज्ञानि विरळा[८२]। जगा मध्यें ॥७९९॥

[८१] राक्षसाले आतऽ [८२] उणे

परशुरामु श्रीरामु। तोचि तूं परब्रह्मु।
नरसिंहु सर्वनामु। सत्यरूपा ॥८००॥

रामचन्द्रा सहवासु। प्रधानु गा वेदव्यासु।
नरसिंहा तुज्जो अधिवासु। असोरे नित्य ॥८०१॥

निवारिरे गृहबाधा। तुज्जे आम्हि अबोधा।
दी चरणा आस्पदा। भक्तां सदा ॥८०२॥

अशिशं प्रार्थिता-सकल। जाल्ले निद्रा तुंदिल।
विधवा एकि दुर्बल। वृद्धनारि ॥८०३॥

यात्रेंतु देहस्थिति। बिगडलि मृत्युभीती।
लागिल तिक्का खंती। नरसिंहालि ॥८०४॥

प्रतिष्ठा नरसिंहालि। पळैनि पूजा स्वम्यालि।
व्यर्थ ही यात्रा सगळि। पापि हांव ॥८०५॥

रडता खळ्स काण्णु। जीणे हे व्यर्थ म्होण्णु।
नृसिंहाली पूजा चोव्नु। मर्ता बेगी ॥८०६॥

नरसिंह श्रीहरी। तू सर्वत्र भर्ला तरी।
पह्लादा त्या खतिरि। खांब्यांताइलो ॥८०७॥

चीर्नु त्या राक्षसाक। वरगर्वित दुष्टाक।
माग्तां तुजल्या भीक। दाखै पूजा ॥८०८॥

नेण जपादि ध्यान। ना काई तत्त्वज्ञान।
मरणापूर्वी दर्शन। दीरे देवा ॥८०९॥

इच्छिती मरण काशी। ज्ञानी थोर निर्दोषि।
पापि हांव मंदभाषि। पावरे देवा ॥८१०॥

आइका हे श्रवणि। देवालि अद्भुत करणी।
प्रसन्न जाव्नु त्या क्षणी। नारसिंहु ॥८११॥

दिस्ता वृद्धेक साफ[८३]। जळ्ताति मंगलदीप।
घांट ती आपोआप। वाजली तेन्ना ॥८१२॥

पुष्पांजलि मंत्रधाटी। आइकली श्रवणपुटी[८४]।
भेरि नगारि उमटि। ध्वनी दिव्य ॥८१३॥

आरतीचो हुज्वाडु। फलांचो ताटु होडु।
अद्भुत हो पवाडु। दिस्लो तिक्का ॥८१४॥

८३ स्पष्ट. ८४ कानांक.

घोर कराळवदन। दोळे ते देदीप्यमान।
अचिंत्य दिव्याभरण। शोभ्ता देहीं ॥८१५॥

उत्कट नखं तीं क्रूर। विकीर्ण सिंह केसर।
दंष्ट्रांतुलेन[८५] रक्तधार। भयोत्कर ॥८१६॥

घोराट्टहास करीत। दिसले इष्टदैवत।
कर्ता वृद्धा दंडवत। धन्य धन्य ॥८१७॥

हे वैंकुंठ कंठीरवा[८६]। धन्य जाल्लिरे देवा।
आनि ठाव ना ह्या जीवा। घेरे चरणां ॥८१८॥

आज्जीक हांव धन्य। बहु जन्माचे हे पुण्य।
प्रपंचु माक्का नगण्य। घेरे चरणां ॥८१९॥

८५ दाडियो ८६ सिंहु

मंगल वाद्यांचि ध्वनि। भेरि नगार्यांचि स्वनि।
उठले राघवेन्द्र मुनि। आश्चर्यान ॥८२०॥

वृद्धा ती कर्ता स्तुति। विसरल्या देह पूर्ति।
वाचादि सर्व विल्यींति। गुरुक वंदी ॥८२१॥

करी संकेत मूक। नमस्कारूनि स्वाम्यांक।
फल हे सत्संगाक। धन्य जाल्लि ॥८२२॥

गुरु चरणांतु मस्तक। दवरिल्या क्षणांक।
पाव्लो ब्रह्मरंध्राक। प्राणु तिज्जो ॥८२३॥

पाव्लो श्रीनरहरि। चोइलि पूजा ती भारि॥
ना प्रेमु देहाचेरि। मुक्त करा ॥८२४॥

त्यजिलें जड देह। आट्ला विषयाचें मोह।
ना तिक्का केन्नाहि इह। मुक्त जाल्लि। ॥८२५॥

देव कृपा अहैतुकी[८७]। कोणाचेरि जात्तकी।
ती खरी मुक्तां पैकि। जात्तिं एकि ॥८२६॥

आर्त त्राण परायणा। नरसिंहा देवराणा।
कोरोनु पूजा दर्शन। उद्धरि नारि ॥८२७॥

आम्कईं दीरे दर्शन। नृहरे बिंबरूपान।
तूं जीवाचो चेतन। साक्षि चेता ॥८२८॥

आम्चे गुरु पूर्वज। विजयीन्द्र तें महातेज।
तांका तूं देवा सहज। पाव्ला खरें ॥८२९॥

८७ विनाकारण.

श्रीराघवेन्द्रतीर्थ। अशिशं मागणी करत।
घाल्ताति दंडवत। भक्ति प्रेमें ॥८३०॥

त्या समयारि भयानक। ध्वनि ती कर्ण स्फोटक।
दिसलें श्रीस्वाम्यांक। बिंबरूप ॥८३१॥

व्यापिले दिगंतराळ। कालाग्नि समान कराळ।
घोराट्टहास प्रबळ। परमात्मालें ॥८३२॥

चीरीऽत रिपूदर। उचंबळी रक्तपूर।
गर्जीत गगनाकार। पाव्लो हरि ॥८३३॥

राघवेन्द्र यतिपुंगव। ध्यानस्थ जाल्ले विभव।
मागताति महानुभाव। श्रृद्धायुक्त ॥८३४॥

व्यासरघुपति बर्शि। भजताति अहर्निशि।
शिष्यकोटीक तू पाव्शि। नरसिंहा ॥८३५॥

तुग्गेल्या स्मरण मात्रान। दुःख दारिद्य्र नाशन।
जात्ताति भक्त पावन। नारसिंहा ॥८३६॥

तूं दुरितवन पावकु। सकलेष्ट प्रदायकु।
देवां मधें तूं एकु। सर्वोत्तमु ॥८३७॥

तू रुद्रालो अंतर्यामि। ब्रह्मादिकांक स्वामि।
लक्ष्मीपति तूं निष्कामि। निस्संगु खरे ॥८३८॥

अशिशं प्रार्थिता यति। स्मरूनि दशप्रमति [८८]।
करी माठाचि कीर्ति। वृद्धिंगत ॥८३९॥

८८ मध्वाचार्य

आइकता हें साधकु। धाल्ता नमस्कारु एकु।
आइकूनु कथानकु। जाल्लो हर्षित ॥८४०॥

सिद्धा तुज्जो उपकारु। अहो रात्रींतु स्मरूं।
श्रीराघवेन्द्र गुरुवरु। साक्षात्कारि ॥८४१॥

खरे कोण अपरोक्षि। ते कर्मांक माक्षि।
ज्ञानी केवल साक्षि। कर्मत्यागी ॥८४२॥

हो संदेहु निवारि। सिद्धु तूंचि गा कैवारि।
तारि किं वा मारि। तुज्जोचि हांव ॥८४३॥

सिद्ध अशिशं म्हणालो। अपरोक्षि [८९] खरें देवालो।
देवूचि करैतालो। सर्वतंत्रु ॥८४४॥

८९ देवाक पळयिलो.

ना ताक्का कर्मलेपु। सख दुःखाचो संतापु।
योगि तो निर्लेपु। भक्तु हरिलो ॥८४५॥

श्रीराघवेन्द्र विरक्त। हरिलें एकांत भक्त।
जागृत् स्वप्ना सुषुप्तींतु। दिसता तांका देवु ॥८४६॥

विश्व तैजस प्राज्ञु। श्रीहरि सर्वज्ञु।
वर्णु कित्ले अवज्ञु[१०]। मंदबुद्धि ॥८४७॥

श्रीराघवेन्द्र गुरुवर्यांलि। चर्या आता बदललि।
अनुष्ठान पर उरलि। अहो रात्र ॥८४८॥

देवगर्भागार। तेंचि तांचे घर।
पूजेंतु दिवसभर। रमताति यति ॥८४९॥

१० नकळो.

श्री गुरु चरितामृत

संपूर्ण बाह्य शून्य। विचार तरी नांति अन्य।
तपःस्वाध्यायिं धन्य। मानितांति ॥८५०॥

सोडले भक्ष्य भोज्य। पकवान्न ही केल्ले त्याज्य।
क्षीर क्षारादि आज्य। निषेधीं यति ॥८५१॥

काहिं काल फलाहार। उपरांत जलाहार।
आतां तरी वाय्वाहार। भक्षी नित्य ॥८५२॥

शय्या तांची धरति। श्र्वास निरोधूनि यति।
नित्य समाधिस्थिति। असंज्ञात ॥८५३॥

क्षीणलें कार्येन्द्रिय। हरले पळे तापत्रय।
नरसिंहालें पदद्वय। ध्यानीं मनीं ॥८५४॥

उठता बसता मनन। शयन ते लोटांगण।
निद्रा म्हळचारि ध्यान। नरसिंहालें ॥८५५॥

नरसिंह श्वासोछ्वासु। नरसिंहालेचि ध्यासु।
ताग्गेलोचि उड्गासु। इतर शून्य ॥८५६॥

स्वामीं केशवेन्द्राक। व्यासु मेळ्ळेल्या स्थळाक।
पंचगंगा तीराक। राघवेन्द्र ॥८५७॥

व्यासाक धेव्नु मस्तकि। पंचगंगेंतु बुडकि।
घालीत स्तोत्र संगताति। सदैव भावें ॥८५८॥

तेचि पुण्य दिवसु। स्वप्नांतु आइलो तैजसु।
आइकलो स्वामेक हासु। नरसिंहालो ॥८५९॥

पंचगंगेंतु स्नान। माकाइ करै म्हणून।
सांग्ले श्रीनरसिंहान। यतिवरेण्या ॥८६०॥

जाल्ले स्वामें रोमांचित। वचन देवाले आइकत।
उदयिं देवा समेत। पंचगंगा। ॥८६१॥

घेवूनु नरसिंहाक। पीठ केल्ले मस्तक।
बुडले मंत्र श्लोक। सांग्ता बरे ॥८६२॥

विसरले देहभान। राख्ले तांका नरसिंहान।
जाल्ले ते उन्मन। मूकस्मित ॥८६३॥

गुरुरायालि प्रकृति। क्षीण जाल्लि दिनराति।
लाग्लि भक्ताक खंति। स्वाम्यांगेलि ॥८६४॥

केल्लि सर्वांनि मागणि। राक्कूका श्रीस्वाम्यानि।
परंपरा आम्हा कुणि। शिष्य घेव्नु ॥८६५॥

वेदव्यासालि प्रेरणा। नरसिंहालि सूचना।
जाल्लि स्वाम्यांक तेन्ना। पुण्य आमुचे ॥८६६॥

देवालो परिचारकु। गुरूलो विश्र्वासकु।
वैराग्यमूर्ति तो एकु। हरिभक्तु ॥८६७॥

यतियोगीचे जातक। चोइताति तें वैदिक।
दिस्ता वैराग्य विवेक। कुंडलि[९१] मध्यें ॥८६८॥

यति दीक्षा ते दीव्नु। देवेन्द्रतीर्थ म्होण्णु।
आश्रम नांव दवोर्नु। आशीर्वदिलें ॥८६९॥

९१ जातक.

परत एकांतवासु। घेत्ता नरहरि दासु।
शिष्याचेरि विश्र्वासु। समर्पि सर्व ॥८७०॥

राघवेन्द्रतीर्थाक। सिद्धुचो करतलामलक।
श्रीहरि प्रसाद मूलक। हरले रोग ॥८७१॥

सांग्ता एकि घटना। कल्यावेश[१२] सूचना।
स्वामे एक्ले कुंभकोणा। योगीन्द्रनामि[१३] ॥८७२॥

पाव्ले गोश्रीपुराक। वेंकटपतील्या भेटीक।
महाजन स्वागताक। जाल्ले सिद्धु ॥८७३॥

आम्हि तुमचे मूलगुरु। मुद्रा धारणादि संस्कारु।
दीव्चो हे अधिकारु। आम्का खरें ॥८७४॥

१२ कलिपुरुषालो १३ मन्त्रालय परंपरेचे

यतिवाक्य हे आइकूनु। काशीमठातुकूनु।
सर्व संस्कार पाव्नु। आम्हि धन्य ॥८७५॥

तुम्चा पूर्वजान। दिल्ला तें दानशासन।
त्या प्रमाणे अम्हि जन। काशीमठाचे ॥८७६॥

योगीन्द्र जाल्ले रूष्ट[१४]। गुरुद्रोही तुम्मि भ्रष्ट।
ब्राह्मण तुम्मि कनिष्ट। अमान्य आम्का ॥८७७॥

आइकूनु हें महाजन। सोड्ले ना देवदर्शन।
मनस्ताप ह्या कारण। वाढऽत गेल्ले ॥८७८॥

उभय मठाचि प्रीति। भोजनादि सहपंक्ति।
जाल्लि सर्व समाप्ति। आवेशु कलीलो ॥८७९॥

१४ कोपु

न्यायालयांतु प्रश्निनले। तरी महाजन जिंकले।
द्वेषादि मत्सर वाढ्ले। आवेशु कलीलो ॥८८०॥

सत्येन्द्रतीर्थ नामि। उत्तरादि मठ स्वामि।
ते सारस्वत प्रेमि। सत्यनिष्ठ ॥८८१॥

काशीमठाक मान्यता। दिल्लि ताम्नि तत्त्वता।
ताम्रपटांतु उल्लेखितां। प्रकटिलें तेन्ना ॥८८२॥

काशीमठु तो स्वतंत्रु। केन्नाई जाइनि परतंत्रु।
तत्त्ववादु तो मंत्रु। मुख्यत्वे थांका ॥८८३॥

असो आइक चरित। सद्गुरूंगेले पथ।
सर्वांक तें सम्मत। श्रवण योग्य ॥८८४॥

राघवेन्द्रांक वाक्सिद्धि। ताज्जेन कर्ता प्रसिद्धि।
तांच्या स्मरणेन वृद्धि। भाग्य सर्व ॥८८५॥

जाल्लां देह जर्जरित। वदन तरी तेजोन्वित।
राघवेन्द्र तपोन्वित। निवृत्त कर्म ॥८८६॥

शकवर्श सोळाइंशिं। उपरि सहा चाळीशिं।
फाल्गुण शुद्ध चतुर्दशी। जाल्ले मुक्त ॥८८७॥

श्रीराघवेन्द्रतीर्थ। हरिले चरणानुरक्त।
नरहरीले महाभक्त। पाव्ले हरिपदा ॥८८८॥

संन्यास्याक पदरांतु। घेत्ता गंगा आपण्यांतु।
जिरैता देह उदरांतु। यतिवरालें ॥८८९॥

सूर्यमंडल भेत्तून। योगी वत्ता देक्कून।
ना गा जन्मु परतून। योगि ताक्का ॥८९०॥

मुक्त जात्तरी स्वाम्यानि। आइकतली मंत्रध्वनि।
घंटास्वरू ते किंकिणि। पूजागृहीं ॥८९१॥

मुख्यप्रणाल्या वर्शि। सर्वत्र भोंवता संन्यासि।
मुक्तात्मा विष्णुवासि। श्रीराघवेन्द्र ॥८९२॥

जाल्ले मुक्त गुरुनाथ। आतां देवेन्द्रतीर्थ।
दक्षिण संचाराक त्वरित। सिद्ध जाल्ले ॥८९३॥

गुरुक प्रणाम कोर्नु। व्यासरघुपतीक घेव्नु।
नरसिंहाक मेळोनु। पेळीमध्ये ॥८९४॥

काशीचे विद्वुज्जन। गुरु चरण स्पर्शूनु।
शीघ्र काशी परतूनु। येव्का बरें ॥८९५॥

अशिश नम्र विनंति। आइकता देवेन्द्रयति।
विश्र्वनाथालि अनुमति। मोळ्ळिं तांका ॥८९६॥

परिवार सहित मंडळि। घेव्नु सर्व बिर्दावळी।
पूजा पाठ वेळोवेळि। करीऽत स्वामि ॥८९७॥

अयोध्या नैमिषारण्य। चित्रकूटादि गण्य।
परिव्राजक ते मान्य। संचार करि ॥८९८॥

बहुकाल विंध्यारण्य। संचरि यतिवरेण्य।
त्यजूनि अनिष्ट पुण्य। पाव्ले पुण्य इष्ट ॥८९९॥

गोदावरी जनस्थान। त्रयंबकेश्वर दर्शन।
कुशावर्ताचे स्नान। घडलें तेव्हा ॥९००॥

सप्तक्षेत्र सगळीं। देवेन्द्रयति फिरलिं[९५]।
तत्त्वप्रचाराची सांकळी। वाड्ली अचूक ॥९०१॥

भार्गव भूमि गोमांत। गो द्विजानि श्रीमंत।
यज्ञेश्वरु विदस रात। प्रज्वलि हांगा ॥९०२॥

सारस्वताले मूळ। तांचे कुलदैव सकळ।
आचार विचार निर्मळ। वेदमार्गि ॥९०३॥

शाक्त वैष्णवादि शैव। भजताति नाना दैव।
तरी श्रृद्धा गुरुदेव। तारकू मानि ॥९०४॥

९५ संचरलिं.

कदळी अघाशि क्षेत्र। दर्शनांन जाल्ले पवित्र।
घन्य म्हणतात़ि छात्र। गुरुभक्त ॥९०५॥

पाव्ले यति भट्कळाक। आपुल्या शाखा मठाक।
गोपीनदी तटाक। पुण्यभूमी ॥९०६॥

भेट्ले वृंदावनांक। मुक्तात्मा यादवेन्द्रांक।
जाल्लो आनन्दु यतींक। अवर्णनीय ॥९०७॥

घडलें गुरुदर्शन। आनंदलिं महाजन।
गुरुसेवा उत्साहान। करू लागले तेन्ना ॥९०८॥

दक्षिणोत्तराचे जन। भेट्ले स्वामीक भक्तीन।
समर्पि गुरुदक्षिण। भक्ति भावें ॥९०९॥

देवेन्द्रतीर्थीलि ख्याति। पसरी कर्नाट क्षिति।
केळदीचि नृप संतति। आइलि शरण तांका ॥९१०॥

केळदीचो[९६] वीररायु। सोमण्णा नामधेयु।
गुरुकृपा भागधेयु। जाल्लो पुण्यजीवि ॥९११॥

गौरवादर सहित। आपुल्या राज्यांत फिरत।
जनां सन्मार्ग दाखवित। उर्का हांगा ॥९१२॥

म्होणु समर्पि बहुधन। आंतिथ्ययुक्त बहुमान।
केल्लें दानशासन। भू हिरण्य सहित ॥९१३॥

देवेन्द्र पाव्ले वटपुरा। नेत्रावतीच्या तीरा।
वसति वैष्णव धुरंधरा। वटपुरांतु[९७] ॥९१४॥

९६ कर्नाटकाचे राजघराणे. ९७ दक्षिणकर्नाटकाचो एकु गावु बंटवाळ

वैदिक वृंदाचि मार्गाणि। आइकूनु सावधानि।
कृपाकोर्नु स्वाम्यानि। दिल्लो वेंकटेशा ॥९१५॥

तिरूमल देवाक दीव्नु। कृपाशीर्वाद कोर्नु।
धन धान्य समृद्धि जाव्नु। जाल्ले धन्यलोक ॥९१६॥

जाल्लि वसति बहुदिन। सज्जनाल्या भाग्यान।
नित्य नेत्रावती स्नान। दर्शन वेंकटालें ॥९१७॥

स्वाम्या दित्ता प्रेरणा। रघुपति बादरायणा।
निवडून श्रेष्ठ तरूणा। करी शिष्य शीघ्र ॥९१८॥

देवाज्ञा पाव्लि रायाक। येव्नु तो श्रीसन्निधीक।
शिष्य स्वीकार सिद्धतेक। मागता आज्ञा ॥९१९॥

हरिसंकल्पानुसार। यत्निंता सर्वप्रकार।
शोधिताति द्विजवर। विरक्तयोगी ॥९२०॥

चतुर चतुर्वेदी। वैराग्यपरू सुधी[९८]।
जाल्लो प्राप्तु सन्निधि। देवेन्द्रतीर्था ॥९२१॥

सर्वानुकूलु तरुणु। कर्ता संन्यास ग्रहणु।
श्रीमाधवेन्द्रतीर्थ म्होणु। दिल्लें नामाभिदान ॥९२२॥

श्रीमन्माधवेन्द्र। सद्गुणी परमसुंदर।
विरक्त भक्त प्रवर। वैराग्य मेरु ॥९२३॥

आरंभिलो संचारु। शिष्यां घेव्नु गुरुवरु।
परिकरु सहित परिवारु। पाव्ले गोश्री बेगी ॥९२४॥

९८ श्रेष्ठ सद्बुद्धि.

दर्शनांक गुरुत्रयालें। सहस्रावधि जमलें।
पाद्यपूजादि सगळे। करी विप्र विधियुक्त ॥९२५॥

भेटले वेंकटपति। वृद्ध बाल दोनीयति।
दंड सहित तो श्रीपति। कोर्नु नमन साष्टांग ॥९२६॥

गुरुद्वयाले दर्शन। समाजाक संजीवन।
विनंतिले त्या प्रमुखान। ज्येष्ठां कडें तेन्ना ॥९२७॥

वेंकटपतीले मंदिर। जाव्का जीर्णोद्धार।
गुरूलें अमृतकर। समर्थ ह्या कामी ॥९२८॥

हो आमुचो विश्र्वासु। गुरुकृपा विशेषु।
जाल्यारि आमुचो घ्यासु। साकार्ता हें स्वरे ॥९२९॥

प्रसन्न जाल्ले गुरुवर। वास्तुचे पूर्वाकार[११]।
पोळोका आगम प्रकार। मोडुनई म्हणता ॥१३०॥

दिल्लि आज्ञा गुरुनि। आरंभिले कार्य शिल्प्यानि।
अखंडित वेग गतीनि। कृति जाल्लि पूर्ण ॥१३१॥

देवेंद्र आणि माधवेन्द्र। प्रतिष्ठांग ते सुंदर।
कर्तीति महाजनपर। विधियुक्त ॥१३२॥

काई दिवस उपरांत। शिष्य सहित गुरुनाथ।
आइले नगरा श्रीमंत। वटपुराक ॥१३३॥

मनोहर ती नेत्रावती। तिरुमल देवालि कीर्ति।
नगराचि अर्थ संपत्ति। वाड्ल्या बहुत ॥१३४॥

११ [illegible]

गुरुंक करुनु स्वागत। वणिक मंडळि श्रीमंत।
गुरु कृपेनि भाग्यवंत। जाल्ले आम्हि म्हणे ॥१३५॥

काशीमठाचि शाखा। वटपुरांतु अस्सूक्का।
सेवा भाग्य हें दीव्का। आम्का महाजना ॥१३६॥

नित्य सेवेक आस्ति। अन्नदानादिका स्वास्ति।
श्रद्धेन समर्पिताति। स्वीकार्का स्वामि ॥१३७॥

जमलेले सान होड। पाय्यां पड्ताति आड।
तांचि भक्ती ती गाढ। पळैताति स्वामें ॥१३८॥

वटपुराचे हें भाग्य। यतींक वसति योग्य।
साधकालें सौभाग्य। गुरु ते प्राप्त सदैव ॥१३९॥

ज्येष्ठ यतीक आमंत्रण। दित्ताति मुक्त जन।
मुख्यप्राणु क्षणोक्षण। आमंत्रिता यती ॥९४०॥

देह आणि जगाचे ऋण। सरले म्हणा त्या क्षण।
दित्ताति आज्ञा-देवगण। अभिमानि इन्द्रियांचे ॥९४१॥

गुरुलें ऊर्ध्वगमन। माधवमुनि जाणले क्षण।
सूचविले सकल जन। जमले गा अगाध ॥९४२॥

गीताशास्त्र पठण। स्तोत्रादि पाठ भजन।
हरिनाम घोषान। भरली पृथ्वी ॥९४३॥

संयमिलें सर्वद्वार। शक्ति[100] चडलि सहस्रार।
देवेन्द्र मुनीले शरीर। कोंस्सळी पृथ्वी ॥९४४॥

१०० कुंडलिनी.

श्रीमद् देवेन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, बंट्वाळ (द.क.)

जाल्ले वृंदावनस्थ। मुनी देवेंद्र स्वस्थ।
नेत्रावती तीरस्थ। वायुरूपी ॥९४५॥

हरिगुरुलें सन्निधान। वटपुरांतु नित्य जाण।
भाग्यवंत थंचे जन। सुदैवी खरें ॥९४६॥

माधवेन्द्रालि महिमा। तांची विद्यादि प्रौढिमा।
गुरु उपरांत असीमा। व्यापिले खरें ॥९४७॥

संघटनेंतु चतुर। विचारी तत्त्वपर।
चिंतीत समाजोद्धार। पाव्ले वरदा तटा ॥९४८॥

वरदा नदी तटाक। आवडले माधवेन्द्रांक।
बहुकाल वसतीक। निवडिले स्थळ ॥९४९॥

शिष्य जनाले महापूर। जमूनु निर्मि नगर।
नांव दवरिले गुरुपुर। हर्षयुक्त ॥९५०॥

वरदराजु तो देवु। वेंकटेशु रमाधवु।
वरदा तीरी उद्भवु। भक्त प्रेमिं ॥९५१॥

महाजन सहित गुरून। प्रार्थिले कर जोडून।
देवा तुग्गेले सन्निधान। आस्का सदा हांग ॥९५२॥

प्रतिष्ठा कोर्नु विद्युक्त। सांगूनु पंचसूक्त।
अभिषेक कर्तांति भक्त। आनंदाने ॥९५३॥

श्रीक्षेत्र मूलिकेंतु। नरसिंहाल्या देव्ळांतु।
बिंदुमाधवु श्रीकांतु। राव्ला बरे ॥९५४॥

काशीचा माधवाक[१०१]। हाड्लो ह्या मूलिकेक।
वैभवाच्या प्रतिष्ठेक। कारण माधवेन्द्र ॥९५५॥

आवडले हे क्षेत्र। केल्लें स्वाम्यान पवित्र।
मठु आणि मंदिर। एकत्र केल्ले तान्नि ॥९५६॥

अखंड कर्नाटक। महाराष्ट्र गोमांतक।
संचरले परिव्राजक। मुनी माधवेन्द्र ॥९५७॥

पाव्ले क्षेत्र बाणगंगा। भव ताप करी भंगा।
जाल्ली प्रेरणा थांगा। माधवेन्द्रा ॥९५८॥

वालुकेश्वरा मुखारि। बांध्ले इमारत भारि।
बाणगंगेल्या तीरिं। राव्ले बहुकाल ॥९५९॥

१०१ बिंदुमाधवु देवु

मूलमठाचो विस्तारु। करैता तो गुरुवरु।
तरि बाणगंगेचो परिसरु। आवडे बरें ॥९६०॥

बाणगंगेलें स्नान। श्रीव्यासरामालें अर्चन।
तपःस्वाध्याय नियमान। करीत नित्य ॥९६१॥

ध्यान धारण समाधि। हीचि तांचि नित्यविधि।
ना तांका आधिव्याधि। क्षीणले सर्व ॥९६२॥

देह तरी दग्धपट। मन जाल्ले निष्कपट।
व्यासु तो हृदय संपुट। बसला नित्य ॥९६३॥

स्वामे अपेक्षि एकांत। शिष्य स्वीकार चिंतित।
कळैले तों मनोगत। आत्मीयाँ कडे ॥९६४॥

संकल्पि शिष्य स्वीकारा। दिल्लि आज्ञा द्विजवरा।
शोधिले वैराग्यपरा। वेदनिष्ठा ॥९६५॥

ज्ञान वैराग्य संपन्नु। मध्व शास्त्रांतु निपुणु।
परम सात्विकु तरुणु। मेळ्ळो स्वामि भक्तु ॥९६६॥

दिल्ले संन्यास विधियुक्त। दवरिले नांव आश्रमोक्त।
आशीर्वदी वेदोक्त। स्वामिराया ॥९६७॥

ज्ञानीन्द्रतीर्थ नांव। पाव्लें ते गांवो गांव।
यतीचेरि भक्तिभाव। वाढले जना ॥९६८॥

जाल्लि आज्ञा गुरुलि। एकमंगल सुकाळीं।
बाळा चऽल गंगाकूलि। करी रक्षा मठाचि ॥९६९॥

गुरुलें हें आइकूनु। ज्ञानीन्द्रु महामनु।
शिष्यवृंदांक धेवनु। चाल्लो श्रीकाशीमठा ॥१७०॥

श्रीमठाचें जमीन। आक्रमिला काइं दुष्टान।
ज्ञानीन्द्रानि तपोबलान। मेळैले परत ॥१७१॥

काशी क्षेत्रांतु बहुकाल। राव्ले ज्ञानीन्द्र प्रबल।
सच्छास्त्र आणि विद्या बल। साध्ले गा बरें ॥१७२॥

ज्ञानीन्द्रालि कीर्ति। आइकूनु काशीचो नृपति।
आइलो भक्तींनि शरणार्थि। गुरुभावनेन ॥१७३॥

सवाइ ईश्वरसिंघु। रायु तो बहुचांगु।
सदा इच्छिता सत्संगु। गुरु शरणु ॥१७४॥

श्रीमद् ज्ञानीन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें पादुका सन्निधान, नासिक

अरे हे साधका। मुख्य घटना अइकूका।
माधवेन्द्रांक असुखा। कळले ज्ञानीन्द्रांक ॥१७५॥

गुरू दर्शनाकांक्षेन। निर्गमले त्वरेन।
श्रीरघुपतील्या दयेन। पाव्ले नासिकाक ॥१७६॥

श्रीरामालय ते नासिक। श्रीक्षेत्र त्रयंबक।
कुशावर्त तीर्थोदक। आवडे गुरू ॥१७७॥

रामालि तपोभूमि। पंचवटी पुण्यनामी।
चिंतीत ज्ञानीन्द्रयमी। विसरले भान ॥१७८॥

हरि इच्छा कोण जाण। बिगडले तांचे बाण।
आयुष्य सरले पूर्ण। मुनी ज्ञानीन्द्रालें ॥१७९॥

ब्रह्मरंध्रासुकून। जाल्ले प्राणोत्क्रमण।
गोदावरींतु विसर्जन। केल्ले देह शुद्ध ॥९८०॥

गुरुपेक्षापैलें। शिष्य ते मुक्त जाल्ले।
दुरंत हे घडले। दैवयोगें ॥९८१॥

सुधारले माधवेन्द्र। केल्ले शिष्य यादवेन्द्र।
तिसरे हें नांव सुंदर। प्रिय गा शिष्यवृंदा ॥९८२॥

कालांतरि माधवेन्द्र। मुंबापुरीहि केन्द्र।
करीन म्हणे हे सुंदर। सिद्धभूमि ॥९८३॥

देहाचे दाह निव्वोनु। परमार्थि मन मेळोनु।
सर्व संग ते त्यजूनु। जाल्ले निस्संगी ॥९८४॥

श्रीमद् माधवेन्द्र तीर्थ स्वामेलें वृंदावन, मुंबई

करीऽत लय चिंतन। ध्यानी मनी जनार्दन।
संप्रज्ञात समाधीन। पाव्ले असंप्रज्ञा ॥९८५॥

जाल्ले देह देवालय। षड्वैरिले[१०२] जाल्ला लय।
रिगले ते गुहालय। पूर्वसिद्धा ॥९८६॥

ज्ञानेश्र्वराल्या उपरांत। सदेह वृंदावनांत।
राघवेन्द्र ते महांत। प्रवेशिले आइक ॥९८७॥

माधवेन्द्र महामुनि। सदेह वृंदावनि।
चिंतित त्या व्यासमुनि। रिगले गुहा ॥९८८॥

श्रावण शुद्ध पंचमि। संवत्सर मन्मथनामि।
श्रीमन्माधवेन्द्र यमी। वृंदावनस्थ ॥९८९॥

१०२ कामक्रोधादिक

सत्र्याण्णव षोळांइशि। शालिवाहन शकवर्षी।
समाधिस्थ अहर्निशि। स्मरता हरी ॥९९०॥

भंगला लिंगदेह[१०३]। तरी शिष्याचेरि मोह।
स्वरूप देहि स्वतह। प्रकटी नित्य ॥९९१॥

वृंदावनी अद्यापि। आस्सति निजरूपि।
शरणागत आपो आपि। धन्य जाल्ले ॥९९२॥

खाडव्यांचि ध्वनि। आइकूनु सुकृतीन्द्र मुनि।
जाल्ले आपण उन्मनि। स्मरता गुरुराया ॥९९३॥

गुर्जर मराठी हिंदी। नाना मताचे संबंधि।
भक्तीन तरी वंदी। सिद्धि गा इष्टार्थ ॥९९४॥

१०३ जीवस्वरूपाचे आवरण.

श्रीमद् यादवेन्द्रस्वामि (तृतीय) हांगेलें वृंदावन, होन्नावर (उ.क.)

मुख्यप्रणालि सन्निधि। हरलि सकल उपाधि।
सर्व इष्टार्थ सिद्धि। मेळ्ता संदेह ना गा ॥९९५॥

मंत्रालय मराठाचें। सकलार्थ सिद्धीचे।
उद्धार अनुभावाचे। आइकूयां बरें ॥९९६॥

नाळीकेराचो[१०४] अभिषेकु। कोण करैत एकु।
परिहारि दुःख शोकु। प्राणनाथु ॥९९७॥

महिमा माधवेन्द्रालि। आइकता पाप सगळी।
पळतातित प्रातःकाळी। स्मरूया नित्य ॥९९८॥

यादवेन्द्र तृतीय। विरक्त ते क्षीणकाय।
बहु उणे आयुर्दाय। सरले बेगी ॥९९९॥

१०४ शिय्यांळें.

शरावती नदी तीर। गांव नांव होन्नावर।
वृंदावनस्थ गुरुवर। जाल्ले थांगा ॥१०००॥

उपेन्द्रतीर्थ दुसरे। तांचे शिष्य बहुबरे।
काशीमठाचे व्यवहारे। म्हणताति निपुण ॥१००१॥

जोधपुरी नामकु। संन्यासि बहु वंचकु।
कायदेचो मूर्खु। धन पिशाचि ॥१००२॥

कायदेचे झगडे। करीऽ स्वामि ताज कडे।
भूइं घेत्लि आपल्या कडे। मठ प्राकार ॥१००३॥

शक सत्रांइशि तेरा। विरोधिकृतु संवत्सरा।
शुद्ध सप्तमी शुभवारा। मार्गशीर्षी ॥१००४॥

श्रीमद् राजेन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, तरऊरु (केरळ)

त्यजिले देह गंगेंतु। मेळ्ळे मुख्यप्राणांतु।
मठाच्या इतिहासांतु। जाल्ले स्मरणीय ॥१००५॥

राजेन्द्र शिष्यं तांचे। अगाध म्हणे पांडित्याचे।
अंबुधि तत्त्वशास्त्राचे। ख्यातनामी ॥१००६॥

तीर्थराज प्रयागेंतु। त्रिवेणीच्या संगमांतु।
निर्मिलो मठु क्षेत्रांतु। राजेन्द्रानि तेन्ना ॥१००७॥

करीऽत क्षेत्र संचारु। केरळाकाडलो गुरुवरु।
गांव नांव तरवूरु। केल्लि वसति थांगा ॥१००८॥

नरसिंह देवळांतु। निवसि गुरुसमर्थ।
निवडिले विद्यार्थीतु। तरुण दोघां ॥१००९॥

तत्त्वज्ञानाचो प्रचारु। परमार्थाचो सुविचारु।
सर्वत्र करा विवरु। आज्ञा दिल्ली बरे ॥१०१०॥

दोघाकय्यीं संन्यास दिल्ले। सूरीन्द्रतीर्थ ते एकले।
विष्णुतीर्थ नांव दवरिले। दुसऱ्या शिष्यांक प्रेमें ॥१०११॥

राजेन्द्र करसंजात। विष्णुतीर्थ प्रयागेंत।
मठ विस्तार करीऽत जाल्ले मुक्त काशीं ॥१०१२॥

श्रीसूरीन्द्रालि ख्याति। मान्तले आंग्लेय नृपति।
रात्ताले मठ संपत्ति। खुशी जाव्नु ॥१०१३॥

रौप्यक[१०५] बारा हजार। दिल्ले स्वाम्यानि उदार।
पावैले ना ऋणभार। भ्रष्ट गुरुद्रोहि ॥१०१४॥

[१०५] रुप्पे.

श्रीमद् सूरीन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, आलप्पि (केरळ)

काइं तौलव[१०६] युवानि। संचार निर्बंधूनि।
न्यायालयांतु प्रश्नूनि। पाव्ले अपजय ॥१०१५॥

सूरीन्द्र स्वतंत्र। जगद्गुरु ते सर्वत्र।
गौरवादराक पात्र। संचरि मुक्तात्मा ॥१०१६॥

निर्णयु न्यायालयाचो। जयघोषु हो जनाचो।
सर्वत्र जयपताकेचो। निनादु गगनांगणी ॥१०१७॥

महाक्षेत्र पंढरींतु। वेंकटेशाल्या देवळांतु।
प्रतिष्ठा केल्ली श्रीकांतु। पाव्ला हांका खरें ॥१०१८॥

सत्रांशे तेत्तीस साली। प्रतिष्ठा वेंकटेशालि।
त्रयोदशी तिथी मंगली। वैशाख शुद्ध ॥१०१९॥

१०६ तुळु ब्राह्मण तरुणानि

सत्रांशी त्रेपन्न। ज्येष्ठ शुद्ध सप्तमी दिन।
खर संवत्सर पुण्यदिन। वेंकटेशा चरणी ॥१०२०॥

पाव्ने आलप्पि[१०७] क्षेत्रांतु। सदैव वृंदावनांतु।
अद्यापि हनुमत्समेतु। पाव्ताले आम्का ॥१०२१॥

सूरीन्द्राले प्रीति पात्र। सेवानिष्ठ ते छात्र।
श्रीगुरु करुणेक पात्र। जाल्ले हें आइका ॥१०२२॥

दीव्नु तांका संन्यास। कृपा दाख्रोनु विशेष।
केल्ले तांका मठाधीश। नांव ते विबुधेन्द्र ॥१०२३॥

विबुधेन्द्रतीर्थ संन्यासि। पंडीऽत गा बहुभाषि।
तत्त्वशास्त्राचे अभ्यासि। ग्रंथकर्त ॥१०२४॥

१०७ [illegible]

श्री गुरु चरितामृत

मध्वशास्त्रांचेरि बहुत। केल्या मण्तातित ग्रंथ।
उपलब्ध ना म्हणतात। दुर्भागि गा आम्हि ॥१०२५॥

श्रीगुरुपरंपरामृतु। रचिला स्वाम्यानि स्वंतु।
तोहि पूर्ण रूपांतु। ना गा आत्ता उपलब्ध ॥१०२६॥

विबुधेन्द्र पाव्ले काशि। विद्वज्जन ते वारणासि।
स्वागत करीऽत संतोषि। सुजीवी गुणग्राही ॥१०२७॥

विबुधेन्द्राले वैदुष्य[१०८]। आणि उज्वल भविष्य।
चिंतीत काशी निवास्य। हर्षले मना ॥१०२८॥

विद्वांसांतु विबुधेन्द्र। यथा देवसभेंतु इन्द्र।
शोभ्तारे यमीन्द्र। पंडिता मध्ये ॥१०२९॥

१०८ पांडित्य

श्री गुरुचरितामृत

मन वळले दक्षिणा कडे। नियाळ्ताति दोळच्यां पुढें।
शिष्यकोटि गुरु भांव्डे। आठैले मना ॥१०३०॥

त्या काळी संचार कष्ट। भरलेति म्लेंछ भ्रष्ट।
आंग्लेय[१०९] तरी दुष्ट। सगळे मूर्ख ॥१०३१॥

श्रीम्मठाचो परिवार। वैभवोपेत संचार।
लोकांचे गौरवादर। सांग्ता ही गाथा ॥१०३२॥

आरक्षकाले[११०] हे पत्र। सांग्ता स्वामि स्वतंत्र।
सर्वकाराचे यंत्र। सिद्ध गा सेवे ॥१०३३॥

काशी परिधि पर्यंत। माक्षि मुखारि भोवांत।
रक्षा करा दिन रात। सूक्त रीत्या ॥१०३४॥

१०९ इग्लिष लोक. ११० पोलीस कमीषनर.

श्रीमद् विबुधेन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, मंजेश्वर (केरळ)

ब्राह्मण समुदाय तीस। पालकी दोनि विशेष।
पालकी होंव्ताले बावीस। सेवक सत्रा ॥१०३५॥

गो अश्वादि तीं पन्द्रा। पेटचो सात्तीस धरा।
रक्षा ती क्षिप्र करा। यतिवरेण्य ॥१०३६॥

यती हे भू देववन्द्य। लोकोपकारि अनिंद्य।
कर्तीति पाप छिंद्य। आचार्य धर्माचे ॥१०३७॥

मंजेश्वराक पाव्ले स्वामी। नरसिंहाक वंदी यमी।
काइं संवत्सर क्रमी। न कळे काल ॥१०३८॥

इच्छी विबुधेन्द्रमुनि। वृंदावन प्रवेशूनि।
मुख्यप्राणाल्या दयेनि। मेळ्का हरिपादां ॥१०३९॥

शक सत्रांइशि पचपन्न। माघ बहुळ पंचमी दिन।
प्रवेशिले वृंदावन। स्व मठी मंजुळी[१११] ॥१०४०॥

दोघें शिष्य विबुधेन्द्रांक। ज्येष्ठ सुमतीन्द्र नामक।
दावले वसुधेन्द्र एक। योगीन्द्र दोघें ॥१०४१॥

विबुधेन्द्राल्या उपरांत। तांचे शिष्य मत भेदांत।
सांपडले कलि कालांत। हें समज म्हणूया ॥१०४२॥

गेल्लें प्रकरण न्यायालयी। कोण गा न्यायी अन्यायी।
निर्धार कोर्का जाइ। म्हणता बिगडले ॥१०४३॥

सुमतीन्द्रांक आरोग्य भाग्य। ना तितुले चांग योग्य।
योगय शिष्य सौभाग्य। मेळ्ळें तांका हरिकृपा ॥१०४४॥

१११ मंजेश्वर

श्री गुरुचरितामृत

आइका चरित्र मुक्कार्चे। सारस्वत सौभाग्यांचें।
सुमतीन्द्रालें पुण्यसाचें। प्रकटें शिष्यरूपि ॥१०४५॥

आइका चरित्र विस्तार। गुरूलीं महिमा अपार।
भुवनेन्द्रालें पूर्वापर। आइकूयां आत्तां ॥१०४६॥

सोळव्या शतमानांतु। गोमंत सास्टिकारांतु।
कौंडिण्य ते गोत्रांतु। आडनांव कामत ॥१०४७॥

महामाई कुडतेरि। कुलदेवी तांचि भारी।
त्या कुटुंबाचि स्वारि। पाव्लि गोश्रीपुरा ॥१०४८॥

म्लेंछ आणि ईसाई। सारस्वतां भाट्टैताइ।
ना कोणि थांगा स्थाई। पळले पश्चिमांक ॥१०४९॥

पल्लिपुर्ता गांवांतु। राव्लेल्या कृष्ण काम्तींतु।
चोग पुत्ररत्नांतु। चौथो गा नरसिंहु ॥१०५०॥

सत्रांशे पंचाणणव। ज्येष्ठवद्य तिप्रेदिव।
वत्सर हे विळंबि नांव। जन्म गा ताज्जो ॥१०५१॥

आलप्पि ते ग्रामांतर। जाल्ला अनंत नारायणपुर।
गोश्रीचे वेंकटेश्वर। लक्ष्मी आणि नरसिंहु ॥१०५२॥

गांवु तो वाणिज्य केन्द्र। त्या ठिकाणि सुमतीन्द्र।
बहुकाल राव्लेति यतीन्द्र। सन्निधीन्तु देवाल्या ॥१०५३॥

स्वाति तिरुमल रामु। आडनांव ते वर्मु।
सुरळीत राजधर्मु। चलैता तो सुभगु ॥१०५४॥

श्रीहरीगुरूलो भक्तु। भोगी जाल्यारि विरक्तु।
सुमतीन्द्र सेवासक्तु। स्वामि प्रेमी ॥१०५५॥

नरसिंहालि कुंडलि। श्रीसुमतीन्द्रानि पळैलि।
कृष्णकामति कडे मंडळि। धाड्लि ब्राह्मणालि ॥१०५६॥

उपनीत बालकाक। हाड्लो श्रीसन्निधीक।
पोळोनु त्या अर्भकाक[११३]। आनंदले स्वामें ॥१०५७॥

आवै बापैलि अनुमति। बालकालि सम्मति।
कुंडलीचि स्थितिगति। मऽळी ती देवालि ॥१०५८॥

अनुकूल जाव्नु सगळीं। इच्छा ती व्यासरामालिं।
सर्वै घोड्का सकालिं। कृपा देवालि मुख्य ॥१०५९॥

[११३] बालकाक.

श्री गुरुचरितामृत

स्वाति तिरुनाळरायु। संगीतज्ञु वाग्गेयु।
कर्ता स्वाम्यांक सहायु। शिष्य स्वीकारा ॥१०६०॥

साधारण संवत्सर। सत्रांइशि ब्याहत्तर।
पुष्य वद्य नवामी वर। स्वीकरी शिष्य ॥१०६१॥

सुमतीन्द्रानि शिष्य घेव्नु। नेमिलें भुवनेन्द्र म्होणु।
केवल सात दिवस काण्णु। जाल्ले सुमतीन्द्र मुक्त ॥१०६२॥

साधारण संवत्सर। सत्रांइशि ब्याहत्तर।
पुश्यवद्य अमवास्यावर। उपरि प्रतिपदा ॥१०६३॥

आलप्पि गांवांतु यति। सन्निधि श्रीवेंकटपति।
घेत्लिं ती चिरविश्रांति। चरणी प्राणदेवाल्त्या ॥१०६४॥

श्रीमद् सुमतीन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, आलप्पि (केरळ)

श्री हरिगुरु कृपेन। मठाचि ही भांडण।
निवैली बालयतीन। भुवनेन्द्रानि गा ॥१०६५॥

आइकारे ही घटना। ना गा शाब्दिक विवरणा।
व्यासरघुपतीलि कल्पना। न कळे बाबा ॥१०६६॥

श्रीवसुधेन्द्रालि स्वारि। बहुत राब्लि कुंदापुरि।
भुवनेन्द्र ते दूरि। केरळी आलपळि्ळ ॥१०६७॥

मठाचो सम्मविभागु। कोर्चाक दित्ता सहयोगु।
कोणी तरी कोर्नु त्यागु। म्हण्पी ही न्यायालयाचि ॥१०६८॥

बालक भुवनेन्द्रांक। ह्या अप्राप्त वयस्कांक।
रक्षक तरी जाव्चाक। कोण गा अर्ह सांगा ॥१०६९॥

सांगले भुवनेन्द्रानि। वसुधेन्द्र आमुचे धनि।
माता पितृ हे दोनि। तेचि गा आम्का ॥१०७०॥

आइकूनु हे न्यायाधीशु। बालकु हो खरो यतीशु।
हाज्यांतु वैराग्य विशेषु। भर्ला हो ज्ञानी ॥१०७१॥

न्यायालयाचो संदेशु। आइकूनु जाल्लो तोषु।
वसुधेन्द्रांक प्रेमावेशु। आइलो गा तेन्ना ॥१०७२॥

भुवनेन्द्रालि गुरुभक्ति। मठ रक्षणेचि युक्ति।
आनंदी वसुधेन्द्र यति। स्वीकरी भुवनेन्द्रां ॥१०७३॥

परिहरलें गंडांतर। पाव्ले गुरु मंजेश्वर।
भुवनेन्द्रानि सर्व भार। घाल्ले पायां गुरूल्या ॥१०७४॥

श्रीमद् वसुधेन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, मंजेश्वर

शक सत्राशे एक्याशींतु। सिद्धार्थ संवत्सरांतु।
वैशाख शुद्ध पूर्णिमेंतु। जाल्ले वसुधेन्द्र मुक्त ॥१०७५॥

मंजेश्वर स्व मठांतु। विबुधेन्द्राल्या सनिहांतु।
सन्निहित वृंदावनांतु। प्राणासहित नित्य ॥१०७६॥

महा विभूतिपुरुषु। भुवनेन्द्र यतीशु।
मुख्यप्राणाले आवेशु। तांच्यांतु खरें ॥१०७७॥

आतां आइका चरित्र। भुवनेन्द्रालें पवित्र।
महिमा ती श्रवण मात्र। लभ्य गा पुण्यकीर्ति ॥१०७८॥

आजानुबाहु उन्नतु। रूपान तरी मन्मथु।
दिव्यनेत्र कर्णायुतु। विशाल फालु ॥१०७९॥

समशिर काय ग्रीवु। चमकणांतु गंभीर भावु।
संयमी हो भू देवु। समजताति अशिश ॥१०८०॥

कुशल कुशाग्रमति। वेद वेदांगी परिणिति।
तत्त्वशास्त्र विवरिताति। सरळ तरी गंभीर ॥१०८१॥

आयुर्वेद रसवैद्य। धन्वंतरी कृपेन वेद्य।
मृत संजीविनी ही साध्य। केल्लां यतिवरान ॥१०८२॥

मंत्र शास्त्र अर्थ शास्त्र। शिल्प आणि शब्दशास्त्र।
भक्तिचें मुक्तिशास्त्र। अभिजात हांका ॥१०८३॥

बहिरावरणांतु भोगि। अंतरंगी सदायोगी।
ज्ञानी ते वीतरागी। यती हें लोकवंद्य ॥१०८४॥

भुवनेन्द्र हें नाम जपता। भुवनेन्द्रांक कोण स्मरता।
ताक्का ना गा दरिद्रता। आरोग्य भाग्य ॥१०८५॥

प्रसन्न शांत स्वभावु। दयार्द्र निर्वैर भावु।
सद्गुणांक ना अभावु। भुवनेन्द्रां कडे ॥१०८६॥

ऋषि तुल्य पूज्य यती। सत्त्वाचि प्रतिकृति।
दशप्रमतील्यो कृति। करतलामलक ॥१०८७॥

योग साधनी निष्णात। निरोगि अप्रमत्त।
गुरु भक्त गा नितांत। अनुकरणीय ॥१०८८॥

लोकानुग्रह शक्ति। तपःप्रभाव विरक्ति।
फलांतु निरासक्ति। करी कर्म यज्ञार्थ[११४] ॥१०८९॥

११४ ईश्वरार्पण बुद्धि

अनाथालो कैवारी[११५]। निष्कामी लोकोपकारी।
विद्यावंत समूह भारी। वसती स्वामी कडे ॥१०९०॥

विद्याभिमानी स्वामी। म्होणूचि विद्वांस सकामी।
आश्रयु दित्तांति यमी। विवरति विपुलार्थ ॥१०९१॥

विद्यादान द्रव्यदान। अन्नादि अभयदान।
गो भूमि हिरण्यान। तृप्त करी सर्वां ॥१०९२॥

स्वाम्या लागिग शिष्यवृत्ति। घेत्तिले ते विद्यार्थि।
पाव्लेति बहुकीर्ति। वैदिका मधें ॥१०९३॥

गोश्रीचे गुणभट्ट। कार्कळी सुब्बा भट्ट।
कोडियाल्चे कृष्ण भट्ट। शिष्य गा भुवनेन्द्राले ॥१०९४॥

११५ रक्षक

पंचकमलाचो[११६] श्रेष्ठु। श्री श्रीनिवास भट्टु।
भुवनेन्द्रा बहुनिष्ठु। तरी कीर्तिकामी ॥१०९५॥

हरिकथेचो संप्रदाय। राख्चा केल्लो उपाय।
लक्ष्मीनारायणार्य। आइलो गुरुल्या भेटी ॥१०९६॥

ताज्जें स्वरूप ओळखूनु। दीक्षा मुद्रादि दीव्नु।
मध्व शास्त्रार्थ शिक्कोनु। केल्लो दासु ताक्का ॥१०९७॥

स्मार्तु तो ब्राह्मणु। नांव लक्ष्मीनारायणु।
स्वरूपांतु सुज्ञानु। गुरु ओळखले ताक्का ॥१०९८॥

कवित्व ताक्का स्फुरलि। नामावळी बहुत रचलि।
कथा कलेंतु तो बली। जाल्लो गुरुदयेन ॥१०९९॥

११६ एर्नाकुल गांवु

आचार्यालें सर्व मूल। शिक्षा सर्व शिष्य जाल।
आश्चर्य पाव्तात सकल। हेंचि आचार्य खरें ॥११००॥

तपोबलान समृद्धि। गुरुकाइली वाक्सिद्धि।
आशीर्वादीं महाव्याधि। परिहरती गुरु ॥११०१॥

नरसिंहु भट्टु तलचेरि। उदरशूलान भारि।
दुःखभोगी निरंतरी। सांग्ता तो गुरूकडे ॥११०२॥

आनि ना तुक्का दूकि। जाल्लो तू खरो सुखी।
अशिशं सांग्ता त्या मुखी। घाल्लो प्रसादु किंचित् ॥११०३॥

निवली दूकि तत्क्षण। जाल्लें प्रारब्ध क्षीण।
गुरूक शंकिता कोण। तोचि गा मूर्खु ॥११०४॥

वसुधेन्द्रानि बहुधन। भूंइतु निक्षेपी ठेवण।
मंजेश्वराचें भक्तगण। निवेदि स्वाम्यांकडे ॥११०५॥

भू निधीचो शोधु। करा तुमचो मंत्रवादु।
म्हणता एकलो अबोधु। स्वाम्यांकडे ॥११०६॥

आइकूनु स्वामि हसले। लिंब्या घेव्नु मंत्रिले।
आणि त्या निधि कडे पेटैले। शोधी म्हणे तेन्ना ॥११०७॥

लिंब्यो जाल्ले स्थगित। खोंडचारे ह्या जागेंत।
म्हणाले गुरू हासत। सांपडली निधि ॥११०८॥

लिंब्याक आड हुंबोर। तरी लिंब्यो उड्लो बाहेर।
गुरूलि शक्ति ती अपार। कळेना तें मूढां ॥११०९॥

अब्धि[११७] मथना अवसरी। अवतरला श्रीहरि।
नांव ताज्जे धन्वंतरी। अमृतरूपु ॥१११०॥

धन्वंतरीले उपासाक। आयुर्वेदाचे वैद्यक।
भुवनेन्द्र ते निर्मापक। रसौषधी बहुत ॥११११॥

भगवान् धन्वंतरीक। गोश्रीपुरांतु एक।
देवळ निर्मिलें प्रत्येक। रचलि पूजाविधि ॥१११२॥

एकमात्र हे देवळ। भारतांतु अन्यस्थळ।
सोद्ल्यारि ना गा सकळ। भाग्य हें सारस्वतांचे ॥१११३॥

विष वैद्य म्होणु प्रतीति। श्रीभुवनेन्द्र यतिप्रति।
दंश सर्पाक हाडैताति। मंत्रबलान बरे ॥१११४॥

११७ समुद्र

नवायत मुसलमान। भट्कळांतु बहुत जन।
वास करतातित सज्जन। ते वै गुरूले भक्त ॥१११५॥

नवायताक एक्की चेल्लि। तिक्का सर्प दंशलि।
शव यात्रेच्या वेळि। पाव्ले गा भुवनेन्द्र ॥१११६॥

कन्या पित्रालें दुःख। खिन्न गा स्वाम्याले मुख।
आप्योनु त्या अविंधाक[११८]। म्हणाले दाखै शव ॥१११७॥

मणि मंत्रादि औषध। स्वाम्यांक प्रयोग सिद्ध।
सर्पा कोर्नु मंत्रबद्ध। काडैले विष ॥१११८॥

आश्चर्य पाव्ले तुरुष्क[११९]। समर्पि गुरु काणुक।
चरणारि दवोर्नु मस्तक। शिष्य जाल्ले मठा ॥१११९॥

११८ मुसलमान. ११९ तुर्कांचे.

श्री गुरुचरितामृत

श्रीमंत यवनानि। समर्पिलेल्या धनानि।
जीर्णमठु परतूनि। बांधिति भुवनेन्द्र ॥११२०॥

चर्डय्या प्रभु नामकु। वयोवृद्धु तो धनिकु।
अपुत्रकाक पिंडु एकु। दिय्या म्हणता मंत्रूनु ॥११२१॥

प्रजननांक कारणु। कंदर्पुगा प्रद्युम्नु।
तें रूप ध्यान कोर्नु। दिल्लो पिंडु प्रभूक ॥११२२॥

प्रभूक पुत्र संतान। जाल्ले श्रीहरि दयेन।
रामप्रभु नांवान। वांच्लो तो बहुकाल ॥११२३॥

औषधीय वनस्पति। जाणताति ते महायति।
वेदनाहर पल्लव तीं। अवगत गा तांका ॥११२४॥

आयुर्वेदाचें पंचकर्म[१२०]। रोग निदानाचे मर्म।
जाणूनु खरे देहधर्म। करी चिकित्सा बरी ॥११२५॥

काशीमठु वेदशाला। रोग्यांक तरी वैद्यशाला।
पूजापाठ त्रिकाला। जात्ले संस्कार बरे ॥११२६॥

कार्कळाचो श्रीमंतु। धर्मिष्ठु गा गुणवंतु।
तरी तो अपुत्रवंतु। दुःखि तो दुर्दैवि ॥११२७॥

नांव अनंत कामतु। बापै तो त्या गांवांतु।
पद्मनाभु गा कीर्तिवंतु। घराणे ते नामवंत ॥११२८॥

जन्मा आयिले संतान। तत्क्षण जात्ता प्राणहीन।
एकऽचि उरले लाहान। ते वैं पाव्ले दुरंत ॥११२९॥

१२० वमन विरेचनादि

स्वर्णालंकृत बाळाक। अपहरूनु एक्लाक[१२१]।
दागिन्याच्या[१२२] आशेक। काळ्ळो मार्नु बाळा ॥११३०॥

दुःखि तो कामत मामु। करी भुवनेन्द्रांक प्रणामु।
सांगा प्रायश्चित्त नियमु। पापीक माक्का ॥११३१॥

जाल्ले चित्त द्रवीभूत। कामती राब निर्भीत।
अशिश गुरु सांभाळीत। पाव्ले असंप्रज्ञात स्थिति ॥११३२॥

पिंड दिल्लें मंत्रूनु। काम्ति भीव्नुका म्होणु।
अनुग्रहु तो कोर्नु। उद्धरिलें तें कुल ॥११३३॥

अपरवयारि संतान। पाव्नु त्या कामतीन।
सुब्राय ह्या नांवान। आपैला प्रीतीं ॥११३४॥

१२१ सुरुवेरि. १२२ आभरण.

गुरुनांवारि दान धर्म। कर्ता अनेक पुण्यकर्म।
गुरुप्रीतिचे तें काम। कर्ता नित्य अनंतु ॥११३५॥

भुवनेन्द्र पाठशाला। गुरूक मठु बांधला।
सत्कार्या विनियोगु केल्ला। संपत्ती सर्व ॥११३६॥

भुवनेन्द्र यतिप्रवरु। संयमी न्याय निष्ठुरु।
सत्यधर्माक आधारु। वाणी तांची बरी ॥११३७॥

गोश्रीपुरांतु एक्लो। सर्वाधिकारि पाकळो[१२३]।
लेख पत्रांतु चुक्लो। देव्ळा विषयीं ॥११३८॥

सत्यधर्माकऽचि जय। येत्ले आम्हि न्यायालय।
ह्या विषयांतु निर्भय। यती भुवनेन्द्र ॥११३९॥

१२३ वचक

श्री गुरु चरितामृत

आंग्लु तो न्यायाधीशु। स्वाम्यांचेरि भक्ति विशेषु।
जाल्लो तेन्नाचि परवशु। भक्ति भावें ॥११४०॥

स्वाम्यालि वादसरणि। आइकलो तो कान्नानि।
खरें[124] खोटें समजूनि। दिल्लो न्याय स्वाम्यां ॥११४१॥

गुरुद्रोही नारायणु। मणेल्चो ब्राह्मणु।
आइलो गुरूक शरणु। दिल्लि क्षमा गुरून ॥११४२॥

तीर्थयात्रा निमित्त। सकल परिवारयुक्त।
चाल्ले स्वामे त्वरित। काशी कडे ॥११४३॥

तीर्थाटन हें साधन। कळैले हे सकल जन।
सत्संग पाठ प्रवचन। करीऽत ते संचरी ॥११४४॥

१२४ फाट्टि बद्ध.

पालकी आंदोलिका। भेरि नगारि पताका।
शंखादि प्रयाण संज्ञिका[१२५]। चाल्या गा बरी ॥११४५॥

विरागि योगि बैरागि। असंख्यात विषयत्यागी।
यात्रेंतु जाल्ले सहभागि। भाग्यवंत ॥११४६॥

पाव्ले स्वामें वारणासि। भर्ले ते विद्वांस विदुषि।
विद्येचें माहेर[१२६] काशी। म्हणता हें सत्य ॥११४७॥

ब्रह्मविद्या प्रबोधिनि। भारत धर्म संवर्धिनि।
संयुक्त जाव्नु सभेनि। दिल्ले येव्कार[१२७] स्वाम्यां ॥११४८॥

श्रीचिं भाषा प्रौढिमा। आइकता पाव्लिं दिग्भ्रमा।
विद्या वारुधीक चंद्रमा। मुनी म्हणे पंडित ॥११४९॥

१२५ सकेत. १२६ कुळार. १२७ स्वागत.

जाल्ले पंडित शरणागत। बिन्नह[१२८] बरैताति स्वहस्त।
नमस्कार कोर्नु समस्त। म्हणे धन्य आम्मि ॥११५०॥

दक्षिणा परतले स्वामि। संचरीत तीर्थग्रामि।
मुंबापुरीक सुगमी। पाव्ले गा यतिराय ॥११५१॥

बाणगंगेंतु स्नानविधि। कर्तीति ते तपोनिधि।
माधवेन्द्राल्या सन्निधि। राव्ले स्व मठांतु ॥११५२॥

मनवळले वसुपुराक। पुरातन स्व मठाक।
केशवेन्द्र सन्निधानांक। चाल्ले श्रीगुरुराव ॥११५३॥

हरिगुरु सेवेंतु देह। वापरलां निस्संदेह।
स्वामि निर्ममी निर्मोह। स्मरी हरिपाद ॥११५४॥

१२८ विनंति.

देहतरी जर्जरित। बुद्धि मन उल्लसित।
निष्काम कर्मांतु रत। लोकोपकारि ॥११५५॥

सर्वांगीण उन्नति। जनां मेळ्का सुख शांति।
ह्या चिंतनेंतु यति। मग्न गा सर्वकाळीं ॥११५६॥

निरोगि सुदृढ समाज। जीवोत्कर्ष ओज।
वेदविज्ञानाचे तेज। जाव्वों एकत्रित ॥११५७॥

जग हे मिथ्या म्होणु। सदा आलस्य पांगरूनु।
आलस्यऽचि अध्यात्म जाण्णु। न करी जन्म व्यर्थ ॥११५८॥

भोऽग्गा जीवन सौंदर्य। वाढो सद्गुण औदार्य।
आचार्य सिद्धांत अनिवार्य। समजूका बरें ॥११५९॥

अशिशं योजना स्वाम्यालि। प्रेरणा वेदव्यासालि।
त्या कारणी निवडली। भूमि वसुपुराचि ॥११६०॥

आपलि शक्ति आणि तपोबल। पुण्य आणि विद्याबल।
दीव्नु समाज प्रबल। कोर्का म्हणताति स्वामि ॥११६१॥

कटपाडीचे नायक। गुरुभक्त सांपत्तिक।
आयुर्वेद वैद्यक। प्रीति गा तांका ॥११६२॥

तांच्यांत्लो प्रमुखु। नांव तिम्मप्प नायकु।
गुरूलो पादसेवकु। जाल्ली ताक्का गुरुकृपा ॥११६३॥

शिक्किले गुरून वैद्यक। कटपाडीच्या घराण्यांक।
जाल्ले ते गुरुकृपेक। विशेष पात्र ॥११६४॥

भुवनेन्द्राल्या नांवान। आसवारिष्ट करून।
बहुकाल चलैले नायकान। लोकसेवा ॥११६५॥

राज महाराज बहुत। स्वाम्यांक शरणागत।
शास्त्रज्ञानी पंडित। शिष्य ते श्रींचे सदा ॥११६६॥

सारस्वतांचि महति। प्रवृत्ति आणि प्रगति।
हाज्जि समग्र माहिति। जाण ते स्वामे एक्ले ॥११६७॥

मुद्दण्ण नामक विप्राक। तीर्थहळ्ळि वासीक।
सांग्ला स्वामेन सकळीक। उत्पत्ति सारस्वतांचि ॥११६८॥

तलचेरि वासुदेवु। कवी तो महानुभावु।
मूलिकेचो देवु। पाव्ला कैं ताक्का ॥११६९॥

गौडसारस्वत आख्यान। वार्धिक षट्पदी रूपान।
सुंदर कर्णाट भाषेन। रचिला गा ताणे ॥११७०॥

भुवनेन्द्रालि कीर्ति। वर्णिता ती दिव्यकृति।
सर्वज्ञु गा तो यति। भुवनभाग्य ॥११७१॥

घडली गा ही घटना। काशींतु आइका जना।
भुवनेन्द्र काशींतु जेन्ना। राव्ले बहुकाल ॥११७२॥

एक्लो मारवाडीं धनी। बस्लो येव्नु गुरुचरणि।
नमस्कार कोर्नु धरणी। लोळता बोब मारी ॥११७३॥

भयंकर उदरशूल। भोग्तालों सर्वकाळ।
माग्तां दंशि मृत्युव्याळ। राक गा गुरुदेवा ॥११७४॥

करुणी तो गुरुराय। दित्ताति ताक्का अभय।
देवाक मागूनु सदय। दिल्लो प्रसादु दिव्य ॥११७५॥

प्रसाद सेवि त्या क्षण। राब्लि दूकि संपूर्ण।
मारवाडि अपार धन। समर्पि स्वामिराया ॥११७६॥

केल्लें धन निराकारण। सांग्ले ताक्का प्रेमान।
धन्वंत्रीत्या दयेन। वांच्लोरे खरे ॥११७७॥

आम्हि संन्यासी जन। उपेक्षिताति धन मान।
भक्तीन प्रसाद ग्रहण। केल्ला तूं धन्य ॥११७८॥

काई तरी सेवा। स्वीकारिरे गुरुदेवा।
नवरत्नाचि माळा नवा। घे करी उद्धार ॥११७९॥

रत्नमाळा ती घेव्नु। लाग्च्या पुरोहिताक घाल्नु।
दोघांक एक्डे कोर्नु। हास्ता गुरू निस्संगी ॥११८०॥

एक्कदा भुवनेन्द्रयति। कार्कळ देव्ळां बसंलेति।
दरिद्र एक बाळा प्रति। जाल्लि तांची कृपा ॥११८१॥

नांव ताज्जे जनार्दनु। काई नेण तो अज्ञानु।
गुरू भविष्य समजूनु। केल्लि कृपा ताज्जेरि ॥११८२॥

दिल्लें ताक्का शिल्पज्ञान। तंत्रसाराक अनुसरून।
कर्रेऽ शिला कोरूनु। जन्ना जारे शिल्पि ॥११८३॥

तेंचि रेंजाळ घराणे। शिल्पशास्त्रांतु होडपणे।
मिरवताति विचक्षणे। गुरुकृपा ती होडि ॥११८४॥

कार्कळाचे शिलास्तंभ। शिल्प शास्त्राचे प्रतिबिंब।
थंचाण कीर्ति आरंभ। जाल्लो राष्ट्रशिल्पि ॥११८५॥

रेंजाळ शेणै गोपाळु। उत्रांतु बहु मोवाळु।
गुरुकृपाचो महाफलु। भाग्य गा समाजाचें ॥११८६॥

मंजेश्वराचि महोन्नति। कर्ता भुवनेन्द्र यति।
असो त्यां सदा प्रणति। सद्गुरुरायां ॥११८७॥

पडुबिद्रेक उत्सवमूर्ति। शिरालींतु गणपति।
महामायेक प्रतिष्ठिति। गुरुराय आमुचे ॥११८८॥

कुंबळेचे वैदिक। महामायि उपासक।
पाव्ले थैंक अचानक। भुवनेन्द्रतीर्थ ॥११८९॥

श्रीचक्र प्रतिष्ठापन। पूजेचे विधि विधान।
शिकले थंचे द्विजगण। स्वाम्यां कडे ॥११९०॥

नगर नामक संस्थान। सर्वत्र कीर्तिमान।
थंचे वैष्णव सज्जन। सारस्वत प्रमुख ॥११९१॥

भुवनेन्द्रांक आमंत्रण। दित्ताति तीं सज्जन।
शिष्यांचेरि प्रेमान। स्वीकार्ता गुरू ॥११९२॥

श्रीभुवनेन्द्र जगद्गुरु। शिष्यकोटीचो कल्पतरु।
इन्द्र समान सुरवरु। उतरलो नगरा ॥११९३॥

काई स्मार्त ब्राह्मण। व्यर्थ मत्सराचे कारण।
केल्लें होड प्रकरण। न्यायालयांतु ॥११९४॥

हे तरी सामान्यस्वामि। जगद्गुरु हे हंगामि[129]।
एकांगि खरे जंगमो। जगद्गुरु कशिशं? ॥११९५॥

घोषिले न्यायालयान। जगद्गुरु हे वैभवान।
संचारा अधिकारपूर्ण। दिल्ला हांका पूर्वि ॥११९६॥

कराति मान्य सर्व। व्यर्थगा तुमचे गर्व।
असले गुरूचि अपूर्व। करा मान्य सर्व ॥११९७॥

ह्या निर्णया उपरांत। स्वामी दिग्विजय करीत।
मंजेश्वरा पाव्ले त्वरित। नरसिंहा कडे ॥११९८॥

हे भद्रनरसिंहा। ब्रह्मादिवंद्या परब्रह्मा।
तुजी लीला नकळे रमा। आम्हि मंद मशक[130] ॥११९९॥

१२९ तात्कालिक. १३० मूसु.

हे अनंतेश्वरा। अनंतासना रमावरा।
तूंचि हें जंगम स्थावरा[१३१]। नियंत्रकू देवा ॥१२००॥

अशिश वर्णिता श्रीहरि। नमस्कार घात्ले बरी।
मनांतु संकल्प करि। सहस्र कलशीं ॥१२०१॥

अभिषेकु करीन म्होणु। सिद्धता करिता पूर्णु।
आंतकु गा क्षणोक्षणु। जाल्ले क्षीण स्वामी ॥१२०२॥

स्वामेलो निश्चयु प्रबलु। जाइना केन्नाही शिथिलु।
येव्याक तो भित्ता कालु। स्वाम्यां लागिग ॥१२०३॥

कलशाभिमंत्रण जाल्लें। गुरुवर्यां कळैंले।
वैदिक सर्वै जमले। देवकार्या ॥१२०४॥

१३१ चल, अचल.

खरें हें महाक्षेत्र। कर्ता दंडन हें गात्र।
ह्या पात्राचें सूत्र। आस्स त्या देवा कडे ॥१२०५॥

कलशाक एकु नमस्कारु। कर्ता तो यतिवरु।
दीर्घदंड हजारु। एक्शां वैऽरि आट ॥१२०६॥

लक्षोपलक्ष जन। दर्शिलें गुरूलें पण।
भक्ति श्रद्धेन नयन। जाल्लें गा अश्रुपूर्ण ॥१२०७॥

देवा खातीर हें देह। ना ताज्जेरि अतिमोह।
व्यास चरणारि स्नेह। सुदृढले स्वाम्यां ॥१२०८॥

तिरुवनंत हें पुर। केरळाचे महानगर।
थंचे सर्व नृपवर। भुवनेन्द्रतीर्था ॥१२०९॥

मान्ताति गुरुभावान। गुरुलि आज्ञा संपूर्ण।
कर्तांति भक्ति प्रेमान। आज्ञाबद्ध सर्व ॥१२१०॥

आलप्पीचा देव्ळाक। वेंकटेश तिरुमलाक।
गोश्रीचान आय्यिल्याक। दिल्ली भूमि रायान ॥१२११॥

अनंतनारायणपुर। हे नांवऽचि दवर।
अशिश कर्तांति गुरुवर। आज्ञा नृपतीक ॥१२१२॥

गोश्रीच्या देव्ळाक। नियम दिल्लें वैधानिक।
तंत्रसारोक्त पूजेक। घटनावळी बरी ॥१२१३॥

वैदिकाक शिकवण। नित्योत्सवु पूजन।
ब्राह्मणांक समाराधन। रक्षण अनाथांक ॥१२१४॥

देव्ळाचे महाजन। म्हणूनचि अधिकारि जन।
ते देवाले भक्तगण। सेवक समजा ॥१२१५॥

नाना रीति रिवाज। पालन करा सहज।
आदर्श आमुचे समाज। घ्यारे अशिशं कीर्ति ॥१२१६॥

संदेशु दीव्नु स्वामे। धाड्ताति रायसू क्रमे।
मंजेश्वरा आइले प्रेमे। बहुत शीघ्र ॥१२१७॥

त्रिकालज्ञ गा योगीन्द्र। स्वामी श्रीभुवनेन्द्र।
ब्रह्मरुद्रादि इन्द्र। उळिदिताति[132] तांका ॥१२१८॥

दिवरात्रीचो संचारु। करीत समाजोद्धारु।
श्रीभुवनेन्द्र तो कल्पतरु। क्षीणलो गा देही ॥१२१९॥

१३२ आप्पैताति

परंपरेचे रक्षण। कोर्चाक शिष्यग्रहण।
कोर्का हें दिसले क्षण। जाल्ले गुरु प्रवृत्त ॥१२२०॥

"महाले" ह्या घराण्याचे। रहवासी ते गोश्रीचे।
गिरिराय ह्या नांवाचे। लाभले पुण्यपुरुष ॥१२२१॥

इस्वि आठ्रांशें साहत्तर। संवत्सर नाम धात्र।
ज्येष्ठशुद्ध दशमिवर। दिल्लि त्या चरमदीक्षा ॥१२२२॥

वरदेन्द्रतीर्थ नाम। महापंडित उद्दाम।
वेदवेदांगी निस्सीम। पाव्ले ख्याति आइका ॥१२२३॥

महाक्षेत्र मंजेश्वर। त्या स्थळी शिष्य स्वीकार।
कोर्नु श्रीभुवनेन्द्र। पाव्ले वसुपुरा शीघ्र ॥१२२४॥

श्रीमद् भुवनेन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, बसरूरु (द.क.)

श्रीमठाचो जीर्णोद्धारु। करी भुवनेन्द्र गुरु।
वेंकटेशालो साक्षात्कारु। जाल्ला तांका खरें ॥१२२५॥

शक अटराइंशि आट। मार्गशीर्षि पाड्वो श्रेष्ठ।
व्यय संवत्सरांतु नीट। पाव्ले विष्णुपदांतु ॥१२२६॥

श्रीकेशवेन्द्राल्या सन्निधि। लाग्गीचि गा भुवनेन्द्रनिधि।
शिष्यकोटीचे पुण्यनिधि। जमला ते एक्डे ॥१२२७॥

दर्शिता तीं वृंदावन। सिद्धि गा मन कामन।
नमस्कार करी भक्तीन। ध्वंसरे सकल पाप ॥१२२८॥

प्रातःकाल उठानु। भुवनेन्द्राले नांव घेव्नु।
वृत्ति ती कर्तव्यम्होणु। कोरूका श्रद्धायुक्त ॥१२२९॥

भुवनप्राणु हनुमंतु। भुवनेन्द्र मेळ्ळेति तांतु।
व्याप्त ते सर्वातु। प्राणा बर्शि ॥१२३०॥

भुवनेन्द्रालि दिव्यभेटि। घड्तलि "प्ल्यान्चीटि" [133]।
कामती घराण्या साटि। जात्लें प्रकट तांका ॥१२३१॥

पद्मनाभ कामति। कुक्कुंदूर ताज्जे वसति।
वकीलु तो पाव्ला कीर्ति। न्यायवादी म्होणु ॥१२३२॥

भुवनेन्द्र सर्वशक्त। "प्ल्यानचीटींतु अभिव्यक्त।
ओळखताति हे भक्त। शक्ति संन्यास्यालि ॥१२३३॥

वेदांत विज्ञान एक। जाल्यारि लोकासुख।
परमार्थाक पूरक। आस्का खरे प्रपंचु ॥१२३४॥

१३३ स्वरूप देहान स्वाम्यानि दिव्चो बरहरूपि सदेशु.

आर्ष आणि आधुनिक। सारासाराचे विवेक।
सोडूनई ऐहिक। साध्का इह पारत्रिक ॥१२३५॥

भुवनेन्द्रालें महायत्न। तेंचिगा वरदेन्द्ररत्न।
तें समजूंक प्रयत्न। करूयां यथामति ॥१२३६॥

श्रीभुवनेंन्द्राल्या उपरांत। वरदेन्द्रतीर्थ महांत।
विराजिले धर्मपीठांत। पारंगत तें शास्त्रां ॥१२३७॥

दाहा वर्ष काशींतु। शिक्कूनु शास्त्र वेदांतु।
सर्व पंडित जगांतु। मिरविलें एकमात्र ॥१२३८॥

सर्व भाषा सरस्वति। जाल्या तांका वशवर्ति।
सकल कलेचि स्फूर्ति। स्फुरतली तांका ॥१२३९॥

मंत्रांचे महदर्थ। तंत्रसाराचे सर्वार्थ।
यंत्रादि जडपदार्थ। जाल्या त्यां वशीभूत ॥१२४०॥

व्यासमहर्षीलें ज्ञान। वाल्मीकिलें रसाळपण।
कालिदासालें काव्यगुण। एकवटी गुरू कडे ॥१२४१॥

पूर्णप्रज्ञ सिद्धांत। जाल्ला स्वाम्यांक करगत।
जग हे सत्यपरमार्थ। जोड्कारें हांगा ॥१२४२॥

कर्मांतु कौशलपण। साध्का कोर्नु कृष्णार्पण।
आस्का सदा सावधपण[१३४]। कर्म मार्गा ॥१२४३॥

कर्मांतु ना होड सान। अस्स म्हणतालें मूढजन।
नेण तें कर्मकरण। देवाधीन म्होण्णु ॥१२४४॥

१३४ जागरूकता.

श्री गुरुचरितामृत

वेदांतहीन विज्ञान। आंधळेरे खरें पण।
विज्ञान रहित वेदज्ञान। पांगुळेरे बा ॥१२४५॥

स्वाम्यालीऽचि ही उक्ति। तांका सर्वांतु आसक्ति।
अंतरंगांतु विरक्ति। बसल्यागा नीट ॥१२४६॥

पूजा पाठादि जात्तरि। व्यर्थ विश्रांति न करी।
जगाचे नाना वैखरि। समजारें बरे ॥१२४७॥

आपुलो जीवनोपायु। आपणे चि सोच्चो न्यायु।
व्यर्थ कोरुनय्यि आयु। अमूल्य गा हें ॥१२४८॥

जेवण खाण भोवण। कर्तांति मृग पशु जाण।
शिक्कारे मनुष्य पण। यत्नें आणि प्रयत्नें ॥१२४९॥

ब्राह्मण कर्तीति भोजन। उलैताति भण भण।
खरें जीवनाचे शिक्षण। ना ते तांका ॥१२५०॥

अध्यापन आणि अध्ययन। ब्राह्मणाचे हे लक्षण।
आत्ता पड्ला विस्मरण। उरलें पारण[१३५] एक ॥१२५१॥

शिकूनु यंत्र तंत्र। जाव्का ब्राह्मण स्वतंत्र।
परावलंबन परतंत्र। पापभोग ॥१२५२॥

अशिश म्होण्चे स्वामि। त्या काळीं प्रतिगामि[१३६]।
तरी स्वातंत्र्य प्रेमी। मुनि वरदेन्द्र ॥१२५३॥

कुशाग्रमति यती। भारत वर्षांचि प्रगति।
खरें तें वांछिताति। उन्नति धार्मिकांलि ॥१२५४॥

१३५ व्रतांत्याचे जेवण. १३६ लोक विरुद्ध

स्वामि स्वतः प्रगतिपर। ज्ञान विज्ञानाचे आगर।
वेद वेदांग प्रकार। अवगत तांका ॥१२५५॥

आयुर्वेदाचे संशोधन। ज्योतिष्याचे अगाधज्ञान।
स्वतः पंचांग रचन। करी स्वामिराय ॥१२५६॥

छायाचित्र भावचित्र। विलक्षण ज्ञान तैलचित्र।
निर्माण तंत्रांतु पात्र। स्वामि घेत्ताति पळे ॥१२५७॥

ग्रंथांतूइ ना अनुकरण। स्वतः अनुभवपूर्ण।
सर्वांतु गाढ शोधन। कर्तालें स्वामि ॥१२५८॥

प्रत्यक्ष अनुमान आगम। प्रमाण हें तीनि सुगम।
सिद्धांताचे हे मर्म। जाणतले गुरु ॥१२५९॥

सिद्धांत आणि प्रयोगु। एकवट्ल्यारीचि योगु।
त्या साधनेचो भोगु। त्यागी योगी जन ॥१२६०॥

फल ताज्जे लौकिकाक। ऐहिक सुख भोगाक।
विज्ञानि आणि योगि ते एक। निष्कामि गा दोघें ॥१२६१॥

बिगडले[१३७] तरी यंत्र। सम कोर्चें कार्यतंत्र।
जाण्तलें स्वामे स्वतंत्र। साधना बळें ॥१२६२॥

आइका ही उदाहरण। कुंदापुरांतु स्वामेन।
तंतु संदेशाचें साधन। केल्लें व्यवस्थित ॥१२६३॥

तंतु संदेशयंत्र[१३८]। बिगडूनु जाल्लें अतंत्र।
यंत्राचि खूबि स्वतंत्र। न जाणे कोणि ॥१२६४॥

१३७ वाईट जाव्चें. १३८ टेलिग्रामाचे.

यंत्र हाडैलें स्वामेन। केन्नाइ पळैनि डोळचान।
यंत्रावयव सोड्वान। निरीक्षितातित ॥१२६५॥

स्वाम्यालि सुप्त शक्ति। रचनात्मक दिव्ययुक्ति।
सुचलि ताज्जि निष्पत्ति। जोडले तंतु ॥१२६६॥

तंतुवाहक संदेशु। मेळ्तां पाव्ले संतोषु।
अधिकारि तो विशेषु। पाव्लो कार्यालया ॥१२६७॥

आंग्लेयु तो अधकारि। स्वाम्यांक साष्टांग करी।
तुम्हि सर्वज्ञ निर्विकारि। अलौकिक ज्ञानी ॥१२६८॥

छायाग्राहक[१३९] साधन। संयुक्ताक्षर[१४०] जोडण।
आणि ताज्जे मुद्रण। स्वामे करिति स्वयं ॥१२६९॥

१३९ फोटोग्राफि १४० कार्योसिग

बृहन्मंत्र संहिता। प्रकटिल्या स्वामेन स्वतः।
आपणऽचि अक्षर जोडिता। स्वयं छापी ॥१२७०॥

रक्षा पत्रका शिवऽण[१४१]। कर्तालि स्वयं आपण।
हे रात्रिचे कर्मकरण। पूजा उपरांत ॥१२७१॥

स्तोत्रपाठाचे मुद्रण। कोर्नु ताज्जे वितरण।
सर्वांनि कोर्का पठण। दित्ले विना मूल्य ॥१२७२॥

मठाचे सर्व सेवक। जात्ले स्वाम्या सहायक।
ईसायिचे[१४२] प्रचारक। जात्ले गा तटस्थ ॥१२७३॥

छायाग्राहक सगळी। नानाकार वेगवेगळी।
संग्रहांतु दवर्तली। स्वामिराय ॥१२७४॥

---

१४१ बुकबाईंडिंग, १४२ क्रिस्ती मताचे

स्वामेलें संगीत ज्ञान। अनन्य साधारण।
वीणादि तंतुवादन। जाण्तले गुरुराय ॥१२७५॥

वेदज्ञान नादज्ञान। गाणेंचि लक्ष लक्षण।
स्वामे ओळखतात्ति पूर्ण। स्पष्ट रूपे ॥१२७६॥

वैदिक धर्माचो प्रचारु। निष्ठापूर्वक आचारु।
वोर्का म्होणु गुरुवरु। संकल्पिता मनीं ॥१२७७॥

बसरूरु स्व मठांतु। मंजेश्वरादि क्षेत्रांतु।
कार्कळ देव सन्निधींतु। निर्मिलि पाठशाला ॥१२७८॥

अनंतराम भागवतु। संगीतांतु निष्णातु।
चुक्लो ताळलयांतु। ओळखलें स्वामि ॥१२७९॥

स्वाम्यांगेले लय ज्ञान। ताळांचे कालमान।
चोव्नु हें भागवतान। केल्ले साष्टांग तेन्ना ॥१२८०॥

ना आता उपलब्ध। स्वाम्याले संगीत बंध।
स्वरयुक्त रचिलेले छंद। जाणतलो एक्लो ॥१२८१॥

तंतुवादनांतु पटु। गिरिनामकु उद्धटु।
स्वर प्रस्तार ताक्का नीटु। शिकविला गुरूनें ॥१२८२॥

आंग्ल भाषेचि पत्रिका। हाडैतले प्रत्येका।
वाच्चूनु लोकवार्तिका। समजी वर्तमान ॥१२८३॥

स्वाम्यालें ग्रंथालय। अपूर्व ग्रंथ संचय।
नाना भाषा आणि विषय। सूची पत्र सहित ॥१२८४॥

दक्षिणोत्तराचि भाषा। कळ्तलि स्वाम्या अशेषा।
तुरुष्क आणि विदेशा। ती सुदा जाण गुरू ॥१२८५॥

मलेयाळी कोंकणी तमिळ। हिंदी गुजरी बंगाळ।
जाणूनि लिपि वेळोवेळ। वाच्तली नित्य ॥१२८६॥

इंग्लीष ल्याटिन् सहित। जर्मनि जपानि ग्रंथ।
स्वाम्यालें ग्रंथालयांत। जाल्लां संग्रहीत ॥१२८७॥

स्वामे कर्तालें अध्ययन। विषय संग्रह टिप्पणीन।
बरैला स्वहस्तान। अन्यान्य भाषा ॥१२८८॥

आयुर्वेदाचे औषध। कोर्चातु स्वयं सिद्ध।
भस्मादि रसौषध। कर्तालें स्वयं स्वामे ॥१२८९॥

KONKANI LIBRARY

तंत्रसार कृष्णामृत। स्वाम्यांक मुखोद्गीत।
स्मृति मुक्तावळि समस्त। येत्लीं तोंडा तांका ॥१२९०॥

एक संधिग्राही[१४३]। सदा ते पुस्तक स्नेहि।
परत चोइनाति एकही। संग्रही स्मरणेंत ॥१२९१॥

चित्रकलेंतु निपुण। चित्रांतु नाना वर्ण।
सम्मिश्र कोर्नु पूर्ण। जीवंत करिती चित्र ॥१२९२॥

वर्ण आणि तैल चित्र। गुरू आणि देवाले मात्र।
मेळ्चें ना अन्यत्र। मेळ्तलें मठ संग्रहा ॥१२९३॥

लीला सांगूनु सर्वां। न सांगे स्मरणेंतु ऊर्नां।
जाणतल्यांकय्यिं कळेना। हांव तरी मूढु ॥१२९४॥

श्री गुरुचरितामृत

१४३ एकवेळा आइकलारि विसर्नींत

उन्माद श्वास वातादि। बहुकालाचे घोरव्याधि।
असाध्य मेह वृणादि। ओक्खदां करी शमन ॥१२९५॥

ही कीर्ति वरदेन्द्रालि। कार्कळि आणि केरळी।
आत्तैं सांग्ताति जाण्तली। गुरुली महिमा ॥१२९६॥

सोहिरा भट्ट वैदिक। तांका शिक्कले वैद्यक।
भयानक रोग अनेक। केल्लां गुऽण भट्टाने ॥१२९७॥

निगमागमाचे सार। ताज्जे समग्र विस्तार।
सर्व जाण्तलें गुरुवर। वरदेन्द्र आमुचे ॥१२९८॥

चौषष्ट कलेचो आगरू। विजयीन्द्र जगद्गुरू।
वरदेन्द्र तांचो अवतारु। समजारे बरे ॥१२९९॥

जपतपाचे अनुष्ठान। पूजेचें विधि विधान।
नाना पुष्पांचे अलंकरण। आभरणयुक्त ॥१३००॥

पूजा तंत्रसारोक्त। भावपूर्ण मंत्रोक्त।
पूजा अवसरी एकांत। जलबिंदुगा नयनी ॥१३०१॥

उपचार ते षोडश। स्वीकरी रघुपतिव्यास।
स्वबिंबदर्शन विशेष। घड्तलें गुरुरायां ॥१३०२॥

पूजा अंतीं नमस्कारु। तो तरी विशेष प्रकारु।
ना ताक्का लेक्काचारु। करी मनसो इच्छ ॥१३०३॥

स्वीकार्नु तीर्थप्रसादु। कोर्चाक तो पापछेदु।
वांटी शिष्यांक सुबोधु। तीर्थगंध ॥१३०४॥

नाना भक्ष्य भोज्य। षड्रसयुक्त नैवेद्य।
स्वीकरी दध्यादि आज्य। भिक्षा रुपी ॥१३०५॥

यतिवर्यालें भोजन। खरें तें एक यजन।
जाणताति हें सज्जन। कुजन नेणे ॥१३०६॥

पशु पक्ष्यांचेरि यति। कर्तीति पळे बहुप्रीति।
खगमृगादि पोस्लेंति। प्राकारीं मठाच्या ॥१३०७॥

बाळ भुग्र्यांचेरि प्रेमु। आस्स स्वामेंक असीमु।
खेऽळ मांडूनु संभ्रमु। कर्तीति बाळां ॥१३०८॥

नाना दुर्मिळ फलादि। भुग्र्यांक दित्तले आदि।
मांडोचाक्ल्यो कऽरो बूंदि। करंडचांतु भोर्नु ॥१३०९॥

गंभीर तरी विनोदि। वरदेन्द्र महानिधि।
सामान्य लोकवादी। निंदी ते नगण्य[१४४] ॥१३१०॥

स्वाम्यालि कविता शक्ति। नाना शब्दाचि निष्पत्ति।
वृत्त वैविध्य छंदोगति। अचिंत्य गा तांचि ॥१३११॥

श्लोकु शार्दूल विक्रीडित। चक्रबंधांतु बंधित।
नानार्थ सुबोधित। सुंदर गा पदबंध ॥१३१२॥

मालाबंध नागबंध। नाना अपूर्व छंद।
श्लोकार्थाचो सुगंध। पंडित ते जाणति ॥१३१३॥

बुध्वोंतु सुब्रायपयिय। स्वाम्यांक आप्तसहायि।
दुर्बळ्यांक विद्यादायि। समर्थु न्यायशास्त्रा ॥१३१४॥

१४४ लेक्काक ना

वाणिज्य सस्थांचि वृद्धि। पाठशाला संबंधि।
स्वाम्यालि कृपासिद्धि। जाल्लि ताक्का शीघ्र ॥१३१५॥

स्वाम्यालि न्यायपरता। उदाहरणेक सांग्ता।
मऽठु हो आप्लो म्हणता। ब्राह्मणु एक्लो ॥१३१६॥

गेल्लो न्यायालयाक। जयु मेळ्ळो श्रीमठाक।
प्रश्निलें परत न्यायाक। उच्छालयिं ॥१३१७॥

ब्राह्मणु मागता स्वाम्या कडे। जय माक्काचि पुढे।
मेळै तश्शि देवा कडे। मागणि करा स्वामि ॥१३१८॥

मेळ्ता जय सत्याक। राब तू निर्भीक।
घे पुष्प गंधादिक। म्हणाले गुरु हसन्मुखि ॥१३१९॥

ब्राह्मणु तो हरलो। तरी मठांतूचि उरलो।
स्वाम्यानि ताक्का सांभाळलो। रक्षणा दीव्नु ॥१३२०॥

न्हाण खाणांतु अधिकु। हनुमंतु भट्टु एकु।
आप्पोनु ताक्का प्रत्येकु। भट्टा योरे हांगा ॥१३२१॥

त्रिफलादि धन्वंतरी। आस्स तैल बहुपरी।
कोर्या तैलाभ्यंग तरी। सिद्धु की सांग ॥१३२२॥

संतोषु माक्का न्हाण। हूनुद्दाक जाय आटभाण।
कृपा केल्यारि स्वामेन। हनुमंतु हो सिद्धु ॥१३२३॥

जाल्लि सिद्धता न्हाणाचि। आटभाण उद्काचि।
फजीति हनुमंताचि। नाक्करे बापा ॥१३२४॥

बुड्डोनु काळ्ळा तेल्लांतु। कथकथी उद्कांतु।
उड्ता नांता हनुमंतु। हासती गुरुवर्य ॥१३२५॥

हनुमंतालि म्हणि आइका। शीतोदक बर्सुनका।
सोव्ल्यारि सोडूनका। घाला उदक उष्ण ॥१३२६॥

पत्राडो एकु लोळो। हनुमंतु एक्लो खात्तालो।
तांथूइ मेळ्ळारि मराळो। सोड्तालो कशिश? ॥१३२७॥

खावैताति स्वामे ताक्का। हनुमंतान तृप्ति पाव्का।
सक्डां आनंदु जाव्का। हेतु तो स्वाम्यालो ॥१३२८॥

उब्बटचो एक्षे चाळीस। "वैखं" जनार्दनाक विशेष।
खावैलि मंडळि अशेष। पाव्ली आश्चर्य ॥१३२९॥

आशीर्वादु स्वामेले। भक्तिपूर्वक घेत्तिल्ले।
खरें धन्य जात्ताले। दृष्टांत हे आइक ॥१३३०॥

पंडितोत्तम पुराणीक। भट्कळी नरसिंह नामक।
आइलो भक्तीन भेटीक। स्वाम्या कडे प्रेमे ॥१३३१॥

पूतु रामकृष्णाक घेव्नु। पादपूजा ती कोर्नु।
आशीर्वादु ते मागूनु। वंदी ते पिता पुत्र ॥१३३२॥

निय्याळ्नु रामकृष्णाक। गुरु म्हणे पुराणिकाक।
येत्लो पुढे प्रकाशाक। बाळु हो कीर्तिवंतु ॥१३३३॥

त्यागी योगि प्रसिद्धु। वाग्मि चतुरु प्रबुद्धु।
ज्ञान भक्तीन समृद्धु। हो वैष्णवाग्रणी ॥१३३४॥

व्यासरघुपतीोले भृत्य। सांगताति भविष्य सत्य।
पुराणिकालो अपत्य। जाल्लो पुढे विरक्तू ॥१३३५॥

तेचि गा इंदिराकांत। लोकविख्यात शास्त्रांत।
जीवोत्तम मठ पीठांत। विराजिले आइक ॥१३३६॥

मध्वमताचो प्रचारु। वैष्णवालो सदाचारु।
केल्लो सर्वत्र गा प्रचुरु। इंदिराकांतानि ॥१३३७॥

तांचे शिष्यांतु अनेक। पाव्ले पांडित्य विवेक।
इंदिराकांताल्या चरणाक। वंदूया भक्तीने ॥१३३८॥

असंख्यात देव मंदिर। केल्लें स्वाम्यानि जीर्णोद्धार।
साधकांक उपदेश सार। दिल्लां मंत्रसहित ॥१३३९॥

समजूनु अधिकार भेदु। केल्ला तांका मंत्रबोधु।
सुजीवि स्त्रीपुरुष साधु। जाल्ले धन्य अगणित ॥१३४०॥

"वासुदेव सर्वमिति"। गीतेचि दिव्य उक्ति।
अनुभवांक आइल्या यती। वरदेन्द्रतीर्थां ॥१३४१॥

देह आणि आत्मु वेगळो। जो समजता तो मोकळो।
डाक्टरु एक्लो हे शिक्लो। गुरुराया कडे ॥१३४२॥

स्वाम्यालि पूजा त्रिकाल। चम्कतली ती सकाल।
उठले स्वामे प्रातःकाल। ताप्ता देह तापान ॥१३४३॥

डाक्टरु मण्ता स्नान नाक्का। तापु वाड्तलो तुमका।
स्वस्थ विश्रांति घेव्का। सांग्ता हात जोण्णु ॥१३४४॥

तापु आइला देहाक। ना संबंधु आत्माक।
अशिशं म्हणता स्नानांक। चाल्ले श्रीगुरुराय ॥१३४५॥

तापु जड दंडाचेरि। दंड कांपी थरथरी।
पूजादिकां उपरि। चड्लो तापु स्वाम्यांक ॥१३४६॥

चोइता हो टाक्टरु। लाग्लो ताक्का थरथरु।
गुरु हो तत्त्वपरु। रायु हो ज्ञान्यांगेलो ॥१३४७॥

गोश्रीचे सर्व नृपति। मान्ताले वरदेन्द्रयती।
राजगृहाचि विनंति। आइलि श्रीस्वाम्या कडे ॥१३४८॥

सहस्रकुंभाभिषेक। तांच्या आराध्य देवाक।
स्वाम्यान केल्ला अनुग्रहाक। जाल्ले पात्र नृपति ॥१३४९॥

प्लवंग संवत्सरांतु। आर्धोदय कालांतु।
पूजा जपादि कार्यांतु। जाव्का निमग्न म्होणु ॥१३५०॥

रामेश्वराक प्रयाण। कोर्चा योजितां क्षण।
आइकूनु सिद्धतापूर्ण। करी गा शिष्यकोटि ॥१३५१॥

अनंतशयनाक पाव्ले। राजघराण्या हें कळ्ले।
राजमर्यादेन सगळे। दिल्लो येव्कार स्वाम्यां ॥१३५२॥

भेट्ले गुरु पद्मनाभाक। अनंतशयन देवाक।
पादपूजादि सकळीक। चाल्लि राजगृही ॥१३५३॥

पीतांबर स्वर्णाभरण। समर्पि श्रीगुरुचरण।
परत येव्चाक आमंत्रण। दित्ता भक्तीन रायु ॥१३५४॥

बरें म्होणु गुरुनाथु। चाल्लो श्री रामसेतु।
व्यासरघुपति सहितु। पाव्लें श्रीक्षेत्रा ॥१३५५॥

म्हणताति मुक्तिहेतु। दर्शि तरी रामसेतु।
भागि जाल्ले ह्या पुण्यांतु। शिष्य ते असंख्यात ॥१३५६॥

श्रीमुष्ण वराह क्षेत्र। दान धर्मादि सर्वत्र।
करीऽत सर्वा पवित्र। यात्री जनां बरें ॥१३५७॥

गंगा सम ती कावेरि। तिज्या पावन तीरारि।
भू वैकुंठ नांवारि। शोभ्ता क्षेत्र श्रीरंग ॥१३५८॥

स्वामे श्रीपादराय[१४५]। तांचे ते चंद्रिकाचार्य[१४६]।
दोघें हे अध्वर्य। दास पंथाचे ॥१३५९॥

१४५ मुळबागिलु मठाचे १४६ श्रीव्यासराय स्वामे

श्री गुरुचरितामृत

पाव्ले तें स्फूर्ति हांगा। हांग्चान ती भक्तिगंगा।
चडली गा उत्तुंगा। हिमगिरी कडे ॥१३६०॥

श्रीक्षेत्र रंगधाम। साक्षात् वैकुंठसम।
सर्व यात्रेचे श्रम। जात्लें गा फलदाई ॥१३६१॥

पवित्र कावेरि स्नान। रंगनाथालें दर्शन।
करीं भक्ति श्रृद्धेन। मोक्ष हे निस्संशय ॥१३६२॥

न देखी रंगनाथाक। तसले ढोळे ते कित्याक।
व्यर्थ ते मोरांपाक। डोळचा सारिखें ॥१३६३॥

खरें तीं कावेरी विरजा। स्पर्शान अज्ञान तमजा।
निश्शेष जाव्नु सहजा। प्राप्ति जात्ता स्वरूप ॥१३६४॥

रंगनाथाले दर्शन। बिंबापरोक्ष[१४७] तें जाण।
गोपुर शिखरांतुल्यान। दिस्ता तो वासुदेवु ॥१३६५॥

समस्त भूमंडळि। ह्या भयंकर कलि काळि।
पाप परिहाराक तत्काळि। ना गा क्षेत्र अन्य ॥१३६६॥

असल्या पुण्यक्षेत्राक। पावले सर्व यात्रिक।
श्रीव्यासरघुपतीक। क्षेत्र हे आवडलें ॥१३६७॥

तुष्टले स्वामि वरदेन्द्र। मनांतु चिंति रघुचन्द्र।
कर्तांति वास योगीन्द्र। बहुकाल थांगा ॥१३६८॥

श्रीरंगा मंगळांगा। पावरें भक्तांतरंगा।
दीरे सुजन सत्संगा। आवडी नित्यनेमे ॥१३६९॥

१४७ प्रतिबिंब जीवांक आपणाली बिंबरूपी देवु दिस्ता

तूंचींगा पंढरिरंगू। तूं स्वरमणु गा निस्संगू।
हांव चरणकमल भृंगु। जात्लो देवा दयकरी ॥१३७०॥

हांव तरी संन्यासि। सिस्संगि गा निर्वासि।
तूं रे हरि निर्दोषि। म्हणति सर्वव्यापि ॥१३७१॥

रंगा हे दुरितभंगा। तुजा चरणी ती गंगा।
जन्मली गा भवभंगा। तिज्जें नांव कावेरि ॥१३७२॥

आतां पावलो वैकुंठा। तुजि दर्शनाचि उत्कंठा।
देहबुद्धि ही न सुंटा। सुंटवीरे देवा ॥१३७३॥

अशशी प्रार्थिता यति। रंगनाथां चरणाप्रति।
करीत पुनः स्तुति। घालिले लोटांगण ॥१३७४॥

आइका हो श्रोतृगणा। गुरु प्रार्थनेचि खुणा[१४८]।
रहस्य कोणा कळेनां। स्वामिरायालें ॥१३७५॥

स्वाम्यालें सर्व कायक। सर्वस्व देव कार्याक।
जर्झरित रे त्या श्रमाक। जाल्ले देहक्षीण ॥१३७६॥

दिसली बाधा मधुमेहाचि[१४९]। पृष्ठारि[१५०] वेदना व्रणाचि।
असहनीय दुःख भोग्तऽचि। हसन्मुखी सदा ॥१३७७॥

देहत्यागाचो अवसरु। जाल्ला प्राप्त रघुवरु।
सांग्ला यो रे सत्वरु। बस्सुया एकांति ॥१३७८॥

व्यासरघुपति आमुचों। सिद्धता करि स्वागताचो।
हो जन्मुऽचि शेवटचो[१५१]। कळलें हें स्वाम्यां ॥१३७९॥

१४८ रहस्य परिचय १४९ डायबिटिस १५० कार्बंकल १५१ अखेरचा

उत्तम संस्कारयुक्तु। जाव्का ज्ञानि खरे भक्तु।
विषयांतु निरासक्तु। वैष्णवु विरागि ॥१३८०॥

तसलेक द्विजवराक। हाड्का ह्या परंपरेक।
चिंतित अशिशं रघुपतीक। आरंभिले शोध ॥१३८१॥

गोश्रीचे सत्कुळी। प्रसूताक तिरुचनापळी[१५२]।
हाड्लि गा ताज्जि कुंडलि। श्रेष्ठ ती संन्यासाक ॥१३८२॥

नांव ताज्जे श्रीनिवासु। लौकिक विद्याभ्यासु।
केल्लों ना गा विशेषु। तरी श्रेष्ठु परमार्थि ॥१३८३॥

इसवि इक्कुंण्शि बारावि। संवत्सर नाम परिधावि।
श्रावण चतुर्थी दिवि। बहुळांत दिल्लि दीक्षा ॥१३८४॥

१५२ कावेरी तीराचो गांवु.

श्रीसुकृतीन्द्रतीर्थ। नांव दवरिले सार्थ।
सिद्धि जात्ता सर्वार्थ। नांव धेत्ल्या क्षणी ॥१३८५॥

शिष्य स्वीकारा उपरि। उभय श्रींचि स्वारि।
पावलि नेत्रावती तीरि। स्व मठी वटपुर ॥१३८६॥

छत्रपुराचे महाजन। विनंती कर जोडून।
वृणाक औषध मुखेन। करूं चिकित्सा बरिं ॥१३८७॥

यतीलि सम्मति मेळ्ता। आयुर्वेदाचे पंडिता।
चिकित्सा ती आरंभिता। जाल्ले स्वामें गुणमुख ॥१३८८॥

गेल्लें संवत्सर तीनि। उपरांत श्रीवरदेन्द्रानि।
विद्याभ्यास निमित्तानि। धाड्ले शिष्यांक गोश्री ॥१३८९॥

पाव्ले स्वामि मुंबापुरि। बाणगंगेचि तीरि।
स्वमठांतु वसति करि। सन्निधि माधवेन्द्र ॥१३९०॥

केल्लें काय तें क्षीण। कठिण त्या जपतपान।
देह सोड्चा निर्धारान। नारायण स्मरणी ॥१३९१॥

आनंदनाम संवत्सर। आषाढ शुक्ल द्वितीयावर।
नारायण स्मरण निरंतर। करीत देह सोडले ॥१३९२॥

माधवेन्द्राल्या बाजून। वरदेन्द्रांक वृंदावन।
शास्त्रोक्त विधि विधानान। रचिले तें विप्रानि ॥१३९३॥

गुरुद्वयालि सन्निधि। चाल्ली सगळी विधि।
शिष्यलोकालि गर्दि। आवरूं येना ॥१३९४॥

श्रीमद् वरदेन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, मुंबई

गाबरलि मठ मंडळि। गोश्रीक खबर पाव्लि।
बालयती ते तळमळि। गुरु वियोगे ॥१३९५॥

श्रीसुकृतीन्द्रालि स्वारि। पाव्लि शीघ्र मंबापुरि।
वृंदावनाच्या मुखारि। राब्ले दुःखतप्त ॥१३९६॥

गुरूलि मंगलमूर्ति। तांचि महिमा आणि कीर्ति।
चिंतीत केल्ली स्तुति। मनीं मौनमुद्रिं ॥१३९७॥

वृंदावनाचि महिमा। अनुभवी जाणति गरिमा।
घनरोगादि उपशमा। नमस्कार मात्रें ॥१३९८॥

पंचामृत सेवनेन। पंचपातक नाशन।
वृंदावन दर्शनान। नाश गा पापराशि ॥१३९९॥

प्रथम माधवेन्द्रांक। उपरांत वरदेन्द्रांक।
दोन्नी वृंदावनांक। करी कोण नमस्कार ॥१४००॥

जन्मांतराचें पाप। सतरि आपो आप।
हतरि भवताप। पड्ता पुण्य पदरीं ॥१४०१॥

सुकृतीन्द्रां प्राय सानि। विद्याभ्यासु ही पूर्णजाइनि।
मठाचो व्यवहारु हो कळ्नि। भिल्लें मनीं यतीन्द्र ॥१४०२॥

हे व्यासरघुनंदना। तू शिवाइ कळेना।
दाखै वाट दयाघना। बादरायणा हरे ॥१४०३॥

हे व्यासरघुपति। तूंचि गा मठाधिपति।
रक्षी धनमान कीर्ति। दी देवा सामर्थ्य ॥१४०४॥

स्वाम्यालि ही विनंति। आइकलो तो श्रीपति।
सुकृतीन्द्राल्या सन्मति। राब्लो आपऽण स्वयं ॥१४०५॥

संवत्सर तीं दोनि। काड्ले बहुत त्रासानि।
काईं दुष्टशक्तीनि। दिल्लि हिंसा स्वाम्यांक ॥१४०६॥

वयान स्वामें सान। तरी बहु ज्ञानवान।
वेदव्यासाल्या दयेन। समजले सर्व ॥१४०७॥

मूलमठाचे स्थान। चोव्का प्रत्यक्ष आपण।
गुरुपरंपरा प्राचीन। स्मरीत पाव्ले काशि ॥१४०८॥

समाजाचें सौभाग्य। दवर्ला नांव योग्य।
बालयतीले वैराग्य। चोइले निवासि काशीचे ॥१४०९॥

सुकृति गा आम्हि सगळे। सुकृतीन्द्रतीर्थ मेळ्ळे।
वरदेन्द्रऽचि आइले वेगळे। सुकृतीन्द्र नांवीं ॥१४१०॥

पंडितालें हे उद्गार। सत्य मणता परिवार।
वेदधर्माचो उद्धार। कर्तले हे सत्य ॥१४११॥

काशीक पाव्तऽचि गुरु। कर्तांचि नाना विचारु।
परंपरेचो सुरतरु। जाव्का फलदायक ॥१४१२॥

शिष्या सर्वांक संदेशु। कळैताति सावकाशु।
वेदधर्माचो प्रकाशु। पोड्का बरें आतां ॥१४१३॥

गंगेक चोइत नयनी। गळ्ली अश्रुवाहिनि।
पूर्व गुरूंक स्मरूनि। वंदिलें गंगा ॥१४१४॥

देव्ळ आणि मठ मंदिर। धर्म संस्कृतीचें केन्द्र।
जाव्का तों जीर्णोद्धार। होचि ध्येयु आदिमा ॥१४१५॥

उत्तम व्यवहारान। जोड्का धन गृहस्थान।
सत्कार्य सत्पात्रदान। कोर्का विनियोगु ताज्जो ॥१४१६॥

मूलमठाक नियमावळी। आपणेचि घाल्नु दिली।
यात्रार्थीक सकाली। असो व्यवस्था बरी ॥१४१७॥

क्षेत्रविधि यथासांग। आतिथ्य बहुचांग।
हरिभजनादि सत्संग। चोलोंका सदा ॥१४१८॥

मठाचि ती वास्तुकला। रक्षूका पाठशाला।
विद्या ही काशीचि कळा। दवरा ज्वलंत ॥१४१९॥

तरुण यतीलि योजना। आइकूनु त्या शिष्यजना।
सुकृतीन्द्रालि ही कल्पना। वरदेन्द्रालींचि खरें ॥१४२०॥

सुकृत मोण्का समाजाचे। सुकृतीन्द्रतीर्थ मेळ्चे।
वैष्णवालें भाग्याचे। स्वामि आमुचे ॥१४२१॥

आइकुयां पूर्वचरित्र। जन्मले हें सत्पात्र।
घराणे तें पवित्र। योग्य भाग्याचें ॥१४२२॥

गोश्री घराणे। ओळखति प्रभु नावांने।
विठल प्रभु गुणाने। सत्त्वयुक्तु ॥१४२३॥

सद्गुणानि श्रीमंतु। औदार्य गुणानि युक्तु।
हरि गुरुल्या भक्तींतु। अग्रगण्यु ॥१४२४॥

श्रोत्रीयु वत्सगोत्रि। सुब्रायु पूतु सन्मति।
कावेरि नामक ती सति। सून ताज्जि ॥१४२५॥

पुण्यात्म प्रभु दंपति। खंचांथूंइ नारे च्युति।
दैवी गुण संपत्ति। आस्स भरपूर ॥१४२६॥

जन्मलो बाळु एक्लो। चेल्यांतु तो दाक्लो।
मोगाचो मोग्ग्रा कळो। कावेरिलो ॥१४२७॥

नांव तें श्रीनिवासु। कर्ता नाना विलासु।
संन्यासीचो वेषु। सहज खेळी ॥१४२८॥

चोइताति प्रभु दंपति। जात्लो हो खरे यति।
भविष्य हें सुचविताति। देववर्ग ॥१४२९॥

शाळेंतु श्रीनिवासु। न करी अक्षराभ्यासु।
लागला एक्कूचि ध्यासु। अक्षरपतीलो[१५३] ॥१४३०॥

केल्लें मौंजि बंधन। श्रीनिवासा उपनयन।
त्रिकाल संध्यावंदन। गायत्रीयुक्त ॥१४३१॥

श्रद्धें कर्ता दिवसु। एकांती श्रीनिवासु।
वेंकटपतीरि विश्वासु। भक्तिपूर्ण ॥१४३२॥

कावेरिलो मोगाचो। आत्तां षोडशवर्षाचो[१५४]।
संपूर्ण योगचर्येंचो। श्रीनिवासु ॥१४३३॥

भविष्य तें कोणजाण। आइले ब्राह्मण सोद्दून।
जन्मकुंडली मागगून। व्हेल्लि तान्नि ॥१४३४॥

१५३ लक्ष्मीपति. १५४ सोळवर्षे.

ज्योतिर्विद्येचो सागरु। गणिताचो महामेरु।
आम्चो वरदेन्द्र गुरुवरु। कंडलि चोइता ॥१४३५॥

कोटि संख्येंतु एक। मेळ्ता अस्ले जातक।
आम्चा ह्या प्रयत्नाक। पाव्लो गा हरी ॥१४३६॥

प्रभूक आइलो संदेशु। वरदेन्द्रालो रायसु।
रात्ता तुम्का वेदव्यासु। येय्यागा शीघ्र ॥१४३७॥

श्रीनिवासाल्या सांगाति। आइलीं तीं प्रभु दंपति।
श्रीरंगक्षेत्राचि कीर्ति। आइकल्या बहुत ॥१४३८॥

कोर्नु श्रीगुरुदर्शन। श्रीरंगाले पूजन।
उपरांत श्रीस्वाम्यान। सांग्लें एकांती ॥१४३९॥

श्रीनिवासालि चित्त वृत्ति। कुंडलीचि ग्रहगति।
इच्छिता व्यासरघुपति। तुज्जा बाळा ॥१४४०॥

नेत्रद्वय उदकावले[१५५]। दंपतीं रडूं लागले।
द्विजवरानि समजाइलें। प्रभूक तेन्ना ॥१४४१॥

संन्यासाश्रम विधि। वरदेन्द्राल्या सन्निधि।
विरजा[१५६] होमान शुद्धि। केल्लो वटूक ॥१४४२॥

शिखासूत्र[१५७] विसर्जन। पळैलें ते आव्सून।
दुःख उचंबळी पूर्ण। पडलि मूर्छा ॥१४४३॥

कावेरिलि अश्रुधारा। कावेरिचि जलधारा।
एकवटूनि महापूरा। आइली म्हणाकी ॥१४४४॥

१५५ दोळे भोर्नु आइले. १५६ संन्यासाक पूर्वभावि होमु. १५७ शोंडि आनि जान्नूवे.

नाशली ममतावाली। ज्ञानदृष्ठि ती उगडली।
यती काषायांबरीलि। दर्शनमात्रें ॥१४४५॥

राब्ले दिवस बहुत। पुण्ययात्रा ती करऽत।
आइले घराक परत। निश्चिंतमना ॥१४४६॥

कराळ क्रीडा कालालि। निष्ठूर त्या निर्दयालि।
यतिराज वरदेन्द्रालि। हरती आयु ॥१४४७॥

गुरुशिष्यालों संबंधु। केल्लो विधीने छेदु।
सुकृतीन्द्र यति साधु। जाल्ले शोकतप्त ॥१४४८॥

केवल दोनि संवत्सर। गुरू शिष्य बरोबर।
राव्ले ना निरंतर। दैवयोगें ॥१४४९॥

WORLD KONKANI CENTRE LIBRARY

गुरुसेवेंतु भागि। जाइनि आम्मि दुर्भागि।
एकांती देहत्यागि। गुरू गुप्त ॥१४५०॥

अशिशं चिंतेंतु बुडले। अश्रु धारेंतु नहाले।
दुःख संपूर्ण गिळ्ळले। संयमानि ॥१४५१॥

मुग्ध ते तरुणयती। आप्त सहायि काणीनाति।
माधवेंद्रांक मागताति। समाधि पुढे ॥१४५२॥

विधियुक्त आराधना। संपली[१५८] उदार मना।
धन कनक बहु वितरणा। स्वामिहस्तें ॥१४५३॥

मुंबैचान काशीक। पाविल्या विषयाक।
सांग्चे ते अनावश्यक। वाच्लां आदि ॥१४५४॥

१५८ पूर्णजाल्ल.

काशीच्यान मुंबैक। आइलि स्वारि श्रीमठाक।
आइकतां महाजनांक। आनंदू अपार ॥१४५५॥

रचिलें स्वागत कमान। ध्वज पताका तोरण।
गर्जताति वाद्यवादन। निनादिलें दिशां ॥१४५६॥

छत्रपुराचे [१५९] सज्जन। दित्ताति गुरूं आमंत्रण।
बिन्नहपत्र विनयान। अर्पिले तेन्ना ॥१४५७॥

दिल्लो रायसु स्वाम्यानि। घेव्नु आइल्या जनानि।
स्वागताक आनंदानि। जाल्ले सिद्ध ॥१४५८॥

धूम्रशकटारि [१६०] यति। परिवार सहित आइलेति।
कोरूं असाध्य गणति। जनसंख्या ॥१४५९॥

१५९ कोडियाल्चे. १६० रैलारि.

तेजस्वि तरुण संन्यासि। दर्शनान जनराशि।
पाव्ताति बहुत खुशि। धन्य आम्हि ॥१४६०॥

वेदमंत्रांचो घोषु। बाळ भुग्याॅ संतोषु।
स्वामें देवता पुरुषु। समजारे ॥१४६१॥

भावना ही भाइलांलि। उत्रं ही परस्परांलि।
महिमा सुकृतीन्द्रांलि। वर्णितातित सगळे ॥१४६२॥

छत्रपुरांतु नित्योत्सवु। गुरुलो गुण गौरवु।
पूजेचो तो वैभवु। अवर्णनीय ॥१४६३॥

अन्नदान ज्ञानदान। गुरुरायाले प्रवचन।
मंत्र मुद्राधारण। प्रसादयुक्त ॥१४६४॥

सारस्वत हे पुरातन। वेदधर्मी सनातन।
कोर्का ताज्जे रक्षण। जाव्का कटिबद्ध ॥१४६५॥

तरी हो कलियुगु। अर्थात् कलहाचोयुगु।
ना परस्पर सहयोगु। सारस्वतांतु ॥१४६६॥

आंग्लालें अनुकरण। भाषा तीचि उलवण।
वेषभूषा ती जाण। पाश्चिमात्य ॥१४६७॥

धर्मकर्मांचि निंदा। कर्तीति करण मंदा।
आंग्लेय प्रचार दंधा। करी नित्य ॥१४६८॥

आहार विहारांतु पतन। धर्मनिंदा हें कथन।
करी अभक्ष भक्षण। मंदबुद्धीं ॥१४६९॥

वर्णाश्रमाचें खंडन। सर्वत्र सहभोजन।
अशन वसन नेसण। पाश्चिमात्य ॥१४७०॥

शिक्षण ह्या निमित्तान। कर्तीति क्रिस्तीकरण।
इसाई ते उपायान। भ्रष्टविती जना ॥१४७१॥

वर्णाश्रमाचें खंडन। कोर्चे मुखेलि[१६१] जन।
आप्लेचि ते विद्वज्जन। नष्टप्रज्ञ ॥१४७२॥

भारताचे विधात। आंग्लेयऽचि म्हणत।
तश्शिं चि प्रचार करीऽत। भाटवी जनां ॥१४७३॥

अखंड भारतांतु। पाश्चात्य परचक्रांतु।
बुडला जन भ्रांतींतु। सुधारणेचि ॥१४७४॥

१६१ नेतार.

आंग्ल मोहिं सारस्वत। लेक्ताति ते बुध्वोंत।
स्वामें कोरूं विद्यावंत। आंग्ल विद्येंतु ॥१४७५॥

अद्वैत्यांच्या आश्रमांक। रामकृष्णा मिशनांक।
स्वाम्यांक मेळोचाक। कर्ती यत्न बहुत ॥१४७६॥

विषयासक्त हें भोगि। भोगवादी दुःसंगि।
वैदिक धर्म त्या अंगी। तिलमात्र ना गा ॥१४७७॥

वैदिक धर्मु अश्वत्थु। तेचि खरे शाश्वतु।
ताइकिळो पाव्साडींतु। वाढ्ता हे खरें ॥१४७८॥

धर्मवृक्षाचें पाळ। पाव्ला गा ते पाताळ।
न कळे मूर्ख विकल। परंपरा ती ॥१४७९॥

मिशनाच्या स्वाम्यानि। नकारिले समजूनि।
परंपरेक तुम्मि हानि। करूनयि ॥१४८०॥

स्तब्दले ते आधुनिक। जाल्ले स्वामे हसन्मुख।
म्हणतातिं पडत मूर्ख। अस्ले जना ॥१४८१॥

प्रभु नावांचो कानूनी। हाड्ता समाजु सुधारूनि।
अहंकारी तो अल्पज्ञानि। करी सर्व संकर[162] ॥१४८२॥

अवर[163] लोकां बरोबर। सहभोजन केल्यावर।
अपराधु हो गुरुतर। घाल्लो प्रभूरि ॥१४८३॥

प्रभु विरोधीं जमूनु। स्वाम्या कडे येव्नु।
बहिष्कार पत्र बरोनु। घेत्लि सहि तांचि ॥१४८४॥

१६२ अतर्जाति संबधु. १६३ कनिष्ठ जातीचे.

पत्र अंग्रेजिंतूनु। स्वाम्यांक जाइनि मननु।
विश्वासी सही घाल्नु। दिल्ले पत्र तांका ॥१४८५॥

प्रभु प्रश्नी न्यायालयि। स्वामेंचि उत्तरदायि।
मान नष्टाक जायि। माक्का परिहारु ॥१४८६॥

खरें स्वामी काहीं नेण। लौकिक लोकाचे पटवण।
संस्थानाचे अभिमान। कोर्का रक्षा ॥१४८७॥

अशिश कोर्नु निर्धार। न्यायालयाक उत्तर।
दिल्ले कानूनी द्वार। चल्लो न्यायु ॥१४८८॥

स्वामेक कोर्टा हाड्का। विरोध्यालो गर्वु मोड्का।
संस्थानाचो मानु काड्का। हेतु हो प्रभुलो ॥१४८९॥

न्यायालयी जाव्का हाजर। अशिश आज्ञा कठोर।
धाड्ता मूर्ख सरकार। स्वामिरायां ॥१४९०॥

प्रश्नु हो संस्थानाचो। ताज्जो मानु रक्षेचो।
कर्णाट देशूचि सोड्चो। निश्चयु हो स्वाम्यालो ॥१४९१॥

कोणी ना सहाय। देव जाण न्यायान्याय।
रातो रात्रि स्वामिराय। चाल्ले गा केरळा ॥१४९२॥

वटपुराचो तिरुमलु। स्वाम्यां बहु प्रेमळु।
पंचप्राण हे ओवाळुं। देवा चरणी। ॥१४९३॥

वेंकटेशा मान राख। सद्बुद्धि दी मूर्खांक।
संस्थानाच्या मानांक। उणावु[१६४] नाक्का ॥१४९४॥

१६४ उणेपण.

अशिश करीत मागणि। परिवार सहित तो मुनि।
व्यासरामाक घेवूनि। निर्गमलें त्वरे ॥१४९५॥

वटपुराचो वैदिकु। कोर्नु नमस्कारु एकु।
स्वाम्यालो आप्तु सखु। विनंति करी ॥१४९६॥

नेत्रावतीच्या पेल्यान। पावैंता सर्वा हांग्चान।
उळ्ळाल कुंबळे मार्गान। ग्रामैक रात्रि ॥१४९७॥

दिवसाचे भजन पूजन। रातो रात्रि प्रयाण।
देवाल्या इच्छे प्रमाण। पाव्ले गा केरळा ॥१४९८॥

स्वाम्याले अश्रुपूर। गांवाकाइलो महापूर।
नेत्रावती जाल्ली गंभीर। वटपुरांतु ॥१४९९॥

बुडलो गांवु बंटवाळ। उव्वारांतु ते सकळ।
स्वामें पाव्ले ते केरळ। ग्राम आल्पळ्ळे ॥१५००॥

जाल्लो प्रभु विजयी। सामान्य न्यायालयी।
दंड जाल्लि रुपई। एक्कावन स्वाम्या ॥१५०१॥

पन्नास तरी करी दंड। मठाचो मान दंड।
जात्लो गा खरे खंड। अपमान स्वाम्या ॥१५०२॥

करैलें वेदव्यासान। दंडु रुपै एक्कावन।
प्रश्नीं म्हणा कानून। उच्छालयिं[१६५] ॥१५०३॥

न्यायस्थान सर्वोच्छ। दित्ता न्याय उच्छ।
धर्माचार्य ते स्वच्छ। शास्त्रयुक्त ॥१५०४॥

१६५ सर्वोच्छ न्यायालय.

ना तांचो अपराधु। जाइनि शास्त्राक विरोधु।
सोडा हो व्यर्थवादु। गुरु सर्वोच्छ ॥१५०५॥

खर्चिलेलें सर्व धन। स्वाम्या दीव्का प्रभून।
श्रेष्ठ न्यायालयान। फर्माइलें अशिशं ॥१५०६॥

स्वाम्यानि नकार्ले धन। तेवै आम्चे शिष्य जन।
काशीमठाचें उदारपण। समजया तांका ॥१५०७॥

आम्का ना मानापमान। आम्मी संन्यासी जन।
देवाक हें होडपण। संस्थानाचें ॥१५०८॥

अस्ले उदार स्वामि। सुकृतीन्द्र ते संयमि।
न पडति इंद्रियग्रामि। वीतरागि ॥१५०९॥

धर्मसंस्कृतीचे स्थळ। खरें आम्चें देवुळ।
जनांतु ऐक्यता बल। प्रवृद्धितातित तीं ॥१५१०॥

आसेतु हिमाचल। जीर्णावस्थेचि देवळ।
जीर्णोद्धाराक प्रबल। संकल्पी गुरू ॥१५११॥

वारणासि रामेश्वर। मूडबिदरे कोडगुन्नूर।
मूल्कि देव परिवार। स्वामि हस्ते ॥१५१२॥

कापु बंटवाळ मंगळूर। कुंब्ळे कार्कळ मुंड्कूर।
पणंबूर बापै घर। स्वामि हस्ते ॥१५१३॥

देव्ळं जीर्णोद्धार। वाढ्लो जनांतु संस्कार।
स्वाम्याले हे उपकार। विस्सर्ता कोण ॥१५१४॥

सुकृतीन्द्र ते अक्रोधि[६६६]। निर्मत्सरी तत्त्ववादी।
अजातशत्रु[६६७] अबाधि। शत्रुस्नेही ॥१५१५॥

सहिष्णु सर्वमान्यु। योगिराजु अग्रगण्यु।
आचार विचारांत पूर्णु। एकरूपु ॥१५१६॥

धर्माचे दशलक्षण। तांच्यांतु साकार म्हण।
गीतेचे सात्तीस गुण। मूर्तिमंत ॥१५१७॥

लवण[६६८] रहित शाक। वाड्ता स्वयंपाकि[६६९] एक।
न रुचीक आतंक। स्वामिराया ॥१५१८॥

अपराधु कोर्नु ताणे। क्षमा माग्लि त्या क्षणे।
स्वामें म्हणाले ना उणे। इतर रुचीक ॥१५१९॥

६६६ कोंडुनिल्ले ६६७ शत्रुनिल्ले ६६८ मीट ६६९ गन्धे

पानीयांतु सायंकाल। पड्ला तेंबो त्याल।
पीनासि दवर्ले खाल[१७०]। ना गा आक्षेपु ॥१५२०॥

चूकि कळ्ता सेवकु। अपराध्याक एकु।
शिक्षा दिय्या भयानकु। भोगतां म्हणे ॥१५२१॥

कर्नी बुद्ध्यापूर्वक। तुम्मि तरी आज्ञाधारक।
कर्ताना आहारादिक। सावध असो ॥१५२२॥

उपदेशूचि शीक्षा। तशिश चोल्वी ती दीक्षा।
आम्मि ताज्जि प्रतीक्षा। अपेक्षि सदा ॥१५२३॥

भुभुक्षिताक[१७१] अन्न। दीव्नु सदा संपन्न।
तृप्त जाव्का ताज्जेन। ती चि हरिपूजा ॥१५२४॥

१७० नोगु १७१ भूख्लागिला

पर्वकालारि[१७२] गुरु। गरीब तरी द्विजवरु।
सकल भोजन सांबारु। धाड्तले घरा ॥१५२५॥

मठा कडचान सामग्रि। मेळ्ता ब्राह्मणा घरि।
धन्य गा ते संसारि। पात्र गुरुप्रसादा ॥१५२६॥

विचार्ता एक्लो विद्यार्थि। स्वाम्या येव्नु शरणार्थि।
त्रिकाला संध्यार्थि। वेळु मेळ्ना ॥१५२७॥

एक्सानि तिन्नी संध्या। कोर्नु उपरांत विद्या।
पठीत बैसूये सदा। चूकिवे ती? ॥१५२८॥

तिन्नी जेवण एकदा। खेल्यारि वांचाना कदा।
ती त्रिकालारि सदा। कोकरि बाळा ॥१५२९॥

१७२ परबवेळारि.

देवपूजेक अवधि। कल्पूनका उपाधि।
तें कर्तव्यरे आदि। अशिश समज ॥१५३०॥

निस्संगी वीतरागि। सुकृतीन्द्र महायोगि।
योगासनाच्यो भंगी। जाणती गुरू ॥१५३१॥

यम नियम अष्टांग। जाण्तले गुरू चांग।
साधूनु तीं सर्वांग। करी तें नित्य ॥१५३२॥

साधनेचें बल। मना मध्ये निश्चल।
साध्का मोण्चो छल। तरी सिद्धि शीघ्र ॥१५३३॥

करी सदा चंक्रमण[१७३]। मध्यंतरी अश्वारोहण।
समुद्राचे वायुसेवन। करिती नित्य ॥१५३४॥

१७३ चाम्काण

अनंतनारायणपुर। स्वामिरायांक माहेर।
धन्य जाल्ले तें नगर। जनपदा सहि ॥१५३५॥

पोस्ताति मृगसंकुल। त्या बर्शि खेळ्ताति खेऽळ।
जशिशं ते मुग्धबाळ। तशिशं स्वामिराय ॥१५३६॥

दशवर्ष उपरांत। जिंक्ले गुरू न्यायालयांत।
माग्लि क्षमा चरणांत। विरोध्यानि ॥१५३७॥

प्रभु जाल्लो रोगाक्रांतु। जर्जीरित रे श्रांतु।
गुरुद्रोही तो भ्रांतु। आइलो भेटीक गुरूं ॥१५३८॥

द्रविलें चित्त गुरूलें। प्रीतीन आशीर्वदिलें।
दोष सर्व विसरले। दिल्लि अक्षता ताक्का ॥१५३९॥

क्षमा मागिलं प्रभून। चरणि मस्तक दवरून।
गुर्रून हात धरून। उठविले ताक्का ॥१५४०॥

परम सात्विक रे सद्गुरु। क्षमागुण समुद्रु।
गुरुकृपा रोगहरू। प्रभु जाल्लो सौख्य ॥१५४१॥

काशीमठाचि कीर्ति। स्वाम्यालि सहज स्फूर्ति।
ताज्जेन इह परांत प्रगति। जाल्या जनपदां चि ॥१५४२॥

अष्ट मठांचे यतीं। सुकृतीन्द्रांक मानिति।
सर्व यतील्या सांगाति। वर्तती समभावें ॥१५४३॥

गोकर्ण मठाचे स्वामि। इंदिराकांत बहुनेमि।
शिष्य कमलानाथ यमि। प्रेमि सुकृतीन्द्रालें ॥१५४४॥

द्वारकानाथ सहित। चित्रापुराचि सारस्वत।
तांचे आनंदाश्रम ख्यात। स्नेही तांका गुरू ॥१५४५॥

धर्माचार्या एकत्रित। केल्लेले श्रीगुरुनाथ।
तेचि सुकृतीन्द्र तीरथ। स्वामिगा आमुचे ॥१५४६॥

जन्मदात्रि कावेरि। संन्यास कावेरि तीरिं।
प्रभु पूर्वाश्रमारि। प्रभू जात्लें यतींक ॥१५४७॥

निरपेक्ष आणि शांत। सुकृतीन्द्र यति महंत।
अस्ले दुर्मिळ संन्यास्यात। जितमनस्क ॥१५४८॥

वैदिकांचेरि प्रेमु। गृहस्थांचो ललामु।
याचकांचो सुरद्रुमु [१७४]। स्वामि आम्चो ॥१५४९॥

१७४ कल्पवृक्षु

स्वाम्यालें उत्रं ऊणे। कृतीचि महत्व जाणे।
योगवृतिले प्रमाणे[१७५]। मेळ्ता बहुशास्त्रां ॥१५५०॥

दीन दुःखिले उद्धारु। केल्ला गुरूनि बहु प्रकारु।
महिमा सांग्ता थोडपारु। आइका वाचकानो ॥१५५१॥

पश्चिम घाट्टारि संचारु। करीत आइलो गुरुवरु।
वेंकटेशु सोमेश्वरु। आस्स त्या गांवा ॥१५५२॥

तैल शकटाचें इंधन। सर्ले म्हणे चालकान।
गुरुदेव निश्चिंतेन। जप करी गुप्त ॥१५५३॥

ना माक्षि मुखार कोण। भयग्रस्थ जाल्ले जन।
देवाले नाना आभरण। करूं कशिश रक्षां ॥१५५४॥

१७५ आधारु.

क्रूर मृग संकुलान। भरलेंलें होड रान।
लुटारि लोकाल्या भयान। राब्ले रक्षणेक ॥१५५५॥

पाव्लो एकु प्रयाणिकु। दामोदर नामकु।
मठाच्या शिष्यां पैकि एकु। वैदिकु तो ॥१५५६॥

शकटांतु एक स्वामे। जपाक बस्लेति नेमे।
ओळखूनु तो प्रणामे। करी साष्टांग ॥१५५७॥

आपुल्याल्या शकटांतूनु। इंधन ते बहुत काणु।
स्वाम्याल्या शकटाक भोर्नु। राब्लो रान्नां आपण ॥१५५८॥

दिल्लिं ताक्का अक्षता। असलीं शकट बहुतां।
व्यासरघुपति दाता। दित्लो तुक्का बाळा ॥१५५९॥

गुरुकृपा आणि अक्षता। घेत्लि श्रृद्धेन हातां।
हाण्णु घरांतु दवर्ता। धोर्नु मस्तकारी ॥१५६०॥

जाल्लो बहुत शकटपति। संस्थेचे नावं नेत्रावति।
जाल्लो तो लक्षाधिपति। गुरुकृपेन ॥१५६१॥

शिष्यु केशवनामकु। सानु एक्लो वणिकु।
गरीबु तरी प्रामाणिकु। गुरु भक्तु बरो ॥१५६२॥

कर्ता व्यारु फलांचो। प्रतिवार संतेचो।
खबर कळ्ळी येव्याचो। स्वामें गांवा ॥१५६३॥

स्वामेक दिव्च्या वेगळें। फल घेत्ले चांगले।
वाहनारि ते दवर्ले। गुरुरायाल्या ॥१५६४॥

पोट्लि होडि फलांचि। व्यारांक गांवा होर्चि।
घाल्लि शकटीं मठाचि। निश्चिंतमना ॥१५६५॥

आगमन जाल्लें कोटा[१७६]। पोट्लि गेल्यो मठा।
स्वामिरायाल्या निकटा। दवर्लि होडि पोट्लि ॥१५६६॥

हाड्लेंलें फल व्यारांक। पाव्लें सर्वमठाक।
स्वाम्याल्या सन्निधानाक। विचारूं कशिशं ॥१५६७॥

व्याराचे बंडवाल। पोट्ल्यांतुले फल।
देवाक पाव्ले सकल। केशवु उपवासी ॥१५६८॥

दोळे आइले भोर्नु। स्वाम्यांक नमस्कारु घाल्नु।
व्यारांक मूलधन म्होणु। माग्ले थोडें धन ॥१५६९॥

१७६ एकुगांवु

श्री गुरुचरितामृत

गुरू नेण सर्वथा। केशवालि करुण कथा।
घेरे बंडवाळ स्वता। करी व्यापारु ॥१५७०॥

गुरूनि दिल्लें मूलधन। व्यापारु वाढ्लो क्षणोक्षण।
जाल्लो श्रीमंतु धनवान। केशवू होड्डु ॥१५७१॥

सांग्लें स्वाम्यांक जनान। फल पोट्लिंचे कथन।
स्वीकार्लें व्यासरघुपतीन। केशवु जाल्लो धन्यु ॥१५७२॥

कोटेश्वाराचो कामतु। बाप्पै ताज्जो मंजुनाथु।
तोवै जाल्लो श्रीमंतु। गुरुकृपेनि ॥१५७३॥

केल्या सेवा बहुत। चातुर्मास्यादि व्रत।
गुरू आज्ञा पालत। कामति जाल्लो धन्यु ॥१५७४॥

श्रीमंतु आणि गरीबु। सेवुकु किं वा साहेबु।
आठोनु सर्वांक शुभु। आशितातीं गुरू ॥१५७५॥

श्रेष्ठ ते मात्र क्षेत्र। तान्नि जाव्का पवित्र।
उपदेश दित्ताति मंत्र। श्रीगुरू तांका ॥१५७६॥

अधिकार भेद समजूनु। उपदेश ते सांगूनु।
तुम्मि सद्गुण संपादूनु। जाव्का गा शीलवंत ॥१५७७॥

अशिश स्त्रीयांक उपदेश। पोळोनु ते सन्निवेश।
सांग्ताति सावकाश। मात्रृवर्गा ॥१५७८॥

संध्यावंदनादि कोर्नु। परमार्थ संपादूनु।
लौकिक ज्ञान ही पाव्नु। पाव्कारे पूर्णता ॥१५७९॥

जीवन आणि उज्जीवन। देहाचे देखरेखण।
सुदृढ आरोग्यपूर्ण। वांच्का दीर्घायुष्य ॥१५८०॥

दुश्चटांतूनि मुक्त। आस्सूका मित भुक्त।
सत्कार्यांतु आसक्त। आस्कारे सदा ॥१५८१॥

तरुणांक हो संदेशु। आप्तांक तरी आदेशु।
राख्तातित राति दिवसु। भक्तलोकां ॥१५८२॥

सुकृतीन्द्र मितभाषि। सूत्रां सार्खे उपदेशि।
समजूका तरी अभ्यासि। आस्का तत्त्वाचो ॥१५८३॥

वृद्ध काइं लोक। भेट्चा येत्ताति गुरूक।
प्रश्नु करी सांसारिक। हासताति स्वामे ॥१५८४॥

पुरोमुरे तें लौकिक। जाल्ले पुत्र पौत्रादिक।
आता तरी परमार्थिक। कराकि थोडें ॥१५८५॥

वृद्धाप्य तें क्रम संन्यास। म्हणता शास्त्र विशेष।
साधा उल्यीरि शेष। आयुष्य तुमचें ॥१५८६॥

सामाजिक पुढार्यांक। सांग्ताले स्वामि एक।
मंदिर करा ग्रामांक एक। संकीर्तनिक ॥१५८७॥

पुंडळीक वरदु। विठल नांवाचे स्वादु।
कलियुगाचे साधु। सेविति धन्यतेन ॥१५८८॥

स्वामेलो महोपकारु। बोरोचा जाड स्वर्णाक्षरु।
गोश्री देव्ळां अधिकारु। पाव्विलो राया कडे ॥१५८९॥

गोश्रीचो ज्येष्ठुरायु। सुकृतीन्द्रां धोर्नु पायु।
देव्ळा व्यवस्थेक उपायु। विचारी प्रेमें ॥१५९०॥

निस्वार्थि स्वामिरायु। सांग्ता गा खरे न्यायु।
राया आइक तुजो ध्येयु। श्रेष्ठुरे बरो ॥१५९१॥

परत दी समाजाक। तांच्या वेंकटपतीक।
राख्ता तुज्या घराण्यांक। वेंकटुदेवु ॥१५९२॥

सारस्वत ब्रह्मवृंदु। कर्ता तुक्का आशीर्वादु।
वेंकटपतीलो प्रसादु। घेरे भक्तिप्रेमें ॥१५९३॥

आम्हि संन्यासि निष्कामि। निराशी चरमाश्रमी।
निरपेक्षि सदा प्रेमि। श्रीव्यासरामां ॥१५९४॥

धनकनकादि वाहन। व्यासरघुपती कारण।
आम्हि दास देव चरण। आधारु तो आम्का ॥१५९५॥

रायु जाल्लो प्रसन्नु। सुकृतीन्द्रां नमस्करूनु।
देव सेवेक समर्पूनु। धन अगणित ॥१५९६॥

देवळ हस्तांतर कोर्का। सुकृतीन्द्रतीर्थांक दीव्का।
गुरुरायालि कृपा पाव्का। ही आशा आमुचि ॥१५९७॥

रायान हें व्यक्त केल्ले। स्वाम्यानि नकारले।
स्वामि आमुचे असले। सुकृतीन्द्रतीर्थ ॥१५९८॥

एकुदिवसु गुरुवरु। जाल्ला बहु विचारपरु।
धर्मपीठाचो हो भारु। स्वीकरी बा कोण! ॥१५९९॥

कालु तरी बरी वाइटु। तरुण कर्तांति आर्भटु।
पाश्चात्य संस्कृतीचो पाठु। चल्ता घरों घरीं ॥१६००॥

पूर्व पश्चिम संस्कृति। एकत्रित तीं जात्ताति।
प्रवाह पतित संतति। येत्तिगा पुढे ॥१६०१॥

संन्यासि राजकारणि। बैरागी बैरागिणि।
पंडित तत्त्वज्ञानि। जात्ले बली कली ॥१६०२॥

अर्थकामाच्या कारण। परमार्थ जें उलवण।
देखावेचे भक्तजन। वाढ्ता ह्या कलियुगीं ॥१६०३॥

बिगडताति मठ मंदिर। धर्मदर्श्याक परस्पर।
घडता झगडचो निरंतर। कलिकालांतु ॥१६०४॥

गुरु शिष्यालो संबंधु। दिस्ता देखावे चंदु।
अंतरंगाचो छंदु। कोणा कळ्ता? ॥१६०५॥

असल्या दुष्ट कालारि। कोण बा हाज्जो सुधारि।
धर्मपीठाक मुखारि। कोणालि गा रक्षा ॥१६०६॥

रात्रं दिवस खंती। ना गा स्वाम्या विश्रांति।
वैदिक ते विचारितातीं। सांगऽना गुरु ॥१६०७॥

स्वामेक एक्लो आत्मीयु। सुब्बाभट्ट तो श्रोत्रीयु।
सांग्लो स्वामेन आशयु। शिष्यु घेँव्चो ॥१६०८॥

म्हणाले सुब्बाभट्ट। मेळ्चेना तरुण श्रेष्ठ।
सदाशिवा सार्खें शिष्ट। मेळचारि धन्य ॥१६०९॥

कोण तो सदाशिवु। कुलगोत्रादि स्वभावु।
ताज्जेरि कोणा प्रभावु। सम्जुकारे बरे ॥१६१०॥

आणि कै काइं तरुणालि। सोद्कारे बरी कुंडली।
विधि इच्छा कशिश आस्तलि। कोण जाण? ॥१६११॥

सुब्बाभट्टान शोधन। आरंभिलि नाना युक्तीन।
सदाशिवाले चलनवलन। चोइता सूक्ष्ममति ॥१६१२॥

गीर्वाण भाषाज्ञान। आंग्ल भाषा ही जाण।
संध्यावंदनादि अनुष्ठान। दिनचरी ताज्जी ॥१६१३॥

समानशीलाचे मित्र। ना गा भ्रमण अन्यत्र।
देव्ळाक येव्चे मात्र। चुकैना कदा ॥१६१४॥

ना गा इतर हव्यास। सदा करीऽत अभ्यास।
सदा एकांत वास। प्रिय चिंतनेक ॥१६१५॥

द्वादशनाम आणि मुद्रा। शोभ्ता निडळारि भद्रा।
सूक्ष्ममति रे अतन्द्रा। ओळखलो भट्टु ॥१६१६॥

निवेदिले स्वाम्या कडे। कुंडल्यो कोर्या एक्डे।
सदाशिवालि चोव्नु पुढे। चोवूया अन्य ॥१६१७॥

नेमिलें स्वाम्यानि सुब्बाक। आरंभिलें प्रयत्नाक।
सदाशिवाल्या बाप्पैक। भेट्लो भट्टु एकांती ॥१६१८॥

रामदास शेणै नावं। ओळखतारे सर्वगांवं।
कीर्तिकामान दाहावावं। राब्तलो माक्षि ॥१६१९॥

देव्ळाचो धर्मदर्शि। कार्यांतु तो दूरदर्शि।
देवाक सर्वातु दर्शि। संतुष्टु गा सदा ॥१६२०॥

भेट्ठूनु शेणै माम्माक। सांग्लें प्रेमपूर्वक।
सदाशिवालें श्री जातक। इच्छितातित गुरू ॥१६२१॥

शेणै जाल्लो स्तंभीभूतु। आव्सु नात्तिलो मोगा पूतु।
आइला स्वामेलो दूतु। नाकार्चें कशिशं? ॥१६२२॥

स्वामेलि आज्ञापालन। कर्तव्य हें शिष्य जन।
अशिश चिंतून शेणैन। कुंडली दिल्लि ॥१६२३॥

कुंडलि चोइतातित विचक्षण। संन्यासाचें सर्वलक्षण।
दिस्तातित उत्तम गुण। वैराग्यनिधि हो ॥१६२४॥

संघटनेंतु चतुरु। न खंचांतू आतुरु।
कार्यक्षमी धुरंधरु। राजयोगि ॥१६२५॥

सुकृतीन्द्रालें मन। आइकतां जाल्लें प्रसन्न।
सदाशिवाक समजून। जाव्का प्रवृत्त ॥१६२६॥

भेट्टूनु सदाशिवाक। कोळोका स्वामिरायांक।
अम्सोरु सुब्बाभट्टाक। विचारि सदाशिवा ॥१६२७॥

विद्यार्थि तो बालकु। भिल्लो मनांतु सात्विकु।
अंतरि खरों उत्सुकु। चिंतकू बरें ॥१६२८॥

विचारा तुम्मि बाप्पाक। ते समर्थ निर्णयांक।
आम्मि हे सांग्चाक। असमर्थगा ॥१६२९॥

रामदासाक तळमळु। आवै नात्तिलो हो बाळु।
कश्शि करीऽत सांभाळु। धर्मपीठ ॥१६३०॥

शेणै आनि सदाशिवु। येव्का म्हणे गुरुरावु।
दोघालो सात्विक स्वभावु। आइलो पुत्रा सह ॥१६३१॥

बालकालो अंतरात्मु। गुरूले तो ज्ञानात्मु।
एकवटी परमात्मु। अष्टनामा[१७७] ॥१६३२॥

दोघालि मेळ्ळी सम्मति। पाव्लो गा व्यासरघुपति।
गुरू सुकृतीन्द्र यती। हर्षले मनां ॥१६३३॥

लिखैलि रायस प्रति। धाड्ता प्रमुखांक यती।
द्विज समस्त निवडती। क्षेत्रमूलिका ॥१६३४॥

१७७ देवाले आठनांव – विश्व, तैजस, प्राज्ञ, तुर्या, ज्ञानात्मा, अंतरात्मा, आत्मा, परमात्मा

मूलगुरु विजयीन्द्र। त्या उपरांत माधवेन्द्र।
बहुकाल ते योगीन्द्र। राब्लेति ह्या क्षेत्रां ॥१६३५॥

नरसिंहु बिंदुमाधवु। वेंकटू रुक्मिणीधवु [१७८]।
दर्शनी [१७९] काळभैरवु। ख्यातु गा हांगा ॥१६३६॥

काशीमठूचि देवळ। मठाक ना अन्यस्थळ।
व्यासाक जागो निर्मळ। दिल्ला नरसिंहान ॥१६३७॥

अण्णप्प दैव आपण। आइलां गा कुडुमाचान [१८०]।
पूर्वि कुमार हेग्गडेन। केल्लां हे मान्य ॥१६३८॥

मंजुनाथालें दर्शन। घेत्लां हांगा हेग्गडेन।
थंची काणूक ह्या स्थान। स्वीकरी देवु ॥१६३९॥

१७८ मूलविठलु. १७९ आवेशु. १८० धर्मस्थळ

शांभवी नदी तीर। वणिकालें महानगर।
जाल्ले नाना कविवर। प्रसिद्ध ते हांगा ॥१६४०॥

विजयीन्द्रालि आठवण। माधवेन्द्रालें चरण।
वरदेन्द्रांक कोर्नु नमन। निवडी मूलिकापुर ॥१६४१॥

आइकूनु गांव्चें जन। जाल्लो रे गांवु पावन।
कृपा केल्लि नरसिंहान। जाल्ले धन्य आम्हि ॥१६४२॥

आरंभीले अलंकरण। नगराचे मार्गपूर्ण।
घरघरांतु आंगण। झाड्ताति स्त्रियां ॥१६४३॥

अतिथि अभ्यागत भरले। वैदिक वृंद बहु जमले।
स्वयं स्फूर्तिनें आइले। सेवक स्वयंपाकि ॥१६४४॥

ग्रामीण ते मुग्धजन। काणुकेच्या रूपान।
नारीळु शाक[१८१] हाडून। अर्पितातित श्रृद्धें ॥१६४५॥

तांदूळु धान्य समस्त। हाड्ताति प्रेमें ग्रामस्थ।
बहुतेक दानि गृहस्थ। दित्ताति धन रूपी ॥१६४६॥

हरिद्वर्णाचे[१८२] तोरण। कदळीपूगादि[१८३] फलान।
इक्षुदंड[१८४] फल पुष्पान। सोभितरे गांवु ॥१६४७॥

कळ्ना गा राति दिवसु। विद्युद्दिव्याचो प्रकाशु।
चारिं दिशां समावेशु। भक्तजनालों ॥१६४८॥

वांट्ताति एक्डे पानक। आनि एक्डे खाण तान्नीक।
खंचै वेलारि जेव्णाक। सिद्धता पूर्ण ॥१६४९॥

१८१ रांद्रयकाय. १८२ पाच्चें. १८३ केळे पोप्पळ. १८४ कोब्बु.

मूलिका नगरांतु। प्रती गृह गृहांतु।
प्राप्त तितुल्या स्थानांतु। भलैंति सोइरे ॥१६५०॥

आटरा पेंटेचे लोक। घेव्नु आपलि काणुक।
अर्पी व्यवस्थापकांक। भक्तिपूर्व ॥१६५१॥

जाव्नई खंचा उणाव। आज्ञा करी गुरुराव।
आश्या नज्जरे दुभावु। समजा बरें ॥१६५२॥

दान धर्मादि विपुल। अन्न आहार बहुल।
दिव्कारे दीन दुर्बल। पाव्कारे तृप्ति ॥१६५३॥

मूलिकेचे महाजन। आज्ञा शिरसाधारण।
कोर्नु करी निर्वहण। कर्तव्य रूपी ॥१६५४॥

लोकां कोर्च्या तारण। हे महानुभाव कारण।
म्होणूचि निवडिता तारण। संवत्सरु स्वामी ॥१६५५॥

ज्योष्ठशुद्ध द्वितीयेक। शिष्य स्वीकार कोर्चाक।
श्रेष्ठ अशिश निर्णयाक। आइले श्रीगुरु ॥१६५६॥

शांभवी नदी तीरि। शास्त्रोक्त विधानारि।
यति प्रणवानुसारि। केल्लें शास्त्रबद्ध ॥१६५७॥

वेदवाद्यादि घोष। भर्लो बाह्य आकाश।
भजन भक्तीचो आवेश। अवर्णनीय ॥१६५८॥

अर्धक्रोश[१८५] ती यात्रा। शोभली पुण्यक्षेत्रा।
वट्रूलि पुण्यगात्रा। दर्शनऽचि पुण्य ॥१६५९॥

१८५ देडमैलि

श्री गुरु चरितामृत

अष्टाक्षरी महामंत्रु। हंसु हरी स्वतंत्रु।
उपदेशी ते गुरुमंत्रु। शिष्य श्रेष्ठां ॥१६६०॥

नाम सुधीन्द्रतीर्थ। दवरिले खरे सार्थ।
दयाळु सुकृतीन्द्रतीर्थ। उद्धरि आम्का ॥१६६१॥

भरली सुधर्म सभा। उजळीगा दिव्यप्रभा।
शशि सूर्य श्री सन्निभा। गुरु आणि शिष्यालि ॥१६६२॥

उभय श्रींचे चरण। पूजूनि तीं महाजन।
तांच्या गुरु दर्शनान। जाल्ले लोक धन्य ॥१६६३॥

पट्ट काणुकाचि राशी। पाट्टचा पीतांबरा बर्शि।
हार पुल्लांचि सुवासी। व्यापिले पूर्ति ॥१६६४॥

पंडितालें प्रवचन। गुरुद्वयालें गुणगान।
कर्तीति विद्वज्जन। आनंदी सगळीं ॥१६६५॥

उपरांत दान दक्षिण। चाल्लि महा समाराधन।
सर्वांक अन्नदानान। जाल्लि तृप्ति बरी ॥१६६६॥

सुधीन्द्र सुधीन्द्र म्हणता। कोण तो नित्य स्मरता।
नारे ताक्का भय चिंता। सर्वथा सत्य ॥१६६७॥

आरोग्य भाग्य वृद्धि। जात्ता बुद्धि समृद्धि।
ऋण रोगादि न बाधि। वदारे सदा मुखी ॥१६६८॥

मूलिकेचो उग्रनरसिंहु। उळ्ळालाचो लक्ष्मीनरसिंहु।
मंजेश्वरि भद्रनरसिंहु। प्रीति ह्या यतिसिंहाक ॥१६६९॥

सहस्रकुंभाभिषेक। केल्लो भद्रनरसिंहाक।
बसले थैं चातुर्मासाक। शिष्यप्रेमि स्वामि ॥१६७०॥

मूलिकावास स्वाम्याक। ते तांका प्रीतिदायक।
श्रीव्यासरघुपतीक। आवडे[१८६] तो गांवु ॥१६७१॥

आइले तरि कर्नाटकाक। पाव्तले श्रीमूल्कीक।
मूलिकेचे धन्य म्हणूक। आनन्दु आम्कां ॥१६७२॥

काशीमठ जीर्णोद्धाराक। कर्नाटकाचे प्रमुखांक।
दिल्लि आज्ञा कार्यरूपाक। हाड्तले म्होणु ॥१६७३॥

तरवूराचो[१८७] स्वर्ण ध्वजु। उद्घाटिता यतिराजु।
आलप्पींतु शिष्य सहजु। वसतिकरि बहुदिन ॥१६७४॥

१८६ प्रीतीचो. १८७ केरळाचे प्रसिद्ध देवळ.

जाल्लें सुधीन्द्रां देहालस्य। बावुलें सुकृतीन्द्रां आस्य[१८८]।
प्रीतीन करि सेवा अवश्य। शिष्यान तितुले ॥१६७५॥

शिष्या सहित संचार। चारिही वत्सर निरंतर।
करीत सगळे मठ मंदिर। उद्धरिले गुरूंनी ॥१६७६॥

गुरुशिष्य समवेत। आलप्पिचान गोश्रींत।
येव्नु पाव्ले त्वरित। भाग्य गा महाजनालें ॥१६७७॥

कालाक ना काळवेळु। भयंकरू तो कराळु।
सर्वांक गिळ्ता तो व्याळु[१८९]। ना ताक्का वाइट बरे ॥१६७८॥

गेल्लें शिष्यां खातिरि। बळी पड्ले गुरु रुजेरि।
महावैद्यानि औषधकरि। रोग न सुटे सर्वथा ॥१६७९॥

१८८ तोंड. १८९ सर्पु.

गुरूलें नियम पथ्य। राख्लें ताज्जेन स्वास्थ्य।
तरि परतले अस्वास्थ्य। शिष्य सगळे तळमळें ॥१६८०॥

एकदा अनिरीक्षित। गुरूंक आलस्य विपरीत।
तरी स्नान आणि संध्याविहित। आचरली शीघ्र ॥१६८१॥

कोर्नु वसन[११०] परिधान। जाल्ले पीठारि विराजमान।
नरसिंह स्तुतिचें पठण। करिऽत आज्ञा करि ॥१६८२॥

एक्किशआट शियाळें। अर्पुका नरसिंहाक वेगळें।
अभिषेक कोर्नु संगळें। घेय्यारे प्रसादु ॥१६८३॥

व्यासरामालें पूजन। कोर्का आजि शिष्यान।
आंगारो तिलकु लावून। कोरोंति अलंकार आम्का ॥१६८४॥

११० वस्त्र.

अशिशं सांग्ताचि स्वामि। दृष्टि भुवनेन्द्रांवरी नियमि।
आपुले गुरुराय यमीं। लक्षिले वरदेन्द्रां ॥१६८५॥

वदन जाल्ले तेजःपुंज। उळदूनु सुधीन्द्रां सहज।
सुब्बाभट्टादि बहुद्विज। निरीक्षितातित ॥१६८६॥

आइलो पवित्र दिवसु। आमंत्रिता वेदव्यासु।
प्राणलोकाचो अधीशु। तो सहित आजि ॥१६८७॥

शिष्या कडे तीर्थप्रसादु। घेत्ताति ते यतीन्द्रसाधु।
दिवसु भरी नाना उपदेशु। करी सुधीन्द्रां ॥१६८८॥

श्रीसुधीन्द्रां कडून। पठैलें उपनिषद् पूर्ण।
आइकता एकाग्रमनान। स्मरलें नारायणा ॥१६८९॥

उल्लासितु गुरुराजु। जाल्लो क्षणात निस्तेजु।
पाव्लो वासवात्मजु। देह ते निश्चेष्टित ॥१६९०॥

श्रींले शिर भुज्यांचेरि। विश्रमले निर्विकारि।
सुधीन्द्रालें नयनवारि। आवरी ना कोणि ॥१६९१॥

द्विजालो वेदघोषु। शिष्य लोकालो शोकावेशु।
अवसरीं शोकसंदेशु। पसरला क्षणान ॥१६९२॥

काशीमठाचि कीर्ति। दिग्दिगांतु ती ख्याति।
वाढैलेले महायति। सुकृतीन्द्रतीर्थ ॥१६९३॥

सुकृतीन्द्र तेजो रत्न। संन्यासींगेले शिरोरत्न।
वेंकटेशाले भक्तरत्न। पाव्लें निजधामा ॥१६९४॥

सात्तीस संवत्सर। श्रीसुकृतीन्द्र गुरुवर।
विराजिले ते पीठावर। काशीमठाचे ॥१६९५॥

सुकृतीन्द्रतीर्थ सूत्र। सुधीन्द्र म्हळचारि व्याख्यात्र।
पूर्णगुरु कृपा पात्र। आत्मपुत्र ॥१६९६॥

एकदा काहीं पंडित। आम्ही पुराण सांग्तात।
तुम्हि आम्चे व्याख्येंत। रममाण जाव्का ॥१६९७॥

अशिशं सुकृतीन्द्रां सांग्लें। स्वामी मनांत हास्ले।
योग्य उत्रां सूचविले। वेदव्यासानि क्षणि ॥१६९८॥

प्रेषित दूतांक सांग्लें। व्यासान पुराण बरैलें।
ताणे आम्का समजाइलें। उरलें ना काहिं ॥१६९९॥

श्रवणानंद वेगळें। मनन ध्यान तें निराळें।
आम्हि ते अनुसरलें। आणि आइकु कितें ॥१७००॥

पंडितां म्हणताति पंत। भक्तांक म्हणताति संत।
पंत सोद्दिताति ग्रंथ। संतु स्वंतु चोइता ॥१७०१॥

आइकूनु उपनिषद्वाणि। येत्तां मोणूइ सांगनि।
अदृश्य जाल्लो त्या स्थानि। निरुत्तरी नीट्टु ॥१७०२॥

असले आम्चे सुकृतीन्द्र। शांतमुद्रेचे चंद्र।
सकल सद्गुणाचें सांद्र। भूषण ते यतिकुलां ॥१७०३॥

ग्रंथकर्ताल्या भाग्यान। तांच्या दिव्य हस्तान।
घेत्ल्या मुद्राधारण। बसरूर गाविं ॥१७०४॥

श्रीमद् सुकृतीन्द्रतीर्थ स्वाम्यालें वृंदावन, कोच्चिन्

विरोधि संवत्सर। आशाढ पूर्णिमा रात्र।
आषाढ वद्य पाड्यावर। जाल्ले स्वामि मुक्त ॥१७०५॥

कठोर हो वज्राघातु। सहन करी ते ख्यातु।
गुरु करुणांक पात्रु। यती सुधीन्द्रु ॥१७०६॥

चौपन्न वर्ष आयु। वैकुंठा पाव्लो गुरुरायु।
जाइनि गा शिष्यसमुदायु। अनाथ दीन ॥१७०७॥

सुकृतीन्द्र करसंजात। श्रीगुरू सुधीन्द्रतीर्थ।
आम्हि सर्व सुरक्षित। हात्तांतु तांच्या ॥१७०८॥

जाल्लें गा यात्रास्थळ। गोश्रीचे तिरुमल।
वेंकटपतीले देवळ। तिरुपति सार्खें ॥१७०९॥

मुंबैचान मंगळूर। उत्तरदिशा कुंदापुर।
बसरूर तिरुवनंतपुर। समस्त गांवचे ॥१७१०॥

एर्नाकुळं कायंगोळं। तिरुपोण्तरा आनि वैखं।
चेराइ चेन्नमंगलं। तरवूर सहित ॥१७११॥

चेर्तला कोडगुन्नूर। कोझिक्कोड पय्यन्नूर।
कासरगोड परूर। भरलें गा जनपद ॥१७१२॥

अंतिम दर्शना खातीरि। भर्ला ते जनपद भारि।
संन्यासांक विधि प्रकारि। पवित्रदेहा ॥१७१३॥

वेंकटपतील्या परिवारिं। प्राणाल्या[१९१] दावे भागारि।
रचविलें भू गर्भारि। समाधिस्थान ॥१७१४॥

१९१ हनुमताल्या

अमूल्य वस्नाभरण। पीतांबरादि परिधान।
कोर्नु शरीरालंकरण। देहाक दिव्य ॥१७१५॥

वेदवाद्यादि घोष। भक्तिप्रेमाचो आवेश।
जय जय जय निघोष। गगनभेदि ॥१७१६॥

बांधिलें वृंदावन। राब्ला वैऽरि भुवनप्राण[११२]।
जाल्लि समाराधन। भूतमात्रां सर्व ॥१७१७॥

विपुल गा दान दक्षिण। दिल्लि सुधीन्द्रतीर्थान।
करीत गुरुगुणगान। जाल्ले धन्य सर्व ॥१७१८॥

जन्मस्थानी वृंदावन। एक्कऽचिगा निदर्शन।
वेंकटपती हे जाण। सांगू किते आम्हि ॥१७१९॥

११२ मुख्यप्राणु

प्रातःकाळी भक्तजना। स्मरा सुकृतीन्द्र चरणा।
भय नारे जनन मरणा। मुक्त गा तुम्हि ॥१७२०॥

श्री गुरुचरितामृताचो काशीमठपरंपरा नामक
संचो अध्यायु समाप्तु।
॥श्री कृष्णार्पणमस्तु॥

विश्व कोंकणी पुस्तकालय WORLD KONKANI CENTRE LIBRARY

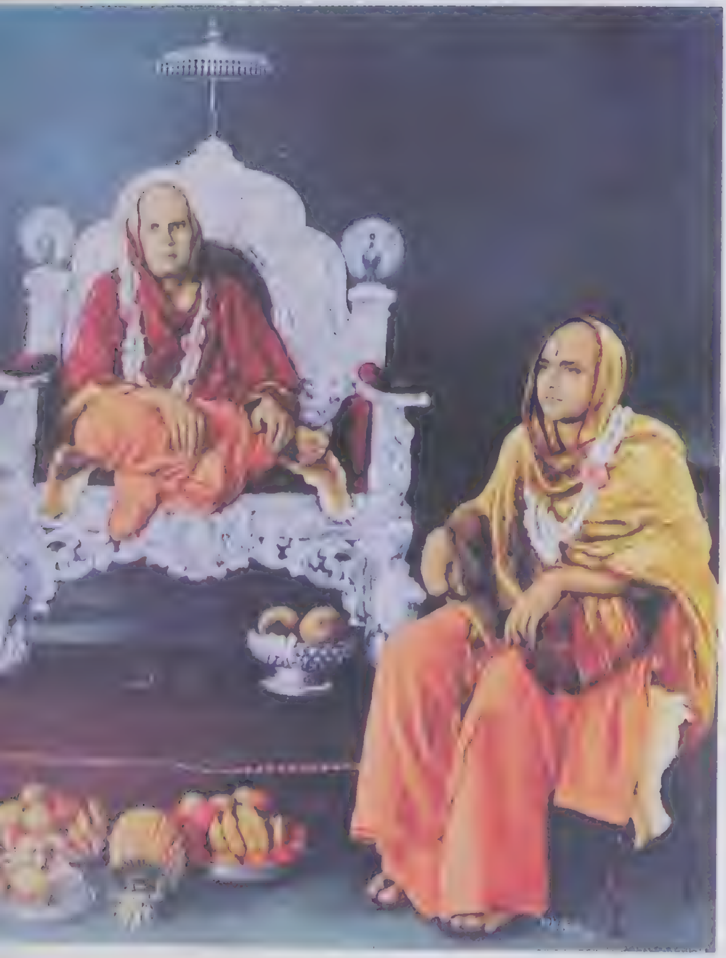

आसनासीन गुरु शिष्य द्वय
(श्रीमत्सुकृतीन्द्रतीर्थ स्वामें आनि
श्रीमत्सुधीन्द्रतीर्थ स्वामें)

ॐ

श्री गुरुचरितामृत

श्री काशीमठ परंपरेचो
श्री सुधीन्द्रचरित नामक

सात्वो अध्यायु

श्री गुरुचरितामृत

॥श्री गणेशायनमः॥ ॥श्री गुरुभ्योनमः॥

मंगलाचरण

हे विश्वंभरा विश्वचेता। विनायका विधिताता।
सर्वज्ञा सर्व समर्था। मति प्रकाशा ॥१॥

तूंचि रे सर्वकारकु। सकल देवांक प्रेरकु।
सृष्टि स्थिति संहारकु। ज्ञानदाता ॥२॥

हे प्राकृत गुण शून्या। गुण पूर्णा विबुधमान्या।
दयानिधे देव वरेण्या। दैत्यारि पाव ॥३॥

जगाचे सृष्टि व्यवहार। मुख्य प्राणाल्या द्वार।
रमादेवी मुखांतर। बांधीं जीवलोका ॥४॥

सर्वै तुग्येल्या आधीन। सर्वांक तूचि कारण।
ज्ञान हे समजून। जात्ले गा मुक्त ॥५॥

गोविन्दा रमारमणा। अनंता सहस्रानना।
सर्वात्मका स्वरमणा। स्वतन्त्र कर्ता ॥६॥

सर्वेश्वरा श्रीधरा। कमलनाभा करुणाकरा।
रूप तुजें परस्परा। अभेद म्हणति ॥७॥

दिय्यागे तुम्मि सन्मति। सरस्वती भारती सती[१]।
गुरु चरिताचि ही ख्याति। म्हणेन तुमचीचि ॥८॥

गुरु चरितामृताचो। अध्यायु हो अंत्याचो।
खरे बहुत महत्वाचो। सुधीन्द्र कीर्ति ॥९॥

१ पार्वती

वाचकानो हे आइका। मेज्जे प्रारब्धऽचि म्होण्का।
चरितामृता विषय कोळ्का। संग्रहीत ॥१०॥

अशिशं प्रयत्न करिता। कायेंद्रियांक शिथिलता।
आपो आपी हे घडता। कळेना काइं ॥११॥

पीडोल्बण बहु बेगि। नांव पडलें हृद्रोगी।
प्रारब्ध हे अवश्य भोगि। माग्ले देवा गरूंक ॥१२॥

गुरु शिवाई अन्यगती। ना गा हे सत्य संगति।
हरिद्वारी व्यास संगाति। वसती गुरुराव ॥१३॥

प्रश्नु हो जीवन्मरण। ते रात्रभरी गुरु स्मरण।
करितां स्वप्नांतु सूचन। गुरुनाथानि दिल्लि ॥१४॥

रेंजाळ नारायणु। कर्ता तुक्का मार्ग दर्शनु।
विचारि म्हणता क्षणु। जाल्लो रे जाग्रतु ॥१५॥

भुवनेन्द्राल्या करुणे। ख्यात गा रेंजाळ घराणे।
ते तरी बहु शहाणे। ओळखति सर्वा ॥१६॥

वैद्य विद्येंतु निपुणु। नारायण शेणै म्होण्णु।
शस्त्र चिकित्सेंतु द्रोणु। ताक्का शिष्य बहुत ॥१७॥

आपुल्या शहाण[2] पणें। श्री सुधीन्द्रांक ताणे।
वृषण वृद्धीचे दुखणे। शमविले शस्त्र क्रियें ॥१८॥

हरि गुरुलो भक्तु। निर्दम्भु निरासक्तु।
निष्कामि सेवा सक्तु। पात्रु गुरु कृपेक ॥१९॥

२ बृद्दोंतु

कळैले रोग निदान। आईकता हे शेणैन।
आपुल्या शिष्या कडून। करैता शस्त्र क्रिया ॥२०॥

तुम्ही तरी हरिदास। समाजाचे विशेष।
गुरुले भक्त निर्दोष। कोरुयां ही सेवा ॥२१॥

म्हळ्ळां माक्का द्रोणु। शिष्यु मेज्जों असामान्यु।
शस्त्रक्रियेंतु अर्जुनु। नांव सुब्बरावु ॥२२॥

वैद्यु उपेन्द्रनामकु। पूतु मेज्जो सहायकु।
दोघालो स्वभावु एकु। नय विनयिं ॥२३॥

उपेन्द्र आणि सुब्बरावु। परस्परांतु प्रीति भावु।
सन्देहाक ना गा ठावु। स्मरुयां गुरुनाथा ॥२४॥

गुरु सूचना स्वप्नांतु। शेणै वैद्याल्या उत्रांतु।
धैर्यान हांवे मनांतु। कळैले बन्धु वर्गा ॥२५॥

धाव्लो केशवदासु। अमेरिकेंतु ताज्जो वासु।
मेज्जेरि ताक्का बहु ध्यासु। भ्रातृ प्रेमि ॥२६॥

पत्नी रमादेवी सहित। आइलो आइकूनु धावत।
धैर्य दिल्लें तान्नि बहुत। उरा निर्भीत ॥२७॥

सहोदरु सर्वोत्तमु। असदृशु ताज्जो प्रेमु।
सानु तो विठ्ठल नामु। जाल्ले ते एक्डे ॥२८॥

जेष्ठालें सेवाभाग्य। चिकित्सा ती मेळ्का योग्य।
धन कित्तुले तरी त्याज्य। कोर्चा जाल्ले सिद्ध ॥२९॥

दूरभाषि मायावति [3]। गुरु कडे केल्लि विनंति
शस्त्र क्रियेक अनुमति। व्यास रामाकडे ॥३०॥

माग्गूनु करा आशीर्वादु। अनुग्रह करा प्रसादु।
कर्ता सदा श्रींचो यादु। असो कृपा तुमचि ॥३१॥

तशिशं विनंति राघवेन्द्रांक। केल्लि माग्ले प्रसादाक।
पात्रु जाल्लो त्यांच्या दयेक। पाव्ला प्रसादु सकाली ॥३२॥

परमाचार्यालो [4] प्रसादु। सन्देशु आणि आशीर्वादु।
मेळ्ताचि जाल्लो आनंदु। अभय गा खरें ॥३३॥

अनेक मठ मन्दिर। आइकता ही खबर।
आयुवृद्धि खातीर। प्रार्थि प्रीत्यादरें ॥३४॥

३ हरिद्वार. ४ श्री सुधीन्द्रतीर्थ

देवा कडे माग्गून। धाड्ला प्रसादु प्रेमान।
त्या सर्वां वन्दून। माग्तालों यश ॥३५॥

कटीलु दुर्गापरमेश्वरी। पोळली राजराजेश्वरी।
होरनाड अन्नपूर्णेश्वरी। पाव्ल्यां प्रसाद द्वारा ॥३६॥

श्याम मुरळी गीता। केशवाली पुत्र दुहिता।
प्रार्थन करी विशेषिता। अमेरिकेंतु ॥३७॥

विश्व हिन्दू परिषदाचे। राष्ट्रीय संघ वर्गाचें।
सन्मित्र संघ संस्थेचे। करी देवा मागणिं ॥३८॥

सांग्ता एकि खरी गोष्ट। बन्धु सहित सात आट।
रोगी आणि गरीबा नीट। रुग्णालयांतु हांवे ॥३९॥

कोर्नु सेवा ती बहुत। कर्तव्य म्होणु विहित।
पुण्य कार्य ते सतत। राख्ले माक्का सत्य ॥४०॥

भद्रगिरीचो कामेश्वरु। विठ्ठलु सर्वेश्वरु।
ताज्जि लीला अपारु। न कळे मन्दा ॥४१॥

कृतज्ञता हे गुण। त्या साठि हे आठवण।
कोर्नु सर्वालें ऋण। पावैता बरें ॥४२॥

शुश्रुषालय श्रेष्ठ। मल्या नामक वरिष्ठ।
वैद्य तरी बहु निष्ठ। कर्मयोगी ॥४३॥

हृत्पिंडा चारी दिशेन। लाइताति नाळ काडून।
तुमचे तुमका जोडून। सोडि शल्य तंत्री ॥४४॥

गुरुपूर्णिमा दिवसु। केल्लो रुग्णालयीं प्रवेशु।
उत्तरा नक्षत्र जन्म दिवसु। बुधवारु मेज्जो ॥४५॥

आधुनिक्कु हो सुश्रुतु। सुब्बरावु तो ख्यातु।
उपेन्द्रु वैद्यु तरुणांतु। श्रेष्ठु विवेक मति ॥४६॥

तोवै स्नातकोत्तरी। शस्त्रचिकित्सेंतु निरंतरी।
सुब्बरावाक सहायकरी। अनुभवी फार ॥४७॥

गुरुलें ऋण पावैता। आपुली विद्या पूर्णता।
गुरु पुत्राक शिक्कैता। धन्यु गा सुब्बरावु ॥४८॥

तज्ञ वैद्य प्रधान। ओळखलें दासाक पूर्ण।
हांचि कथा सानपण। आइकल्या बरे ॥४९॥

शस्त्रक्रिया कक्षेंतु। हरिकथेचो वृत्तांतु।
वैद्य सगळे स्वभावांतु। सात्विक रे बरे ॥५०॥

सुकृतीन्द्राल्या पुण्य दिवसु[५]। शस्त्र क्रिया ही विशेषु।
गुरु कृपेन मेळ्ळो यशु। वैद्या आणि रोगीक ॥५१॥

आमुचे वैद्य कौटुंबिकु। सात्विकु मूर्ति नामकु।
तोचि हाक्का मार्गदर्शकु। आत्मीयु आमुचो ॥५२॥

शस्त्रक्रियेंचे वेळी। धन्वन्तरी तूंचि सांभाळी।
दिसैले वैद्यांक तत्काळी। चिकित्सा रूप ॥५३॥

आपुलो म्होण्णु मोगान। राख्लो गा तूंचि येवून।
चिकित्सा उपरांत क्षण। शक्ती चमकण्याचि ॥५४॥

५ आषाढ वद्य पाड्वो.

दिल्ली ही देवा खरें। मूलिकेचा नरहरे।
आयुष्य हे दिल्ले बरें। स्वीकरी सेवा ॥५५॥

काशीमठाधिपती। वेदव्यासु आणि रघुपती।
श्री गुरु सुधीन्द्रयती। पाव्ले ह्या रोगग्रस्ता ॥५६॥

शस्त्रक्रिया उपरांत। सुकृतीन्द्राले वृत्तान्त।
लिखाण आरंभिता चिंतीऽत। मुक्तात्मा गुरूलें ॥५७॥

वृन्दावनस्थ पर्यंत। रचिले गा चरितामृत।
बृहस्पतिवार परत [६]। पाव्लो घरा शीघ्र ॥५८॥

नारायणदासु शिरसी। सेवेंतु गा अहर्निशि।
झरैले देह विश्वासी। बरो भक्तु गुरुलो ॥५९॥

६ शस्त्रक्रियेचे अट्टादिवसु

दुव्वो सुन्नो घराकडे। मनान मेळचो एकडे।
करी प्रार्थना देवाकडे। आरोग्य मजकुणी ॥६०॥

सुधाकरु ईश्वरु एकाकी। विजयीन्द्रु स्वयंपाकी।
भांव्ड पुत्र विवेकी। करी सेवा मनस्वी ॥६१॥

गुरुदत्तु विठ्ठलप्रभु। आनन्दु नागेशप्रभु।
धन आणि मनान विभु। जामात मेग्गेलें ॥६२॥

हरि रामु वेंकटेशु। तीन्ही पुत्ताले समावेशु।
पत्न्या सहित सेवावकाशु। लाब्भलो नित्य ॥६३॥

सूरी गिरी दिनकरु। सक्कडां मेज्जेरी प्रीत्यादरु।
गणेशु महेशाचों विवरु। सांगूका नाक्का ॥६४॥

आश्रमाचे आत्मीक। लक्ष्मणदासादि भावुक।
पत्नी सहित देवाक। कर्तालें मागणी ॥६५॥

देव्ळाचे धर्मदर्शि। मित्र वर्ग ते अहर्निशि।
वाड्चाक आयुष्यराशि। प्रार्थीत सगळें ॥६६॥

हे सर्व पुण्य बलान। मिळ्ळे हे आयुष्यपूर्ण।
गुरु चरितामृत बरोन। पावैन ऋण तांचे ॥६७॥

चरितामृताचे लिखाण। कर्ता तो शुद्ध मनान।
जगदीशदास जाण। शिष्यु आमुचो प्रियु ॥६८॥

प्रार्थिता देवा कडे। एकांति बैसोन एकडे।
लक्ष्य मेज्जा आरोग्याकडे। अहर्निशि ताक्का ॥६९॥

लता उषा भारती। अनुराधा धाक्लि ती।
सदा देवाल्या माग्ताती। दुहिता चौघ्यो ॥७०॥

श्रीमती पद्मा राधा। स्नुषा ह्या करीत सदा।
नाना व्रत संबंधा। प्रीतिगा मजकुणी ॥७१॥

दासकीर्तन मंडळी। देव्ळा अर्चक सगळीं।
आश्रमाचे वर्ग वेगळी। प्रार्थिता विठोबाक ॥७२॥

आइका सांग्ता खबर। हांव सक्डां सांगणार।
माक्का सांग्ताले सांब्बार। कोणि ही नांति ॥७३॥

चिकित्सेच्या आद्ल्या दिवसु। मनांतु धर्लों विश्वासु।
सांसारिकेचो ना क्लेशु। भुग्यों बाळां बरीं ॥७४॥

दुहिता[७] सगळी विवाहित। पुत्र सर्वै जोडतात।
सुन्नो सगळचो विहित। गृहिण्यो स्नेहीं ॥७५॥

देह ऋण देव ऋण। पितृ ऋण ऋिषि ऋण।
वर्णिता श्री हरिगुण। पावैला शक्तितः ॥७६॥

पत्नी जाल्या कालवश। वर्षजाल्लि पंचदश।
चिकित्सेंतु तरी ना यश। नष्ट इतरांक ॥७७॥

हांव तरी मोकळों। जन्मा आइल्यां एक्लो।
वत्नाहीं हांव अकेलो। स्वप्न हे क्षणिक ॥७८॥

धीरस्तत्र न मुह्यति[८]। ही गीतेचि उक्ति।
याद करीत राति। जाल्लो म्हणा निर्ममु ॥७९॥

७ दूव. ८ धीरलोक भीनाति.

अपमृत्यु येनाशी। राख्ला देवान राशी।
महामृत्यु रूपान येशि। म्हणेन तथास्तु ॥८०॥

मेज्जे सर्व गुणावगुण। आइले मनांत प्रतिक्षण।
निद्रा औषध व्यर्थ जाण। सरली ती राति ॥८१॥

रुग्णालयाचे सेवक। करैताति स्नानादिक।
काडून उपवीतादिक[९]। पांगुरी वसन ॥८२॥

दांपून अक्षिपटलं[१०]। स्मरीत मनांतु अचल।
संजीवाले[११] चरणयुगल। ध्यानी आणि मनीं ॥८३॥

तोपली[१२] सूव एकी। निश्चेष्टित गा निद्रालोकी।
पाव्लो हांव एकाकी। न कळे पुढे ॥८४॥

९ [illegible] १० डोळेपातियो ११ [illegible] १२ [illegible]

शस्त्रक्रियेच्या उपरांत। चारि तासान[१३] स्मृतींत।
जागृति मनोमयांत। निश्चेष्ट करण ॥८५॥

वैद्याले उत्रं स्पष्ट। आइकता श्रवणपुट।
अन्नमयकोश[१४] निश्चेष्ट। उर्ला मनोमयीं ॥८६॥

अजामिळालि कथा। भागवतांत सांग्ल्या यथा।
यम आणि विष्णु दूता। करी संवाद तेन्ना ॥८७॥

मरणोन्मुखु आइकता। तांचो संवादु पूर्ता।
विष्णुदूतु जिंकता। जाल्ले आयुर्दान ॥८८॥

ती घटना आठवून। केल्ले नारायण स्मरण।
दोनि दिवसाचे दुखण। प्रारब्धाचे ॥८९॥

१३ चारी घंटेन १४ देहभान

तिसऱ्या पंचमी दिनि[१५]। चातुर्मासा बस्ताति मुनी।
सुधीन्द्र राघवेन्द्रानि। स्वीकरी दीक्षा ॥९०॥

रुग्णालया लिखाण। आरंभिले तत्क्षण।
सुकृतीन्द्रालें वृन्दावन। प्रवेश कथन ॥९१॥

चारी दिवसान संपूर्ण। शिष्य स्वीकार विवरण।
ते वैभवाचे व्याख्यान। केल्ले रुग्णालयां ॥९२॥

तुम्मि दयाळु श्रोत्रृगण। आइका हें सावधान।
म्हणूनका व्यक्ति कथन। गुरु महिमा ही ॥९३॥

मुखार्चे हे जीवन। हरि सेवेक ठेवण।
तागेली कीर्ति विवरण। परंपरेचि ॥९४॥

१५ आषाढ़ वद्य पंचमी.

आइका हे गुरुचरित्र। श्री सुधीन्द्रालें पवित्र।
वाढविले धर्म क्षेत्र। भारताद्यन्त ॥९५॥

केरळाचे महानगर। अंजिकमळ[१६] नावांवर।
वणिक[१७] लोकालें माहेर। ओळखति सर्व ॥९६॥

गांव्चे तिरुमलदेवळ। वैष्णवालें श्रद्धा स्थळ।
दान धर्मादि विपुल। चाल्ता देव स्थळी ॥९७॥

नित्योत्सवु गा मंगळ। पंच पर्वादि सकळ।
चलैता वैदिक मंडळ। विश्वस्था[१८] घेव्नु ॥९८॥

पालकी लालकी उत्सवु। आराट नांव जलोत्सवु।
वाढवी सात्विक स्वभावु। जन पदांक ॥९९॥

१६ एर्नाकुळ १७ व्यापारी १८ धर्मदर्शि

सारस्वत सद्गृहस्थ। देवा विषयीं नेमस्थ।
देव्ळा येव्नु स्वस्थ। बस्तलें ध्यानीं ॥१००॥

आचारवन्त बहुतेक। तरी वृत्तिने ते वणिक।
थंचे लोक स्थाइक। म्हणतिं मोदलाळी ॥१०१॥

मोदलाळी अर्थु दुडुवाळु। धन किंवा गुणादि आळु[११]।
श्रेष्ठ गुणाचो संभाळु। कर्तले सर्व ॥१०२॥

श्रद्धेचे केन्द्र देवळ। उदयास्त भर्तीति आळ।
सांगताति पूजेचे वेळ। भजन गीत ॥१०३॥

म्हणता सर्वै भक्तीन। आरतीं प्रसाद घेवून।
घरांतूई उलवण। देवा विषय ॥१०४॥

११ व्यक्ति

द्वादशस्तोत्र पठण। मध्वरायाले गुणगान।
धर्मगुरुलें चरण। स्मरती नित्य ॥१०५॥

असले बहुत घराणे। गांवि आस्स पुराणे।
वसती गंभीर पणे। द्विज संस्कारी ॥१०६॥

तस्सले एक पुरातन। घराणे शेणै नावांन।
ओळखताति महाजन। सात्विक तांका ॥१०७॥

वत्स गोत्री गुणयुत। जीवित गा शास्त्रसम्मत।
शान्तेरी कामाक्षी दैवत। कुलाक त्यांच्या ॥१०८॥

इष्ट देवु वेंकटपती। सत्कर्मातु सदा रती।
सांपत्तिकेचि स्थिति गति। म्होणूया मध्यम ॥१०९॥

जीवन सदा संतुष्ट। दैवेच्छा ती इष्टानिष्ट।
अशिशं समजी घनिष्ट। क्षमी सुखदुःखि ॥११०॥

रामदासु शेणै भक्तु। उत्तम संस्कार युक्तु।
घराण्येंतुलेन नियुक्तु। देव कार्या ॥१११॥

देव्ळा धर्म दर्शीतु। शेणै तो प्रमुखांतु।
निष्ठा देवकार्यांतु। निमग्नु गा सदा ॥११२॥

जन्मले पुत्र चारी। धाक्लो शांतु भारी।
सदाशिव नामधारी। सुविचारी सदा ॥११३॥

क्षय नाम संवत्सरु। अधिक चैत्र बुधवारु।
वद्य द्वितीया अवसरु। जन्मलो युगपुरुषु ॥११४॥

एक्कोण्शें सोवीस। इसवी मार्च एकवीस।
अवतरी पुण्य विशेष। शेणैल्या घरचें ॥११५॥

जाल्लो बाळु प्रवर्धमानु। चोइल्या तरी सामान्यु।
चिंतकु हो असामान्यु। न कळे कोणां ॥११६॥

शाला शिक्षणाभर्शि। देव भाषेचो अभ्यासी।
स्तोत्र पाठादि सोणासी। करी पठण नित्य ॥११७॥

उपनयना उपरी। सन्ध्यावन्दन त्रिवारी।
निश्चित कालावरी। करी नियमा नित्य ॥११८॥

हरिनाम संकीर्तन। कर्नीशि ना समाधान।
वेंकटपतिलें दर्शन। करी प्रदक्षिणा युक्त ॥११९॥

तीर्थ प्रसाद सेवन। त्या उपरान्तचि जेवण।
चल्ताले हे सहजपण। अदांभिक खरें ॥१२०॥

अध्यात्मिक श्रवण मनन। आसक्ति वाढ्लीं दिन दिन।
सहचराकडे स्नेहान। वर्ति हसन्मुखी ॥१२१॥

गुण हे भविष्यसूची। अनुभवु अनिर्वाची।
पूर्वी हो एकु सिद्धूऽचि। न कळें मन्दा ॥१२२॥

योगच्युत ते बहुत। जन्मा येत्तात्ति परत।
श्रीमन्त किंवा योगी घरांत। प्रगटती गुप्त ॥१२३॥

एक सन्धिग्राही। तत्त्वांतु निस्संदेही।
मित्र वर्गाक सुस्नेही। सदाशिवु बरो ॥१२४॥

ग्रहण धारण शक्ति। धर्माचरणेंतु आसक्ति।
वेंकटपतीचेरी भक्ती। वाढ़ी दिवसो दिवस ॥१२५॥

परदुःख कातर। सदा सुस्नेहपर।
मित्रांक कर्ता सहकार। निष्कामि गा बाळु ॥१२६॥

कनिष्टांचेरी कनिकरु। समवयस्कांक उदारु।
जेष्ठांक नमस्कारु। कर्ता नम्रतेन ॥१२७॥

सर्वांक आदरणीयु। उत्रांतु नय विनयु।
मृदु वचनी कमनीयु। सुंदर वपु ॥१२८॥

न जाणे दैव योगु। घडलो गा मातृ वियोगु।
थरथरलो सर्वांगु। सदाशिवा क्षणी ॥१२९॥

भुर्ग्या करी समाधान। रामदास शेणैन।
आपणचि मातृ स्थान। घेत्ले निर्भयु ॥१३०॥

देव्ळा कार्य निर्वहण। उद्योग धन संपादन।
बाळ भुर्ग्या पोषण। करी निष्कामी सदा ॥१३१॥

दुःख दारिद्र्य न कळता। प्रीतीन परिपोषिता।
उणाव खंचा न करिता। रक्षिले बाळां ॥१३२॥

आपण करी उपवास। भुर्ग्या कळुनई क्लेश।
प्रकटकरी सदा तोष। दैन्ये विना ॥१३३॥

सदाशिवु सूक्ष्म मति। बाप्पैलि दया प्रीति
ओळखता मनाचि क्षति। अव्यक्त गा ती ॥१३४॥

दर्शवी वेंकटपती। तळमळता चित्त वृत्ती।
नयनी अश्रु गळताती। आठोनु पितृ प्रेमु ॥१३५॥

जीवनावश्य सामान्य। विचार ते असामान्य।
हीचि संस्कृति गा मान्य। भारता मध्यें ॥१३६॥

सदाशिवालो सहाध्यायीं। दुर्बळो असाहायी।
जीवना ना अन्योपायु। तरी डांभिकु ॥१३७॥

पोटभोर्नु उद्दाक पीव्नु। मित्राक कोळ्नई म्होण्णु।
तृप्तीन ढेंक काण्णु। भाइरी पडलो ॥१३८॥

दारिद्र्याचि दारुणता। सदाशिवु ओळखता।
दुखानांतु[20] केळे घेत्ता। दित्ता मित्रा दोनि ॥१३९॥

२० आगडी

केळे दोनि एक्सानी। सगळी ती गिळोनि।
ढेंक्लो तो होडानि। हासी सदाशिवु ॥१४०॥

ही रे खरी ढेंक। जाल्लि तृप्ति भुख्खेक।
अशिशं म्हणता मित्राक। आइलो डोळे भोर्नु ॥१४१॥

सदाशिवा तू ज्ञानी। दारिद्र्या तुक्का सांगऽनी।
जेव्नाशि दिवस दोनी। तरी गर्वी हांव ॥१४२॥

हासलें आलिंगूनि। विसरले भुख्खे काणी।
तरी सदाशिवाल्या मनीं। दुरन्त चित्र ॥१४३॥

पदवी पूर्वीचे शिक्षण। पूर्णता जाल्या क्षण।
सुकृतीन्द्राल्या आज्ञेन। आइलो सुब्बाभट्टजी ॥१४४॥

सदाशिवु जाल्लो संन्यासी। सुधीन्द्र नावांन यशस्वी।
सुकृतीन्द्र मनोल्लासी। तेजस्वी यतिराजा ॥१४५॥

संन्यासाक पूर्व। सांग्ले उपदेश पर्व।
पुत्ताक रामदासान सर्व। आईक हे जनां ॥१४६॥

काशी मठ संस्थान। कीर्तिवन्त पुरातन।
व्यक्तचो केद्दाण ही सान। संस्थान होड ॥१४७॥

ताज्जो उत्तराधिकारी। जाल्लो तू मुखारी।
विचार करी पूर्वापरी। कर्तव्य थोर ॥१४८॥

भुवनेन्द्र वरदेन्द्रादि। सुकृतीन्द्रा सार्खे प्रवादि।
काशीमठु हो अनादि। जात्ता कैवारी तूं ॥१४९॥

व्यक्ति ताज्जोमानु सानु। काशी मठु तो महानु।
रक्षण करी सांभाळ्नु। दीक्षा परंपरेचि ॥१५०॥

संन्यास ते अग्नि दिव्य। चोय्ताना तरी भव्य।
चोव्का सव्यापसव्य[२१]। जतन करी सर्व ॥१५१॥

ना पिता पुत्र बन्ध। सूत्र गोत्राचो संबन्ध।
ना सांसारिक निर्बन्ध। आणि तू सदा शिवु[२२] ॥१५२॥

निर्धारु करी ह्या क्षण। तुटले आमचे ऋण।
शेणै अश्रुकुलेक्षण। आलिंगुनी पुत्रां ॥१५३॥

आमुचे एकवीस पितृ। पूत जात्लें तें पवित्र।
धन्य जात्लें वत्स गोत्र। तूरें कारण वत्सा ॥१५४॥

२१ दावे उज्व्यान. २२ मगळप्रदु

वेंकटपतीली दया। ताज्जि खरी कृपाछाया।
राख्कता चऽल निर्भया। सुकृती गरु कडे ॥१५५॥

जन्मदातृ जननी। खरे दाना अधिकारिणी।
देवान तिक्का वरैनि। आता मार्गु सुकरु ॥१५६॥

वाणी जाल्ली स्थगित। रामदासु गद्गदित।
अविरळ अश्रुपात। धुतलें सुवक्ष ॥१५७॥

रडताति सोदर सगळे। शोकसागरी बुडलें।
तरी आत्माक कळलें। धन्य कुळ आमुचे ॥१५८॥

मुखावैलि कथा। पुनरुक्ति गा वृथा।
सांगल्या पूर्वी यथा। अध्याय सांचांतु ॥१५९॥

वृन्दावनस्थ गुरुक। दंड सहित मुक्तांक।
नमस्करी मस्करीक। प्राणा सहित ॥१६०॥

आषाढ बहुळ द्वादशी। यती सुधीन्द्र त्या दिवसी।
पीठाधिपती काशी। जाल्लें विधिवत् ॥१६१॥

विषेश पूजा वेंकटपती। तश्शीं व्यासरघुपती।
सिंहासनी विराजती। तरुण यती दिव्य ॥१६२॥

दंड धारी यतीक। समर्पितात्ति काणुक।
जन गुरु उपदेशाक। करी आंगऽचि कान ॥१६३॥

सुधीन्द्राले सुधा वचन। आपुले गुरुलें गुणगान।
गुरु भक्त गोश्री जन। आइकती बरें ॥१६४॥

चातुर्मासु जात्तरी। गोश्रीचान श्रीस्वारी।
संचारु करीत भारी। पाव्ले क्षेत्र मूल्की ॥१६५॥

मध्व शास्त्राचे अध्ययन। कोर्का म्हणून पूर्ण।
घेत्ले गा मार्गदर्शन। निमित्तमात्र ॥१६६॥

माधव भट्ट विद्वांसु। गुरु चरणाचो दासु।
तत्त्वज्ञनी जिज्ञासु। पंडितु सुधांत ॥१६७॥

आपुलें तें शास्त्र ज्ञान। श्री गुरुक समर्पून।
धन्यु जाल्लो गोकर्ण। माधवार्यु ॥१६८॥

सर्वज्ञाले सर्व मूल। गुरु सदा मनन शील।
नित्यानुष्ठानाचे बल। बळकट गा ताचे ॥१६९॥

श्री गुरुचो व्यवहारु। शिष्या शिकोका शिष्टाचारु।
करी नित्य संचारु। जाल्लो कालु कुब्जु[२५] ॥१७०॥

न्याय व्याकरणादि समस्त। पूर्ण बोधाले तत्त्वार्थ।
सर्वैं स्वामेक करगत। म्हणारे ते समर्थ ॥१७१॥

सुकृतीन्द्राली कार्यावळ। तांचे हृदयांतराळ।
समजले सुधीन्द्र सरळ। हाड्ले कार्य रूपा ॥१७२॥

पुरातन देव्ळ आदि। उभारिले यथाविधि।
वाडैलि देव सन्निधी। पूर्व प्रमाणें ॥१७३॥

वैदिकाले कर्मांग। जाव्का सुंदर सर्वांग।
ते धर्माचे प्रधानांग। अश्शी म्हण्पी गुरुली ॥१७४॥

२५ गुड्डो.

वेद धर्म नित्य नूतनु। तो अश्वत्थु पुरातनु।
हाडा विचार नूतनु। जिरैता गा तो ॥१७५॥

वैदिक जाव्का बुद्धोंत। गृहस्थ आस्का गुणवंत।
समजूका मध्व सिद्धांत। उभयत्रानि ॥१७६॥

संस्कार केन्द्र देवळ। अस्सूका ती निर्मळ।
पूजा वैभवादि सकळ। चोलोका वैभवानि ॥१७७॥

हे व्यर्थ म्हणू नयीं। देवाक उणे ना कायीं।
उर्का समाजा केन्नायीं। सात्विक सर्व काळ ॥१७८॥

आदिमांक दहा देवळ। जीर्णोद्धार तत्काळ।
निवडिलो मठु भट्कळ। कौटुंबिक[२६] काहीं ॥१७९॥

[२६] कुटुंबाचे देवळ

मंजेश्वर आणि हेम्माडी। नूतन देवस्थान कोंचाडी।
नरसिंहु उप्पिनंगडी। केल्ले नवीकरण ॥१८०॥

मूडबिदरे पूत्तूर। गुरुपुर ब्रम्हावर।
भद्रगिरी आनदपुर[२७]। देवळा काय कल्प ॥१८१॥

यात्रिक लोकां खातिरी। प्रयागी मठ विस्तारी।
बांधी जना एक सूत्रारी। देव्ळा द्वारी खरे ॥१८२॥

सर्वत्र पूजा विनियोगु। कोर्का ताक्का तुम्ही त्यागु।
त्यजारे अति भोगु। देवाकुणी तोडें ॥१८३॥

स्वाम्यालो हो संदेशु। तांचो गोडु उपदेशु।
पटलो जना आदेशु। गुरु गौरवु मनीं ॥१८४॥

२७ केरळाचे एकु गावु

श्री काशीमठाचे प्रथम यतिवर्य श्रीमद् यादवेन्द्रतीर्थालें,
मृत्तिकावृंदावन, भट्कळ (उ.क.)

समाजाक संजीविनी। सुधीन्द्रालि मधुर वाणी।
ना म्हणा ती केन्नाही कोणी। जाल्ले दानी कृपण ॥१८५॥

देवाल्या सेवा निमित्त। परस्पर जाल्ले प्रेमयुक्त।
जे गरुक विहित। करी शिष्य सगळे ॥१८६॥

भजन पूज्य यजन। सामूहिक समाराधन।
जे कृतीन जन कल्याण। जाल्ले ते साधी ॥१८७॥

धर्मश्रद्धेचे साधन। आगमोक्त देवस्थान।
ह्या विषयीं रात्रं दिन। चिंतीत गा स्वामी ॥१८८॥

सुधीन्द्राले संभाषण। ते वेदांत बोधन।
ना गा व्यर्थ उलवण। जशी जल्पकाले २८ ॥१८९॥

२८ वाचाळी

प्रेरक आणी प्रचोदक। वैचारिक सैद्धांतिक।
दुख्खैनांति मानसिक। आबाल वृद्धां ॥१९०॥

समजूनका स्वाम्यांक। हे सामान्य साधक।
सिद्धरे ते स्वाभाविक। अवतारा समज ॥१९१॥

बसले तरी पूजेक। असंप्रज्ञा स्थितीक।
पाव्तले साहजिक। उपरी संप्रज्ञा ॥१९२॥

अल्पाहारु सात्विकु। लालसा ना जिव्हेकु।
विहार विनोद अध्यात्मिकु। नारे वार्ता लौकिक ॥१९३॥

वदनी उपनिषद्वांणि। विवरिताति संभाषिणी।
लौकिक वार्ता तोंडातुनी। आइकनी रे आम्ही ॥१९४॥

बालक तरुण वृद्ध। साधक बाधक बद्ध।
विज्ञानी वेदांती सिद्ध। भेटती स्वाम्यां ॥१९५॥

ते ते स्वरूप ओळखून। संभाषती मोगान।
कोणा निंदा निराकरण। नेण गा ते ॥१९६॥

ज्योतिष्य आणि गणित। जाल्ला स्वाम्यां करगत।
वेद वेदांग सहित। अभ्यासिला पूर्वी ॥१९७॥

सरस कविताचि शक्ति। शृंगार रसांतूचि भक्ती।
मेळ्ना सोध्ल्यारि द्विरुक्ति[२९]। लक्षण काव्यांचि ॥१९८॥

संन्यास पूर्वीचि विरक्ती। वेंकटपतिरी भक्ती।
खंचातूहि ना आसक्ति। देवाशिवाइ ॥१९९॥

२९ एक्कचि शब्दु दोन वेळा.

केवल लोक संग्रहाक। कर्म करतात्ति कौतुक।
ना अपेक्षि फलादिक। निवृत्त कर्म ॥२००॥

सारस्वतांचि वसति। मैसूर राज्यांतु आस्सति।
स्वीकाल्र्या वैश्यवृत्ति[30]। कृषि वाणिज्य ॥२०१॥

काशीमठाचे आम्मि। ब्राम्हण वैष्णव धर्मि।
जाणीव ही त्या कम्मि। जाणतले जाण ॥२०२॥

दिल्ले तान्नि आमंत्रण। बिन्नह पत्र बरोन।
संस्थानिकांक कळोन। मैसूराच्या ॥२०३॥

काशीमठाधीशांक। गौरवी स्वागताक।
सिद्धजाल्ले संस्थानिक। पूर्व रीत्या ॥२०४॥

30 व्यापार

राजमर्यादा सहित। कोर्का स्वाम्यांक स्वागत।
एक दिवसाचे सेवार्थ। कोर्का गौरवान ॥२०५॥

ही प्राचीन सनद[३१]। केल्लें रायाक विषद।
सकल राज मर्यादं। केल्लीं स्वाम्यांक तेन्ना ॥२०६॥

अश्वारोही पाय्दळ। गज ध्वज पताका धवळ।
नानायुध खड्ग ढाळ। शोभ्ता वाही सेनेंचि ॥२०७॥

भेरी नगारी वादन। लक्षोप लक्ष महाजन।
मध्ये हार समर्पण। करी भक्तीन लोक ॥२०८॥

तीर्थहळ्ळि सागर नगर। बिळगी आणि सिद्धापूर।
जिल्लेचे दक्षिणोत्तर। संचरी चरित्रार्ह ॥२०९॥

३१ शासन

मूल मठाचे बांधण। केल्ले बहु त्वरितान।
हे कार्य सुकृतीन्द्रान। आज्ञापिल्या पूर्वि ॥२१०॥

स्वाम्यांक दृष्टि तरुणांकडे। जाव्का विद्यावंत पुढे।
त्या कारणी एकडे। मेळैलें श्रीमन्तांक ॥२११॥

मेधावि माधव मामु। म्हणताति मणिपाला ब्रम्हु।
सुवासीनी राममामु। बाबापै साहुकार ॥२१२॥

विठ्ठल मामु कोटेश्वर। रामरायु बैलूर।
कोग्ग कामती गंगोळ्ळीवर[३२]। प्रसिद्धगा आईले ॥२१३॥

तरुण जाव्का पदवीधर। डाक्टर इंजिनीयर।
बुद्दोंत विद्यार्थि पर। अस्ल्यारि गरीब ते ॥२१४॥

३२ हेच्. लक्ष्मीनारायण कामती महा मेधावी.

काशीन्तु ब्रम्हघाटांतु अस्सो मूल मठु श्री काशी मठ संस्थान

त्या करिता धन संग्रह। कोर्का सोण्णु आग्रह।
जात्लेगा अनुग्रह। ईश्वरालो ॥२१५॥

जाव्का समाज विद्यावंत। देश भक्त आणि गुणवंत।
उर्का सेवाभावांत। ऋण पावोंका परत ॥२१६॥

स्वाम्याले ध्येय समजलें। बुद्दोंत प्रवृत्त जाल्लें।
संग्रहाक आरंभिले। मूल निधीक ॥२१७॥

काशीमठ उपाधि। लाइली अभ्युदय निधी।
दिल्ले धन स्वाम्यानि आदि। वाढ्लि ती अपार ॥२१८॥

जाल्ले अपार विद्यावंत। गौड सारस्वतांत बहुत।
ते तरी स्वाम्यां शरणागत। सेवादर्शि ॥२१९॥

लग्नादि शुभकार्याक। सामूहिक उपनयनाक।
अभ्युदय निधी सहायक। काशी मठाचि ॥२२०॥

निधिचे विधि विधान। रची आपुल्या धी शक्तीन।
निष्कामि योगी स्वामेन। घेत्ल्या सलहा निमित्त ॥२२१॥

लहानवयारि संस्कारु। मेळ्का उत्तम विचारु।
पुष्टि तुष्टिचो आहारु। विहार श्रेष्ठ ॥२२२॥

चिंतीत यती कुलोत्तमु। केल्लो केशवेन्द्रा प्रणामु।
भुवनेन्द्रबालकाश्रमु। रचिला गा वसुपुरा[३३] ॥२२३॥

माता पितृ वियोगी। अनाथ दुःख भोगी।
तसल्या खातिरी योगी। निवडी गांवु कार्कळ ॥२२४॥

३३ बसरूर

सुकृतीन्द्र विद्यार्थि निलय। अनाथांक सहाय।
विद्यादि दीव्नु अभ्युदय। साधिलें तांचें ॥२२५॥

थंचे ते विद्यार्थि। आजि जाल्लेति उद्योगपति।
गुरूक विसरनांति। सेवा निष्ठ सगळे ॥२२६॥

अंबलमेडु ग्रामु। निवडिता गरु निस्सीमु।
वरदेन्द्र बालकाश्रमु। स्थापिलें थांगा ॥२२७॥

सुधीन्द्राल्या नावांन। चल्ता मेडिकल मिषन्।
एर्नाकुलं चे जन। अध्वर्य गा ताक्का ॥२२८॥

सकल मानवाचि सेवा। नाना क्रमान कोर्का देवा।
तूंचिरे वासुदेवा। सर्वातु भरला ॥२२९॥

“वासुदेव सर्वमिति”। गीतेचि भगवदुक्ति।
समजी श्री सुधीन्द्रयती। अर्थु श्लोकाचो ॥२३०॥

देवालि उपासना। तशिशं उपकार करा जना।
चोल्का समाराधना। कल्याण कार्य ॥२३१॥

करारे लग्न उपनयन। साधारे जनाले कल्याण।
औषधोपचाराक धन। दिय्या दुर्बळचांक ॥२३२॥

कोर्नु धन पुंजीकृत[३४]। साध्का तुम्मि परहित।
ना तरी द्विज जन्म व्यर्थ। सारस्वतालें ॥२३३॥

गौड सारस्वत ब्राम्हण। करारे संघटन।
सेवा संघ स्थापून। सेवा करा दीनाली ॥२३४॥

३४ सग्रहकोर्नु.

ओरोग्य विद्या अन्न। हें तीन्ही महादान।
घेवूनयीं धन त्या कारण। घेत्ल्या तरी पाप ॥२३५॥

घोरणा ही माल्गडाली। सूत्र कर्ता महर्ष्यांली।
मौल्य सगळी कोसळली। परचक्रीं[३५] म्हणा ॥२३६॥

तरी असो दान बुद्धि। बाह्यांतर्यान शुद्धि।
समाजांतु सुख वृद्धि। साधा गा बरें ॥२३७॥

सारस्वतान वरैले वेद। संरक्षिले पाठ भेद।
आम्मि नामधारी अबोध। केवल अर्थ कामि ॥२३८॥

देव्ळांतु करा वेद शाला। गरीब रोग्यां वैद्यशाला।
चलया बरी पाठ शाला। महाविद्यालय ॥२३९॥

३५ परकीय राज्यसत्ता

भारताचि परंपरा। परहित आणि तत्त्वपरा।
ही आमुचि विचार धारा। ऋषि मुनीली ॥२४०॥

स्वाम्याले हे विचार। मना बस्लें तरुणांवर।
विचार करीत गंभीर। दिल्लें सहाय स्वाम्यां ॥२४१॥

देव्ळ मठ मंदिर। अशिशली ती निद्रापर।
आइलो आत्ता जागीवर। गरुपदेशिं ॥२४२॥

काहीं उठले पड्लें। कांही स्वप्नांतु उरलें।
काहीं जांभई काडलें। निदले गा परत ॥२४३॥

केल्लि स्वाम्यानि जागृति। केरळीं विचार क्रान्ती।
आमुच्या देवालया प्रति। लावु नये हातु ॥२४४॥

सुचविली प्रतिभटना। प्रेरणा दिल्ली युवजना।
आमुचि संस्कृति ही उर्ना। गेल्यारि देवळं ॥२४५॥

थर थरले सरकार। कारण हाक्का गुरुवर।
आश्वासन दिल्यावर। शमले गा तरुण ॥२४६॥

सारस्वताले देवळं। व्यवस्थित आणि निर्मळ।
सामूहिक प्रार्थना स्थळ। ना प्रवेशु आम्चो ॥२४७॥

केरळ देवस्वं समिती। कोर्नु आमुचि संस्कृति।
राख्ले सुधीन्द्रयती। साष्टांग तांका सहस्र ॥२४८॥

कर्नाटकांतु ही स्थिति। येव्चीं समजता यती।
नेतारु गोपाल कामति। प्रेरणा स्वाम्याली ॥२४९॥

स्वामी प्रेरक सर्वांक। अष्ट मठांच्या स्वामेंक।
एक्डे कोर्चांक गोपालाक। आज्ञा दिल्ली गुरुनि ॥२५०॥

उठले हिन्दू समाज। काड्ले होड आवाज।
मुख्य मंत्री देवराज। आइलो शरण तेन्ना ॥२५१॥

ह्या संघटना पाट्ल्यान। तपस्वी स्वामे उल्र्यान।
वर्ले आमुचे देवस्थान। विसरू कशिशं गुरूं ॥२५२॥

निगमागम पाठ शाला। वैदिका खातिर बांधिल्या।
तुम्मि गृहस्थ मेळ्नु संभाळा। अशिशं आज्ञा गुरूली ॥२५३॥

धन अधिकार मदाचे। धर्मदर्शि देव्ळाचे।
येत्ता झगडे कोर्चे। भक्ती तांका स्वाम्यांची ॥२५४॥

तरी स्वामी हसन्मुख। झगडताति एकामेक।
काहीं वेळा मुखामुखी। काडी हाथ पाय ॥२५५॥

सर्वांक सांभाळून। सोडारे चेर्डु पण।
आम्मि सर्वै एक जाण। घेय्या प्रसादु ॥२५६॥

स्वाम्यालो मन्दहासु। दित्ता तांका सन्तोषु।
घाल्ताति तो प्रेम पाशु। स्वामी आमुचे बरें ॥२५७॥

कोपान आइलेलें गुरुकडे। वत्तान नागा झगडे।
सर्वै कीर्तिताति उघडे। स्वामी चर्या ॥२५८॥

असले गा आयस्कांत। श्री सुधीन्द्र गुरुनाथ।
सांगू कित्ले दृष्टांत। अनुभवी तुम्का ॥२५९॥

नाना स्वभाव धर्मांचे। नाना संशयु वृत्तिंचे।
नाना दैव भूताचे। उपासक लोक ॥२६०॥

एक्लो दर्शना पात्री। ना ताक्का दैवाचि खात्री।
स्वाम्यांकडे विचारीति। दैव कोण? ॥२६१॥

एक्लाक येत्ता कर्लुट्टि। आनि एक्लेक चातकुट्टी।
एक्लो आस्स कुटकुटी। ताक्का बोब्बर्यो[३६] ॥२६२॥

रवळनाथ आनि भैरव। जकणीं पंजुर्ली दैव।
काहीं लोकांक बसव[३७]। येत्ता आंगारी ॥२६३॥

एक्लेलें दर्शन फट्टी। आनि एक्लेलें घट्टी।
ते दैव घटानघटी। म्हणतले लोक ॥२६४॥

३६ सक्काड भुत्ता नाव. ३७ भुनानाव

दैव तरी कित्ले बा। सांगूनु सर्ना आबा।
एक्लेक जाईचि बाबा। आलि तुर्कालो[३८] ॥२६५॥

कळ्ता स्वाम्यांक सगळे। जीव स्वरूप वेगवेगळे।
तत्त्वज्ञान तें आगळे। न कळे जना ॥२६६॥

लोक तरी मन्द करणी। एक्लो एक्ल्या अनुसरणी।
श्रद्धेन कर्तीति सांगणि। कळो न कळो ॥२६७॥

अन्य देवता द्वारी। तो वै पूजीताति हरी।
बहुजन्मा नंतरी। जात्ले ज्ञान तांका ॥२६८॥

हे जाणती गुरु। म्होण्णु सर्वांचेरी आदरु।
ना तांका तिरस्कारु। धोर्का वाट बरी ॥२६९॥

३८ साइबाले दैव.

हो एकी गोष्ट पुळ्ळी। बसरूरांत घडली।
म्हण्णी एक गृहस्थाली। स्वाम्यां कडे ॥२७०॥

मठा माग्लान हाइगुळी[३९]। भीवैता सर्वकाळी।
कोर्का पूजा त्रिकाळी। बांदा गुडी ॥२७१॥

हस्ले स्वामे त्या वेळी। आम्ही दित्तालें गंधागुळी।
माऽरी ती त्या हाइगुळी। राब्ना पळें हांगा ॥२७२॥

घटना बहु विनोदी। सांगिल्याक ना गा बुद्धि।
व्यास देवाल्या सन्निधि। येना अन्य दैव ॥२७३॥

ताक्का जाव्का मनन। देवा मुखारी दैव कोण।
आस्का सदा हरिस्मरण। हेतु हो स्वाम्यालों ॥२७४॥

३९ एक भुत्ता नाव.

काहीं पतित विप्रांक। सारस्वत कुलजातांक।
कोरोनु प्रायश्चित्तादिक। मेळैलें शिष्य वर्गा ॥२७५॥

संभाषणेंतु चतुर। आंम्चे सुधीन्द्र गुरुवर।
ना खंचांतु आतुर। क्रिया शास्त्र प्रमाणे ॥२७६॥

श्री सुधीन्द्रतीर्थाली ख्याति। तांचि संघटना शक्ती।
आइकूनु विश्वेशतीर्थ यती। पेजावराचे ॥२७७॥

त्याच्या पर्याय काळीं। दीव्नु सर्व बिर्दावळीं।
कृष्णा सहित मध्वालि। करैलि भेटी स्वाम्येक ॥२७८॥

पाद्य पूजादि सन्मान। केल्या पुत्तिगे मठाचान।
सर्वांचेरी प्रेमान। वर्ति स्वामें आमुचें ॥२७९॥

गौड सारस्वता तीनी। धर्माचार्य हे अस्सूनि।
प्रीतीन परस्पर भेट्टुनि। बहुत काळीं ॥२८०॥

आचार्य शक्ति त्रय। जाल्यारी लोका अभय।
समाजाचे अभ्युदय। जात्ले गा हे निश्चय ॥२८१॥

ही इच्छा गुरुनाथालि। कारकळकारांक समजली।
चातुर्मास्या नांवा खाली। कोर्या मिलन त्रिमूर्त्यां ॥२८२॥

महासभा भरवूनु। बिन्नह पत्र ते बरोनु।
तीन्ही स्वाम्यांक भेट्टुनु। मागणी केल्ली आदरें ॥२८३॥

समाजाच्या सौभ्याग्यानिं। तीन्ही स्वामी एकठिकाणी।
चातुर्मास स्वीकारुनी। आशा पुरविली ॥२८४॥

श्री द्वारकानाथ यती। श्री सच्चिदानन्द सरस्वती।
श्री काशी मठाधिपती। सुधीन्द्रा सहित ॥२८५॥

कैवल्य गोकर्ण काशी। कारकळांतु चातुर्मासी।
व्रतनिष्ठ गा विशेषी। भाग्य आमुचें ॥२८६॥

आसेतु हिमाचल। भर्ले पळें जन जाल।
भाग्यपुरी कार्कळ। पावन गा यतिसंगे ॥२८७॥

अविस्मरणीय ते दीस। जनालें भाग्य विशेष।
प्रवचन उपन्यास। यति त्रयालें ॥२८८॥

श्री भवानी शंकरु। श्रीरामु विठलु वीरु।
श्री व्यास रघुवरु। घेत्ता पूजा त्रिकाळ ॥२८९॥

महासमाराधन। उत्सव भजन पूजन।
गुरुपाद पूजनेन। जाल्लें धन्य लोक ॥२९०॥

समाजाक आध्यात्मिक बल। दिवैलेले प्रबल।
स्वामें आमुचें प्रेमळ। सुधीन्द्रार्य ॥२९१॥

राम नाम ते लिखित। तेरा कोटी गा खचित।
कासरगोड गावांत। सन्निधि वेंकटेशा ॥२९२॥

रामनामाचो यज्ञ। कोर्चा श्रीसुधीन्द्र कारण।
समाजाचे एकी करण। आणि रामकृपा ॥२९३॥

साध्ले हे स्वाम्यानी। पांच दिवसाच्या यज्ञी।
संतर्पण दान धर्मानी। जाल्लोगांवु पवित्र ॥२९४॥

अष्टग्रह योगकालु। क्षेत्रा वासाक हो वेळु।
योग्य गा पूजा त्रिकालु। करुं रामेश्वरां ॥२९५॥

अपार शिष्य मंडळी। वैदिक आणि गृहस्थमंडळी।
रामेश्वराक चालली। निमित्त सेतु स्नान ॥२९६॥

पुढ़े पाविले परिवार। काशी गुरु बरोबर।
आइले आत्तां रामेश्वर। यात्रा पूर्णतिक ॥२९७॥

देव्ळा विश्वस्थ मंडळी। घेव्नु सर्व बिर्दावळी।
स्वागत कोर्नु यतीली। धुल्लें चरण द्वय ॥२९८॥

परंपरा ही प्राचीन। घेत्ता गौरवु संस्थान।
व्यास रघुपतीक हो मान। ना गा अन्य मठा ॥२९९॥

स्वहस्तान स्वाम्यान। अभिषेकु केल्लो कलशान।
काशीच्या गंगा जलान। तृप्तु गा रुद्रु ॥३००॥

उपरांत यात्रिकानी। रुद्राक सेवा रुपानि।
अभिषेकु केल्ला सर्वांनि। गुरु सम्मुखि ॥३०१॥

चालि बोलींतु एकता। आम्चे गुरुली विशेषता।
आइका तुम्का सांगता। सत्य घटना ॥३०२॥

जाल्लो सानु अपघातु। बेळगांव शहापुरांतु।
सुजलोगा उज्वोहातु। स्वामि रायालो ॥३०३॥

अस्थि तज्ञान पोळोनु। मोडिली अस्थि जोडूनु।
घाल्का प्लास्टर म्होण्णु। सिद्धता केल्ली ॥३०४॥

जाव्नयी स्नानाक आतंक। व्यास रघुपती पूजेक।
तरी तुम्ही चिकित्सक। उपचार करा ॥३०५॥

साध्य ना स्नान पूजा। विश्रांति जाव्का गुरुराजा।
विनंती आम्ची सहजा। मान्य करा स्वामी ॥३०६॥

हसन्मुखी म्हणाले आइका। पूजा त्रिकालरि जाव्का।
असाध्यतरी चिकित्सा नाक्का। दैवेच्छा म्होण्णु ॥३०७॥

भिल्ले वैद्य सगळें। प्लास्टर विशिष्ट रचिलें।
काणु घाल्चे तशिश केल्लें। वंदूनु गुरु चरणा ॥३०८॥

भोग्गत दूखी स्वाम्यान। पूजाचे विधि विधान।
केल्ले वैभव पूर्ण। चकित गा सर्व ॥३०९॥

चाल्ले स्वामी मुंबैक। अल्पावधींतु गुण मुख।
वैद्या समूह सकळिक। म्हणाले अद्भुत ॥३१०॥

देह हे पंचभूत। कफ पित्त आणि वात।
व्यत्यासाक रोग व्रात। येत्ले गा साहजिक ॥३११॥

संचार तरी अविरत। पूजा प्रवचनादि सतत।
देहाकडे लक्ष्य दीनात। बिगडले गा स्वास्थ ॥३१२॥

गुरूली वसति बसरूर। खबर पाव्लि मंगळूर।
वैद्या घेव्नु आइले चार। सेवक गुरुवर्यालें ॥३१३॥

कोर्का चिकित्सा बरी। कोडियाला येव्का स्वारी।
मस्तक दवोर्नु चरणारी। विनंती करी वैद्य ॥३१४॥

दिव्का अवकाशु पूजेक। त्रिकाल आम्ही कोर्चाक।
मंत्राक्षतादि दिव्चाक। घाला प्रतिबंधु ॥३१५॥

पूजा तीन्ही एककाल। करा म्हणता वैद्यजाल।
सम्मति दिली तत्काळ। गरुनि त्या वैद्यां ॥३१६॥

अल्प औषधानंतरी। ताप गेल्लो देशांतरी।
वैद्यांक आश्चर्य भारी। गुरु हे वज्रकाय ॥३१७॥

लोकरंजनी आसक्ति। अंतरंगांतु विरक्ति।
स्वाम्यां सहज वृत्ति। आइक ही घटना ॥३१८॥

कापूंतु द्विग्विजयु। भरला जन समुदायु।
प्रकाशमयु दिग्वलयु। अवर्णनीय प्रभा ॥३१९॥

पुष्पालंकृत वाहन। मंगल वाद्या नादान।
चल्ता गा भजन कीर्तन। आइलें गुरु सकाली ॥३२०॥

नेसलेति सामान्य वसन। बैरासु एकु पांगुरुन।
सिंहासना कडे येवून। बसले ते शीघ्र ॥३२१॥

घेव्नु दिव्य पीतांबर। आइलो सेवक सत्वर।
नाक्का म्हणताचि गुरुवर। लाग्ले भय सेवकाक ॥३२२॥

पद्मनाभ पुराणिक। माल्गडो तो वैदिक।
केल्ली विनंती स्वामेंक। स्वीकार्का वसन ॥३२३॥

म्हणाले स्वामी पुराणिकाक। दिग्विजयु हो कोणाक?।
आम्का की पीतांबराक। सांगा पोळोयां ॥३२४॥

दिग्विजय स्वाम्येंक। पीतांबर धारीक।
पोळोच्या ह्या डोळ्यांक। आनंदु नाक्वे? ॥३२५॥

शिष्या खातिर पीतांबर। घेत्तातिं गुरु अंगावर।
जाल्ले हर्ष निर्भर। जय घोषान सगळें ॥३२६॥

बहु जनालो संतोषु। ती देव पूजा विशेषु।
ह्या तत्त्वाचो समावेशु। कृतींतु स्वाम्याल्या ॥३२७॥

पाक शास्त्राचे वर्णन। आइकूका गुरुल्या तोंडान।
तरी खंचांतु आकर्षण। ना त्या विरक्ताक ॥३२८॥

देवाल्या नैवेद्याक। कर्तांति भक्ष्य भोज्यादिक।
सर्वै वाड्तातिं स्वाम्येंक। सेवि अत्यल्प ॥३२९॥

घेत्ताति प्रसादु म्होण्णु। रसनेंद्रियाक स्पर्शूनु।
दवरी पेल्यान काण्णु। म्हणताति पवित्र ॥३३०॥

नैवेद्यु कोर्का विपुल। घेव्का गा प्रसाद फल।
पूजा जाव्का तरी सफल। वांटा प्रसादु सर्वां ॥३३१॥

आम्ही होड विरक्त म्होण्णु। ते प्रदर्शनांक हाण्णु।
डांभिक पण प्रदर्शन कोर्नु। फसविताति ॥३३२॥

कायावाचांतु सरळ। मनोभावांतु तरळ[४०]।
सुधीन्द्रा सर्खे विरळ। भाग्य गा आमुचे ॥३३३॥

विजयीन्द्रापासूनु यति। पूजिताति वेंकटपति।
गुरुरायांक आशा तिरुपति। निवासु कोर्का शान्त ॥३३४॥

४० सानचेई.

व्यास रामाले पूजन। वेंकटपतीलें दर्शन।
संतोष पाव्का शिष्यजन। आनन्दालयांतु ॥३३५॥

तिरुपतिचो तो अधिकारी। अण्णारावु संस्कारी।
स्वाम्याली श्री स्वारी। येत्ता हे आइकलों ॥३३६॥

आपुल्या स्वंत कुटीरांतु। राब्का स्वाम्यान तांतु।
दर्शनांक श्री देव्ळांतु। करी व्यवस्था बरी ॥३३७॥

परिवार सहित श्री स्वारी। राव्लि नारायणगिरी।
श्री गुरुवर्याल्या खातिरी। दिल्ली कुटीर तीनि ॥३३८॥

राब्ले तिरुपती दोनि मासु। देवाक सेवा विशेषु।
स्वर्ण गरुडारी वेंकटेशु। बस्लो वैभवारि ॥३३९॥

सारस्वत वैष्णवांक। आणि वेंकटरमणांक।
पूर्व संबन्धाक बहुतेक। कारण विजयीन्द्र ॥३४०॥

समाजाचे सर्व प्रमुख। पाव्लेति तिरुपतीक।
नित्य यज्ञ यागादिक। संतर्पणा युक्त ॥३४१॥

असंख्यात भजन मंडळी। वेद वेदांति सगळी।
हरिकथा भद्रगिरीली। चाल्लि आनन्दगिरी ॥३४२॥

सर्व देव्ळा धर्मदर्शि। राम दंडु काणिके भर्शि।
स्वामें द्वारा धनराशि। समर्पि वेंकटेशा ॥३४३॥

अण्णारावु नरसिंगरावु। चोव्नु स्वाम्यालो वैभवु।
जनालो तो भक्ति भावु। अपूर्व म्हणताति ॥३४४॥

उपरांत सुधीन्द्रयती। गोविंदराज पद्मावती।
भेट्टूनु कांची प्रती। निर्गमिले शीघ्र ॥३४५॥

कांची वरदराजु। श्रीरंगा रंगराजु।
भेट्लो आमुचो यतिराजु। अपार शिष्यां सह ॥३४६॥

मन वळलें उत्तरदिशेक। वेदव्यासाल्या बदरीक।
संकल्प मात्रान सिद्धतेक। लाग्ले गुरु सेवक ॥३४७॥

गुरु आज्ञा पालनेक। वसती पूजादि व्यवस्थेंक।
मुखारी पाव्ली प्रत्येक। व्यवस्था करी बरी ॥३४८॥

प्रवासु उणे कोर्नु। पूजा उपरी विश्रांति घेव्नु।
यात्रिकांक अनुकूल जाव्नु। व्यवस्था स्वाम्याली ॥३४९॥

पाव्ले यती इंदोराक। थंचान नर्मदा तीराक।
राव्ले विधि युक्त स्नानांक। ओंकारेश्वरा ॥३५०॥

ओंकारेश्वर मांधान्त। महाकाळु उज्जयिनींत।
तांचे दर्शन घेत। पाव्ले गणेशाकडे ॥३५१॥

बडेगणेशा भेट्टनु। पंचमुखा हनुमंता चोव्नु।
वेध शाला अवलोकूनु। हर्षिले गणितज्ञ ॥३५२॥

भारताचि राजधानी। देहली आइलो मुनी।
असंख्यात शिष्य वर्गानि। केल्ले स्वागत गरुक ॥३५३॥

गडमुक्तेश्वरा येव्नु। जान्हवींतु स्नान कोर्नु।
अभिषेक कलश भोर्नु। आइले श्री मठाक ॥३५४॥

कीलक संवत्सर नूतन। पाड्वेचि ती आचरण।
देहलींतु वैभवान। आचरती लोक ॥३५५॥

कुरु क्षेत्र पुण्य भूमि। थैंक पाव्ले श्री स्वामी।
स्नानादिक कोर्नु यमी। ब्रम्ह कुंडा ॥३५६॥

ज्या ठिकाणी गीता बोधु। जाल्ला कृष्णार्जुन संवादु।
ते जागेरि आमुचे साधु। श्री सुधीन्द्रानी ॥३५७॥

गीता भाष्य तात्पर्य। तत्त्वार्थाचे गांभीर्य।
सांगले भाष्य सौंदर्य। विद्वत्पूर्ण ॥३५८॥

लक्ष्मी नारायण मंदिर। बिर्ला कुलाचे सुंदर।
पाव्ले थैंक गुरुवर। दर्शनार्थि ॥३५९॥

तेजस्वी यतींक चोव्नु। गौरवान स्वागत कोर्नु।
विद्वत्सभा भरवूनु। आशीर्वादु माग्लो ॥३६०॥

सरळ संस्कृतान। केल्ले गुरूनी प्रवचन।
आइकूनु ते विद्वज्जन। हर्षिले बहूत ॥३६१॥

मथुरा यमुनातीर। ज्या जागेरी कृष्णावतार।
लीला जाल्लीं द्वापर। ते क्षेत्र पावन ॥३६२॥

कृष्णालि लीला भूमि। पाव्ले थैंक सुधीन्द्रस्वामी।
तीर्थ क्षेत्राच्या नियमि। केल्लें स्नान यमुना ॥३६३॥

द्वारकाधीशाले दर्शन। जन्म स्थळ तें पावन।
श्रीकृष्णलीला स्मरून। जाल्ले गा परवश ॥३६४॥

गोकुल आणि वृन्दावन। बर्साना गोवर्धन।
नन्दग्राम कुंजवन। दर्शिले गुरुवर्यांनि ॥३६५॥

राम नवमी दिवसु। व्यास रघुपतीलो वासु।
मथुरेंतु जाल्लें विशेषु। पूजादि तें घेव्नु ॥३६६॥

नाना भजन मंडळी। राम कृष्ण लीला सरळीं।
वाजवीत करताळी। नांचताती आनंदे ॥३६७॥

मथुरांतुलेन प्रयाग। प्रतिष्ठिले वासुकी नाग।
त्या गांव्चाक सुयोग। गुरु दर्शनाचो ॥३६८॥

मर्यादा पुरुषोत्तमु। परब्रम्हु गा श्रीरामु।
ज्या ठिकाणी वाल्मीकी महिमु। बरैता रामायण ॥३६९॥

KONKANI CENTRE LIBRARY

सीतामडि त्या नांव। वाल्मीकाश्रमाचो गांव।
चोय्ता आनंदी गुरुराव। पाव्ले गुहापीठ ॥३७०॥

त्रेतेचे पुण्य स्थळ। दर्शने मन निर्मळ।
अनुभूति गा अविरळ। जाल्ली गुरुराया ॥३७१॥

भारद्वाजादि आश्रम। पुण्य त्रिवेणि संगम।
अक्षयवटाराधन। कोर्नु विधियुक्त ॥३७२॥

काशीच्या स्वमठाक। पाव्ल्या तक्षण गुरूंक।
भेट्का विश्वनाथाक। मनोभिमान्या ॥३७३॥

इच्छा जाल्ली प्रबल। परिवार सहित सकल।
कलश भोर्नु गंगाजल। चाल्लें मंदिरा कडे ॥३७४॥

द्विजालें नमक-चमक। प्रियते विश्वनाथाक।
गंगाजल अभिषेक। जाल्लो रुद्र पठण ॥३७५॥

विन्ध्यवासिनी नावांन। अष्ट भुजेच्या दुर्गेन।
कृपा तिज्जे दर्शन मात्रान। जाल्ली म्हणा गुरूक ॥३७६॥

श्रीसूक्तादींचे पठण। शोडषोपचार पूजनेन।
सेविती मातेचे चरण। दिल्लो प्रसादु तेन्नां ॥३७७॥

सप्त क्षेत्रांतु प्रथम। येत्ता अयोध्येचे नाम।
ज्या ठिकाणी प्रगटी श्रीराम। ते धाम अयोध्या ॥३७८॥

नारायणालो अवतारु। दशरथालो रघुवरु।
जानकील्यो प्रियकरु। स्वामी हनुमंताचो ॥३७९॥

सगळे ते रामायण। स्मरिलें मनांतु स्वामेन।
दिव्य सरयू स्नानान। अर्घ्य गा आदित्या ॥३८०॥

श्रीरामालें लीला स्थळ। नन्दी ग्रामादि सकल।
सूर्य कुंड ते विमल। तीर्थ सेवी ॥३८१॥

शेषावतारी लक्ष्मणु। ह्या जागेरी तो महानु।
अदृष्य जाल्लेलो म्होण्णु। पडले नांव गुप्तार ॥३८२॥

क्षेत्र विधि यथोचित। श्रद्धायुक्त करीत।
हनुमान मंदिर सहित। दर्शिता गुरुरायु ॥३८३॥

अत्योत्साहु स्वाम्यांक। वोच्का शीघ्र हरिद्वाराक।
पाव्का बेगि हरिपाइरीक[४१]। पूजूया गंगा मय्यां ॥३८४॥

४१ गंगा पूजनेच स्थान.

प्रेक्षणीय ते हरिद्वार। निसर्ग रमणीय सुंदर।
वासु इच्छिती सुरवर। नित्य ह्या मायापुरा[४२] ॥३८५॥

गंगा माता सुरधुनी। खरे ती त्रिभुवन पावनी।
जान्हवी जगज्जननी। सती शंतनूली ॥३८६॥

गंगा दर्शन मात्रान। हर्षिलें सुधीन्द्रमन।
नित्य स्नान आणि पूजन। उलवण गंगा गंगा ॥३८७॥

सायंकाल गंगा पूजन। नौका कर्तीति पान्नान।
ताज्जेरी दिवो दवरून। सोण्णु प्रवाही ॥३८८॥

सहस्र सख्येन ज्योति। गंगेंतु होळताती।
चोव्नु लोक आनंदति। जै गंगा म्हणून ॥३८९॥

४२ हरिद्वार

आपांतु ज्योति पोळोनु। आपोज्योति करूनु।
वैदिकालो संध्यानुष्ठानु। पावन दर्शनीय ॥३९०॥

हरिद्वारांतु दशदिन। सरले गा आनंदान।
दक्ष कृत यज्ञ स्थान। चोइले क्षेत्र कनखलु ॥३९१॥

मानसा देवीलें मंदिर। बहु ऊंच दिस्ता सुंदर।
चढ़ले गुरु गिरिवर। दर्शना दुर्गेलें ॥३९२॥

पाठकानो हे आइका। घटना तुम्का कोळोंका।
सप्तर्षि धाम पोळोंका। ही आशा आमुचि ॥३९३॥

स्वाम्याल्या कोर्चा विनंती। सांग्चाक सर्वांक भीति।
घ्यानाशी तांचि अनुमती। धैर्य तरी कोणा? ॥३९४॥

केल्ले वृद्धांक मुखारी। सांगा गा तुम्मी तरी।
सप्तर्षि धामाचेरी। कोरुयां क्षेत्र विधि ॥३९५॥

साष्टांग कोर्नु स्वाम्यांक। व्हरा सप्तर्षि धामाक।
सप्तर्षिगेल्या स्मरणेंक। कालु हो योग्य ॥३९६॥

सांग्ले स्वाम्यानी आइका। मस्त जना सांग्चे नाक्का।
प्रातः काल उठानु वोच्का। सन्ध्या करी बरी ॥३९७॥

विषय कोणा सांगूनका। अशिशं सांग्ता आप्त सखा।
प्रातः काळी एकमेका। सांऽग्त जाल्ले पन्नास ॥३९८॥

स्नान संकल्प कर्ताना। गोत्रोच्चार कोर्का म्हणा।
आपुले गोत्र उच्चारिता। आस्स सप्त गोत्राचे ॥३९९॥

विषय कळता भावुक। जाल्ले जन्म सार्थक।
गोत्रज आम्ही सप्तक। जमलें पूर्व पुण्यें ॥४००॥

गंगेचि ही सप्तधारा। सप्त गोत्र गंगाद्वारा[४३]।
काशीमठु हांगा उभारा। करु विनंती गुरूं ॥४०१॥

आइकून हे यती। मना व्यास रघुपती।
चिंतीत बरे म्हणताती। आठैत गुरु पाद ॥४०२॥

तेन्नाचो तो संकल्पु। हो व्यास मंदिरा प्रकल्पु।
वर्णनातीत हांव अल्पु। न मेळ्ता शब्द ॥४०३॥

आमच्या समकालांतु। अस्ल्या ह्या कलियुगांतु।
श्री गुरू सुधीन्द्रवर्यातु। प्रगटला व्यासु ॥४०४॥

४३ हरिद्वाराचे नांव.

पाव्ला लक्ष बदरीक। व्यासाल्या पुण्य स्थळाक।
क्षणु हो युगु मनांक। दिस्तलें यतिराजा ॥४०५॥

उत्साही यात्रींकाली। वाहन चोल्चा लागली।
जैकार ध्वनी उमटली। बदरी विशाल की ॥४०६॥

हृषिकेशा उपरांत। चाळीस मैल दूरांत।
भागीरथि अलका संगमांत। राव्ली स्वाम्या सह ॥४०७॥

स्थळ नाम देवप्रयाग। प्राचीन कालीं बहुयाग।
दान वस्तूंचे बहु भाग। त्यजी विप्र ह्या स्थळी ॥४०८॥

संगमस्नाना नंतर। पूजा प्रसाद स्वीकार।
करीऽत जै जैकार। गुरु भक्त सगळे ॥४०९॥

रुद्रप्रयाग पाव्ताना। गेल्लो रवी अस्तमाना।
शीत वाताक असहना। आइकू ना जैकार ॥४१०॥

जन जाल्ले थंडगार। चुकती शब्दोच्चार।
बदरी आनी किल्ली दूर। प्रश्नु मांताऱ्यालो ॥४११॥

प्रातःकाल उठानु। हिम जलांतु नाव्हुनु।
जपा बस्लेति येवुनु। अंग उघडे ॥४१२॥

चोईताति पहाडी लोक[४४]। करी प्रणामु यतीक।
ध्यानस्थ श्री सुधीन्द्रांक। न कळे बा हे ॥४१३॥

नंद प्रयागादि संगम। गरुड गंगा ती दुर्गम।
स्नानादि करीत सुगम। पाव्ले ज्योतिर्मठा ॥४१४॥

४४ पर्वतीय जन

हेरदिवसु प्रातः काळी। निर्गमली मठ मंडळी।
भेटि घेव्नु नरसिंहालि। स्वामी ही चाल्ले ॥४१५॥

रावलजी आणि अर्चक। पळैत श्री स्वाम्यांक।
केल्ली सिद्धुता स्वागताक। मठाधीशांक ॥४१६॥

विशाल विश्राम धाम। बसले तांतु व्यासराम।
आनि एक्डे गुरु आराम। कोर्का म्हणे रावल ॥४१७॥

नरसिंहु भंडारी। संपर्काचो अधिकारी।
केल्ली ताणे व्यवस्था बरी। यात्रिकांक ॥४१८॥

नारायण अवधानि। पुरोहितु प्रधानी।
गेल्लो पुढ़े मठांतूनि। भास्कर भट्टजी ॥४१९॥

रात्रिपूजा ती प्रधान। त्या बदरीनारायण।
रावलजीने आमंत्रण। दिल्ले त्या वेळीं ॥४२०॥

गुरु माग्लान मंडळी। पाव्ली गा रात्री वेळी।
गर्जिता नामावळी। बदरी विशाल की ॥४२१॥

बदरी बहु शीतल। सर्वांग जाई कंबळ।
स्वामेलें आत्म बल। अगाधचि गा ॥४२२॥

पूजावेळी तीन तास। भासताति हेचि व्यास।
उगडे अंग ना वास[४५]। ध्यासु वेदव्यासारी ॥४२३॥

दिवस तें सात सरलें। यतीराज संपूर्ण रमलें।
नारायणांतु मन विरलें। चुकलो गा कली ॥४२४॥

४५ वस्त्र

बदरी नारायणु एकडे। नर नारायण गिरी पुडे।
हिमाच्छादित शिखर उगडे। दिव्य ही बदरी म्हणा ॥४२५॥

व्यासाली ती बदरी। दासाली गा भद्रगिरी।
व्यासु विठलु दोन्ही हरी। समजता आम्हीं ॥४२६॥

सन्निधान श्री सुदीन्द्रलें। क्षेत्र गा वेदव्यासालें।
ह्या पुण्य स्थळांतु लभले। भाग्य कथा कोर्चा ॥४२७॥

गुरुल्या आज्ञानुसार। सांग्ले हरिकथा विवर।
पुरंदर विठलावर। निरुपिली कथा ॥४२८॥

घडले मध्ये दर्शन। बदरीशालें निर्वाण।
सर्वत्र गंध लेपन। केल्लां नारायणांक ॥४२९॥

आत्ता ते आठवण। जाल्ले पाव शतमान।
जाल्लारी ही ती स्मरण। दिस्ता सदा सुखरूप ॥४३०॥

दर्शना नंतर हरिकथा। सांगरे तू अच्युता।
अशिशं गुरु आज्ञापिता। भाग्य गा मेज्जे ॥४३१॥

सत्संगु आणि सत्संगति। सदा स्मरणी उरताती।
मार्ग दाखवीं परमार्थी। साधक लोका ॥४३२॥

पाव्णशे दिवसा यात्रा। जाल्लें व्यास कृपापात्र।
उपक्रमी जीवन यात्रा। उर्ला दिव्य स्मरण ॥४३३॥

हांव नावां मात्र हरिदासु। श्रीगरुकृपा विशेषु।
जाल्ला मक्का विश्वासु। गुरु चरणां ॥४३४॥

केल्लो ना विद्याभ्यासु। शास्त्र कळ्ना लवलेशु।
गुरूलो चरण दासु। म्होण्णूचि वांच्लो ॥४३५॥

इसवी एकुणशे छप्पन्नांतु। रजत पीठ पुरांतु।
गुरुल्या चातुर्मास्यांतु। हरिकथा चारी महिने ॥४३६॥

सांग्तालो भारत कथा। कळ्ना काही तत्त्वता।
रात्रंदिन अनुसरता। गुरु वाक्य ॥४३७॥

कथा ही चल्ता राती। सदा स्वाम्यालि उपस्थिति।
दिव्सा माक्कां सांग्ताती। भारतार्थ ॥४३८॥

गुरुली उपदेश सरणी। लाग्तली अंतःकरणी।
नवनीता सार्खि वाणी। मधु मधुर ॥४३९॥

अच्युता वाचि सद्ग्रंथु। विषय कोर्नु घे स्वंतु।
त्या उपरांत लोकांतु। सांगरे कथा ॥४४०॥

आस्का नित्यानुष्ठा। पूजा पाठ विधान।
ताज्जेन शुद्धांतःकरण। विसरू नका हे ॥४४१॥

पांडित्य कित्तुले अस्सो। पंडितु कांड्ता तुस्सो।
भक्ति नात्ल्येरि तो कसो। मेळ्तलो देवु ॥४४२॥

मध्व मुनीलो सिद्धांत। ताज्जेन जन्मलो भक्ती पंथ।
तू त्या मार्गांतु स्वन्त। कऽरी व्यवसायु ॥४४३॥

कऽरी शास्त्र मनन। उत्तम विचार श्रवण।
शील संयमाचे जतन। कोर्का रे सदा ॥४४४॥

निन्दा स्तुतीचि क्षती। समान समजो ती मती।
सदा आस्का भगवद्रति। तेन्ना तो कथाकारु ॥४४५॥

व्यासाले तत्त्व विचार। दासानी कोर्का प्रचार।
आस्का उत्तम व्यवहार। सत्संग सदा ॥४४६॥

वेश भूष अलंकारु। कोर्नईरे साव्बारु।
शुचि आणि संप्रदायपरु। अस्ल्यारीचि दासु ॥४४७॥

दोष सांगूनई इतरांचे। द्वेशही नाक्का शत्रूंचे।
चिंतन कोर्का शास्त्रांचे। तोचि रे हरिदासु ॥४४८॥

सदा संतुष्ट जीवन। तुक्का तूंचि उदाहरण।
मधुर आणि सत्य वचन। लक्षण हे हरिदासालें ॥४४९॥

कथन करी श्री हरिलें। स्तोत्र नाक्कारे श्रीमंतालें।
कीर्ति धन न मिळलें। तरी करी हरिनाम ॥४५०॥

बहुजन्माचें सुकृत। जाल्यारी संग्रहीत।
मनुष्य योनि मेळात। तांतूई द्विजत्व ॥४५१॥

हरिदासु तरी जाव्का। पुण्य बहुत गा जोड्का।
देवानऽचि म्होण्का। दासु मेग्गेलो ॥४५२॥

नारद शुकादी मुनी। पुंडळीकादि भक्तानी।
दासु जाव्चाक अहर्दिनी। तपले रे पळें ॥४५३॥

कथा सांग्ल्यारि जाइना दासु। माळा ताळाचो वेसु।
हरि चरणारि ध्यासु। आस्का तोचि दासु ॥४५४॥

वाच्का बहुत ग्रथांतर। स्मरणेंतु उर्का निरंतर।
नवविध भक्ती प्रकार। समजूका बरें ॥४५५॥

भागवतऽचि आधार। तात्पर्य निर्णयावर।
सांगूकारे भक्तीपर। सगुण सविकल्प ॥४५६॥

महात्म्यज्ञान पूर्वक। गृहदारादि संबंधिक।
त्या पेक्षा आस्का अधिक। स्नेह ते सुदृढ़ ॥४५७॥

आस्का स्नेह देवावर। त्या मुखार सर्वै असार।
सर्व शास्त्राचे सार। नारायणु एकु ॥४५८॥

सर्वै ताज्जे परिवार। तरी तारतम्यानुसार।
रमा ब्रम्हादि अवर। रुद्र सहित ॥४५९॥

हे सगळे सहायक। अधिकारि तत्वज्ञान्यांक।
इन्द्रियाभिमानि देवांक। नियंत्रक रे तें ॥४६०॥

सिद्धांत हो समजूनु। जीवु हो देवाधीनु।
अस्वतंत्रु बहु सानु। प्रारब्ध भोगी ॥४६१॥

गुरुलो हो उपदेशु। तान्नी दिव्चो आदेशु।
हरिकथेंतु हो संदेशु। कळैता बरें ॥४६२॥

दास पंथातु प्रधान। जाव्का अंकित प्रदान।
मेळ्ळे ते गुरुकडून। रजत पीठ पुरा ॥४६३॥

कोर्नु माक्का चक्रांकन। केल्ले अंकित प्रदान।
मूलनारायण म्हणून। दिल्ली दास दीक्षा ॥४६४॥

ताळ तंबूरी चिपळी। शेष वस्त्र तीं वेगळी।
मंत्राक्षत सहित घाली। लाइले श्री गंध ॥४६५॥

सहस्रावधि लोक। आइलेति समारंभाक।
खरे रोमांचकारक। सुख स्वरूप ॥४६६॥

गुरु दासु तरी जाइना। हरि कृपा ताक्का मेळ्ना।
हरिली कृपा तरी ना। मोक्ष खंचो ॥४६७॥

आम्ही गरीब बावुडे। गरून हाड्ले आम्का पुढ़े।
लोकाली दृष्टि आम्चाकडे। फिरैलि गुरून ॥४६८॥

केशव दासु तो धाक्लो। आजि विश्वचि तो जिंक्लो।
श्रीगुरून ताक्का राख्लो। विद्यार्थि असता ॥४६९॥

तो बाल हरिदासु। दीव्नु स्वाम्यानि रायसु।
केरळां करीत प्रवासु। कीर्ति पाव्लो ॥४७०॥

महाविद्यालया शिक्ताना। दिल्ली गुरून आश्वासना।
देव मन्दिरी मठ स्थाना। करैलि हरिकथा नित्य ॥४७१॥

ऐहिक आणि पारत्रिक। साधनेक मार्ग एकैक।
प्रोत्साहु दिल्लो हरिकथेक। स्वामेन ताक्का ॥४७२॥

कानूनि पदवीधरु। जाल्लो गा कीर्तनकारू।
स्वाम्येक हो विचारु। कळैता ते हर्षिलें ॥४७३॥

व्यास रघुपतीलो प्रसादु। दित्ताति सुधीन्द्रसाधु।
कीर्तिचो महा सौधु। जाल्लो गा केशवु ॥४७४॥

विदेशांतु घाल्लो पायु[४०]। हरिकथेचो संप्रदायु।
इतिहासाचो एकु अध्यायु। बरैलो ताणें ॥४७५॥

स्वाम्यान दीव्नु प्रसादु। प्रेमान केल्लो आशीर्वादु।
विश्व पर्यटना चो साधु। जाल्लो रे गुरुकृपें ॥४७६॥

पुरन्दर विठल मन्दिर। बांध्ले दासान सुंदर।
उक्तावणाक[४१] गुरुवर। आइले प्रप्रथम ॥४७७॥

जमले गा लाखो लोक। गुरुवराल्या दर्शनाक।
विश्वविहारिल्या गुरूक। पोळोका म्होण्णु ॥४७८॥

पुरसभेचे प्रमुख। पंडित विद्वांस अनेक।
भर्ले गा दासाश्रमांक। गुरु दर्शनाक ॥४७९॥

४० आधार जाला ४१ उद्घाटनाक

अन्ताराष्ट्रीय केन्द्र। ताक्का कारण सुधीन्द्र।
देश विदेशांतु मन्दिर। बांधिता दासु ॥४८०॥

अमेरिकेचे तरुण। आइलेति भक्तीक शरण।
गुरुल्या गुरुदर्शन। अपेक्षि सदा ॥४८१॥

तांका प्रसादु दीव्नु। तांचोई उद्धार कोर्नु।
केशवा हे बरे जाव्नु। चलो म्हणति ॥४८२॥

आमुची सर्व कीर्ति। भद्रगिरी नावांचि ख्याति।
आम्हीगुरु चरणां अर्पिति। धन्यतेन ॥४८३॥

आम्चे माता पितालें पुण्य। गुरु दया ती अनन्य।
त्या मुखारी आम्ही नगण्य। जाणती खरें ॥४८४॥

सर्वोत्तमु दासु धाक्लो। तो तरी गुरूक आप्लो।
गुरुसेवेक मुखेलो। धन्य गा जीणें ॥४८५॥

सुधीन्द्र मुद्रणालय। चलैता जाल्ला अभ्युदय।
मुद्रण कलेंतु गुरुराय। करी कृपा ताज्जेरी ॥४८६॥

तो वै विश्वसंचारी। विश्वासु ताक्का गुरूरी।
काशीमठ व्यवहारी। कुशलु गा तो ॥४८७॥

विठ्ठलदासु गुरुभक्तु। हरिगुरु सेवा सक्तु।
मुखारी पण्णा अव्यक्तु। पात्रु गा गुरुकृपें ॥४८८॥

भद्रगिरीचे घराणे। चल्ता गुरुवाक्या प्रमाणे।
चुक्ल्यारी काहीं चर्डुपणे। राख्ताती गुरुदेव ॥४८९॥

बाईलं भुर्गी सहित। गुरु भक्त गा सतत।
गुरुली श्री मंत्राक्षत। धरी मस्तकीं नित्य ॥४९०॥

आम्चे जातक दुर्बल। तरी बळकट गा गुरुबल।
दैव ग्रह तारानुकूल। गुर्ल्चि गा आम्का ॥४९१॥

विश्वविठल मूर्ति। ऊंच सत्तीस हातीं।
गुरु येव्नु उगडती। आश्रम विश्वशांति ॥४९२॥

आमुचि कीर्ति विश्वव्यापी। जाल्यारि आम्का ना गा तृप्ति।
गुरु निमित्तान ती प्राप्ति। मेळच्यां हे सत्य ॥४९३॥

गुरु तें धनुष्यजाण। आम्हीरे केवल बाण।
ते बाण सोडून। विजयीं गा गुरु ॥४९४॥

प्रतिष्ठेच्या दिवसु। भर्ला गा देश विदेशु।
तांका दिल्लो आदेशु। गुरुवर्यांनि ॥४९५॥

भारताचि संस्कृति। जाव्कारे विश्वव्याप्ति।
भद्रगिरी सहोदर तीं। करी हे सत्य ॥४९६॥

तांचि रे गुरु भक्ती। गुरुलि आज्ञा पालिताति।
सर्वांतु जय पावताति। धन्य गा तें ॥४९७॥

म्हणूनका आत्म प्रशंसा। गुरु आम्चो परमहंसा।
कर्तालो पाप विध्वंसा। समजारे तुम्ही ॥४९८॥

अस्सली कीर्ति सुधीन्द्राली। सांग्चाक जीब सुत्तली।
समजल्यारि कळ्तलीं। गुरु महिमा ॥४९९॥

मध्यम वयीं भार्या वियोगु। घडलो माझ्का ना सुयोगु।
संसाराचो सहयोगु। कोस्सळ्ळे म्हणा ॥५००॥

भुर्गी सगळी लहान। चेल्लियांक जाइनि लग्न।
रात्रंदिन हरिकीर्तन। भ्रमण नित्य ॥५०१॥

समस्यांक ना परिहारु। सांगता तेन्ना गुरुवर।
सर्वै जाण रघुवरु। निश्चिंत राब ॥५०२॥

गुरुवाक्य जाल्लें सत्य। सर्वै घडले सुखांत्य।
सुखी संसार तथ्य। कृपा गा गुरुली ॥५०३॥

गुरु जाल्यारि प्रसन्न। घडे ना काहीं विघ्न।
मन करी चरणा संलग्न। गुरु रायाल्यां ॥५०४॥

मुंबैचि एकी घटना। आईका तुम्ही श्रोत्रगणा।
आनन्दाश्र सभा भवना। ताळमक्कीवाडी ॥५०५॥

स्मार्त सारस्वतानि। गरूंक आमंत्रूनी।
पादपूजा वैभवानि। केल्लि बरी ॥५०६॥

फल मंत्रक्षता दीव्नु। चोइताति स्वामें घूव्नु।
बालकु एक्लो निद्दोनु। मागता फल ॥५०७॥

घेरे बाळा म्होणु। स्वाम्यानि फल काण्णु।
दिव्चा येत्ताति धाव्नु। आइलि ताज्जि आवै ॥५०८॥

जन्मारभ्य हो बाळु। उठाइना बहु दुर्बलु।
प्रारब्ध म्होण्चे प्रबलु। गुरुदेवा राख ॥५०९॥

बाळालि दयनीय स्थिति। चोडताति सुधीन्द्रयती।
स्मरूनि व्यासरघुपती। दिल्लो गंधाक्षता ॥५१०॥

स्वामें आइले वालुकेश्वरा। सरले दिवस बारा तेरा।
बाळा घेव्नु परिवारा। आइली गृहिणी एक्ली ॥५११॥

बाळु बस्ला तो खेळ्नु। पळेता स्वामि नियाळ्नु।
गृहिणी बाळा सांभाळ्नु। म्हणालि अशिशं ॥५१२॥

तुम्चा प्रसाद बलान। बाळु भोक्ता उठानु।
उपकार ते स्मरून। आइल्या भेटि ॥५१३॥

देवालि ही महिमा। सांग्चा ना गा उपमा।
माग्ल्यारि भक्तीनी क्षमा। दित्ताति सत्य ॥५१४॥

प्रतिमा स्थानीयु गुरु। न समजे तें गोरु[४९]।
मागिगले दित्ता कल्पतरु। गुरु रायु आमुचो ॥५१५॥

तिरुपतींतु हे घडलें। आइका माक्का विसरलें।
नारायणगिरींतु स्वाम्यालें। वसती तेन्ना ॥५१६॥

राजू दंपति मदरासी। आइलेति यात्रेक प्रवासी।
पत्नीक दर्शनाचि आशी। केल्लि विनंती स्वाम्यां ॥५१७॥

मध्यान्ह पूजेक येय्या। देवालो प्रसाद घेय्या।
देवु पाव्तालो समया। बरे जात्लें ॥५१८॥

बाइल भुर्गाक सम्मति। तरी कोप्लो तो पती।
काम काई ना त्या यती। बैसा तुम्ही मोटारीं ॥५१९॥

४९ पशु

श्री गुरुचरितामृत

चावि लाइली गाडचेक। यत्नी ते वेगवर्धूक।
चल्तऽचि गाडी एक्लाक। राव्ली श्री मठाकडे ॥५२०॥

हाड्ले यंत्र तज्ञांक। केल्लि प्रयत्न चालनेंक।
बाइल गेल्लीं पूजेक। प्रसादु मेळ्ळो ॥५२१॥

प्रसादु घेत्ल्या क्षणाक। आरंभी गाडी चालनेंक।
बाईल म्हणाली पतीक। घ्या गुरु दर्शन ॥५२२॥

क्षमा माग्ली गुरुकडे। गुरु चोइताती देवाकडे।
भोजन प्रसादु घेव्नु पुढें। चला म्हणता गुरु ॥५२३॥

गुरुवाक्य उल्लंघून। तोचि एकु दोषु जाण।
स्मरण कोर्का क्षणोक्षण। गुरुली महिमा ॥५२४॥

संन्यास पीठ स्वीकारुनु। जाल्लो पाद शतमानु।
मुंबैचे महाजन मेळ्नु। भरवून सभा ॥५२५॥

घेत्ली गुरुली अनुमती। क्रीडांगणातु उभारति।
सभा सदन अलंकरती। दिवसु राति ॥५२६॥

वैदिक भरलें असंख्यात। श्रीमठ वालुकेश्वरांत।
होम हवनादि विहित। करी गुरु आज्ञा ॥५२७॥

दक्षिणा सहित दान। केल्लो वैदिकांक सन्मान।
योग्यता तारतम्यान। दिल्ली संभावना ॥५२८॥

कारण लोक कल्याण। संहिता पारायण।
चल्लीं ब्राम्हण संतर्पण। दक्षिणा युक्त ॥५२९॥

शोभा यात्रा सांजेरी। वर्णू कितीरे वैखरी।
निर्गमी राज वीथिवरी। मिरवणूक ॥५३०॥

भेरी नगाऱ्याचि ध्वनी। मंगल वाद्य सुस्वनी।
निनादिती गगनांगणी। सन्ध्या काळी ॥५३१॥

पावलं पावला आरती। पुष्प माला अर्पिती।
चरण द्वयांक स्पर्शिती। भक्ती भावें ॥५३२॥

नट नर्तकादि गायक। स्तब्द चित्रांचे वाहक।
दृष्य ते मनोरंजक। वैविध्य पूर्ण ॥५३३॥

अलंकृत वाहनाचेरि। बसल्या श्रींचि स्वारी।
शोभ्ता सभा देवनगरी। क्रीडांगणी दिव्य ॥५३४॥

पंचवीस सद्‌गृहिणी। ओवाळती नीलांजनीं।
गुरु चरण नखांतूनी। बिंबली दीप्ति ॥५३५॥

ताळ वीणा मृदंग। भक्ति चडली ती रंग।
रोमांच गा सर्वांग। प्रेमांत रंगी ॥५३६॥

उत्साहाचो उत्सवु। सांगूनु सर्ना वैभवु।
वर्णिता गुरु गौरवु। सरले गा शब्द ॥५३७॥

भरलो गा समावेशु। सर्वां भक्ति आवेशु।
गुरुलो महा संदेशु। निरीक्षिति सर्व ॥५३८॥

गुरु म्हणे हो संबन्धु। धर्म शास्त्राचो निबन्धु।
सारस्वत सगळे बन्धु। आचरति म्होण्णु ॥५३९॥

जाल्ला आजि परिणतु। धर्म सूत्राचो तंतु।
मोड्ल्यारि जात्त निस्तंतु। अव्यवस्था ॥५४०॥

सन्ध्या वंदन ती आदि। उपरांत गा पूजादि।
सन्ध्यारहितु ब्रम्हवादी। मिथ्याचारी समजा ॥५४१॥

गायत्री एकशे आठ। नित्यान्हीक परिपाट।
करी तरी निष्कपट। तोचि गा द्विजु ॥५४२॥

वेळु मेळ्ना म्होण्णु। सिनेमा नाटक चोव्नु।
व्यर्थ आयुष्य काण्णु। गमविता[50] जन्मु ॥५४३॥

आम्ही ब्राम्हण सारस्वत। पावन परंपरागत।
आजि आम्ही कीर्तिवन्त। पुण्य पूर्वजाले ॥५४४॥

५० व्यर्थ काण्णु घेत्ता.

वोरोका कीर्ति पूर्वजालि। आम्ही पूज्य वेदकाली।
ते नियम तरी सांबाळी। धन्य गा आम्ही ॥५४५॥

स्वाम्याले हो उपदेशु। आइकता तो समावेशु।
गुरु आमुचो दैवांशु। निस्संदेहु खरें ॥५४६॥

आम्ही सांग्ताव दैन्यान। बहुकाल आम्चा स्वामेन।
धर्म पीठां विराजून। करो रक्षा आमुचि ॥५४७॥

आनि एक अभूत पूर्व। वैभवु षष्ठ्यब्दी पर्व।
मेळ्ळी महाजना सर्व। आचरति श्रद्धे ॥५४८॥

एर्नाकुलंचे स्वामी। ती त्यांची जन्म भूमि।
महाजन ते बहुप्रेमि। करी विनंती शीघ्र ॥५४९॥

तिरुमल देव सन्निधि। इष्ट देवु तुम्का आदि।
हांगा जाव्का षष्ठ्यब्दि। आशा ही आम्का ॥५५०॥

कोर्का दया आम्चेरी। आम्ही तुम्चे चाकरी।
श्रद्धेन कर्तीति बरी। सेवा दिय्या आम्का ॥५५१॥

मागणी ही महाजनाली। स्वाम्यानि मान्य केल्ली।
केरळीय शिष्य मंडळी। जाल्ली कार्य शील ॥५५२॥

मृत्युंजयादि होमु। होमु महाविष्णु नामु।
संहितायागाचो नेमु। स्वीकरी विप्र ॥५५३॥

दक्षिणोत्तरी वैदिक। जमले सहस्राधिक।
श्रमले गा व्यवस्थापक। आतिथ्या सगळें ॥५५४॥

कथाकार नाटकमंडळी। नृत्य गीत कथक्कळी।
हस्त्येरि अंबारी शिवेली। वैभवोपेत ॥५५५॥

देश विदेशाथानु। आइले दृष्य चोव्नु।
दिस्ता एकु पुरातनु। आश्रम ऋषिंगेलो ॥५५६॥

होम धूम सुगंधानि। सगळे आकाश व्यापूनि।
देवतेंक येव्चा देवून। निश्रेणि[५१] गा धूम ॥५५७॥

दान दक्षिणा भरपूर। जाल्लेति तृप्त द्विजवर।
मंत्र घोषाचे सुस्वर। श्रवणी ते पावन ॥५५८॥

सन्त केशवदासु। कर्ता अमेरिके वासु।
गुरु चरणारि विश्वासु। दंपती तांका ॥५५९॥

५१ निस्सणि

घेव्नु पाश्चात्य भक्तांक। पाव्ला त्या समारंभाक।
माल्गडो अच्युतदासाक। घेव्नु सांगाती ॥५६०॥

विठ्ठलु आणि सर्वोत्तमु। बेंगळूरचो जन स्तोमु।
आइलो घेव्नु बहुश्रमु। गुरुदर्शनांक ॥५६१॥

भद्रगिरीचे सहोदर। गुरु सेवेंतु तत्पर।
आपुल्या मंडळी बरोबर। रमले तें भजनी ॥५६२॥

पाश्चात्य भजन मंडळी। गुरु चरणांतु लोळी।
नाम संकीर्तना वेळी। जाल्ले भावोन्मत्त ॥५६३॥

पळैत हे गुरुवरान। भद्रगिरीचे सहोदरान।
सात समुंदर पेल्यान। व्हेल्लो भक्ति धर्मु ॥५६४॥

आइकूनु हे केशवान। दंपती सहित वंदून।
कृपा गुरुली म्होण्णु। नमस्कार घाली ॥५६५॥

एक्डे याग यज्ञ। आनि एक्डे भजन कीर्तन।
वैदिकाल्या वेद घोषान। निनादति दश दिशां ॥५६६॥

संतर्पणेन ब्राम्हण। इतरे समाराधनेन।
भूत तृप्ति अन्नदानान। जाल्ली तृप्ति सर्वां ॥५६७॥

विचारी काहीं लोक। नमस्कार कोर्नु गुरुक।
संदेह परिहाराक। कर्तीति ते मागणी ॥५६८॥

बुद्दोंतु लोकु ज्ञानी। कर्तीति बुद्धिची ग्लानि।
तान्नि तरी सांगनी। अज्ञांक कोळ्चे कशिशं? ॥५६९॥

आइकता म्हणाले गुरु। ज्ञान्यानि ज्ञान विचारु।
सांगूनु कोर्का प्रचारु। विनिमय ताज्जें ॥५७०॥

ज्ञान दीव्चे देवान। मेळ्ना तुज्जा प्रयत्नान।
ते ज्ञान करी दान। उपदेश रुपी ॥५७१॥

कऽरी ताज्जे आचरण। ना पुस्तकरूपान।
कशिशंतरी कोर्का दान। ज्ञान हे लोकां ॥५७२॥

दान कर्ना तरी दोषु। जात्लो तो ब्रम्हराक्षसु।
म्होण्णु शास्त्र दित्ता आदेशु। ज्ञान दानां ॥५७३॥

अन्नदान जीवदान। दोन्निक्षणिक्त हे जाण।
ज्ञानी जिंक्ता जनन मरण। म्होणु ते श्रेष्ठ ॥५७४॥

ज्ञान दीव्चो देवु। व्यासु तो महानुभावु।
ज्ञानानचि भक्ति भावु। प्राप्त म्हणताती ॥५७५॥

दृष्टार ते ऋषि महर्षि। सर्वज्ञ गा दूरदर्शि।
तेंचि आमुचे मार्गदर्शी। म्होण्का ज्ञानदानी ॥५७६॥

ज्ञानानि निवता क्षोभ। ज्ञानप्राप्तिन महा लाभ।
ज्ञान्या आइल्यारी प्रलोभ। तो नष्ट धर्मि ॥५७७॥

कोर्का आम्ही ज्ञानार्जन। सात्विकाक वाट्का जाण।
ताज्जेन गा परिमार्जन। पाप आमुचें ॥५७८॥

पात्रापात्र समजून। आस्का उपदेश करण।
मंदाक दी नामस्मरण। चित्त शुद्धर्थ ॥५७९॥

भुख्खेन एक्लो वळवळता। ताक्का व्याकरण शिकैता।
अशिशं म्होण्चीचि मूर्खता। असूनयीं ज्ञान्यां ॥५८०॥

अनेकांतु एकता। ज्ञानी पोळोचा शक्ता।
वासुदेवु सर्वांतु उरता। हेंचि खरे ज्ञान ॥५८१॥

सुधीन्द्रालि ही उक्ति। समजारे यथाशक्ति।
दीव्का तान्नीचि सन्मति। आम्का तुम्का ॥५८२॥

विचारतीति गृहस्थ लोक। आम्मि चोल्चारीतीक।
तुम्मिचि मार्ग दर्शक। सांगा काई ॥५८३॥

सांग्ले तेन्ना स्वाम्यान। आइकरे मन दीवून।
चोल्का तशिशं प्रेमान। शुद्ध भावें ॥५८४॥

कोर्का उत्तम व्यवहार। जोड्का धन अपार।
सत्कार्या कोर्का वापर। धन लक्ष्मीलें ॥५८५॥

लक्ष्मी निवासु करी। नारायण हृदयावरी।
सत्पात्रांक दिल्यातरी। नारायण पाव्ता ॥५८६॥

दानान जात्ता धन शुद्धि। स्नानान जात्ता देह शुद्धि।
ध्यानान जात्ले मन शुद्धि। वृद्धि उज्जीवन ॥५८७॥

कोर्का सज्जनांक दान। दिव्का लज्जा सहित भीवून।
ज्ञानान करी कृष्णार्पण। ते दान श्रेष्ठ ॥५८८॥

कोर्का घरांतु देवकार्य। आस्का सत्कार औदार्य।
ब्राम्हण उच्छिष्टान गार्ह्य[५२]। जाव्का गा शुद्धि ॥५८९॥

५२ गृहस्थाधर्म.

जोड्का धन श्रमान। अस्सूनये दुर्व्यसन।
तश्शीं कोर्का धनदान। पुण्य जोड्का ॥५९०॥

अतिथि अभ्यागतांक। भोजन काली आइल्यांक।
आदरान अन्नोदक। दीव्का बरें ॥५९१॥

सज्जन सहित तीर्थाटन क्षेत्र दर्शनाचे दर्शन।
दीव्नु श्राद्धादि तर्पण। कोर्का पित्रांक ॥५९२॥

हरिकथेचे श्रवण। अध्यात्म ग्रंथ वाचन।
कौटुंबिका कडे उलवण। मधुर उर्का ॥५९३॥

कुलदेवु ग्रामदेवु। इष्ट देवालो ठावु।
समजूनु भक्ती भावु। उरल्यारी बरें ॥५९४॥

भोगानि रोग भय। रोगानि मरण भय।
मरणकाली पापाचे भय। येत्ता हे सत्य ॥५९५॥

अपमृत्यु रोग भय। दीव्नुका देवा उभय।
मागूका हे अस्त उदय। देवाल्या नित्य ॥५९६॥

श्रमसहित जीवन। ताज्जेन शुद्धांतःकरण।
दुसरेचेरी अवलंबन। करीतो पापात्मा ॥५९७॥

विनाश्रम धन मेळ्का। ऐषाराम वांचूका।
असली ही चिंतनिका। आसुरी म्हणती ॥५९८॥

अर्थ कामाचि अपेक्षा। सुख भोगाचि निरीक्षा।
कोर्चि सहज प्रतीक्षा। इच्छित फलांचि ॥५९९॥

कर्म आणि फलाचे अर्पण। कोर्का मनान पूर्ण।
भोग ते प्रसाद करण। जात्ता कारण मोक्षा ॥६००॥

सति सुतांचे चिंतन। ते गा बंधनाक कारण।
देवाक सेविं प्रीतीन। जात्ले कारण मोक्षाक ॥६०१॥

जीव क्रिया ती बंधक। देवालि क्रिया लीलेक।
लीलें खातिरि अवताराक। योत्लो म्हणता शास्त्र ॥६०२॥

देवा तुज्जा प्रीतीक। कर्ता कर्म सकळीक।
दोष आणि गुण अनेक। आस्तले मिश्र ॥६०३॥

तरी तूं करी स्वीकार। कर्माचे हे प्रकार।
कृपा करा करी दूर। दोष गा आमुचे ॥६०४॥

कर्म कोर्नु अवसानी। अश्शीं देवाक प्रार्थूनी।
कर्म आणि फल समर्पूनि। कोर्नु घे प्रसादु ॥६०५॥

आरंभा देव चिंतन। उपरांत देह पोषण।
हेंचि साधकालें लक्षण। समजा गा गृहस्थ ॥६०६॥

व्रतांचे हे खरे ज्ञान। नष्टले नाना कारण।
पडले सर्व विस्मरण। जाल्ले अंध विश्वासी ॥६०७॥

आपणऽचि बंधना उर्चे। ताक्काचि गा व्रत म्होण्चे।
देवा कारण ते कोर्चे। समजूका अश्शिं ॥६०८॥

चातुर्मासी चार मास। येत्ताति पर्ब विशेष।
बहु देव देवता वास। गृहांतु जात्ता तेन्ना ॥६०९॥

सन्ध्यादि नित्य कर्म। द्विजाले हे मुख्यधर्म।
ताज्जे ते खरे वर्म। चित्त शुद्धि ॥६१०॥

सत्यनारायण व्रत। संकल्पी सत्यदत्त।
ही सर्वै काम्य म्हणतात। फल कामनेक ॥६११॥

कृष्णाष्टमि राम नवमी। चतुर्थि विजय दशमी।
नैमित्तिक म्हणताति नेमि। पर्व कालीं ॥६१२॥

गृह बाधा रोग बाधा। करी मणि मंत्रौषधा।
कर्ताति नाना विध विधा। पूजा नैमित्तिक ॥६१३॥

अतिथि देव आणि पितृ। ऋषि सहित भूतमात्र।
कर्ताति गृहस्थ सर्वत्र। यज्ञ पांच विध ॥६१४॥

देवकार्य पितृकार्य। सत्कार्य सभार्य।
हेंचि गृहाक सौदर्य। शास्त्र सिद्धु ॥६१५॥

दीन दुर्बळचांक दान। भुकेन आइल्याक जेवण।
करी सर्व कृष्णार्पण। यज्ञ हे गृहमेधीक ॥६१६॥

नित्य नैमित्तिक कर्म। कोर्चे हे गृहस्थाक धर्म।
हेंचि शास्त्राचे मर्म। समजून घेय्या ॥६१७॥

उत्तम व्यवहार धन। संपादून करा दान।
पावोका समाजाचे ऋण। तेदणाचि तो मुक्तु ॥६१८॥

पूर्वजालि चालि बोलि। तीं अनुभवानि सिद्धु जाल्लेलि।
निश्चय राक्ता आपत्काळी। निःसंशयु गा ॥६१९॥

दानऽचि मुख्य शील। ताज कुणि उद्योग जाल।
समाजाक आधार मूल। गृहस्थ गा बरे ॥६२०॥

संन्यासी ब्रम्हचारी। ते अवलंबि गृहस्थारि।
गृहस्थु धन्य भारी। म्हणता स्मृति मनूलि ॥६२१॥

फलापेक्षा रहित। संन्यासी ही कर्म निरत।
निष्काम कर्म करत। जाव्का मुक्त ताणे ॥६२२॥

गीतोक्ति ही समजूनु। चलारे हे गृहस्थानु।
देवाक ना होड्डु सानु। कर्ता उद्धार सर्वा ॥६२३॥

मातृ वर्गा स्वामेन। उपदेशु दिल्लो प्रीतीन।
राक्कूका तुम्मी सहनेन। धर्मु भारताचो ॥६२४॥

गृहिणी गृह देवता। म्होण्णु आम्चे शास्त्र म्हणता।
भारताचि नारी तत्वता। देव मानी ॥६२५॥

महापुरुषांली जननी। कल्याण गुणाचि खाणि।
भीष्म हनुमंतादि ज्ञानी। जन्मले तिज्जांतु ॥६२६॥

अनसूया पतिव्रता। सावित्री लोक ख्याता।
असल्यो जन्मल्यो भारता। विस्मृति आम्का ॥६२७॥

सीता मंडोदरी। रुक्मिणी पद्मोदरी।
आदर्श भारताचि नारी। समजूका बरें ॥६२८॥

भुग्र्यां लालन पालन। संस्कृतीचे शिकवण।
दीव्चे हे मातृ स्थान। सदा वन्दनीय ॥६२९॥

अनेक क्षात्र रमणी। वीर माता आणि संतिणी।
जन्मल्या भारत धरणी। पूज्य ते सर्वा ॥६३०॥

पतिव्रता ऋषि समान। मान्ताले आमुचे जन।
इतर मताचे अनुकरण। केले बा खरे ॥६३१॥

स्त्री पुरुषाधीन। आमुचि भोगोपकरण।
परकीयालें हे चिंतन। नै रे भारताचे ॥६३२॥

बाइलं जाव्का विद्यावन्त। भुग्यांक कोर्का गुणवंत।
गृहकार्य पति सेवेंत। जात्ता धन्य ती गा ॥६३३॥

कोरुनइं स्त्री दूषण। जाव्नई ताचे शोषण।
गृहस्थाक ती पोषण। कर्ता हे समजा ॥६३४॥

ब्रम्हचारी संन्यासी। बैरागी आणि उदासी।
सगळे ताज्जे गर्भवासी। दासी म्होण्णु कश्शीं? ॥६३५॥

मनुस्मृति हो ग्रंथु। आजि कालचो विद्यावंतु।
वाच्चीनशी विमर्शीतु। घाल्ता कालु व्यर्थ ॥६३६॥

पडू नका गुंता गुंती। दुःख भोगताति अंती।
गृहस्थ जीवनाची शांति। नेण ते मूर्ख ॥६३७॥

आप्ल्ये भुर्ग्यालो संबंधु। गेल्ला तुट्नु बंधु।
दुड्डुवाचोचि छंदु। लागला जनां ॥६३८॥

दंपती जोड्ताती धन। खात्ताति बाजार खाण।
वाड्ताति रोग नवीन। जोडिलें डाक्टरान ॥६३९॥

असले भ्रांत जीवन। अति भोगां कारण।
ना ना रीति ऋणान। बंधित मन्द ॥६४०॥

आपुल्या दुद्दाभर्शि। मेळ्ता संस्कारु जशिशं।
दंपती प्रीति विश्वासी। म्हणती संस्कृति ताक्का ॥६४१॥

बोली शिक्कैलि आवैन। व्याकरण नाशी प्रेमान।
व्याकरणादिकाचे बन्धन। नाशी माता पुत्रा ॥६४२॥

एकदा विद्यार्थि लोकु। आइले स्वाम्यांक भेट्च्याक।
दिय्या संदेशु तरुणांक। मार्ग सूचि ॥६४३॥

स्वामें बहु प्रीतीचे। विद्यार्थि तरुण वर्गाचे।
अमूल्य धन ते भारताचे। भविष्य रूपी ॥६४४॥

जाव्का तान्नि विद्यावन्त। त्या करिता समाजांत।
जागृति येव्का मातृ वर्गात। आपुलपणाचि ॥६४५॥

विद्येन जात्ता नागरीकु। संस्कृतीन मेळ्ता विवेकु।
विवेकीचि खरो धार्मिकु। निधि ही भारताचि ॥६४६॥

कानूनान नागरीकु। जाव्चो ना सांस्कृतिकु।
धर्मु विधि निषेधात्मकु। समजूका बरे ॥६४७॥

भारत हे मतातीत। आतां जाल्ला धर्मातीत।
लोक निधर्मि जाल्लेत। ह्या कारणी ॥६४८॥

म्हणताति प्रजाराज्य। कर्ता म्हणती धर्मत्याज्य।
म्होणूचि निधर्मि व्याज्य। करी भोगवादी ॥६४९॥

तरुण जाव्का विद्यावन्त। भारताच्या परंपरेत।
अभिमान वाड्का ताज्यांत। आम्ही भरतवंशी ॥६५०॥

जाल्या वैज्ञानिक प्रगति। भोग वादु वाड्ताति।
विसर्ल्या आमुचि संस्कृति। उज्जीवनाचि ॥६५१॥

करुनका पाश्चात्यकरण। घेय्या तांचे भौतज्ञान।
भारताचे जीवन विधान। शिकय्यां तांका ॥६५२॥

भारताचि योग बुद्धि। ताज्जेन मेळ्ता सर्व सिद्धि।
पाश्चात्याली ती भोग वृद्धि। अशांति असुरांचि ॥६५३॥

तरुणांत वाड्ली बुद्धि। तरी केवल भोगवादी।
त्यागानचि भोग शुद्धि। तत्त्व हे भारताचें ॥६५४॥

धर्म संस्कृतीचे ज्ञान। त्या संबन्धी शिक्षण।
पाव्नि आम्चे युव जन। वार्ता ही दुःखाचि ॥६५५॥

विद्या म्हळ्ल्यारी अक्षर ज्ञान। ते केवल उदरंभरण।
त्या कारणी उद्यमीकरण। वाढ़ैलें निश्चया ॥६५६॥

तरुणालें राष्ट्रीकरण। करा हो तुम्मी जन।
नक्का क्षुद्र राजकारण। विद्यार्थि जनांक ॥६५७॥

केन्नाई जाव्येत धनिक। जाई तारुण्य शिक्ष्याक।
लहान वयारी विद्येक। कोर्का रे प्रयत्न ॥६५८॥

विचारितो देश भक्तु। स्वाम्यालो सेवासक्तु।
देशु हो धर्मातिरिक्तु। म्हणतातो पुढारी ॥६५९॥

धर्मप्राणु हो देशु। दिल्ला देवान संदेशु।
देव धर्माचो उड्गासु। ना गा देश भक्तां ॥६६०॥

राष्ट्ररथादुकूनु। देव धर्मांक उतारुनु[५४]।
आपण बसला राजकारणु। पतन शीलु ॥६६१॥

स्वातंत्र्य पूर्वि जन। कर्ताले सर्व समर्पण।
राष्ट्राखातिर प्राण। दित्ले निर्भयान ॥६६२॥

आइका हे प्रमुख। खरें समय साधक।
म्होणूयेत नयवंचक। राष्ट्र द्रोही ॥६६३॥

अधिकारांतु अस्ताना। कार्यी विरोधकर्ना।
गेल्ला अधिकारु म्हणताना। जाल्लो विरोधि ॥६६४॥

५४ देवोनु

श्री गुरुचरितामृत

निध्र्येयी हे तत्त्व हीन। नाना पक्ष बांधून।
अपहरती राष्ट्राचे धन। पैशाचिक ॥६६५॥

घेत्ता प्रमाण वचन। देव धर्माचे विस्मरण।
बाइल भुग्र्यांचे संरक्षण। करी धन संचय ॥६६६॥

निधर्मि म्हणता सरकार। धर्मांक कर्ता प्रहार।
राष्ट्रसंहिता एक प्रकार। नारे भारत देशा ॥६६७॥

मतान्ध राष्ट्र द्रोही। ते सरकाराचे स्नेही।
सर्वत्र भर्ले धनदाही। उद्धार खंचो ॥६६८॥

शिक्षणांतु नारे नीति। तांतूयी मुख्य जाति पाति।
जात्यातीत आम्ही म्हणती। तेचि गा जातिवादि ॥६६९॥

सरकारु कर्ता व्यापारु। लंचाचो महापूरु।
राष्ट्राचो अर्थ व्यवहारु। विदेशाकडे ॥६७०॥

अश्लील आणि अनाचार। कर्तात सर्वत्र प्रचार।
सिनेमा टी वी प्रहार। जात्ता बाळ भुग्यां ॥६७१॥

प्रजेंक ना नीतिमत्ता। निवडतात उन्मत्ता।
ते तरी धन प्रमत्ता। ना गा हित प्रजेचें ॥६७२॥

यथा राजा तथा प्रजा। आत्ता यथा प्रजा तथा राजा।
आम्ही सांग्ले हे सहजा। समजा प्रश्नोत्तरी ॥६७३॥

येत्ले बरे दिवस। वत्ले सर्वालें क्लेश।
उट्तलो भारत देश। विश्वरक्षा ॥६७४॥

मागूयां आम्ही देवाकडे। भारताचे वैभव पुढे।
राखताले आम्चे माल्गडे। शक्ति ती दी आम्का ॥६७५॥

आइकूनु जात्ले धन्य। गुरु सांग्ता ते मान्य।
धर्मा शिवाइ आणि अन्य। ना मार्गु उद्धाराक ॥६७६॥

देवभाषा संस्कृत। ना आत्त व्यवहारांत।
संदेह आम्का मनांत। निवारा गुरुराया ॥६७७॥

स्वाम्यालो मन्द हासु। शिष्यांक तो गोड घासु।
गरूंक ना काहीं त्रासु। म्हणाले की आइका ॥६७८॥

संस्कृत ही देवभाषा। सर्वा मूल निर्दोषा।
खरे आमुचि राष्ट्रभाषा। जाल्यारि बरें ॥६७९॥

संस्कृतानीचि संस्कृति। वाढ्ल्या देशांतु म्हणति।
व्यर्थ ताङ्का द्वेषिति। आसुरी लोक ॥६८०॥

व्यास आणि वाल्मीकादि। कवीश्वर ते प्रवादि।
भारवी कालिदासादि। महा कवि तें ॥६८१॥

भास दंडी आणि माघ। रचक ते नाटक अमोघ।
साहित्य वाहिनीचे ओघ। न जाणती मन्द ॥६८२॥

लिखित्त आणि उच्चार। अस्ताति एक प्रकार।
अनुनासिक अनुस्वार। अर्थांतर कर्ता ॥६८३॥

विभक्ति प्रत्यय असंख्य। व्याकरणांतु मेळ्ता व्याख्य।
अर्थ बाहुळ्याचे वाक्य। बहुत मिळती ॥६८४॥

लोक भाषेचि जननी। ग्रीक ल्याटीना पेक्षा पोर्नि।
अमृत ती संजीविनी। मृत म्हणे तो मूर्खु ॥६८५॥

पैशाचि पाली प्राकृत। तिज्जे संतान विकृत।
नकारति लोक बहूत। दुर्धरी धूर्त ॥६८६॥

रष्या जर्मनीचे लोक। शरणु आइले संस्कृताक।
आत्याधुनिक गणकयंत्राक। योग्य म्हणती जाण्ते ॥६८७॥

सूत्र कर्ता तो पाणिनी। नंतराचे वैय्याकरणी।
अत्ताचे भाषा ज्ञानी। मानी संस्कृताक ॥६८८॥

आचार्य तीन्ही द्रविड। ते संस्कृताचे पहाड[५५]।
प्रस्थान त्रय तें होड। जोड संस्कृताचे ॥६८९॥

[५५] पर्वत.

भारताचि एकता। आजिही संस्कृतऽचि राकता।
मुखारी ही राखू शक्ता। जीवंत गा ती ॥६९०॥

बहुभाषा भारतांतु। संस्कृत हे सर्व भाषेंतु।
व्यापिल्या आदि मध्येंतु। शक्य ना काड्चा ॥६९१॥

भाषेचे सौंदर्य। अर्थ व्याप्तिचे गांभीर्य।
संस्कृतीचे औदार्य। संस्कृता मध्यें ॥६९२॥

भारतीयाले ज्ञान। तांचे जीवन विधान।
समजूक म्हणता कोण। ताक्का जाइ संस्कृत ॥६९३॥

ग्रीक ल्याटिनेक जननी। विश्वेश्वरी ती गीर्वाणि।
भारतान हे समजूनी। चोल्का आदरानि ॥६९४॥

भारतीय भाषेंतुली। बरे शब्द तरी काड्ली।
भाषा न उरे वेगळीं। संस्कृता शिवाइ ॥६९५॥

वैज्ञानिक ते पद बन्ध। संस्कृतानि बहु चन्द।
प्रयत्न केल्ला ह्या संबंध। प्रबुद्धानि ॥६९६॥

संस्कृताचि शिकवण। त्या भाषेचे उलवण।
तेंचि खरे मृष्टान्न। संस्कृती चे ॥६९७॥

संस्कृताचे व्याकरण। संपूर्ण गणकी[५६] करण।
तरळबाळाच्या स्वामेन। केल्लां ते धन्य ॥६९८॥

भाषेक नारे जाति भेदु। केल्यारि संकृती छेदु।
राष्ट्राच्या एकतेक बाधु। जात्लोरे खरें ॥६९९॥

५६ कंप्यूटर

धार्मिक ते ब्राम्हणालि। आम्का कळ्नशी वापरली।
अशिशं म्हणपी भ्रमाजाली। शिरकली समज ॥७००॥

संस्कृत कोर्का सरळ। उल्लैतले चेर्डु बाळ।
जना तोंडांतु सर्वकाळ। उरतले तेन्ना ॥७०१॥

विज्ञान आणि वेदान्त। संस्कृतानीचि सांग्येत।
असली भाषा जगान्त। नारे आणि एकि ॥७०२॥

स्वतः सर्वज्ञ स्वामी। सर्व भाषा सक्रमी।
अभ्यास कोर्नु श्रमी। दिल्ला हो संदेशु ॥७०३॥

गुरुदेवा चरणा कडे। हात जोडोनि पुडे।
बस्लेति शिष्य थोडे। त्यात्लो एकु जिज्ञासु ॥७०४॥

प्रसिद्ध ते चारिवेद। ज्ञान विज्ञानान अगाध।
मेळ्ता तांतु सर्व बोध। तरी पुराणादि कित्त्या? ॥७०५॥

ग्रंथ बाहुळच पोळोनु। जन गेल्लें थकून[५७]।
वाच्चाक वेळु ना म्होण्णु। विसर्ले सर्व ॥७०६॥

शिष्य लोकाले तळमळ। तांचे मनाचे उतावळ[५८]।
समजूका म्होण्चे कळ्वळ। कळलें गुरुरायाक ॥७०७॥

सद्गुरु जाल्लें प्रसन्न। म्हणाले साधु प्रश्न।
लाग्ल्या ज्ञानाचि तान। सांग्तारे आइका ॥७०८॥

वेदम्हळ्ल्यारी क्षारोदक। निवैना तान भूक।
सूर्य रश्मी मूलक। जात्ता मेघ सगळें ॥७०९॥

५७ आयास पाव्नु. ५८ उद्वेग.

श्री गुरुचरितामृत

वर्षवितातित जलधारा। तुष्टविती ती जीवाधारा।
भेदुचि ना परस्परा। निववी तान सगळ्यांचि ॥७१०॥

ज्ञानी वेदार्थ जिरोनु। सार अज्ञांक वांटूनु।
सगळ्या समजूति दीव्नु। राखिले ज्ञानराशी ॥७११॥

वेद अपौरुषेय। दृष्टार तें ऋषिवर्य।
श्री हरीचे गुण सौंदर्य। विवरितातित वेद ॥७१२॥

वेदाक अर्थ त्रिविध। आज्ञांक तें दुर्बोध।
केल्ले ताज्जें सूत्रानुवाद। वेद व्यासानीं ॥७१३॥

सूत्रार्थ वोधीं पुराण। रचिले भारतादि कथान।
तत्त्वादि सकल ग्रथन। केल्ले भागवतांतु ॥७१४॥

वेदार्थु तो प्रणवांतु। प्रणवु तो अष्टाक्षरांतु।
अष्टाक्षर नारायणांतु। व्यापिला रे बाळां ॥७१५॥

अनिकई सांगता अतिशय। रामायण भारता विषय।
जाल्ले तुम्का आश्चर्य। तरी सर्व समजा ॥७१६॥

पुराणाचो अर्थु व्यहृतींतु[५९]। व्याहृतीचो अर्थु गायत्रींतु।
गायत्री अर्थु रामायणांतु। जाल्लारे उदात्त ॥७१७॥

गायत्री चोवीस अक्षर। श्लोक ते चोवीस हजार।
कर्ता वाल्मीकि मुनिवर। राम कथेंतु ॥७१८॥

वेदार्थ निर्णायक। महत्वाचे भारतादिक।
गायत्री भाष्य रुपक। ग्रंथु तो भागवत ॥७१९॥

५९ भू भुव स्व

वेदाक अर्थ तीनी। दाहा अर्थ भारता म्हणूनि।
विश्व म्होण्चे एक नावांनि। काड्ला रे शतार्थ ॥७२०॥

सांग्ताति आनंद तीर्थ। ते सर्व प्राणालेनाथ[६०]।
ते प्रथम विष्णु दूत। ख्यात हनुमंत नांवि ॥७२१॥

सर्वज्ञ म्हणताति तांका। ऋग्भाष्य बरोनि लोकां।
कोळोनु खरे अर्थु आम्का। राख्ल्या त्या गुरुनि ॥७२२॥

इतिहास आणि पुराण। वेदाचे उपबृंहण[६१]।
स्त्री शूद्र द्विज बन्धून। केल्लो वेदार्थ मनन ॥७२३॥

वेदशास्त्र आइकूचाक। आस्स अर्हता सर्वांक।
तरी त्या अर्थानुष्ठानाक। पड्तलो रे फरक ॥७२४॥

६० मुख्यप्राणु ६१ उदात्तीकरण

श्री गुरुचरितामृत

भिन्न भिन्न स्वभाव। नाना संस्काराचे जीव।
स्वरूप युक्त अनुभव। पाव्तले हे खरें ॥७२५॥

वेदतरी अपौरुषेय[६२]। दृष्टार ते ऋषिवर्य।
सांग्ले मंत्रद्वारा विषय। तो गृहण योग्य ॥७२६॥

जाव्का अंतःकरण शुद्धि। तेन्नाचि स्वरूप सिद्धि।
म्हणूनी स्मृतिग्रंथादि। रचिले ऋषिमुनींनि ॥७२७॥

श्रुति स्मृति पुराण। सर्वै आम्का प्रमाण।
समजूनु आम्ही ऋषि ऋण। पावोका बरें ॥७२८॥

गुरुली अमृत वाणी। आइकता हे कान दोनी।
जाल्लें पवित्र म्हणता तान्नि। वंदिले गुरु पायां ॥७२९॥

६२ कोणी केल्लेले नई

काहीं प्रगती शील म्हणपि। केवल जल्पक उलपि।
वाद विवाद तें करपि। कर्कशी लोक ॥७३०॥

प्रश्निलें गुरुरायांक। विषयु हो सामाजिक।
गुरुचि उत्तर दिव्वाक। समर्थ दिसता ॥७३१॥

विस्तार हीं देवालय। जनांक ना आश्रय।
केल्यारि पुणी अनाथालय। सार्थक म्होणुये ॥७३२॥

सर्वत्र अस्सूच्या देवाक। मंदिर तरी कित्त्याक?।
दिल्यार जन वासाक। जात्ली देवा प्रीति ॥७३३॥

स्वामें म्हणाले प्रीतीन। मन्दिर करा म्होण्णु देवान।
सांगनी पण जनान। बान्ध्लारे मंदिर ॥७३४॥

मन्दिराचे प्रयोजन। बान्धलेले महाजन।
घेत्ताति हे मनन। केल्ले ना तुम्हीं ॥७३५॥

समाजान्तु सात्विकता। संघटना आणि एक्‍ता।
हाड्‌चाक हे यात्नता। केल्ले गा पूर्वजानी ॥७३६॥

दिल्लें कलात्मक स्वरूप। जन भुल्लें आपोआप।
केल्लें प्राकृता ते रूप। आप्राकृताक ॥७३७॥

विशाल ते प्राकार। गगन चुंबी गोपुर।
पूजा करी शोडषोपचार। जनकल्याणिं ॥७३८॥

समाराधन प्रतिदिन। सामूहिक संकीर्तन।
नीति धर्माचे श्रवण। चल्ता मन्दिरा नित्य ॥७३९॥

होड़ु दुर्बळो विद्वानु। दुडुवाळु हीनु सानु।
भेदु ना सर्व समानु। देवा पुढ़े सगळें ॥७४०॥

नाना कलेचो विकासु। जन मनांतु आत्म विश्वासु।
देव मन्दिराचो हो उद्देशु। विसरला तुम्का ॥७४१॥

नाम गीतादि प्रकार। जन मनांक नाना संस्कार।
दित्ताति ही देवमन्दिर। नेणे तुम्हीं अंध ॥७४२॥

देवाक निमित्त कोर्नु। हाड्ला समाज सुधार्नु।
हे तुम्ही विस्सोर्नु। सेवा म्हण्ता समाजाचि ॥७४३॥

परस्पर सहकार बुद्धि। ताज्जेन समाज समृद्धि।
म्होणूनि मन्दिरा अभिवृद्धि। कोर्का रे बरीं ॥७४४॥

वाड्ल्या जनांतु भोग बुद्धि। संग्रहाचि ती समृद्धि।
कोणाकईं ना दान बुद्धि। नागरीकांक ॥७४५॥

सर्वांक बरे पण। मागताति गा देव्ळांतून।
असले श्रेष्ठ उदारपण। अन्यत्र तरी दाख्खय्या ॥७४६॥

देव धर्माच्या कारण। आस्कारे तुम्चे जीवन।
चिंतन रे हे पुरातन। कळचारि हें बरें ॥७४७॥

समाजाचे विश्रांति धाम। मन बुद्धिचे विश्राम।
म्हणून देवालय ग्रामोग्राम। केल्लें पूर्वजानी ॥७४८॥

पूजा आणि प्रतिमा विधान। ताज्जेन रे समाज शिक्षण।
शिक्षण म्हळचारि अक्षरज्ञान। अशिशं म्हणपि मूर्खा ॥७४९॥

श्री गुरुचरितामृत

ग्रंथ वाच्ल्यारि बहुत। ग्रंथ्यो वाड्ता असंगत।
संशय आणि अनाहुत। उपाधि गा खरें ॥७५०॥

त्यापेक्षा श्रेष्ठु सत्संगु। मुक्तीक तो प्रधानांगु।
देवालय ताज्जेंचि अंगु। समजारे बरें ॥७५१॥

देवाले वैभव वाड्डोका। मठ मन्दिरादि राखूका।
भजकांक श्रद्धा आस्का। आपुलपणाचि ॥७५२॥

नित्योत्सव आणि पक्षोत्सव। मासोत्सव रथोत्सव।
त्यजूका विनोद स्वभाव। कोर्का सेवा देवाली ॥७५३॥

देवाक नाना आभरण। ज्ञान भक्तीन पूजन।
समाराधन संतर्पण। चोलोंका वर्ष प्रति ॥७५४॥

समाजाचे प्राणाधार। प्राचीन हे देव मन्दिर।
तांचे ते जीर्णोद्धार। समाज कार्य ॥७५५॥

समाजाचे जीर्णोद्धार। कोर्का देवालया द्वार।
प्रचार करा देशभर। उर्ता देव धर्म ॥७५६॥

देवधर्माचेचि अंग। विद्या शिक्षणादि रंग।
दान सेवेन पूर्णांग। कोर्का तरी पुष्ट ॥७५७॥

देवाक दीव्का चित्त। दीन दुःखीक दी वित्त।
त्या पुण्य कार्या निमित्त। बान्धी देव मन्दिर ॥७५८॥

गरुली ही व्याख्या सुंदर। आइकूनु ते विचारपर।
जुरले कोर्नु नमस्कार। विधेय भावें ॥७५९॥

गुरुभक्त साधकानी। प्रीति आणि भय भक्तीनि।
गुरु चरणांक वन्दूनि। प्रीर्थिले अशिशं ॥७६०॥

सत्संगाचे ते महत्व। ताज्जे खरे मुख्य तत्त्व।
संत जनालें व्यक्तित्व। समजूका बरें ॥७६१॥

मुग्ध शिष्यालि कळकळि। गुरुराया ती आइकली।
तुम्का ही गोडी लागिगली। पूर्व पुण्यान ॥७६२॥

ब्रम्ह रुद्रादि देव। नारदादि महानुभाव।
सत्संगाक तांचे नीव। तळमळताती ॥७६३॥

आइका आम्ही सांगताति। मुख्यरे हे परमार्थि।
सत्संगान अध्यात्म प्रगति। जात्ता मात्र सत्य ॥७६४॥

संगु तो सर्वैं सोड्का। ना तरी सत्संगु धोर्का।
सत्संगान सर्वैं साध्का। अशिशं म्हणता शास्त्र ॥७६५॥

'सत्' शब्दु ब्रम्हवाचक। ताज्जो संगु मेळ्चाक।
बहु जन्माचे परिपाक। आस्कारे बाळा ॥७६६॥

अर्जुनु शुद्धांतरंगु। कुरुक्षेत्र गा रणरंगु।
त्या स्थळी भगवत्संगु। घडलो भाग्यवंता ॥७६७॥

कोणा पाट्ल्यान भगवंतु। भोंव्ता तोचि सन्तु।
ताज्या त्या अंतरंगातु। वासु कर्ता हरी ॥७६८॥

तसल्या संताल्या चरण। सेवेंतु करी काल हरण।
तोवै सत्संग नावांन। उळिदिता शास्त्र ॥७६९॥

तरी सन्तु तो दुर्मिळु। सच्छास्त्री घालि वेळु।
जा तूं अध्ययन शीलु। ते सुदा संत्संगु ॥७७०॥

अध्ययन तरी साध्यऽना। सत्कार्य तरी कराऽना।
संतोषु करारे जना। ती वै पूजा ईश्वरालि ॥७७१॥

यात्रेच्या निमित्तान। फिरती सगळी देवस्थान।
तृप्त ते बरे भोजनान। नेणती सत्संगु ॥७७२॥

यात्रेचे मुख्यफल। सत्संगूचि रे केवळ।
सन्तऽचिरे तीर्थ सकल। जलतीर्थ ते गौण ॥७७३॥

तीर्थ म्होण्चे शास्त्रांक। ते समजलेल्या संताक।
त्यांच्या चरणकमलांक। करा रे नमन ॥७७४॥

भोग्ताति दुःख भवज। परिहारु न कळे सहज।
सन्तसंगूचि गा भेषज। दारुण भव दुःख ॥७७५॥

सन्ताचें तें उत्रं। तेंचिरे ब्रम्हसूत्र।
सत्संगतिने पितर। उद्धरती एकवीस ॥७७६॥

विषय वासना भंग। परिशुद्धरे अन्तरंग।
उठति आनंद तरंग। स्वरूपी सुख ॥७७७॥

कोर्नुई दुष्टसंगु। ताज्जेन गा कार्य भंगु।
कस्तूरींतुलो हिंगु। दुर्जनु समज ॥७७८॥

वाद विवाद करुनका। साधनेचो मार्गु सोडूनका।
चुको नका नाम श्रीमुखा। वदारे नित्य ॥७७९॥

काया मनसा वाचा। वर्तणूक[६३] असूका साचा।
करुनका संग नीचा। धरी सत्संगु नित्य ॥७८०॥

आवै बाप्सूक नमस्कार। पत्नील्यागी समान व्यवहार।
चेर्डाचेंरि असूका कनिकर। व्यवहारु हो लोकां ॥७८१॥

सत्संगतीक संसारु। बाईल भुर्ग्यांचो परिवारु।
माता पिता सहोदरु। दिल्ला देवान सर्वै ॥७८२॥

प्रणाम कर्तांति साधक। जाल्लें उत्साही सत्संगाक।
प्रतिमा स्थानीय गुरूक। म्हणालें होचि सत्संगु ॥७८३॥

अश्शिं ते समयोचित। शिष्यांक उपदेश करऽत।
वेळु घाल्तालें बहूत। कल्याण कार्य ॥७८४॥

६३ चालि

ऐकदा स्वामिरायांक। दिसले काशी क्षेत्राक।
वोच्का त्या गंगातीराक। एकांत वासा ॥७८५॥

राब्का थांगा चारिमास। कोर्का व्रतादि विशेष।
अशिशं प्रेरणा वेदव्यास। दित्तारें स्वाम्यां ॥७८६॥

काशींतु चातुर्मासु। कर्तीति हो संदेशु।
देव्ळां बरोनु रायसु। कळैले सर्वां ॥७८७॥

घेव्नु विशेष परिवार। सकल सामग्री सांभार।
चाल्ले काशीक गुरुवर। करीत क्षेत्र वास ॥७८८॥

पाव्ले स्वामे वारणासीक। काशीच्या मूल मठाक।
चातुर्मास्य महा व्रताक। ब्रम्हघार्टी ॥७८९॥

श्री गुरुचरितामृत

अनेकानेक पूर्व यति। ह्या स्थळीं मुक्त जाल्लेति।
तांचि सर्वांचि स्मृति। कोर्चाक हे साधन ॥७९०॥

काशींचो चातुर्मासु। त्या निमित्ता तीर्थ वासु।
घडलो शिष्य वर्गा विशेषु। अवकाशु सगळचा ॥७९१॥

चिंतीत गुरु सूक्ष्ममति। आपुले पूर्वज यति।
तांचि बैठक आणि वसति। अस्तली तरी कशिशं? ॥७९२॥

केशवेन्द्रांक वेदव्यासु। मेळ्ळो गंगेंतु तापसु।
श्री राघवेन्द्रांक श्रीशु। नरसिंहरूपी ॥७९३॥

दर्शन मेळ्ळा ते हांगा। तींचि काशी तींचि गंगा।
स्वाम्याल्या दिव्यांतरंगा। भास्ता सर्व स्पष्ट ॥७९४॥

संस्कृत पाठशाला। चल्तली म्हळ्ळा त्या वेळा।
आम्मितरी ह्या स्थळा। कोर्का पाठशाला ॥७९५॥

बरे ब्राम्हण वंटूंक। तश्शींचि शिक्षक वर्गाक।
व्यवस्था कोर्नु वसतीक। व्यवस्था ती चांगि ॥७९६॥

शिष्य स्वीकारा उपरांत। हेंचि पाठशाळेंत।
तांकाइ शिक्षण मेळ्चांत। ना संशयु आम्का ॥७९७॥

वैदिकानि जाव्का पंडित। जाव्का पाठ सुधान्त[६४]।
समाजाक माध्व सिद्धांत। शिकवी ते धन्य ॥७९८॥

स्वामेन ही योजना। कळैलि आप्त शिष्य जनां।
सोद्दिताकैं ब्राम्हण। आणि शिक्षकांक ॥७९९॥

६४ श्रीमन्यायसुधा ग्रंथ

श्री गुरुचरितामृत

चातुर्मासाचे दिवस सरले। स्वाम्याले मनांतुले उरलें।
चिंतीत काहीं स्फुरलें। तें सुदा जिरले मनिं ॥८००॥

चातुर्मासाच्या उपरांत। अनेक तीर्थ संचरीत।
केरळाक आइले त्वरित। श्रांत स्वामें ॥८०१॥

निरंतर संचारान। कठिण नियमानुष्ठान।
गुरुरायांक हाज्जेन। श्रमले गा देह ॥८०२॥

अंत्र वृषणादि वृद्धि। ताक्का औषध आयुर्वेदि।
केल्यारी विश्रांति ना आदि। थकले गा स्वामें ॥८०३॥

प्रसिद्ध वैद्य म्हणाले। शस्त्र क्रिया एक्कीचि पैले।
कर्नातरी स्वाम्यालें। बिगडता स्वास्थ ॥८०४॥

विषय निवेदिलें स्वम्यांक। व्यास रघुपतिल्या पूजेक।
ना जाल्यारि काही आतंक। ना म्हणती स्वामी ॥८०५॥

शस्त्र क्रिया भारी होडी। नाक्कावे विश्रांति पुणि थोडी।
पूजेक आम्ही न सोडी। स्वामि रायांक ॥८०६॥

भट्टजी कर्तले पूजा। मानस पूजा यतीं सहजा।
वैद्यालें आइकता यतिराजा। हासले गा मनीं ॥८०७॥

विधि निषेध पालन। संन्यासीक ना म्हण्ता कोण?।
लोक संग्रहाकारण। जीणे गा संन्यासिलें ॥८०८॥

संन्यासी कर्ता देवपूजा। संसारिकालि देह पूजा।
राब्चि़ ना पूजा समजा। तरी नाक्का चिकित्सा ॥८०९॥

हे निष्ठूर नियम। तरी चिकित्सा व्यर्थ श्रम।
स्वाम्यांक कोर्नु प्रणाम। वैद्य निर्गमले ॥८१०॥

शस्त्र वैद्यालो गुरु। गुरु भक्तु विचारपरु।
हरिशेणैलो कुवरु। नारायण शेणै ॥८११॥

रंजाळ शेणै घराणे। भुवनेन्द्रांल्या कृपाकिरणे।
उदयोन्मुख ते शहाणे। कीर्ति मान बरें ॥८१२॥

वैद्याक्काइले आमंत्रण। केरळाक येवून।
भेट्का म्होण्णु स्वाम्यान। धाडलो रायसु ताक्का ॥८१३॥

केलिकट्टाक पाव्नु। स्वामेक ताणे तपासूनु[६५]।
भक्तीन पायां पोण्णु। केल्ली विनंति ॥८१४॥

६५ परीक्षाकोर्नु

कोकींचि शस्त्र क्रिया। सेवेक आज्ञा दिय्या।
पुजेक तरी नेमिया। उत्तम वटु ॥८१५॥

स्वाम्याले गंभीर वदन। चोइले शेणै माम्मान।
क्षणकाल सर्व मौन। अर्थ पूर्ण ॥८१६॥

स्वामेन सांग्ले उपाय। पूजा आम्ही कोरु जाय।
दुसऱ्यां नेम्मचो संप्रदाय। परंपरेंत ना ॥८१७॥

उदयारी कोर्यां पूजा तीनि। पाय्चि पायिरात्री पुणि।
कोर्येत ती एक्सानि। पाव्तालो देवु ॥८१८॥

शस्त्र क्रियाचे नतर। दूकि आस्तली भयंकर।
पूजा कशिशं कर्ताले गुरुवर। जाल्लो संदेहु वैद्या ॥८१९॥

चिकित्सा चोल्का मुंबैंतु। आपुल्या वालुकेश्वर मठांतु।
काशाय[६६] शिवाइ अन्य तन्तु[६७]। न घालि अंगारि ॥८२०॥

नारायण शेणैन कोर्का। शस्त्र क्रिया ती आम्का।
आज्ञा ही सर्वांनि पाल्का। होचि गा निर्णयु ॥८२१॥

मुंबैचे वैद्य सगळे। मठाक धाव्नु आइलें।
शस्त्रास्त्र नवीन हाड्ले। कक्षा[६८] बान्धी नवीन ॥८२२॥

यशस्वी गा शस्त्रक्रिया। वेदव्यासालि ती दया।
उठले स्नाना गुरुराय। हेर दिवसु ॥८२३॥

तीन्ही पूजा ती राति। करी भक्तीन यति।
वैद्य आश्चर्य पावति। मनांत भीव्नु ॥८२४॥

६६ काविवस्त्र. ६७ सूत. ६८ कूड

असली तरी वेदना। पूजा ती राब्बिलि ना।
शस्त्राचे व्रण सुक्लेना। तापु चढ़े दिन दिन ॥८२५॥

एकु मासु पर्यंत। अती वेदना देहांत।
तरी मन उल्लसित। पूजेन यति राया ॥८२६॥

प्रकृति सुधाल्यां नंतर। न्यूनातिरिक्ता खातीर।
चाल्लि यज्ञ तीं विष्णुपर। मुंबै नगरी ॥८२७॥

स्वाम्याली ती चित्तवृत्ति। हरिचरणी सदामति।
अखंडानंद प्रवृत्ति। अंतःकरणी सदा ॥८२८॥

असले गा आमुचे गुरु। सदा तांचे चरण स्मरुं।
दुःखार्णवाचे[६९] तारु। गुरुचि गा सत्य ॥८२९॥

[६९] दुःखाचे समुद्र

मुखावैलि महायोजना। चिंतन करीत मना।
समाज्याच्या उन्नति कारणा। उपक्रमिं कार्यावळ ॥८३०॥

मठ मन्दिर जीर्णोद्धार। शाखा मठाचे स्थावर[९०]।
बान्धिले अधिक चाळीसावर। व्यवस्थेशीर ॥८३१॥

मठ मन्दिराचे उभारण। त्या पूर्वि आर्थिक ठेवण।
प्रत्येक निधी संग्रहान। त्या वृद्धीन[९१] चोल्का ॥८३२॥

अर्चकांक संभावन। मुक्त स्वाम्याली आराधन।
चोल्का उत्तम रितीन। दान दक्षिणा युक्त ॥८३३॥

बालकाश्रमा विषयीं। चोक्कारे समयासमयीं।
खंचै विद्यार्थि विषयीं। कोरनयी दुर्लक्ष्य ॥८३४॥

९० शाश्वत बांधकाम ९१ वाढीन

श्री गुरुचरितामृत

स्वमठाक नेमून समिती। तान्नि समजूनु इतिमिति [७२]।
संस्थानाच्या गौरवा प्रति। दवोर्का आदरु ॥८३५॥

प्राप्त आर्थिकोत्पन्न। विचारल्यारि गरीब आपन्न [७३]।
दीव्का विद्या आणि अन्न। गौरवादरें ॥८३६॥

स्वामेचि सर्वाधिकारी। ते निर्दोष निर्विकारी।
ते सर्वांक आधारी। विश्वासी शिष्यांक ॥८३७॥

घालूनु विधि नियम। चिंतूनु त्या समविषम [७४]।
कोणा जाउनई श्रम। करा ही गुरु सेवा ॥८३८॥

भूतकालाचो उड्गासु। वर्तमानाक सुग्रासु।
तांतु भविष्याचो आदेशु। आस्ता म्हणती पूर्वज ॥८३९॥

७२ अधिकार व्याप्ती. ७३ कष्टात् अशिशले ७४ बरेवाईट.

कारण सांग्ता आइका। श्रोत्र गणानि समजूका।
पाठकांक चिंतनिका। मेळ्ता सांग्ता बरें ॥८४०॥

गोमन्ताचान गोश्रीक। आयिल्या सास्वतांक।
कुलदैवता विषयाक। जाल्ले ज्ञान लुप्त[७५] ॥८४१॥

पडूनयी विस्मरण। ताज्जेन तुंट्ता एकतान।
स्वामेन हे चिंतून। दिल्लो जनांक यादु ॥८४२॥

कुलदेवळां समुच्चयु। त्या गोत्रजांतु समन्वयु।
शिकवून तांका संप्रदायु। रचयिले देवळं ॥८४३॥

अंबलमेट्टु प्रकृति। गोइंचींचि प्रतिकृति।
त्या स्थॅळांतु दिव्य कृती। निर्मिले कुलदेवळं ॥८४४॥

७५ ना जावचे.

प्राचीन आणि अर्वाचीन। संबन्धु जोड्लो स्वाम्यान।
विस्सरू कश्शिं हे ऋण। स्वामिरायालें ॥८४५॥

गोश्रींचे कुळाव्यांक। कुल देवाल्या सेवेक।
वोच्चे पड्ना गोयांक। केरळचि गोयं ॥८४६॥

दोन्नि सृष्टि भार्गवाली। सारस्वत कुल पुत्रालि।
गरुली विचार प्रणाली। समजूका आम्ही ॥८४७॥

वर्ष जाल्लि साठी। भविष्याचि दूरदृष्टि।
संस्थानाच्या रक्षणासाठी। चिंतित ते नित्य ॥८४८॥

कालगर्भा चे रहस्य। छेदूनि तांत्ले भविष्य।
चोइताति ज्ञानी अवश्य। अधिकारी ते ताक्का ॥८४९॥

वैज्ञानिक ह्या कालांतु। भोगवादी जना मध्येंतु।
त्याग शीलु उर्ना लोकांतु। जाव्का मार्गदर्शि ॥८५०॥

जनांक दीव्का संस्कार। यतींक ना धर्माधिकार।
धर्मातीत म्हणता सरकार। भ्रष्टविता धर्म ॥८५१॥

सर्वांतूहि हस्तक्षेप। काड्ता सरकार आक्षेप।
नाना धार्मिक कलाप। कोरु तरी कश्शिं ॥८५२॥

मठा कोर्का उत्तराधिकारी। आस्का वेदांतविचारी।
लौकिक शिक्षण बरोबरी। परमार्थ साधि ॥८५३॥

कालु खरो बदलला। प्रपंचु विषयांतु बुडला।
त्यागी संयमी जरी भेटला। हासती गा जन ॥८५४॥

तरी राक्कूका परंपरा। म्होण्णुचि शिष्य स्वीकारा।
अनुमति दित्ता अंतरा। व्यास रघुपती ॥८५५॥

स्वाम्याले हे इंगित। पाव्नी गा षट्कर्णांत।
आप्तांक घेव्नु एकांत। चिंतिती सगळे ॥८५६॥

सांगले त्या आप्तानि। विनंति केल्ली विनयानि।
आम्ही आइकलेले कान्नानि। विषय थोडो ॥८५७॥

रंगनाथ पैलो पूतु। दुसरो तो गुणवंतु।
हांचे पूर्वज मंगळूरांतु। अश्शिंले पूर्वी ॥८५८॥

आइकले आम्ही अश्शिं। हांका कुलदेवि म्हाळ्शिं।
गोत्र भारद्वाज वंशी। जन्मु बालकालो ॥८५९॥

शिवानन्दु नामकु। रंगनाथालो बालकु।
दुसरो हो आज्ञाधारकु। सात्विकु बरो ॥८६०॥

दहावर्षांचे [७६] शिक्षण। जाल्ला म्हणताति जन।
ही आमुचि निवेदन। निर्णय गुरुलें ॥८६१॥

आइकता द्विज मंडळी। धाडून हाडैलि कुंडली।
स्वतः गुरुरायानि पळैलि। पटले गा मनां ॥८६२॥

आवै बाप्पैलि सम्मति। शिवानन्दालि सहमति।
देवाली ही अनुमती। जाल्ली ती क्षण मात्रें ॥८६३॥

एर्नाकुलं सारस्वत। धन्य म्होण्णु पुण्यवंत।
काशीमठाधिपत्यांत। एक गांव्चे दोघे ॥८६४॥

७६ मेट्रिकपास.

देव धर्माचे संस्कार। जाल्ला ह्या जनांगावर।
हांग्चे गृहस्थ द्विजवर। म्हणूरे आचार शील ॥८६५॥

समाजाच्या परिचयाक। लोकानुभव प्राप्तीक।
नाना पुण्यक्षेत्रांक। यात्रार्थि जाव्नु ॥८६६॥

धाड्ले शिवानंद पैक। त्यांच्या बरोबर आप्तांक।
दिल्ले मार्गदर्शकांक। वाहन सहित ॥८६७॥

भारताचे प्रमुख नगर। नाना मठांचे यतिवर।
भेट्टूनु पुण्य संगमावर। स्नानादि कोर्नु ॥८६८॥

शिवानन्द ब्रम्हचारी। परतूनु गुरु चरणारि।
साष्टांग कोर्नु विवरी। अनुभव यात्रेचे ॥८६९॥

महाविद्यापीठ काशी। गंगा पावनी पाप नाशि।
महारुद्र मनोल्लासी। नगर विश्वनाथाले ॥८७०॥

सदाशिवु क्षेत्रपति। शंकरु शिवु आनन्दमूर्ति।
अन्नपूर्णा माता ती। कर्ता वसती हांगा ॥८७१॥

काशीच्या चातुर्मासांतु। जें स्फुरलेलें मनांतु।
परतलें तें स्मृतिपटलांतु। सुधीन्द्र तीर्थां ॥८७२॥

व्यासु तो केशवेन्द्रांक। नरसिंहु राघवेन्द्रांक।
पाव्विल्या ह्या क्षेत्रांक। सम ना दुसरें ॥८७३॥

शिष्य स्वीकारु काशींतु। ठरैलें स्वाम्यान मनांतु।
कळैले रायस पत्रांतु। अखिल शिष्य वर्गा ॥८७४॥

ऐकूनि लोक हर्षलें। सर्वै उत्तर मुखी जाल्लें।
ह्या निमित्तानि घडलें। यात्रे चे भाग्य ॥८७५॥

मूलमठाचे दर्शन। त्रिवेणि संगम स्नान।
गयेंतु पितृ तर्पण। कोर्या पुण्य कार्य ॥८७६॥

सिद्ध जाल्लें असंख्यात। आपुलें पत्नी पुत्र सहित।
मातापितालें भक्त। घेव्नु आइले ॥८७७॥

स्वाम्याल्या आज्ञेन सकल। मुंबैचें व्यवहार कुशल।
लोक येत्तारे विपुल। जाव्का सिद्धता बरी ॥८७८॥

अपार वैदिक मंडळी। परिवार सहित उठलि।
खांद्यारि माथ्यारि पोटली। दिस्ताति बहूत ॥८७९॥

सारस्वत हे औतरेयि। इतिहासाच्या अभिप्रायिं।
चाल्लें पूवजाल्या ठायीं। म्हणूयारे बरें ॥८८०॥

काशीमठ संस्थान। केल्ला रे विद्युदीकरण।
ध्वज पताकानि अलंकरण। वैभवोपेत ॥८८१॥

संस्थानाचो जागो सीमित। भरलेति लोक असंख्यात।
उभारलेल्या मंटपांत। लोक पांच साम्रा[७७] ॥८८२॥

स्वामेन व्यवस्थापकांक। खंचे वेळारि आइल्यांक।
वसती आणि अन्नोदकाक। कोर्का म्हळ्ळा व्यवस्था ॥८८३॥

उपहार उषःपान। मेळ्का सर्वांक समान।
यांत्रिकांक मृदु उत्रान। स्वागत करा बरें ॥८८४॥

[७७] सहस्र.

मठ मन्दिर अग्रशाला। विद्यालय आणि धर्मशाला।
राख्खूनु दवरा स्त्री बाला। येत्ली असंख्यात ॥८८५॥

शुक्लनाम संवत्सर। आषाढ पंचमी तिथिवर।
पवित्र तो भृगुवासर। उत्तम अभिजिल्लग्न ॥८८६॥

संन्यास पद्धति प्रमाणे। पूर्वजालें शास्त्रानुसरणे।
शास्त्रोक्त विधि विधाने। दिल्लें चरमाश्रम ॥८८७॥

श्री राघवेन्द्रतीर्थ। आश्रम नाम ते सार्थ।
दीव्नु केल्लें त्यां समर्थ। बालयतीक ॥८८८॥

समर्पिलें शिष्य वर्गांनि। पट्ट काणुक भक्तीनि।
पुष्पमालादि द्रव्यानि। सेविले चरण ॥८८९॥

धर्मसभा सायंकाळी। प्रवचन तें गुरुशिष्यांलि।
आइकूका म्होण्णु कुतूहलीं। जमलें अपार ॥८९०॥

आमंत्रिला विद्वांसांक। काशीच्या महाजनांक।
दिल्ली पंडित वर्गाक। सूचना ती अशिशं ॥८९१॥

धर्मप्राणु भारत देशु। तांतु पवित्र हो प्रदेशु।
प्रसार कोर्का ध्येयोद्देशु। वेद धर्माचो ॥८९२॥

पूर्वीच्या गुरु वर्यांनि। पाठशाला काडूनिं।
वेद चारीही शिकवूनि। धन्य केल्लें ॥८९३॥

जाल्लें ते वेद पंडित। शिक्कूनु ह्या काशीमठांतु।
ऐकलेलें आम्मि पूर्वांतु। श्री गुरुकडे ॥८९४॥

स्वाम्याली गीर्वाण वाणी [७८]। आइकूनु त्या पंडितानि
आम्चे वडील [७९] ज्ञानी। शिक्ले वेद मठांतु ॥८९५॥

आशिशं काहीं वृद्धलोक। वंदूनु गुरु स्वाम्यांक।
सांगताना श्रोतृ वर्गांक। आनन्दु अतिशयु ॥८९६॥

गुरु वन्दना कार्यक्रमु। अवर्णनीय संभ्रमु।
काशीचे मठ आश्रम। जाल्ले भागीदार ॥८९७॥

पंचपक्व परमान्न। देत प्रसादु मृष्टान्न।
दाक्षिणात्या भोजनान। तृप्त तें उत्तरीं ॥८९८॥

गावां वोच्चा अवसरु। कोर्चें पोळोनु गुरुवरु।
शिष्यां दिल्लो अधिकारु। मंत्राक्षतेचो ॥८९९॥

७८ सस्कृत भाषेचि उत्र ७९ म्हालगाडं

श्री राघवेन्द्र तीर्थ। फल मंत्राक्षता सहित।
दीव्नु प्रसादु विहित। गुरु मुखारी ॥९००॥

अखंड रात्री जागरण। कीर्तन कथा तें भजन।
गुरुतत्त्वाचे विवरण। करी दास ॥९०१॥

गांव्चे लोकाले रांदप। बंटवाळकाराले वाढप।
कोडियाल्चेले वांटप। उपहार सर्व ॥९०२॥

यात्रीकांक वसतीचे। व्यवस्थापक ते गोश्रीचें।
परिचय पत्रक दीव्चे। देहली चे ॥९०३॥

वाहक संस्था वेगवेगळीं। सगळी भाइरि सरली।
मार्गातु मेळ्तातितुली। तीर्थी स्नान ॥९०४॥

काशी प्रयाग गाया। अयोध्या मथुरा माया।
विधिपूर्वक यात्रा क्रिया। करीऽत परतले ॥९०५॥

श्री सुधीन्द्रतीर्थ स्वाम्यान। पूर्व योजनेच्या क्रमान।
पाठशाळा ती नवीन। शिष्यां कुणी ॥९०६॥

शिष्य स्वामेक सेवेक। पाठशालेचे बालक।
पूजादि शिकोचाक। नेमिलें द्विजां ॥९०७॥

श्रीमठाचे अभिमानि। काइं वैदिक लोकानि।
शिकोंका ती विनयानि। संप्रदाय ॥९०८॥

अस्सूनये खंचा उणाव। अशिशं आज्ञेन गुरुराव।
समजून शिष्य स्वभाव। आलिंगी प्रेमें ॥९०९॥

श्री गुरुचरितामृत

आम्मि चाल्लें उडुपीक। चातुर्मास संकल्पाक।
तुम्मी विद्याभ्यासाक। दिय्या लक्ष्य ॥९१०॥

मठाचो देवु रामचन्द्रु। आणि पूर्वाचे राघवेन्द्रु।
नरसिंहु सहित बदरीन्द्रु[८०]। राख्खो तुम्का ॥९११॥

गुरु वचन हे ऐकूनु। बालकु यति वरेण्यु।
गुरुलें चरण ते धोर्नु। धुल्लें नयनाश्रु ॥९१२॥

विषय कळयां पत्र द्वारा। तुम्ही निश्चिंत उरा।
सकल विद्येयो सागरा। आमुचो व्यासु ॥९१३॥

शिष्यांक कोर्नु समाधान। आइले उडुपी सन्निधान।
आरंभि व्रताचरण। चातुर्मास ॥९१४॥

८० वेदव्यासु

काशी तरी विद्या नगर। उडुपी ही समुद्रतीर।
तत्त्ववादाचे[८१] सागर। आनन्दयतीलें[८२] ॥९१५॥

गुरु शिष्या दूर दूर। अस्ल्यारि ही पत्र व्यवहार।
तांतु उपदेश सार। मेळ्ता भरपूर ॥९१६॥

उब्ता पक्षि आकाशारि। चित्त उर्ता पिल्लां चेरी।
तश्शिं मन शिष्यांचेरी। संचरी सदा ॥९१७॥

काशीचो हवामानु। राघवेन्द्रां जाइनी सहनु।
हे कळ्ता बरे म्हणोनु। दिल्ली आज्ञा ॥९१८॥

येय्या तुम्हीं कार्कळाक। प्रसिद्ध आम्चा मठाक।
व्यवस्था अध्ययनाक। कोर्या बरी ॥९१९॥

८१ मध्वाचार्याले मत ८२ मध्वाचार्य

कार्कळाचे महाजन। जाल्लें उत्सुक कीर्तिमान।
भुवनेन्द्राले दिव्यनावान। गांवु तो धन्य ॥९२०॥

संस्कृत भाषेचे शिक्षण। दिव्चे श्रेष्ठ विद्वज्जन।
अध्यापक तरी विचक्षण। ह्या गांवि ॥९२१॥

रेंजाळ हे घराणें। भुननेन्द्राले निवडणे।
केशव वैकुंठ नावांने। प्रसिद्ध गांवि ॥९२२॥

शेणै दोघैं अध्यापक। सज्जन आणि उद्बोधक।
बहुतेक बालयतींक। शिक्षण हे निष्कामि ॥९२३॥

सिद्ध जाल्ले ते सेवेक। विनंती कोर्नु सुधीन्द्रांक।
दिय्या अवकाशु सोदरांक। धन्य करा ॥९२४॥

गुरु सेवा तत्परु। मंजुनाथ पैलो कुवरु।
गणपति पै तो उदारु। गुरुभक्तु ॥९२५॥

जाल्ले सुधीन्द्र निश्चिंत। राघवेन्द्रांल्या आरोग्यांत।
सुधारण जाल्लें निवांत। करिती शास्त्राभ्यास ॥९२६॥

नादब्रम्हु विठलाक। दिल्ला गुरुनि शिष्यांक।
प्राप्त तो भक्तिलाभाक। सुलभु हो भक्तां ॥९२७॥

संस्कृत भाषा ज्ञान। तदंग तें व्याकरण।
केशव वैकुंठ सोदरान। अर्पिले स्वाम्यां ॥९२८॥

मध्व शास्त्राचे अध्ययन। काई तौलव ब्राम्हण।
करैतले पूज्य भावान। दान हे सत्पात्री ॥९२९॥

काई दिवसु मूलिकेंतु। उपरांत बंटवाळांतु।
शिक्षण तें मध्वशास्त्रांतु। राघवेन्द्रांलें ॥९३०॥

श्री गुरुल्या कृपे विना। शास्त्र ज्ञान तें मेळ्ना।
गुरुसुधीन्द्रमहामंना। कर्तीति कृपा शिष्यां ॥९३१॥

गुरुले ते स्मरण। गुरु मार्गानुसरण।
गुरुले उपदेश करण। करी मनन शिष्य ॥९३२॥

गुरुले पूजा विधान। तांचे गंभीर अनुष्ठान।
मंडन आणि अलंकरण। चिंतीत नित्य ॥९३३॥

आपाद मौळि पर्यंत। गुरु आकृति चिंतीत।
गुरूंक घेव्नु हृदयांत। जाल्लें तद्रूप ॥९३४॥

सुधीन्द्र कर संजात। तान्नि लाइली ही ज्योत।
आत्तां सर्वत्र प्रकाशित। ज्ञान भक्तिचें ॥९३५॥

सुधीन्द्राले यथा प्रति। श्री राघवेन्द्रमहायति।
ही परंपरेचि ख्याति। म्हणति लोक ॥९३६॥

शिष्यांभर्शि गुरुदर्शन। कोर्चे हे तीर्थ स्नान।
ही भावना जनमन। जाल्ली सत्य ॥९३७॥

गुरुशिष्य एक्डे मेळ्ताति। हे आइकूनु जन भरताति।।
दर्शना खातिरी येत्ताति। सहस्र संख्या ॥९३८॥

गुरु शिष्यांचि सेवा। कर्ताति बहु वैभवा।
निवृत्त कर्मि गुरुदेवा। ना आसक्ति ॥९३९॥

चल्तासर्व रुढिगत। स्वामें बस्ताति निवांत।
निमग्न ते परतत्त्वांत। सदा संतुष्ट ॥९४०॥

आइकरे ही गुरु महिमा। तांचि त्यागाचि गरिमा।
श्रवण मात्रान पाप तमा। जात्ता नाश ॥९४१॥

राघवेन्द्रालि गुरु भक्ती। शास्त्र विषयीं आसक्ति।
पळैत गुरु संतोषति। आठोनु सुकृतीन्द्र गुरूक ॥९४२॥

तरी संन्यासी लोक निर्मोही। सदा ते हरि स्नेही।
ना तांका अन्य कोणीही। विष्णु शिवाइ ॥९४३॥

शिष्य स्वीकारा उपरांत। अपेक्षि स्वामी एकांत।
पूजा गृहांत शान्त। बस्तले ध्यानि ॥९४४॥

खंचातूही ना आसक्ति। विष्णु भक्ती विरक्ति।
गंभीर जाल्ली चित्तवृत्ति। न कळे कोणा ॥१४५॥

दिग्विजय उत्सवाक। बसैले गुरूनि शिष्यांक।
निरुत्साह गा जनपदांक। जाल्ले निस्तेज ॥१४६॥

समजाइले स्वामेन। ना आम्का असमाधान।
केवल वयो धर्मान। नकारिले ॥१४७॥

गर्भ गृहांतु पट्टा देवु। उत्सव देवाक उत्सवु।
दोन्निंतु एक्कू भावु। आस्ता तुम्का ॥१४८॥

तश्शिंचि हे समजूका। अन्यथा तुम्ही लेक्कूनका।
शिष्यांकई कोळ्का। प्रेमु तुमचो ॥१४९॥

गुरुवरालो उपदेशु। आइकूनु जाल्लो संतोषु।
स्वीकरी गुरु संदेशु। आज्ञा म्होण्णु ॥९५०॥

त्या उपरांत दिग्विजय। शिष्यानि बोस्सो संप्रदाय।
घाल्ता आदर्श गुरुराय। निस्संगी मनां ॥९५१॥

एकांति बहु चिंतन। करिति विचार मंथन।
मोवाळ जाल्ली उलवण। उद्वेग रहित ॥९५२॥

ज्ञान भक्तिची पक्वता। प्रपंच असार दिसता।
लोक न कळे तत्त्वता। विरक्ति गुरुली ॥९५३॥

लेखकु पाव्लो बंटवाळा। स्वाम्याल्या एकांतवेळा।
योरे आइलो सकाला। बैस म्हणाले ॥९५४॥

स्पर्शूनि चरण द्वय। बसलो लागिग सभय।
निय्याळ्त पळैत सदय। म्हणाले अच्युता ॥९५५॥

म्हणताति तुक्का सन्तु। सांग्लारि व्हर्तालो मनांतु।
आनि मुखावैल्या कालांतु। राब्नई हांगा ॥९५६॥

पुरंदर दासाले वचन। "इन्निल्लितरवल्ला" हाज्जेन।
निर्णयु केल्ला निर्धारान। कळ्तले हें ॥९५७॥

"तिळीदू पेळद गुरुविन्याकें"। हे मना व्होर्चा सार्खे।
अपरोक्षि सांग्ता साम्के। समजूचे बरें ॥९५८॥

जाल्लेमन निराळें। गुरु मौन बसलें।
नयनांबु[८३] गळूनु पड्ले। वक्ष स्थळी ॥९५९॥

[८३] दोळचा उदक

श्री गुरुचरितामृत

क्षण मात्राचि ही घटना। वर्णूयां तरी शब्द मेळ्ना।
कित्त्या सांग्ले कळ्ना। बुद्धि भ्रमली ॥९६०॥

स्वाम्याली ही अंतर्वाणि। मूढाक माक्का कळ्नि।
सन्तपण माक्का जीर्नी। नांव मात्र ॥९६१॥

आत्तई मेग्गिल्या मनांतु। येत्ता गा स्मृति पटलांतु।
खरो वे हांव सन्तु। संदेहु माक्का ॥९६२॥

असले एक एकांत। आजिथांइ जीवनांत।
मेळ्नि गुरु सन्निधींत। संतपण ॥९६३॥

दिल्ली गुरुनि जाग्रति। तुक्का सन्त म्हणताति।
वाड्ता रे ती संतती। 'अहं' म्होण्चे ॥९६४॥

तू तरी खरो सन्तु। पड्ला कित्त्या प्रवाहांतु।
थडीक[८४] यो निवांतु। करी साधना ॥९६५॥

सन्तपण दिल्ला गुरून। वांचलो तांचे दयेन।
गुरु चरित ह्या ग्रंथान। ऋण मुक्तु ॥९६६॥

गुरुचरितामृतांतु। लिखित घटनावळींतु।
क्रम बद्ध ना म्होण्चांतु। संदेहू ना ॥९६७॥

समुद्रांतु बुडी मार्ताना। मोतीचि मेळ्तलि अशिशं ना।
शिंपि शंखु मेळ्ताना। सोडूं कशिशं ॥९६८॥

ती वै समुद्र जन्य। म्होणुचि कोर्का मान्य।
घटना खंचि अमान्य। करुनयीं ॥९६९॥

[८४] तटाक

घटना ही अभूत पूर्व। हिन्दूनि पाव्का गर्व।
मठाधिपती सर्व। ऋणि जाव्का ॥९७०॥

वैष्णवाले पुण्यक्षेत्र। हरिद्वार ते पवित्र।
मठ मन्दिर ते सर्वत्र। दिसताति ॥९७१॥

विरक्त संन्यासी बहुत। महा विद्वांस पंडित।
अनुसरलें नाना मत। वेद धर्माचे ॥९७२॥

वेद पुरुषालो अवतारु। वेदव्यास ऋषिवरु।
गुरुपूर्णिमेच्या अवसरु। करिती व्यासपूजा ॥९७३॥

ज्ञान आणि अभयदातु। संन्यास्यालें दैवतु।
सत्य वतीलो पूतु। पाराशर्य [८५] ॥९७४॥

८५ पराशरालो पूतु.

व्यासकृष्णु म्हणताति। वासिष्ठु म्होण्णु मान्ताति।
आदरान पूजिताति। संन्यासी सर्व ॥९७५॥

तीन्ही मताचे आचार्य। व्यास वेदान्त धुर्य।
तांतु श्री मध्वाचार्य। व्यास भक्त ॥९७६॥

आम्चें भारत वेदभूमि। व्यासु वेदांचो स्वामी।
सूत्र[८६] कर्ताराक आम्ही। विसरले पळें ॥९७७॥

मध्व वैष्णव मताक। वेदव्यासऽचि तारक।
दोनिवेळां मध्वमुनीक। दर्शन ताज्जें ॥९७८॥

मध्वानुयायी बहूत। अस्ल्यारी ते विख्यात।
पंडित आचार्य बहुश्रुत। व्यास कृपे ॥९७९॥

८६ ब्रम्हसूत्र

बदरीचो नारायणु। तोचि गा बादरायणु [८७]।
ताज्या दर्शनाक म्होण्णु। वत्ता ति लोक ॥९८०॥

व्यासालें प्रतिमा रूप। पूजेक सगुण स्वरूप।
मेळ्ना म्होण्णु तें लोप। प्राकृतांक ॥९८१॥

विसल्र्योरि व्यासाक। कृतघ्नु जात्ले लोक।
त्यामहा पातकाक। कारण धर्माचार्य [८८] ॥९८२॥

जनांक दीनी शिक्षण। पावैनि व्यासालें ऋण।
पंडित आणि विद्वज्जन। कारण ह्या पापां ॥९८३॥

वेगळच्यालें पाप चूकि। आपण घेत्ताति एकाएकी।
श्री सुधीन्द्रतीर्थ विवेकी। युग पुरुष खरें ॥९८४॥

८७ वेदव्यास् ८८ मठाधिपति

व्यास मन्दिराचे निर्माण। व्यासाले भजन पूजन।
व्यासालें तत्त्व ज्ञान। कळोंका प्राकृतांक[८९] ॥९८५॥

वेद आणि वेदाचार्य। व्यास सहित श्रीशुकाचार्य।
स्मृतिकार सप्तर्षिवर्य। कोळ्का सामान्या ॥९८६॥

श्रुति स्मृतियुक्त कर्म। वेद वेदान्ताचे वर्म।
सामान्यांक सुदा धर्म। कोळ्का आचरणा ॥९८७॥

सामान्यांक प्रतिमा विधान। ज्ञान्यांक ज्ञान मार्गान।
ज्ञान युक्त भक्तीन। उद्धार सामान्यां ॥९८८॥

हे विचार सुधीन्द्रालें। आमुचे गुरु महाराजाले।
भाग्य हें शिष्य वर्गालें। काशी मठाच्या ॥९८९॥

८९ सामान्य लोक

श्री गुरुचरितामृत

सप्तर्षि धामा लाग्गि। घेत्ली भूयीं आतिबेगि।
चिंतित तें सुधीन्द्रयोगी। गंगेच्या तीरी ॥९९०॥

व्यास सघुपतिली प्रेरणा। मेळ्तऽचि सन्निधाना।
परमाप्त शिष्य गडणा। मेळैले शीघ्र ॥९९१॥

स्वाम्याली ही परिकल्पना। तांगेलीचि ही योजना।
वास्तु रचनेक चित्रणा। तें तांचेचि ॥९९२॥

वास्तु शिल्पी तो ख्यातु। वासुदेव काम्तीलो पूतु।
गुरूंक बहुप्रीतु। विठलु नामी ॥९९३॥

सांग्ले स्वाम्यानि ताक्का। विठला तू हें कोर्का।
वेदव्यासालि कृपा तुक्का। जात्लें पूर्ण ॥९९४॥

कोणालेई आइकूनका। वास्तूचि रूप रेखा।
सांगताति पुढ़ेचि तुक्का। हाड्का कार्यरूपा ॥९९५॥

परगांवु म्होण्णु भीव्नका। घेव्नु बरें सहायका।
अभियंतार[९०] म्हणता तुका। सेवा ही देवाली ॥९९६॥

अवश्य प्रमाणे धन। तूं वें अपेक्षिला क्षण।
व्यवस्था जात्लि म्हण। व्यास कृपेन ॥९९७॥

देवु आणि गुरुचेरी। दवरुनु विश्वासुभारी।
विठल कामतु उद्धारी। करया मेज कडून ॥९९८॥

गुरु आज्ञा पालन। मन्दिराचे हे बांधण।
साधीन श्री गुरुकृपेन। दयकरा स्वामी ॥९९९॥

९० इंजिनीयर

श्री गुरुचरितामृत

दिल्लो प्रसादु स्वाम्यान। भाग्य समजलें कामतीन।
परिकराचि सिद्धता पूर्ण। आरंभिला शीघ्र ॥१०००॥

अष्ट कोणाचि आकृति। दाक्षिणात्यालि शिल्पकृति।
शिखराचि तीं महोन्नति। देखिलें गुरुनि ॥१००१॥

अयाचितरे काणुक। आइली श्री गुरुचरणांक।
वेदव्यासऽचि प्रेरक। शिष्य वृन्दा ॥१००२॥

फल्गुण शुद्ध ती षष्ठि। सुन्दर मन्दिराचि सृष्टी।
चोव्नु स्वाम्या संतुष्टि। उगडी मन्दिर बरें ॥१००३॥

संवत्सर प्रभव नामि। फाल्गुण शुद्ध दशमी।
वेदव्यासाक श्री स्वामी। करी प्रतिष्ठापना ॥१००४॥

अखंड भरत खंडाचे। सारस्वत द्विज वर्गाचें।
गुरु भक्ति खरे साचें। जमलें भाग्यवन्त ॥१००५॥

धर्म सभेचि कार्यावळ। संपताना प्रातःकाळ।
तरी बस्लेंति सकळ। कालातीत ॥१००६॥

कोणानारे आयास। श्री गुरुंगेले साहस।
वर्णित मन्दहास। सर्वा मुखिं गुरुचि ॥१००७॥

पाठकानि हे आइकूका। प्रथमाध्यांतु पोळोका।
मन्दिराचि महिमा सम्जूका। यथा मति ॥१००८॥

सांग्चा वर्ला बहूत। सांगिलें सांग्चे व्यर्थ।
मनन करा यथार्थ। गुरु महिमा बरी ॥१००९॥

उपासनेक मन्दिर। बांधिला गुरुनि सुन्दर।
उपासनेन संस्कार। पावुयां आम्हीं ॥१०१०॥

व्यासोपासनेचो क्रमु। उपक्रमिता उमेशुमामु।
बाप्पैक ताज्जा बहुप्रेमु। गुरुचरणारी ॥१०११॥

नांव वेंकटेश भट्टु। गुरुचरणा बहु निष्ठु।
सर्वांकई तो इष्टु। ब्रम्ह कर्मि ॥१०१२॥

बाप्पैक बहु विधेय। उमेशु नागेशु द्वय।
पुत्र ताज्जे पुण्योदय। गुरु भक्त तें ॥१०१३॥

हे हात्कामि उद्यमि। तरी दोघे धर्मानुगामि।
जे इच्छितातित स्वामी। अनुसरी अग्रजानुज ॥१०१४॥

बाल बालिका वयान। लहान अस्त्यारि तीं महान।
संस्कार विशेषान। आदर्श कोर्या ॥१०१५॥

समजून हे उमेशु। त्या जेष्ठालें समावेशु।
भरोनु सांग्ता संदेशु। व्यासोत्सवाचो ॥१०१६॥

अनध्ययनाचो[११] कालु। भुर्ग्या आनंदाचो वेळु।
तेन्नचि तांचो मेळु। भरैलो ताणे ॥१०१७॥

प्रयाण तें बहु दूर। श्री क्षेत्र हरिद्वार।
उपहार खर्चु गा भरपूर। प्रवास सहित ॥१०१८॥

सांभाळ्नु त्या सर्वांक। बरोबर पंडित जनांक।
प्रवचनी अध्यापकांक। व्यवस्था कोर्का बरी ॥१०१९॥

११ शालेक सूटी.

श्री गुरुचरितामृत

उद्योगु व्यवहार। सोण्णु ते द्विजवर।
मेळ्का बाळा संस्कार। हेचि ध्येय गुरुले ॥१०२०॥

सतत गा वर्ष सात। मेळ्का तांतु खरें पथ।
चिंता ना ताक्का किंचित। सांभाळी देवु ॥१०२१॥

गुरुरायालो ध्येयु। गुरुलो तो अभिप्रायु।
तोचि धर्मु तोचि न्यायु। म्हण्ता उमेशु ॥१०२२॥

मुंबैचान सत्यनाथु। बाळांक सत्सहवासू।
दिव्याक कर्ता साहसु। नाना विधानि ॥१०२३॥

कोंकणी साहित्य रचूनु। व्यासोपासनेंतु म्होण्णु।
बालकां पाठ करोनु। करी सेवा व्यासाली ॥१०२४॥

पत्नी सहित गृहस्थ। सत्संगांतु उपस्थित।
अनुभविती सुख स्वस्थ। स्वरूपाचें ॥१०२५॥

व्यास पुजेंतु त्रिकाल। घेव्नु मृदंग ताळ।
नाम संकीर्तनेंतु लोल। जात्ले सत्संगी ॥१०२६॥

सुधीन्द्रगुरु सांजेरी। गीतेचेक श्लोकाचेरी।
विषय सांगूनु ताज्जेरी। विवरी शास्त्रार्थ ॥१०२७॥

तोचि गुरूपदेशु। समजूनु अच्युतदासु।
कर्ता हरिकथा विशेषु। हर्षि सत्संगी ॥१०२८॥

सत्संगी बाल बालिका। वाग्मी सगळी भाषिका।
तांचि ती स्मृति मालिका। म्होण्का अपूर्व ॥१०२९॥

सायंकाल गंगारती। कर्तीति सुधीन्द्रयती।
बालगोपाल हर्षीति। गंगा मैय्याकी जै ॥१०३०॥

उदयास्तमान पर्यंत। ना गा अन्य वृत्तांत।
वाचितात्ति काइ सद्ग्रंथ। मातृ वर्गाचे ॥१०३१॥

उत्तर प्रदेश निवासि। साधु सन्त उदासी।
अपारयात्री प्रवासी। भेट्तात्ति व्यासाक ॥१०३२॥

औतरेय ते ब्राम्हण। जाल्लेति बहु पतन।
ना तांका वेद ज्ञान। कालवशान ॥१०३३॥

ते केवल द्विज बन्धु[१२]। इतरे जनालो संबंधु।
कर्तीति नाना धन्दु[१३]। शूद्राचरण ॥१०३४॥

१२ ब्रम्हज्ञान नात्तिले. १३ जीवनोद्योग

चोय्ताति गुरु महराज। मन तळमळता सहज।
युग धर्मान हे द्विज। करी शूद्र वृत्ति ॥१०३५॥

चेर्डु बाळांक शिक्षण। दिव्का ब्राम्हण्य ज्ञान।
केल्यारी तांका शहाण[१४]। उर्तलें काहीं ॥१०३६॥

स्वाम्याले दूर दर्शित्व। मूर्खांक ताज्जे महत्व।
न कळे ते ब्रम्हत्व। विप्रत्वाचे ॥१०३७॥

ब्राम्हण ते ब्रम्हज्ञानी। विप्र म्हळचारी शास्त्र ज्ञानी।
द्विज केवल अभिमानी। ना तांका ज्ञान ॥१०३८॥

आरंभाक तो द्विजु। उपरांतक विप्रु सहजु।
ब्राम्हण्य ते ब्रम्हतेजु। लब्ध गा पुण्यें ॥१०३९॥

१४ बुद्धिवन्त

स्वाम्याली ही चिंतनिका। कार्य रूपाक हाड्का।
महाजनानी हे समजूका। इच्छा गुरूलि ॥१०४०॥

गुरुल्या इच्छे प्रमाणे। चलणार ते शहाणें।
तीचि खरे सेवा म्हणे। शास्त्रांतु सर्व ॥१०४१॥

कोय्रु काढणे पुसणे। क्षुद्र खबराचि उलवणे।
सज्जनांक दुखवणे। हें उदर पूर्ति ॥१०४२॥

गुरुलें अनुकरण। गुरुली आज्ञापालन।
गुरुसेवा परायण। जाल्यारि ते धन्य ॥१०४३॥

गुरूचि सर्व तीर्थ। गुरु शिवाइ इतर व्यर्थ।
गुरुसेवा ही परमार्थ। समजे तो सेवकु ॥१०४४॥

गुरुसेवाचि सत्संगु। गुरुगुण गान अभंगु।
गुरु शास्त्राचो सर्वांगु। समजे तो सेवकु ॥१०४५॥

असले सेवक बहुत। करी गुरु सेवा विहित।
करुं साष्टांग सहित। नमस्कार पुनः ॥१०४६॥

आत्तां वर्णू चरित्र। गुरुरायालें पवित्र।
कीर्ति ध्येय सर्वत्र। पसरली लोकां ॥१०४७॥

अनेक मध्वयती। ते वै मठाधिपति।
व्यास मन्दिराचि महती। ऐकतां बरे ॥१०४८॥

व्यास मन्दिरा चातुर्मासु। कोर्का व्यासालाग्गि वासु।
सार्थक आमुचो संन्यासु। जात्लो म्हणति ॥१०४९॥

साधुबेलाचि वाट। हरिपुर मार्ग नीट।
हरिपुर म्हळचारि वैकुंठ। मन्दिर व्यासाले ॥१०५०॥

सुधीन्द्रयोगी साधु। हरिपुर मार्गाचो बोधु।
दित्लो आम्का सुस्वाद। मोक्ष सुखाचो ॥१०५१॥

ज्ञान नात्तिल्यांक मुक्ति ना। गुरु शिवाइ ज्ञान मेळ्ना।
गुरु महिमा मनन कर्ना। व्यर्थ जीणे ॥१०५२॥

भविष्याचि योजना। अज्ञां काई कळेना।
सर्वज्ञ गुरुल्या मना। आइले विचार आइक ॥१०५३॥

दुःखि रोग्याली सेवा। प्रीतिचे कार्य ते देवा।
चिंतितचि गुरु देवा। जाल्ली आज्ञा देवाली ॥१०५४॥

माधवेन्द्राल्या नांवांन। रुग्णालय निर्मून।
धर्मार्थ औषधान। आरंभिली सेवा ॥१०५५॥

सेवा केल्यारी कृष्णार्पण। ते वै जात्ता हरिपूजन।
धन्वंतरी रूपी देवान। दिल्ला अवकाशु ॥१०५६॥

अशिशं गुरुल्या मनांतु। विचार आइला क्षणांतु।
आइलो एक्लो श्रद्धावंतु। भक्तु वेदव्यासालो ॥१०५७॥

गुडी नामकु वैद्यु। मध्व सिद्धांताचो वेद्यु।
गुरुचरणांचो आराध्यु। मधुसूदनु बरो ॥१०५८॥

पाव्लो अचानक थांगा। राब्ता सेवेक हांगा।
जाव्नई आशा भंगा। मागता सेवावकाशु ॥१०५९॥

आनन्दले गुरुराय। स्मरूनु व्यासाले पाय।
माग्गूनु ताज्जो सहाय। दिल्ली आज्ञा गुडीक ॥१०६०॥

गुरूक भारी अपेक्षा। सदा लोक हित कांक्षा।
कर्म सगळें लोक शिक्षा। महात्माली समज ॥१०६१॥

चरक सुश्रतादिकानि। वाग्भटादि पंडित वर्यांनि।
आयुर्वेद औषधानि। दिल्लें आरोग्य सर्वा ॥१०६२॥

भारताचि वन संपत्ति। आधुनिक हे नाश कर्तांति।
औषधीय वनस्पति। मेळ्नी त्या कारणीं ॥१०६३॥

आयुर्वेदाचे वन। कोर्का हांगा निर्माण।
सदा हेंचि चिंतन। कर्तांति गुरु राया ॥१०६४॥

गुरुकुल पद्धतीन। दीव्का वेदांचे शिक्षण।
प्राचीन वस्तूचे प्रदर्शन। आस्का तें बरें ॥१०६५॥

वेद कालाचे उदय। जाव्का विश्वविद्यालय।
व्यास शुक तें उभय। बस्लेति हांगा ॥१०६६॥

वेदाचार्य ते चारी। सप्तर्षि ह्या गंगातीरी।
असल्या योग्य स्थळारि। कोर्का लोक संग्रह ॥१०६७॥

असले गंभीर विचार। कर्ताले आम्चे गुरुवर।
ह्या उद्देशा खातिर। घेत्ल्या भूई गुरुनि ॥१०६८॥

कीर्ति ही सारस्वतांक। श्रीमठाचे शिष्य वर्गांक।
कोर्का गा त्यागु सेवेक। गुरुरायाल्या ॥१०६९॥

साठि वर्षाच्या नंतर। अविश्रांत गा गुरुवर।
कर्तीति सेवा नाना प्रकार। हरि प्रीतिक ॥१०७०॥

साट्टिचे संवत्सर क्षय। तरी खरें ते अक्षय।
त्या उपरांत गुरुराय। पाव्ले बेंगळूराक ॥१०७१॥

भारताचे प्रमुख नगर। वन उद्यानाचे आगर।
राजधानि ती सुन्दर। कर्नाटकाचि ॥१०७२॥

पार्थ सारथी देवुळ। काशीमठु तरी रावुळ।
सुन्दर ते बहु निर्मळ। वास्तु युक्त ॥१०७३॥

पांडुरंग पैं कार्कळ। स्वामी भक्तु प्रेमळ।
कार्यदर्शि तो सरळ। काशी मठाचो ॥१०७४॥

सर्वोत्तमु भद्रगिरी। मठाचो कोषाधिकारी।
एक संवत्सरा भितरी। बांधला हो वास्तु ॥१०७५॥

षष्ठचब्द्या उपरांत। स्वामेन आषाढांत।
प्रवेशु केल्ला श्री मठांत। वैभवोपेत ॥१०७६॥

आइकलीती पूर्व कथन। श्री गुरुले मन मन्थन।
बालकाश्रम ते तीन। चल्ता बहु योग्य ॥१०७७॥

बालकाश्रमा उपरांत। वृद्धाश्रमाक महंत।
आरंभिताति गोश्रींत। अनाथ वृद्धा ॥१०७८॥

दीव्नु तांका आश्रय। नात्तिल्यांक जीवनोपाय।
पुत्र ना कोणा विधेय। तस्सल्या अनाथांक ॥१०७९॥

वृद्धाश्रमी रक्षण। कोर्का दीव्नु खाण जेवण।
देव स्मरणी शांत जीवन। आस्का त्यां लोकां ॥१०८०॥

अशी इच्छा गुरुरायाली। व्यास्पानचि प्रेरेपिली।
ऐकता शिष्य मंडळी। हाड्ले ते कार्य रूप ॥१०८१॥

काई वैचारिक लोक। करीत प्रश्न अनेक।
निम्मितांति गुरुरायांक। प्रगती शील ॥१०८२॥

उपनयनादि संस्कार। अवश्य वे ह्या कालार।
व्यर्थ द्रव्यापहार। करी विप्रवर्ग ॥१०८३॥

हो आक्षेपु ऐकून। हास्ताचि काई क्षण।
त्या उपरांत गंभीर जाव्नु। म्हणाले गुरुराय ॥१०८४॥

वेद स्मृतीचो विचारु। अनुष्ठानाक अधिकारु।
त्या कारणी उपनयन संस्कारु। द्विजांक सांग्ला ॥१०८५॥

अनुष्ठानान अंतःकरण। जात्ले रे शुद्धीकरण।
तेन्नाचि खरे तत्त्वज्ञान। उदैता बरें ॥१०८६॥

संस्कारु हो आत्माक। जनन मरण रहिताक।
दूषितु जाल्यारि अनेक। जन्मु रे त्या जीवा ॥१०८७॥

आइदून तरी कळ्बुंटे। दूद उर्तावे पुटे।
उत्तम संस्कारचि सांठे[९५]। कोकरि नित्य ॥१०८८॥

उपनयनादि प्रकारु। दित्ता उत्तम संस्कारु।
वेदाध्ययना अधिकारु। वटूक मेळ्ता ॥१०८९॥

९५ सगह

लहान वयारी उपासना। ज्ञानयुक्त आराधना।
जपाचि अर्थ भावना। केल्यारी बरें ॥१०९०॥

उपासनेन तपस्सिद्धि। उपासनेन बलवृद्धि।
उपासनेन सद्बुद्धि। वाड्ता निश्चित ॥१०९१॥

आराधनेन अर्हता। आराधनेन योग्यता।
आराधनेन तत्त्वता। पाव्ता देवु ॥१०९२॥

जपान हरी जडता। जपान वाड्ता एकाग्रता।
जपान पाव्ता स्थिरता। देह करण ॥१०९३॥

कोर्का देवा प्रीत्यर्थ। तेंचि खरें पारमार्थ।
जाइना केन्नाइ व्यर्थ। देव प्रीति ॥१०९४॥

प्रीतिक प्रीतिची फल। प्रीति जाइना गा निष्फल।
प्रीतीन जात्ताति प्रबल। भक्त लोक ॥१०९५॥

आइकूनु बहुत विचार। मस्तक दवोर्नु चरणार।
आरंभिले प्रश्नोत्तर। परत तान्नि ॥१०९६॥

उपनयनाचे संस्कार। जात्ता हे कोणावर।
शरीरतरी नश्वर। संस्कार ताक्का अंत्य ॥१०९७॥

गुरु म्हणाले आइका। देह नश्वर हे पाइक[९६]।
संस्कार कित्त्या ताक्का। शव श्रृंगार ॥१०९८॥

शरीरांतूनि वेगळो। जिवात्मु नित्य निराळो।
ताक्काचि संस्कारु सगळो। जीव स्वरूप ॥१०९९॥

९६ दुर्गंध

जीवु अनादिरे नित्यु। तो परमात्मालो भृत्यु।
ना ताक्का जनन मृत्यु। आनंदात्मा ॥११००॥

प्रकृति जन्य देह। आत्माक ताज्जेरि स्नेह।
पडता अज्ञान मोह। त्या नांव जन्मु ॥११०१॥

क्रमान देह जिरता। जीव संबंधु तुटता।
आत्मा नित्य असता। त्या नांव मरण ॥११०२॥

जीवु देवु अनादि। जीवाक हे देह उपाधि।
तुट्कारे आधिव्याधि[१७]। साधना बळें ॥११०३॥

गुरुलें वचनामृत। सेवूंन ते जीवन्मृत।
उठले गा जीवंत। संस्कारु गुरुलो ॥११०४॥

[१७] मनदेहाचे रोग.

सांगूनु सर्ना महिमा। आइकता नष्टतारे भ्रमा।
गुरूंक गुरुचि उपमा। मेळ्ना दृष्टान्त अन्यु ॥११०५॥

स्वाम्यां पूर्वाश्रमांतु। इंग्लिष शिकयिल्या मास्तरांतु।
किरिस्ताव एक्लो मठांतु। आइलो भेट्टूक गुरुं ॥११०६॥

तेजः पुंज वदन। पोळोनु त्या मास्तरान।
नमस्कार कोर्नु भक्तीन। आपुण धन्य म्हणालो ॥११०७॥

तुम्चांतस्सलें महात्माक। मास्तर जाव्च्या भाग्याक।
अर्हु जाल्लों त्या पुण्यांक। कृपा करा माक्का ॥११०८॥

मंत्राक्षता दीव्नु स्वाम्यान। पावैलें ताज्जे ऋण।
सुजीवी तो स्वरुपान। ओळखलो गुरु ॥११०९॥

हरिद्वाराची जमीन। खाता समेत समर्पून।
धन्य जाल्लो मुसलमान। अधिकारी एक्लो ॥१११०॥

ताक्का स्वामेल्या दयेन। जाल्ले पुत्र संतान।
मंत्राक्षतेच्या प्रभावान। म्हणता तो भावुकु ॥११११॥

स्वामें ना जातिपाति। सुजीवी तरी आस्सति।
तांचेरी कृपा करिति। सद्गुरु आमुचे ॥१११२॥

संन्यास्या ना देश कोश। ना तांक्का स्वार्थ लेश।
विश्वेशालें विशेष। ध्याना मग्न तें ॥१११३॥

मुंबैंतु भर्लि फाटी। सारस्वतालि सभा मोठी।
देशभक्ती गीतें साटी। उठून राव्ले सभेंतु ॥१११४॥

स्वामें बसूनु उरलें। पत्र कर्तान हे पळैले।
राष्ट्रगीतेक अपमानिलें। संन्यासी हो कोण ॥१११५॥

गाजली वार्ता मुंबैभरी। स्वामें निश्चिंत असले तरी।
शिष्ट जनांक भय भारी। जाल्ले पळे तेन्ना ॥१११६॥

आम्ही संन्यासी जाति। विश्वाक बरे आठैताति।
ही भारताचि संपत्ति। समजूका बरें ॥१११७॥

उठ्चे बोस्सूची भक्ति। ती लौकिक लोक कर्तीति।
आम्ही संन्यासी ध्यानरीति। कोर्का हे शास्त्र ॥१११८॥

स्वाम्यालि ही जवाब। आइकूनु जात्ता ते अजब।
सांगताले किती सबूब। थंचान जुलें हळु ॥१११९॥

स्वामी आमुचे ध्येय वादी। न केवल वादिसंवादी।
शील चारित्र्यान बोधी। तत्त्वज्ञान सगळें ॥११२०॥

गुरुकृपेक कोण पात्र। साग्ता तुम्का चरित्र।
गुरु महिमा समुद्रगात्र। पात्र मेज्जे लहान ॥११२१॥

भद्रगिरी सहोदरालें। तांथूई केशवदासालें।
स्वप्न ते साकारालें। आश्रम विश्वशांति ॥११२२॥

सात्तीस हात्ती लांबु[100]। विश्वरूपी विठलु आबु[101]।
उगडे राब्ला तो विभु। भू व्योम ॥११२३॥

विठलालि बृहत् मूर्ति। जगांतु ना समजाति।
भारताचि महाकीर्ति। गाजली गा जगां ॥११२४॥

१०० दीगु. १०१ पितामह

देश विदेशाचे लोक। चोव्चाक हे प्रतीक [१०२]।
जमलें रे असंख्याक। अदृष्टपूर्व [१०३] ॥११२५॥

विश्वविजय विठलाक। कोर्चा प्रतिष्ठापनेक।
केशवदासाल्या विनंतीक। मान्यता दीव्नु ॥११२६॥

आपुले हे भद्रगिरीचे। हरिदास परंपरेचे।
दास हे खरें व्यासालें। ह्या प्रेमान स्वामें ॥११२७॥

आषाठ शुद्ध दशमी। पाव्लें आश्रमांक स्वामि।
धन्य तें व्यासानुगामी। यती हे जगद्गुरु ॥११२८॥

प्रतिष्ठापनेचे कार्य। कोर्का म्हणे दासार्य।
बरे म्होण्णु गुरुवर्य। करी प्रतिष्ठा ॥११२९॥

१०२ मूर्ति १०३ [illegible]

श्री गुरुचरितामृत

पत्नी रमा सहित केशवु। गुरूंचि प्रत्यक्ष देवु।
गुरुचरणारी प्रेमभावु। दवोर्नु भक्तीन ॥११३०॥

पुत्र पौत्रादि सहित। कोर्नु पादपूजा विहित।
घेत्ले गुरु मंत्राक्षत। धन्यभावें ॥११३१॥

विश्वशान्ति आश्रम। भक्तालें विश्रामधाम।
चलैत्ता हें गुरु उद्दाम। सुधीन्द्रयोगी ॥११३२॥

भावनाही दासाली। भद्रगिरी सहोदराली।
गुरुकृपेचि ती वाली। फल पुष्प भरित ॥११३३॥

स्वीकार्नु गुरुनि संन्यास। संवत्सर जाल्लीं पन्नास।
सेवेक चातुर्मास। मेळ्का ही प्रार्थना ॥११३४॥

बेंगळूरचे महाजनानी। काशी मठाच्या समितीनी।
विनंती पत्र काणिकेनि। भेटले श्री गुरुंक ॥११३५॥

भागयवन्त आम्ही जन। सम्मति दिल्ली गुरुनाथान।
चातुर्मास वैभवान। चोलोका गुरुकृपे ॥११३६॥

अशिशं बेंगळूरु निवासी। सिद्धता कर्तालि विश्वासी।
स्वर्णोत्सवाक उल्लासी। घाल्ली योजना बरी ॥११३७॥

स्वर्ण पीठ ते व्यासाक। चातुर्मासाच्या आरंभाक।
केल्लें समर्पण स्वाम्याक। शीघ्राति शीघ्र ॥११३८॥

दिल्लें वाहन नवीन। सर्वोत्तम दासान।
रजतोत्सव निमित्तान। संस्था तर्फे ॥११३९॥

उत्साही तरुण एक्डे। वृद्ध अनुभवी म्हालगडे।
श्रीमंतानि हात सांगडे[१०४]। केल्लें गा गुरुकृपें ॥११४०॥

त्रिकाल पूजेचो वैभवु। गीत नाट्काचो उत्सवु।
श्रीमद्भागवत सप्तावु[१०५]। होम हवन विधी ॥११४१॥

मंत्र मुद्रा धारण। जप पुजादि भजन।
ब्राम्हण समाराधनेन। शोभ्ले चारीमास ॥११४२॥

गुरुपूजा स्वर्णपुष्पान। स्वर्णोत्सव निमित्तान।
केल्लीं ऐंशीएक मुद्रेन। स्वर्ण वृष्टि ॥११४३॥

अन्नदान ज्ञानदान। द्रव्यदान श्रमदान।
चल्लें श्रीगुरुदयेन। दिव्य भव्य ॥११४४॥

१०४ मगाली १०५ सप्ताह

श्री गुरु चरितामृत

व्रतांत्यांचो दिग्विजयु। काशीमठाचो संप्रदायु।
हे कळता जन समुदायु। भर्ले पळें अपार ॥११४५॥

दिग्विजयाचे सिंहासन। कर्तीति ते आरोहण।
राघवेन्द्र श्री चरण। शिष्यस्वामें ॥११४६॥

पोळोका उत्सव डोळेभरी। पाव्का बेंगळूर कश्शिंतरी।
आइले लोक लक्षोपपरि। समुद्र जनालो ॥११४७॥

दिव्य उत्सव वाहन। ताज्जेरि रजत सिंहासन।
घेव्नु श्रीगुरु आशीर्वचन। विराजी राघवेन्द्र ॥११४८॥

वाजली भेरी नगारी। मंगल वाद्य तत्तूरी।
वेष भूषि नृत्यकरी। आनंद मग्न ॥११४९॥

भक्तालें भजन कीर्तन। वैदिकालें वेद घोषान।
तरुण तरुणी जयघोषान। करि स्तुति गुरूली ॥११५०॥

निनादति आस्फोटक। उसळ्ताति आकाशाक।
आटोप खडखडाटाक। थर थरली धरणी ॥११५१॥

चातुर्मासु तो संपूर्ण। जाल्लें गा वैभवपूर्ण।
स्वर्णोत्सवु संपन्न। अभूत पूर्व ॥११५२॥

गुरुरायाले निर्गमन। ठरलें हे आइकून जन।
दुःखान तळमळोन। जाल्लें गलिताश्रु ॥११५३॥

निर्गमनाचो दिवसु। गुरुलो आशीर्वादु विशेषु।
जाल्लें प्रवचना संदेसु। आइकले ते धन्य ॥११५४॥

पाठकानो मनन करा। काशीमठाची परंपरा।
विरक्त सगळे विष्णुपरा। अंतर्मुखी सदा ॥११५५॥

ज्ञान भक्तीचि पक्वता। त्या तिन्नीची परिपूर्णता।
सुधीन्द्रयतींतु दिसता। स्पष्ट रूप ॥११५६॥

मन हे मुग्ध सरळ। उत्रं ही बहुविरळ।
व्यासार्णवाचे मराळ[१०६]। भक्षी कमलकंद[१०७] ॥११५७॥

आहारु व्यास चरण। विहारु वैराग्यवन।
संतत मनाचे गमन। हरिद्वारा कडे ॥११५८॥

हरिद्वार गंगा तीर। हरिद्वार व्यास मन्दिर।
हरिद्वार ते माहेर। तत्त्वज्ञानाचे ॥११५९॥

१०६ हस. १०७ कमलाचे कान्दो

धर्म निर्वहणेचे भार। शिष्याचे स्कंदावर।
दवरून स्र्व तो भार। व्यास चरणी ॥११६०॥

सदा जपतपादि ध्यान। विसरुका देहभान।
सर्व सांभाळ्का शिष्यान। आम्ही केवल निमित्त ॥११६१॥

स्वाम्यालो हो मनोभावु। तांचो अन्तरंगा स्वभावु।
समजतलो महानुभावु। सांगारे कोण? ॥११६२॥

गुरुल्या महाद्वारी। गुरु गुरु कोर्च्यो ती बरी[१०८]।
कृतज्ञता तांच्यावरि। ना रे मनुष्य प्राणि ॥११६३॥

गुरुक संबोधूनु। गुरु महिमा वर्णूनु।
सांगता चाळीस वर्षांथानु। चोइलें ते सांग्ता ॥११६४॥

१०८ सूणिं.

शब्द नान्ती वर्णनिक। कर्ता प्रयत्न ते एक।
मूढ ह्या मन्दमतीक। असाध्य हे खरें ॥११६५॥

तरी करीन यतन। साध्य ते शब्द पुंजान।
कशिशंतरी वोवळचो गांतून। अर्पीन गुरुक ॥११६६॥

गुरु महिमा गिरी सप्तक। हांवेक क्षुद्र मशम।
शक्य ना गिरी वर्णनिक। तरी कर्ता प्रयत्न ॥११६७॥

गरुडाक मात्रवे आकाशु। उब्तामू सानुमूसु।
त्याच्यांतु कित्ते दोषु। साहसी म्हण्तालें ॥११६८॥

जय जय हे गुरुराजा। ज्ञान भास्करा सहजा।
नाशकरी अज्ञान तमजा [१०९]। दी यथार्थ ज्ञान ॥११६९॥

१०९ काळोखु.

ज्ञान भक्ती वैराग्य। संन्यास्यांक हेंचि भाग्य।
तूं शिक्कैले मार्गयोग्य। यतींक यतित्व ॥११७०॥

वेद वेदांग सर्व। अवगत तरी तूं निगर्व।
जिंकून इन्द्रिय पाटव। चित्तिं निर्मळूगा ॥११७१॥

ज्ञानांचि परिपक्व स्थिति। बाल सहज चित्तवृत्ति।
मुग्धतेचि महामूर्ति। निश्चलु गा तूं ॥११७२॥

काषाय वसन नेशिशल्लो। तिळों अंगार केल्लेलो।
द्वादश नामान शोभिल्लो। सुदरु गा तूं ॥११७३॥

सम सम विभक्तांगु। सुन्दरोच्छु तूं गौरांगु।
श्रीहरि पदाब्ज भृंगु। निस्संगु नित्य नेमि ॥११७४॥

व्यास रामार्चना रतु। चर्येन तरी अवधूतु।
निष्कळंकु आणि निश्चिंतु। अनिर्वेदु गा तूं ॥११७५॥

पवित्र तुगेले पादत्राण[११०]। सुन्दर ते मृदु चमकण।
लंबकर्ण विशाल फण। लक्षण महात्मालें ॥११७६॥

मन्दस्मित मुखांबुज। ब्रम्हचर्येचे तेज।
तप स्थैर्याचे ओज। झळकता दिव्य ॥११७७॥

श्रवण मंगल गा वाणी। ऐकता अंतःकरणी।
प्रकाश पडता उन्मनी। जात्ता हे सिद्ध ॥११७८॥

वचन तरी हास्यपूर्ण। आइकूनु धन्य गा श्रवण।
व्यर्थ न करी प्रतिक्षण। चिंतन चिन्मयाली ॥११७९॥

११० व्हाण

गुरुलो हासु पुन्नाव। मृदु उत्रं ती प्रणव।
सुखानन्दाचे उत्सव। दर्शिता प्राप्ति ॥११८०॥

आबाल वृद्ध सगळें। संप्रदायु वेगवेगळें।
दर्शनान मुक्त ते जाल्लें। गुरु कृपा पळें ॥११८१॥

गुरुलि कृपा दृष्टि। शिष्यांक दित्ता संतुष्टि।
नाना दारुण संकटी। मार्गदर्शि आम्का ॥११८२॥

गुरु स्पर्शता हस्त। ताज्जेन इष्ट समस्त।
जात्लें प्राप्त त्वरित। ऐका हे सत्य ॥११८३॥

गुरुलें चरण लागल्यारि। ना ताक्का जन्मु मुखारी।
जन्मांतराचे दुःखवारी। गुरु कृपा सत्य ॥११८४॥

दिल्यारी चरु खंड। संतान प्राप्ति गा अखंड।
जन्मा येत्ले सत्पिंड। कुलोद्धार करी ॥११८५॥

सेवित्ता गुरु प्रसादु। जात्लें मूर्ख ते साधु।
विषयु हो निर्विवादु। अनुभव सिद्ध ॥११८६॥

गुरु कंथैं भिक्षा घेत्ता। थांगा हरि साक्षात् जेव्ता।
हरि ज्या ठिकाणी जेव्ता। तृप्त गा तीन्ही लोक ॥११८७॥

गुरु तरी घरा येत्तां। देहाची पाप सर्ता।
प्रेमान तरी संभाषिता। सर्ता पाप मनाचे ॥११८८॥

ज्या घरी गुरु जेव्ता। एकवीस पीडच्यांक[१११] उद्धरता।
हे कोण रे समजता। तोचिरे धन्यु ॥११८९॥

१११ परस्तेचे

श्री गुरुचरितामृत

चालि बोली ती एकी। फरक पण्णा एकामेकी।
हीचि आम्ची गुरु मुखी। आइकल्यारी धन्य ॥११९०॥

सांगता गुरुली दिनचरी। उदयास्तमानाचि बरी।
जो गुरुक अनुसरी। ताक्का धन्य म्होण्का ॥११९१॥

उठानु प्रातःकाल। स्मरी हरिनाम विशाल।
उपरी प्रातर्विधि निर्मल। स्नान कार्य ॥११९२॥

काशाय वसन परिधान। स्नानानंतर करून।
जपध्यानांतु मग्न। शोभ्ता नाम मुद्रा ॥११९३॥

प्रातः काळी पुष्प संचय। तुलस्यादि पूजाद्रव्य।
सेवक हाड्ताति द्वय। शुद्ध हस्त ॥११९४॥

भजकाले सुप्रभात। स्तोत्र ती अर्थगर्भित।
गुरुचि ताज्जे रचयित। व्यास प्रीति ॥११९५॥

करी निर्माल्य विसर्जन। अभिषेकु अंभृणीसूक्तान।
क्षीर नैवेद्य समर्पण। नमस्कार सहित ॥११९६॥

मध्यान्ह पूजा विशेष। भक्तांगेलो समावेशु।
ताळ वीणा मृदंग घोष। भजना युक्त ॥११९७॥

व्यास रघुपतीक सूक्त। षोडशोपचार युक्त।
कर्तीति पूजा वेदोक्त। त्रुटीना[११२] खंचातूइ ॥११९८॥

वैदिक मंत्राचे सुस्वर। गुरु हस्ते दिव्यालंकार।
मध्वालें तंत्रसार। अवतरले म्हणा ॥११९९॥

११२ उण्यापण

द्वादश स्तोत्र वायुस्तुति। आबाल वृद्ध करताति।
अद्भुत गा मंगलारती। रसानुभूति ॥१२००॥

गंध प्रसाद वितरण। गुरु करी स्वहस्तान।
हरिपादतीर्थ सेवून। पवित्र गा सर्व ॥१२०१॥

देवा नैवेद्या मृष्टान्न। आपण सेवि पथ्यान्न।
इतरांक समृद्ध भोजन। प्रसाद रूपि ॥१२०२॥

पूजेचो तरी वैभवु। पोळोका तो रसानुभवु।
ह्रन्मनांक उत्सवु। सविकल्पु ॥१२०३॥

सनक नारदादि ऋषीनी। शुकादि योगी जनानि।
प्राचीन आमुचे सन्तानि। केल्लें हे प्रचुर ॥१२०४॥

पूजापाठांतु एकता। ज्ञान भक्तींतु पूर्णता।
ना खंचांतु न्यूनता। चऽड उणे ॥१२०५॥

पूजा जप तपान। संभाषण प्रवचनान।
आपुल्या चाली बोलीन। आदर्श गा गुरु ॥१२०६॥

अंतर ना बाह्यांतर। चित्त वृत्ति ती निरंतर।
धारवत् देवावर। स्थिरावल्या बरी ॥१२०७॥

हरि सर्वोत्तम ज्ञान। विष्णु तत्त्व प्रतिपादन।
सदा तत्त्वांचे बोधन। करी गुरुराय ॥१२०८॥

देवपूजा रात्रिंची। ती तरी दीवाळीचि।
भक्ति भजन सुस्वराचि। रमती नामानन्दे ॥१२०९॥

पूजा उपरांत गुरून। गुरु परंपरेक नमस्कारुन।
माला कर्तीति समर्पण। भक्तिभावें ॥१२१०॥

पादपूजा हजारेक। श्रमूचि ना गुरुराजाक।
फल मंत्राक्षता सर्वांक। वांटिती प्रेमें ॥१२११॥

प्रवेशून शयनागार। कर्तीति ब्रम्ह विचार।
कार्यीं पत्रव्यवहार। पूर्ण करिती ॥१२१२॥

योगीक खंचि निद्रा। ती प्राज्ञालि[११३] प्रेममुद्रा।
स्वप्न रहित ती अतन्द्रा[११४]। चिंतन तैजसाले[११५] ॥१२१३॥

अहर्निशी संचरण। निरन्तर तीर्थाटन।
संग्रह सर्व वितरण। देव प्रीति ॥१२१४॥

११३ जीवाक निद्रासुख दिꣳचो देवु. ११४ निद्रारहित स्थिति. ११५ स्वप्नादिक दिꣳचो देवु.

श्री गुरुचरितामृत

असले गुरु आस्ताना। सांग्चे कित्ले मूर्खजना।
गुरूक कर्तीति शोधना। भटकले व्यर्थ ॥१२१५॥

गुरु सुधीन्द्रालि महिमा। अवर्णनीय असीमा।
सांगू जाइना शब्दग्रामा। पडली गा मौन ॥१२१६॥

मध्वाले द्वादश स्तोत्र। गुरुनि दिला द्वादश सूत्र।
श्री हरि कृपेक ते पात्र। करी अनुष्ठान ॥१२१७॥

उठायिल्यानि सकाणि। देवाले ध्यान मनीं।
कोर्का आणि स्त्री वर्गीनि। माग्गूका रक्षा मांगल्याक ॥१२१८॥

संध्यादि ते धार्मिक विधी। सांग्ताति जे शास्त्रनिधि।
सोण्णाशि ते नित्य साथि। प्रार्थना रुप ॥१२१९॥

इष्टदेवा कुलदेवा। ग्रामदेवा गुरुदेवा।
वंदूका भक्तिभावा। नित्यविधि म्होण्णु ॥१२२०॥

दयाभाव सर्वांचेरी। कोणा पीडा न करी।
दुःखोनुका केन्नातरी। उरो यादु नित्य ॥१२२१॥

कोर्नु दान धर्मादिक। इतरा जाव्का सहायक।
आवै बाप्पै आणि गुरूंक। दी संतोष नित्य ॥१२२२॥

दुःखोनई तांचे मन। निन्दा नाक्का कोणा पुण।
ज्ञानमय आणि होड्पण। तुज पेक्षा अधिक ॥१२२३॥

कोणा आस्ता स्थानमान। ज्यांतु अनेक सद्गुण।
तांका चोव्का गौरवान। निंदा कोणा न करी ॥१२२४॥

अस्सू नई चोरपण। दुराशेचे भोग जीवन।
करी साहित्य अध्ययन। भक्ति प्राप्तिचें ॥१२२५॥

देव आणि देवभक्ताले। वाच्का चरित्र तस्सालें।
चालि बोली एकवटलें। मन प्रमाणे करी ॥१२२६॥

रात्री शयनाच्या पुढे। शरणु जा देवा उगडे।
लक्ष्य दीव्नु चुकल्यांकडे। माग क्षमा नित्य ॥१२२७॥

त्या उपरांत विश्रांति। रामनामांतु सदा रति।
उल्यारि पाप ती सरती। जात्ताति भस्म ॥१२२८॥

ही बारा नियम। पालनेक नारे श्रम।
केल्यारि श्रीव्यास राम। पाव्ता तुक्का आइक ॥१२२९॥

आपुल्या बाळ भुग्र्यांक। उत्तम संस्कार दीवूंक।
पोण्णयीं विसरु रक्षकांक। दिय्या लक्ष्य तांका ॥१२३०॥

धर्म विषया स्वाभिमान। देवाचेरि भक्ति ज्ञान।
दिव्का तांका मार्गदगर्शन। कर्तव्य हे रक्षकां ॥१२३१॥

आइकूनु ही गुरुवाणि। हाड्ता कोण अनुष्ठानि
ताङ्काचि आम्ही धन्य मानि। तेचि धनी गुणान ॥१२३२॥

श्री सुधीन्द्रालि वाणि। तांचे उपदेश सरणि।
ते सर्व शास्त्रांचे खणि। रत्नगर्भा ॥१२३३॥

मुंबैच्या सारस्वतांक। आपुल्या वैष्णव वर्गाक।
दिल्ला सन्देश अनेक। तांत्ले आइक एक ॥१२३४॥

तुम्ही तुमचे म्हालगडे। आइले ह्या मुंबैकडे।
श्रमानि तुम्ही जोड्ले पुडे। अपार धन ॥१२३५॥

ऋणि तुम्ही महाराष्ट्राक। दीव्का देणगी ती एक।
महाराष्ट्रीय त्या विठलाक। बान्धा मन्दिर मोठे ॥१२३६॥

मुंबैच्या दहिसरांतु। श्री मठाच्या जमीनींतु।
करा वसतीगृह तांतु। मंदिर विठोबाचे ॥१२३७॥

निर्माण करा देवळ। परिसर दवरुका निर्मळ।
भजन अभंग ते रसाळ। आइकता दशादिशा ॥१२३८॥

मुंबैचे लोक दानी। आम्ही ऐकलेति कानी।
बृहत् रुग्णालय[११६] बान्धूनी। करा सेवा रोग्यालि ॥१२३९॥

[११६] आस्पत्रो

समाजाच्या दुर्बलांक। विशेषतः सारस्वतांक।
दीव्का औषध विनाशुल्क। ही देणगी तुमची ॥१२४०॥

स्वर्णोत्सवाचो यादु। उर्ता सदा अबोधु।
कार्य तुमचे हे साधु। म्हणतले भविष्याचे ॥१२४१॥

स्वाम्याली ही योजना। पटली गा महाजना।
उत्साहु आइला तरुणा। वकील वैद्य सर्वां ॥१२४२॥

असले आम्चे स्वामी। प्रेरक गा पुरोगामि।
तरी आपण निष्कामि। निन्दा स्तुति तुल्य ॥१२४३॥

स्वर्णोत्सवु कार्यक्रमु। बेंगळूरांतु उपक्रमु।
मुंबैकारालो गुरुप्रेमु। अतिशयु गा खरें ॥१२४४॥

व्यासाक स्वर्ण पीठ। समर्पिति बेंगळूरांत।
स्वर्ण मंटपूचि मुंबैंत। समर्पिले पळे ॥१२४५॥

गुरु शिष्यालो समावेशु। वैभवोपेत चातुर्मासु।
सारस्वत लोक अशेषु। जमलें मुंबापुरी ॥१२४६॥

वर्लिचे सेवामंडळ। गुरुगणेश नांवा खाल।
अद्भुत तांचे कार्यावळ। धुरीण ते गुरु सेवा ॥१२४७॥

योजिली बदरी यात्रा। ते गुरुल्या कृपा पात्रा।
विनंतिलें सुधीन्द्रतीर्था। श्री राघवेन्द्रां सहित ॥१२४८॥

व्होर्का आम्का बदरीक। व्यासाल्या पुण्य स्थळाक।
समाजच्या बरेपणाक। उद्धाराक आमुच्या ॥१२४९॥

व्यवस्था करतांचि सगळी। श्रीगुरुगणेश मंडळी।
गुरुसेवा तरी ही मेळि्ळ। पुण्य समाजाचे ॥१२५०॥

केल्या यात्रा बदरीक रजतोत्सवा उल्लासाक।
पन्नासाच्या ह्या स्मरणेक। दीव्का अवकाश दीनां ॥१२५१॥

आइकूनु ही विनंती। हासलें दोघें यती।
आम्ही व्यासाल्या निर्मिगिताति। कर्ता तो निर्णयु ॥१२५२॥

काहीं दिवस सरलें। स्वाम्याले निर्णय न कळे।
काहीं लोक हळहळले। काहीं धरलें मौन ॥१२५३॥

उदार आमुचे स्वामि। शिष्य कोटीचे प्रेमि।
निर्धार सांगताति आम्ही। म्हणे सावकाश ॥१२५४॥

उपरांत दिल्लो रायसु। करा सिद्धता बदरीशु।
चलैता तुमचो ध्यासु। कळलो गा ताक्का ॥१२५५॥

आइकता हर्ष निर्भर। जाल्ले ते मुंबैकार।
जमले गा सेवातत्पर। तरुण वर्ग ॥१२५६॥

आबाल वृद्ध नारी। चाल्ले यात्रेक बदरी।
गुरु शिश्यां बरोबरी। भेट्टूयां नारायणा ॥१२५७॥

पांच सहस्र आइले तरी। आस्का आमचि तयारी।
सर्व सांभार सामग्रिर। व्होर्का मुंबैचान ॥१२५८॥

मुंबैचे व्यवस्थापक। चाल्लें पुढें बदरीक।
गुरुल्या पूजा वसतीक। करी व्यवस्था बरी ॥१२५९॥

लभ्य वसती यात्रिकांक। व्यवस्था खाण जेवणांक।
नारायणाल्या दर्शनांक। निवडी सेवा दळ ॥१२६०॥

वैदिक आणि पुराणिक। भावुक भक्त भजनेक।
सात्विक त्या यात्रिकांक। सहायी बहुत ॥१२६१॥

बदरीचे स्थायिकांक। खंचे बा इतुले लोक।
कोण बा हांका प्रेरक। स्वामी महराज ॥१२६२॥

देवाले प्रथम भजक। क्षेत्राचे मुख्य अर्चक।
आमंत्रितात‍ि स्वाम्यांक। देवुळा तर्फे ॥१२६३॥

वेद घोष नामघोष। शिष्यां लोकालें समावेश।
घेव्नु दोघैं यतीश। भेट्ले नारायणांक ॥१२६४॥

दंड सहित नमस्कार। घालीत आमुचे यतिवर।
पुण्य तें लोकां खातिर। समर्पिताति ॥१२६५॥

प्रति दिवसु सांजेरी। भक्तालि सभा भारी।
कीर्तन करी भद्रगिरी। दासु गुरु भक्तु ॥१२६६॥

उपस्थिति गुरुद्वयालि। कथा अच्युत दासाली।
कीर्तनेंतु नाना वैखरी। बदरी महात्म्य ॥१२६७॥

सांगूनु मध्वरायाली। परंपरा गुरुत्रयाली।
वर्णित नयनावळी। जाल्ली अश्रुपूर्ण ॥१२६८॥

अखेरिक गुरुद्वयानि। व्यासालि महिमा सांगूनि।
यात्रिकांक आशीर्वचनी। केल्लीं कृपा बरी ॥१२६९॥

आविस्मरणीयु दिवसु। प्रसन्न गा वेदव्यासु।
तोंडारी दिव्य हासु। यात्रिकां सर्वां ॥१२७०॥

यात्रिकां सहित यतिवर। पाव्ले परत हरिद्वार।
चाल्लें लोक दूर दूर। आपुल्या गावां ॥१२७१॥

स्वाम्याल्या संचारावर। पडले काई अंतर।
परमाचार्य श्री वालुकेश्वर। मुंबैक पाव्ले ॥१२७२॥

मद्रास आणि बेंगळूराक। निश्चित त्या कार्यक्रमांक।
दीव्नु आज्ञा राघवेन्द्रांक। धाड्ताति गुरुराज ॥१२७३॥

आषाढ शुद्ध पाड्वेक। श्री सुकृतीन्द्र पुण्य तीथीक।
शिष्य स्वामें मुंबैईक। पाव्ले श्री गुरु कडे ॥१२७४॥

वद्य पंचमी दिवसु। प्रारंभु गा चातुर्मासु।
उभय गुरुलो वासु। एकत्रित गा अपूर्व ॥१२७५॥

भाग्य हे मुंबैचालें। सेवाकर्त गुरु भक्तांलें।
स्वर्ण मंटपु समर्पिलें। व्यास रामांक ॥१२७६॥

श्री माधवेनद्र वरदेन्द्र। श्री सुधीन्द्र राघवेन्द्र।
मुक्तिदाता हे योगीन्द्र। प्रत्यक्ष आणि परोक्ष ॥१२७७॥

मुंबैचे भजन सप्त। कीर्ति ताज्जी सर्वव्याप्त।
साधु सन्त परमाप्त। जात्ता थांगा एकडे ॥१२७८॥

चल्लो यागु महाविष्णु। वैष्णव भरले सहिष्णु।
चलैता ते वासिष्ठकृष्णु[११६]। घेव्नु गुरु शिष्यां ॥१२७९॥

११६ [illegible]

हरिकथा ती सात दिवसु। कर्ता भद्रगिरी दासु।
यति द्वयालो समावेशु। मंगल कालीं ॥१२८०॥

गुरु शिष्यालो संदेशु। आइकूंक मेळ्ळों विशेषु।
सक्कडांक कारण पुरुषु। व्यासदेवु ॥१२८१॥

यात्रा ती द्वारकेचि। योजना मुंबैकारांचि।
सारस्वत समस्त वर्गांचि। जालें सर्व पुण्यात्मा ॥१२८२॥

गोमतीचे पुण्यस्नान। कोर्नु श्री राघवेन्द्रान।
दंडयुक्त ते गुरुदर्शन। घडले रे सर्वां ॥१२८३॥

चातुर्मासाचो दिग्विजयु। अपूर्व रे शोभामयु।
पुण्यकालु महोदयु। प्राप्तु गा मुंबापुरी ॥१२८४॥

एकदा सुधीन्द्रांक। दिसले अशिशं मनांक।
वृन्दावन आम्ही सर्व। रचिला पूर्वि ॥१२८५॥

आटवे स्वामी ज्ञानीन्द्रां। मुक्त जाल्लें नासिक क्षेत्रां।
गोदावरी तीर पवित्र। पुण्य भूमि ॥१२८६॥

जिरले देह गोदेंतु। लोकांक ना तें स्मरणेंतु।
वृन्दावन कोर्का नासिकेंतु। रामधामि ॥१२८७॥

सुधीन्द्राली ती योजना। खंचेइ व्यर्थ जाञ्चिना।
कळ्ले मुंबैचा जना। घेत्लो पुढ़ाकार ॥१२८८॥

केवल वर्ष मात्र अवधि। बांधिली ज्ञानीन्द्रां समाधि।
सीतारामाल्या सन्निधि। बसैलि विचित्र ॥१२८९॥

ज्ञनीन्द्रां गुरुपादुका। मुख्य प्राणाल्या सम्मुखा।
दवरुन ती स्मरणिका। दिल्ली आम्का गुरुनि ॥१२९०॥

सुधीन्द्र आमुचे युग पुरुष। समाज लोकाक परुश।
दीव्नु संस्कार ते विशेष। उद्धुरिले आम्का ॥१२९१॥

निवृत्त कर्मि तें योगी। निरपेक्षि सर्व त्यागी।
ब्रम्हानुभवी वीतरागी। सुधीन्द्र आमुचे ॥१२९२॥

जन संसदींतु अरति। पाव्ले ते सुधीन्द्रयती।
एकान्त ते अपेक्षिति। ज्ञानकार्या ॥१२९३॥

आपुले हे मनोगत। दृढ़ संकल्पाचे व्रत।
श्री राघवेन्द्रांक पूर्त। समजाइले अशिशं ॥१२३४॥

धर्म पीठाचे महंत। तुम्ही धर्माचार्य स्वंत।
अधिकारु तुम्का धर्मकार्यांत। आणि तुम्ही स्वतंत्र ॥१२९५॥

मध्व शास्त्राचे अध्ययन। विष्णु तत्त्वाचें प्रतिपादन।
व्यास रघुपतिलें पूजन। करा यथा सांग ॥१२९६॥

मूल आणि शाखा मठ। वृन्दावन गुरुलि श्रेष्ठ।
चोलोका आराधनादि नीट। परंपरेचे ॥१२९७॥

आणि तुम्हीचि मठाधिपति। आम्ही सामान्य गा यती।
सदा तुम्चा हिता प्रति। प्रार्थितीं देवा ॥१२९८॥

हरिद्वाराचो तो व्यासु। हरिद्वाराचो ध्यासु।
हरिद्वारी आमुचो वासु। संकल्पु हो हरिलो ॥१२९९॥

वियोगु नै हो सहयोगु। संन्यासी तो वीतरागु।
घड्ल्यारी तरी दैवयोगु। भेटूयां बरें ॥१३००॥

ज्ञानीन्द्राल्या सम्मुख। मठ मर्यादा सकळीक।
समर्पूनि आम्ही मोकळीक। जात्ले वो बरें ॥१३०१॥

आइकता गुरुलें वाक। जाल्लें राघवेन्द्र मूक।
कोर्नु साष्टांग गुरूक। कांपलें भयानि ॥१३०२॥

कोरु आज्ञा पालन। तरी योग्याता आणि वयान।
थोर तुम्मि आम्ही सान। अंतर गज अजाचे ॥१३०३॥

तुमची रक्षा आणि शिक्षा। तुम्ही दिल्या आम्हा दीक्षा।
आत्ता मागताति आम्मि भिक्षा। दीव्का बरी ॥१३०४॥

गुरु सेवेक मेंळ्नि कालु। शिक्षणांतु गेल्लो वेळु।
करु कशिशं सांभाळु। मठ क्षेत्रां ॥१३०५॥

गुरु तुम्ही महान। आम्ही सान अनुभवान।
तुम्ही हे सांभाळून। करा रक्षा आमुचि ॥१३०६॥

अश्रुधारा ती गळूनु। व्होळ्ता गुरु पाय धूव्नु।
गलिताश्रु ते पूसूनु। म्हणाले शिष्यांक ॥१३०७॥

निमित्त मात्र आम्हीं तुम्ही। वेदव्यासु आमुचो स्वामी।
तुम्ही ताज्जे अनुगामि। चोव्या धैर्य धरा ॥१३०८॥

तुम्ही जेन्ना अपेक्षितातित। तेन्ना येव्नु पाव्तातित।
मार्गदर्शन करतातित। कर्तव्य म्होण्णु ॥१३०९॥

अंतःकरणी तळमळूनु। गुरु चरणांत लोळूनु।
म्हणालें अशिशं चिंतूनु। राघवेन्द्र ॥१३१०॥

भारत सार्खे निरीक्षा। कर्तांति तुमचि प्रतीक्षा।
तुमच्या ह्या आज्ञा पेक्षा। अधिक काहीं ना ॥१३११॥

करीऽत गुरुलि स्तुति। जाल्लें शिष्य मौनव्रती।
गुरुशिष्य दोघे यति। जाल्लें त्यागा सिद्ध ॥१३१२॥

पाव्ले दोघै नासिकाक। श्री मठाच्या उद्घाटनेंक।
जाल्लेति सिद्ध त्यागाक। दैवेच्छा प्रबल ॥१३१३॥

लोकाक कळली खबर। जेष्ठ स्वामी गुरुवर।
वत्ताति कैं हरिद्वार। येना म्हणे परत ॥१३१४॥

धाव्ले जन नासीकेक। श्री गुरुल्यादर्शनांक।
मेळ्ना स्वामी आणि जनांक। दुर्भाग्य आम्चे ॥१३१५॥

ना आमंत्रण ना स्वागत। भर्लें लोक असंख्यात।
गुरुलें त्यागु अद्भुत। निस्संगी निश्चयीं ॥१३१६॥

भाव नाम संवत्सर। नासिक गोदा तीर।
पवित्र शुद्ध नवमीवर। मास मार्गशीर्ष ॥१३१७॥

प्रतिष्ठी गुरु सार्वभौम। हनुमयुक्त सीताराम।
ज्ञानीन्द्रालें पादुका धाम। कर्ता सिद्धि सकलेष्ट ॥१३१८॥

धर्म सभा ती सांजेरी। चल्ता गुरु त्या वेळारी।
दित्ताति सन्देशु भारी। शिष्या समेत आम्का ॥१३१९॥

हेर दिवसु श्री गुरुनाथ। कोर्नु सर्वा अनाथ।
हरिद्वाराक पाव्तात। शाश्वत थांगा ॥१३२०॥

करीत तपस्साधन। लोकाचे हितकारण।
मठ मर्यादा आणि स्थान। त्यागून सर्व ॥१३२१॥

आइकूया गुरुले वचन। पवित्र जात्ले हे कान।
खरें आम्ही भाग्य हीन। कोण रे गुरु विना ॥१३२२॥

भरली सभा हृदयस्पर्शि। आइले गुरु ते समदर्शि।
घेवूनु शिष्या भर्शि। बसले सभांगणा ॥१३२३॥

सभेंतु तरी महामौन। सर्वा द्रविला अंतःकरण।
अश्रुपूरित लोचन। विशेष गा मातृ वृन्दा ॥१३२४॥

वेवेगळे गांव्चे लोक। गुरुल्या अभिनंदनेक।
राब्लेतरी जाल्लें मूक। भाषण शब्दे विना ॥१३२५॥

गणेश मल्यादि अनेक। मुंबैचे भक्त लोक।
वन्दूनु स्वाम्यां चरणांक। उल्लैले उचित ॥१३२६॥

गेल्लो हांव बेंगळूर्चान। गुरु दर्शना म्हणून।
पाव्लो थोडो वेळान। त्वरित सभांगणी ॥१३२७॥

सभेचि मूक वेदना। कोळ्चि ना सामान्य जनां।
कर्ता कोण गणना। सभासदांचि ॥१३२८॥

गुरु स्तवनाचो अवसरु। दित्ताति माक्का सद्गुरु।
सांगू कसलो विचारु। तळमळ्ता मन ॥१३२९॥

सांग्लो प्रसंगु भागवताचो। कृष्णान द्वारका वच्चो।
कुन्तीन केल्लेलो प्रार्थनेचो। विवरु विवरिता ॥१३३०॥

कुन्तील्या भक्ती प्रेमांक। परतलो गज नगरीक।
तुम्ही कोणी साहसिक। करागे यत्न ॥१३३१॥

आइकले हे मातृ वर्गान। अश्रुपूर्ण नयनान।
चोइत आस्सति गुरुचरण। दीनातिदीन ॥१३३२॥

त्या उपरांत सभा जन। बसले संपूर्ण मौन।
आइकून सुधीन्द्रवचन। कान कोर्नु सर्वांग ॥१३३३॥

निधान आरंभिले प्रवचन। श्री गुरु सुधीन्द्रान।
आमुचे हरिद्वार गमन। क्षेत्राभिवृद्धि ॥१३३४॥

कार्यावळीचे विस्तार। कोर्का बैसून हरिद्वार।
ज्ञान संग्रह वारंवार[११९]। अभ्यास कोर्का ॥१३३५॥

भारताचे जनपद। साधु सात्विक मुग्ध।
तांचि सांस्कृतिक संपद। लुटताति विदेशि ॥१३३६॥

मतभ्रष्ट पथभ्रष्ट। जाल्लेति आम्चे वरिष्ठ।
नेणे ते काई स्पष्ट। मंन्द अस्पष्ट सगळें ॥१३३७॥

आम्ही खरें संन्यासी। जाव्का कित्या उदासी?।
देवधर्मातु उल्लासी। कोर्का रें जनां ॥१३३८॥

ह्या चिंतनेक एकान्त। बस्ल्यारी हरिद्वारांत।
सुचवीति आमुचे महंत। व्यास आम्का ॥१३३९॥

११९ पुनःपुनः

धर्मपीठांचे रक्षण। शिष्य वर्गाचे परिपालन।
कोर्चा समर्थाक देवान। दिल्ला पळें तुम्का ॥१३४०॥

राघवेन्द्र श्री चरण। सर्वांकयी सांभाळून।
व्होर्च्यांतु सामर्थ्यवान। व्यास कृपे ॥१३४१॥

दशमि दिवसु मध्यान्ह। दोनि वरारि[१२०] श्री चरण।
निर्गमलें नासिकाचान। हरिद्वारा कडे ॥१३४२॥

राज्य भोगादि समस्तु। सर्वै सोण्णु रिक्तहस्तु[१२१]।
जशिशं रामु पंचवटींतु। निवास कर्ता पूर्वि ॥१३४३॥

मठमर्यादा ती समस्त। सोण्णु श्री सुधीन्द्रतीर्थ।
वास करी हरिद्वारांत। आतां वर्तमानि[१२२] ॥१३४४॥

१२० दोनघंट्यारि. १२१ खालिहातु. १२२ वर्तमानकालारि.

श्री गुरुचरितामृत

जाल्लें आम्ही अनाथ। गेल्ले सोडोनि गुरुनाथ।
आणि राघवेन्द्रतीर्थ। माता पिता गुरु ॥१३४५॥

अशिशं समजून लोक। आइले पर्ऽत घराक।
तात्तावळी त्या स्मरणेंक। येत्ले गुरु रूप ॥१३४६॥

गावां परतले लोक। राघवेन्द्र ते मुंबैक।
माधवेन्द्राल्या सन्निधिक। पाव्ले गा शीघ्र ॥१३४७॥

संन्यासी रत्नाकर[१२३]। आमुचे श्री सुधीन्द्र।
तांचे श्रीकर कुवर। राघवेन्द्रा ॥१३४८॥

आमुचे ते धर्मगुरु। आम्मि ते चरणधरुं।
सुधीन्द्र म्होणूचि स्मरुं। भक्ति प्रेमें ॥१३४९॥

१२३ समुद्र

WORLD KONKANI CENTRE LIBRARY

सेवून चरीतामृत। वर्णिलें सिद्धान शान्त।
साधकाल्या मनांत। दिसलें जाल्लो धन्यु ॥१३५०॥

सिद्ध आणि साधक। भेट्ले सुधीन्द्रतीर्थांक।
व्यास सहित परिवाराक। वन्दूनु प्रेमें ॥१३५१॥

म्हणाले ते गुरुराया। पडताति तुमच्या पायां।
तुमचि कृपेचि छाया। पडो आम्चेरि ॥१३५२॥

तुम्ही वर्तमानाचें व्यास। खरे तुम्ही युग पुरुष।
आम्ही तुमचे दास। स्वीकारा आम्का ॥१३५३॥

सिद्ध आणि साधक द्वय। धोर्नु सुधीन्द्राले पाय।
मूलनारायणालें अभय। जाल्ले त्या दोघां ॥१३५४॥

गुरु चरितामृताक। अध्याय हे सप्तक।
योग्य हे श्रवण पठनाक। साधक लोकां ॥१३५५॥

कुटुंब परिवार समेत। कोर्का संध्यादिकर्म विहित।
पूजा द्रव्य समेत। एकांत स्थानी ॥१३५६॥

दवोर्का गुरुलि पादुका। नातरी चित्र ते सुरेखा।
सुगंध पुष्प समर्पूका। करी अलंकार ॥१३५७॥

गुरु पुर्णिमा पुण्य दिवसु। घेव्नु ताज्जो अवकाशु।
गुरु भक्तालों समावेशु। भरोनु सर्वा ॥१३५८॥

इष्टदेव कुलदेवांक। धर्म गुरु कुलगुरूंक[१२४]।
वन्दूनु अध्याय एकेक। पठण नित्य ॥१३५९॥

१२४ कुलपुरोहित

सात्विक आहार सेवन। विषय भोगाचे वर्जन।
निश्चितकाल नियमान। कोर्का विधियुक्त ॥१३६०॥

सप्ताहाच्या मंगलाक। दान करा सत्पात्रांक।
भोजन श्री प्रसादाक। आमंत्रूका द्विजवर्या ॥१३६१॥

कोरोंका संतर्पण। यथा शक्ति श्रद्धेन।
उपचार करी विनयान। साधु सन्ता ॥१३६२॥

पठण श्रवण मात्रान। दारिद्र्य रोगादि ऋण।
परिहार गा तत्क्षण। गुरु कृपेन ॥१३६३॥

गुरु चरिताचो सप्ताह। गुरुक स्मरूनि अहरह।
जात्ता शुभ कन्या विवाह। मांग्लय प्राप्ति ॥१३६४॥

प्राप्तगा सत्संतान। गृह बाधा निवारण।
धन दुःखादि दुर्मरण। निवारी[१२५] हे सत्य ॥१३६५॥

वैराग्य भाग्य भक्ती। परमार्थातु आसक्ति।
स्वरूप योग्यते मुक्ति। मेळ्ता गा गुरु कृपें ॥१३६६॥

हरि भक्तीक कारण। गुरु भक्ती ती प्रधान।
आइकरे हेंचि साधन। कलियुगांतु ॥१३६७॥

युवनाम संवत्सर। श्रावण बहुळ शनिवार।
नवमी सन्ध्या आटवर। जाल्ले लिखित पूर्ण ॥१३६८॥

कृतींतु तरी दोष मेळ्ळें। ते तितुले ही मेगेलें।
मेळ्ता तरी चांगले। गुरुले ते समजा ॥१३६९॥

१२५ परिहार

हरिद्वार श्री क्षेत्रांतु। अर्पिले गुरु चरणांतु।
पावोनु गुरु पदरांतु[१२६]। अर्पिती व्यासा ॥१३७०॥

हरिद्वार हरिद्वार म्हणता। पाप सर्वही सरता।
गुरुनाथा आम्का पाव्ता। सत्य सत्य सत्य ॥१३७१॥

श्री गुरुचरितामृताचो श्री सुधीन्द्रचरित नामक
सात्वो अध्यायु समाप्तु।
॥श्री कृष्णार्पणमस्तु॥

१२६ होंटीतु

आरत्यो

राग - भैरवि **ताळ - केरवा**

शरण जावूयां सद्गुरु समर्था। साधक आम्ही साधूया परमार्था ॥धृ॥

धन सुत दार क्षणिक निरर्थ। समजून करुया जन्म हे सार्थ॥
मनन करुयां गुरु वचनार्थ। ना तरी जन्मु व्यर्थ व्यर्थ ॥१॥

गुरु महिमा वर्णित सर्व शास्त्र। गुरु विद्रोह ते मोक्ष अपात्र॥
गुरु शिकवी तुक्का जीवन सूत्र। गुरु हो मेळ्ना अन्यत्र अन्यत्र ॥२॥

गुरुचि मुक्तीक मुलकारणु। गुरु तो जगाक मुख्यप्राणु॥
गुर्वांतर्गतु मूलनारायणु। गुरु तरी कोप्लो अनर्थ अनर्थ ॥३॥

श्री गुरु चरितामृत

राग - भैरवि **ताल - केरवा**

आरति करुयां सद्गुरु राया। शरण जावुयां श्रीगुरु पायां ॥धृ॥

शुद्ध हृदय तें पणति करूनु। मन चंचलता वाति जळोनु॥
भाव भक्तिचे तैल घालूनु। ज्ञान ज्योति लावुयां लावूयां ॥१॥

तनु इन्द्रिय जागांट करुयां। प्रणव नादु तो शंख म्होणूयां॥
अष्ट मदांक काप्पूरु कोर्नु त्या। दुष्ट गुणांक जळोयां जळोयां ॥२॥

अहंकार नारीळु फोडुयां। अष्ट भावाचें पुष्प अर्पूयां॥
गुरु मूर्तिक प्रदक्षिणा घालूयां। मूलनारायण स्मरूयां स्मरूयां ॥३॥

श्री गुरु चरितामृत

राग - भैरवि ताळ - केरवा

आरति गुरुनाथा सुधीन्द्रतीर्था। आरति गुरुनाथा ॥धृ॥

श्रीगुरु पादुका। धरीन मस्तकां।
दाक्कैई मुक्ति पथा। जय जय ॥१॥

संसारा संबंधु। विषयाचो गन्धु।
सोडवी गुरु सर्वथा। जय जय ॥२॥

मूल नारायणु। तो तुजो प्राणु।
चुकवीरे जन्म व्यथा। जय जय ॥३॥

श्री गुरु चरितामृत

मंगळारति

जयदेव जयदेव जय वेदव्यासा। जय पराशर पुत्र बदरी निवासा ॥धृ॥

लोपलें ज्ञान गौतमल्या शापान। द्वापरीं अज्ञानि जाल्ले व्राम्हण॥
श्रीपति करी अवतार म्हणून। आपत्काली माग्लें व्रम्हादिकान ॥१॥

वासिष्ठ गोत्रजु मुनि पराशरु। सत्यवतीलो पूतु ज्ञनि उदारु॥
यमुनेच्या द्विपांतु ताज्जो अवतारु। ज्ञान अभयदाता घे नमस्कारु ॥२॥

वेदसगळे केल्लें चारी विभाग। शिकविलें शिष्यांक वेद वेदांग॥
वेदांत सूत्र ही रचिलें ते चांग। पैलादि मुनिशिक्ले ताज्जें सर्वांग ॥३॥

श्री गुरु चरितामृत

अठरा पुराण भारत भागवत। वेदार्थ बोधक शास्त्र सम्मत॥
शुकमुनि सूतांक दीव्नु ते ग्रंथ। विवरी तीं सच्छास्त्र सर्व सिद्धान्त ॥४॥

वेद विव्यासु तूं केल्या कारण। वेदव्यासु म्हणताति सज्जन॥
साधकांक दीव्नु मार्गदर्शन। उद्धार करी म्होण्णु धर्तीति चरण ॥५॥

श्री सुधीन्द्र मन मानस हंसा। मध्वमुनि तुक्का कर्ता प्रशंसा॥
पापाचे पर्वत कोर्नु विध्वंसा। राकरे साधुबेलापुर वासा ॥६॥

तूंचिरे बदरीचो नर नारायणु। तूं सृष्टि स्थिति प्रळयाचो कारणु॥
तूं मूलनारायणु लक्ष्मीरमणु। गुरुचरितामृत घे पदरांतु ॥७॥

श्री गुरुचरितामृत

आरति

जयदेव जयदेव जय वेदव्यासा। ज्ञान अभय दाता काशीमठ वासा ॥धृ॥

पैल सुमन्तु जैमिनि वैशंपायु। शिष्य समजलेलें श्रुति समुदायु॥
शोभ्ता मुखारी तो शुकयोगी रायु। दरुशन घेरे हो मोक्षोपायु ॥१॥

सप्तर्षि सात हे दिसति खांब्यारि। कोर्का प्रदक्षिणा येवूनु भाइरी॥
श्रद्धेन पाव्नु त्या गंगा तीरीं। स्नाना नंतर गंगा पूजनकरी ॥२॥

अश्वत्थ नारायणालें दर्शन। विमान गोपूर चोइल्या मात्रान॥
जन्मोजन्मींचे पाप सरता तत्क्षण। उपरांत धरारे सुधीन्द्रालें चरण ॥३॥

श्री गुरु चरितामृत

व्यास मंदिरांतु धोर्कारे मौन। कोर्कारे जपतप सन्ध्यावन्दन॥
श्रवण करारे पुराण कीर्तन। पाव्तारे वेळोवेळारि अन्नपूर्ण ॥४॥

विश्वनाथ सभा एकांत स्थान। कर्तीति बहुजन ध्यान चिन्तन॥
फाल्गुणाचे शुद्ध दशमीचे दिन। चल्ता प्रतिष्ठांग व्यासोपासन ॥५॥

कोण यात्री व्यासमन्दिराक्केत्ता। गुरुदर्शनान तो पावन जात्ता॥
बदरी नारायणु भक्तांक पाव्ता। व्यास रघुपति रक्षण कर्ता ॥६॥

हरिद्वार हरिद्वार म्हणा सर्वांमुखी। जात्लो तो ऐहिक पारमार्थि सुखी॥
मूलनारायणा कोर्नु आरती। जय म्हणा सुधीन्द्रतीर्थ स्वामी की ॥७॥

श्री गुरु चरितामृत

सामूहिक प्रार्थना

श्री श्री काशीमठाधीश परमाचार्य श्री मत्सुधीन्द्रतीर्थ स्वाम्यानि – आम्चेरि प्रीतिन अनुग्रह केल्लेलि ही प्रार्थना भक्तजन आम्ही घरघरांतु नित्य पठन कोर्नु कृतार्थ जावुयां.

देवा, परमात्मा, समर्था, दयाकरी. तुगेलें अनुग्रहा खात्तिर, श्रद्धेन प्रीतिन आराधना केल्या. अपराधु क्षमकरी. आराधना स्वीकारु करी. जगांतु सर्वांकयीं ज्ञान अभय दी. उद्धार करी. प्रत्येक; भारतांतु सर्वांकई उद्धार करी. ही विनम्र प्रार्थना, अनुग्रह करी.

ज्ञानाभय प्रदाता भगवान् वेदव्यास की जै।।

श्री गुरु चरिता मृत

श्री काशीमठाची गुरुपरंपरा

श्री काशीमठ संस्थान स्थापना शक १४६३ प्लव संवत्सर

श्री गुरुवरेण्य	मुक्ति	वृन्दावनस्थळ
श्री यादवेन्द्रतीर्थ	शक १५३0 कीलक संवत्सर आषाढ वद्य पंचमी	भट्कळ स्वमठ गोपीनदी
श्री केशवेन्द्रतीर्थ	१५९१ सौम्य संवत्सर फाल्गुण वद्य तृतीया	बसरूर स्वमठ वाराही नदी
श्री उपेन्द्रतीर्थ	१५९६ आनन्द संवत्सर कार्तीक शु. षष्ठि	काशी स्वमठ गंगा नदी
श्री यादवेन्द्रतीर्थ (द्वितीय)	१६३३ खर संवत्सर भाद्रपद शु. पौर्णमी	हेम्माडी स्वमठ चक्र नदी

श्री राघवेन्द्रतीर्थ	१६४६ क्रोधि संवत्सर फाल्गुण शु. चतुर्थी	काशी स्वमठ गंगा नदी
श्री देवेन्द्रतीर्थ	–	बंट्वाळ स्वमठ नेत्रावती नदी
श्री माधवेन्द्रतीर्थ	१६९७ मन्मथ संवत्सर श्रावण शु. पंचमी	वालुकेश्वर स्वमठ बाण गांगा
श्री ज्ञानीन्द्रतीर्थ	–	नासिक क्षेत्र गोदावरी नदी
श्री यादवेन्द्रतीर्थ (तृतीय)	१६९४ नंदन संवत्सर फाल्गुण व. तृतीया	श्री वेंकटपति देवूळ शरावती नदी
श्री उपेन्द्रतीर्थ (द्वितीय)	१७१३ विरोधिकृतु संवत्सर मार्गशिर शु. सप्तमी	काशी स्वमठ गंगा नदी

श्री राजेन्द्रतीर्थ	१७२१ सिद्धार्थ संवत्सर वैशाख व. एकादशी	तरउर श्री नरसिंह देवळ
श्री सुरीन्द्रतीर्थ	१७५३ खर संवत्सर ज्येष्ठ शु. सप्तमी	आलपे श्री वेंकटपती देवळ
श्री विष्णुतीर्थ	–	काशी स्वमठ गंगा नदी
श्री विबुधेन्द्रतीर्थ	१७५५ विजय संवत्सर माध व. पंचमी	मंजेश्वर स्वमठ
श्री सुमतीन्द्रतीर्थ	१७७३ साधारण संवत्सर पुष्य व. अमावास्या	आलपे श्री वेंकटपती देवळ
श्री वसुधेन्द्रतीर्थ	१७८१ सिद्धार्थ संवत्सर वैशाख शु. पौर्णमी	मंजेश्वर स्वमठ

श्री भुवनेन्द्रतीर्थ	१८०८ व्यय संवत्सर मार्गशिर शु. प्रतिपदा	बसरूर स्वमठ वाराही नदी
श्री वरदेन्द्रतीर्थ	१८३६ आनन्द संवत्सर आषाढ शु. द्वितीया	वालुकेश्वर स्वमठ वाणगंगा
श्री सुकृतीन्द्रतीर्थ	१८७१ विरोधि संवत्सर आषाढ शु. प्रतिपदा	कोच्चि श्री वेंकटरमण देवळ

आत्तांचे सत्तरीवर्ष वयाचे परमाचार्य श्री मत्सुधीन्द्रतीर्थ श्रीपाद गौडसारस्वत समाज्याच्या ते द्वारा भारत देशाच्या - समस्त विश्वाच्या बरेपणा खातिर श्री क्षेत्र हरिद्वार सप्तर्षिधाम साधुबेला हांगा व्यासमन्दिर निर्माण कोर्नु, अन्नदान आरोग्यदान, ज्ञानदान करऽत एकांतांतु तपस्साधनेंतु नितर जाव्नु, आप्ल्याले करकमल संजात श्री मद्राघवेन्द्रतीर्थां आणि आम्का दर्शन दित्तऽचि आस्सति. तांगेल्या शतमानोत्सवाच्या सेवेचो अवकाशु आम्का देवु पात्र कोर्नु दिव्वो. आणि तांगेलेमार्ग दर्शन आम्का आणि भारताक सदाकाल मेळो अशिशं आम्मि तुम्मि देवालाग्गि माग्गूया।

श्री काशीमठ संस्थानाचे शाखामठ

१.	श्री काशीमठ	व्रम्हघाट - वाराणसी - उ. प्र.
२.	श्री काशीमठ	प्रयाग - उ. प्र.
३.	श्री काशीमठ	रामेश्वर - तमिळनाडु
४.	श्री काशीमठ	वालुकेश्वर (बाणगंगा) - मुंबई
५.	श्री काशीमठ	वंदोरॉ - पोंडा - गोवा
६.	श्री काशीमठ	भट्कळ - उत्तर कन्नड - कर्नाटक
७.	श्री काशीमठ	हेम्माड़ी - कुंदापूर - कर्नाटक
८.	श्री काशीमठ	बसरूर - दक्षिण कन्नड - कर्नाटक
९.	श्री काशीमठ	कोट - दक्षिण कन्नड - कर्नाटक
१०.	श्री काशीमठ	कार्कळ - दक्षिण कन्नड - कर्नाटक
११.	श्री काशीमठ	मंजेश्वर - केरळ
१२.	श्री काशीमठ	नयंपल्ळि - उडुपि - कर्नाटक
१३.	श्री काशीमठ	बटवाळ - दक्षिण कन्नड - कर्नाटक
१४.	श्री काशीमठ	सुरत्कल् - दक्षिण कन्नड - कर्नाटक

१५. श्री काशीमठ भागमंडल – तलकावेरी – कोडगु – कर्नाटक

१६. श्री काशीमठ तिरुपति – आंध्रप्रदेश

१७. श्री काशीमठ कल्लिकोटें – केरळ

१८. श्री काशीमठ पल्लिपुरं – केरळ

१९. श्री काशीमठ बेंगलोर – कर्नाटक

२०. श्री काशीमठ शिर्व – दक्षिण कन्नड – कर्नाटक

२१. श्री काशीमठ अलप्पुळं – केरळ

२२. श्री काशीमठ नाराविं – दक्षिण कन्नड – कर्नाटक

२३. श्री काशीमठ कोंचाडि – मंगळूर – कर्नाटक

२४. श्री काशीमठ हरिद्वार – उ. प्र.

२५. श्री काशीमठ अंबलमेडु – केरळ

२६. श्री काशीमठ मद्रास – तमिळुनाडु

२७. श्री काशीमठ वर्काल – केरळ

२८. श्री काशीमठ हंगारकट्टे – दक्षिण कन्नड – कर्नाटक

२९. श्री काशीमठ नासिक – महाराष्ट्र

WORLD KONKANI LIBRARY
Accn No: 002028

दिवंगत श्री पि. नरसिंह पै

कृतज्ञता

श्री गुरुचरितामृत बृहत् ग्रंथाच्या प्रकाशनाक दानी लोकांक संघटन केल्लेल्ले आणि प्रकटना पूर्वि उदार देणगि दिल्लेल्या श्री हरिगुरु भक्तांक देवु बरें कोरों म्होण्णु मागतां.

महादानी

- दिवंगत श्री पि. नरसिह पै

आम्गेले एक गौरवान्वित गौडसारस्वत कुलातु क्रि.श. १९०९ इसवींतु जन्मा आय्यले श्री पि. नरसिंह पै ह्या एक सुसंस्कृत व्यक्ति धन दारिद्र्य अशिशले जाल्यारि गुण दारिद्र्य ना. हांका लौकिक विद्या नात्ल्यारि प्रामाणिक श्रमजीवि आणि उत्तम व्यापारस्थ. श्रीमति लक्ष्मीनामक कन्यामणिक लग्न जाल्लेले हो संतुष्ट गृहस्थ जीवन केल्लेले. पांचजण चेल्लियो आणि दोनि चेल्लेलें हांगेले संसारु सुखपूर्ण आशिशलो.

आपुल्या चेर्डुवाक उत्तम विद्या संस्कार दिल्लेले श्री नरसिह पै १९६५ इसवींतु मुक्त जाल्लें. हांगेल्या जेष्ठ पुत्रु श्री पि दयानन्द पै दाक्लो भावु श्री पि. सतीश पै आत्त बेंगलोर निवासि जाल्लेले प्रामाणिक आनि व्यवहार कुशलो. हे सहोदर धनवान् मात्रनव्हि गुणवान आम्स ति धार्मिक सांस्कृतिक क्षेत्राभिवृद्धि खातरि अपार कळकळि आशिशले हे समाज उन्नतिचे आदर्श दवोनु घेव्नु दान धर्मादि पुण्य कार्य कर्तांति. विशेष जाव्नु आम्गेले गौड सारस्वत ब्राम्हण वृन्दाचा दीन दुर्बळांक हांगेलो सहायहस्त सदा आस्ता. ह्या सुसंस्कृत सहोदरानि आपुल्या पूज्य पिता दिवंगत श्री पि. नरसिंह पै हांगेल्या पुण्य स्मरणेक “ श्री गुरुचरितामृत ” ह्या कोंकणी बृहद् ग्रंथ प्रकाशनांक पूर्ण धन सहाय केल्ला. श्री पि. दयानन्द पै आणि तांगेल्या सहोदर श्री सतीश पै हांका तागेल्या पित्रांतर्गतु श्रीमज्जनार्दनवासुदेव परमात्मु

तशिशंचि तांगेल्या कुलदेवु ग्रामदेवु इष्टदेवु आणि धर्माचार्य श्री श्रीमत्सुधीन्द्रतीर्थ स्वामि पीठारूढ श्रीमद्राघवेन्द्रतीर्थ स्वाम्याले विशेष अनुग्रह जाव्वो म्होणु श्री हरिगुरु लागि प्रार्थन कर्ता.

श्री गुरुचरितामृत ग्रंथाक श्री काशीमठ परंपरेचे वृंदावन आणि श्री गुरुवर्यालें वर्णचित्र संग्रह कोर्नुदिल्लेल्या मंगळूर्चे प्रसिद्ध चित्रग्राहक श्री नागेश चूर्या हांका प्रीतिपूर्वक कृतज्ञता.

अल्पावधीन्तु हो बृहद् ग्रंथाक सर्वांग सुंदररूप दीव्नु, सकालारी मुद्रण कोरोनु दिल्लेले, श्री सुधीन्द्र मुद्रणालयाचे आणि श्री सुधीन्द्र पब्लिषिंग् हौसा तर्पे प्रकाशन केल्लेले. ह्या दोन्नि संस्थेचे मालक श्री भद्रगिरी सर्वोत्तम दास, तशींची तांगेल्या सहकार्यकर्ताक मेग्गेलो प्रीतिचो आशीर्वादु.

मिगेल्या बर्पांचे शुद्ध प्रतिकोर्नु, सकालारी मुद्रणाक अनुकूल कोर्नुदिल्लेले, श्री लक्ष्मण दास वेलणकर आणि पोळलि जगदीश दास हांकायी मेग्गेलो प्रीतिचो आशीर्वादु.

ग्रंथकर्तु
हरिगुरु सेवकु
सन्त भद्रगिरी अच्युतदासु

LIBRARY

WORLD KONKANI CENTRE

Shakthinagar, Mangalore.

No: Acc. No:

Issued on	Borrower's No. And Signature	Returned on
		2028 Devo -> Dev ACH

ं

WORLD KONKANI CENTRE,
SHAKTHINAGAR, MANGALORE

TITLE: श्री गुरू चरितामृत (कोंकणी)

...95

WORLD KONKANI CENTRE
LIBRARY
SHAKTHINAGAR D. K.

Acc. No. ______________

1. Books lost, torn, defaced, marked or damaged in any way shall have to be replaced by the borrower.

2. Books issued can be recalled at any time, if necessary.

HELP TO KEEP THIS BOOK
FRESH & CLEAN

...सुधीन्द्र

श्री व्यासमंदिर श्री काशीमठ, हरिद्वार